

ΜΟΥΣΙΚΗ ΕΥΛΟΓΗ  
Η ΠΛΗΝΤΕΡΤΗΝΟΣ  
ΠΛΗΝΥ

ΚΑΤΑΒΑΣΙΑΙ ΤΟΥ ἘΝΙΑΥΤΟΥ

Περιέχουσα συντόμους καταβασίας τοῦ ὄλου ἔνιαυτοῦ,  
ἐκ τοῦ Εἰρηολογίου Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.

Χάριν πληρότητος, προσετέθησαν ἔτι  
αἱ Ἄργαὶ καταβασίαι τοῦ ὄλου ἔνιαυτοῦ,  
ὡς καὶ αἱ θ' ὠδαὶ (τῶν ἑορτῶν) ἑρανισθειῖσες, κυρίως,  
παρὰ π. Κωνσταντίνου Παπαγιάννη πρωτοπρεσβυτέρου.

Ἐπιμέλεια  
Λουκᾶς Λουκᾶ  
Γεράσιμος Μοναχὸς Ἀγιορείτης  
Μάρτιος 2024



Εὐχεσθε ὑπὲρ ἡμῶν

Ἐπιμέλεια

Λουκάς Λουκά  
Γεράσιμος Μοναχὸς Ἀγιορείτης

[louka.loukas@gmail.com](mailto:louka.loukas@gmail.com)

[gerry.monk@gmail.com](mailto:gerry.monk@gmail.com)

Λογισμικὸ Συγγραφῆς Βυζαντινῆς Μουσικῆς

Μουσικὰ Κείμενα

τοῦ Δημητρίου Παπαδοπούλου

# Περιεχόμενα

|   |           |
|---|-----------|
| <b>Εἰς τὸ Γενέσιον τῆς Θεοτόκου</b>                             | <b>16</b> |
| <b>Σύντομοι</b> .....   | <b>16</b> |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου .....                                       | 16        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....                                   | 21        |
| <b>Ἄργαι</b> .....  | <b>25</b> |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου .....                      | 25        |
| <b>ὠδὴ θ' τῆς ἑορτῆς</b> .....                                  | <b>31</b> |
| Κανὼν α' ὠδὴ θ' .....   | 31        |
| Κανὼν β' ὠδὴ θ' .....   | 33        |
| <b>Καταβασία θ' ὠδῆς</b> .....                                  | <b>37</b> |
| <b>Σύντομος</b> .....   | <b>38</b> |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου .....                                       | 38        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....                                   | 39        |
| <b>Ἄργη</b> .....   | <b>40</b> |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου .....                                       | 41        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....                                   | 42        |
| <b>Εἰς τὴν Ὑψωσιν τοῦ Τιμίου Σταυροῦ (προεόρτιες/μεθεόρτες)</b> | <b>45</b> |
| <b>Σύντομοι</b> .....   | <b>45</b> |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου .....                                       | 46        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....                                   | 50        |
| <b>Ἄργαι</b> .....  | <b>54</b> |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου .....                      | 54        |
| <b>Τιμωτέρα</b> .....   | <b>60</b> |
| Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου .....                                  | 61        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....                                   | 62        |
| <b>Καταβασία θ' ὠδῆς</b> .....                                  | <b>67</b> |
| <b>Σύντομος</b> .....   | <b>67</b> |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου .....                                       | 67        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....                                   | 68        |
| <b>Ἄργη</b> .....   | <b>70</b> |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου .....                                       | 70        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....                                   | 72        |
| <b>Εἰς τὴν Ὑψωσιν τοῦ Τιμίου Σταυροῦ</b>                        | <b>75</b> |
| <b>Σύντομοι</b> .....   | <b>75</b> |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου .....                                       | 75        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....                                   | 80        |
| <b>Ἄργαι</b> .....  | <b>84</b> |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου .....                      | 84        |
| <b>ὠδὴ θ' τῆς ἑορτῆς</b> .....                                  | <b>90</b> |
| Κανὼν α' ὠδὴ θ' .....   | 91        |
| Κανὼν β' ὠδὴ θ' .....   | 93        |
| <b>Καταβασία θ' ὠδῆς</b> .....                                  | <b>96</b> |
| <b>Σύντομος</b> .....   | <b>97</b> |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου .....                                       | 97        |

|   |            |
|---|------------|
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη.....                    | 98         |
| Ἀργή.....                                       | 99         |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                        | 99         |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη.....                    | 101        |
| <b>Εἰς τὰ Εἰσόδια τῆς Θεοτόκου (προεόρτιες)</b> | <b>104</b> |
| Σύντομοι.....                                   | 104        |
| Ἀργαί.....                                      | 108        |
| <b>Τιμιωτέρα</b> .....                          | <b>113</b> |
| Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου .....                  | 114        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....                   | 115        |
| <b>Καταβασία θ' ᾠδῆς</b> .....                  | <b>120</b> |
| Σύντομος.....                                   | 120        |
| Ἀργή.....                                       | 121        |
| Ἀργή (διασκ. Παπαγιάννη) .....                  | 122        |
| <b>Εἰς τὰ Εἰσόδια τῆς Θεοτόκου 21/11</b>        | <b>124</b> |
| <b>Σύντομοι</b> .....                           | <b>124</b> |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου .....                       | 124        |
| <b>Ἀργαί</b> .....                              | <b>129</b> |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                        | 129        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου .....      | 136        |
| <b>θ' ᾠδῆ τῶν Εἰσοδίων</b> .....                | <b>143</b> |
| Κανὼν α', ᾠδῆ θ' .....                          | 145        |
| Κανὼν β', ᾠδῆ θ' .....                          | 150        |
| <b>Καταβασία θ' ᾠδῆς</b> .....                  | <b>156</b> |
| Σύντομος.....                                   | 157        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                        | 157        |
| Ἀργή.....                                       | 158        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου .....                       | 158        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου.....       | 159        |
| <b>Τῆς Κυριακῆς πρὸ Χριστοῦ Γεννήσεως</b>       | <b>161</b> |
| <b>Σύντομοι</b> .....                           | <b>162</b> |
| Ἀπόστολου Ε. Παπαχρήστου.....                   | 162        |
| <b>Ἀργαί</b> .....                              | <b>167</b> |
| Ἀντωνίου ἱερέως καὶ Νομοφύλακος.....            | 167        |
| Πέτρου Μπερεκέτη .....                          | 174        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη (†8.4.2014).....        | 180        |
| <b>Τιμιωτέρα</b> .....                          | <b>187</b> |
| Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου .....                  | 188        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....                   | 189        |
| <b>Καταβασία θ' ᾠδῆς</b> .....                  | <b>194</b> |
| Σύντομος.....                                   | 194        |
| Ἀπόστολου Ε. Παπαχρήστου .....                  | 194        |
| Ἀργή.....                                       | 195        |
| Ἀντωνίου ἱερέως καὶ Νομοφύλακος .....           | 195        |
| Πέτρου Μπερεκέτη.....                           | 196        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη (†8.4.2014) .....       | 197        |

|   |            |
|---|------------|
| <b>Τῶν Χριστουγέννων</b>                                  | <b>199</b> |
| <b>Σύντομοι</b> .....                                     | <b>200</b> |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου .....                                 | 200        |
| <b>Ἀργαὶ</b> .....  | <b>208</b> |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                                  | 208        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου .....                | 222        |
| <b>ὠδὴ θ' τῆς ἑορτῆς</b> .....                            | <b>237</b> |
| Κανὼν Κοσμᾶ, ὠδὴ θ' .....                                 | 238        |
| Κανὼν ἱαμβικός, Ἰωάννου μοναχοῦ, ὠδὴ θ' .....             | 241        |
| <b>Καταβασία θ' ὠδῆς</b> .....                            | <b>244</b> |
| Σύντομος.....   | 244        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                                  | 244        |
| Ἀργή.....   | 246        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                                  | 246        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου.....                 | 249        |
| <b>Τῶν Χριστουγέννων, πεζαὶ</b>                           | <b>253</b> |
| <b>Σύντομοι</b> .....                                     | <b>253</b> |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου .....                                 | 253        |
| <b>Ἀργαὶ</b> .....  | <b>258</b> |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                                  | 258        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου .....                | 265        |
| <b>Τιμιωτέρα</b> .....                                    | <b>272</b> |
| Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου .....                            | 273        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....                             | 274        |
| <b>Καταβασία θ' ὠδῆς</b> .....                            | <b>278</b> |
| Σύντομος.....   | 279        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                                  | 279        |
| Ἀργή.....   | 280        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου .....                                 | 280        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου.....                 | 281        |
| <b>Τῶν Χριστουγέννων, ἱαμβικαὶ</b>                        | <b>283</b> |
| <b>Σύντομοι</b> .....                                     | <b>283</b> |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου .....                                 | 283        |
| <b>Ἀργαὶ</b> .....  | <b>287</b> |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                                  | 287        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου .....                | 294        |
| <b>Τιμιωτέρα</b> .....                                    | <b>302</b> |
| Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου .....                            | 303        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....                             | 304        |
| <b>Καταβασία θ' ὠδῆς</b> .....                            | <b>309</b> |
| Σύντομος.....   | 309        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                                  | 309        |
| Ἀργή.....   | 310        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                                  | 310        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου.....                 | 311        |
| <b>Εἰς τὴν περιτομὴν τοῦ Ἰησοῦ καὶ Μεγ. Βασιλείου 1/1</b> | <b>315</b> |

|  |            |
|--|------------|
| Σύντομοι .....                               | 316        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου .....                    | 316        |
| Ἄργαι .....                                  | 325        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου .....                     | 325        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Παπαγιάννη) ..... | 340        |
| ὠδή θ' .....                                 | 353        |
| ὠδή θ', κανὼν τῆς ἐορτῆς .....               | 354        |
| ὠδή θ', κανὼν τοῦ ἁγίου .....                | 357        |
| καταβασίαι θ' ὠδῆς .....                     | 361        |
| Σύντομος .....                               | 361        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου .....                    | 361        |
| Ἄργη .....                                   | 363        |
| Χουρμουζίου Χαρτοφύλακος .....               | 363        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου .....                     | 366        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Παπαγιάννη) ..... | 369        |
| <b>Τῶν Θεοφανείων</b> .....                  | <b>372</b> |
| Σύντομοι .....                               | 373        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου .....                    | 373        |
| Ἄργαι .....                                  | 382        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου .....                     | 382        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Παπαγιάννη) ..... | 397        |
| ὠδή θ' τῆς ἐορτῆς .....                      | 410        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου .....                    | 411        |
| Κανὼν α' κυρίου Κοσμᾶ .....                  | 411        |
| Κανὼν β' .....                               | 414        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....                | 418        |
| Κανὼν α' .....                               | 418        |
| Κανὼν β' .....                               | 421        |
| Καταβασία θ' ὠδῆς .....                      | 425        |
| Σύντομος .....                               | 425        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου .....                    | 425        |
| Ἄργη .....                                   | 427        |
| Χουρμουζίου Χαρτοφύλακος .....               | 427        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου .....                     | 430        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Παπαγιάννη) ..... | 433        |
| <b>Τῶν Θεοφανείων, πεζαὶ</b> .....           | <b>436</b> |
| Σύντομοι .....                               | 436        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου .....                    | 436        |
| Ἄργαι .....                                  | 441        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου .....                     | 441        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Παπαγιάννη) ..... | 447        |
| ὠδή θ' τῆς ἐορτῆς .....                      | 453        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου .....                    | 454        |
| Κανὼν α' κυρίου Κοσμᾶ .....                  | 454        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....                | 457        |
| Κανὼν α' .....                               | 457        |

|   |            |
|---|------------|
| Καταβασία θ' ᾠδῆς.....                            | 461        |
| Σύντομος.....                                     | 461        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                          | 461        |
| Ἀργή.....   | 462        |
| Χουρμουζίου Χαρτοφύλακος.....                     | 462        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου.....                           | 464        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Παπαγιάννη).....       | 465        |
| <b>Τῶν Θεοφανείων, ἱαμβικαὶ</b>                   | <b>468</b> |
| <b>Σύντομοι</b> .....                             | <b>468</b> |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                          | 468        |
| <b>Ἀργαὶ</b> .....                                | <b>472</b> |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου.....                           | 472        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Παπαγιάννη).....       | 480        |
| <b>ᾠδὴ θ' τῆς ἑορτῆς</b> .....                    | <b>486</b> |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                          | 487        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη.....                      | 490        |
| <b>Καταβασία θ' ᾠδῆς</b> .....                    | <b>494</b> |
| Σύντομος.....                                     | 494        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                          | 495        |
| Ἀργή.....   | 495        |
| Χουρμουζίου Χαρτοφύλακος.....                     | 495        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου.....                           | 497        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Παπαγιάννη).....       | 499        |
| <b>Τῆς Ὑπαπαντῆς</b>                              | <b>501</b> |
| Σύντομοι.....                                     | 501        |
| Ἀργαὶ.....  | 505        |
| <b>Τιμιωτέρα</b> .....                            | <b>515</b> |
| Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου.....                     | 515        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη.....                      | 516        |
| <b>Καταβασία θ' ᾠδῆς</b> .....                    | <b>521</b> |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου (Σύντομος).....                | 521        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη (Σύντομος).....           | 522        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου (Ἀργή).....                    | 524        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη (Ἀργή).....               | 525        |
| <b>Τῆς Ὑπαπαντῆς 2/2</b>                          | <b>528</b> |
| Σύντομοι.....                                     | 528        |
| Ἀργαὶ.....  | 532        |
| <b>θ' ᾠδὴ τῆς Ὑπαπαντῆς</b> .....                 | <b>542</b> |
| Σιμωνόπετρας (Ἀγγελικὸς Χορὸς).....               | 543        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη.....                      | 551        |
| <b>Καταβασία θ' ᾠδῆς</b> .....                    | <b>559</b> |
| Σύντομος Πέτρου Λαμπαδαρίου.....                  | 560        |
| Σύντομος Κωνσταντίνου Παπαγιάννη.....             | 561        |
| Ἀργὴ Πέτρου Λαμπαδαρίου.....                      | 562        |
| Ἀργὴ Κωνσταντίνου Παπαγιάννη.....                 | 564        |
| <b>Τῶν Κυριακῶν Τελώνου-Φαρισαίου καὶ Τυρινῆς</b> | <b>567</b> |

|  |            |
|--|------------|
| Σύντομοι.....                                    | 567        |
| Ἀργαί.....                                       | 571        |
| <b>Τιμιωτέρα .....</b>                           | <b>576</b> |
| Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου .....                   | 576        |
| <b>Καταβασία θ' ᾠδῆς.....</b>                    | <b>577</b> |
| Σύντομος.....                                    | 578        |
| Ἀργὴ Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                    | 578        |
| Ἀργὴ Πέτρου Βυζαντίου.....                       | 579        |
| <b>Τῆς Κυριακῆς τοῦ Ἀσώτου.....</b>              | <b>581</b> |
| Σύντομοι.....                                    | 581        |
| Ἀργαί.....                                       | 585        |
| <b>Τιμιωτέρα .....</b>                           | <b>590</b> |
| Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου .....                   | 590        |
| <b>Καταβασία θ' ᾠδῆς.....</b>                    | <b>591</b> |
| Σύντομος.....                                    | 591        |
| Ἀργὴ Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                    | 592        |
| Ἀργὴ Πέτρου Βυζαντίου.....                       | 593        |
| <b>Τῷ Σαββάτῳ πρὸ τῆς Ἀπόκρεω.....</b>           | <b>595</b> |
| Σύντομοι .....                                   | 595        |
| Ἀπόστολος Παπακρήστου.....                       | 595        |
| <b>Τιμιωτέρα .....</b>                           | <b>599</b> |
| Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου .....                   | 600        |
| <b>Καταβασία θ' ᾠδῆς.....</b>                    | <b>601</b> |
| Σύντομος Ἀπόστολου Παπακρήστου.....              | 601        |
| Ἀργὴ Ἀπόστολου Παπακρήστου .....                 | 602        |
| <b>Τῆς Κυριακῆς τῆς Ἀπόκρεω.....</b>             | <b>603</b> |
| Σύντομοι.....                                    | 603        |
| Ἀργαί.....                                       | 607        |
| <b>Τιμιωτέρα .....</b>                           | <b>612</b> |
| Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου .....                   | 612        |
| <b>Καταβασία θ' ᾠδῆς.....</b>                    | <b>613</b> |
| Σύντομος.....                                    | 614        |
| Ἀργὴ Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                    | 614        |
| Ἀργὴ Πέτρου Βυζαντίου.....                       | 615        |
| <b>Τῆς α' Κυριακῆς τῶν νηστειῶν.....</b>         | <b>617</b> |
| Σύντομοι.....                                    | 617        |
| Ἀργαί.....                                       | 620        |
| <b>Τιμιωτέρα .....</b>                           | <b>625</b> |
| Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου .....                   | 626        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....                    | 626        |
| <b>Καταβασία θ' ᾠδῆς.....</b>                    | <b>631</b> |
| Σύντομος.....                                    | 631        |
| Ἀργὴ Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                    | 632        |
| Ἀργὴ Πέτρου Βυζαντίου.....                       | 633        |
| <b>Εἰς ἑορτὰς τῆς Θεοτόκου (ἐν Τριωδίῳ).....</b> | <b>635</b> |



|                                 |            |
|---------------------------------|------------|
| Σύντομοι.....                   | 635        |
| Ἀργαί.....                      | 639        |
| <b>Τιμιωτέρα .....</b>          | <b>644</b> |
| Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου .....  | 645        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....   | 646        |
| <b>Καταβασία θ' ᾠδῆς.....</b>   | <b>651</b> |
| Σύντομος.....                   | 651        |
| Ἀργὴ Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....   | 652        |
| Ἀργὴ Πέτρου Πελοποννησίου ..... | 653        |
| <b>Τῆς Σταυροπροσκυνήσεως</b>   | <b>655</b> |
| Σύντομοι.....                   | 655        |
| Ἀργαί.....                      | 659        |
| <b>Τιμιωτέρα .....</b>          | <b>665</b> |
| Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου .....  | 665        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....   | 666        |
| <b>Καταβασία θ' ᾠδῆς.....</b>   | <b>671</b> |
| Σύντομος.....                   | 671        |
| Ἀργὴ Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....   | 672        |
| Ἀργὴ Πέτρου Βυζαντίου.....      | 673        |
| <b>Εἰς τὸν Εὐαγγελισμόν</b>     | <b>675</b> |
| Σύντομοι.....                   | 675        |
| Ἀργαί.....                      | 679        |
| <b>θ' ᾠδὴ τῆς ἑορτῆς.....</b>   | <b>686</b> |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....   | 687        |
| <b>Καταβασία θ' ᾠδῆς.....</b>   | <b>692</b> |
| Σύντομος.....                   | 693        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....        | 693        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη.....    | 694        |
| Ἀργὴ.....                       | 695        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....        | 695        |
| Πέτρου Πελοποννησίου .....      | 696        |
| <b>Τῷ Σαββάτῳ πρὸ τῶν Βαΐων</b> | <b>698</b> |
| Σύντομοι.....                   | 698        |
| Ἀργαί.....                      | 702        |
| <b>θ' ᾠδὴ τῆς ἑορτῆς.....</b>   | <b>707</b> |
| ᾠδὴ θ', κανὼν α' .....          | 707        |
| ᾠδὴ θ', κανὼν β' .....          | 709        |
| <b>Καταβασία θ' ᾠδῆς.....</b>   | <b>711</b> |
| Σύντομος.....                   | 711        |
| Ἀργὴ Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....   | 712        |
| Ἀργὴ Πέτρου Πελοποννησίου ..... | 712        |
| <b>Τῶν Βαΐων</b>                | <b>714</b> |
| Σύντομοι.....                   | 714        |
| Ἀργαί.....                      | 718        |
| <b>θ' ᾠδὴ τῆς ἑορτῆς.....</b>   | <b>724</b> |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου .....       | 724        |

|   |            |
|---|------------|
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....             | 727        |
| <b>Καταβασία θ' ᾠδῆς.....</b>             | <b>730</b> |
| Σύντομος.....                             | 730        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                  | 730        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη.....              | 731        |
| Ἀργή.....                                 | 732        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                  | 732        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη.....              | 733        |
| <b>Τῷ Ἁγίῳ καὶ Μεγάλῳ Σαββάτῳ</b>         | <b>735</b> |
| <b>Σύντομοι .....</b>                     | <b>735</b> |
| Ἀθανασίου Καραμάνη .....                  | 735        |
| Κωνσταντίνου Πρίγγου.....                 | 740        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....             | 744        |
| <b>Ἀργαὶ .....</b>                        | <b>748</b> |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                  | 748        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....             | 755        |
| <b>Καταβασία θ' ᾠδῆς.....</b>             | <b>761</b> |
| Σύντομος.....                             | 761        |
| Ἀθανασίου Καραμάνη.....                   | 761        |
| Κωνσταντίνου Πρίγγου .....                | 762        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη.....              | 763        |
| Ἀργή.....                                 | 764        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου .....                 | 764        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη.....              | 765        |
| <b>Τοῦ Πάσχα</b>                          | <b>767</b> |
| <b>Σύντομοι .....</b>                     | <b>767</b> |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                  | 767        |
| Γαβριὴλ Κουντιάδου.....                   | 771        |
| Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου .....             | 774        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....             | 778        |
| <b>ᾠδὴ θ' (κανὼν τοῦ Πάσχα) .....</b>     | <b>782</b> |
| Κωνσταντίνου Σκαρμούτσου.....             | 782        |
| Γαβριὴλ Κουντιάδου.....                   | 787        |
| Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου .....             | 792        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....             | 797        |
| <b>ᾠδὴ θ', (κανὼν τῆς Θεοτόκου) .....</b> | <b>802</b> |
| Γαβριὴλ Κουντιάδου.....                   | 803        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....             | 804        |
| <b>Καταβασία θ' ᾠδῆς, Σύντομος.....</b>   | <b>807</b> |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                  | 807        |
| Γαβριὴλ Κουντιάδου.....                   | 809        |
| Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου .....             | 811        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....             | 812        |
| <b>Τῆς Κυριακῆς τοῦ Θωμᾶ</b>              | <b>815</b> |
| <b>Σύντομοι .....</b>                     | <b>815</b> |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                  | 815        |

|   |            |
|---|------------|
| Γαβριήλ Κουντιάδου.....                 | 819        |
| Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου .....           | 823        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....           | 826        |
| <b>Άργαί .....</b>                      | <b>830</b> |
| Ιωάννου Πρωτοψάλτου.....                | 830        |
| Γαβριήλ Κουντιάδου.....                 | 836        |
| Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου .....           | 841        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....           | 848        |
| <b>Ψδὴ θ' τῆς ἑορτῆς.....</b>           | <b>856</b> |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου .....               | 856        |
| Γαβριήλ Κουντιάδου.....                 | 858        |
| Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου .....           | 860        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....           | 862        |
| <b>Καταβασία θ' ψδῆς.....</b>           | <b>864</b> |
| Σύντομος.....                           | 865        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου .....               | 865        |
| Γαβριήλ Κουντιάδου .....                | 866        |
| Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου.....            | 867        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη.....            | 868        |
| Άργή.....                               | 869        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου .....               | 869        |
| Γαβριήλ Κουντιάδου .....                | 871        |
| Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου.....            | 873        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη.....            | 875        |
| <b>Τῆς Μεσοπεντηκοστῆς .....</b>        | <b>878</b> |
| <b>Σύντομοι .....</b>                   | <b>878</b> |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου .....               | 878        |
| Γαβριήλ Κουντιάδου.....                 | 882        |
| <b>θ' ψδὴ τῆς ἑορτῆς.....</b>           | <b>885</b> |
| Γαβριήλ Κουντιάδου.....                 | 886        |
| Κανὼν α', ψδὴ θ' .....                  | 886        |
| Κανὼν β', ψδὴ θ'.....                   | 888        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....           | 891        |
| Κανὼν α', ψδὴ θ' .....                  | 891        |
| Κανὼν β', ψδὴ θ'.....                   | 893        |
| <b>Καταβασία θ' ψδῆς.....</b>           | <b>896</b> |
| Σύντομος.....                           | 896        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                | 897        |
| Γαβριήλ Κουντιάδου .....                | 897        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη.....            | 898        |
| Άργή.....                               | 899        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                | 899        |
| Γαβριήλ Κουντιάδου .....                | 900        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη.....            | 901        |
| <b>Τῆς Ἀναλήψεως (προεόρτιες) .....</b> | <b>903</b> |
| <b>Σύντομοι .....</b>                   | <b>903</b> |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου .....               | 903        |

|  |             |
|--|-------------|
| Γαβριήλ Κουντιάδου.....                    | 906         |
| Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου .....              | 909         |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....              | 912         |
| <b>Άργαί .....</b>                         | <b>916</b>  |
| Πέτρου Πελοποννησίου .....                 | 916         |
| Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου .....              | 919         |
| <b>Έν Κυριακῇ - ᾠδὴ θ΄.....</b>            | <b>924</b>  |
| Κανὼν τοῦ Πάσχα.....                       | 924         |
| Γαβριήλ Κουντιάδου .....                   | 924         |
| Κωνσταντίνου Σκαρμούτσου .....             | 927         |
| Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου.....               | 931         |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη.....               | 934         |
| Κανὼν τῆς Θεοτόκου.....                    | 937         |
| Γαβριήλ Κουντιάδου .....                   | 937         |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη.....               | 939         |
| <b>Έν Καθημερινῇ - Τιμιωτέρα.....</b>      | <b>941</b>  |
| Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου .....             | 942         |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....              | 943         |
| <b>Καταβασία θ΄ ᾠδῆς.....</b>              | <b>948</b>  |
| Σύντομος.....                              | 948         |
| Ιωάννου Πρωτοψάλτου .....                  | 948         |
| Γαβριήλ Κουντιάδου .....                   | 949         |
| Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου.....               | 949         |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη.....               | 950         |
| Άργῆ.....                                  | 950         |
| Ιωάννου Πρωτοψάλτου .....                  | 950         |
| Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου.....               | 951         |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη.....               | 952         |
| <b>Τῆς Ἀναλήψεως.....</b>                  | <b>953</b>  |
| <b>Σύντομοι .....</b>                      | <b>953</b>  |
| Ιωάννου Πρωτοψάλτου.....                   | 954         |
| Γαβριήλ Κουντιάδου.....                    | 957         |
| Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου .....              | 962         |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....              | 966         |
| <b>Άργαί .....</b>                         | <b>970</b>  |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου ..... | 970         |
| Γαβριήλ Κουντιάδου.....                    | 977         |
| Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου .....              | 983         |
| <b>ᾠδὴ θ΄ τῆς ἑορτῆς.....</b>              | <b>989</b>  |
| Γαβριήλ Κουντιάδου.....                    | 991         |
| ᾠδὴ θ΄, κανὼν α΄ .....                     | 991         |
| ᾠδὴ θ΄, κανὼν β΄ .....                     | 993         |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....              | 997         |
| ᾠδὴ θ΄, κανὼν α΄ .....                     | 997         |
| ᾠδὴ θ΄, κανὼν β΄ .....                     | 999         |
| <b>Καταβασία θ΄ ᾠδῆς.....</b>              | <b>1003</b> |
| Σύντομος.....                              | 1004        |

|  |             |
|--|-------------|
| Ιωάννου Πρωτογάλτου .....                      | 1004        |
| Γαβριήλ Κουντιάδου .....                       | 1004        |
| Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου.....                   | 1005        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη.....                   | 1006        |
| <b>Ἀργή.....</b>                               | <b>1006</b> |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου.....      | 1007        |
| Ιωάννου Πρωτογάλτου .....                      | 1007        |
| Γαβριήλ Κουντιάδου .....                       | 1008        |
| Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου.....                   | 1009        |
| <b>Τῷ Σαββάτῳ πρὸ τῆς Πεντηκοστῆς</b>          | <b>1011</b> |
| <b>Σύντομοι.....</b>                           | <b>1011</b> |
| <b>Τιμωτέρα .....</b>                          | <b>1015</b> |
| Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου .....                 | 1015        |
| <b>Καταβασία θ' ᾠδῆς.....</b>                  | <b>1016</b> |
| Σύντομος.....                                  | 1017        |
| Ἀργή.....                                      | 1017        |
| <b>Τῆς Πεντηκοστῆς</b>                         | <b>1020</b> |
| <b>Σύντομοι .....</b>                          | <b>1021</b> |
| Ιωάννου Πρωτογάλτου.....                       | 1022        |
| Γαβριήλ Κουντιάδου.....                        | 1030        |
| Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου .....                  | 1039        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....                  | 1048        |
| <b>Ἄργαι .....</b>                             | <b>1057</b> |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου. Ἀργές, διασκευασμένα ..... | 1057        |
| <b>ᾠδὴ θ' τῆς ἑορτῆς.....</b>                  | <b>1070</b> |
| Ιωάννου Πρωτογάλτου.....                       | 1071        |
| Γαβριήλ Κουντιάδου.....                        | 1076        |
| Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου .....                  | 1081        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....                  | 1085        |
| <b>Καταβασίαι θ' ᾠδῆς.....</b>                 | <b>1090</b> |
| Σύντομος.....                                  | 1091        |
| Ιωάννου Πρωτογάλτου .....                      | 1091        |
| Γαβριήλ Κουντιάδου .....                       | 1092        |
| Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου.....                   | 1093        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη.....                   | 1095        |
| Ἀργή.....                                      | 1096        |
| Ιωάννου Πρωτογάλτου .....                      | 1096        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου. Ἀργές, διασκευασμένα.....  | 1098        |
| <b>Τῆς Πεντηκοστῆς ἱαμβικαί</b>                | <b>1100</b> |
| <b>Σύντομοι .....</b>                          | <b>1100</b> |
| Ιωάννου Πρωτογάλτου.....                       | 1101        |
| Γαβριήλ Κουντιάδου.....                        | 1104        |
| Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου .....                  | 1109        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....                  | 1113        |
| <b>Ἄργαι .....</b>                             | <b>1117</b> |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου .....     | 1117        |

|   |             |
|---|-------------|
| Γαβριήλ Κουντιάδου.....                     | 1124        |
| Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου .....               | 1130        |
| <b>ᾠδὴ θ' τῆς ἑορτῆς.....</b>               | <b>1136</b> |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                    | 1137        |
| Γαβριήλ Κουντιάδου.....                     | 1142        |
| Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου .....               | 1147        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....               | 1152        |
| <b>Καταβασία θ' ᾠδῆς.....</b>               | <b>1157</b> |
| Σύντομος.....                               | 1157        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου .....                   | 1157        |
| Γαβριήλ Κουντιάδου .....                    | 1158        |
| Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου.....                | 1158        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη.....                | 1159        |
| Ἀργὴ.....                                   | 1160        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου.....   | 1160        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου .....                   | 1161        |
| Γαβριήλ Κουντιάδου .....                    | 1162        |
| Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου.....                | 1163        |
| <b>Τῆς Μεταμορφώσεως (προεόρτιες) .....</b> | <b>1165</b> |
| <b>Σύντομοι .....</b>                       | <b>1165</b> |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου .....                   | 1165        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....               | 1169        |
| <b>Ἀργαὶ .....</b>                          | <b>1172</b> |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου .....                    | 1172        |
| <b>Τιμιωτέρα .....</b>                      | <b>1177</b> |
| Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου .....              | 1178        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....               | 1179        |
| <b>Καταβασία θ' ᾠδῆς.....</b>               | <b>1183</b> |
| Σύντομος.....                               | 1184        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                    | 1184        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη.....                | 1184        |
| Ἀργὴ.....                                   | 1185        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                    | 1185        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου.....                     | 1186        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη.....                | 1186        |
| <b>Τῆς Μεταμορφώσεως 6/8 .....</b>          | <b>1188</b> |
| <b>Σύντομοι .....</b>                       | <b>1188</b> |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου .....                   | 1188        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....               | 1193        |
| <b>Ἀργαὶ .....</b>                          | <b>1197</b> |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου .....  | 1197        |
| <b>ᾠδὴ θ' τῆς ἑορτῆς.....</b>               | <b>1203</b> |
| ᾠδὴ θ', κανὼν α' .....                      | 1204        |
| ᾠδὴ θ', κανὼν β' .....                      | 1207        |
| <b>Καταβασία θ' ᾠδῆς.....</b>               | <b>1210</b> |
| Σύντομος.....                               | 1210        |

|   |             |
|---|-------------|
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                          | 1210        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη.....                      | 1212        |
| Ἀργή.....   | 1213        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                          | 1213        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη.....                      | 1215        |
| <b>Εἰς τὴν Κοίμησιν τῆς Θεοτόκου (προεόρτιες)</b> | <b>1218</b> |
| Σύντομοι.....                                     | 1218        |
| Ἀργαὶ.....  | 1222        |
| <b>Τιμιωτέρα .....</b>                            | <b>1228</b> |
| Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου .....                    | 1228        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....                     | 1229        |
| <b>Καταβασία θ' ᾠδῆς.....</b>                     | <b>1234</b> |
| Σύντομος.....                                     | 1234        |
| Ἀργή.....   | 1235        |
| Ἀργή (διασκ. Παπαγιάννη) .....                    | 1236        |
| <b>Εἰς τὴν Κοίμησιν τῆς Θεοτόκου 15/8</b>         | <b>1238</b> |
| Σύντομοι .....                                    | 1239        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου .....                         | 1239        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....                     | 1248        |
| Ἀργαὶ .....                                       | 1258        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Παπαγιάννη) .....      | 1258        |
| ᾠδὴ θ' τῆς ἑορτῆς.....                            | 1274        |
| Κανὼν α' τῆς Θεοτόκου, ᾠδὴ θ' .....               | 1275        |
| Κανὼν β' τῆς Θεοτόκου, ᾠδὴ θ' .....               | 1278        |
| <b>Καταβασία θ' ᾠδῆς.....</b>                     | <b>1282</b> |
| Σύντομος.....                                     | 1282        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                          | 1282        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη.....                      | 1284        |
| Ἀργή.....   | 1286        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                          | 1286        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Παπαγιάννη).....       | 1289        |
| <b>Εἰς τὴν Κοίμησιν τῆς Θεοτόκου (μεθεόρτες)</b>  | <b>1293</b> |
| Σύντομοι .....                                    | 1294        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου .....                         | 1294        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....                     | 1298        |
| Ἀργαὶ .....                                       | 1303        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου .....                         | 1303        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Παπαγιάννη) .....      | 1311        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Χουρμουζίου) .....     | 1321        |
| <b>Τιμιωτέρα .....</b>                            | <b>1329</b> |
| Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου .....                    | 1329        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....                     | 1330        |
| <b>Καταβασία θ' ᾠδῆς.....</b>                     | <b>1335</b> |
| Σύντομος.....                                     | 1335        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                          | 1335        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη.....                      | 1336        |

|   |             |
|---|-------------|
| Ἀργή.....                                       | 1337        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                        | 1337        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Παπαγιάννη).....     | 1339        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Χουρμουζίου).....    | 1340        |
| <b>Εἰς ἑορτὰς τῆς Θεοτόκου</b>                  | <b>1343</b> |
| <b>Σύντομοι</b> .....                           | <b>1343</b> |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου .....                       | 1343        |
| Γαβριὴλ Κουντιάδου.....                         | 1347        |
| <b>Ἀργαὶ</b> .....                              | <b>1351</b> |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Κ. Παπαγιάννη).....  | 1351        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Γ. Κουντιάδου).....  | 1356        |
| <b>Τιμιωτέρα</b> .....                          | <b>1362</b> |
| Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου .....                  | 1362        |
| Κωνσταντίνου Παπαγιάννη .....                   | 1363        |
| <b>Καταβασία θ' ᾠδῆς</b> .....                  | <b>1368</b> |
| Σύντομος.....                                   | 1368        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                        | 1368        |
| Γαβριὴλ Κουντιάδου .....                        | 1369        |
| Ἀργή.....                                       | 1370        |
| Ἰωάννου Πρωτοψάλτου.....                        | 1370        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Κ. Παπαγιάννη) ..... | 1371        |
| Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Γ. Κουντιάδου).....  | 1372        |



# Εἰς τὸ Γενέσιον τῆς Θεοτόκου

8 Σεπτεμβρίου

ἦχος πλ.δ'

α **Σ**ταυρὸν χαράξας Μωσῆς, ἐπ' εὐθείας ῥάβδῳ, τὴν Ἐρυθρὰν διέτεμε, τῷ Ἰσραὴλ πεζεύσαντι, τὴν δὲ ἐπιστρεπτικῶς, Φαραὼ τοῖς ἄρμασι, κροτήσας ἤνωσεν, ἐπ' εὐρους διαγράψας τὸ ἀήττητον ὄπλον. Διὸ Χριστῷ ἄσωμεν τῷ Θεῷ ἡμῶν, ὅτι δεδόξασται.

γ **Ρ**άβδος εἰς τύπον τοῦ μυστηρίου παραλαμβάνεται· τῷ βλαστῷ γὰρ προκρίνει τὸν ἱερέα. Τῇ στερειουούσῃ δὲ πρῶην, Ἐκκλησίᾳ νῦν ἐξήνηθη, ξύλον Σταυροῦ, εἰς κράτος καὶ στερέωμα.

δ **Εἰ**σακήκοα Κύριε, τῆς οἰκονομίας σου τὸ μυστήριον, κατενόησα τὰ ἔργα σου, καὶ ἐδόξασά σου τὴν Θεότητα.

ε **Ω** τρισμακάριστον ξύλον! ἐν ᾧ ἐτάθη Χριστός, ὁ βασιλεὺς καὶ Κύριος, δι' οὗ πέπτωκεν ὁ ξύλῳ ἀπατήσας, τῷ ἐν σοὶ δελεασθείς, Θεῷ τῷ προσπαγέντι σαρκί, τῷ παρέχοντι, τὴν εἰρήνην ταῖς ψυχαῖς ἡμῶν.

ς **Ν**οτίου θηρὸς ἐν σπλάγχνοις, παλάμας, Ἰωνᾶς, σταυροειδῶς διεκπετάσας, τὸ σωτήριον πάθος προδιετύπου σαφῶς. Ὅθεν τριήμερος ἐκδύς, τὴν ὑπερκόσμιον ἀνάστασιν ὑπέζωγράφησε, τοῦ σαρκί προσπαγέντος Χριστοῦ τοῦ Θεοῦ, καὶ τριημέρῳ ἐγέρσει τὸν κόσμον φωτίσαντος.

ζ **Ἐ**κνοον πρόσταγμα τυράννου, δυσσεβοῦς λαοὺς ἐκλόνησε, πνέον ἀπειλῆς, καὶ δυσφημίας θεοστυγοῦς. Ὅμως τρεῖς παῖδας οὐκ ἐδειμάτωσε, θυμὸς θηριώδης, οὐ πῦρ βρόμιον· ἀλλ' ἀντηχοῦντι δροσοβόλῳ πνεύματι, πυρὶ συνόντες ἔφαλλον, ὁ ὑπερύμνητος τῶν πατέρων καὶ ἡμῶν, Θεὸς εὐλογητὸς εἶ.

Αἰνοῦμεν, εὐλογοῦμεν καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον.

η **Εὐ**λογεῖτε παῖδες, τῆς Τριάδος ἰσάριθμοι, δημιουργὸν πατέρα Θεόν, ὑμνεῖτε τὸν συγκαταβάντα Λόγον, καὶ τὸ πῦρ εἰς δρόσον μεταποιήσαντα, καὶ ὑπερυψοῦτε, τὸ πᾶσι ζωὴν παρέχον, Πνεῦμα πανάγιον εἰς τοὺς αἰῶνας.

Σύντομοι

Ἄργαί

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Πέτρου Λαμπαδαρίου

Σύντομοι

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Κ<sup>Ϛ</sup>ταυ ρον χα ρα ξας Μω σης επ ευ θει ας ρα βδω την

Ε ρυ θραν δι ε τε με τω Ισ ρα ηλ πεζουσαν τι ρι την

δε ε πι στρε πτι κως Φα ρα ω τοις αρ μα σι κρο τη

σας η νω σεν ρι επ ευ ρους δι α γραψα α ας το α ητ τη

τον ο ο πλον δι ο Χρι στω α σωμεν ρι τω Θε ω

η μων ο τι δε δο ξα σται ρι ψδὴ γ' ρι

Ρ<sup>Ϛ</sup>α βδος εις τυ υ ποντου μω στη ρι ου πα ρα λαμ

βα νε ε ται τω βλα στω γαρ προ κρι νει τον ι ε ρε

ε α ρι τη στει ρευ ου ση δε πρω ην Εκ κλη σι α νυν

ἐξ ἠν θη ἡ σε <sup>Δ</sup> χορὸς α' ξυ λον Σταυ ρου εις κρα τος και στε ρε

ω ω μα <sup>γ</sup> ῥή <sup>ῥ</sup> ῥή δ'

Εἰ σα κη ἡ κο α Κυ ρι ε της οι κο νο μι ι ας

σου το μυ στη ρι ον κα τε νο ἡ σα τα ερ γα σου και ε

δο ξα σα σου την Θε ο τη τα <sup>ῥ</sup> ῥή <sup>ῥ</sup> ῥή δ'

Ω τρις μα κα ρι ι στον ξυ υ υ λον εν ω ε τα

α α θη Χρι στος ο βα σι λευς και Κυ ρι ος <sup>γ</sup> ῥή δι ου

πε πτω κεν ο ξυ λω α πα τη ἡ σας <sup>Δ</sup> ῥή τω εν σοι δε λε

α σθεις Θε ω τω προσ πα γε εν τι σα ρ κι <sup>Δ</sup> ῥή τω πα

ρε ε χο ον τι την ει ρη νη ταις ψυ χαις ἡ ἡ μων <sup>γ</sup> ῥή <sup>ῥ</sup> ῥή δ'

**Ν** ο τι ου θη ρο ος εν σπλα α αγχοις πα λα μας

Ι ω νας σταυ ρο ει δως δι εκ πε τα α σας <sup>γ</sup> το

σω τη ρι ον πα α θος προ δι ε τυ υ που σα φως

ο ο θεν τρι η με ρος εκ δυς την υ πε ρ κο σμι ον α

να στα σιν υ πε ζω γρα φη η σε <sup>Δ</sup> του σα ρ κι προσ πα

γεν τος Χρι στου ουου του Θε ου και τρι η με ρω ε γε ε

ερσει τον κο ο σμον φω τι σα αντος <sup>γ</sup> ῶδὴ ζ'

**Ε** εκ νο ον προ στα γμα τυ ραν νου δυς σε

βους λα ους ε κλο νη σε <sup>β</sup> πνε ον α πει λης και δυς φη μι

ι α ας θε ο στυ γους <sup>γ</sup> ο μως τρεις παι δας ουκ ε δει μα

τω ω ω σε **Δ** θυ μο ος θη ρι ω δης ου πυρ βρο μι ον **ν**

αλλ αν τη χουν τι δρο σο βο λω Πνευ μα α τι πυ ρι συν

ον τες ε ψα α αλ λον **Δ** ο υ περ υ μνη η το ος

των πα τε ρων και η μων **Θ**ε ος ευ λο γη το ος ει **ν**

ᾠδὴ γ'

**Δ** ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσκυ νου ου με εν τον

Κυ ρι ον **ν**

**Ε** υ λο γει ει τε Παι αι αι δες της Τρι α δοσι σ α

ριθμοι δε μι ουρ γον πα τε ρα **Θ**ε ον **ν** υ μνει ει τε τον

συ γ κα τα βαν τα λο ο ο γον **ε** και το πυρ εις δρο ο σον

με τα ποιησαντα και υπερυψουτε το παασι

ζωην παρεχον Πνευμα παναγιον εις τους

αιωνων ααας

### Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Καταβασίαι Σταυροῦ  
ᾠδὴ α΄

Ἦχος λ̣ ρ̣ δ̣ ρ̣

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.292/1641\*





Σταυρον χαραξας Μωσης επευθειας ρα

βδωτην Ερυθραν διετεμετω Ισραηλ πεζευσαν

τιτην δε επιστρεπτικως Φαρωτοις αρ


μασι κροτησας ηνωσεν επευρους διαγραψαας


τοαητητον οπλον διο Χριστω ασωμεν

τω Θε ω η μων ο τι δε δο ξα σται     φδὴ γ'

**Ρ** α βδος εις τυ πον του μω στη ρι ου πα ρα λαμ βα



νε ε ται τω βλα στω γαρ προ κρι νει τον ι ε ρε





α  τη στει ρευ ου ση δε πρω ην Εκ κλη σι α νυν


εξ ην θη σε  χορός α' ξυ λον Σταυ ρου εις κρα τος και στε ρε ε

ω ω μα     φδὴ δ'

**Ε** ισ α κη κο α Κυ ρι ε της οι κο νο μι ι ας σου

το μω στη ρι ον  κα τε νο η σα τα ερ γα σου  και ε

δο ξα σα σου την Θε ο τη τα     φδὴ ε'

**Ω** τρις μα κα ρι ι στον ξυ υ υ λον  εν ω ε

τα θη Χρι στος ο βα σι λευς και Κυ ρι ος δι ου

πε πτω κεν ο ξυ λω α πα τη η σας τω εν σοι δε

λε α σθεις Θε ω τω προσ πα γεν τι σαρ κι τω πα ρε

χο ον τι την ει ρη νην ταις ψυ χαις η η μων

**N** ο τι ου θε ρο ος εν σπλα α αγ χνοις πα λα μας

Ι ω νας σταυ ρο ει δως δι εκ πε τα σας το σω

τη ρι ον πα α θος προ δι ε τυ που σα φως ο ο θεν τρι

η με ρος εκ δυς την υ περ κο σμι ον α να στα σιν υ

πε ζω γρα φη η σε του σα ρ κι προσ πα γεν τος Χρι

στου ου του Θε ου και τρι η με ρω ε γε ε ρσει

ᾠδὴς'



τον κο ο σμον φω τι ι σα αν τος ν ρ ψδὴ ζ'

Ε εκ νο ον προσ τα γμα τυ ραν νου δυσ σε βους

λα ους ε κλο νη σε ε λ πνε ον α πει λης και δυσ φη μι

ι α ας θε ο στυ γους ν ρ ο μως τρεις παι δας ουκ ε δει

μα τω σε Α ρ θυ μο ος θη ρι ω δης ου πυρ βρο μι ον ν ρ αλλ

αν τη χουν τι δρο σο βο λω Πνευ μα α τι πυ ρι συν

ον τες ε ψα λ λον Α ρ ο υ περ υ μνη η το ος των πα

τε ρων και η μων Θε ος ευ λο γη τος ει ν ρ

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου μεν

τον Κυ ρι ον Χ ν ρ

ψδὴ η'

Ε υ λο γει ει τε παι αι αι δεσ της Τρι α δος ι σα

ρι θμοι δη μι ουρ γον Πα τε ρα Θε ον υ μνει ει τε

τον συ γκα τα βαν τα Λο ο ο γον και το πυρ

εις ὄρο ο σον με τα ποι η σαν τα και υ περ υ ψου

τε το πα α σι ζω ην πα ρε ε χον Πνευ μα παν α γι ονεις

τους αι ω ω να α α ας

### Αργαί

## Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου1

Καταβασίαι Σταυροῦ  
ῶδη α'

Ἦχος λ̣ ρ̣ ῥ̣ — ρ̣ ρ̣

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.287/1636\*

Σ ταυ ρον χα ρα α ξας Μω ω ση η ης επ ευ

1 Γραμμαί τινες τῶν καταβασιῶν διεσκευάσθησαν ἐλαφρῶς πρὸς ἀποφυγὴν παρατονησίων καὶ ἀστόχου διαιρέσεως φράσεων. [πρωτ.Κων.Παπαγιάννης]

θει ει ει ει α ας ρα α α βδω<sup>χ</sup> την Ε ρυ θραν

δι ε τε ε με<sup>♂</sup> τω Ισ ρα η ηλ πε ζευ σαν τι

ι<sup>ν</sup> την δε ε ε ε πι στρε πτι ι κως<sup>Δ</sup> Φα ρα ω

τοι οισ αρ μα α σι κρο τη η σας η η νω ω σεν<sup>♂</sup> επ

ευ ρους δι α α γρα α α ψας<sup>Δ</sup> το α ητ τη τον ο

ο ο πλον<sup>♂</sup> δι ο ο Χρι στω ω α α σω ω μεν<sup>♂</sup> τω

Θε ω η μων ο ο ο τι δε δο ο ξα α σται<sup>♂</sup> φδὴ γ'

**Ρ** α α βδος ει εις τυ υ πον του ου μυ στη η η ρι ου<sup>Δ</sup>

πα α ρα α λα α μ βα α α νε ε ε ε ται<sup>Δ</sup> τω

βλα στω ω ω γαρ προ ο ο χρι ι ι νει το ον ι ε

ε ε ρε ε ε ε α γ τη στει ρευ ου ση δε πρω

η ην Εκ κλη η σι ι α νυ υν ε εξ η η ην θη η

η η σε Δ ξυ υ υ υ λο ον Στα α αυ ρου Δ χορός α'

εις κρα α τος και στε ρε ε ω ω μα

\* στε ρε ε ε ε ε ε ω ω ω ω μα φδη δ'

Ε ισ α κη η κο α Κυ υ ρι ι ε τη ης οι οι

κο νο μι ι ι ι ας σου το ο μυ υ στη ρι ι ον

κα τε νο η σα α τα ερ γα α σου ου και ε

δο ξα σα σου τη ην Θε ο ο τη η τα φδη ε'

Ω τρις μα κα ρι ι ι ι στον ξυ υ υ λο ον εν

ω ε τα α α θη Χρι ι στος ο βα σι λε ευσ και

αι Κυ ρι ι ο ος δι ου ου πε πτω ω κεν ο

ξυ υ λω α α πα α τη η η η σας τω εν

σοι οι δε λε ε α α α σθεις Θε ω ω ω τω

ω προ οσ πα α γε ε εν τι ι σα α αρ κι

τω πα ρε ε ε χο ο ο ον τι ι την ει ρη η νη νταις

ψυ χαι αι αις η η η η μων

**N** ο τι ι ι ου θη ρο ος εν σπλα α αγ χνοι

οις πα λα μα ας Ι ω ω νας σταυ ρο ει δω ω ως δι

ε εκ πε ε τα α α α α σας το σω τη η ρι ι

ον πα α α α α α θος προ δι ε τυ υ υ

που σα φω ως ο ο ο θεν τρι η η η με ρος

ε εκ δυς την υ πε ερ κο σμι ι ον α να στα α σιν

υ υ πε ε ζω ω γρα α α φη η η η σε του

σαρ κι ι ι προσ πα α γε εν τος Χρι στου ου του Θε ε

ου και τρι η με ρω ω ε ε γε ε ερ σει ει

τον κο ο ο σμον φω τι ι ι σα α α αν τος

ε εκ νο ο ον προ οστα α γμα τυ ρα

αν νου δυ υσ σε βου ου ουους λα ους ε ε ε

κλο νη η σε ε πνε ε ο ον α πει ει ει λη ης και

δυσ φη μι ι ι ι α ας θε ο στυ γου ους ο ο μως

τρει εις παι αι δας ου ουκ ε ε δει ει μα α α τω

ω ω ω σε θυ μο ο ο ο ος θη ρι ω ω δη

ης ου ου πυ υρ βρο μι ο ον αλλ αν τη χου ου ου ουν τι

δρο σο βο ο λω ω Πνε ευ μα α τι ι πυ ρι συν

ο ον τε ες ε ε ε ψα α α αλ λον ο υ περ

υ μνη η το ος των πα τε ε ρων και αι η η η μων Θε

ε ος ε ευ λο γη η η το ο ο ος ει

α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου ου ου

ου με εν τον Κυ ρι ο ον

ᾠδὴ 1'

Ευλογει εἰ εἰ εἰ τε παι αι αι δε ες της

Τρι α α α α δος ι ι σα ρι ι θμοι δη μι ουρ γον

Πα α τε ε ε ε ε ρα α Θε ε ε ον υ μνει

ει τε τον συγ κα τα βαν τα α Λο ο ο γον και το

ο ο πυρ εις δρο ο σον με ε τα α ποι η σαν τα α και

υ περ υ υ ψου ου ου ου τε το ο πα σι ι ζω η

ην πα α ρε ε ε ε χον Πνευ ευμα παν α γι ι ονεις τους

αι ω ω να α α ας

ὕδῃ θ' τῆς ἑορτῆς

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

Κανὼν α' ὕδῃ θ'



**Η** τον προ η λι ου φω στη ρα τον Θε ον εξ  
 α α να τει λαν τα σω μα τι κως η μιν ε πι δη  
 μη σαν τα εκ λα γο ο νων παρ θε νι κων α φρα  
 στως σω ω μα τω σα σα ευ λο γη με νη παν α  
 γνε σε ε Θε ο το κε με γα λυ νο μεν (6')

**Υ** περ α γι α Θε ο το κε σω σον η  
 μας

**Ο** τοις α πει θου ου σι λα οις εξ α κρο το  
 μου βλυ σας να μα τα τοις ευ πει θου σιν ε θνε σι  
 χα ρι ζε ται εκ λα γο ο νων στει ρω τι κων καρ

πον εις ευφροσυνην ημιν σε Θεομητορα χραντε

η ηνεπαξιως μεγαλυνομεν

Υπεραγια Θεοτοκε σωσον η

μας

Την της αποτομου αρχαιας αναιρετιν

αποφασεως και της προμητορος την επαν

ορθωσιν την του γεενους προς τον Θεον αιτι

αν οι οικειωσεως την προς τον κτιστην γεφυραν

σεε Θεοτοκε μεγαλυνομεν

Κανών β' ὕδῃ θ'

Ἦχος λ̣ ρ̣ δ̣ Ἡ̣

Ἄλλοτριον τῶν μητέρων ἢ παρθενία

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.106/1805#

**Υ** περ α γι α Θε ο το κε σω σον η μας <sup>γ</sup> ρι

**Ε** πα ξι ι ον Θε ο μη η τορ της σης α γνει

**Α** ρι τον το κον ε κλη ρω ω σω δι ε παγ γε λι

**γ** ρι τη πο τε γαρ α κα αρ πω θε ο βλα στος

κα ρος ε δο θης **Α** ρι δι ο σε πα σαι αι φυ λαι τη ης

γης α παυ στως μα κα ρι ι ζο ο μεν <sup>γ</sup> ρι

**Υ** περ α γι α Θε ο το κε σω σον η μας <sup>γ</sup> ρι

**Π** ε πλη ρω ω ται του βο ω νω τος η προ φη τει

**Α** ρι φη σι γαρ α να στη η σω σκη νην την πε πτω κυι

**γ** ρι του ι ε ρου Δα βιδ **Α** ρι εν σοι οι α χραν τε προ

τυ πω θει σαν δι ης ο συμ πας των αν θρω πω

ων χους εις σω μα α νε πλα σθη Θε ω

Υ περ α γι α Θε ο το κε σω σον η μας

Τ α σπαρ γα α να προσ κυ νου ου μεν σου Θε ο το

κε δο ξα ζο μεν τον δον τα καρ πον τη πρω ην στει ρα

και α νοι ξαν τα μη η τραν την α γο νον εκ

πα ρα δο ξου ποι ει γαρ παν τα ο σα βου λε ε

ται Θε ος ω νων παν τε ξου ου σι ι ος

Υ περ α γι α Θε ο το κε σω σον η μας

Ε βλα στη η σας νυμ φο το κε Α αν να θε ο

φρον **Δ** εκ μη τρας παρ ελ πι ι δα και εξ ε παγ γε

λι **γ** ας **Δ** παρ θε νο φυ τον αν θος θε ο βλα στον α

γνει ας καλ λος **Δ** δι ο σε παν τες μα κα ρι ζο ο μεν **Δ**

ως ρι ζαν της ζω η ης η η μων **γ** **Δ**

**Δ** ο ξα Πα τρι ι και Υι ω και α γι ω Πνευ μα

τι **γ** **Δ**

**Δ** λ λο τρι ι ον τοις α νο ο μοις ε στι δο ξα

ζειν **Δ** την α ναρ χον Τρι α α δα Πα τε ρα και Υι ον

τε **γ** και το α γι ον Πνευ μα την α κτι στον παγ

κρα το ρι αν **Δ** δι ης ο συμ πας κο σμος η δρα α

σταί τω νευ μα τι του κρα τους αυ της <sup>β λ</sup>

**Κ**αι νυν και α ει και εις τους αι ω νας των αι

ωνων α μην <sup>γ δ</sup>

**Ε**χω ρη η σας εν γαστρι ι σου Παρ θε νο μη

τορ <sup>α δ</sup> τον ε να της Τρι α αδος Χρι στον τον ζω ο δο την <sup>γ δ</sup>

ον υ μνει πα σα κτι σις και τρε μου σιν οι α νω

θορ ο νοι <sup>α δ</sup> αυ τον δυ σω πει παν σε βα σμι ι ε σω

θη ναι τας ψυ χα ας η η μων <sup>γ δ</sup>

### Καταβασία θ' φδῆς

ἦχος πλ.δ'

**Μ**υστικὸς εἶ Θεοτόκε παράδεισος, ἀγεωργήτως βλαστήσασα Χριστόν, ὑφ' οὗ τὸ τοῦ Σταυροῦ, ζωηφόρον ἐν γῆ, πεφυτούργηται δένδρον. Δι' οὗ νῦν ὑψουμένου, προσκυνοῦντες αὐτὸν σὲ μεγαλύνομεν.

Ὁ διὰ βρώσεως τοῦ ξύλου, τῷ γένει προσγενόμενος θάνατος, διὰ Σταυροῦ κατήρηται σήμερον· τῆς γὰρ προμήτορος ἡ παγγενῆς κατάρρα διαλέλυται, τῷ βλαστῷ τῆς ἀγνῆς Θεομήτορος, ἦν πᾶσαι αἱ δυνάμεις τῶν οὐρανῶν μεγαλύνουσιν.

Σύντομος

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Ἀργή

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Σύντομος

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Πέτρου Λαμπαδαρίου

Ἦχος λ π ρι Νη

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.235#

**Μ** υ σ τ ι κ ο ς ε ι Θ ε ο τ ο κ ε Π α ρ α δ ε ι σ ο ς α γ ε  
 ω ρ γ η τ ω ς β λ α σ τ η σ α σ α Χ ρ ι σ τ ο ν υ φ ο υ τ ο τ ο υ Σ τ α υ ρ ο υ ζ ω  
 η φ ο ο ρ ο ν ε ν γ η π ε φ υ τ ο υ ο υ ρ γ η τ α ι δ ε ε ν δ ρ ο ν  
 δι ο υ ν υ ν υ ψ ο υ με ε ν ο υ π ρ ο σ κ υ ν ο υ ο υ ν τ ε ς α υ τ ο ν σ ε με  
 γ α λ υ ν ο ο μ ε ν λ υ ν ο μ ε ε ε ε ε ε ε εν

ἑτέρα

**Ο** δι α βρω σε ω ως του ξυ υ υ λου τω γε νει  
 προσ γε νο με νος θανατος <sup>γ</sup> δι α Σταυ ρου κα τη ηρ  
 γη ται ση μερον της γαρ προ μη το ρος η παγ γε νης  
 κα τα ρα δι ι α λε λυ ται <sup>γ</sup> τω βλα στω της α  
 γνη ης Θε ο μη τορος ην πα σαι αι δυ να α μεις των  
 ου ρα νω ων μεγα λυ νου σι ι ι ι <sup>γ</sup>

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

\*Ηχος λ π δι Νη χ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
 Μουσικόν Μηνολόγιον  
 2007 σ.295/1644\*

**Μ** υ στι κος ει Θε ο το κε πα ρα δει σος <sup>γ</sup> α  
 γε ωρ γη τως βλα στη σα σα Χρι στον <sup>Δ</sup> υφ ου το του



Σταυ ρου ζω η φο ο ρον εν γη πε φυ του ουρ γη ται

δεν δρον δι ου νυν υ ψου με ε νου προσ κυ νουν

τες αυτον σε μεγα λυ υ νο ο μεν λυ νο με ε ε εν

ἑτέρα

Ο δια βρω σε ω ως του ξυ υ υ λου τω

γε νει προσ γε νο με νος θα να τος δια Σταυ ρου κα

τηρ γη ται σημε ρον της γαρ προ μη το ρος η παγ γε

νης κα τα ρα δι α λε λυ ται τω βλα στω της α

γνη η ης Θε ο μη το ρος η ην πασαι αι δου

να μεις των ου ρα νω ων μεγα λυ νου σι ι ι ι

Ἄεγι

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Πέτρου Λαμπαδαρίου

Ἦχος λ π ς Νη

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Ειρμολόγιον 1903 σ.91#

**Μ** υ στι κος ει ει Θε ο το ο ο κε ε πα ρα δει σο ος

α γε ωρ γη τως βλα στη η η σα σα Χρι ι στον

υφ ου ου το του ου στα α αυ ρου ζω η φο ο ρον

ε εν γη πε φυ υ του ου ου ουρ γη ται αι αι

δε ε ε εν δρον δι ου ου νυν υ ψου με ε ε

ε νου προσ κυ νου ου ου ουουν τε ε ες α αυ τον

σε με γα λυ υ υ υ υ νο ο ο ο μεν

λυ υ υ υ υ νο ο ο ο με ε ε ε ε ε

ΕΝ

ἑτέρα

Ο δι α βρω ω σε ω ω ω ως του ξυ υ υ λου  
 ου τω γε νει ει προσ γε νο ο ο με ε νος θα να το ος δι  
 α στα αυ ρου κα τη η η η ρ γη ται αι ση με ε ρο  
 ον της γαρ προ μη το ρο ο ος η πα γ γε ε νης κα  
 τα ρα α δι ι α α λε λυ ται αι τω βλα α στω της α  
 γνη η η ης Θε ο ο μη το ρο ος ην πα  
 α σαι αι αι δυ υ να α α α μεις των ου ρα νω  
 ωων με γα λυ υ νου ου σι ι ι ι

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

**Μ** υ σ τ ι κ ο ς ε ι ε ι Θ ε ο τ ο ο ο κ ε ε Πα ρ α δει σο

ος α γ ε ω ρ γ η τ ω ς β λ α σ τ η η η σ α σ α Χ ρ ι ι

σ τ ο ν υ φ ο υ ο υ τ ο τ ο υ ο υ Σ τ α α α υ ρ ο υ ζ ω η φ ο ο

ρ ο ν ε ε ν γ η π ε φ υ τ ο υ ο υ ο υ ρ γ η τ α ι

αι αι δ ε ε ε ε ν δ ρ ο ν δι ο υ ο υ ν υ ν υ ψ ο υ

μ ε ε ε ε ν ο υ π ρ ο σ κ υ ν ο υ ο υ ο υ ο υ ν τ ε ε ς α

α α υ τ ο ν \* σ ε μ ε γ α λ υ υ υ υ ν ο ο ο ο μ ε ν

\* τὸ τέλος  
σ ε ε ε μ ε γ α λ υ ν ο ο μ ε ε ε ε ν

ἑτέρα

**Χ** Ο δι α β ρ ω σ ε ω ω ω ω ς τ ο υ ξ υ υ υ

λου ου <sup>ν</sup> <sub>δλ</sub> τω γε νει ει προσ γε νο <sup>σ</sup> <sub>δλ</sub> με νος θα α να α

τος <sup>σ</sup> <sub>δλ</sub> δι ι α Στα αυ ρου κα τη η ηρ γη η ται ση με ρο

ον <sup>ν</sup> <sub>δλ</sub> της γαρ προ μη το ρο ο ος η παγ γε ε νης κα

τα α α ρα δι α α λε λυ υ ται αι <sup>Δ</sup> <sub>δλ</sub> τω βλα

στω της α γνη η ης Θε ε ο μη το ρο ος <sup>ν</sup> <sub>δλ</sub> ην πα α σαι

αι αι δυ υ να α α α μεις <sup>Δ</sup> <sub>δλ</sub> \* των ου ρα νω ω ων

με γα λυ υ νου ου <sup>χ</sup> <sub>δλ</sub> σι ι ι ι <sup>ν</sup> <sub>δλ</sub>

\* τὸ τέλος <sup>Δ</sup> <sub>δλ</sub> των ου ρα α α νω ων <sup>ν</sup> <sub>δλ</sub> με γα λυ υ νου

<sup>χ</sup> <sub>δλ</sub> ου <sup>ν</sup> <sub>δλ</sub> σι ι ι ι

# Εἰς τὴν Ὑψωσιν τοῦ Τιμίου Σταυροῦ (προεόρτιες/μεθεόρτιες)

1/8, 6-13/8, 24/8-21/9

ἤχος πλ.δ'

α **Σ**ταυρὸν χαράξας Μωσῆς, ἐπ' εὐθείας ῥάβδῳ, τὴν Ἐρυθρὰν διέτεμε, τῷ Ἰσραὴλ πεζεύσαντι, τὴν δὲ ἐπιστρεπτικῶς, Φαραὼ τοῖς ἄρμασι, κροτήσας ἤνωσεν, ἐπ' εὐρους διαγράψας τὸ ἀήττητον ὄπλον. Διὸ Χριστῷ ἄσωμεν τῷ Θεῷ ἡμῶν, ὅτι δεδόξασται.

γ **Ρ**άβδος εἰς τύπον τοῦ μυστηρίου παραλαμβάνεται· τῷ βλαστῷ γὰρ προκρίνει τὸν ἱερέα. Τῇ στερειουόσῃ δὲ πρώην, Ἐκκλησίᾳ νῦν ἐξήνθησε, ξύλον Σταυροῦ, εἰς κράτος καὶ στερέωμα.

δ **Εἰ**σακήκοα Κύριε, τῆς οἰκονομίας σου τὸ μυστήριον, κατενόησα τὰ ἔργα σου, καὶ ἐδόξασά σου τὴν Θεότητα.

ε **Ω** τρισμακάριστον ξύλον! ἐν ᾧ ἐτάθη Χριστός, ὁ βασιλεὺς καὶ Κύριος, δι' οὗ πέπτωκεν ὁ ξύλῳ ἀπατήσας, τῷ ἐν σοὶ δελεασθείς, Θεῷ τῷ προσπαγέντι σαρκί, τῷ παρέχοντι, τὴν εἰρήνην ταῖς ψυχαῖς ἡμῶν.

ς **Ν**οτίου θηρὸς ἐν σπλάγχνοις, παλάμας, Ἰωνᾶς, σταυροειδῶς διεκπετάσας, τὸ σωτήριον πάθος προδιετύπου σαφῶς. Ὅθεν τριήμερος ἐκδύς, τὴν ὑπερκόσμιον ἀνάστασιν ὑπεζωγράφησε, τοῦ σαρκί προσπαγέντος Χριστοῦ τοῦ Θεοῦ, καὶ τριημέρῳ ἐγέρσει τὸν κόσμον φωτίσαντος.

ζ **Ἐ**κνοον πρόσταγμα τυράννου, δυσσεβοῦς λαοὺς ἐκλόνησε, πνέον ἀπειλῆς, καὶ δυσφημίας θεοστυγοῦς. Ὅμως τρεῖς παῖδας οὐκ ἐδειμάτωσε, θυμὸς θηριώδης, οὐ πῦρ βρόμιον· ἀλλ' ἀντηχοῦντι δροσοβόλῳ πνεύματι, πυρὶ συνόντες ἔψαλλον, ὁ ὑπερύμνητος τῶν πατέρων καὶ ἡμῶν, Θεὸς εὐλογητὸς εἶ.

Αἰνοῦμεν, εὐλογοῦμεν καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον.

η **Εὐ**λογεῖτε παῖδες, τῆς Τριάδος ἰσάριθμοι, δημιουργὸν πατέρα Θεόν, ὑμνεῖτε τὸν συγκαταβάνα Λόγον, καὶ τὸ πῦρ εἰς δρόσον μεταποιήσαντα, καὶ ὑπερυψοῦτε, τὸ πᾶσι ζωὴν παρέχον, Πνεῦμα πανάγιον εἰς τοὺς αἰῶνας.

Σύντομοι

Ἄργαί

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Πέτρου Λαμπαδαρίου

Σύντομοι

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

ψδὴ α'

Ἦχος λ π δὲ

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.225#

**Κ**ταυ ρον χα ρα ξας Μω σης επ ευ θει ας ρα βδω την

Ε ρυ θραν δι ε τε με τω Ισ ρα ηλ πεζουσαν τι <sup>ν</sup>δὲ την

δε ε πι στρε πτι κως Φα ρα ω τοις αρ μα σικρο τη

σας η νω σεν <sup>ρ</sup>δὲ επ ευ ρους δι α γραψα α ας το α ητ τη

τον ο ο πλον δι ο Χρι στω α σωμεν <sup>ρ</sup>δὲ τω Θε ω

η μων ο τι δε δο ξα σται <sup>ρ</sup>δὲ <sup>ρ</sup>δὲ  
<sup>ν</sup>δὲ  
ψδὴ γ' <sup>δ</sup>δὲ

**Ρ**α βδος εις τυ υ ποντου μω στη ρι ου πα ρα λαμ

βα νε ε ται τω βλα στω γαρ προ κρι νει τον ι ε ρε

ε α <sup>ν</sup> τη στει ρευ ου ση δε πρω ην Εκ κλη σι α νυν

εξ ην θη η σε <sup>Δ</sup> χορός α' ξυ λον Σταυ ρου εις κρα τος και στε ρε

ω ω μα <sup>ν</sup> ῶδὴ δ' <sup>Γ</sup>η

Ε ι σα κη η κο α Κυ ρι ε της οι κο νο μι ι ας

σου το μυ στη ρι ον κα τε νο η σα τα ερ γασου και ε

δο ξα σα σου την Θε ο τη τα <sup>Γ</sup> ῶδὴ ε' <sup>ε</sup>ν <sup>Δ</sup>

Ω τρις μα κα ρι ι στον ξυ υ υ λον εν ω ε τα

α α θη Χρι στος ο βα σι λευς και Κυ ρι ος <sup>ν</sup> δι ου

πε πτω κεν ο ξυ λω α πα τη η σας <sup>Δ</sup> τω εν σοι δε λε

α σθεις Θε ω τω προσ πα γε εν τι σα ρ κι <sup>Δ</sup> τω πα



ρε εχοοντι την ει ρη νηνταις ψυχαις η ημων <sup>ν</sup> <sub>δ</sub> ῶδής'

**Ν**ο τι ου θη ρο ος εν σπλα α αγχοις πα λα μας

Ι ω νας σταυ ρο ει δως δι εκ πε τα α σας <sup>ν</sup> <sub>δ</sub> το

σω τη ρι ον πα α θος προ δι ε τυ υ που σα φως

ο ο θεν τρι η μερος εκ δυς την υ περ κο σμι ον α

να στα σιν υ πε ζω γρα φη η σε <sup>Δ</sup> <sub>δ</sub> του σαρ κι προσ πα

γεν τος Χρι στου ουου του Θε ου και τρι η με ρω ε γε ε

ερσει τον κο ο σμον φω τι σα αντος <sup>ν</sup> <sub>δ</sub> ῶδής'

**Ε**κ νο ον προ στα γμα τυ ραν νου δυς σε

βους λα ους ε κλο νη σε <sup>6</sup> <sub>λ</sub> πνε ον α πει λης και δυς φη μι

ι α ας θε ο στυ γους ο μως τρεις παι δας ουκ ε δει μα

τω ω ω σε θυ μο ος θη ρι ω δης ου πυρ βρο μι ον

αλλ αν τη χουν τι δρο σο βο λω Πνευ μα α τι πυ ρι συν

ον τες ε ψα α αλ λον ο υ περ υ μνη η το ος

των πα τε ρων και η μων Θε ος ευ λο γη το ος ει

ᾠδὴ γ'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσκυ νου ου με εν τον

Κυ ρι ον

Ε υ λο γει ει τε Παι αι αι δες της Τρι α δοσι σ α

ριθμοιδη μι ουρ γον πα τε ρα Θε ον υ μνει ει τε τον

συγ κα τα βαντα λο ο ο γον και το πυρ εις δρο ο σον

με τα ποι ησαντα και υ περ υ ψου τε το πα α σι

ζω ην πα ρε ε χον Πνε ευ μα παν α γι ον εις τους

αι ω ω να α α ας

### Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

ὠδὴ α'

Ἦχος λ̣ π̣ ρ̣ ρ̣ ρ̣ ρ̣

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.292/1641\*

ταυ ρον χα ρα ξας Μω σης επ ευ θει ας ρα

βδω την Ε ρυ θραν δι ε τε με τω Ισ ρα ηλ πε ζευ σαν

τι την δε ε πι στρε πτι κως Φα ρα ω τοις αρ

μα σι κρο τη σας η νω σεν επ ευ ρους δι α γρα ψα ας

το α ητ τη τον ο πλον δι ο Χρι στω α σω μεν

τω Θε ω η μων ο τι δε δο ξα σται

**Ρ**α βδος εις τυ πον του μυ στη ρι ου πα ρα λαμ βα

νε ε ται τω βλα στω γαρ προ κρι νει τον ι ε ρε

α τη στει ρευ ου ση δε πρω ην Εκ κλη σι α νυν

εξ ην θη σε χουδός α ξυ λον Σταυ ρου εις κρα τος και στε ρε ε

ω ω μα

**Ε**ισ α κη κο α Κυ ρι ε της οι κο νο μι ι ας σου

το μυ στη ρι ον κα τε νο η σα τα ερ γασου και ε

δο ξα σα σου την Θε ο τη τα

**Ω** τρις μα κα ρι ι στον ξυ υ υ λον εν ω ε

τα θη Χρι στος ο βα σι λευς και Κυ ρι ος δι ου

πε πτω κεν ο ξυλω α πα τη η σας τω εν σοι δε

λε α σθεις Θε ω τω προσ πα γεν τι σαρ κι τω πα ρε

χο ον τι την ει ρη νην ταις ψυ χαις η η μων ωδής!

**N** ο τι ου θη ρο ος εν σπλα α αγ χνοις πα λα μας

Ι ω νας σταυ ρο ει δως δι εκ πε τα σας το σω

τη ρι ον πα α θος προ δι ε τυ που σα φως ο ο θεν τρι

η μερος εκ δυς την υ περ κο σμι ον α να στα σιν υ

πε ζω γρα φη η σε του σαρ κι προσ πα γεν τος Χρι

σου του Θεου και τριημερω γεερσει

τον κοοσμον φωτισα αντος ωδηζ'

**Ε**κνον προταγμα τυρανου δυσσεβους

λαους εκλονησε ελ πνεοναπειλης και δυσφημι

ιαας θεοστυγους νδ ομωσ τρεις παιδας ουκ εδει

ματωσε δ θυμοσθηριωδης ου πυρ βρομιον νδ αλλ

αντηχουντιδροσοβωλω Πνευμαατιπυρι συν

οντες εψαλλον δ ουπερ υμνηητοσ των πα

τερων και ημων Θεοσ ευλογητος ει νδ

**Α**ι νου μεν ευλογου μεν και προσκυνου μεν

τον Κυριον

ᾠδὴ η'

Ευλογειετε παιαιαιδες της Τριαδος ισα

ριθμοιδημι ουργον Πατερα Θεον υμνειετε

τον συκαταβαντα Λοοογον και το πυρ

ειςδροοσον μεταποιησαντα και υπερυψου

τετοπαασιζωην παρεεχον Πνευμαπαναγιονεις

τουςαιωωνααας

### Αργαί

Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου2

ᾠδὴ α'

Ἦχος λ π δὲ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.287/1636\*

σταυρον χαραξαξας Μωωση η ης επευ

θειειειει ααα ρα ααβδω την Ερυθραν

διε τεε μετω Ισραη η ηλπε ζευσαν τι

ιτην δε εεε πι στρεπτι ικως Φαρω

τοι οισ αρμαασι κροτη ησας η ηνωωσεν επ

ευρους διααγρα ααψας το αητη τον ο

ο οπλον δι ο ο Χριστωω αασωωμεν τω

Θεω ημων ο ο οτι δε δοοξαασαι φδηγ'

Ρααβδος ει εις τυυπον του ουμυστη η ηριου

πααρααλααμβααα νεεεε εται τω



βλα στω ω ω γαρ προ ο ο χρι ι ι νει το ον ι ε

ε ε ρε ε ε ε α τη στει ρευ ου ση δε πρω

η ην Εκ κλη η σι ι α νυ υν ε εξ η η ην θη η

η η σε ξυ υ υ υ λο ον Στα α αυ ρου

εις κρα α τος και στε ρε ε ω ω μα

στε ρε ε ε ε ε ω ω ω ω μα

φδὴ δ'

Εισ α κη η κο α Κυ υ ρι ι ε τη ης οι οι

χο νο μι ι ι ι ας σου το ο μυ υ στη ρι ι ον

κα τε νο η σα α τα ερ γα α σου ου και ε

δο ξα σα σου τη ην Θε ο ο τη η τα

φδὴ ε'

**Ω** τρις μα κα ρι ι ι ι στον ξυ υ υ λο ον εν

ω ε τα α α θη Χρι ι στος ο βα σι λε ευσ και

αι Κυ ρι ι ο ος δι ου ου πε πτω ω κεν ο

ξυ υ λω α α πα α τη η η η σας τω εν

σοι οι δε λε ε α α α σθεις Θε ω ω ω τω

ω προ οσ πα α γε ε εν τι ι σα α αρ κι

τω πα ρε ε ε χο ο ο ον τι ι την ει ρη η νη νταις

ψυ χαι αι αις η η η η μων

**N** ο τι ι ι ου θη ρο ος εν σπλα α αγ χνοι

οις πα λα μα ας Ι ω ω νας σταυ ρο ει δω ω ως δι

ε εκ πε ε τα α α α α σας α το σω τη η ρι ι

ον πα α α α α α θος προ δι ε τυ υ υ

που σα φω ως ο ο ο θεν τρι η η η με ρος

ε εκ δυς την υ πε ερ κο σμι ι ον α να στα α σιν

υ υ πε ε ζω ω γρα α α φη η η η σε του

σαρ κι ι ι προσ πα α γε εν τος Χρι στου ου του Θε ε

ου και τρι η με ρω ω ε ε γε ε ερ σει ει

τον κο ο ο σμον φω τι ι ι σα α α αν τος

ε εκ νο ο ον προ οσ τα α γμα τυ ρα

αν νου δυ υσ σε βου ου ουους λα ους ε ε ε

κλο νη η σε ε πνε ε ο ον α πει ει ει λη ης και

δυσ φη μι ι ι ι α ας θε ο στυ γου ους ο ο μως

τρει εις παι αι δας ου ουκ ε ε δει ει μα α α τω

ω ω ω σε θυ μο ο ο ο ος θη ρι ω ω δη

ης ου ου πυ υρ βρο μι ο ον αλλ αν τη χου ου ου ουν τι

δρο σο βο ο λω ω Πνε ευ μα α τι ι πυ ρι συν

ο ον τε ες ε ε ε ψα α α α λ λον ο υ περ

υ μνη η το ος των πα τε ε ρων και αι η η η μων Θε

ε ος ε ευ λο γη η η το ο ο ος ει

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου ου ου

ου με εν τον Κυ ρι ο ον

ὠδὴ ἡ'

Ευ λο γει ει ει ει τε παι αι αι δε ες της

Τρι α α α α δος ι ι σα ρι ι θμοι δη μι ουρ γον

Πα α τε ε ε ε ε ρα α Θε ε ε ον ου μνει

ει τε τον συ γ κα τα βαν τα α Λο ο ο γον και το

ο ο πυρ εις δρο ο σον με ε τα α ποι η σαν τα α και

υ περ υ υ ψου ου ου ου τε το ο πα σι ι ζω η

ην πα α ρε ε ε ε χον Πνευ ευ μα παν α γι ι ονεις τους

αι ω ω να α α ας

### Τιμιωτέρα

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.


- ∴ **Μεγαλύνει** ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἠγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ σωτῆρί μου. 46-47
- ∴ Ὅτι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48
- ∴ Ὅτι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50
- ∴ Ἐποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσκόρπισεν ὑπερηφάνους διανοίᾳ καρδίας αὐτῶν. 51
- ∴ Καθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξαπέστειλε κενούς. 52-53
- ∴ Ἀντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55
- Τὴν Τιμιωτέραν τῶν Χερουβίμ, καὶ ἐνδοξοτέραν ἀσυγκρίτως τῶν Σεραφίμ, τὴν ἀδιαφθόρως Θεὸν Λόγον τεκοῦσαν, τὴν ὄντως Θεοτόκον, σὲ μεγαλύνομεν.**

Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου


Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

## Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου








- ∴ **Μεγαλύνει** ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἠγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ σωτῆρί μου. 46-47
- ∴ Ὅτι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48
- ∴ Ὅτι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ Δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50
- ∴ Ἐποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσκόρπισεν ὑπερηφάνους διανοίᾳ καρδίας αὐτῶν. 51
- ∴ Καθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξαπέστειλε κενούς. 52-53
- ∴ Ἀντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55


**Τ** ην τι μι ω τε ραντων Χε ρου βιμ  και εν δο  

ξο τε ραν α συγ κρι τως των Σε ραφιμ  την α δι α  

φθο ρως Θε ον λο ο γον τε κου σαν  την ον τως Θε  

ο το κον σε ε μεγα λυ υ νο ο μεν 

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη


**Μ**  ε γα λυ νει η ψυ χη μου τον Κυ ρι  

ον  και η γαλ λι α σε το  πνευ μα μου ε πι  

τω Θε ω ω ω τω σω τη ρι μου 

Την τιμιωτεραν των Χερουβιμ και ενδο

ξοτεραν ασυγκριιιτως των Σεραφιμ την α

διαφθορως Θεον Λογον τεκουσαν την ον

τως Θεο τον σεεμεγαλυνοομεν

Οτιεπεβλεψενεπιτηνταπεινωσιν

τηςδουληςαυτουιδουγαραποτου νυνμακαρι

ουσιμεπασαιαιγενεαι

Την τιμιωτεραν των Χερουβιμ και ενδο

ξοτεραν ασυγκριιιτως των Σεραφιμ την α

διαφθορως Θεον Λογον τεκουσαν την ον



τως Θεοτοκόν σε εμεγαλυυνοομέν

Οτι εποίησε μοι μεγαλειόδυνα

τος και αγιοντο ονομα αυτου και το

ελεος αυτου εις γενεαν και γενεαν τοις φοβου

μενοισ αυτον

Την τιμιωτεραν των Χερουβιμ και ενδο

ξοτεραν ασυγκριιιτως των Σεραφιμ την α

διαφθορας Θεον Λογον τεκουουσαν την ον

τως Θεοτοκόν σε εμεγαλυυνοομέν

Εποίησε κρατος εν βραχιονι αυ

του δι εσχορ πι σεν υ περ η φα νους δι α νοι

α καρ δι ας αυτων

Τ ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ και εν δο

ξο τε ραν α συγ κρι ι ι τως των Σε ρα φιμ την α

δι α φθο ρως Θε ον Λο ο γον τε κου ουσαν την ον

τως Θε ο το κον σε ε μεγα λυ υ νο ο μεν

Κ α θει λε δυ να στας α πο θρο νων και υ

υ ψω σε τα πει νους πει νων τας εν ε πλη σεν α γα

θων και πλου τουν τας εξ α πε στει λε κε νους

Τ ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ και εν δο

ξο τε ραν α συγ χρι τως των Σε ρα φιμ την α δι

α φθο ρως Θε ον Λο ο γον τε κου σαν την ο ο ον

τως Θε ο το κον σε ε μεγα λυ υ νο ο μεν

Α ν τε λα βε το Ισ ρα ηλ παι δος αυ του

μνη σθη ναι ε λε ους κα θως ε λα λη σε προς τους

πα τε ρας η μων τω Α βρα αμ και τω σπερ μα τι

αυ του ε ως αι ω νος

Τ ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ και εν δο

ξο τε ραν α συγ χρι τως των Σε ρα φιμ την α δι

α φθο ρως Θε ον Λο ο γον τε κου σαν την ο ο ον

τως Θεοτοκον σε εμεγαλυνοομεν

### Καταβασία Θ' φδής

ἦχος πλ.δ'

Μυστικὸς εἶ Θεοτόκε παράδεισος, ἀγεωργήτως βλαστήσασα Χριστόν, ὑφ' οὗ τὸ τοῦ Σταυροῦ, ζωηφόρον ἐν γῆ, πεφυτούργηται δένδρον. Δι' οὗ νῦν ὑψουμένου, προσκυνοῦντες αὐτὸν σὲ μεγαλύνομεν.

Ὁ διὰ βρώσεως τοῦ ξύλου, τῷ γένει προσγενόμενος θάνατος, διὰ Σταυροῦ κατήρηται σήμερον· τῆς γὰρ προμήτορος ἡ παγγενῆς κατάρα διαλέλυται, τῷ βλαστῷ τῆς ἀγνῆς Θεομήτορος, ἣν πᾶσαι αἱ δυνάμεις τῶν οὐρανῶν μεγαλύνουσιν.

Σύντομος

Ἀργή

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

### Σύντομος

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Πέτρου Λαμπαδαρίου

ἦχος λ π δλ Νη

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.235#

Μυστικός εἰ Θεοτοκε Παράδεισος ἀγεωργήτως βλαστήσασα Χριστόν ὑφ' οὗ τοῦ Σταυροῦ ζωηφόρον ἐν γῆ πεφυτούργηται δένδρον

δι ου νυν υ ψου με ε νου προσ κυ νου ουντες αυ τον σε με

γα \*λυ νο ο μεν <sup>γ</sup> <sub>δλ</sub>

\*λυ νο με ε ε ε ε ε εν <sup>γ</sup> <sub>δλ</sub>

ἑτέρα

Ο δι α βρω σε ω ως του ξυ υ υ λου τω γε νει

προσ γε νο με νος θανατος <sup>γ</sup> <sub>δλ</sub> δι α Σταυ ρου κα τη ηρ

γη ται ση μερον της γαρ προ μη το ρος η παγ γε νης

κα τα ρα δι ι α λε λυ ται <sup>γ</sup> <sub>δλ</sub> τω βλα στω της α

γνη ης Θε ο μη το ρος ην πα σαι αι δυ να α μεις των

ου ρα νω ων μεγα λυ νου σι ι ι ι <sup>γ</sup> <sub>δλ</sub>

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Ἦχος λ π δλ Νη χ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.295/1644\*

**Μ** υ σ τ ι κ ο ς ε ι Θ ε ο τ ο κ ε π α ρ α δ ε ι σ ο ς α

γ ε ω ρ γ η τ ω ς β λ α σ τ η σ α σ α Χ ρ ι σ τ ο ν υ φ ο υ τ ο τ ο υ

Σ τ α υ ρ ο υ ζ ω η φ ο ο ρ ο ν ε ν γ η π ε φ υ τ ο υ ο υ ρ γ η τ α ι

δ ε ν δ ρ ο ν δ ι ο υ ν υ ν υ ψ ο υ μ ε ε ν ο υ π ρ ο σ κ υ ν ο υ ν

τ ε ς α υ τ ο ν σ ε μ ε γ α λ υ υ ν ο ο μ ε ν

λ υ ν ο μ ε ε ε ε ν

ἑτέρα

**Χ** ο δ ι α β ρ ω σ ε ω ω ς τ ο υ ξ υ υ υ λ ο υ τ ω

γ ε ν ε ι π ρ ο σ γ ε ν ο μ ε ν ο ς θ α ν α τ ο ς δ ι α Σ τ α υ ρ ο υ κ α

τ η ρ γ η τ α ι σ η μ ε ρ ο ν τ η ς γ α ρ π ρ ο μ η τ ο ρ ο ς η π α γ γ ε

ν η ς κ α τ α ρ α δ ι α λ ε λ υ τ α ι τ ω β λ α σ τ ω τ η ς α

γνη η ης Θε ο μη το ρος η ην πασαι αι δυ  
να μεις των ου ρα νω ων μεγα λυ νου σι ι ι ι

Ἄρχη

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Πέτρου Λαμπαδαρίου

Ἦχος λ π ς Νη

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εὐμολόγιον 1903 σ.91#

Μ υ στι κο ς ει ει Θε ο το ο ο κε ε πα ρα δει σο ο ς  
α γε ω ρ γη τω ς βλα στη η η σα σα Χρι ι στον  
υ φ ου ου το του ου στα α αυ ρου ζω η φο ο ρον  
ε εν γη πε φυ υ του ου ου ου ρ γη ται αι αι  
δε ε ε εν δρον δι ου ου νυν υ ψου με ε ε  
ε νου προσ κυ νου ου ου ου ουν τε ε ε ς α αυ τον

σε με γα λυ υ υ υ υ νο ο ο ο μεν <sup>ν</sup> ρ

\* λυ υ υ υ υ νο ο ο ο με ε ε ε ε ε

εν <sup>ν</sup> ρ

έτέρα

Ο δι α βρω ω σε ω ω ω ως του ξυ υ υ λου

ου τω γε νει ει προσ γε νο ο ο με ε νος θα να το ος <sup>ν</sup> ρ δι

α στα αυ ρου κα τη η η η ρ γη ται αι ση με ε ρο

ον <sup>Δ</sup> ρ της γαρ προ μη το ρο ο ος η παγ γε ε νης κα

τα ρα α δι ι α α λε λυ ται αι <sup>ν</sup> ρ τω βλα α στω της α

γνη η η ης Θε ο ο μη το ρο ος <sup>Δ</sup> ρ ην πα

α σαι αι αι δυ υ να α α α μεις <sup>Δ</sup> ρ των ου ρα νω



ων με γα λυ υ νου ου σι ι ι ι γ

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Πέτρου Λαμπαδαρίου

Ἦχος λ π ς Νη ς

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.291/1640\*

Μ υ στι κο ς ει ει Θε ο το ο ο κε ε Πα ρα δει σο

ος γ α γε ωρ γη τω ς βλα στη η η σα σα Χρι ι

στον Δ υ φ ου ου το του ου Στα α αυ ρου ζω η φο ο

ρον ε εν γη πε φυ του ου ου ουρ γη ται

αι αι δε ε ε εν δρον γ δι ου ου νυν υ ψου

με ε ε ε νου Δ προσ κυ νου ου ου ουουν τε ε ς α

α αυ τον \* σε με γα λυ υ υ υ νο ο ο ο μεν γ

\* τὸ τέλος

σε ε ε με γα λυ νο ο με ε ε εν

ἑτέρα

Ο δι α βρω ω σε ω ω ω ως του ξυ υ υ

λου ου τω γε νει ει προσ γε νο με νος θα α να α

τος δι ι α Στα αυ ρου κα τη η ηργη η ται ση με ρο

ον της γαρ προ μη το ρο ο ος η παγ γε ε νης κα

τα α α ρα δι α α λε λυ υ ται αι τω βλα

στω της α γνη η ης Θε ε ο μη το ρο ος ην πα α σαι

αι αι δυ υ να α α α μεις των ου ρα νω ω ων

με γα λυ υ νου ου σι ι ι ι

\* τὸ τέλος

των ου ρα α α νω ων γ' η με γα λυ υ νου

ου σι ι ι ι γ' η

# Εἰς τὴν Ὑψωσιν τοῦ Τιμίου Σταυροῦ

14 Σεπτεμβρίου

ἤχος πλ.δ'

- α **Σ**ταυρὸν χαράξας Μωσῆς, ἐπ' εὐθείας ῥάβδῳ, τὴν Ἐρυθρὰν διέτεμε, τῷ Ἰσραὴλ πεζεύσαντι, τὴν δὲ ἐπιστρεπτικῶς, Φαραὼ τοῖς ἄρμασι, κροτήσας ἤνωσεν, ἐπ' εὖρους διαγράψας τὸ ἀήττητον ὄπλον. Διὸ Χριστῷ ἄσωμεν τῷ Θεῷ ἡμῶν, ὅτι δεδόξασται.
- γ **Ρ**άβδος εἰς τύπον τοῦ μυστηρίου παραλαμβάνεται· τῷ βλαστῷ γὰρ προκρίνει τὸν ἱερέα. Τῇ στερειουσίᾳ δὲ πρῶην, Ἐκκλησίᾳ νῦν ἐξήνηθησε, ξύλον Σταυροῦ, εἰς κράτος καὶ στερέωμα.
- δ **Εἰ**σακήκοα Κύριε, τῆς οἰκονομίας σου τὸ μυστήριον, κατενόησα τὰ ἔργα σου, καὶ ἐδόξασά σου τὴν Θεότητα.
- ε **Ω** τρισμακάριστον ξύλον! ἐν ᾧ ἐτάθη Χριστός, ὁ βασιλεὺς καὶ Κύριος, δι' οὗ πέπτωκεν ὁ ξύλῳ ἀπατήσας, τῷ ἐν σοὶ δελεασθείς, Θεῷ τῷ προσπαγέντι σαρκί, τῷ παρέχοντι, τὴν εἰρήνην ταῖς ψυχαῖς ἡμῶν.
- ς **Ν**οτίου θηρὸς ἐν σπλάγχνοις, παλάμας, Ἰωνᾶς, σταυροειδῶς διεκπετάσας, τὸ σωτήριον πάθος προδιετύπου σαφῶς. Ὅθεν τριήμερος ἐκδύς, τὴν ὑπερκόσμιον ἀνάστασιν ὑπέζωγράφησε, τοῦ σαρκί προσπαγέντος Χριστοῦ τοῦ Θεοῦ, καὶ τριημέρῳ ἐγέρσει τὸν κόσμον φωτίσαντος.
- ζ **Ἐ**κνοον πρόσταγμα τυράννου, δυσσεβοῦς λαοὺς ἐκλόνησε, πνέον ἀπειλῆς, καὶ δυσφημίας θεοστυγοῦς. Ὅμως τρεῖς παῖδας οὐκ ἐδειμάτωσε, θυμὸς θηριώδης, οὐ πῦρ βρόμιον· ἀλλ' ἀντηχοῦντι δροσοβόλῳ πνεύματι, πυρὶ συνόντες ἔφαλλον, ὁ ὑπερύμνητος τῶν πατέρων καὶ ἡμῶν, Θεὸς εὐλογητὸς εἶ.
- Αἰ**νοῦμεν, εὐλογοῦμεν καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον.
- η **Εὐ**λογεῖτε παῖδες, τῆς Τριάδος ἰσάριθμοι, δημιουργὸν πατέρα Θεόν, ὑμνεῖτε τὸν συγκαταβάντα Λόγον, καὶ τὸ πῦρ εἰς δρόσον μεταποιήσαντα, καὶ ὑπερυψοῦτε, τὸ πᾶσι ζωὴν παρέχον, Πνεῦμα πανάγιον εἰς τοὺς αἰῶνας.

Σύντομοι

Ἄργαί

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Πέτρου Λαμπαδαρίου

Σύντομοι

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

**C** ταυ ρον χα ρα ξας Μω σης επ ευ θει ας ρα βδω την

Ε ρυ θραν δι ε τε με τω Ισ ρα ηλ πεζουσαν τι ς την

δε ε πι στρε πτι κως Φα ρα ω τοις αρ μα σι κρο τη

σας η νω σεν ς επ ευ ρους δι α γραψα α ας το α ητ τη

τον ο ο πλον δι ο Χρι στω α σωμεν ς τω Θε ω

η μων ο τι δε δο ξα σται ς ς  
ψδὴ γ' ς

**P** α βδος εις τυ υ ποντου μω στη ρι ου πα ρα λαμ

βα νε ε ται τω βλα στω γαρ προ κρι νει τον ι ε ρε

ε α ς τη στει ρευ ου ση δε πρω ην Εκ κλη σι α νυν

ἐξ ἠν θη ἡ σε <sup>Δ</sup> χορὸς α' ξυ λον Σταυ ρου εις κρα τος και στε ρε

ω ω μα <sup>γ</sup> ῥή <sup>ῥ</sup> ῥή δ'

Εἰ σα κη ἡ κο α Κυ ρι ε της οι κο νο μι ι ας

σου το μυ στη ρι ον κα τε νο ἡ σα τα ερ γα σου και ε

δο ξα σα σου την Θε ο τη τα <sup>ῥ</sup> ῥή <sup>ῥ</sup> ῥή δ'

Ω τρις μα κα ρι ι στον ξυ υ υ λον εν ω ε τα

α α θη Χρι στος ο βα σι λευς και Κυ ρι ος <sup>γ</sup> ῥή δι ου

πε πτω κεν ο ξυ λω α πα τη ἡ σας <sup>Δ</sup> ῥή τω εν σοι δε λε

α σθεις Θε ω τω προσ πα γε εν τι σα ρ κι <sup>Δ</sup> ῥή τω πα

ρε ε χο ον τι την ει ρη νη ταις ψυ χαις ἡ ἡ μων <sup>γ</sup> ῥή <sup>ῥ</sup> ῥή δ'

**Ν** ο τι ου θη ρο ος εν σπλα α αγχνοις πα λα μας

Ι ω νας σταυ ρο ει δως δι εκ πε τα α σας <sup>γ</sup> το

σω τη ρι ον πα α θος προ δι ε τυ υ που σα φως

ο ο θεν τρι η με ρος εκ δυς την υ πε ρ κο σμι ον α

να στα σιν υ πε ζω γρα φη η σε <sup>Α</sup> του σα ρ κι προσ πα

γεν τος Χρι στου ουου του Θε ου και τρι η με ρω ε γε ε

ερσει τον κο ο σμον φω τι σα αντος <sup>γ</sup> ὠδὴ ζ'

**Ε** εκ νο ον προ στα γμα τυ ραν νου δυσ σε

βους λα ους ε κλο νη σε <sup>β</sup> πνε ον α πει λης και δυσ φη μι

ι α ας θε ο στυ γους <sup>γ</sup> ο μως τρεις παι δας ουκ ε δει μα

τω ω ω σε **Α** θυ μο ος θη ρι ω δης ου πυρ βρο μι ον **ν**

αλλ αν τη χουν τι δρο σο βο λω Πνευ μα α τι πυ ρι συν

ον τες ε ψα α αλ λον **Α** ο υ περ υ μνη η το ος

των πα τε ρων και η μων Θε ος ευ λο γη το ος ει **ν**

ᾠδὴ γ'

**Α** ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσκυ νου ου με εν τον

Κυ ρι ον **ν**

**Ε** υ λο γει ει τε Παι αι αι δες της Τρι α δοσι σ α

ριθμοι δε μι ουρ γον πα τε ρα Θε ον **ν** υ μνει ει τε τον

συ γ κα τα βαν τα λο ο ο γον **ε** και το πυρ εις δρο ο σον



με τα ποιησαντα και υπερψουτε το παασι

ζωην παρεχον Πνευμα παναγιον εις τους

αιωνων ααας

### Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

ᾠδὴ α'

Ἦχος λ̣ ρ̣ δ̣ ρ̣

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.292/1641\*





σταυρον χαραξας Μωσης επευθειας ρα

βδωτην Ερυθραν διετεμετω Ισραηλ πεζευσαν

τι την δε επιστρεπτικως Φαρωτοις αρ


μασι κροτησας ηνωσεν επευρους διαγραψαας


τοαητητον οπλον διοχριστωασωμεν


τω Θε ω η μων ο τι δε δο ξα σται     φδὴ γ'

**Ρ** α βδος εις τυ πον του μω στη ρι ου πα ρα λαμ βα



νε ε ται τω βλα στω γαρ προ κρι νει τον ι ε ρε





α  τη στει ρευ ου ση δε πρω ην Εκ κλη σι α νυν


εξ ην θη σε  χορός α' ξυ λον Σταυ ρου εις κρα τος και στε ρε ε

ω ω μα     φδὴ δ'

**Ε** ισ α κη κο α Κυ ρι ε της οι κο νο μι ι ας σου

το μω στη ρι ον  κα τε νο η σα τα ερ γα σου  και ε

δο ξα σα σου την Θε ο τη τα     φδὴ ε'

**Ω** τρις μα κα ρι ι στον ξυ υ υ λον  εν ω ε

τα θη Χρι στος ο βα σι λευς και Κυ ρι ος δι ου

πε πτω κεν ο ξυ λω α πα τη η σας τω εν σοι δε

λε α σθεις Θε ω τω προσ πα γεν τι σαρ κι τω πα ρε

χο ον τι την ει ρη νην ταις ψυ χαις η η μων ψδής'

**N** ο τι ου θε ρο ος εν σπλα α αγ χνοις πα λα μας

Ι ω νας σταυ ρο ει δως δι εκ πε τα σας το σω

τη ρι ον πα α θος προ δι ε τυ που σα φως ο ο θεν τρι

η με ρος εκ δυς την υ περ κο σμι ον α να στα σιν υ

πε ζω γρα φη η σε του σα ρ κι προσ πα γεν τος Χρι

στου ου του Θε ου και τρι η με ρω ε γε ε ρσει

τον κο ο σμον φω τι ι σα αν τος ν ρ ψδὴ ζ'

Ε εκ νο ον προσ τα γμα τυ ραν νου δυσ σε βους

λα ους ε κλο νη σε ε λ πνε ον α πει λης και δυσ φη μι

ι α ας θε ο στυ γους ν ρ ο μως τρεις παι δας ουκ ε δει

μα τω σε Α ρ θυ μο ος θη ρι ω δης ου πυρ βρο μι ον ν ρ αλλ

αν τη χουν τι δρο σο βο λω Πνευ μα α τι πυ ρι συν

ον τες ε ψα λλον Α ρ ο υ περ υ μνη η το ος των πα

τε ρων και η μων Θε ος ευ λο γη τος ει ν ρ

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου μεν

τον Κυ ρι ον Χ ν ρ

ψδὴ η'

Ε υ λο γει ει τε παι αι αι δεσ της Τρι α δος ι σα

ρι θμοι δη μι ουρ γον Πα τε ρα Θε ον υ μνει ει τε

τον συ γκα τα βαν τα Λο ο ο γον και το πυρ

εις ὄρο ο σον με τα ποι η σαν τα και υ περ υ ψου

τε το πα α σι ζω ην πα ρε ε χον Πνευ μα παν α γι ονεις

τους αι ω ω να α α ας

### Αργαί

Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου<sup>3</sup>

ῥδη α'

Ἦχος λ ρ δι — ρ χ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.287/1636\*

Σ ταυ ρον χα ρα α ξας Μω ω ση η ης επ ευ

<sup>3</sup> Γραμμαί τινες τῶν καταβασιῶν διεσκευάσθησαν ἐλαφρῶς πρὸς ἀποφυγὴν παρατονησίων καὶ ἀστόχου διαιρέσεως φράσεων. [πρωτ.Κων.Παπαγιάννης]

θει ει ει ει α ας ρα α α βδω<sup>χλ</sup> την Ε ρυ θραν

δι ε τε ε με<sup>♂</sup> τω Ισ ρα η ηλ πε ζευ σαν τι

ι<sup>ν</sup> την δε ε ε ε πι στρε πτι ι κως<sup>Δ9</sup> Φα ρα ω

τοι οισ αρ μα α σι κρο τη η σας η η νω ω σεν<sup>♂</sup> επ

ευ ρους δι α α γρα α α ψας<sup>Δ9</sup> το α ητ τη τον ο

ο ο πλον<sup>♂</sup> δι ο ο Χρι στω ω α α σω ω μεν<sup>♂</sup> τω

Θε ω η μων ο ο ο τι δε δο ο ξα α σται<sup>♂</sup> <sup>ν</sup> <sup>δ</sup> <sup>ϛ</sup> φδὴ γ'

**Ρ** α α βδος ει εις τυ υ πον του ου μυ στη η η ρι ου<sup>Δ</sup>

πα α ρα α λα α μ βα α α νε ε ε ε ται<sup>Δ</sup> τω

βλα στω ω ω γαρ προ ο ο χρι ι ι νει το ον ι ε

ε ε ρε ε ε ε α γ τη στει ρευ ου ση δε πρω

η ην Εκ κλη η σι ι α νυ υν ε εξ η η ην θη η

η η σε Δ ξυ υ υ υ λο ον Στα α αυ ρου Δ χορός α'

εις κρα α τος και στε ρε ε ω ω μα

\* στε ρε ε ε ε ε ε ω ω ω ω μα γ φδη δ'

Ε ισ α κη η κο α Κυ υ ρι ι ε τη ης οι οι

κο νο μι ι ι ι ας σου το ο μυ υ στη ρι ι ον κ λ

κα τε νο η σα α τα ερ γα α σου ου και ε

δο ξα σα σου τη ην Θε ο ο τη η τα γ φδη ε'

Ω τρις μα κα ρι ι ι ι στον ξυ υ υ λο ον γ εν

ω ε τα α α θη Χρι ι στος ο βα σι λε ευσ και

αι Κυ ρι ι ο ος δι ου ου πε πτω ω κεν ο

ξυ υ λω α α πα α τη η η η σας τω εν

σοι οι δε λε ε α α α σθεις Θε ω ω ω τω

ω προ οσ πα α γε ε εν τι ι σα α αρ κι

τω πα ρε ε ε χο ο ο ον τι ι την ει ρη η νη νταις

ψυ χαι αι αις η η η η μων

**N** ο τι ι ι ου θη ρο ος εν σπλα α αγ χνοι

οις πα λα μα ας Ι ω ω νας σταυ ρο ει δω ω ως δι

ε εκ πε ε τα α α α α σας το σω τη η ρι ι



ον πα α α α α α θος προ δι ε τυ υ υ

που σα φω ως ο ο ο θεν τρι η η η με ρος

ε εκ δυς την υ πε ερ κο σμι ι ον α να στα α σιν

υ υ πε ε ζω ω γρα α α φη η η η σε του

σαρ κι ι ι προσ πα α γε εν τος Χρι στου ου του Θε ε

ου και τρι η με ρω ω ε ε γε ε ερ σει ει

τον κο ο ο σμον φω τι ι ι σα α α αν τος

ε εκ νο ο ον προ οστα α γμα τυ ρα

αν νου δυ υσ σε βου ου ουους λα ους ε ε ε

κλο νη η σε ε πνε ε ο ον α πει ει ει λη ης και

δυσ φη μι ι ι ι α ας θε ο στυ γου ους ο ο μως

τρει εις παι αι δας ου ουκ ε ε δει ει μα α α τω

ω ω ω σε θυ μο ο ο ο ος θη ρι ω ω δη

ης ου ου πυ υρ βρο μι ο ον αλλ αν τη χου ου ου ουν τι

δρο σο βο ο λω ω Πνε ευ μα α τι ι πυ ρι συν

ο ον τε ες ε ε ε ψα α α αλ λον ο υ περ

υ μνη η το ος των πα τε ε ρων και αι η η η μων Θε

ε ος ε ευ λο γη η η το ο ο ος ει

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου ου ου

ου με εν τον Κυ ρι ο ον

ᾠδὴ 1'

Ευλογειειειειτεπαιαιαιδεεσ της

Τριαααδοςιισαριιθμοιδημιουργον

Παατεεεεερααθεεεονυμναι

ειτετονσυγκαταβαντααλοοογονκαιτο

οοπυρειςδροοσονμεετααποιησανταακαι

υπερυψουουουουτετοοπασιιζωη

ηνπααρεεεεχονΠνευμαπαναγιιονειςτους

αιωωωναααας

### ὁδὴ θ' τῆς ἑορτῆς

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

|   |            |
|---|------------|
| κανὼν α'  | ἦχος πλ.δ' |
| «Μυστικὸς εἶ Θεοτόκε παράδεισος, ἀγεωργήτως βλαστήσασα Χριστόν, ὑφ' οὗ τὸ τοῦ Σταυροῦ, ζωηφόρον ἐν γῆ, πεφυτούργηται δένδρον' δι' οὗ νῦν ὑφουμένου, προσκυνοῦντες |            |

αὐτὸν σὲ μεγαλύνομεν». (β')

Δόξα σοι ὁ Θεὸς ἡμῶν δόξα σοι.

Ἄγαλλέσθω τὰ δρυμοῦ ξύλα σύμπαντα, ἀγιασθείσης τῆς φύσεως αὐτῶν, ὑφ' οὗ περ ἐξ ἀρχῆς, ἐφυτεύθη Χριστοῦ, τανυθέντος ἐν ξύλῳ δι' οὗ νῦν ὑψουμένου, προσκυνοῦμεν αὐτὸν καὶ μεγαλύνομεν.

Δόξα σοι ὁ Θεὸς ἡμῶν δόξα σοι.

Ἱερὸν ἠγέρθη κέρασ θεόφροσι, τῆς κεφαλῆς τῶν ἀπάντων ὁ Σταυρός, ἐν ᾧ ἁμαρτωλῶν νοουμένων, συνθλῶνται τὰ κέρατα πάντα, δι' οὗ νῦν ὑψουμένου, προσκυνοῦμεν αὐτὸν καὶ μεγαλύνομεν.

κανὼν β'

«Ὁ διὰ βρώσεως τοῦ ξύλου, τῷ γένει προσγενόμενος θάνατος, διὰ Σταυροῦ κατήρηται σήμερον· τῆς γὰρ προμήτορος ἡ παγγενῆς κατάρα διαλέλυται, τῷ βλαστῷ τῆς ἀγνῆς Θεομήτορος, ἣν πᾶσαι αἱ δυνάμεις, τῶν οὐρανῶν μεγαλύνουσι».

Δόξα σοι ὁ Θεὸς ἡμῶν δόξα σοι.

Μὴ τὴν πικρίαν τὴν τοῦ ξύλου, ἐάσας ἀναίρεσιμον Κύριε, διὰ Σταυροῦ τελείως ἐξήλειψας· ὅθεν καὶ ξύλον ἔλυσε ποτέ, πικρίαν ὑδάτων Μερρᾶς, προτυποῦν τοῦ Σταυροῦ τὴν ἐνέργειαν· ἣν πᾶσαι αἱ Δυνάμεις, τῶν οὐρανῶν μεγαλύνουσι.

Δόξα Πατρὶ καὶ Υἱῷ καὶ ἀγίῳ Πνεύματι.

Ἀδιαλείπτως βαπτομένους, τῷ ζόφῳ τοῦ προπάτορος Κύριε, διὰ Σταυροῦ ἀνύψωσας σήμερον· ὡς γὰρ τῇ πλάνῃ ἄγαν ἀκρατῶς, ἡ φύσις προκατηνέχθη, παγκλήρως ἡμᾶς πάλιν ἀνώρθωσε, τὸ φῶς τὸ τοῦ Σταυροῦ σου· ὃν οἱ πιστοὶ μεγαλύνομεν.

Καὶ νῦν καὶ ἀεὶ καὶ εἰς τοὺς αἰῶνας τῶν αἰώνων, ἀμήν.

Ἴνα τὸν τύπον ὑποδείξης, τῷ κόσμῳ προσκυνούμενον Κύριε, τόν τοῦ Σταυροῦ ἐν πᾶσιν ὡς ἔνδοξον, ἐν οὐρανῷ ἐμόρφωσας, φωτὶ ἀπλέτῳ ἠγλαϊσμένον, βασιλεῖ πανοπλίαν ἀήττητον· ἣν πᾶσαι αἱ Δυνάμεις, τῶν οὐρανῶν μεγαλύνουσι.

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Κανὼν α' ὑδὴ θ'

Ἦχος λ' δι Νη

ὁ εἰρμὸς

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.235#

Μ υ σ τ ι κ ο ς ε ι Θε ο το κε Πα ρ α δει σ ο ς α γ ε

ωρ γη τως βλα στη σασα Χρι στον υφ ου τοτου Σταυ ρου ζω

η φο ο ρον εν γη πε φυ του ουρ γη ται δε ενδρον

δι ου νυν υ ψου με ε νου προσ κυ νου ουντεσαι τον σε με

γα λυ νο ο μεν (β')

Δ ο ξα σοι ο Θε ος η μων δο ξα σοι

α γαλ λε σθω τα δρυ μου ξυ λα συμ παν τα α

γι α σθει σης της φυ σε ως αυ των υφ ου περ εξ αρ

χης ε φυ τε ευ θη Χρι στου τα νυ θε εν τος εν ξυ

λω δι ου νυν υ ψου με ε νου προσ κυ νου ου με ναυ

τον και μεγα λυ νο ο μεν

Δ ο ξ α σοι ο Θε ος η μων δο ξ α σοι <sup>ν</sup> <sub>δλ</sub>

ε ρον η γερθη κε ρας θε ο φρο σι <sup>ν</sup> <sub>δλ</sub> της κε

φα λης των α παν των ο Σταυ ρος εν ω α μαρ τω λων νο ου

με ε νων <sup>Δ</sup> <sub>δλ</sub> συν θλωνται τα κε ε ρα τα παν τα <sup>ν</sup> <sub>δλ</sub> δι

ου νυν υ ψου με ε νου προσ κυ νου ου μεν αυ τον και με

γα λυ νο ο μεν <sup>ν</sup> <sub>δλ</sub>

Κανών Β' ὑδὴ θ'

εἰρμός ἄλλος

Ἦχος λ π δλ Νη

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.236#

Ο δι α βρω σε ω ως του ξυ υ υ λου τω γε νει

προσ γε νο με νος θανατος <sup>ν</sup> <sub>δλ</sub> δι α Σταυ ρου κα τη ηρ

γῆται σημερον της γαρ προμητορος ηπαγγενης

καταραδι ιαλελυται <sup>γ</sup> <sub>δ</sub> τω βλαστω της α

γνηης Θεομητορος ην πασαι αι δυνααμεις

των ουρανων μεγαλυνοουσι <sup>γ</sup> <sub>δ</sub>

**Δ**οξα σοι ο Θεος ημων δοξα σοι <sup>γ</sup> <sub>δ</sub>

**Μ**η την πικριαντη ην του ξυυλου εα

σας αναιρεσιμον Κυριε <sup>γ</sup> <sub>δ</sub> διασταουρου τε

λειειως εξηλειψας οθεν και ξυλον ελυσε πο

τε πικριανυδα των Μερρας <sup>γ</sup> <sub>δ</sub> προτυπουν του

σταουρου ουτην ενεργειαν ην πασαι αι δυναα

μεις των ου ρα νω ων μεγα λυ νου ουσιν <sup>γ</sup> <sub>δλ</sub>

**Δ** ο ξα Πα τρι ι και Υι ω και α γι ω Πνευ μα

<sup>γ</sup> <sub>δλ</sub>  
τι

**Α** δι α λει πτωσ βα α πτο με ε ε νους τω ζο

φω του προ πα το ρος Κυ ρι ε <sup>γ</sup> <sub>δλ</sub> δι α Σταυ ρου α

νυ ψω σας ση μερον ως γαρ τη πλα νη α γαν α κρα

τως η φυ σις προ κα τη νε ε χθη <sup>γ</sup> <sub>δλ</sub> παγ κλη ρως η μας

πα λιν α νωρ θω σε το φως το του Σταυ ρου ου σου ον

οι πι στοι οι μεγα λυ νο ο μεν <sup>γ</sup> <sub>δλ</sub>

**Κ** αι νυν και α ει και εις τους αι ω νας των αι ω νων



α μην <sup>γ</sup> δλ

να τον τυπον α απο δει ει ει ξης τω κο σμω προς

κυ νου με νον Κυ ρι ε <sup>γ</sup> δλ τον του Σταυ ρου εν πα σιν

ως εν δοξον εν ου ρα νω ε μορ φωσας φω τι α πλε

τω η γλα ι σμε ε νον βα σι λει παν ο πλι αν

α ητ τητον ην πα σαι αι Δυ να α μεις <sup>Δ</sup> δλ των ου

ρα νω νω νω μεγα λυ νου ου σιν <sup>γ</sup> δλ

### Καταβασία Θ' φδῆς

ἦχος πλ.δ'

Μυστικὸς εἶ Θεοτόκε παράδεισος, ἀγεωργήτως βλαστήσασα Χριστόν, ὑφ' οὗ τὸ τοῦ Σταυροῦ, ζωηφόρον ἐν γῆ, πεφυτούργηται δένδρον. Δι' οὗ νῦν ὑψουμένου, προσκυνοῦντες αὐτὸν σὲ μεγαλύνομεν.

Ὁ διὰ βρώσεως τοῦ ξύλου, τῷ γένει προσγενόμενος θάνατος, διὰ Σταυροῦ κατήρηται σήμερον τῆς γὰρ προμήτορος ἡ παγγενῆς κατάρα διαλέλυται, τῷ βλαστῷ τῆς ἀγνῆς Θεομήτορος, ἣν πᾶσαι αἱ δυνάμεις τῶν οὐρανῶν μεγαλύνουσιν.

Σύντομος

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Πέτρου Λαμπαδαρίου

Ἦχος λ π ς Νη

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.235#

**Μ** υ σ τ ι κ ο ς ε ι Θ ε ο τ ο κ ε Πα ρ α δ ε ι σ ο ς α γ ε

ω ρ γ η τ ω ς β λ α σ τ η σ α σ α Χ ρ ι σ τ ο ν υ φ ο υ τ ο τ ο υ Σ τ α υ ρ ο υ ζ ω

η φ ο ρ ο ρ ο ν ε ν γ η π ε φ υ τ ο υ ο υ ρ γ η τ α ι δ ε ε ν δ ρ ο ν

δ ι ο υ ν υ ν υ ψ ο υ μ ε ε ν ο υ π ρ ο σ κ υ ν ο υ ο υ ν τ ε ς α υ τ ο ν σ ε μ ε

γ α λ υ ν ο ο μ ε ν

**Ο** δ ι α β ρ ω σ ε ω ω ς τ ο υ ξ υ υ υ λ ο υ τ ω γ ε ν ε ι

π ρ ο σ γ ε ν ο μ ε ν ο ς θ α ν α τ ο ς δ ι α Σ τ α υ ρ ο υ κ α τ η η ρ

γη ται ση μερον της γαρ προ μη το ρος η παγ γε νης  
 κα τα ρα δι ι α λε λυ ται τω βλα στω της α  
 γνη ης Θε ο μη τορος ην πα σαι αι δυ να α μεις των  
 ου ρα νω ων μεγα λυ νου σι ι ι ι

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Ἦχος λ̣ π̣ δ̣ Νη χ̣

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
 Μουσικόν Μηνολόγιον  
 2007 σ.295/1644\*

**Μ** υ στι κος ει Θε ο το κε πα ρα δι σος α  
 γε ωρ γη τως βλα στη σα σα Χρι στον υφ ου το του  
 Σταυ ρου ζω η φο ο ρον εν γη πε φυ του ουρ γη ται  
 δεν δρον δι ου νυν υ ψου με ε νου προσ κυ νουν

τες αυτον σε μεγαλυνοομεν

Οδιαβρωσεωςτουξυυλουτω

γενοιπροσγενομενοςθανατοςδιασταουρουκα

τηργηταισημεροντηςγαρπρομητοροςηπαγγε

νηςκαταραδιαλελυταιτωβλαστωτηςα

γνηηηςθεομητοροςηηνπασαιαιδου

ναμειςτωνουρανωνμεγαλυνοσιιιι

Ἄρχή

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Πέτρου Λαμπαδαρίου

Ἦχος λ̣ π̣ ς̣ Νη

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Ειρμολόγιον 1903 σ.91#

Μυστικόςειειθεοτοοοκεεπαραδεισοος

α γε ωρ γη τως βλα στη η η σα σα Χρι ι στον

υφ ου ου το του ου στα α αυ ρου ζω η φο ο ρον

ε εν γη πε φυ υ του ου ου ουρ γη ται αι αι

δε ε ε εν δρον δι ου ου νυν υ ψου με ε ε

ε νου προσ κυ νου ου ου ουουν τε ε ες α αυ τον

σε με γα λυ υ υ υ υ νο ο ο ο μεν

**Ο** δι α βρω ω σε ω ω ω ως του ξυ υ υ λου

ου τω γε νει ει προσ γε νο ο ο με ε νος θα να το ος δι

α στα αυ ρου κα τη η η ηρ γη ται αι ση με ε ρο

ον της γαρ προ μη το ρο ο ος η παγ γε ε νης κα

τα ρα α δι ι α α λε λυ ται αι <sup>γ</sup> τω βλα α στω της α  
 γνη η η ης Θε ο ο μη το ρο ος <sup>Δ</sup> ην πα  
 α σαι αι αι δυ υ να α α α μεις <sup>Δ</sup> των ου ρα νω  
 ωων με γα λυ υ νου ου σι ι ι ι <sup>γ</sup>

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Πέτρου Λαμπαδαρίου

Ἦχος λ̣ ρ̣ δ̣ Νη ρ̣

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
 Μουσικόν Μηνολόγιον  
 2007 σ.291/1640\*

**Μ** υ στι κος ει ει Θε ο το ο ο κε ε Πα ρα δι ει σο  
 ος <sup>γ</sup> α γε ωρ γη τως βλα στη η η σα σα Χρι ι  
 στον <sup>Δ</sup> υφ ου ου το του ου Στα α αυ ρου ζω η φο ο  
 ρον ε εν γη πε φυ του ου ου ουρ γη ται

αι αι δε ε ε εν δρον δι ου ου νυν υ ψου

με ε ε ε νου προσ κυ νου ου ου ουουν τε ες α

α αυ τον σε μεγαλυ υ υ υ νο ο ο ο μεν

Ο δια βρω σε ω ω ω ως του ξυ υ υ

λου ου τω γε νει ει προσ γε νο με νος θα α να α

τος δια Στα αυ ρου κα τη η η ρ γ η η ται ση με ρο

ον της γαρ προ μη το ρο ο ος η παγ γε ε νης κα

τα α α ρα δια α λε λυ υ ται αι τω βλα

στω της α γνη η ης Θε ε ο μη το ρο ος ην πα α σαι

αι αι δυ υ να α α α μεις των ου ρα νω ω ω ν

με γα λυ υ νου ου σι ι ι ι

\* τὸ τέλος των ου ρα α α νω ων με γα λυ υ νου

ου σι ι ι ι



# Εἰς τὰ Εἰσόδια τῆς Θεοτόκου (προεόρτιες)

8-20 Νοεμβρίου

ἦχος δ'

- α **Ἀ**νοίξω τὸ στόμα μου, καὶ πληρωθήσεται Πνεύματος, καὶ λόγον ἐρεύξομαι, τῇ βασιλίδι Μητρί· καὶ ὀφθήσομαι, φαιδρῶς πανηγυρίζων, καὶ ἄσω γηθόμενος, ταύτης τὴν Εἴσοδον.
- γ **Τ**οὺς σοὺς ὑμνολόγους, Θεοτόκε, ἡ ζωσα καὶ ἄφθονος πηγῆ, θίασον συγκροτήσαντας, πνευματικὸν στερέωσον· καὶ τῇ σεπτῇ Εἰσόδῳ σου, στεφάνων δόξης ἀξίωσον.
- δ **Τ**ὴν ἀνεξιχνίαστον θείαν βουλήν, τῆς ἐκ τῆς Παρθένου σαρκώσεως, σοῦ τοῦ Ὑψίστου, ὁ προφήτης Ἀββακούμ, κατανοῶν ἐκραύγαζε· Δόξα τῇ δυνάμει σου Κύριε.
- ε **Ἐ**ξέστη τὰ σύμπαντα, ἐν τῇ σεπτῇ εἰσόδῳ σου· σὺ γάρ, ἀπειρόγαμε Παρθένε, ἔνδον εἰσηλθες ἐν τῷ ναῷ τοῦ Θεοῦ, ὡσπερ καθαρῶτατος ναός, πᾶσι τοῖς ὑμνοῦσί σε, τὴν εἰρήνην βραβεύουσα.
- ς **Τ**ὴν θείαν ταύτην καὶ πάντιμον, τελοῦντες ἑορτὴν οἱ θεόφρονες, τῆς Θεομήτορος, δεῦτε τὰς χεῖρας κροτήσωμεν, τὸν ἐξ αὐτῆς τεχθέντα, Θεὸν δοξάζοντες.
- ζ **Ο**ὐκ ἐλάτρευσαν, τῇ κτίσει οἱ θεόφρονες, παρὰ τὸν κτίσαντα· ἀλλὰ πυρὸς ἀπειλήν, ἀνδρείως πατήσαντες, χαίροντες ἔψαλλον· Ὑπερύμνητε, ὁ τῶν πατέρων Κύριος, καὶ Θεὸς εὐλογητὸς εἶ.
- Αἰ**νοῦμεν, εὐλογοῦμεν καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον.
- η **Π**αῖδας εὐαγεῖς ἐν τῇ καμίνῳ, ὁ τόκος τῆς Θεοτόκου διεσώσατο, τότε μὲν τυπούμενος· νῦν δὲ ἐνεργούμενος, τὴν οἰκουμένην ἄπασαν, ἀγείρει ψάλλουσιν· Τὸν Κύριον ὑμνεῖτε τὰ ἔργα, καὶ ὑπερυψοῦτε, εἰς πάντας τοὺς αἰῶνας.

Σύντομοι

Ἄργαι

Σύντομοι

ῶδη α'

ἦχος δ'  Β8

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.330#

**Α** νοι ξω το στο μα μου και πλη ρω θη σε ται

πνευ ματος <sup>6</sup> και λο γον ε ρευ ξο μαι τη βα σι λι δι Μη <sup>λ</sup>

τρι και ο φθη σο μαι φαι δρωσ παν η γυ ρι ζων <sup>π</sup> και <sup>9</sup>

α σωγη θο μενος ταυ της την εισ ο δον <sup>6</sup> <sup>λ</sup> ῶδὴ γ'

**Τ** ους σου ους υ μνο λο γους Θε ο το ο κε η

ζω ω σα και α φθονος πη γη <sup>Δ</sup> θι α σον συγ κρο τη σαν <sup>λ</sup>

τας πνευ μα τι κον στε ρε ω ω σον <sup>π</sup> καν τη σε πτη εισ <sup>9</sup>

ο δω σου <sup>Δ</sup> χορός α' στε φα νων δο ξης α ξι ω σον <sup>6</sup> <sup>λ</sup> ῶδὴ δ'

**Τ** ην α νε ξι χνι α στον θει αν βου λην <sup>6</sup> της εκ <sup>λ</sup>

της Παρ θε ε νου σαρ κω σε ως <sup>6</sup> σου του υ ψι στου <sup>λ</sup> <sup>6</sup> <sup>λ</sup>

ο προ φη της Αβ βα κουμ <sup>6</sup> κα τα νο ων ε κραυ

γα ζε <sup>Α</sup> δο ξα τη δυ να μει σου Κυ ρι ε <sup>6</sup> ←εφμολόγιον ΖΩΗΣ ῶδῆ ε'

**Ε** ξε στη τα συμ παν τα εν τη σε πτη εισ ο

δω σου <sup>Α</sup> συ υ γα αρ α πει ρο γα με Παρ θε ε νε εν

δον εισ η ηλ θες εν τω να ω ω του Θε ου ου ωσ

περ κα θα ρω τα τος να ος πα σι τοις υ μνου σι σε <sup>6</sup> την ει

ρη η νην βρα βευ ουσα <sup>6</sup> ῶδῆ ε'

**Τ** ην θει αν ταυ την και παν τι μον τε λουν τες ε ορ την

οι θε ο φρονεσ της Θε ο μη τορος <sup>π</sup>9 δευ τε τας χει ρας κρο

τη σω μεν τον εξ αυ της τε χθε εν τα Θε ον δο ξα ζον

τες 6 λ

ᾠδὴ ζ'

Ουκ ελατρευσαν τηκτισειοι θεοφρονεςπα

ρατονκτισααντα 6 λ αλλαπυροσ απειλην 6 λ αν

δρειωσπατησαντεςχαιροντεςεψαλλον 6 λ υπερυμνη

ητεοτωνπατερων Κυριοςκαι Θεοςελογητο

οςει 6 λ

ᾠδὴ η'

Αινομενελογουμενκαιπροσκυνοουμεν

τον Κυριον 6 λ

Παιαιδαςευαγειςεντηκαμιινωο

τοοκοςτης Θεοτουκουδιεσωσατοοτοτε

μεν τυ που μενος νυν δε εν ερ γου με ε νος π<sup>9</sup> την οι

κου με νην α πα σαν α γει ρει ψα αλλου ου σαν τον

Κυ ρι ο ον υ υ μνει τε τα ερ γα και υ περ υ ψου ου

τεεις παν τας τους αι ω ω να α α α ας 6 λ

### Άγαι

Πέτρου Λαμπαδαρίου του Πελοποννησίου

ψδθ α'

Ἦχος δὲ Ββ χ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικὸν Μηνολόγιον  
2007 σ.370/2707\*

α νοι ξω το στο ο μα α μου ου και πλη ρω θη

η σε ε ται Πνευ μα α το ος και λο ο γο ον ε ε ρε

ευ ξο ο μαι αι τη η βα α σι λι ι δι Μη η τρι ι

ι και ο φθη σο ο μαι αι φαι δρω ω ω ως

πα αν η η γυ υ ρι ζων και α α σω ω γη η θο ο

με ε ε νος τα α α αυ τη ης τη ην εισ ο ο δο

ον

ψδι γ'

Τ ους σου ου ου ους υ μνο ο λο ο γου ους Θε ε ο

ο το ο ο ο κε ως ζω ω ω ω σα α και αι

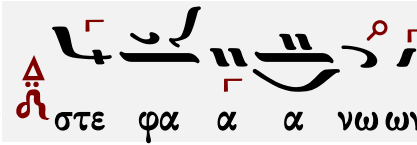
α α α φθο νος πη η γη θι α α σο ον συ υγ

κρο τη η σα αν τας πνε ευ μα τι ι κον στε ρε ε ε ω ω

ω ω σον καν τη σε πτη ει εισ ο ο δω ω σου χορός α'

\* στε φα α α α α α α α νω ων δο ο ο

ο ξη ης α α ξι ω ω σο ον



στε φα α α νων...

**T** ην α νε ξι ι χνι ι α στο ον θει ει α αν

βου ου λη η ην της εκ της Παρ θε νου σα αρ κω ω

ω σε ε ε ε ε ω ω ως σου του ου Υ υ ψι

σου ο προ φη η της Αβ βα α κουμ κα τα

νο ο ων ε ε κραυ γα α ζε ε δο ο ο ο ξα

τη δυ να α α α μει ει σου Κυ ρι ι ε ε

**E** ξ ε στη η τα συ υμ πα αν τα α εν τη

σε πτη η ει εισ ο ο δω ω σου συ υ υ γα α

α αρ α πει ει ρο ο γα α με Παρ θε ε ε νε ε

εν δον εισ η η η η ηλ θες εν τω να α α ω ω

ω ω ω του ου Θε ε ε ου ω ωσπερ κα θα ρω

ω τα α το ος να α ο ο ο ος πα α σι ι τοι οις

υ μνου σι ι σε ε ε ε την ει ει ρη η η η νη ην

βρα βε ευ ουου σα α

ὑδὴ ς'

την θει αν τα αυ τη ην και πα αν τι ι μον τε λου ουν

τε ες ε ε ο ορ τη ηην οι οι θε ε ο ο ο

φρο ο νες της Θε ο μη η η το ο ο ο ρος δευ τετας

χει ρα α ας κρο τη η σω ω μεν τον εξ αυ τη

ης τε ε χθε εν τα Θε ε ο ον δο ξα ζο ον τε ες

ὑδὴ ς'



Ο υχ ε λα α α τρε ε ε ευ σαν τη κτι ι

σει ει οι οι θε ο φρο ο νες πα ρα το ο ον κτι ι

σα α α αν τα α <sup>6</sup> <sub>λ</sub> αλ λα α α α πυ ρο ος α πει ει

λη ην αν δρει ει ω ως πα α τη η σα αν τες χαι αι ρο ον

τες ε ψα αλ λο ον <sup>6</sup> <sub>λ</sub> υ περ υ υ υ μνη η

η η τε ε <sup>π</sup> <sub>9</sub> ο των πα τε ρω ων Κυ ρι ι ο ος

και Θε ε ος ε ευ λο γη η το ο ος ει ει <sup>6</sup> <sub>λ</sub> ψδὴ ν'

Α <sup>σ</sup> <sub>Γ</sub> <sup>χ</sup> νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου ου ου

με εν τον Κυ υ ρι ι ο ον <sup>6</sup> <sub>λ</sub>

Π αι αι αι αι δας ευ α γει εις ε εν τη η κα μι ι

ι νω ω <sup>6</sup> λ ο το ο ο ο ο ο ο κος της Θε ε  
 ο το ο κου δι ε ε σω ω σα α το <sup>Δ</sup> το ο τε ε με  
 εν τυ που με ε νο ος <sup>6</sup> λ νυ υν δε ε εν ερ γου ου  
 ου με ε ε ε νος <sup>π</sup> q την οι κου με ε νη ην α πα α  
 σαν α γει ει ρει ει ει ψα α α α λ λου ου ου ου  
 σαν <sup>Δ</sup> τον Κυ υ υ ρι ι ι ι ο ο ο ο ν υ υ μνει  
 τε ε τα α ερ γα α <sup>π</sup> q και αι υ περ υ ψου ου ου  
 ου τε ε <sup>Δ</sup> εις πα αν τας τους αι ω ω ω ω ω  
 να α α α α ας <sup>6</sup> λ

## Τιμιωτέρα

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.





- ∴ Μεγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἠγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ σωτῆρί μου. 46-47
- ∴ Ὅτι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48
- ∴ Ὅτι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50
- ∴ Ἐποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσκόρπισεν ὑπερηφάνους διανοίᾳ καρδίας αὐτῶν. 51
- ∴ Καθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξαπέστειλε κενούς. 52-53
- ∴ Ἀντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55
- Τὴν Τιμιωτέραν τῶν Χερουβίμ, καὶ ἐνδοξοτέραν ἀσυγκρίτως τῶν Σεραφίμ, τὴν ἀδιαφθόρως Θεὸν Λόγον τεκοῦσαν, τὴν ὄντως Θεοτόκον, σὲ μεγαλύνομεν.**

Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου




Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

## Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου

- ∴ Μεγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἠγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ σωτῆρί μου. 46-47
- ∴ Ὅτι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48
- ∴ Ὅτι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50
- ∴ Ἐποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσκόρπισεν ὑπερηφάνους διανοίᾳ καρδίας αὐτῶν. 51
- ∴ Καθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξαπέστειλε κενούς. 52-53
- ∴ Ἀντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55


**Τ** ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ <sup>6</sup> και εν δο ξο  

 τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ <sup>6</sup> την α δι α  

 φθο ρως Θε ον Λο γον τε κου σαν <sup>6</sup> την ον τως Θε ο  

 το ο κον σε με γα α λυ νο μεν <sup>6</sup>

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη


**Μ** ε γα λυ νει η ψυ χη μου τον Κυ ρι ον <sup>6</sup>  

 και η γαλ λι α σε το πνευ μα μου ε πι τω Θε  

 ω ω τω σω τη ρι μου <sup>6</sup>

**Τ** ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ <sup>6</sup>λ και εν <sup>σ</sup>δο

ξο τε ραν <sup>σ</sup>α συγ κρι τως των <sup>σ</sup>Σε ρα φιμ <sup>6</sup>λ την α δι α

φθο ρως Θε ον Λο ο γον τε κου σαν <sup>6</sup>λ την ον τως Θε ο

το κον σε μεγα λυ νο μεν <sup>6</sup>λ

**Ο** <sup>χ</sup>τι ε πε βλε ψεν ε πι την τα πει νω σιν

της δου λης <sup>σ</sup>αυ του <sup>6</sup>λ ι δου γαρ α πο του <sup>χ</sup>νυν μα κα

ρι ου σι με πα σαι αι γε νε αι <sup>6</sup>λ

**Τ** ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ <sup>6</sup>λ και εν <sup>σ</sup>δο

ξο τε ραν <sup>σ</sup>α συγ κρι τως των <sup>σ</sup>Σε ρα φιμ <sup>6</sup>λ την α δι α

φθο ρως Θε ον Λο ο γον τε κου σαν <sup>6</sup>λ την ον τως Θε ο

το κων σε μεγαλυνομεν

Οτι εποιησε μοι μεγαλειουνα

τος και αγιοντο ονομα αυτου και το ελε

ος αυτου εις γενεαν και γενεαν τοις φοβου

μενοις αυτον

Την τιμιωτεραν των Χερουβιμ και εν

δοξοτεραν ασυγκριτως των Σεραφιμ την αδι

αφθοορωσ Θεον Λογοντεκουσαν την οντως

Θεοτοκων σε ε μεγαλυνομεν

Εποιησε κρατος εν βραχιονι αυ

του δι ε σκορπισεν υ περ η φανους δι α νοι α

καρ δι ασαυτων

Την τιμιωτεραν των Χερουβιμ και εν

δοξοτεραν ασυγκριτως των Σεραφιμ την αδι

αφθοορως Θεον Λογον τεκουσαν την οντως

Θεοτοκον σεεμεγαλυνομεν

Καθειλεδυναστας αποθρωνων και υυ

ψωσεταπεινους πεινωντας ενεπλησεν αγα

θων και πλουτωντας εξαπεστειλεκενους

Την τιμιωτεραν των Χερουβιμ και ενδοξο

τε ραν α συγ χρι τως των Σε ρα φιμ **Δ** την α δι α φθο

ρως **Δ** Θε ο ον Λο γον τε κου σαν **π ρ** την ον τως Θε ο

το κον σε ε μεγα λυ νομεν **6 λ**

**Α** ν τε λα βε το Ισ ρα ηλ παι δος αυ του

μνη σθη ναι ε λε ους **6 λ** κα θως ε λα λη σε προς τους πα

τε ρας η μων **6 λ** τω Α βρα αμ και τω σπερ μα τι αυ

του ε ως αι ω νος **6 λ**

**Τ** ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ **Δ** και εν δο ξο

τε ραν α συγ χρι τως των Σε ρα φιμ **Δ** την α δι α φθο

ρως **Δ** Θε ο ον Λο γον τε κου σαν **π ρ** την ον τως Θε ο



το κον σε ε μεγα λυ νο μεν <sup>6</sup>λ

### Καταβασία Θ' φδῆς

ἦχος δ'

Ἄπας γηγενής, σκιρτάτω τῷ πνεύματι, λαμπαδουχούμενος· πανηγυρίζετω δέ, αὐλῶν νόων, φύσις γεραίρουσα, τὰ ἱερά Εἰσόδια, τῆς Θεομήτορος, καὶ βοάτω· Χαίροις παμμακάριστε, Θεοτόκε ἀγνή, ἀειπάρθενε.

Σύντομος

Ἀργή

Ἀργή (Παπαγιάννη)

### Σύντομος

ἦχος δ' <sup>6</sup>λ B8

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Ειρμολόγιον 1903 σ.330#

α πας γηγε νης σκιρ τα τω τω πνευ μα τι λαμ πα δου χου

με νος <sup>6</sup>λ παν η γυ ρι ζε τω ω δε <sup>π</sup>9 α υ

λων νο ο ων φυ σις γε ραι ρου σα <sup>6</sup>λ τα ι ε ρα ει

σο δι α της Θε ο μη η το ο ρος <sup>Δ</sup>δ και βο α

α α α α α τω χαι ρις παμ μα κα ρι στε <sup>6</sup>λ Θε ο

το κε α γνη η α ει παρ θε νε ε ε ε ε <sup>6</sup>λ

Ἄρχη

Ἦχος <sup>4</sup>δὲ Β8

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1905 σ.55#

**Α** α πας γη γε νη η ης σκιρ τα τω τω πνε ευ μα

τι ι λα αμ πα α δου χου με ε νο ο ος παν η γυ

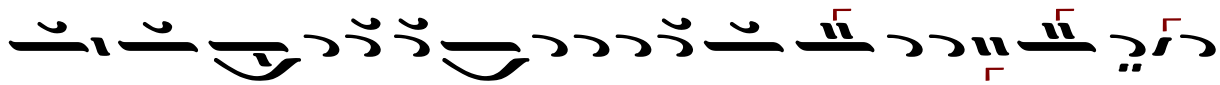
υ ρι ζε ε ε τω ω ω δε <sup>π9</sup> α υ λω ω ν νο ο


ο ο ω ω ν φυ υ σι ις γε ραι αι ρου ου σα α <sup>6</sup>λ τα ι

ε ρα α ει εισ ο ο δι ι α της Θε ο ο ο μη

η η η η το ο ο ο ρο ο ος και αι βο α α α

α α τω <sup>Δ</sup>δ και αι ροι ο ις πα αμ μα κα ρι ι στε ε <sup>6</sup>λ


  
 Θε ο το ο κε α γνη η η η α ει πα αρθε ε ε νε ε ε



  
 ε ε λ

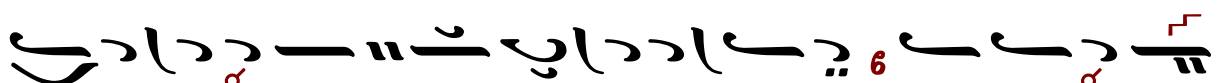
Ἄρχὴ (διασκ. Παπαγιάννη)

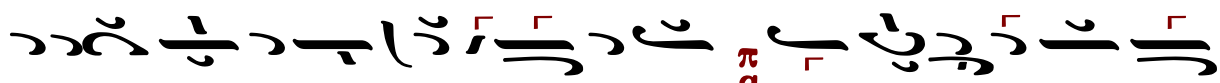
ψδθ θ'

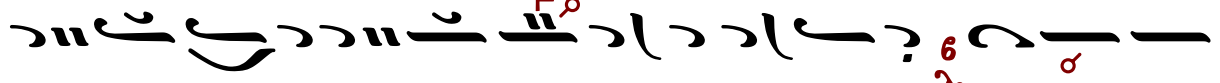
Ἦχος δὲ Βα λ


πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικὸν Μηνολόγιον  
2007 σ.237/1936\*



  
 α πας γη γε νη η ης σκίρ τα τω τω πνε ευ μα


  
 τι ι λααμ πα α δου χου με ε νο ος παν η γυ υ


  
 υ ρι ζε ε ε τωω ω ω δε α υ λωων νο ο


  
 ο ο ων φυ υ σι ις γε ραι αι ρου ου σα α τα ι ε


  
 ρα α Ει ει σο ο δι ι α της Θε ο ο ο μη η η


  
 η το ο ο ο ρο ο ος και αι βο α α α α α

τῶ <sup>Δ</sup> <sup>δ</sup> <sup>λ</sup> <sup>σ</sup> <sup>π</sup> <sup>α</sup> <sup>μ</sup> <sup>μ</sup> <sup>α</sup> <sup>ρ</sup> <sup>ι</sup> <sup>ι</sup> <sup>σ</sup> <sup>τ</sup> <sup>ε</sup> <sup>ε</sup> <sup>Θ</sup> <sup>ε</sup>  
τῶ <sup>Δ</sup> <sup>δ</sup> <sup>λ</sup> <sup>σ</sup> <sup>π</sup> <sup>α</sup> <sup>μ</sup> <sup>μ</sup> <sup>α</sup> <sup>ρ</sup> <sup>ι</sup> <sup>ι</sup> <sup>σ</sup> <sup>τ</sup> <sup>ε</sup> <sup>ε</sup> <sup>Θ</sup> <sup>ε</sup>

ο <sup>τ</sup> <sup>ο</sup> <sup>κ</sup> <sup>ε</sup> <sup>α</sup> <sup>γ</sup> <sup>ν</sup> <sup>η</sup> <sup>η</sup> <sup>η</sup> <sup>α</sup> <sup>ε</sup> <sup>π</sup> <sup>α</sup> <sup>ρ</sup> <sup>θ</sup> <sup>ε</sup> <sup>ε</sup> <sup>ε</sup> <sup>ν</sup> <sup>ε</sup> <sup>ε</sup> <sup>ε</sup>  
ο <sup>τ</sup> <sup>ο</sup> <sup>κ</sup> <sup>ε</sup> <sup>α</sup> <sup>γ</sup> <sup>ν</sup> <sup>η</sup> <sup>η</sup> <sup>η</sup> <sup>α</sup> <sup>ε</sup> <sup>π</sup> <sup>α</sup> <sup>ρ</sup> <sup>θ</sup> <sup>ε</sup> <sup>ε</sup> <sup>ε</sup> <sup>ν</sup> <sup>ε</sup> <sup>ε</sup> <sup>ε</sup>

<sup>ε</sup> <sup>ε</sup> <sup>ε</sup> <sup>ε</sup> <sup>ε</sup> <sup>ε</sup>  
ε ε ε ε ε ε

# Εἰς τὰ Εἰσόδια τῆς Θεοτόκου 21/11

21 Νοεμβρίου

## ἤχος α'

- α **Χ**ριστὸς γεννᾶται, δοξάσατε. Χριστὸς ἐξ οὐρανῶν ἀπαντήσατε. Χριστὸς ἐπὶ γῆς, ὑψώθητε, ἄσατε τῷ Κυρίῳ πᾶσα ἡ γῆ, καὶ ἐν εὐφροσύνῃ, ἀνυμνήσατε λαοί, ὅτι δεδόξασται.
- γ **Τ**ῷ πρὸ τῶν αἰώνων, ἐκ Πατρὸς γεννηθέντι ἀρρεούστως Υἱῷ, καὶ ἐπ' ἐσχάτων ἐκ Παρθένου, σαρκωθέντι ἀσπόρως, Χριστῷ τῷ Θεῷ βοήσωμεν· ὁ ἀνυψώσας τὸ κέρασ ἡμῶν, ἅγιος εἶ Κύριε.
- δ **Ρ**άβδος ἐκ τῆς ρίζης Ἰεσσαί, καὶ ἄνθος ἐξ αὐτῆς Χριστέ, ἐκ τῆς Παρθένου ἀνεβλάστησας· ἐξ ὄρους ὁ αἰνετὸς κατασκίου δασέος ἦλθες σαρκωθεὶς ἐξ ἀπειράνδρου, ὁ ἄυλος καὶ Θεός. Δόξα τῇ δυνάμει σου Κύριε.
- ε **Θ**εὸς ὢν εἰρήνης, Πατὴρ οἰκτιρμῶν, τῆς μεγάλης βουλῆς σου τὸν ἄγγελον, εἰρήνην παρεχόμενον ἀπέστειλας ἡμῖν· ὅθεν θεογνωσίας, πρὸς φῶς ὁδηγηθέντες, ἐκ νυκτὸς ὀρθρίζοντες, δοξολογοῦμέν σε φιλόανθρωπε.
- ς **Σ**πλάγχων Ἰωνᾶν, ἔμβρυον ἀπήμεσεν ἐνάλιος θῆρ οἷον ἐδέξατο· τῇ Παρθένῳ δέ, ἐνοικήσας ὁ Λόγος, καὶ σάρκα λαβὼν διελήλυθε φυλάξας ἀδιάφθορον· ἥς γὰρ οὐχ ὑπέστη ρεύσεως, τὴν τεκοῦσαν κατέσχεν ἀπήμαντον.
- ζ **Οἱ** Παῖδες εὐσεβεία συντραφέντες, δυσσεβοῦς προστάγματος καταφρονήσαντες, πυρὸς ἀπειλὴν οὐκ ἐκπτοήθησαν, ἀλλ' ἐν μέσῳ τῆς φλογὸς ἐστῶτες ἔψαλλον· ὁ τῶν πατέρων Θεός, εὐλογητὸς εἶ.
- Αἰ**νοῦμεν, εὐλογοῦμεν καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον.
- η **Θ**αύματος ὑπερφουῶς ἡ δροσοβόλος, ἐξεκόνισε κάμινος τύπον· οὐ γὰρ οὐς ἐδέξατο φλέγει νέους, ὡς οὐδὲ πῦρ τῆς Θεότητος, Παρθένου ἦν ὑπέδου νηδύν· διὸ ἀνυμνοῦντες ἀναμέλψωμεν. Εὐλογοίτω ἡ κτίσις πᾶσα τὸν Κύριον, καὶ ὑπερυψούτω, εἰς πάντας τοὺς αἰῶνας.

### Ἀργαί

Πέτρου Λαμπαδαρίου

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

### Σύντομοι

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

## Σύντομοι

### Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

**Χ** ρι στος γεν ναι ται δο ξα σα τε Χρι στος εξ ου ρα νων

α παν τη σα τε <sup>π ρ</sup> Χρι στο ος ε πι γης υ ψω θη τε α

σα τε τω Κυ ρι ω πα σα η γη η η και εν ευ φρο

συ υ νη α νυ μνη σα τε λα οι ο τι δε δο ο ξα α

σται <sup>π ρ</sup> ᾠδὴ γ'

**Τ** ω προ των αι ω νων <sup>π ρ</sup> εκ Πα τρος γεν νη θεν τι

αρ ρε ευ στως Υι ω και επ ε σχα των εκ Παρ θε νου

<sup>π ρ</sup> σαρ κω θεν τι α σπο ρως Χρι στω ω τω Θε ω βο

η σω μεν <sup>π ρ</sup> ο α νυ ψω σας το κε ρας η μων <sup>Δ ρ</sup>

ἁ γι ος εἰ Κυ υ ρι ι ε

χορὸς α'

π ρ

ᾠδὴ δ'

**Ρ** α βδος εκ της ρι ζης Ι εσ σαι και αν θος εξ αυ της

Χρι στε εκ της Παρ θε νου α νε βλα στησας εξ ο ρους

ο αι νε τος κα τα σκι ου δα σε ος ηλ θες σαρ

κω θεις εξ α πειρ αν δρου ο α υ λος και Θε ος

δο ξα τη δυ να μεισου Κυ υ ρι ι ε

**Θ** ε ος ων ει ρη νης Πα τη η η ρ οι κτιρ μων της

με γα λης βου λη ης σου τον Αγ γε λον ει ρη νη

πα ρε χο μενον α πε στει λας η μιν ο θεν θε ο

γνω σι ας προς φως ο δη γη θεν τες εκ νυ





γος ε στω τες ε ψαλ λον <sup>π ρ</sup> ο των πα τε ε

ρων Θε ος ευλογη τος ει <sup>π ρ</sup> ῶδὴ η'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου μεν τον Κυ

ρι ον <sup>Δ ρ</sup>

Θ αυ ματος υ περ φυ ους η δρο σο βο λος εξ ει

κο νι σε κα μι νος τυ υ υ πον ου γαρ ους ε δε ξατο

φλε γει νε ους ως ου δε πυρ της Θε ο τη τος

Παρ θε νου ην υπ ε ε δυ νη δυν <sup>π ρ</sup> δι ο ο α νυ

μνουν τες α να μελ ψω μεν <sup>Δ ρ</sup> ευ λο γει τω η κτι σις πα

α σα τον Κυ ρι ον <sup>π ρ</sup> και υ περ υ ψου ου τω εις παν

τας τους αι ω ω να α α ας π 9

# Αργαί

## Ιωάννου Πρωτοψάλτου

Καταβασαί Χριστουγέννων  
ψόδη α'

### Ἦχος 4̣ Πα

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Ειρμολόγιον 1903 σ.7\*

Χ ρι στο ος γε ε εν να ται αι αι δο ο ο

ξα α σα α α τε π 9 Χ ρι στο ος εξ ου ου ρα α α

νω ω ωων α α παν τη η η σα α α τε ε π 9

Χ ρι στο ο ος χ 9 ε πι ι γη η η ης ζ ου ψω ω ω

ω ω θη η η η η τε Δ α σα α α α α τε ε τω

ω Κυ υ ρι ω ω π 9 πα α α σα α η η γη η η η και αι

εν ευ φρο ο συ υ υ νη Δ α νυ μνη η σα

τε ε ε λαα οι οι οι ο τι ι δε ε δο ο ο ο ο

ξαα α α σται <sup>π ρ</sup> ῥδὴ γ'

**Τ**ω προ τω ωων αι αι ω ω ω νων <sup>π ρ</sup> εκ πα τρο

ος γε εν νη η η θεν τι ι α αρ ρε ε ε ε ευ

στω ως υι υι υι ω <sup>π ρ</sup> και επ ε σχα α των ε εκ

παρ θε ε ε ε νου <sup>Δ ρ</sup> σα α α αρ κω θε εν τι ι α

α σπο ο ο ρως Χρι στω ω ω ω ω ω ω ω ω

ω ω ω ω <sup>π ρ</sup> τω Θε ω ω βο ο η σω ω μεν <sup>π ρ</sup> ο α

νυ ψω ω σας το κε ε ε ρας η η μων χορός α' α α γι

ο ος ει ει Κυ υ υ υ υ ρι ι ι ι ε <sup>π ρ</sup> ῥδὴ δ'

Ρ α α βδος εκ της ρι ι ζης Ι ε εσ σαι και α

αν θος ε εξ α αυ τη η η η ης Χρι ι ι ι

στε εκ της Παρ θε ε νου α αν ε ε βλα στη η σας

εξ ο ο ρους ο ο αι νε ε τος και τα σκι ου δα α

σε ε ε ο ος ηλ θε σαρκω ω θει εις εξ α α α πει

ει ρα α αν δρου ο α α υ λοος και Θε ε

ος δο ο ξα τη η δυ υ υ να μει ει σου ου Κυ

υ υ υ υ ρι ι ι ι ε

ῶδῆ ε'

Θ ε ο ος ω ω ω ν ει ει ρη η η νης Πα τη

η η η η ρ οι οι κτι ι ρ μων της με γα α

λης βου ου ου λη η η ης σου ου το ον α ααγ γε ε

λο ον <sup>π ρ</sup> ει ρη νην πα α ρε ε χο ο με ε νον α πε ε

στει ει λας η η μιν <sup>π ρ</sup> ο ο θε ε ε εν θε ε ο ο γνω

σι ι ι ι ι ας <sup>Δ ρ</sup> προς φω ω ω ως ο ο δη η

γη η θεν τε ες εκ νυ κτο ος ο ορ θρι ι ζο ο ον τε ε

ες <sup>Δ ρ</sup> δο ξο λο γου ου μεν σε ε φι ι λα α α α

αν θρω ω ω ω πε <sup>π ρ</sup> ῶδῆς'

**Σ**πλα ααγ χνω ω ων Ι ι ω ω ω ναν <sup>π ρ</sup> εμ

βρυ υ ο ον α α πη με ε σεν <sup>π ρ</sup> ε να α α λι ι

ο ος θηρ <sup>Δ ρ</sup> οι οι οι οι ο ον ε ε δε ε ε ξα

α α το ο π η Παρ θε νω ω δε π εν οι κη η

σα ας ο ο ο λο γο ος και αι σα α α αρ κα

α λα α α βων π δι ε λη η λυ θε ε φυ λα α α

ξα ας α δι α φθο ο ρον π η η η ης γα αρ ου χ υ

πε ε στη η ρευ σε ε ως π την τε κου ου σα αν

κα α α τε σχεν α α πη η η η η μα α α αν

π τον

ῥδῆζ

Ο ι παι αι δες ευ σε βει ει α συ υ υ υντρα α φε

ε εν τες π δυσ σε ε ε βου ους Δ ρ προσ τα α γμα

το ο ος κα α τα α φρο ο νη η η σα α αν

τε ες π<sup>π</sup>υ ρο ο ο ος α πει λη η ην ουκ

ε ε πτο ο ο η η θη η η σαν αλλ ε

εν με ε ε σω ω ω ω τη ης φλο γο ο ος ε

ε στω ω τε ες ε ε ε ψα ααλ λο ον ο των

πα τε ε ε ρω ω ων Θε ε ο ος ευ λο ο

γη η η το ο ο ο ος ει ῶδὴ ἡ'

αι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου με

εν τον Κυ ρι ι ον

Θα α αυ μα ατος υ πε ερ φυ υ ους η δρο ο

ο σο ο βο ο ο λος ε εξ ει ει κο ο νι ι

σε ε ε κα μι ι νο ος τυ υ υ πο ον <sup>π ρ</sup> ου γαρ

ου ους ε ε δε ε ξα α το φλε ε ε γει ει νε ε ε ους <sup>π ρ</sup>

ως ου δε ε πυρ τη ης θε ο τη η η το ος <sup>Δ ρ</sup> Παρ

θε ε νου η ην υ υ πε ε ε ε ε δυ

υ νη η η δυν <sup>π ρ</sup> δι ο ο ο ο αν υ μνου ουν

τες α α να μελ ψω με εν <sup>Δ ρ</sup> ευ λο γει τω ω η χτι

ι σι ις πα α α α σα α το ον Κυ υ υ ρι

ι ι ο ον <sup>π ρ</sup> και αι υ πε ερ υ ψου ου ου ου τω

ω ει εις πα αν τας του ου ους αι ω ω ω ω

να α α ας <sup>π ρ</sup>



# Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου

Καταβασίαι Χριστουγέννων  
ῶδη α'

## Ἦχος ᾠ Πα

πρωτ. Κων. Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.375/2712\*

Χ ρι στο ος γε ε εν να ται αι αι δο ο ο  
ξα α σα α α τε π ρ Χρι στο ος εξ ου ρα α α  
νω ω ω ωων α α παν τη η η σα α τε ε π ρ  
Χρι στο ο ος ε πι ι γη η η ης ζ υ ψω ω ω  
ω ω θη η η η η τε Δ α σα α α α α τε ε  
τω ω Κυ υ ρι ω ω π ρ πα α α σα α η η γη η η η  
και αι εν ευ φρο ο συ υ υ νη Δ α νυ μνη η  
σα τε ε ε λα α οι οι οι ο τι ι δε ε δο ο ο

ο ξαααα σται π ρ

ψδλγ'

Τ ω προ τω ω ν αι αι ω ω ω νων εκ Πα τρο

ος γε εν νη η η θεν τι ι α αρ ρε ε ε ε ευ

στω ως Υι υι υι ω και επ ε σχα α των ε εκ

Παρ θε ε ε ε νου σα α α αρ κω θε εν τι ι

α α σπο ο ο ρως Χρι στω ω ω ω ω ω ω ω ω

ω ω ω ω τω Θε ω ω βο ο η σω ω μεν ο

α νυ ψω ω σας το κε ε ε ρας η η μων χορός α' α

α γι ο ος ει ει Κυ υ υ υ ρι ι ι ε

σαρ κω θεν τι ι α α σπο ο ο

\* διασκευή πρωτ.Κων.Παπαγιάννη

ρωσ Χρι στω ω ω τω Θε ε ω βο η η η η

σω ω ω ω ω μεν ο α νυ ... ὠδή δ'

Ρ α α βδος εκ της ρι ι ζης Ι ε εσ σαι και α

αν θος ε εξ α αυ τη η η η ης Χρι ι ι ι

στε εκ της Παρ θε ε νου α α νε ε βλα στη η σας

εξ ο ο ρους ο ο αι νε ε τος κα τα σκι ου δα

α σε ε ε ο ος ηλ θες σαρ κω ω θει εις εξ α α α

πει ει ρα α αν δρου ο α α υ λοος και Θε

ε ος δο ο ξα τη η δυ υ υ να μει ει σου ου Κυ

υ υ υ υ ρι ι ι ι ε ὠδή ε'

Θ ε ο ος ω ω ω ω ν ει ει ρη η η νης <sup>π ρ</sup> Πα

τη η η η η ρ οι οι κτι ιρ μων <sup>α η</sup> της με γα

α λης βου ου ου λη η η ης σου ου το ον α α αγ

γε ε λο ον <sup>π ρ</sup> ει ρη νην πα α ρε ε χο ο με ε νον α

πε ε στει ει λας η η μιν <sup>π ρ</sup> ο ο θε ε ε εν θε ε ο

ο γνω σι ι ι ι ι ας <sup>α η</sup> προ φω ω ω ως ο ο

δη η γη η θεν τε ες εκ νυ κτο ος ο ορ θρι ι ζο ο ν

τε ε ες <sup>α η</sup> δο ξο λο γου ου μεν σε ε φι ι λα α

α α αν θρω ω ω ω πε <sup>π ρ</sup> ὠδὴς'

ϸπλα α αγ χνω ω ω ν Ι ι ω ω ω ναν <sup>π ρ</sup> εμ

βρυ υ ο ον α α πη με ε σεν <sup>π ρ</sup> εν α α α λι ι

ο ος θηρ <sup>Δ</sup> οι οι οι οι ο ον ε ε δε ε ε ξα

α α το ο <sup>π ρ</sup> τη Παρ θε νω ω δε <sup>π ρ</sup> εν οι κη η

σα ας ο ο ο Λο γο ος και αι σα α α α αρ

κα α λα α α βων <sup>π ρ</sup> δι ε λη η λυ θε ε φυ λα

α α ξα ας α δι α φθο ο ρον <sup>π ρ</sup> η η η ης γα αρ

ουχ υ πε ε στη η ρε ευ σε ε ως <sup>π ρ</sup> την τε κου

ου σα αν κα α α τε σχεν α α πη η η η

η μα α αν τον <sup>π ρ</sup> ὠδὴ ζ'

**Ο** ι παι αι δεσ ευ σε βει ει α συ υ υ υν τρα α

φε ε εν τες <sup>π ρ</sup> δυσ σε ε ε βου ους προς τα α

γμα το ο ος κα α τα α φρο ο νη η η σα

α αν τε ες <sup>π ρ</sup> πυ ρο ο ο ος α πει λη η ην

ουκ ε ε πτο ο ο η η θη η η σαν <sup>α</sup> <sup>2</sup> αλλ

ε εν με ε ε σω ω ω ω τη ης φλο γο ο ος

ε ε στω ω τε ες ε ε ε ψα ααλ λο ον <sup>π ρ</sup> ο

των πα τε ε ε ρω ω ων Θε ε ο ος ευ λο ο

γη η η το ο ο ο ος ει <sup>π ρ</sup>

διασκευές πρωτ.Κων.Παπαγιάννη

<sup>\*</sup> <sup>π ρ</sup> ευ σε βει α συ υ υ υν...

αλλ εν με ε σω ω ω ω ω τη ης φλο ο γο ος

ε ε στω ω τε ες ...

π 9

ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου με

εν τον Κυ ρι ι ον

ῶδὴ η'

α α αυ μα α τος υ πε ερ φυ υ ους η δρο ο

ο σο ο βο ο ο λος ε εξ ει ει κο ο νι ι

σε ε ε κα μι ι νο ος τυ υ υ πο ον ου γαρ

ου ους ε ε δε ε ξα α το φλε ε ε γει ει νε ε ε

ους ως ου δε ε πυρ τη ης Θε ο τη η τος Παρ

θε ε νου η ην υ υ πε ε ε ε ε ε δυ

υ νη η η δυν <sup>π ρ</sup> δι ο ο ο ο α νυ μου ουν  
 τες α α να μελ ψω με εν <sup>δ</sup> ευ γο γει τω ω η κτι  
 ι σι ις πα α α α σα α το ον Κυ υ υ ρι  
 ι ι ο ον <sup>π ρ</sup> και αι υ πε ερ υ ψου ου ου ου τω  
 ω ει εις πα αν τας του ου ους αι ω ω ω ω  
 να α α ας <sup>π ρ</sup>

## Θ' φδὴ τῶν Εἰσοδίων

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

κονίων α'

ἦχος δ'

Ἄγγελοι τὴν εἴσοδον τῆς πανάγνου,

ὁρῶντες ἐξεπλήττοντο πῶς ἡ Παρθένος εἰσῆλθεν, εἰς τὰ ἅγια τῶν ἁγίων.

«Ὡς ἐμφύχῳ Θεοῦ κιβωτῷ, ψαυέτω μηδαμῶς χεὶρ ἀμυήτων, χεῖλη δὲ πιστῶν, τῇ Θεοτόκῳ ἀσιγήτως, φωνὴν τοῦ ἀγγέλου ἀναμέλλοντα, ἐν ἀγαλλιάσει βοάτω· ὄντως ἀνωτέρα πάντων, ὑπάρχεις Παρθένε ἀγνή».

Ἄγγελοι τὴν εἴσοδον τῆς Παρθένου, ὁρῶντες ἐξεπλήττοντο,

πῶς παραδόξως εἰσῆλθεν, εἰς τὰ ἅγια τῶν ἁγίων.

Ὑπερίπταται Θεοτόκε ἀγνή τὸ θαῦμά σου τὴν δύναμιν τῶν λόγων· σῶμα γὰρ ἐν σοὶ κατανοῶ ὑπὲρ λόγον, ῥοῆς ἁμαρτίας ἀνεπίδεκτον· ὅθεν εὐχαρίστως βοῶ σοι· ὄντως



ἄνωτέρα πάντων, ὑπάρχεις Παρθένε ἄγνή.

**Ἄγγελοι** καὶ ἄνθρωποι τῆς Παρθένου, τὴν εἴσοδον τιμήσωμεν,  
ὅτι ἐν δόξῃ εἰσῆλθεν, εἰς τὰ ἅγια τῶν ἁγίων.

**Παραδόξως** προδιετύπου ἄγνή, ὁ νόμος σε σκηνὴν καὶ θείαν στάμνον, ξένην κιβωτόν,  
καὶ καταπέτασμα καὶ ῥάβδον, ναὸν ἀκατάλυτον, καὶ πύλην Θεοῦ· ὅθεν ἐκδιδάσκει σοι  
κράζειν ὄντως ἄνωτέρα πάντων, ὑπάρχεις Παρθένε ἄγνή.

**Ἄγγελοι** τὴν εἴσοδον τῆς Παρθένου, ὀρῶντες κατεπλήττοντο,  
πῶς θεαρέστως εἰσῆλθεν, εἰς τὰ ἅγια τῶν ἁγίων.

**Μελωδῶν** σοι προεκελάδει Δαυτὶδ, λαλῶν σε θυγατέρα βασιλέως, κάλλει ἀρετῶν, ἐκ  
δεξιῶν παρισταμένην, ἰδὼν τοῦ Θεοῦ πεποικιλημένην σε· ὅθεν προφητεύων ἐβόα· ὄντως  
ἄνωτέρα πάντων, ὑπάρχεις Παρθένε ἄγνή.

**Ἄγγελοι** σκιρτήσατε σὺν ἁγίοις, παρθένοι συγχορεύσατε·  
ἡ γὰρ θεόπαις εἰσῆλθεν, εἰς τὰ ἅγια τῶν ἁγίων.

**Θεοδόχον** προθεωρῶν Σολομῶν, ἠνοίξατο σε πύλην βασιλέως, ζῶσάν τε πηγὴν  
ἐσφραγισμένην, ἐξ ἧς τὸ ἀθόλωτον ἡμῖν προῆλθεν, ὕδωρ τοῖς ἐν πίστει βοῶσιν· ὄντως  
ἄνωτέρα πάντων, ὑπάρχεις Παρθένε ἄγνή.

**Ἄγγελοι** καὶ ἄνθρωποι τὴν Παρθένον, ἐν ὕμνοις μεγαλύνωμεν  
θεοπρεπῶς γὰρ εἰσῆλθεν, εἰς τὰ ἅγια τῶν ἁγίων.

**Διανέμοις** τῶν χαρισμάτων τὴν σὴν, γαλήνην Θεοτόκε τῆ ψυχῆ μου, βρύουσα ζωὴν, τοῖς  
σὲ τιμῶσι κατὰ χρέος, αὐτὴ περιέπουσα καὶ σκέπουσα, καὶ διατηροῦσα βοᾶν σοι· ὄντως  
ἄνωτέρα πάντων, ὑπάρχεις Παρθένε ἄγνή.

κανὼν β'  
Τὴν φωτοφόρον Νεφέλην

ἦχος α'

**Μεγάλυνον** ψυχὴ μου, τὴν προσενεχθεῖσαν, ἐν τῷ ναῷ Κυρίου, καὶ εὐλογηθεῖσαν, χερσὶ τῶν ἱερέων.  
**Ἐκ** τῶν δικαίων προῆλθεν, Ἰωακεὶμ καὶ τῆς Ἄννης, ἐπαγγελίας ὁ καρπός, ἡ θεόπαις  
**Μαρία**, καὶ ὡς θυμίαμα δεκτόν, σαρκὶ νηπιάζουσα προσφέρεται, ἱερῷ ἐν ἁγίῳ, ὡς ἁγία,  
εἰς τὰ ἅγια οἰκεῖν.

**Μεγάλυνον** ψυχὴ μου, τὴν προσενεχθεῖσαν, ἐν τῷ ναῷ Κυρίου, καὶ εὐλογηθεῖσαν, χερσὶ τῶν ἱερέων.  
**Τὴν** νηπιάζουσαν φύσει, καὶ ὑπὲρ φύσιν μητέρα, ἀναδειχθεῖσαν τοῦ Θεοῦ, εὐφημήσωμεν  
ὕμνοις, ἐν τῷ ναῷ τῷ νομικῷ· Κυρίῳ γὰρ σήμερον προσφέρεται, εἰς ὁσμὴν εὐωδίας, τῶν  
δικαίων, ὡς καρπὸς πνευματικός.

**Μεγάλυνον** ψυχὴ μου, τὴν προσενεχθεῖσαν, ἐν τῷ ναῷ Κυρίου, καὶ εὐλογηθεῖσαν, χερσὶ τῶν ἱερέων.  
**Ἡ** τῶν ἁγίων ἁγία, καὶ θεομήτωρ **Μαρία**, ταῖς ἰκεσίαις σου ἄγνή, ἐλευθέρωσον ἡμᾶς,  
ἐκ τῶν παγίδων τοῦ ἐχθροῦ, καὶ πάσης αἰρέσεως καὶ θλίψεως, τοὺς πιστῶς  
προσκυνοῦντας, τὴν εἰκόνα, τῆς ἁγίας σου μορφῆς.

**Μεγάλυνον** ψυχὴ μου, τὴν προσενεχθεῖσαν, ἐν τῷ ναῷ Κυρίου, καὶ εὐλογηθεῖσαν, χερσὶ τῶν ἱερέων.

Τῶν Χερουβίμ ὑπερτέρα, τῶν Σεραφίμ ἀνωτέρα, καὶ πλατυτέρα οὐρανῶν, ἀνεδείχθης Παρθένε, ὡς τὸν ἀχώρητον παντί, ἐν μήτρᾳ χωρήσασα Θεὸν ἡμῶν, καὶ τεκοῦσα ἀφράστως, ὃν δυσώπει, ἐκτενῶς ὑπὲρ ἡμῶν.

Δόξα Πατρὶ καὶ Υἱῷ καὶ ἀγίῳ Πνεύματι.

Μεγάλυνον, ψυχὴ μου, τῆς τρισυποστάτου, καὶ ἀδιαιρέτου Θεότητος τὸ κράτος.

Τὴν τρισυπόστατον φύσιν, καὶ ἀδιαίρετον δόξαν, τὴν ἐν θεότητι μιᾷ, ὑμνουμένην ἀπαύστως, ἐν οὐρανῷ καὶ ἐπὶ γῆς. Τριάδα ἀχώριστον δοξάσωμεν, σὺν Υἱῷ τὸν Πατέρα, καὶ τὸ Πνεῦμα προσκυνοῦντες εὐσεβῶς.

Καὶ νῦν καὶ ἀεὶ καὶ εἰς τοὺς αἰῶνας τῶν αἰώνων, ἀμήν.

Μεγάλυνον, ψυχὴ μου, τὴν τιμιωτέραν, καὶ ἐνδοξοτέραν τῶν ἄνω Στρατευμάτων.

Υἰὸς σου Παρθένε, θεογεννητορ ὡς Θεόν, τοῦ κόσμου καὶ Κύριον ἰκέτευε, ἐκ φθορᾶς καὶ κινδύνων λυτρωθῆναι, καὶ παντοίων πειρασμῶν.

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

## Κανὼν α', ᾠδὴ θ'

ὁ εἰρμός

Ἦχος δ' ᾠδὴ Ββ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννης  
Μουσικὸν Μηνολόγιον  
2007 σ.257/2595#

Α γ γε λοι την εισ ο δον της παν α γνου ο

ρων τες εξ ε πλητ τον το πως η Παρ θε νος εισ η ηλθεν

εις τα α α γι α των α γι ων

Ω ς εμ ψυ χω Θε ου κι βω τω ψαυ ε τω

μηδα μως χει ειρα μου η των χει λη δε πι στων τη

Θε ο τοκω ασι γη η τως φω νη ην του αγ γε λου

α να μελ ποντα εν α γαλ λι α σει βο α τω

ον τως α νω τε ρα παν των υ παρ χεις Παρ θε νε α

γνη

Α γ γε λοι την εισ ο δον της Παρ θε νου ο

ρων τες εξ ε πλητ τον το πως πα ρα δο ξως εισ η ηλ

θεν εις τα α α γι α των α γι ων

Υ περ ι πτα ται Θε ο το κε α γνη το

θαυ μα σου την δυ να μιν των λο ο γων σω μα γαρ

εν σοι κα τα νο ω ω υ περ λο ο γον ρο η ης α

μαρ τι ας αν ε πι δε κτον ο θεν ευ χα ρι

στως βο ω σοι ον τως α νω τε ρα παν των υ παρ

χεις Παρ θε νε α γνη

α γ γε λοι και αν θρω ποι της Παρ θε νου την

εις ο δον τι μη σωμεν ο τι εν δο ξη εισ η ηλθεν

εις τα α α γι α των α γι ων

Π α ρα δο ο ξως προ δι ε τυ που α γνη ο

νο μος σε σκη νην και θει αν στα α μνον ξε νην κι

βω τον και κα τα πε τα σμα και ρα α βδον να

ο ον α κα τα λυ τον και πυ λην Θε ου ο θεν εκ δι

δα σκει σοι κρα ζειν ον τως α νω τε ρα παν των υ

παρ χεις Παρ θε νε α γνη

Α γ γε λοι την εισ ο δον της Παρ θε νου ο

ρων τες κα τε πλητ τον το πως θε α ρε στως εισ η ηλ

θεν εις τα α α γι α των α γι ων

Μ ε λω δων σοι προ ε κε λα δει Δα βιδ λα λων σε

θυ γα τε ρα βα σι λε ως καλ λει α ρε των εκ δι

ξι ων πα ρι στα με ε νην ι δω ων του Θε ου πε

ποι κιλ με ε νην ο θεν προ φη τευ ων ε βο

α <sup>π</sup>9 ον τως α νω τε ρα παν των υ παρ χεις Παρ θε

νε α γνη <sup>6</sup>λ

Α γ γε λοι σκιρ τη σα τε συν α γι οισ παρ θε

νοι συγ χο ρευ σα τε <sup>6</sup>λ η γαρ θε ο παις εισ η ηλθεν

εις τα α α γι α των α γι ων <sup>6</sup>λ

Θ ε ο δο χον προ θε ω ρων Σο λο μων <sup>6</sup>λ η νι

ξα το σε πυ λην βα σι λε ε ως <sup>6</sup>λ ζω σαν τε πη γην ε

σφρα γι σμε ε νην εξ η ης το α θο λω τον η μιν προ

ηλ θεν υ υ δωρ <sup>6</sup>λ τοις εν πι στει βο ω σιν <sup>π</sup>9 ον τως

α νω τε ρα παν των υ παρ χεις Παρ θε νε α γνη <sup>6</sup>λ

Α γ γε λοι και αν θρω ποι την Παρ θε νον εν

υ μνοις με γα λυ νο μεν θε ο πρε πως γαρ εισ η

ηλθεν εις τα α α γι α των α γι ων

Δ ι α νε μοις των χα ρι σμα των την σην γα λη η

νην Θε ο το κετη ψυ χη ημου βρυ ου σα ζω ην

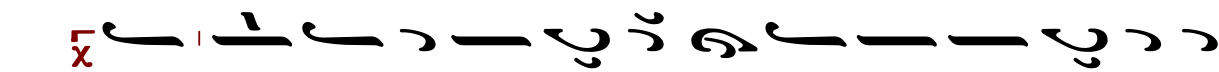
τοις σε τι μω σι κα τα χρε ε ος αυ τη η πε ρι






ε που σα και σκε που σα και δι α τη ρου σα βο




αν σοι ον τως α νω τε ρα παν των υ παρ χεις Παρ

θε νε α γνη

Κανών 6', ψδὴ θ'


**Μ** ε γ α λ υ ν ο ν ψ υ χ η μ ο υ τ η ν π ρ ο σ ε ν ε χ θ η ι σ α ν ε ν  
 τ ω ν α ω Κ υ ρ ι ι ο υ  και ε υ λ ο γ η θ η ι σ α ν χ ε ρ  
 σ ι τ ω ν ι ε ρ ε ω ν 


**Ε** κ τ ω ν δ ι κ α ι ω ν π ρ ο η λ θ ε ν  Ι ω α κ ε ι μ και  
 τ η σ Α ν ν η σ  ε π α γ γ ε λ ι α σ ο κ α ρ π ο σ η θ ε ο  
 π α ι σ Μ α ρ ι ι α  και ω σ θ υ μ ι α μ α δ ε κ τ ο ν σ α ρ  
 κ ι ι ν η π ι α ζ ο υ σ α π ρ ο σ φ ε ρ ε τ α ι  ι ε


 ρ ω ε ν α γ ι ω ω σ α γ ι ι α  ε ι σ τ α α γ ι α  
 ο ι κ η ι ε ι ν 



Μεγαλον ψυχου την προσενεχθεισαν εν  
τω ναω Κυριου και ελογηθεισαν χερ  
σι των ιερων

Την νηπιαζουσαν φουσει και υπερφυσιν

Μητερα αναδειχθεισαν του Θεου ευφημη

σωμεν υυμοις εν τω ναω τω νομικω Κυ

ριω γαρσημερον προσφερεται εις ο

σμην ευωδιδιαι των δικαιων ως καρπος πνευ

ματικος

Μεγαλον ψυχου την προσενεχθεισαν εν

τω να ω Κυ ρι ι ου **Δ** και ευ λο γη θει σαν χερ

σι των ι ε ρε ων **π ρ**

**Η** των α γι ων α γι α **Δ** και Θε ο μη τωρ

Μα ρι α **π ρ** ταις ι κε σι αις σου α γνη ε λευ

θε ρω σον η μας **π ρ** εκ των πα γι δων του ε χθρου και

πα α σης αι ρε σεως και θλι ψε ε ως **π ρ** τους πι στως προς

κυ νου ουν τας την ει κο να της α γι ας σου μορ φης ης **π ρ**

**Μ** ε γα λυ νον ψυ χη μου την προσ ε νε χθει σαν εν

τω να ω Κυ ρι ι ου **Δ** και ευ λο γη θει σαν χερ

σι των ι ε ρε ων **π ρ**

των Χερουβιμ υπεραδελφω των Σεραφιμα

νω τερα και πλατυτερα ουρανων ανεδει

χθης Παρθενως τον αχωρητον παντιεν

μηητραχωρησασα Θεονηημων και τεκου

σα αφρααστως ονδωσωπειεκτηνωσ υπερη

μων

Δοξα Πατρι και Υιω και αγιω Πνευμα

τι

Μεγαλον ψχη ημου της τρισυποσταα

του και αδιαιρετου Θεοτητος τοκρα

τος <sup>π ρ</sup>

**Τ**ην τρισυποστατον φυσιν <sup>Δ ρ</sup> και αδιαριε

τον δοξαν <sup>π ρ</sup> την εν Θεοτητι μιαυμου με

νην α παυστως εν ουρανω και επι γης <sup>Δ ρ</sup> Τρι

αδααχωριστονδοξασωωμεν <sup>π ρ</sup> συν Υιω τον

Πατεερα και το Πνευμα προσκυνοντες ευσεβως <sup>π ρ</sup>

**Κ**αι νυν και αι και εις τους αιωνας των αιωνων

α μην <sup>Δ ρ</sup>

**Μ**εγαλον ψυχη η μου ουτην τιμιωτεε

ραν <sup>Δ ρ</sup> και ενδοξοτεεραντων ανωστρατευμα

των <sup>π ρ</sup>

Υπο την σην ευσπλαγχνιαν <sup>Δ</sup> τους κα τα φευ

γοντας πιστει <sup>π ρ</sup> και προσκυνουντας ευσεβως τον Υι

ον σου Παρθενε <sup>π ρ</sup> θεογενητορας Θεον

του κοσμου και Κυριον ικετευε <sup>π ρ</sup> εκφθο

ρας και κινδυνωλυτρωθη η ναι <sup>Δ</sup> και παντοιων

πειρασμων <sup>π ρ</sup>

### Καταβασία θ' φδῆς

ἦχος α'

[Μεγάλυνον ψυχή μου, τὴν τιμιωτέραν, καὶ ἐνδοξοτέραν τῶν ἄνω στρατευμάτων.]

Μυστήριον ξένον, ὄρω καὶ παράδοξον! οὐρανὸν τὸ Σπήλαιον· θρόνον Χερουβικόν, τὴν Παρθένον· τὴν φάτνην χωρίον· ἐν ᾧ ἀνεκλίθη ὁ ἀχώρητος, Χριστὸς ὁ Θεός· ὃν ἀνυμνοῦντες μεγαλύνομεν.

Ἀργή

Σύντομος

Πέτρου Λαμπαδαρίου

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

# Εύντομος

## Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

ᾠδὴ θ'

### Ἦχος ᾠ Πα

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.265#

Μ ε γ α λ υ ν ο ν ψ υ χ η ἡ μ ο υ ο υ τ η ν τ ι μ ι ω τ ε  
ε ρ α ν κ α ι ε ν δ ο ξ ο τ ε ε ρ α ν τ ω ν α ν ω σ τ ρ α τ ε υ  
μ α α τ ω ν

Μ υ σ τ η ρ ι ο ν ξ ε ν ο ν ο ρ ω ω κ α ι π α ρ α δ ο  
ξ ο ν ο υ ρ α ν ο ν τ ο σ π η λ α ι ο ν θ ρ ο ν ο ν Χ ε ρ ο υ β ι κ ο ν  
τ η ν Π α ρ θ ε ν ο ν τ η ν φ α α τ η ν χ ω ρ ι ι ο ν ε ν ω ω  
α ν ε κ λ ι θ η ο α χ ω ρ η τ ο ς Χ ρ ι σ τ ο ο ς ο Θ ε ο ς  
ο ν α ν υ μ ν ο υ ν τ ε ς μ ε γ α λ υ υ ν ο ο μ ε ε ε ε ν

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

ῥοδὴ θ'

Ἦχος ᾠ Πα

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἱρμολόγιον 1903 σ.15#

**Μ** ε γ α α λ υ ν ο ο ν ψ υ υ χ η η η μ ο υ ο υ ο υ

ο υ τ η η ν τ ι μ ι ι ω ω τ ε ε ε ρ α α ν

κ α ι α ι ε ε ν δ ο ο ξ ο ο τ ε ε ε ε ρ α α ν τ ω ω ν α

α ν ω σ τ ρ α α α τ ε υ μ α α α α τ ω ν

**Μ** υ σ τ η η ρ ι ι ι ο ο ν ξ ε ε ε ε ν ο ν ο ρ ω

ω ω κ α ι α ι π α α ρ α α δ ο ο ο ξ ο ο ν Ο υ ρ α

ν ο ο ο ν τ ο σ π η η λ α ι α ι α ι ο ν θ ρ ο ο ο ν ο ν


  
 Χε ρου ου ου ου βι κον την Πα αρ θε ε ε νον την φα α


  
 την χω ω ρι ι ι ον π ρ ε νω ω ω ω α νε


  
 κλι ι ι θη ο ο α χω ρη το ος Χρι στο ο ος ο


  
 Θε ε ος Α ρ ον α νυ μνου ν τες με γα α λυ υ υ υ


  
 υ νο ο ο ο μεν π ρ


  
\* χ με ε ε εν π ρ

Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου

ᾠδὴ θ'

Ἦχος  $\bar{\alpha}$  Πα  $\bar{\chi}$

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.379/2716\*


  
**Μ** ε γα α λυ νο ον ψυ υ υ χη η η μου ου ου


  
 ου τη ην τι μι ι ω ω τε ε ε ρα αν Α ρ


  
 και αι ε εν δο ο ξο ο τε ε ε ε ρα αν τω ων α α



νω στρα α α τευ μα α α α των π 9

Μ υ στη η ρι ι ι ι ο ο ν ξ ε ε ε ε ν ο ρ ω π 9

ω ω και αι πα α ρα α δο ο ο ξ ο ο ν ου ρα π 9

νο ο ο ν το σπη η λαι αι αι ο ν θρο ο ο νο ο ν π 9

χε ρου ου ου ου βι κον την Πα αρ θε ε ε ν ο ν την φα α

την χω ω ρι ι ι ο ν εν ω ω ω ω α νε π 9

κλι ι ι θη ο ο α χω ρη το ος Χρι στο ο ος Δ

ο Θε ε ος ο ν α νυ μνου ν τε ς με γα α λυ υ Δ

υ υ υ νο ο ο ο με ε ε εν π 9

## Τῆς Κυριακῆς πρὸ Χριστοῦ Γεννήσεως

### ᾠδὴ α΄

Χριστὸς ἐν πόλει Βηθλεὲμ βρεφουργεῖται  
τὴν ἡμῶν ὡς εὐσπλαχνος καινουργῶν φύσιν·  
προθύμως δεῦτε γηγενεῖς τῇ καρδίᾳ  
ἄσμα μελωδοῦ ἄσωμεν τῷ Δεσπότη·  
εἰς αἰῶνας ἐνδόξως γὰρ δεδόξασται.

### ᾠδὴ γ΄

Ἵψιμέδων ἀναρχε εὐμενὲς Λόγε,  
ἐπίβλεψον πρόσχες μοι δακρυρροοῦσα  
ἢ σεπτὴ ἔβόα σοι πρόπαλαι Ἄννα·  
ἀλλ' ὡς ἐκείνης ἤκουσας θρηνηδούσης  
καὶ ἡμῶν στερέωσον τὰς φρένας, ἀναξ,  
τοῦ ἀξίως ὑμνεῖν σου τὰ γενέθλια.

### ᾠδὴ δ΄

Ἀκηκοὺς ὁ προφήτης, Χριστέ, τὴν ἀκοήν σου  
ἐφοβήθη, ὅτι μέλλεις ἐκ Παρθένου προελθεῖν.  
Καὶ ἐβόησε τρόμῳ· δόξα τῇ δυνάμει σου, Κύριε.

ἀντὶ τῆς παραπάνω

[Ἀββακοῦμ τὴν ἐνδοξόν σου παρουσίαν  
ἄκτιστε, Λόγε, προῖδὼν ἐμελώδει  
ἀκήκοα, Δέσποτα, ὅτι ἐξ ὄρους  
ἀγίου ἤξεις εἰς βροτῶν σωτηρίαν  
καὶ δέους πλήρης γεγονῶς ἀνακράζω  
ὡς μεγάλα τὰ ἔργα, Χριστέ μου, τῆς σῆς δόξης.]

### ᾠδὴ ε΄

ᾠ παντεπόπτα τῶν ἀνάκτων τὸ κλέος  
τίς σου τὸ φιλόανθρωπον γηγενῶν οὐ θαυμάσει;  
ἐν γῆ γὰρ ὤφθης μὴ λιπὼν τὰ πατρῶα  
σήμερον πᾶσαν ἐγκαινίζων τὴν κτίσιν  
καὶ εἰρήνην ὡς μόνος εἰρηνάρχης βραβεύων.

### ᾠδὴ ς΄

Εἰς βυθὸν ἀπωλείας ἢ ταλαίπωρος φύσις  
Χριστέ μου Λόγε, καταντήσασα πάλαι

ἔχειτο φεῦ μοι! σκοτεινοῖς ἐν κευθμῶσιν·  
ἐπεὶ δὲ τῇ σῇ θεϊκῇ δυναστείᾳ  
πρὸς οὐρανῶν μετέβη τὰ τερπνότατα κάλλη·  
θύσω σοι, σῶτερ, ἔβόα, θυσίαν αἰνέσεως.

Ῥδὴ ζ'

Ὡς οἱ παῖδες πάλαι σοι κράζομεν, Λόγε·  
γενοῦ σῶν δούλων ἕρκος φύλαξ καὶ σκέπη  
καὶ σῶσον πάντας προσβολῆς ἐναντίας  
ὅπως ὑμνοῦντές σε σοῖς γενεθλίοις  
εἰς αἰῶνας λέγομεν· εὐλογητὸς εἶ.

Ῥδὴ η'

Αἰνοῦμεν, εὐλογοῦμεν καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον.  
Νεουργέ τοῦ σύμπαντος κόσμου καὶ σῶστα  
ὑμνεῖ σε πᾶσα μετ' ἀγγέλων ἢ κτίσις  
σκιρτᾷ χορεύει καὶ ἀγάλλεται τρόμῳ,  
εὐλογεῖτε λέγουσα πάντα τὰ ἔργα  
τὰ σεπτὰ Γενέθλια τοῦ λυτρωτοῦ μου  
σὺν ἐμοὶ εἰς τοὺς αἰῶνας πόθῳ ὑπερυψοῦντα.

Σύντομοι

Απόστολου Ε. Παπαχρήστου

Αντωνίου ἱερέως καὶ Νομοφύλακος

Αργαῖ

Πέτρου Μπερεκέτη

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

## Σύντομοι

### Απόστολου Ε. Παπαχρήστου

Ῥδὴ α'

Ἦχος ᾠ Πα

Απόστολου Ε. Παπαχρήστου  
Νέον Ειρμολόγιον  
1998 σ.227\*

Χ ρι στος εν πο ο λει ει Βη θλε εμ βρε φουρ γει

ει ται την η μωνως ευ σπλαγ χνος και νουρ γω ων φυ σιν <sup>π 9</sup>

προ θυ μως δευ τε ε γη γε νει εις τη καρ δι ι α

α σμα μελωδον α α σω μεν τω Δε σπο ο τη <sup>π 9</sup> εις αι

ω ω ω νας εν δο ξως γαρ δε ε δο ο ξα α σται <sup>π 9</sup> Ὡδὴ γ'

**Υ** ψι με δων α ναρχε ευ με νε ες Λο γε ε

πι ι βλε ψον προ σχες μοι δα κρυρ ρο ου σα <sup>π 9</sup> ε κτε

νωσ ε βο α σοι προ πα λαι Α αν να αλλ ως ε

κει ει νης η η κου σας θρη νω δου σης <sup>π 9</sup> και η μων

στε ρε ω ω σον τας φρε νας Α α ναξ <sup>χορὸς α'</sup> του α ξι ως υ

μνειν σου τα γε νε ε θλι ι α <sup>π 9</sup> Ὡδὴ δ'

α κη κο ως ο προ φη η της Χρι στε την

α κο ην σου ε φο βη η θη <sup>π ρ</sup> ο τι με ελ λεις εκ Παρ

θε νου προ ελ θειν και ε βο η σε τρο ο μω Δο ξα

τη δυ να μει σου Κυ υ ρι ι ε <sup>π ρ</sup> ᾠδὴ ε'

ω παν τε πο ο πτα α των α να κτων το

κλε ε ος τις σου το φι λαν θρω πον γη γε νω ων μη θαυ

μα α σει <sup>π ρ</sup> εν γη γαρ ω φθη ης μη λι πω ων τα πα

τρω ω α ση μερον πα α σαν εγ και νι ι ζων την κτι ι

σιν <sup>π ρ</sup> και ει ρη η νην ως μο ο νος ει ρη να αρ

χη ης βρα βευ ων <sup>π ρ</sup> ᾠδὴ ε'

Εἰς βυθὸν ἀπωλείας ἠτάλαι

πῶρος φύσις Χριστέ μου Σωώτερ κάταντη

σασαπαλαί <sup>πρ</sup> ἐκεῖτο φεῦ μοι οἰσχοῦται

νοῖ οἰς ἐν κευθμῶσιν ἐπεὶ δετήση θεῖκη ἠδύνα

στεῖ εἰ <sup>πρ</sup> ἀπὸς οὐρανῶν ἀνεβή ἠτάτερ πνοοτάτα

καἀλλήθυσω σοὶ Σωώτερ βοᾶθυσὶ ἀναίνε

σε εὖ <sup>πρ</sup> ὡς ᾠδὴ ζ'

Ὡς οἱ παῖδες πααλαίαι σοὶ κραυγάζο

μεν Λοογεγενοῦσιν δούουλων Σωώτερ φῦ

λαξ καὶ σκεεπή <sup>πρ</sup> καὶ σωσον παντάσ προσβλή

ης ε ναν τι ι ας ο πως υ μνουν τες σοις γε νε θλι ι

οις <sup>π ρ</sup> εις αι ω νας λεγωμεν ευ λο γη τος ει <sup>π ρ</sup> Ωδὴ η'

<sup>χ</sup> Α ι νου μεν ευ λο γου μεν <sup>χ</sup> και προ σκυ νου μεν τον

Κυ ρι ον <sup>Δ</sup> δὴ

**N** ε ουρ γε του συ μπαν τος κο ο σμου και σω ω

στα υ μνει σε πα α σα μετ αγ γε ε λων η κτι

οις <sup>π ρ</sup> σκιρ τα χο ρευ ει ει και α γα αλ λε ται τρο ο

μω ευ λο γει τε λε γου σα παν τα τα ερ γα <sup>π ρ</sup> τα

σε πτα γε νε θλι ι α του Δυ τρω του ου μου συν ε μοι

εις τους αι ω νας πο θω υ περ υ ψουν τα α α

π  
9  
α

## Άργαί

### Ἄντωνίου ιερέως καὶ Νομοφύλακος<sup>4</sup>

Μέλος Ἄντωνίου ιερέως καὶ Νομοφύλακος τῆς Ἁγίας τοῦ Χριστοῦ Μεγάλης Ἐκκλησίας  
(τέλη ις' -ἀρχές ιη' αἰ.)

ῥοδὴ α'

Ἦχος ♩ Πα

Εμμανουὴλ Γιαννόπουλου  
IMS-RASMB, Series Musicologica Balcanica  
1.2.2021.  
e-ISSN: 2654-248X\*

Χ ρι στο ος ε εν πο λει Βη θλε ε ε εμ βρε φου  
 ουρ γει ει ει ται την η μω ων ως ε ευ σπλα  
 α χνο ος και νου ουρ γων φυ υ υ υ σιν προ θυ μω  
 ως δευ τε ε ε γη η γε ε νεις τη η κα αρ δι ι  
 ι α α σμα με λω ω ω δο ον α α α α σω ω

<sup>4</sup> Οἱ καταβασεῖς αὐτές, ποίημα ἀδῆλου ὕμνογράφου (ἴσως τοῦ ια' ἢ ιβ' αἰῶνος), ἐξηγήθησαν στὴν Νέα Μέθοδο ἀναλυτικῆς ψαλτικῆς σημειογραφίας τὸν Ἰανουάριο τοῦ ἔτους 2017 ἐκ τῶν κωδίκων μονῆς Ἰβήρων 968 (ἔτους 1724) καὶ Ψάχου-Γρηγορίου 78<sup>Α</sup> (αὐτογράφων τοῦ μελοποιῦ), ἀπὸ τὸν Ἐμμανουὴλ Γιαννόπουλο, ἐπικουρο καθηγητῆ τοῦ Τμήματος Μουσικῶν Σπουδῶν τοῦ Ἀριστοτελείου Πανεπιστημίου Θεσσαλονίκης. Ἐπιθεωρήθηκε καὶ πληκτρολογήθηκε ἡ ἐξήγησις τὸν Αὐγούστο τοῦ ἴδιου ἔτους.





ι ι ως χορός α' υ μνειν σου τα γε ε νε θλι ι ι ι

α π ρ

Σύμφωνα με τὸν κώδικα Ψάχου-ἀρχεῖο Γρηγορίου 78Α:

\* γε ε νε ε ε ε ε θλι ι ι ι α π ρ ὠδή δ'

α κη η κο ο ως ο προ ο φη η η της Δ

Χρι στε την α κο ο η η η σου ε ε ε ε φο ο βη

η η θη π ρ ο ο τι με ε ε ελ λεις ε εκ Παρ

θε ε νου προ ο ε ελ θειν Δ και ε ε βο ο ο

η η σε τρο ο ο ο μω π ρ δο ο ξα τη η δυ υ

να μει σου ου Κυ ρι ι ι ι ε π ρ

Σύμφωνα με τὸν κώδικα Ψάχου-ἀρχεῖο Γρηγορίου 78Α:

\* σου ου Κυ υ υ υ υ ρι ι ι ε π ρ

ῥδῆ ε'

ω παν τε πο ο ο πτα α των α α να α α κτω

ων το ο κλε ε ε ος τις σου το φι ι λαν θρω ω

πο ον γη η γε ε νων ου θαυ μα α α α σει εν π ρ

γη η η η γαρ ω ω φθης μη λι ι πω ω ων τα πα

α τρω ω ω α ση με ρον πα α α σαν εγ και αι νι

ι ι ζων την κτι ι ι ι σιν και ει ρη η νην π ρ

ω ως μο ο ο νο ος ει ρη η να α α αρ χης π ρ

βρα βε ε ε ε ων π ρ

ῥδῆ ε'

Εἰς βυθὸν ἀααπώωλει εἰεἰας <sup>πρ</sup> ἠτα

λαίαιπώωωωροοςφυυυσις <sup>πρ</sup> Χρίστε εμου Σω

ωωωωτερ <sup>Δ</sup> \* καταντηησασααααπαα

λαίεκειεἰτο <sup>πρ</sup> φεεμοισχοτειεἰεἰνοῖςε

εενκεευθμωωωσιν <sup>πρ</sup> επειεἰεἰδεετηηση


θεεἰἰκηηηδυνααστειεἰεἰα <sup>Δ</sup> προς

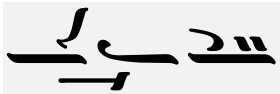
ουρααανωωωωναανεεεβηη <sup>Δ</sup>

τατερπνοοοταατακααααλλη <sup>πρ</sup> θυ

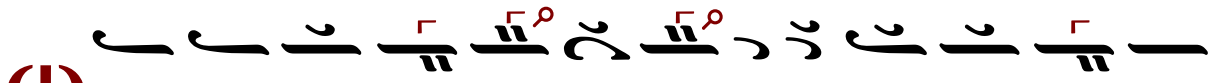
σωωσοι Σωωτερβοοα <sup>Δ</sup> θυσιαναιαι

νεεεεεσεεεεως <sup>πρ</sup>

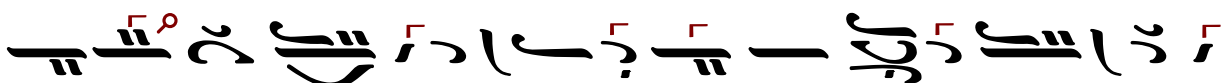
\*   
κα ταν τη η σα α σα α πα α α λαι ε χει ει το



  
φε ευ μοι



ῶδὴ ζ'

Ω   
ς οι παι αι αι δεσ πα α λαι σοι κρα α α


  
ζο ο ο μεν Δο ο ο ο γε  γε νου ου σω ων δου ου

  
ου ου λων Σω ω ω τε ε ερ φυ λα αξ και σκε ε

  
ε ε πη  και σω ω σο ον πα α αν τα ας προσ βο ο

  
λη η ης ε να αν τι ι ι ας  ο πω ως υ

  
μνου ου ου ουν τες σοις γε νε ε θλι ι ι οις  εις

  
αι ω ω νας λε γο ο με εν ευ λο ο γη το ο ο ος

  
ει 

ῶδὴ η'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου με

εν τον Κυ ρι ι ον

Ν ε ουρ γε ε του συ υμ πα αν τος κο σμου και

αι Σω ω ω στα υ μνει ει σε ε πα α α σα α

μετ α αγ γε ε ε λων η κτι ι ι ι σις σκιρ

τα χο ο ρε ε ευ ει ει και α γαλ λε ε ε ε ται αι

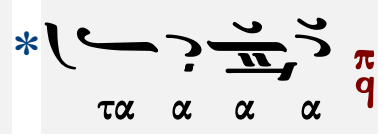
τρο ο ο μω ευ λο ο γει τε λε γου ου σα α παν

τα α α τα ε ε ε ερ γα τα σε ε πτα γε νε

θλι ι α του Λυ υ τρω ω του ου ουμου συν ε μοι οι οι

οι οι εις του ους αι αι αι ω νας πο ο ο θω ω υ


 πε ερ υ ψου ου ου ουν τα π ρ

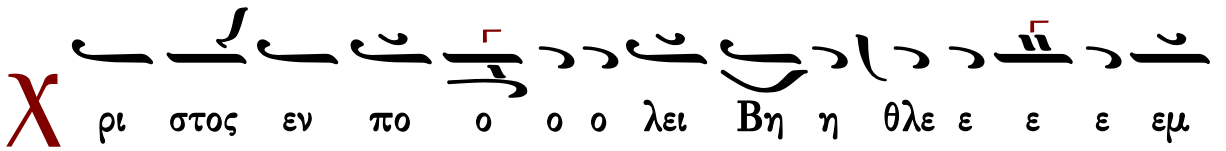

 τα α α α π ρ

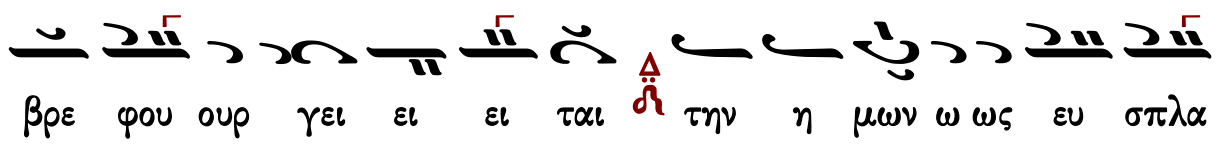
Πέτρου Μπερεκέτι<sup>5</sup>

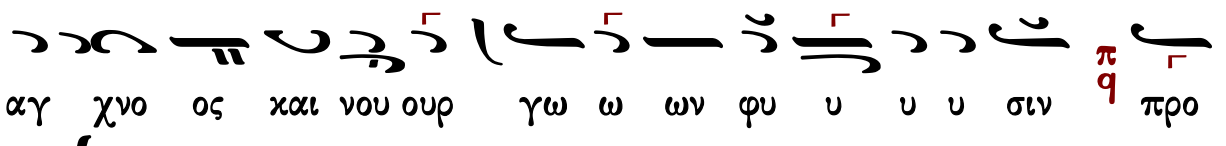
ῶδὴ α'


Ἦχος ᾠ̣ Πά


χειρόγραφο Γρηγορίου Πρωτοψάλτου  
Βιβλιοθήκη Κ.Α.Ψάχου\*

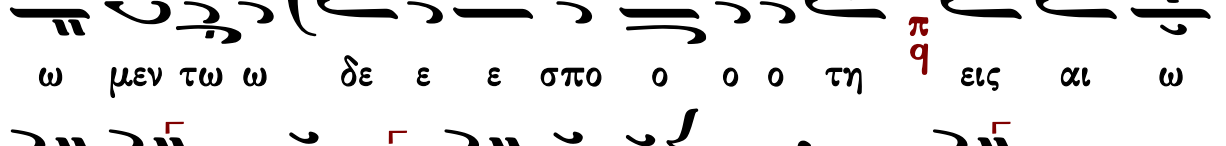

 Χ ρι στος εν πο ο ο ο λει Βη η θλε ε ε ε εμ

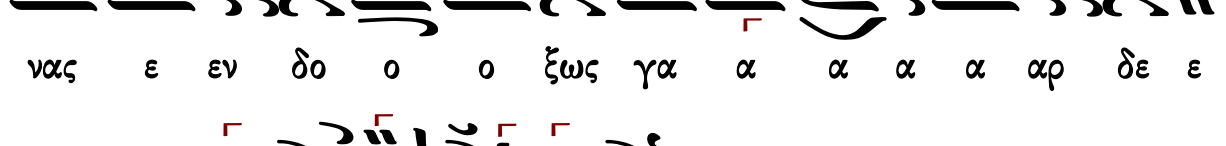

 βρε φου ουρ γει ει ει ται την η μων ω ως ευ σπλα

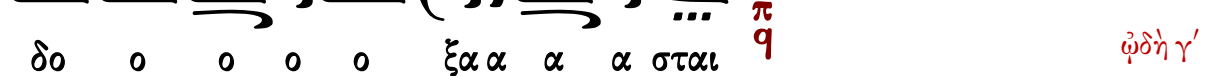

 αγ χνο ος και νου ουρ γω ω ω ν φυ υ υ υ σιν προ


 θυ μως δε ε ευ τε γη γε ε νει εις τη κα αρ δι


 ι ι α α σμα με ε λω ω δον α α α α σω


 ω μεν τω ω δε ε ε σπο ο ο ο τη εις αι ω


 νας ε εν δο ο ο ξως γα α α α α αρ δε ε


 δο ο ο ο ο ξα α α α σται

ῶδὴ γ'

<sup>5</sup> Οἱ προεόρτιες ἱαμβικὲς Καταβασίς (ἀνώνυμης φερόμενης, ι' - α' αἰ.) μέλος ἀργὸ ἐιρμολογικὸ Πέτρου Μπερεκέτη (α' τέταρτο ἡ' αἰ.). Ἐξήγησις Γρηγορίου Πρωτοψάλτου (†1821)

ψι με ε ε ε δων α α ναρ χε ευ με νε

ες Λο ο ο γε ε πι ι ι βλε ε ε ψο ον

προ ο σχε ες μοι δα κρυ υρ ρο ου ου ου ου ση εκ

τε νως ε βο α α σοι οι προ πα λαι αι Α α αν να

αλλ ως ε ε ε ε χει ει ει ει νη ης η η η η

κου ου σας θρη η νω ω ω δου ου ου ου σης και η

μω ων στε ε ε ρε ε ω ω ω σο ον τας φρε να

ας α α α ναξ του α ξι ι ι ι ως υ υ μνειν

σου ου τα γε ε νε ε ε ε ε θλι ι ι ι

α

ὠδὴ δ'



**Α** κη κο ω ως ο προ φη η η τη ης Χρι ι στε

ε την α α κο ο ο ο η ην σου ε φο ο βη η η

θη **Δ** ο τι ι με ε ελ λεις ε εκ Παρ θε νου προ ο ο

ε ε ελ θει ειν **π** και αι αι αι ε ε βο η σε

ε τρο ο ο μω **Δ** δο ο ο ο ο ξα τη δυ υ να α

α μει ει σου ου Κυ υ υ υ υ ρι ι ι ι ε **π**

ὠδὴ ε'

**Ω** πα α α αν τε ε ε ε πο ο ο πτα **Δ** τω

ων α να α α κτωων το ο ο κλε ε ε ε ος **π**

τις σου το φι λαν θρω ω πον γη η γε νω ω ων ου ου

θα α αυ μα α α α σει **π** εν γη γαρ ω ω ω φθης

μη η η η λι ι πων τα πα α τρω ω ω α

ση με ρον πα α α σαν ε ε ε εγκαι αι νι ζωων

τη η ην κτι ι ι ι σιν και ει ρη νην ως μο ο ο

ο νο ο ος ει ει ρη η να α α αρ χης βρα βε ε ε ευ

ων π ρ ὠδὴς'

εις βυ θο ο ο ον α πω λει ει ει ει ας η τα

λαι αι πω ρος φυ υ υ υ σις Χρι στο ος μου ουου Σω

ω ω τερ κα α τα αν τη σα α σα α α πα α α α

λαι ε χει ει ει ει το ο φε ε ε ευ μοι σκο τει ει νοι

οι οι οις ε εν κε ε ευ θμω ω ω ω σιν ε πι

δε τη η ση η θε ε ι ι κη δυ να α στει ει  
 ει α **Α** προ ος ου ρα νων α α νε ε ε βη τα α τε ερ  
 πνο τα τα κα α α α λ λη **π** θυ υ σω σοι οι Σω ω ω τερ **η**  
 βο α θυ υ σι ι α α α α α αν αι αι νε  
 ε ε ε ε σε ε ε ε ως **π** ῥδῆζ'  
**Ω** ς οι παι αι αι αι δες πα α λαι αι σοι κρα ζω ω  
 με εν Λο ο ο ο ο γε **χ** γε νου σων δου ου ου λων Σω ω  
 τε ερ φυ λα αξ και αι αι σκε ε ε ε πη **π** και  
 σω σον πα α α αν τας **χ** προ οσ βο ο λη ης ε  
 ε να αν τι ι ι ι ι ας **χ** ο πω ω ως υ υ μνου  
 ου ου ουν τες σοις γε νε θλι ι ι ι οις **π** εις αι αι ω

ω ω ω νας **η** λε ε γο ο μεν ε ε ευ λο ο γη η η

το ο ο ο ος ει **π** **9** **ῶδὴ η'**

**χ** **Α** ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου με

εν τον Κυ ρι ι ον **Δ** **π** **9**

**N** ε ουρ γε του συμ πα αν τος κο σμου και αι Σω ω

ω στα **Δ** υ μνει σε πα α α α σα με ετ αγ γε

ε ε λω ων η η η κτι ι ι ι σις **π** **9** σκιρ τα α χο

ρε ε ευ ει και αι α γαλ λε ται αι τρο ο ο

μω **Δ** ευ λο γει τε λε γου ου σα παν τα τα α ε

ε ε ερ **Δ** τα σε πτα γε εν νε θλι α α του

λυ υ τρω ω ω του ου ου μου **π** **9** συν ε μοι εις τους αι

ω ω ω νας πο ο ο ο θω ω υ περ υ ψου ου

ουουν τα α α π ρ

### Κωνσταντίνου Παπαγιάννη (†8.4.2014)6

ψόδη α'

### Ἦχος ᾠ Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Καλοφωνικὸν Εἰρμολόγιον 1995\*

Χ ρι στο ος ε εν πο ο ο ο ο λει ει Βη η

θλε ε ε ε ε εμ βρε ε φου ουουρ γει ει ει ται χ ρ την

η η μω ων ω ως ευ σπλα α αγ χνος δ και αι νου ουρ γω

ω ω ω ων φυ υ υ υ σιν π ρ προ θυ μω ως δε ε

ε ευ τε γη γε νει ει εις τη η κα α αρ δι ι

ι ι ι α δ α σμα με λω ω δου ου ου α α α α

6 Οἱ παρόντες προσόρτιοι τῶν Χριστουγέννων εἰρμῶι, μὴ ὑπάρχοντες εἰς τὰ ἐν χρήσει λειτουργικὰ βιβλία, ἐτονίσθησαν εἰς ἄργον εἰρμολογικὸν μέλος κατὰ μίμησιν τῶν ἱαμβικῶν καταβασίων τῶν Χριστουγέννων. [π.Κ.Π. 21.6.1988]

σ ω μ εν τ ω ω Δ ε ε ε σ πο ο ο ο ο τ η π ρ

εις αι ω ω ω ω ν ας εν δο ο ξ ω σ γ α αρ δε

ε δο ο ο ο ξ α α α σ τ αι π ρ φ δ η γ

ψ ι μ ε ε δ ω ν α α ν α αρ χ ε ε ευ με

ν ε ε σ Λ ο ο ο γ ε ε ε ε πι ι β λ ε ε ψ ο ο ν

π ρ ο σ χ ε ε ε σ μ ο ι δ α κ ρ υ ρ ρ ο ο υ ο υ ο υ ο υ σ α η

σ ε π τ η η ε ε β ο ο α α σ ο ι ο ι π ρ ο ο ο ο π α

α λ α ι αι αι Α α α α αν να α λ λ ω σ ε κ ει ν η η σ

η η η η κ ο υ ο υ σ α σ θ ρ η η ν ω ω δ ο υ ο υ ο υ

σ η η η σ και η μ ω ω ν σ τ ε ε ρ ε ε ω ω σ ο ν τ α σ φ ρ ε

ε ε να α ας α α α α ναξ π του α ξι ι ι ως

υ μνει ειν σου χορός α τα γε ε νε ε ε ε θλι ι ι

ι α π ωδή δ'

α κη κο ο ως ο προ φη η η τη ης Χρι

ι ι στε την α κο η η η η ην σου ου ε φο

βη η η η θη η ο τι με ε ελ λεις εκ Παρ θε ε

νου ου προ ο ε ελ θει ει ει ει ει ει ει ειν και ε βο

ο η η σε ε τρο ο ο ο ο μω δο ο ξα α τη δυ υ

να α α μει σου ου Κυ υ υ υ ρι ι ι ι ε

ἀντί τοῦ παραπάνω

α β βα ακουμ την εν δο ξον σου πα α α ρου σι

ι ι αν α ακτι ι στε ε ε Λο ο ο ο ο γε  
προ ι ι δων ε ε ε με λω ω ω δει α κη  
η κο α α Κυ ρι ι ε ο τι εξ ο ο ο ρου ους  
α γι ι ι ι ου η η η η η η ξεις εις βρο τω  
ω ω ων σω ω ω τη ρι ι ι ι αν και δε ε ους  
πλη η ρηης γε ε γο ο νως α να κρα α α ζω  
ως με γα λα τα α ε ε ερ γα α α Χρι στε ε ε ε μου  
τη ης ση η ης δο ο ο ο ξης

ω ω παν τε πο ο ο πτα α των α να α α  
κτω ων το ο ο κλε ε ε ε ε ος τις σου το φι ι  
λα αν θρω ω πον γη γε νω ω ων ου ου ου



θα α αυ μα α α α σει π ρ εν γη η γαρ ω ω

ω ω ω ω φθης q x μη η λι ι πω ω ω ω ω ν

τα α πα α α τρω ω ω ω α π ρ ση με ρον πα

α α α σα αν ε εγ και αι νι ι ι ζω ων τη

ην κτι ι ι σι ι ι ν Δ και ει ρη νη ην ω ως

μο ο ο νο ος Δ ει ρη να α α αρ χη ης βρα α

α βε ε ε ε ευ ων π ρ ωδής'

Ε ις βυ θο ο ο ον α πω ω λει ει ει ει α ας π ρ

η τα λαι αι αι πω ω ρος φυ υ υ υ υ σις π ρ Χρι

στε μου ου Σω ω ω τερ κα ταν τη σα α σα α

πα α α α α λαι π ρ ε κει ει το ο φε ε ε ευ μοι οι z

σχο τει νοι οισ εν κευ θμω ω ω ω ω ω σιν ε πει

δε τη ση η θε ε ι ι κη η η δυ υ να

α στει ει ει α α α προ ος ου ρα α νων α

νε ε ε ε βη η η τα τερ πνο ο ο ο ο τα

α α τα α α κα α α α αλ λη θυ υ σω ω σοι οι

Σω ωω τερ βο ο α θυ σι ι αν αι αι νε ε ε

ε σε ε ε ε ως

ω ς οι παι αι δε ες πα α λαι αι σοι κρα ζο ο με

εν Λο ο ο γε ε ε γε νου ου σω ων δου ου ου

λω ων Σω ω ω τερ φυ λα αξ και αι αι σκε ε ε ε

ε πη και σω σον πα α αν τα ας προσ βο ο λη η

ης ε εν α αν τι ι ι α α ας

ο ο πωσ υ υ μνου ντε ες σε ε ε σοι οι οισ γε ε ε

νε ε ε θλι ι ι ι οισ εις αι ω ω ω νας

λε ε ε γωω μεν ε ε ευ λο ο γη η η το

ο ο ο ος ει

ῶδὴ ἡ'

αι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου με

εν τον Κυ ρι ι ον

Ν ε ουρ γε ε του ου συ υμπα αν το ος κο ο

σμου και αι σω ω ω στα α α υ μνει σε πα α

α α σα α μετ αγ γε ε ε ε λω ων η η η κτι ι

ι ι σις π<sup>9</sup> σκιρ τα χο ρε ε ε ευ ει ει και αι α α

γα α α αλ λε ε ται αι αι τρο ο ο ο μω χ<sup>9</sup> ευ λο ο

γει ει τε ε λε γου ου ου σα Δ<sup>9</sup> πα α α αν τα α τα α

α ε ε ε ε ερ γα π<sup>9</sup> τα σε πτα γε ε νε ε θλι

ι α του λυ τρω ω του ου ου μου ου Δ<sup>9</sup> συν ε μοι οι εις

του ους αι αι ω ω ω νας γ<sup>9</sup> πο ο ο θω ω ω

υ υ πεερ υ υ υ ψου ου ου ουν \* π<sup>9</sup> τα

\* τα α α α π<sup>9</sup>

### Τιμιωτέρα

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

- ∴ Μεγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἠγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ σωτῆρί μου. 46-47
- ∴ Ὅτι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48
- ∴ Ὅτι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50
- ∴ Ἐποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσκόρπισεν ὑπερηφάνους διανοίᾳ καρδίας αὐτῶν. 51
- ∴ Καθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξαπέστειλε κενούς. 52-53
- ∴ Ἀντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55
- Τὴν Τιμιωτέραν τῶν Χερουβίμ, καὶ ἐνδοξοτέραν ἀσυγκρίτως τῶν Σεραφίμ, τὴν ἀδιαφθόρως Θεὸν Λόγον τεκοῦσαν, τὴν ὄντως Θεοτόκον, σὲ μεγαλύνομεν.**

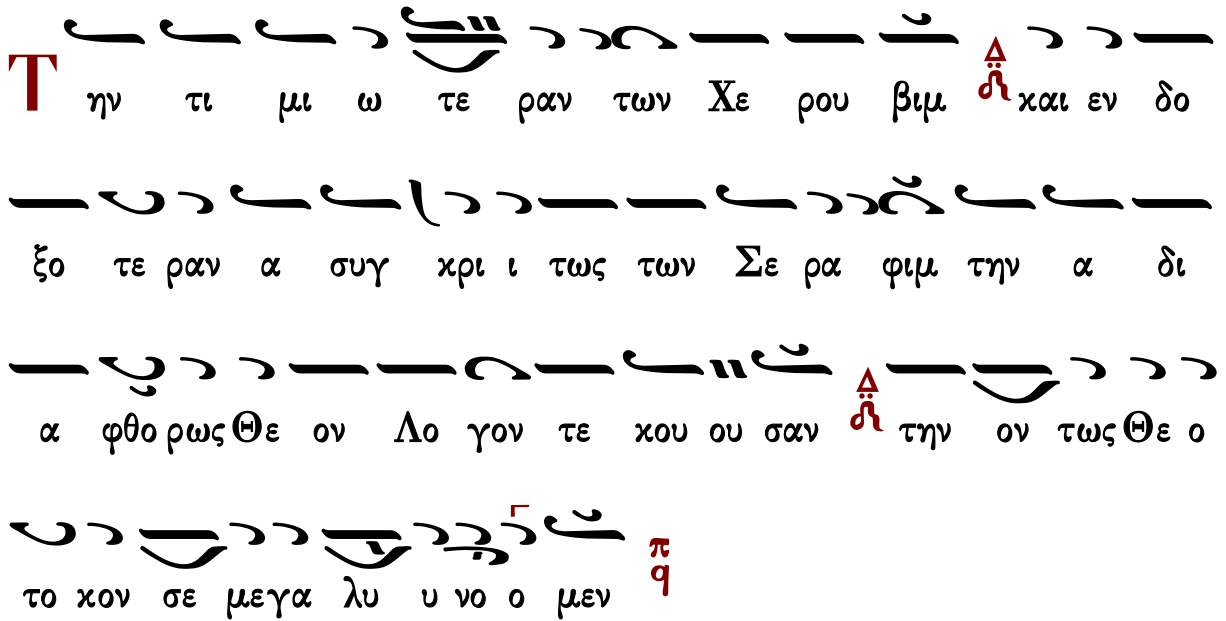
Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

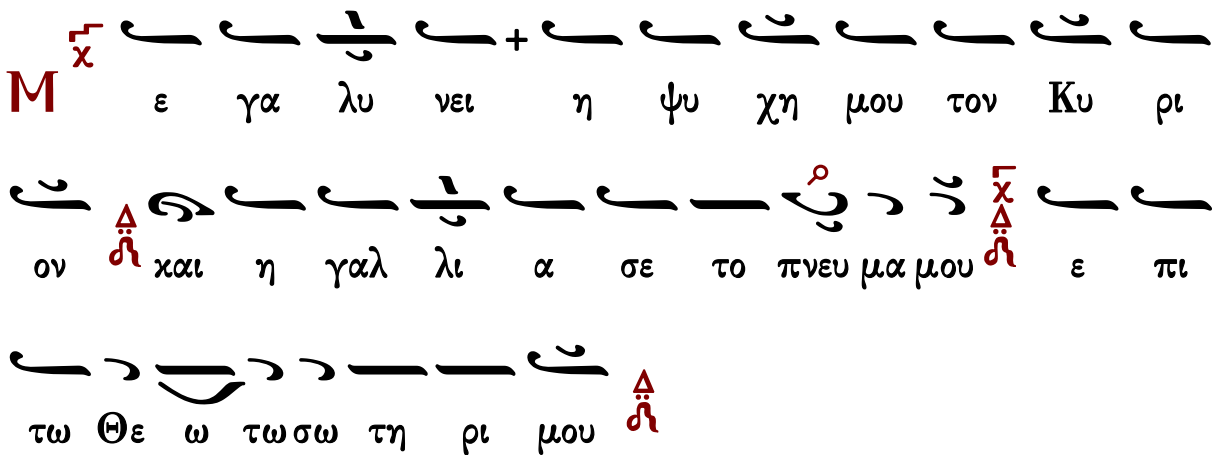
## Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου

## ἤχος ᾠ Πα

- ∴ Μεγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἠγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ σωτῆρί μου. 46-47
- ∴ Ὅτι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48
- ∴ Ὅτι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ Δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50
- ∴ Ἐποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσκόρπισεν ὑπερηφάνους διανοίᾳ καρδίας αὐτῶν. 51
- ∴ Καθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξαπέστειλε κενούς. 52-53
- ∴ Ἀντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55


**Τ** ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ και εν δο  
 ξο τε ραν α συγ κρι ι τως των Σε ρα φιμ την α δι  
 α φθο ρως Θε ον Λο γον τε κου ου σαν την ον τως Θε ο  
 το κον σε μεγα λυ υ νο ο μεν π


Κωνσταντίνου Παπαγιάννη




**Μ** ε γα λυ νει η ψυ χη μου τον Κυ ρι  
 ον και η γαλ λι α σε το πνευ μα μου ε πι  
 τω Θε ω τωσω τη ρι μου

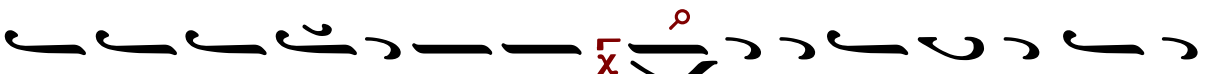

**Τ**ην τιμιωτεραν των Χερουβιμ και ενδοξο  
τεραν ασυγκριιτως των Σεραφιμ την αδια  
φθορωσ Θεον Λογον τεκουσαν την οντως Θεο  
τοκον σε μεγαλυνοομεν **π ρ**



**Ο**τι επεβλεψεν επι την ταπεινω  
σιν της δουλης αυτου **Δ**ι δουγαραπο του νυν μακα  
ριου σιμε πασαι αι γε νειαι **Δ**



**Τ**ην τιμιωτεραν των Χερουβιμ και ενδοξο  
τεραν ασυγκριιτως των Σεραφιμ την αδια  
φθορωσ Θεον Λογον τεκουσαν την οντως Θεο  
τοκον σε μεγαλυνοομεν **π ρ**



**Ο**  τι ε ποι η σε μοι με γα λει α ο



 δυ να τος και α γι ον το ο νο μα αυ του  και το ε



 λε ος αυ του εις γε νε  αν και γε νε αν τοις φο βου

 με νοις αυ τον 




**Τ**  ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ  και εν δο

 ξο τε ραν α συγ κρι ι τως των Σε ρα φιμ  την α δι


 α φθο ρως Θε ον Λο γον τε κου σαν  την ον τως Θε


 ο το κον σε μεγα λυ υ νο ο μεν 


**Ε**  ποι η σε κρα τος εν βρα χι ον ι αυ


 του  δι ε σκορ πι σεν υ περ η  φα νους δι α νοι




α καρ δι ας αυ των 



**T** ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ  και εν δο

ξο τε ραν α συγ κρι ι τως των Σε ρα φιμ  την α δι


α φθο ρως Θε ον Λο γον τε κου σαν  την ον τως Θε


ο το κον σε μεγα λυ υ νο ο μεν 

**K** α θει λε δυ να στας α πο θρο νων και υ ψω σε τα

πει νους  πει νων τας εν ε πλη σεν α γα θων  και

πλου τουν τας εξ α πε στει λε κε νους 

**T** ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ  και εν δο

ξο τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ  την α δι

α φθο ρως Θε ο ον Λο γον τε κου σαν την ον τως Θε

ο το κον σε μεγα λυ υ νο ο μεν

Α ν τε λα βε το Ισ ρα ηλ παι δος αυ του μνη

σθη ναι ε λε ους κα θως ε λα λη σε προς τους πα

τε ρας η μων τω Α βρα αμ και τω σπερ μα τι αυ

του ε ως αι ω νος

Τ ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ και εν δο

ξο τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ την α δι

α φθο ρως Θε ο ον Λο γον τε κου σαν την ον τως Θε

ο το κον σε μεγα λυ υ νο ο μεν

# Καταβασία Θ' φδῆς

ᾠδὴ θ'

Χαίροις, πάναγνε θεοδέγμον Μαρία,  
χαίροις, ἄχραντε τῶν πεπτωκότων βάσις·  
ἐν σοὶ γὰρ ὤφθη σήμερον ὁ Δεσπότης  
ὦ θαῦμα! καινουργῶν τοὺς φθαρέντας  
καὶ πρὸς φῶς ἐπανάγων τὸ ἀνέσπερον, Κόρη.

Σύντομος

Απόστολου Ε. Παπαχρήστου

Ἀντωνίου ἱερέως καὶ Νομοφύλακος

Ἀργή

Πέτρου Μπερεκέτη

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

## Σύντομος

Απόστολου Ε. Παπαχρήστου

φδῆ θ'

ᾠχος ᾠ Πα

Απόστολου Ε. Παπαχρήστου  
Νέον Ειρμολόγιον  
1998 σ.231\*

Χ α ι ρ ο ι ς π α ν α γ ν ε ε θε ο δε γ μ ο ν Μ α ρ ι ι α  
 χ α ι ρ ο ι ς α χ ρ α ν τ ε τ ω ν π ε π τ ω κ ο τ ω ν β α σ ι ς π εν σοι γ α ρ  
 ω φ θ η σ η μ ε ρ ο ν ο Δ ε σ π ο ο τ η ς ω ω θ α α υ μ α κ α ι  
 ν ο υ ρ γ ω ω ν τ ο υ ς φ θ α ρ ε ε ν τ α ς και π ρ ο ς φ ω ς ε π α ν α α

γον το α νε ε σπε ρον κο ρη η η η <sup>π</sup>η

Ἄρχη

Ἀντωνίου ἱερέως καὶ Νομοφύλακος

ῥοδὴ θ'

Ἦχος ᾠ Πα

Εμμανουήλ Γιαννόπουλου  
IMS-RASMB, Series Musicologica Balcanica  
1.2.2021.  
e-ISSN: 2654-248X\*

**Χ**αι ροι οἰς πα αν α α γνε ε Θε ο ο δε ε ε γμον

Μα α ρι ι ι α <sup>Δ</sup>χαι ροι οἰς α α χρα αν

τε ε τω ω ων πε ε πτο κο τω ω βα α α σις <sup>Δ</sup>

εν σοι οἰ γα αρ ω ω ω φθη ση η η η με ε ρον ο ο

Δε σπο ο ο ο της <sup>π</sup>η ω θα α α α α α α

α α αυ μα α <sup>χ</sup>η και νου ουρ γω ω ων τους φθα ρε ε

ε εν τας <sup>π</sup>η και προ ος φως ε πα α να α α γων

το ο ο ο α α νε σπε ε ρον Κο ο ο ο ρη π ρ

\* ρη η η η π ρ

Πέτρου Μπερεκέτι

ψδθ θ'

Ἦχος ♯ ρ̣ Πα̣

χειρόγραφο Γρηγορίου Πρωτοψάλτου  
Βιβλιοθήκη Κ.Α.Ψάχου\*

Χ αι ροις παν α α γνε ε ε θε ε ε ε ο δε ε γμω


ων Μα α ρι ι ι α χαι ροις α χραν τε ε τω ων


πε ε πτω κο ο τω ω ων βα α α α σις εν π ρ

σοι οι γα α αρ ω ω ω φθη ση η η η με ε ρον ο

Δε ε σπο ο ο της ω θα α αυ μα και αι αι

νου ουρ γων του ους φθα α α ρε ε ε εν τας και προ π ρ


  
 ος φως ε πα να α α γω ω ω ω ν τ ο ο α α νε

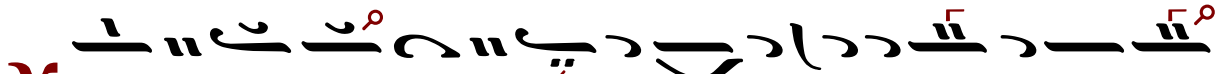

  
 ε ε ε σπερον κο ο ο ο ρη η η η


Κωνσταντίνου Παπαγιάννη (†8.4.2014)


ᾠδὴ θ'


Ἦχος ᾠ Πα


πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Καλοφωνικὸν Εἰρμολόγιον 1995\*



  
**Χ** αι αι ρις παν α α γνε ε θε ε ο ο δε ε ε ε


  
 γμο ον Μα α α ρι ι ι α χαι ρις α α χρα αν


  
 τε ε τω ω ω ν πε ε πτω κο ο ο τω ω ω ν βα


  
 α α α α σις εν σοι οι γαρ ω ω φθη η η


  
 ση η με ε ε ρον ο ο Δε ε ε σπο ο ο ο


  
 ο της ω θα α α αυ μα και νουρ γω ω ω ω ν

τους φθα α ρε ε εν τα ας και προς φω ω ως ε ε

πα α α να α α α α γων το α νε ε ε

ε σπε ε ρο ο ον Κο ο ο ο ο ρη

ρη η η η

ο Δε σπο ο ο ο της ω

άλλη γραμμή

# Τῶν Χριστουγέννων

Πεζαὶ καὶ ἰαμβικαὶ  
25, 26 καὶ 31 Δεκεμβρίου

## ἤχος α'

α **Χριστὸς γεννᾶται, δοξάσατε. Χριστὸς ἐξ οὐρανῶν ἀπαντήσατε. Χριστὸς ἐπὶ γῆς, ὑψώθητε, ἄσατε τῷ Κυρίῳ πᾶσα ἡ γῆ, καὶ ἐν εὐφροσύνῃ, ἀνυμνήσατε λαοί, ὅτι δεδόξασται.**

**Ἔσωσε λαόν, θαυματουργῶν Δεσπότης, ὑγρὸν θαλάσσης κύμα χερσώσας πάλαι· ἐκὼν δὲ τεχθεὶς ἐκ Κόρης, τρίβον βατήν, πόλου τίθησιν ἡμῖν· ὃν κατ' οὐσίαν, ἴσόν τε Πατρί, καὶ βροτοῖς δοξάζομεν.**

γ **Τῷ πρὸ τῶν αἰώνων, ἐκ Πατρὸς γεννηθέντι ἀρρεύστως Υἱῷ, καὶ ἐπ' ἐσχάτων ἐκ Παρθένου, σαρκωθέντι ἀσπύρως, Χριστῷ τῷ Θεῷ βοηθώμεν· ὁ ἀνυψώσας τὸ κέρασ ἡμῶν, ἅγιος εἶ Κύριε.**

**Νεῦσον πρὸς ὕμνους οἰκετῶν εὐεργέτα, ἐχθροῦ ταπεινῶν τὴν ἐπηρμένην ὀφρύν, φέρων τε παντεπόπτα τῆς ἀμαρτίας, ὑπερθεν ἀκλόνητον, ἐστηριγμένους, μάκαρ, μελωδοὺς τῇ βάσει τῆς πίστεως.**

δ **Ῥάβδος ἐκ τῆς ρίζης Ἰεσσαί, καὶ ἄνθος ἐξ αὐτῆς Χριστέ, ἐκ τῆς Παρθένου ἀνεβλάστησας· ἐξ ὅρους ὁ αἰνετὸς κατασκίου δασέος ἤλθες σαρκωθεὶς ἐξ ἀπειράνδρου, ὁ ἄυλος καὶ Θεός. Δόξα τῇ δυνάμει σου Κύριε.**

**Γένους βροτείου τὴν ἀνάπλασιν πάλαι, ἄδων προφήτης Ἀββακούμ, προμηνύει, ἰδεῖν ἀφράστως ἀξιωθεὶς τὸν τύπον. Νέον βρέφος γάρ, ἐξ ὅρους τῆς Παρθένου, ἐξῆλθε λαῶν, εἰς ἀνάπλασιν Λόγος.**

ε **Θεὸς ὢν εἰρήνης, Πατὴρ οἰκτιρμῶν, τῆς μεγάλης βουλής σου τὸν ἄγγελον, εἰρήνην παρεχόμενον ἀπέστειλας ἡμῖν· ὅθεν θεογνωσίας, πρὸς φῶς ὀδηγηθέντες, ἐκ νυκτὸς ὀρθρίζοντες, δοξολογοῦμέν σε φιλάνθρωπε.**

**Ἐκ νυκτὸς ἔργων, ἐσκοτισμένης πλάνης ἰλασμὸν ἡμῖν Χριστέ τοῖς ἐγρηγόρως, νῦν σοι τελοῦσιν ὕμνον, ὡς εὐεργέτη, ἔλθοις πορίζων εὐχερῆ τε τὴν τρίβον, καθ' ἣν ἀνατρέχοντες, εὐροίμεν κλέος».**

ς **Σπλάγχχνων Ἰωνᾶν, ἔμβρουον ἀπήμεσεν ἐνάλιος θήρ οἷον ἐδέξατο· τῇ Παρθένῳ δέ, ἐνοικήσας ὁ Λόγος, καὶ σάρκα λαβὼν διελήλυθε φυλάξας ἀδιάφθορον· ἥς γὰρ οὐχ ὑπέστη ρεύσεως, τὴν τεκοῦσαν κατέσχεν ἀπήμαντον.**

**Ναίων Ἰωνᾶς, ἐν μυχοῖς θαλαττίοις, ἐλθεῖν ἐδεῖτο, καὶ ζάλην ἀπαρκέσαι. Νυγεῖς**



ἐγὼ δέ, τῷ τυραννοῦντος βέλει, Χριστὲ προσαιδῶ, τὸν κακῶν ἀναιρέτην, θᾶπτον μολεῖν σε τῆς ἐμῆς ῥαθυμίας.

ζ **Οἱ** παῖδες εὐσεβεία συντραφέντες, δυσσεβοῦς προστάγματος καταφρονήσαντες, πυρὸς ἀπειλὴν οὐκ ἐκπτοήθησαν, ἀλλ' ἐν μέσῳ τῆς φλογὸς ἐστῶτες ἔψαλλον· ὁ τῶν πατέρων Θεός, εὐλογητὸς εἶ.

**Τῷ** παντάνακτος ἐξεφαύλισαν πόθῳ, ἀπλητα θυμαίνοντος ἠγκιστρωμένοι, παῖδες τυράννου δύσθεον γλωσσαλγίαν, οἷς εἶκαθε πῦρ ἄσπετον, τῷ Δεσπότη, λέγουσιν· εἰς αἰῶνας εὐλογητὸς εἶ.

Αἰνοῦμεν, εὐλογοῦμεν καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον.

η **Θαύματος** ὑπερφυοῦς ἢ δροσοβόλος, ἐξεικόνισε κάμινος τύπον· οὐ γὰρ οὐς ἐδέξατο φλέγει νέους, ὡς οὐδὲ πῦρ τῆς Θεότητος, Παρθένου ἦν ὑπέδου νηδύν· διὸ ἀνυμνοῦντες ἀναμέλψωμεν. Εὐλογοίτω ἡ κτίσις πᾶσα τὸν Κύριον, καὶ ὑπερυψούτω, εἰς πάντας τοὺς αἰῶνας.

**Μήτραν** ἀφλέκτως εἰκονίζουσι Κόρης, οἱ τῆς παλαιᾶς πυρπολούμενοι νέοι, ὑπερφυῶς κούσαν, ἐσφραγισμένην. Ἄμφω δὲ δρῶσα, θαυματουργία μιᾶ, λαοὺς πρὸς ὕμνον ἐξανίστησι χάρις.

Αργαί

Σύντομοι

Πέτρου Λαμπαδαρίου

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

## Σύντομοι

### Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

ῥοδὴ α'

Ἦχος ᾠ Πα

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρημολόγιον 1903 σ.248#

**Χ** ρι στος γεν να ται δο ξα σα τε Χρι στος εξ ου ρα νων  
α παν τη σα τε <sup>π ρ</sup> Χρι στο ος ε πι γης υ ψω θη τε α

σα τε τω Κυρι ω πα σα η γη η η και εν ευ φρο

συ υ νη α νυ μνη σα τε λα οι ο τι δε δο ο ξα α

π  
9  
σται

Ε σω σε λα ον θαυ μα τουρ γων Δε σπο ο της υ

γρον θα λα ασ σης κυ μα χερ σω σας πα α λαι ε

κων δε τε χθεις εκ κο ρης τρι βον βα την πο λου τι

θη σιν η μιν ον κατ ου σι αν ι σον τε Πα τρι και βρο

τοις δο ξα α ζο ο μεν

ῥδῆ γ'

π  
9  
Τ ω προ των αι ω νων εκ Πα τρος γεν νη θεν τι

αρ ρε ευ στως Υι ω και επ ε σχα των εκ Παρ θε νου

σαρ κω θεν τι α σπο ρως Χρι στω ω τω Θε ω βο

η σω μεν ο α νυ ψω σας το κε ρας η μων

α γι ος ει Κυ υ ρι ι ε

Ν ευ σον προς υ υ μνου ουσ οι κε των ευ ερ γε

ε τα ε χθρου ουταπει νων την ε πηρ με ε νην ο φρυν

φε ρων τε παν τε πο πτα της α μαρ τι ας υ πε ερ θεν

α κλο νη τον ε στη ρι γμε ε νους μα καρ μελω δους

χορὸς ἀ' τη βα σειτης πι ι στε ε ως

Ρ α βδος εκ της ρι ζης Ι εσ σαι και αν θος εξ αυ

της Χρι στε εκ της Παρ θε νου α νε βλα στησας εξ ο

ρους ο αι νε τος κα τα σκι ου δα σε ος <sup>π</sup>ηλ θες

σαρκω θεις εξ α πειρ αν δρου ο α υ λος και Θε ος <sup>Δ</sup>

δο ξα τη δυ να μει σου Κυ υ ρι ι ε <sup>π</sup>

Γ ε νους βρο τει ει ου ου την α να πλα σιν πα

α λαι <sup>Δ</sup> α δων προ φη η της Αβ βα κουμ προ μη νυ

ει ι δειν α φρα α στως α ξι ω θεις τον τυ υ

πον <sup>Δ</sup> νε ον βρε φος γαρ εξ ο ρους της Παρ θε ε νου <sup>π</sup> ε

ξηλ θε λα ων <sup>π</sup> χορός β' εις α να πλα σιν Λο γος <sup>π</sup> ὠδὴ ε'

Θ ε ος ων ει ρη νης Πα τη η η ρ οι κτιρ μων <sup>Δ</sup> της

με γα λης βου λη ης σου τον Αγ γε λον <sup>π</sup> ει ρη νην

παρεχομενον απειστας ημιν οθεν θεο

γνωσι<sup>Α</sup>ας προς φως οδηγηθεντες εκ νυ

κτος ορθριζοντες δοξολογουμεν σε φιλανθρωπωπε <sup>π</sup>9

Εκνυκτος εργατων εσκοτισμενοις πλαα

νης ιλασμον ημιν Χριστε τοις εργατο ορωσ νυν

σοι τε λουσιν υμνονως ευεργεετη ελθοις

ποριιζων ευχερητε την τριιβον <sup>π</sup>9 καθην α

να τρεχοντες χορος α' ευροιμεν κλεος <sup>π</sup>9 ωδης'

Σπλαγχων Ιωβαν εμβρον απημεσεν εναλιος

θηροιον εδε εξαατοτη Παρθενω δε ενοι

κη σας ο Λο γος και σα αρκα λα βων <sup>π ρ</sup> δι ε λη λυ θε

φυ λα ξας α δι α φθορον η ης γαρ ουχ υ πε στη

ρευ σε ως την τε κου σαν κα τε σχεν α πη η μα αν

τον <sup>π ρ</sup>

**Ν** αι ων Ι ω να ας εν μυ χοις θα λατ τι ι οις

ελ θειν ε δει το και ζα λην α παρ κε εσαι νυ γεις ε γω

δε τω τυ ραν νουν τος βε ε λει <sup>Α ρ</sup> Χρι στε ε προσ αυ δω τον

κα κων α ναι ρε ε την θατ τον μο λει ει ει ν σε χο ρος

β' της ε μης ρα θυ μι ας <sup>π ρ</sup>

ὠδὴ ζ'

**Ο** ι παι δες ευ σε βει α συν τρα φεν τες <sup>π ρ</sup> δυσ σε

βους προσ τα γματατος κα τα φρο νη σαν τες πυ ρο ος

α πει λην ουκ ε πτο η θησαν αλλ εν με σω της φλο

γος ε στω τες ε ψαλ λον ο των πα τε ε

ρων Θε ος ευλογη τος ει

Τω παν τα να κτο ος εξ ε φαυ λι σαν πο ο θω

α πλη τα θυ μαι νον τος ηγ κι στρω με ε νοι παι δες

τυ ραν νου δυσ θε ον γλωσ σαλ γι ι αν οισ ει ει κα

θε πυρ α α σπε τον τω Δε σπο τη λε γου σιν χορὸς α'

εις αι ω ω νας ευ λο γη τος ει

Αι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου μεν τον Κυ

ρι ον **Δ**

**Θ** αυ μα τος υ περ φυ ους η δρο σο βο λος εξ ει

κο νι σε κα μι νος τυ υ υ πον ου γαρ ους ε δε ξα το

φλε γει νε ους ως ου δε πυρ της **Θ**ε ο τη τος

Παρ θε νου ην υπ ε ε δυ νη δυν **π** ρ δι ο ο α νυ

μνουν τες α να μελ ψω μεν **Δ** ευ λο γει τω η κτι σις πα

α σα τον Κυ ρι ον **π** ρ και υ περ υ ψου ου τω εις παν

τας τους αι ω νας **π** ρ

**Μ** η τραν α φλε ε κτω ως ει κο νι ι ζου

σι κο ο ρης **Δ** οι της πα λαι α ας πυρ πο λου ου με



νοι νε οι <sup>π ρ</sup> υ περ φυ ως κυ ου σαν ε σφρα γι σμε ε  
 νην <sup>Δ δ</sup> αμ φω δε δρω ω σα θαυμα τουρ γι α μι ι  
 α <sup>π ρ</sup> λα ους προς υ μνον εξ α νι στη σι χα α ρι  
 ι ι ις <sup>π ρ</sup>

## Αργαί

Ιωάννου Πρωτοψάλτου

ψδθ α'

Ἦχος <sup>4</sup>/<sub>4</sub> Πα

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Ειρμολόγιον 1903 σ.7\*

**Χ** ρι στο ος γε ε εν να ται αι αι δο ο ο  
 ξα α σα α α τε <sup>π ρ</sup> Χρι στο ος εξ ου ου ρα α α  
 νω ω ωων α α παν τη η η σα α α τε ε <sup>π ρ</sup>  
 Χρι στο ο ος <sup>χ ρ</sup> ε πι ι γη η η ης <sup>ζ</sup> υ ψω ω ω

ω ω θη η η η η τε α σα α α α α τε ε τω

ω Κυ υ ρι ωω πα α α σα α η η γη η η η και αι

εν ευ φρο ο συ υ υ νη α νυ μνη η σα

τε ε ε λα α οι οι οι ο τι ι δε ε δο ο ο ο ο

ξα α α α σται

ε σω σε ε λα α α ο ον θα α α αυ μα α

του ουρ γω ων Δε ε σπο ο ο της υ γρο ον θα

λα α α α α σ σης κυ υ υ μα α χερ σω

ω ω σας πα α α α α λαι εκων δε τε ε χθει εις

ε εκ κο ο ρης τρι ι ι βο ον βα α τη η ην

πο λου τι ι θη η σι εν η η η μι εν ον

κα ατ ου ου ου σι ι ι ι ι αν ι ι ι ι

ι ι σο ο ο ο ο ο ον τε Πα α τρι ι ι και

βρο τρι οισ δο ο ξα α α α α σω ω ω μεν

ᾠδὴ γ'

Τ ω προ τω ωων αι αι ω ω ω νων εκ πα τρο

ος γε εν νη η η θεν τι ι α αρ ρε ε ε ε ευ

στω ως υι υι υι ω και επ ε σχα α των ε εκ

παρ θε ε ε ε νου σα α αρ κω θε εν τι ι α

α σπο ο ο ρως Χρι στω ω ω ω ω ω ω ω ω

ω ω ω ω π ρ τω Θε ω ω βο ο η σω ω μεν π ρ ο α

νυ ψω ω σας το κε ε ε ρας η η μων α α γι ο

ος ει ει Κυ υ υ υ υ ρι ι ι ι ε π ρ

**N** ευ σο ο ο ο ο ο ον προς υ υ υ υ υ υ μνου

ου ου ου ους οι οι οι κε ε ε τω ω ων ε ε ευ

ερ γε ε ε ε τα π ρ ε χθρου ου ουου τα α πει

ει ει νω ων την ε ε πη ηρ με ε ε ε ε νη

ην ο ο ο φρυν π ρ φε ε ε ρω ων τε χ ρ παν τε πο ο ο

ο πτα α της α μαρ τι α ας υ υ πε ερ θε εν α

κλο ο νη η το ον ε στη η ρι ι ι γμε ε ε ε ε

π ρ  
νους μα α α α α α κα α α α α α αρ με

ζ  
λω ω δου ου ους χορός α' τη βα α σει ει τη ης πι

π ρ  
ι ι ι ι στε ε ε ε ως

ᾠδὴ δ'

Ρ α α βδος εκ της ρι ι ζης Ι ε εσ σαι και α

αν θος ε εξ α αυ τη η η η ης Χρι ι ι ι

π ρ π ρ  
στε εκ της Παρ θε ε νου α αν ε ε βλα στη η σας

Δ δ  
εξ ο ο ρους ο ο αι νε ε τος κα τα σκι ου δα α

π ρ  
σε ε ε ο ος ηλ θε σαρκω ω θει εις εξ α α α πει

π ρ  
ει ρα α αν δρου ο α α υ λο ος και Θε ε

ος <sup>Α</sup>δο ο ξα τη η δυ υ υ να μει ει σου ου Κυ

υ υ υ υ ρι ι ι ε <sup>π</sup>ϩ

<sup>Γ</sup>ε νους βρο τει ει ει ου ου τη ην α α να α α α

πλα α σι ιν πα α α λαι <sup>χ</sup>ϩ α δων προ ο φη η η τη ης <sup>Α</sup>δ

Αβ βα κου ου ουμ προ ο μη η η νυ υ υ υ υ

ει <sup>π</sup>ϩ ι δειν α φρα α α α στω ως α α α α ξι ι

ω θει εις τον τυ υ υ υ υ πον <sup>χ</sup>ϩ νε ον βρε φος γα αρ <sup>Α</sup>δ

ε ε εξ ο ο ο ρους τη ης παρ θε ε ε ε νου <sup>π</sup>ϩ

εξ η η η ηλ θε ε λα α α ω ω ω ω

ω ω ων <sup>ζ</sup> χορός β' ει εις α α να α α πλα α

σιν Λοοοοος

Ὁδὴ ε'

Θεοοσωωνειειρηηηνης Πατη

ηηηηροιοικτιρμωντηςμεγαα

ληςβουουουληηηηςσουουτοοναααγγεε

λονειρηνηνπααρεεχοομεενοναπεε

στειειλαςηημινοοθεεεενθεεοογνω

σινιασπροςφωωωωςοοδηη

γηηθεντεεςεκνυκτοοςοορθριιζοοοντεε

εσδοξολογουμενσεεφιιλαααα

αν θρωω ω ω πε π ρ

Εκ νυ κτος ε ε ερ γω ων ε ε ε σκο ο τι σμε

νοι οισ πλα α α νης ι λα σμον η η μι ιν

Χρι στε ε τοις ε ε γρη γο ο ο ο ρως νυν σοι τε π ρ

λου ου ου ου σι ιν υ υ υ υ μνο ον ως ε ευ ε

ερ γε ε ε τη ην ελ θοις οις πο ο ρι ι ι

ζω ων ε ευ χε ε ρη η η τε ε τη η ην τρι ι ι

ι βον καθ ην ανα τρε χο οντες χορὸς ἀ ε ε ευ ροι οι μεν π ρ

κλε ε ε ε ε ος π ρ

Ὁδὴς'





Ναι αιων Ιιωωω ναας ενμουχοι

οι οισ θαλααττιιι οιοις εελθειειν

εεδειειει τοοκαι αιαιζααληνα

ααπαρκεεεεσαι π9 νυγεις εγωωωω

δεε του ουουου τυυρα αννου ουν το ος βε

εελειει Δ Χριστεεεεπροοσαααυδω Δ

τοονκαακωωωναα ναι αι αι ρεεεεε

την π9 θατ τονμο λει ειειειν σεεεεεε χορος θ'

τη η ης εεμη η η ης ραα θυυυ μιι

ι ι ας π9

**Ο** ι παι αι δες ευ σε βει ει α συ υ υ υντρα α φε

ε εν τεσ <sup>π ρ</sup> δυσ σε ε ε βου ους <sup>Δ ρ</sup> προσ τα α γμα

το ο ος κα α τα α φρο ο νη η η σα α αν

τε ες <sup>π ρ</sup> πυ ρο ο ο ος α πει λη η ην ουκ

ε ε πτο ο ο η η θη η η σαν <sup>Δ ρ</sup> αλλ ε

εν με ε ε σω ω ω ω τη ης φλο γο ο ος ε

ε στω ω τε ες ε ε ε ψα α αλ λο ον <sup>π ρ</sup> ο των

πα τε ε ε ρω ω ων <sup>Θ</sup>ε ε ο ος ευ λο ο

γη η η το ο ο ο ο ος ει <sup>π ρ</sup>

**Τ** ω ω παν τα να α κτο ος ε εξ ε ε φα αυ λι ι

σα αν πο ο ο ο ο θω α πλη τα θυ μαι αι νο ον το

ος η η ηγ γι ι στρω ω ω με ε ε ε ε νοι

παι δεσ τυ ρα α α αν νου ου δυ υ υ υ σθε ε ον

γλωσ σα αλ γι ι ι α αν οις ει ει ει ει κα

α θε ε ε πυρ α α α σπε ε τον τω ω

Δε ε ε σπο ο ο ο τη λε ε γου ου σιν χορὸς α'

εις αι ω ω ω νας ε ε ευ λο ο γη το ο ο ος ει

ᾠδὴ η'

αι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου με

εν τον Κυ ρι ι ον

Θ α α αυ μα α τος υ πε ερ φυ υ ους η δρο ο

ο σο ο βο ο ο λος π ε εξ ει ει κο ο νι ι

σε ε ε κα μι ι νο ος τυ υ υ πο ον π ου γαρ

ου ους ε ε δε ε ξα α το φλε ε ε γει ει νε ε ε ους

ως ου δε ε πυρ τη ης θε ο τη η η το ος Παρ

θε ε νου η ην υ υ πε ε ε ε ε δυ

υ νη η η δυν δι ο ο ο ο αν υ μνου ουν

τες α α να μελ ψω με εν ευ λο γει τω ω η κτι

ι σι ις πα α α α σα α το ον Κυ υ υ ρι

ι ι ο ον και αι υ πε ερ υ ψου ου ου ου τω

ω ει εις πα αν τας του ου ους αι ω ω ω ω

νας π ρ

Μ η η τραν α φλε ε ε κτως ει ει ει κο ο νι

ι ι ζου ουσι ι κο ο ο ο ο ρης ρ οι της πα λαι α ας

πυ υρ πο ο λου ου ου με ε νοι οι οι νε ε ε ε ε

οι π ρ υ περ φυ υ ως κυ υ ουου σα αν ε σφρα α

γι ι σμε ε ε νη ην αμ φω ω δε δρω ω ω

σα α θα α αυ μα α τουρ γι ι α μι ι ι ι ι

α π ρ λα ους προς υ υ υ υ υ μνο ο ο ο ο ον ε

ε εξ α αν ι ι ι ι στη η σι χα α α α α

ρι ι ι ις π ρ

# Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου<sup>7</sup>

ῥοδὴ α'

## Ἦχος ♩ Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.297/3020\*

Χ ρι στο ος γε ε εν να ται αι αι δο ο ο

ξα α σα α α τε π ρ Χρι στο ος εξ ου ρα α α

νω ω ω ωων α α παν τη η η σα α τε ε π ρ

Χρι στο ο ος ε πι ι γη η η ης υ ψω ω ω

ω ω θη η η η η τε α σα α α α α τε ε

τω ω Κυ υ ρι ω ω πα α α σα α η η γη η η η

και αι εν ευ φρο ο συ υ υ νη α νυ μνη η

<sup>7</sup> Εἰς τὰς καταβασίας ταύτας ἐπεφέραμεν ἐλαφρὰς τινὰς μεταβολὰς πρὸς ἀποφυγὴν παρατονισμῶν καὶ ἀστόχου χωρισμοῦ λέξεων. Οὐσιαστικωτέρας διορθώσεις πρὸς καλυτέραν ἀπόδοσιν τοῦ νοήματος καὶ σύντημην μουσικῶν τινῶν γραμμῶν παραθέτομεν μεθ' ἑκάστην καταβασίαν.

σα τε ε ε λα α οι οι οι ο τι ι δε ε δο ο ο

ο ξα α α σται π ρ

ε σω σε ε λα α α ο ον θα α α αυ μα α

του ουρ γω ων δε ε σπο ο ο της υ γρο ον θα

λα α α α α α σης κυ υ υ μα α χερ σω

ω ω σας πα α α α α λαι εκ των δε τε ε χθει εις

ε εκ κο ο ρης τρι ι ι βο ον βα α τη η η

ην πολου τι ι θη η σι ιν η η η μι ιν

ον κα ατ ου ου ου σι ι ι ι ι αν ι ι

ι ι ι ι σο ο ο ο ο ο ον τε Πα α τρι ι



ι και βρο τοι οϊς δο ο ξα α α α α ζο ο ο

ο μεν

τι ι θη η σι ι ιν η η μιν ο ο ον ...

\* ἄλλη γραμμὴ

ῥδὴ γ'

Τω προ τω ωων αι αι ω ω ωων εκ Πα τρο

ος γε εν νη η η θεν τι ι α αρ ρε ε ε ε ευ

στω ως Υι υι υι ω και επ ε σχα α των ε εκ

Παρ θε ε ε ε νου σα α αρ κω θε εν τι ι

α α σπο ο ο ρως Χρι στω ω ω ω ω ω ω ω ω

ω ω ω ω τω Θε ω ω βο ο η σω ω μεν ο

α νυ ψω ω σας το κε ε ε ρας η η μων α α γι

ο ος ει ει Κυ υ υ υ ρι ι ι ε π 9

\* άλλη γραμμή σαρ κω θεν τι ι α α σπο ο ο ρως Χρι στω

ω ω τω θε ε ω βο η η η η σω ω

ω ω μεν ο α νυ ... π 9

Ν ευ σο ο ο ο ον προς υ υ μνου ου ου ους οι

οι οι κε ε τω ω ω ων ε ε ευ ερ γε ε ε ε

τα ε χθρου ου ουου τα α πει ει ει νω ων τη

ε ε πη ηρ με ε ε ε ε νη ην ο ο ο φρυν π 9

φε ε ε ρω ων τε παν τε πο ο ο πτα α της α

μαρ τια ας υ υ πεερ θε εν α κλο ονηητο ον

ε στη η ρι ι ι γμε ε ε ε ε νους μα α

α α α α κα α α α αρ με λω ω δου ου

ους χορός α' τη βα α σει ει τη ης πι ι ι ι

ι στε ε ε ε ως

\* ἄλλη γραμμὴ μα καρμε λω ω δου ου ου ου ους χορός α' τη βα

α ...

ῶδὴ δ'

Ρ α α βδος εκ της ρι ι ζης Ι ε εσ σαι και α

αν θος ε εξ α αυ τη η η η ης Χρι ι ι ι

στε <sup>π ρ</sup> εκ της Παρ θε ε νου α α νε ε βλα στη η σας <sup>π ρ</sup>

εξ ο ο ρους ο ο αι νε ε τος <sup>Δ ρ</sup> κα τα σκι ου δα

α σε ε ε ο ος <sup>π ρ</sup> ηλ θες σαρ κω ω θει εις εξ α α α

πει ει ρα α αν δρου <sup>π ρ</sup> ο α α υ λοος και Θε

ε ος <sup>Δ ρ</sup> δο ο ξα τη η δυ υ υ να μει ει σου ου Κυ

υ υ υ υ ρι ι ι ε <sup>π ρ</sup>

**Γ** ε νους βρο τει ει ει ου ου τη ην α α να α α

α πλα α σι ιν πα α α λαι <sup>χ ρ</sup> α δων προ ο φη η η

τη ης Αβ βα κου ου ουμ προ ο μη η η νυ υ υ

υ υ ει <sup>π ρ</sup> ι δειν α φρα α α α στω ως α α ξι ι

ω θει εις το ον τυ υ υ υ υ πον νε ον βρε φος γα αρ

εξ ο ο ο ρους τη ης Παρ θε ε ε ε νου εξ

η η η η λ θε ε λα α α ω ω ω ω ω ω

ων χορὸς β' ει εις α α να α α πλα α σι ι ιν

Λο ο ο ο ο γος

ῶδὴ ε'

Θ ε ο ος ω ω ω ω ν ει ει ρη η η νης Πα

τη η η η η ρ οι οι κτι ιρ μων της με γα

α λης βου ου ου λη η η ης σου ου το ον α α αγ

γε ε λο ον ει ρη νην πα α ρε ε χο ο με ε νον α

πε ε σ τ ε ι ε ι λ α ς η η μ ι ν π ο ο θ ε ε ε ε ν θ ε ε ο

ο γ ν ω σ ι ι ι ι α ς π ρ ο φ ω ω ω ω ς ο ο

δ η η γ η η θ ε ν τ ε ε ς ε κ ν υ κ τ ο ς ο ο ρ θ ρ ι ι ζ ο ο ο ν

τ ε ε ε ς δ ο ξ ο λ ο γ ο υ ο υ μ ε ν σ ε ε φ ι ι λ α α

α α α ν θ ρ ω ω ω π ε

ε κ ν υ κ τ ο ς ε ε ε ρ γ ω ν ε ε σ κ ο ο τ ι σ μ ε ν η

η ς π λ α α α ν η ς ι λ α σ μ ο ν η η μ ι ι ν Χ ρ ι σ τ ε

ε τ ο ι ς ε ε ε γ ρ η γ ο ο ο ο ρ ω ς ν υ ν σ ο ι τ ε

λ ο υ ο υ ο υ σ ι ι ν υ υ υ υ μ ν ο ο ν ω ς ε ε υ

ε ε ρ γ ε ε ε τ η η ε λ θ ο ι ς π ο ο ρ ι ι ι

ζωων ε ευ χε ε ρη η η τε ε τη η ην τρι ι

ι ι βον καθ ην α να τρε χο οντες χορός α' ε ε ευ

ροι οι μεν κλε ε ε ε ε ος

ᾠδὴς'

πλα α αγ χνω ω ων Ι ι ω ω ω ναν εμ

βρυ υ ο ον α α πη με ε σεν εν α α α λι ι

ο ος θηρ οι οι οι οι ο ον ε ε δε ε ε ξα

α α το ο τη Παρ θε νω ω δε εν οι κη η

σας ο ο ο Λο γο ος και αι σα α α α αρ

κα α λα α α βων διε λη η λυ θε ε φυ λα

α α ξα ας α δι α φθο ο ρον η η η ης γα αρ

ουχ υ πε ε στη η ρε ευ σε ε ως την τε κου

ου σα αν κα α α τε σχεν α α πη η η η

η μα α α αν τον

**N** αι αι ων Ι ι ω ω ω να ας ε εν μυ υ χου

οι ος θα α λα ατ τι ι ι οι ος ε ελ

θει ειν ε ε δει ει ει το ο και αι αι ζα α λην

α α α παρ κε ε ε ε εσαι νυ γεις ε γω

ω ω ω δε ε τω ω τυ υ ρα αν νου ουν το ος βε

ε ε λει ει Χρι στε ε ε ε ε προ ος α α αυ



δω <sup>Δ</sup> το ον κα α κω ω ων α α ναι αι αι ρε ε ε

ε ε την <sup>π</sup> θατ τονμο λει ει ει ει ειν σε <sup>η</sup> χορός β' τη

η ης ε ε μη η η ης ρα α θυ υ υ μι ι ι ι

ας <sup>π</sup>

ῶδὴ ζ'

**Ο** ι παι αι δεσ ευ σε βει ει α συ υ υ υν τρα α

φε ε εν τεσ <sup>π</sup> δυσ σε ε ε βου ους προσ τα α

γμα το ο ος κα α τα α φρο ο νη η η σα

α αν τε ες <sup>π</sup> πυ ρο ο ο ος α πει λη η ην

ουκ ε ε πτο ο ο η η θη η η σαν <sup>Δ</sup> <sup>2</sup> αλλ

ε εν με ε ε σω ω ω ω τη ης φλο γο ο ος

ε ε στω ω τε ες ε ε ε ψα ααλ λο ον ο

των πα τε ε ε ρω ω ων Θε ε ο ος ευ λο ο

γη η η το ο ο ο ος ει

διασκευές πρωτ.Κων.Παπαγιάννη

ευ σε βει α συ υ υ υν...

αλλ εν με ε σω ω ω ω ω τη ης φλο ο γο ος

ε ε στω ω τε ες ...

ω ω παν τα να α κτο ος ε εξ ε φα αυ λι ι

σα αν πο ο ο ο θω α πλη τα θυ μαι αι νον το

ος η η ηγ κι ι στρω ω ω με ε ε ε ε νοι

παι δες τυ ρα α α αν νου ου δυ υ υ υσ θε ε ον

γλωσ σα αλ γι ι ι α αν οις ει ει ει ει

κα α θε ε ε πυρ α α α σπε ε τον τω ω

Δε ε ε σπο ο ο ο τη λε ε γου ου σιν χορός α' εις

αι ω ω ω νας ε ε ευ λο ο γη το ο ο ος ει

διασκευές πρωτ.Κων.Παπαγιάννη

η ηγ κι στρω με ε ε νοι παι αι αι αι δες τυ

ρα α α αν...

οις ει ει ει ει κα α α α θε πυ υ υρ α

α σπε ε ε τον τω Δε σπο ο τη η λε γου ου σιν

χορός α' εις αι ω ω ω νας ...

π ρ

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου με

εν τον Κυ ρι ι ον

Θ α α αυ μα α τος υ πε ερ φυ υ ους η δρο ο

ο σο ο βο ο ο λος ε εξ ει ει κο ο νι ι

σε ε ε κα μι ι νο ος τυ υ υ πο ον ου γαρ

ου ους ε ε δε ε ξα α το φλε ε ε γει ει νε ε ε

ους ως ου δε ε πυρ τη ης Θε ο τη η τος Παρ

θε ε νου η ην υ υ πε ε ε ε ε ε δυ

υ νη η η δυν δι ο ο ο ο α νυ μνου ουν

τες α α να μελ ψω με εν ευ γο γει τω ω η κτι

ι σι ις πα α α α σα α το ον Κυ υ υ ρι

ι ι ο ον και αι υ πε ερ υ ψου ου ου ου τω

ω ει εις πα αν τας του ου ους αι ω ω ω ω ω

νας

Μ η η τραν α φλε ε ε κτως ει ει ει κο ο

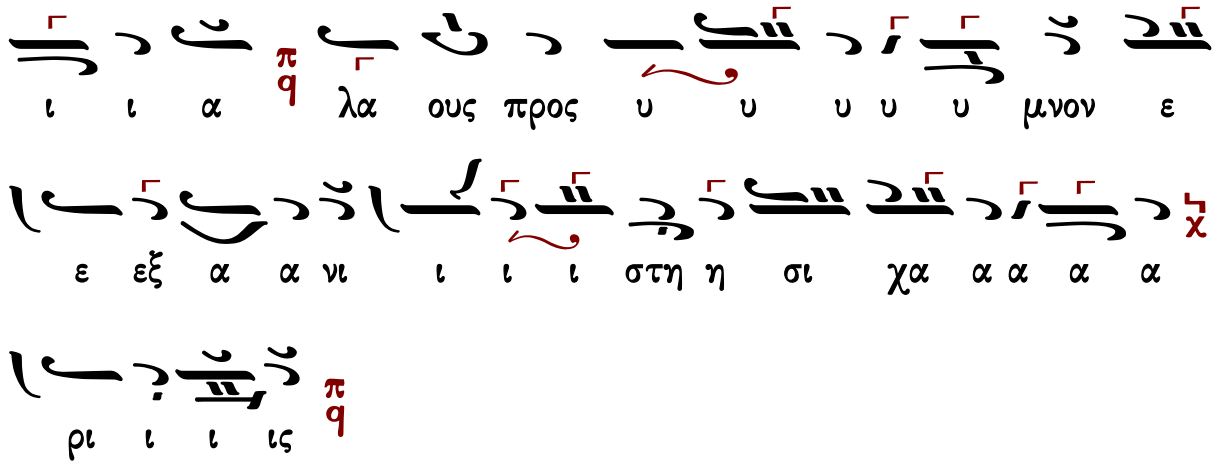
νι ι ι ζου ου σι ι Κο ο ο ο ο ρης οι της πα λαι

αι ας πυ υρ πο ο λου ου ου με ε νοι οι οι νε ε ε

ε ε οι υ περ φυ υ ως κυ υ ου ου σα αν ε

σφρα α γι ι σμε ε ε νη ην αμ φω δε

ε δρω ω ω σα α θα αυ μα τουρ γι ι ι α α μι



## ὕμνος εἰς τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

ὕμνος εἰς τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός

ὕμνος εἰς τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός

**Μ**εγάλυνον ψυχὴ μου, τὴν τιμιωτέραν, καὶ ἐνδοξοτέραν τῶν ἄνω στρατευμάτων.  
«**Μ**υστήριον ξένον, ὄρω καὶ παράδοξον! οὐρανὸν τὸ σπηλαιὸν· θρόνον χερουβικόν, τὴν Παρθένον· τὴν φάτνην χωρίον· ἐν ᾧ ἀνεκλήθη ὁ ἀχώρητος, Χριστὸς ὁ Θεός· ὃν ἀνυμνοῦντες μεγαλύνομεν».

**Μ**εγάλυνον ψυχὴ μου, τὸν ἐκ τῆς Παρθένου, Θεὸν σαρκὶ τεχθέντα.

**Ἐ**ξαίσιον δρόμον, ὄρωντες οἱ μάγοι, ἀσυνήθους νέου ἀστέρος ἀρτιφακοῦς, οὐρανοῦ υπερλάμποντος, Χριστὸν βασιλέα ἐτεκμήραντο, ἐν γῆ γεννηθέντα Βηθλεέμ, εἰς σωτηρίαν ἡμῶν.

**Μ**εγάλυνον ψυχὴ μου, τὸν ἐν τῷ σπηλαίῳ, τεχθέντα βασιλέα.

**Ν**εηγενὲς μάγων λεγόντων, παιδίον ἀναξ, οὗ ἀστὴρ ἐφάνη, ποῦ ἐστίν; εἰς γὰρ ἐκείνου προσκύνησιν ἤκομεν· μανεῖς ὁ Ἡρώδης ἐταράττετο, Χριστὸν ἀνελεῖν, ὁ θεομάχος φρουραττόμενος.

**Μ**εγάλυνον ψυχὴ μου, τῶν ὑπὸ τῶν μάγων, Θεὸν προσκυνηθέντα.

**Ἡ**κριβωσε χρόνον Ἡρώδης ἀστέρος, οὗ ταῖς ἡγεσίαις οἱ μάγοι ἐν Βηθλεέμ, προσκυνοῦσι Χριστῷ σὺν δώροις· ὅφ' οὗ πρὸς πατρίδα ὀδηγοῦμενοι, δεινὸν παιδοκτόνον, ἐγκατέλιπον παιζόμενον.

ὕμνος εἰς τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός

ὕμνος εἰς τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός

**Σ**ήμερον ἡ Παρθένος, τίχτει τὸν Δεσπότην, ἔνδον ἐν τῷ σπηλαίῳ.

«**Σ**τέργειν μὲν ἡμᾶς, ὡς ἀκίνδυνον φόβω, ῥῆον σιωπῆν, τῷ πόθῳ δὲ Παρθένε, ὕμνους

ὕφαινειν, συντόνως τεθηγμένους, ἐργῶδές ἐστιν, ἀλλὰ καὶ Μήτηρ σθένος, ὅση πέφυκεν ἢ προαίρεσις δίδου».

Σήμερον ὁ Δεσπότης, τίκτεται ὡς βρέφος, ὑπὸ Μητρὸς Παρθένου. ✠

Δόξα Πατρὶ καὶ Υἱῷ καὶ ἀγίῳ Πνεύματι.

Μεγάλυνον ψυχὴ μου, τῆς τρισυποστάτου, καὶ ἀδιαιρέτου, Θεότητος τὸ κράτος. Τύπους ἀφεγγεῖς καὶ σκιάς παρηγμένας, ὧ Μῆτερ ἀγνή, τοῦ Λόγου δεδορκότες, νέου φανέντος, ἐκ πύλης κεκλεισμένης, δοξούμενοί τε, τῆς ἀληθείας φάος, ἐπαξίως σὴν εὐλογοῦμεν γαστέρα.

Καὶ νῦν καὶ ἀεὶ καὶ εἰς τοὺς αἰῶνας τῶν αἰώνων, ἀμήν.

Μεγάλυνον ψυχὴ μου, τὴν λυτρωσαμένην, ἡμᾶς ἐκ τῆς κατάρρας.

Πόθου τετευχώς, καὶ Θεοῦ παρουσίας, ὁ χριστοτερπῆς λαὸς ἤξιωμένος, νῦν ποτνιαῖται τῆς παλιγγενεσίας. ὡς ζωοποιοῦ· τὴν χάριν δὲ Παρθένε, νέμοις ἄχραντε, προσκυνῆσαι τὸ κλέος.

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

## Κανὼν Κοσμᾶ, ὑψὲ θ'

### Ἦχος ᾠ Πα

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.265#

Μεγαλυνον ψυχη η μου ου την τιμιω τε ε

ραν και ενδοξο τε εραντων ανωστρατευμα α

των π ρ

Μυστηριον ξενον ορω και παραδο

ξον <sup>π ρ</sup> ου ρα νον το σπη λαι ον θρο νον <sup>Δ ρ</sup> Χε ρου βι κον

την Παρ θε νον την φα α τνην χω ρι ι ον εν ω ω

α νε κλι θη ο α χω ρητος Χρι στο ος ο Θε ος

ον α νυ μνουντες με γα λυ υ νο ο μεν <sup>π ρ</sup>

**Μ** ε γα λυ νον ψυ χη η μου ου τον εκ της Παρ θε ε

νου Θε ον σαρ κι τε χθεν τα <sup>π ρ</sup>

**Ε** ξ αι σι ον δρο μον ο ρων τες οι μα α α

γοι <sup>π ρ</sup> α συν η θους νε ου α στε ε ε ρος αρ τι φα

ους <sup>Δ ρ</sup> ου ρα νι ου υ περ λαμ πον τος Χρι στο

ον Βα σι λε α ε τε κμη ραν το εν γη γεν νη θεν τα



Βη θλε εμ εις σω τη ρι ι αν η μων <sup>π ρ</sup>

Μ ε γα λυ νον ψυ χη η μου ου τον εν τω σπη λαι αι

ω <sup>Δ ρ</sup> τε χθεν τα βα σι λε α <sup>π ρ</sup>

Ν ε η γε νες μα γων λε γο ο ον των παι δι ον

α α να ξ ου α στηρ ε φα νη που ε στιν <sup>π ρ</sup> εις γαρ

ε κει νου προσ κυ νη σιν η κο μεν μα νει εις ο

Η ρω δης ε τα ρατ τε το Χρι στο ον α νε λειν <sup>Δ ρ</sup> ο

θε ο μα χος φρυ ατ το ο με ε νος <sup>π ρ</sup>

Μ ε γα λυ νον ψυ χη η μου ου τον υ πο των Μα α

γων <sup>Δ ρ</sup> Θε ον προσ κυ νη θεν τα <sup>π ρ</sup>


**Η** χρι βω σε χρο νον Η ρω δης α στε ε ε ρος <sup>π ρ</sup>  
 ου ταις η γε σι αις οι μα α α γοι εν Βη θλε εμ  
 προσ κυ νου σι Χρι στον συν δω ω ω ροις <sup>π ρ</sup> υφ ου ου προς  
 πα τρι δα ο δη γου με νοι <sup>Δ</sup> δει νον παι δο κτο ο  
 νον εγ κα τε λι πον παι ζο ο με ε νον <sup>π ρ</sup>

Κανών ιαμβικός, Ἰωάννου μοναχοῦ, ψδὴ θ'

Ἦχος  $\frac{4}{\bar{q}}$  Πα

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.266#


**Σ** η με ρον η Παρ θε ε νο ος τι κτει τον Δε σπο ο  
 την <sup>Δ</sup> εν δον εν τω σπη λαι ω <sup>π ρ</sup>  
**Σ** τερ γειν μεν η μα ας ως α κιν δυ νον φο ο βω ρα ον

σι ω πην τω πο θω δε Παρ θε νε υ μνους υ φαι νειν συν

το νως τε θη γμε ε νους ερ γω ω δεσ ε στινα λ λα και μη

τηρ σθε ε νος <sup>π ρ</sup> ο ση πε φυ κεν η προ αι ρε σις δι ι

δου <sup>π ρ</sup>

**Σ** η με ρον ο Δε σπο ο τη ης τι κτε ται ως βρε ε

φος υ πο μη τρος Παρ θε νου <sup>π ρ</sup> τὸ αὐτὸ ↗

**Δ** ο ξα Πα τρι και Υι ω και α γι ω Πνευ μα τι <sup>Δ ρ</sup>

**Μ** ε γα λυ νον ψυ χη η μου ου της τρισ υ πο στα

του <sup>Δ ρ</sup> και α δι αι ρε ε του Θε ο τη τος το κρα

τος <sup>π ρ</sup>

**Τ** υ πους α φεγ γει εις και σκι ας πα ρη γμε ε νας ω

μη η τερ α γνη του Λο γου δε δορ κο ο τες νε ου φα

νεν τος εκ πυ λης κε κλει σμε ε νης **Α** δο ξου με

νοι οι τε της α λη θει ας φα α ος **π** επ α ξι ως

σ ην ευ λο γου μεν γα στε ρα **π**

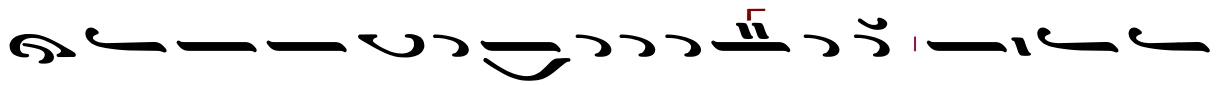
**Κ** αι νυν και α ει και εις τους αι ω νας των αι ω νων α


μη **Α**


**Μ** ε γα λυ νον ψυ χη η μου ου την λυ τρω σα με


νη **Α** η μας εκ της κα τα ρας **π**

**Π** ο θου τε τευ χω ως και Θε ου πα ρου σι ι ας **Α**


  
 ο χρι στο τερ πης λα ος η ξι ω με ε νος νυν πο τι


  
 α ται της πα λιγ γε νε σι ι ας ως ζω ο ποι ου


  
 την χα ριν δε Παρ θε νε νε μοις α χραν τε προσ κυ νη


  
 σαι το κλε ε ος

## Καταβασία θ' φδῆς

### ἦχος α'

Μεγάλυνον ψυχῆ μου, τὴν τιμιωτέραν, καὶ ἐνδοξοτέραν τῶν ἄνω στρατευμάτων.

**Μ**υστήριον ξένον, ὄρω καὶ παράδοξον! οὐρανὸν τὸ σπήλαιον· θρόνον Χερουβικόν, τὴν Παρθένον· τὴν φάτνην χωρίον· ἐν ᾧ ἀνεκλήθη ὁ ἀχώρητος, Χριστὸς ὁ Θεός· ὃν ἀνυμνοῦντες μεγαλύνομεν.

Μεγάλυνον ψυχῆ μου, τὴν λυτρωσαμένην, ἡμᾶς ἐκ τῆς κατάρας.

**Σ**τέργειν μὲν ἡμᾶς, ὡς ἀκίνδυνον φόβῳ, ῥᾶον σιωπῆν, τῷ πόθῳ δὲ Παρθένε, ὕμνους ὑφαίνειν, συντόνως τεθηγμένους, ἐργῶδές ἐστιν, ἀλλὰ καὶ Μήτηρ σθένος, ὅση πέφυκεν ἡ προαίρεσις δίδου.

|                             |                     |                                 |
|-----------------------------|---------------------|---------------------------------|
| Αργαί<br>Πέτρου Λαμπαδαρίου | Ἰωάννου Πρωτοψάλτου | Σύντομοι<br>Ἰωάννου Πρωτοψάλτου |
|-----------------------------|---------------------|---------------------------------|

## Σύντομος

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

φδῆ θ'

ἦχος  $\frac{4}{\eta}$  Πα

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
 Εἰρμολόγιον 1903 σ.265#

Μεγαλον ψυχη η μου ου την τιμιω τε ε

ραν και ενδοξοτε εραντων ανωστρατευμα α

των <sup>π ρ</sup>

Μυστηριον ξενον <sup>π ρ</sup> ορω και παραδο

ξον <sup>π ρ</sup> ουρανον το σπηλαιον θρονον <sup>Δ ρ</sup> Χερουβικον


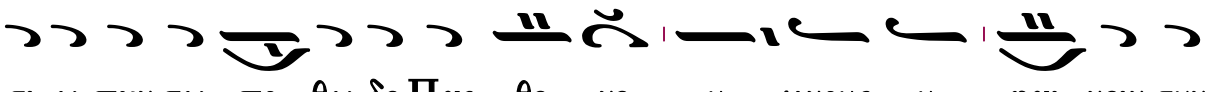
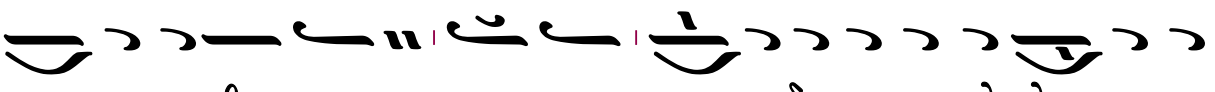
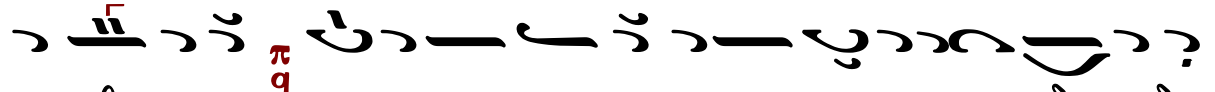
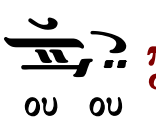
την Παρθενον την φαατηνη χωριον ενωω

ανεκληθη ο αχωρητος Χριστος ο Θεος

ον ανυμνουντες μεγαλυνοομεν <sup>π ρ</sup>

Μεγαλον ψυχη η μου ου την λυτρωσα με ε

νη <sup>Δ ρ</sup> η μας εκτησκαταρας <sup>π ρ</sup>


**C**τερ γειν μεν η μα αςως α κιν δυ νον φο ο βω ρα ον  

 σι ω πην τω πο θω δε Παρ θε νε υ μνους υ φαι νειν συν  

 το νως τε θη γμε ε νους ερ γω ωδες ε στιν αλ λα και μη  

 τηρ σθε ε νος <sup>π</sup> ο ση πε φυ κεν η προ αι ρε σις δι ι δου  

 ου ου <sup>π</sup>

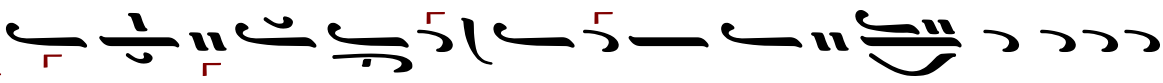


Ἄγι

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

ᾠδὴ θ'

Ἦχος <sup>4</sup>/<sub>9</sub> Πα

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.15#


**M**ε γα α λυ νο ον ψυ υ υ χη η η μου ου ου ου  

 τη ην τι μι ι ω ω τε ε ε ρα αν <sup>Δ</sup> και  

 αι ε εν δο ο ξο ο τε ε ε ε ρα αν τω ων α α νω

στρα α α τευ μα α α των π ρ

Μ υ στη η ρι ι ι ο ον ξε ε ε ε νον ο ρω π ρ

ω ω και αι πα α ρα α δο ο ο ξο ον ου ρα π ρ

νο ο ον το σπη η λαι αι αι ον θρο ο ο νο ον Δ ρ

Χε ρου ου ου ου βι κον την Πα αρ θε ε ε νον την φα α

την χω ω ρι ι ι ον ε νω ω ω ω α νε π ρ

κλι ι ι θη ο ο α χω ρη το ος Χρι στο ο ος ο

Θε ε ος ον α νυ μνου ν τες με γα α λυ υ υ Δ ρ

υ νο ο ο ο μεν π ρ

Μ ε γα α λυ νον ψυ υ χη η η μου ου τη



ην λυ τρω σα με ε ε νην η η μα ας εκ της κα

τα α α α ρας π ρ

το μεγαλυνάριο από την έκδοση Ι.Μ.Βατοπαϊδίου 2016 σ.307#

τε ερ γειν με εν η η η μα ας ω ως α α

κι εν δυ υ νο ονφο ο ο βω ρα ον σι ω πη η

τω ω ω πο ο θω δε ε Παρ θε ε ε ε ε νε υ

μνους υ φαι αι αι αι νει ει ν συ υ υ υν το ο νως τε

ε θει ει γμε ε ε νουους ερ γω ω ω ω

δε ες ε ε ε στιν α α αλ λα α και Μη η

τηρ σθε ε ε ε ε νος ο ο ο ο ο ο ση η

η η η πε φη η κε ε ε ε ε ε εν η η προ ο

αι αι αι ρε ε σις δι ι ι ι ι ι δου ου ου π ρ

Πέτρος Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου

ὠδὴ θ'

Ἦχος ♯̣ Πα ρ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.309/3032\*

Μ ε γα α λυ νο ον ψυ υ υ χη η η μου ου ου

ου τη ην τι μι ι ω ω τε ε ε ρα αν Δ ρ

και αι ε εν δο ο ξο ο τε ε ε ε ρα αν τω ων α α

νω στρα α α τευ μα α α α των π ρ

Μ υ στη η ρι ι ι ι ο ον ξε ε ε ε νον π ρ ο ρω

ω ω και αι πα α ρα α δο ο ο ξο ον π ρ ου ρα

νο ο ον το σπη η λαι αι αι ον π ρ θρο ο ο νο ον

χε ρου ου ου βι κον την Πα αρ θε ε ε νον την φα α

την χω ω ρι ι ι ον εν ω ω ω ω α νε

κλι ι ι θη ο ο α χω ρη το ος Χρι στο ο ος

ο Θε ε ος ον α νυ μνουν τες με γα α λυ υ

υ υ υ νο ο ο ο μεν

Μ ε γα α λυ νον ψυ υ χη η η μου ου τη

ην λυ τρω σα με ε ε νην η η μα ας εκ της κα

τα α α α ρας

το μεγαλυνάριο από την έκδοση Ι.Μ.Βατοπαίδιου 2016 σ.307#

Σ τε ερ γειν με εν η η η μα ας ω ως α α

κι εν δυ υ νο ον φο ο ο βω ρα ον σι ω πη ην

τω πο ο θω δε ε Παρ θε ε ε ε νε <sup>π</sup>9 υ μνους υ

φαι αι αι αι νει ειν συ υν το ο νως τε ε θη

η γμε ε ε νου ους <sup>Δ</sup>ερ γω ω ω ω δε ες ε

ε ε στιν <sup>Δ</sup>αλ λα α και Μη η τηρ σθε ε ε ε

νος <sup>π</sup>9 ο ο ο ο ο ο ση η η η η πε φυ υ κε ε

ε ε ε ε ε εν <sup>ζ</sup>η η προ ο αι αι αι ρε ε

σις δι ι ι ι ι δου ου ου ου <sup>π</sup>9

Ἀλλη πρωτ. Κων. Παπαγιάννη κατ' ἔνοιαν τονισθεῖσα

**C** τε ερ γει ει ειν με εν η η μας ως α κι ιν δυ υ υ

νον φο ο ο βω ω <sup>Δ</sup>ρα α ο ον σι ω ω πη

ην <sup>π</sup>9 τω πο θω ω δε Πα αρ θε ε ε νε <sup>Δ</sup>υ

μου ους υ υ φαι αι νειν <sup>Δ</sup> συν το νως τε θη η γμε ε ε

νου ους <sup>Δ</sup> ερ γω ω ω ω δε ες ε ε ε στιν <sup>π ρ</sup>

αλ λα και Μη η η τη ηρσθε ε ε νος <sup>Δ</sup> ο ση πε ε

φυ υ κεν η η προ αι αι αι ρε ε σις δι ι δου

<sup>π ρ</sup>  
ου ου

# Τῶν Χριστουγέννων, πεζαί

21/11 – 24/12

## ἤχος α'

- α **Χ**ριστὸς γεννᾶται, δοξάσατε. Χριστὸς ἐξ οὐρανῶν ἀπαντήσατε. Χριστὸς ἐπὶ γῆς, ὑψώθητε, ἄσατε τῷ Κυρίῳ πᾶσα ἡ γῆ, καὶ ἐν εὐφροσύνῃ, ἀνυμνήσατε λαοί, ὅτι δεδόξασται.
- γ **Τ**ῷ πρὸ τῶν αἰώνων, ἐκ Πατρὸς γεννηθέντι ἀρρεούστως Υἱῷ, καὶ ἐπ' ἐσχάτων ἐκ Παρθένου, σαρκωθέντι ἀσπόρως, Χριστῷ τῷ Θεῷ βοήσωμεν· ὁ ἀνυψώσας τὸ κέρασ ἡμῶν, ἅγιος εἶ Κύριε.
- δ **Ρ**άβδος ἐκ τῆς ρίζης Ἰεσσαί, καὶ ἄνθος ἐξ αὐτῆς Χριστέ, ἐκ τῆς Παρθένου ἀνεβλάστησας· ἐξ ὅρους ὁ αἰνετὸς κατασκίου δασέος ἤλθες σαρκωθείς ἐξ ἀπειράνδρου, ὁ ἄυλος καὶ Θεός. Δόξα τῇ δυνάμει σου Κύριε.
- ε **Θ**εὸς ὢν εἰρήνης, Πατὴρ οἰκτιρμῶν, τῆς μεγάλης βουλῆς σου τὸν ἄγγελον, εἰρήνην παρεχόμενον ἀπέστειλας ἡμῖν· ὅθεν θεογονωσίας, πρὸς φῶς ὁδηγηθέντες, ἐκ νυκτὸς ὀρθρίζοντες, δοξολογοῦμέν σε φιλόνηρωπε.
- ς **Σ**πλάγχων Ἰωανῶν, ἔμβρυον ἀπήμεσεν ἐνάλιος θήρ οἶον ἐδέξατο· τῇ Παρθένῳ δέ, ἐνοικήσας ὁ Λόγος, καὶ σάρκα λαβὼν διελήλυθε φυλάξας ἀδιάφθορον· ἥς γὰρ οὐχ ὑπέστη ρεύσεως, τὴν τεκοῦσαν κατέσχευ ἀπήμαντον.
- ζ **Ο**ἱ Παῖδες εὐσεβεῖα συντραφέντες, δυσσεβοῦς προστάγματος καταφρονήσαντες, πυρὸς ἀπειλὴν οὐκ ἐκπτοήθησαν, ἀλλ' ἐν μέσῳ τῆς φλογὸς ἐστῶτες ἔψαλλον· ὁ τῶν πατέρων Θεός, εὐλογητὸς εἶ.
- Αἰνοῦμεν, εὐλογοῦμεν καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον.**
- η **Θ**αύματος ὑπερφουοῦς ἡ δροσοβόλος, ἐξεικόνισε κάμινος τύπον· οὐ γὰρ οὐς ἐδέξατο φλέγει νέους, ὡς οὐδὲ πῦρ τῆς Θεότητος, Παρθένου ἦν ὑπέδου νηδύν· διὸ ἀνυμνοῦντες ἀναμέλψωμεν. Εὐλογοίτω ἡ κτίσις πᾶσα τὸν Κύριον, καὶ ὑπερυψούτω, εἰς πάντας τοὺς αἰῶνας.

Ἄργαί

Πέτρου Λαμπαδαρίου

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Σύντομοι

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

## Σύντομοι

### Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

**Χ** ρι στος γεν ναι ται δο ξα σα τε Χρι στος εξ ου ρα νων

α παν τη σα τε <sup>π ρ</sup> Χρι στο ος ε πι γης υ ψω θη τε α

σα τε τω Κυ ρι ω πα σα η γη η η και εν ευ φρο

συ υ νη α νυ μνη σα τε λα οι ο τι δε δο ο ξα α

σται <sup>π ρ</sup>

ῥδὴ γ'

**Τ** ω προ των αι ω νων <sup>π ρ</sup> εκ Πα τρος γεν νη θεν τι

αρ ρε ευ στως Υι ω και επ ε σχα των εκ Παρ θε νου

<sup>π ρ</sup> σα ρ κω θεν τι α σπο ρως Χρι στω ω τω Θε ω βο

η σω μεν <sup>π ρ</sup> ο α νυ ψω σας το κε ρας η μων <sup>Δ ρ</sup>

α γι ος ει Κυ υ ρι ι ε π 9

χορός α'

ᾠδὴ δ'

**Ρ** α βδος εκ της ρι ζης I εσ σαι και αν θος εξ αυ της

Χρι στε εκ της Παρ θε νου α νε βλα στησας εξ ο ρους

ο αι νε τος κα τα σκι ου δα σε ος ηλ θες σαρ

κω θεις εξ α πειρ αν δρου ο α υ λος και Θε ος

δο ξα τη δυ να μεισου Κυ υ ρι ι ε

**Θ** ε ος ων ει ρη νης Πα τη η η ρ οι κτιρ μων της

με γα λης βου λη ης σου τον Αγ γε λον ει ρη νη

πα ρε χο μενον α πε στει λας η μιν ο θεν θε ο

γνω σι ας προς φως ο δη γη θεν τες εκ νυ





γος ε στω τες ε ψαλ λον <sup>π ρ</sup> ο των πα τε ε

ρων Θε ος ευλογη τος ει <sup>π ρ</sup> ῶδὴ η'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου μεν τον Κυ

ρι ον <sup>Δ ρ</sup>

Θ αυ ματος υ περ φυ ους η δρο σο βο λος εξ ει

κο νι σε κα μι νος τυ υ υ πον ου γαρ ους ε δε ξατο

φλε γει νε ους ως ου δε πυρ της Θε ο τη τος

Παρ θε νου ην υπ ε ε δυ νη δυν <sup>π ρ</sup> δι ο ο α νυ

μνουντες α να μελ ψωμεν <sup>Δ ρ</sup> ευ λο γει τω η κτι σις πα

α σα τον Κυ ρι ον <sup>π ρ</sup> και υ περ υ ψου ου τω εις παν

τας τους αι ω ω να α α ας π 9

# Αργαί

## Ιωάννου Πρωτοψάλτου

ψδη α'

### Ἦχος 4̣ Πα

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Ειρμολόγιον 1903 σ.7\*

**Χ** ρι στο ος γε ε εν να ται αι αι δο ο ο

ξα α σα α α τε π 9 Χρι στο ος εξ ου ου ρα α α

νω ω ωων α α παν τη η η σα α α τε ε π 9

Χρι στο ο ος x 9 ε πι ι γη η η ης z ου ψω ω ω

ω ω θη η η η η τε Δ α σα α α α α τε ε τω

ω Κυ υ ρι ω ω π 9 πα α α σα α η η γη η η η και αι

εν ευ φρο ο συ υ υ νη Δ α νυ μνη η σα

τε ε ε λαα οι οι οι ο τι ι δε ε δο ο ο ο ο

ξαα α α σται <sup>π ρ</sup> ῥοδὴ γ'

**Τ**ω προ τω ωων αι αι ω ω ω νων <sup>π ρ</sup> εκ πα τρο

ος γε εν νη η η θεν τι ι α αρ ρε ε ε ε ευ

στω ως υι υι υι ω <sup>π ρ</sup> και επ ε σχα α των ε εκ

παρ θε ε ε ε νου <sup>Δ ρ</sup> σα α α αρ κω θε εν τι ι α

α σπο ο ο ρως Χρι στω ω ω ω ω ω ω ω ω

ω ω ω ω <sup>π ρ</sup> τω Θε ω ω βο ο η σω ω μεν <sup>π ρ</sup> ο α

νυ ψω ωσας το κε ε ε ρας η η μων χορὸς α' α α γι ο

ος ει ει Κυ υ υ υ υ ρι ι ι ι ε <sup>π ρ</sup> ῥοδὴ δ'

Ρ α α βδος εκ της ρι ι ζης Ι ε εσ σαι και α

αν θος ε εξ α αυ τη η η η ης Χρι ι ι ι

στε εκ της Παρ θε ε νου α αν ε ε βλα στη η σας

εξ ο ο ρους ο ο αι νε ε τος κα τα σκι ου δα α

σε ε ε ο ος ηλ θε σαρκω ω θει εις εξ α α α πει

ει ρα α αν δρου ο α α υ λοος και Θε ε

ος δο ο ξα τη η δυ υ υ να μει ει σου ου Κυ

υ υ υ υ ρι ι ι ι ε

ᾠδὴ ε'

Θ ε ο ος ω ω ω ν ει ει ρη η η νης Πα τη

η η η η ρ οι οι κτι ι ρ μων της με γα α

λης βου ου ου λη η η ης σου ου το ον α ααγ γε ε

λο ον <sup>π ρ</sup> ει ρη νην πα α ρε ε χο ο με ε νον α πε ε

στει ει λας η η μιν <sup>π ρ</sup> ο ο θε ε ε εν θε ε ο ο γνω

σι ι ι ι ι ι ας <sup>Δ ρ</sup> προς φω ω ω ως ο ο δη η

γη η θεν τε ες εκ νυ κτο ος ο ορ θρι ι ζο ο ον τε ε

ες <sup>Δ ρ</sup> δο ξο λο γου ου μεν σε ε φι ι λα α α α

αν θρω ω ω ω πε <sup>π ρ</sup> ῶδῆς'

**Σ**πλα ααγ χνω ω ων Ι ι ω ω ω ναν <sup>π ρ</sup> εμ

βρυ υ ο ον α α πη με ε σεν <sup>π ρ</sup> ε να α α λι ι

ο ος θηρ <sup>Δ ρ</sup> οι οι οι οι ο ον ε ε δε ε ε ξα

α α το ο π η Παρ θε νω ω δε π εν οι κη η

σα ας ο ο ο λο γο ος και αι σα α α αρ κα

α λα α α βων π δι ε λη η λυ θε ε φυ λα α α

ξα ας α δι α φθο ο ρον π η η η ης γα αρ ου χ υ

πε ε στη η ρευ σε ε ως π την τε κου ου σα αν

κα α α τε σχεν α α πη η η η η μα α α αν

π τον

ῥδῆζ

Ο ι παι αι δες ευ σε βει ει α συ υ υ υντρα α φε

ε εν τεσ π δυσ σε ε ε βου ους Δ ρ προσ τα α γμα

το ο ος κα α τα α φρο ο νη η η σα α αν

τε ες π<sup>π</sup>υ ρο ο ο ος α πει λη η ην ουκ

ε ε πτο ο ο η η θη η η σαν αλλ ε

εν με ε ε σω ω ω ω τη ης φλο γο ο ος ε

ε στω ω τε ες ε ε ε ψα ααλ λο ον ο των

πα τε ε ε ρω ω ων Θε ε ο ος ευ λο ο

γη η η το ο ο ο ος ει ῶδὴ ἡ'

αι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου με

εν τον Κυ ρι ι ον

Θα α αυ μα ατος υ πε ερ φυ υ ους η δρο ο

ο σο ο βο ο ο λος ε εξ ει ει κο ο νι ι



σε ε ε κα μι ι νο ος τυ υ υ πο ον <sup>π ρ</sup> ου γαρ

ου ους ε ε δε ε ξα α το φλε ε ε γει ει νε ε ε ους <sup>π ρ</sup>

ως ου δε ε πυρ τη ης θε ο τη η η το ος <sup>Δ ρ</sup> Παρ

θε ε νου η ην υ υ πε ε ε ε ε δυ

υ νη η η δυν <sup>π ρ</sup> δι ο ο ο ο αν υ μνου ουν

τες α α να μελ ψω με εν <sup>Δ ρ</sup> ευ λο γει τω ω η χτι

ι σι ις πα α α α σα α το ον Κυ υ υ ρι

ι ι ο ον <sup>π ρ</sup> και αι υ πε ερ υ ψου ου ου ου τω

ω ει εις πα αν τας του ου ους αι ω ω ω ω

να α α ας <sup>π ρ</sup>

# Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου

ὠδὴ α'

## Ἦχος ᾠ Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.375/2712\*

Χ ρι στο ος γε ε εν να ται αι αι δο ο ο

ξα α σα α α τε π ρ Χρι στο ος εξ ου ρα α α

νω ω ωων α α παν τη η η σα α τε ε π ρ

Χρι στο ο ος ε πι ι γη η η ης ζ υ ψω ω ω

ω ω θη η η η η τε Δ α σα α α α α τε ε

τω ω Κυ υ ρι ω ω π ρ πα α α σα α η η γη η η η

και αι εν ευ φρο ο συ υ υ νη Δ α νυ μνη η

σα τε ε ε λα α οι οι οι ο τι ι δε ε δο ο ο

8 Εἰς τὰς καταβασίας ταύτας ἐπεφέραμεν ἐλαφρὰς τινὰς μεταβολὰς πρὸς ἀποφυγὴν παρατονισμῶν καὶ ἀστόχου χωρισμοῦ λέξεων. Οὐσιαστικωτέρας διορθώσεις πρὸς καλυτέραν ἀπόδοσιν τοῦ νοήματος καὶ σύντηξιν μουσικῶν τινῶν γραμμῶν παραθέτομεν μεθ' ἑκάστην καταβασίαν.

ο ξαααα σται π ρ

ῥοδὴ γ'

Τ ω προ τω ω ν αι αι ω ω ω νων εκ Πα τρο

ος γε εν νη η η θεν τι ι α αρ ρε ε ε ε ευ

στω ως Υι υι υι ω και επ ε σχα α των ε εκ

Παρ θε ε ε ε νου σα α α αρ κω θε εν τι ι

α α σπο ο ο ρως Χρι στω ω ω ω ω ω ω ω ω

ω ω ω ω τω Θε ω ω βο ο η σω ω μεν ο

α νυ ψω ω σας το κε ε ε ρας η η μων χορδός α' α

α γι ο ος ει ει Κυ υ υ υ ρι ι ι ι ε

\* διασκευή πρωτ.Κων.Παπαγιάννη σα ρ κω θεν τι ι α α σπο ο ο

ρωσ Χρι στω ω ω τω Θε ε ω βο η η η η

σω ω ω ω ω μεν ο α νυ ... ὠδή δ'

Ρ α α βδος εκ της ρι ι ζης Ι ε εσ σαι και α

αν θος ε εξ α αυ τη η η η ης Χρι ι ι ι

στε εκ της Παρ θε ε νου α α νε ε βλα στη η σας

εξ ο ο ρους ο ο αι νε ε τος κα τα σκι ου δα

α σε ε ε ο ος ηλ θες σαρκω ω θει εις εξ α α α

πει ει ρα α αν δρου ο α α υ λοος και Θε

ε ος δο ο ξα τη η δυ υ υ να μει ει σου ου Κυ

υ υ υ υ ρι ι ι ι ε ὠδή ε'

Θ ε ο ος ω ω ω ω ν ει ει ρη η η νης Πα

τη η η η η ρ οι οι κτι ιρ μων της με γα

α λης βου ου ου λη η η ης σου ου το ον α α αγ

γε ε λο ον ει ρη νην πα α ρε ε χο ο με ε νον α

πε ε στει ει λας η η μιν ο ο θε ε ε εν θε ε ο

ο γνω σι ι ι ι ι ας προ φω ω ω ως ο ο

δη η γη η θεν τε ες εκ νυ κτο ος ο ορ θρι ι ζο ο ν

τε ε ες δο ξο λο γου ου μεν σε ε φι ι λα α

α α αν θρω ω ω ω πε

Ϟπλα α αγ χνω ω ω ν Ι ι ω ω ω ν αν εμ

βρυ υ ο ον α α πη με ε σεν <sup>π ρ</sup> εν α α α λι ι

ο ος θηρ <sup>Δ</sup> οι οι οι οι ο ον ε ε δε ε ε ξα

α α το ο <sup>π ρ</sup> τη Παρ θε νω ω δε <sup>π ρ</sup> εν οι κη η

σα ας ο ο ο Λο γο ος και αι σα α α α αρ

κα α λα α α βων <sup>π ρ</sup> δι ε λη η λυ θε ε φυ λα

α α ξα ας α δι α φθο ο ρον <sup>π ρ</sup> η η η ης γα αρ

ουχ υ πε ε στη η ρε ευ σε ε ως <sup>π ρ</sup> την τε κου

ου σα αν κα α α τε σχεν α α πη η η η

η μα α αν τον <sup>π ρ</sup> ὠδὴ ζ'

**Ο** ι παι αι δεσ ευ σε βει ει α συ υ υ υν τρα α

φε ε εν τες <sup>π ρ</sup> δυσ σε ε ε βου ους προσ τα α

γμα το ο ος κα α τα α φρο ο νη η η σα

α αν τε ες <sup>π ρ</sup> πυ ρο ο ο ος α πει λη η ην

ουκ ε ε πτο ο ο η η θη η η σαν <sup>Δ</sup> <sup>2</sup> αλλ

ε εν με ε ε σω ω ω ω τη ης φλο γο ο ος

ε ε στω ω τε ες ε ε ε ψα ααλ λο ον <sup>π ρ</sup> ο

των πα τε ε ε ρω ω ων Θε ε ο ος ευ λο ο

γη η η το ο ο ο ος ει <sup>π ρ</sup>

διασκευές πρωτ.Κων.Παπαγιάννη

<sup>1</sup> <sup>π ρ</sup> ευ σε βει α συ υ υ υν...

<sup>2</sup> <sup>Δ</sup> αλλ εν με ε σω ω ω ω ω τη ης φλο ο γο ος

ε ε στω ω τε ες ...

π ρ  
ῥοδὴ η'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου με

εν τον Κυ ρι ι ον

Θ α α αυ μα α τος υ πε ερ φυ υ ους η δρο ο

ο σο ο βο ο ο λος ε εξ ει ει κο ο νι ι

σε ε ε κα μι ι νο ος τυ υ υ πο ον ου γαρ

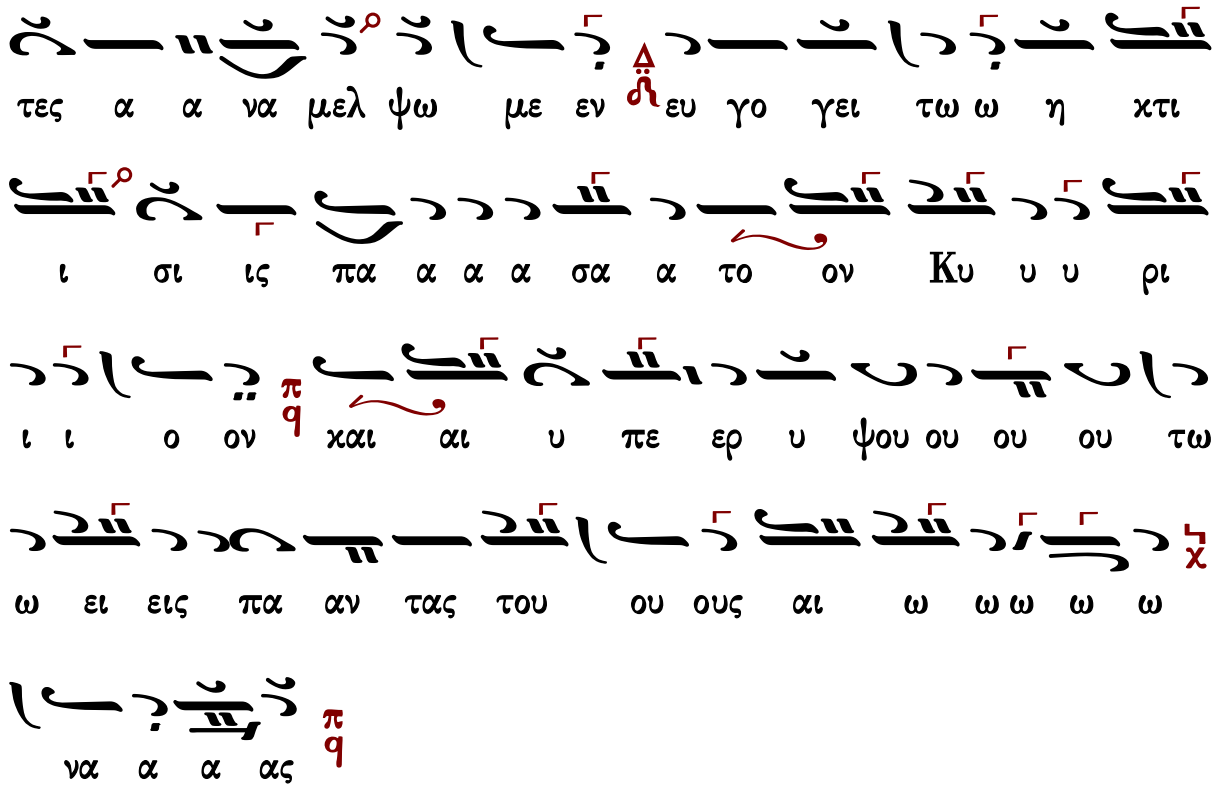
ου ους ε ε δε ε ξα α το φλε ε ε γει ει νε ε ε

ους ως ου δε ε πυρ τη ης Θε ο τη η τος Παρ

θε ε νου η ην υ υ πε ε ε ε ε ε δυ

υ νη η η δυν δι ο ο ο ο α νυ μνου ουν





## Τιμιωτέρα

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

Λουκᾶ κεφ. 1

ἤχος α'

- ∴ Μεγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἠγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ σωτῆρί μου. 46-47
- ∴ Ὅτι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48
- ∴ Ὅτι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50
- ∴ Ἐποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσκόρπισεν ὑπερηφάνους διανοίᾳ καρδίας αὐτῶν. 51
- ∴ Καθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξάπέστειλε κενούς. 52-53
- ∴ Ἀντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς

πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55

**Τ**ὴν Τιμιωτέραν τῶν Χερουβίμ, καὶ ἔνδοξοτέραν ἀσυγκρίτως τῶν Σεραφίμ, τὴν ἀδιαφθόρως Θεὸν Λόγον τεκοῦσαν, τὴν ὄντως Θεοτόκον, σὲ μεγαλύνομεν.

Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

## Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου

Ἦχος ᾠ Πα

Λουκᾶ κεφ. 1



- ∴ Μεγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἠγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ σωτήρῳ μου. 46-47
- ∴ Ὅτι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48
- ∴ Ὅτι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ Δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεάν καὶ γενεάν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50
- ∴ Ἐποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσκόρπισεν ὑπερηφάνους διανοία καρδίας αὐτῶν. 51
- ∴ Καθέϊλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξάπεστειλε κενούς. 52-53
- ∴ Ἀντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55



Πέτρου Λαμπαδαρίου

Ἦχος ᾠ Πα

Πανδέκτη  
Ὅρθρος 1850 σ.501#

Τὴν τιμιωτέραν τῶν Χερουβίμ και ἐνδο  
ξοτέραν ἀσυγκρίτως τῶν Σεραφίμ τὴν ἀδι

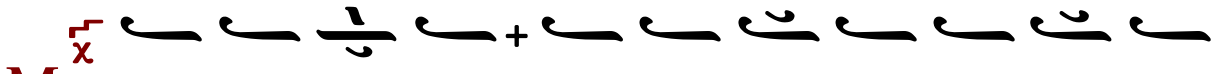

  
 α φθο ρως Θε ον Λο γον τε κου ου σαν  την ον τως Θε ο

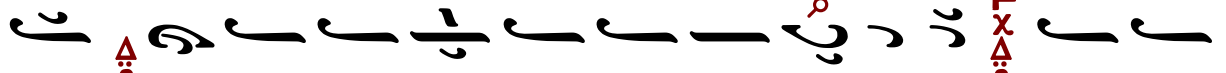



  
 το κον σε μεγα λυ υ νο ο μεν 



Κωνσταντίνου Παπαγιάννη



Ἦχος  $\frac{4}{\bar{q}}$  Πα



πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Τριώδιον Β'  
2003 σ.19#




  
**M** ε γα λυ νει η ψυ χη μου τον Κυ ρι


  
 ον  και η γαλ λι α σε το πνευ μα μου  ε πι


  
 τω Θε ω τω σω τη ρι μου 


  
**T** ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ  και εν δο ξο


  
 τε ραν α συγ κρι ι τως των Σε ρα φιμ  την α δι α


  
 φθο ρως Θε ον Λο γον τε κου σαν  την ον τως Θε ο

το κον σε μεγα λυ υ νο ο μεν <sup>π</sup><sub>9</sub>

**Ο** <sup>χ</sup> τι ε πε βλε ψεν ε πι την τα πει νω

σιν της δου λης αυ του <sup>Δ</sup><sub>Δ</sub> ι δου γαρ α πο του <sup>χ</sup> νυν μα κα

ρι ου σι με πα σαι αι γε νε αι <sup>Δ</sup><sub>Δ</sub>

**Τ** ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ <sup>Δ</sup><sub>Δ</sub> και εν δο ξο

τε ραν α συγ κρι ι τως των Σε ρα φιμ <sup>Δ</sup><sub>Δ</sub> την α δι α

φθο ρως Θε ον Λο γον τε κου σαν <sup>Δ</sup><sub>Δ</sub> την ον τως Θε ο

το κον σε μεγα λυ υ νο ο μεν <sup>π</sup><sub>9</sub>

**Ο** <sup>χ</sup> τι ε ποι η σε μοι με γα λει α ο

δυ να τος και α γι ον το ο νο μα αυ του <sup>Δ</sup><sub>Δ</sub> και το ε

λε ος αυ του εις γε νε αν και γε νε αν τοις φο βου

με νοις αυ τον

Τ ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ και εν δο

ξο τε ραν α συγ κρι ι τωσ των Σε ρα φιμ την α δι

α φθο ρωσ Θε ον Λο γον τε κου σαν την ον τωσ Θε

ο το κον σε μεγα λυ υ νο ο μεν

Ε ποι η σε κρα τος εν βρα χι ον ι αυ

του δι ε σκορ πι σεν υ περ η φα νους δι α νοι

α καρ δι ας αυ των

Τ ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ και εν δο

ξο τε ραν α συγ κρι ι τως των Σε ρα φιμ πη την α δι

α φθο ρως Θε ον Λο γον τε κου σαν την ον τως Θε

ο το κον σε μεγα λυ υ νο ο μεν

Κ α θει λε δυ να στας α πο θρο νων και υ ψω σε τα

πει νους πει νων τας εν ε πλη σεν α γα θων και

πλου τουν τας εξ α πε στει λε κε νους

Τ ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ και εν δο

ξο τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ την α δι

α φθο ρως Θε ο ον Λο γον τε κου σαν την ον τως Θε

ο το κον σε μεγα λυ υ νο ο μεν

Α ν τε λα βε το Ισ ρα ηλ παι δος αυ του μνη

σθη ναι ε λε ους κα θως ε λα λη σε προς τους πα

τε ρας η μων τω Α βρα αμ και τω σπερ μα τι αυ

του ε ως αι ω νος

Τ ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ και εν δο

ξο τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ την α δι

α φθο ρως Θε ο ον Λο γον τε κου σαν την ον τως Θε

ο το κον σε μεγα λυ υ νο ο μεν

### Καταβασία θ' φδῆς

ἦχος α'

[Μεγάλυνον ψυχῆ μου, τὴν τιμιωτέραν, καὶ ἐνδοξοτέραν τῶν ἄνω στρατευμάτων.]

Μυστήριον ξένον, ὄρω καὶ παράδοξον! οὐρανὸν τὸ Σπήλαιον· θρόνον Χερουβικόν, τὴν Παρθένον· τὴν φάτιν χωρίον· ἐν ᾧ ἀνεκλίθη ὁ ἀχώρητος, Χριστὸς ὁ Θεός· ὃν

ἀνυμνοῦντες μεγαλύνομεν.

Ἀργὴ

Σύντομος

Πέτρου Λαμπαδαρίου

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

## Σύντομος

### Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

ᾠδὴ θ'

## Ἦχος ᾠ Πα

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.265#

Μεγαλύνον ψυχῆ μου σου τὴν τιμιώτε

εραν καὶ ἐνδοξότεραν τῶν ἀνωστρατευ

μα αὐτῶν

π ρ

Μυστηριὸν ξέρον ὁρω καὶ παραδο

ξόν σου ράνον τὸ σπηλαιὸν θρόνον Χερουβικόν

τὴν Παρθένον τὴν φαατην χωριὸν ἐνώω

ἀνεκλιθη ὁ ἀχωρητὸς Χριστὸς ὁ Θεός



ον α νυ μουντες με γα λυ υ νο ο με ε ε εν π ρ

Ἄρχη

Ιωάννου Πρωτοψάλτου

ᾠδὴ θ'

Ἦχος ᾠ Πα

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Ειρμολόγιον 1903 σ.15#

Μ ε γα α λυ νο ον ψυ υ υ χη η η μου ου ου  
ου τη ην τι μι ι ω ω τε ε ε ρα αν  
και αι ε εν δο ο ξο ο τε ε ε ε ρα αν τω ων α  
α νω στρα α α τευ μα α α α των π ρ

Μ υ στη η ρι ι ι ι ο ον ξε ε ε ε νον ο ρω  
ω ω και αι πα α ρα α δο ο ο ξο ον Ου ρα  
νο ο ον το σπη η λαι αι αι ον θρο ο ο νο ον

Χε ρου ου ου ου βι κον την Πα αρ θε ε ε νον την φα α

την χω ω ρι ι ι ον π ε νω ω ω ω α νε

κλι ι ι θη ο ο α χω ρη το ος Χρι στο ο ος ο

Θε ε ος ον α νυ μνου ν τες με γα α λυ υ υ υ

υ νο ο ο ο μεν με ε ε εν

Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου

ῥοδὴ θ'

Ἦχος ᾠ Πα χ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.379/2716\*

Με γα α λυ νο ον ψυ υ υ χη η η μου ου ου

ου τη ην τι μι ι ω ω τε ε ε ρα αν

και αι ε εν δο ο ξο ο τε ε ε ε ρα αν τω ων α α

νω στρα α α τευ μα α α α των π 9

Μ υ στη η ρι ι ι ι ο ο ν ξ ε ε ε ε ν ο ρ ω π 9

ω ω και αι πα α ρα α δο ο ο ξ ο ο ν ου ρα π 9

νο ο ο ν το σπη η λαι αι αι ο ν θρο ο ο νο ο ν π 9

χε ρου ου ου ου βι κον την Πα αρ θε ε ε ν ο ν την φα α

την χω ω ρι ι ι ο ν εν ω ω ω ω α νε π 9

κλι ι ι θη ο ο α χω ρη το ος Χρι στο ο ος Δ

ο Θε ε ος ο ν α νυ μνου ν τε ς με γα α λυ υ Δ

υ υ υ νο ο ο ο με ε ε εν π 9

# Τῶν Χριστουγέννων, ἱαμβικαὶ

27-30 Δεκεμβρίου

## ἤχος α'

α Ἐσωσε λαόν, θαυματουργῶν Δεσπότης, ὑγρὸν θαλάσσης κύμα χερσώσας πάλαι·  
ἐκὼν δὲ τεχθεὶς ἐκ Κόρης, τρίβον βατήν, πόλου τίθησιν ἡμῖν· ὃν κατ' οὐσίαν, ἴσόν  
τε Πατρί, καὶ βροτοῖς δοξάζομεν.

γ Νεῦσον πρὸς ὕμνους οἰκετῶν εὐεργέτα, ἐχθροῦ ταπεινῶν τὴν ἐπηρμένην ὄφρυν,  
φέρων τε παντεπόπτα τῆς ἀμαρτίας, ὑπερθεν ἀκλόνητον, ἐστηριγμένους, μάκαρ,  
μελωδοὺς τῇ βάσει τῆς πίστεως.

δ Γένους βροτείου τὴν ἀνάπλασιν πάλαι, ἄδων προφήτης Ἀββακούμ, προμηνύει,  
ἰδεῖν ἀφράστως ἀξιωθεὶς τὸν τύπον. Νέον βρέφος γάρ, ἐξ ὄρους τῆς Παρθένου,  
ἐξῆλθε λαῶν, εἰς ἀνάπλασιν Λόγος.

ε Ἐκ νυκτὸς ἔργων, ἐσκοτισμένης πλάνης ἰλασμόν ἡμῖν Χριστὲ τοῖς ἐγρηγόρωσ, νῦν  
σοι τελοῦσιν ὕμνον, ὡς εὐεργέτη, ἔλθοις πορίζων εὐχερῆ τε τὴν τρίβον, καθ' ἣν  
ἀνατρέχοντες, εὐροῖμεν κλέος.

ς Ναίων Ἰωνᾶς, ἐν μυχοῖς θαλαττίοις, ἐλθεῖν ἐδεῖτο, καὶ ζάλην ἀπαρκέσαι. Νυγεὶς  
ἐγὼ δέ, τῷ τυραννοῦντος βέλει, Χριστὲ προσαιδῶ, τὸν κακῶν ἀναιρέτην, θᾶπτον  
μολεῖν σε τῆς ἐμῆς ῥαθυμίας.

ζ Τῷ παντάνακτος ἐξεφαύλισαν πόθῳ, ἀπλητα θυμαίνοντος ἠγκιστρωμένοι, παῖδες  
τυράννου δύσθεον γλωσσαλγίαν, οἷς εἶκαθε πῦρ ἄσπετον, τῷ Δεσπότη, λέγουσιν·  
εἰς αἰῶνας εὐλογητὸς εἶ.

Αἰνοῦμεν, εὐλογοῦμεν καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον.

η Μήτηρ ἀφλέκτως εἰκονίζουσι Κόρης, οἱ τῆς παλαιᾶς πυρπολούμενοι νέοι,  
ὑπερφυῶς κύουσιν, ἐσφραγισμένην. Ἀμφω δὲ δρῶσα, θαυματουργία μιᾶ, λαοὺς  
πρὸς ὕμνον ἐξανίστησι χάρις.

Ἀργαὶ

Σύντομοι

Πέτρου Λαμπαδαρίου

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

## Σύντομοι

### Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Ε σω σε λα ον θαυ μα τουρ γων Δε σπο ο της υγ

ρον θα λα ασ σης κυ μα χερ σω σας πα α λαι ε

κων δε τε χθεις εκ κο ρης τρι βον βα την πο λου τι

θη σιν η μιν ον κατ ου σι αν ι σον τε Πα τρι και βρο

τοις δο ξα α ζο ο μεν

ῥδὴ γ'

Ν ευ σον προς υ υ μνου ους οι κε των ευ ερ γε

ε τα ε χθρου ουταπει νων την ε πηρ με ε νην ο φρυν

φε ρων τε παν τε πο πτα της α μαρ τι ας υ πε ερ θεν

α κλο νητον ε στη ρι γμε ε νους μα καρ μελω δους

χορός α' τη βα σει της πι ι στε ε ως <sup>π 9</sup> ῥδὴ δ'

**Γ** ε νους βρο τει ει ου ου την α να πλα σιν πα

α λαι <sup>Δ</sup> α δων προ φη η της Αβ βα κουμπρο μη νυ

ει ι δειν α φρα α στως α ξι ω θεις τον τυ υ

πον <sup>Δ</sup> νε ον βρε φος γαρ εξ ο ρους της Παρ θε ε νου <sup>π 9</sup> ε

ξηλ θε λα ων εις α να πλα σιν Λο γος <sup>π 9</sup> ῥδὴ ε'

**Ε** κ νυ κτος ε ερ γων ε σχο τι σμε νοις πλα α

νης ι λα σμον η μιν Χρι στε τοις ε γρη γο ο ρως νυν

σοι τε λου σιν υ μνον ως ευ ερ γε ε τη ελ θεις

πο ρι ι ζων ευ χε ρη τε την τρι ι βον <sup>π 9</sup> καθ ην α

να τρεχοντες ευροιμεν κλεος <sup>π ρ</sup> ὠδὴς'

**Ν**αιων Ιωνα εν μυχοις θαλαττιοις

ελθειν εδειτο και ζαλην απαρκεσαι νυγεις εγω

δε τω τυραννοντος βεβηλει <sup>Α ρ</sup> Χριστε επροσ αυδω τον

κακων αναιρετην θατ τον μολειειν σε της

εμης ραθυμιας <sup>π ρ</sup> ὠδὴς'

**Τ**ω παντανακτοος εξεφωλισαν ποοθω

απλητα θυμαινοντος ηγκιστρωμενοι <sup>π ρ</sup> παιδες

τυραννου δυσθεον γλωσσαλγιαν <sup>Α ρ</sup> οισ ειεικα

θεπυρα ασπετον τω Δεσποτη λεγουσιν εις αι

ω ω νας ευ λο γη τος ει <sup>π ρ</sup>

ῥοδὴ ῥ'

Δ ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου μεν τον Κυ

ρι ον <sup>Δ ρ</sup>

Μ η τραν α φλε ε κτω ως ει κο νι ι ζου

σι κο ο ρης <sup>Δ ρ</sup> οι της πα λαι α ας πυρπο λου ουμε

νοι νε οι <sup>π ρ</sup> υ περ φυ ως κυ ου σαν ε σφρα γι σμε ε

νην <sup>Δ ρ</sup> αμ φω δε δρω ω σα θαυμα τουρ γι α μι ι

α <sup>π ρ</sup> λα ους προς υ μον εξ α νι στη σι χα α ρι

ι ι ις <sup>π ρ</sup>

### Αργαί

Ιωάννου Πρωτοψάλτου



Ε ε σω σε ε λα α α ο ον θα α α αυ μα α

του ουρ γω ων Δε ε σπο ο ο της χ̣η̣ υ γρο ον θα

λα α α α α σ σης Δ̣α̣ κυ υ υ μα α χερ σω

ω ω σας πα α α α α λαι π̣η̣ ε κων δε τε ε χθει εις

ε εκ κο ο ρης τρι ι ι βο ον βα α τη η ην Δ̣α̣

πο λου τι ι θη η σι εν Δ̣α̣ η η η μι εν ον

κα ατ ου ου ου σι ι ι ι ι αν π̣η̣ ι ι ι ι

ι ι σο ο ο ο ο ο ον τε Πα α τρι ι ι και ζ̣

βρο τει οισ δο ο ξα α α α α σω ω ω μεν π̣η̣

Νευσοοοοονπροςυυυυυμνου

ουουουουςοιοιοικεεετωωωνεεευ

εργεεεεταεχθρουουουουτααπει

ειεινωωντηνεεπηηρμεεεεενη

ηνοοοφρυνφεεερωωντεπαντεποοο

οπταατηςαμαρτιααςυυπεερθεενα

κλοονηητοονεστηηριιιγμεεεεε

νουςμααααακααααααρμε

λωωδουουουςχορὸς ἀτηβαασειειτηηςπιι

ιιιστεεεεως

ὠδὴ δ'

Γ ε νους βρο τει ει ει ου ου τη ην α α να α α α

πλα α σι εν πα α α λαι α δων προ ο φη η η τη ης

Αβ βα κου ου ουμ προ ο μη η η νυ υ υ υ υ

ει ι δειν α φρα α α α στω ως α α α α ξι ι

ω θει εις τον τυ υ υ υ υ πον νε ον βρε φος γα αρ

ε ε εξ ο ο ο ρους τη ης παρ θε ε ε ε νου

εξ η η η ηλ θε ε λα α α ω ω ω ω ω

ω ω ων ει εις α α να α α πλα α σι ι εν

Λο ο ο ο ο γος

Ε χ νυ κτος ε ε ερ γω ων ε ε ε σκο ο τι σμε

νοι οἰς πλα α α νης ἰ λα σμον η η μι ἰν

Χρι στε ε τοις ε ε γρη γο ο ο ο ρως π νυν σοι τε

λου ου ου ου σι ἰν υ υ υ υ μνο ον ως ε ευ ε

ερ γε ε ε τη ην ἰ ἐλ θοις οἰς πο ο ρι ἰ ἰ

ζω ων ε ευ χε ε ρη η η τε ε τη η ην τρι ἰ ἰ

ἰ βον καθ ην α να τρε χο οντες ε ε ευ ροι οἰ μεν κλε

ε ε ε ε ος ὠδῆς

**N**αι αι ων ἰ ἰ ω ω ω να ας ε εν μυ υ χοι

οι οἰς θα λα ατ τι ἰ ἰ οἰ οἰς ε ἐλ θει ειν

ε ε δει ει ει το ο και αι αι ζα α λην α

α α παρ κε ε ε ε ε σαι π<sup>9</sup> νυ γεις ε γω ω ω ω

δε ε του ου ου ου τυ υ ρα αν νου ουν το ος βε

ε ε λει ει Δ<sup>Δ</sup> Χρι στε ε ε ε προ οσ α α αυ δω Δ<sup>Δ</sup>

το ον κα α κω ω ων α α ναι αι αι ρε ε ε ε ε

την π<sup>9</sup> θατ τονμο λει ει ει ει ει ν σε ε ε ε ε ε ε τη

η ης ε ε μη η η ης ρα α θυ υ υ μι ι ι ι

ας π<sup>9</sup>

ῶδῆζ

Τ ω ω παν τα να α κτο ος ε εξ ε ε φα αυ λι ι

σα ανπο ο ο ο ο θω χ<sup>9</sup> α πλη τα θυ μαι αι νο ον το

ος Δ<sup>Δ</sup> η η ηγ γι ι στρω ω ω με ε ε ε ε νοι π<sup>9</sup>

παι δες τυ ρα α α αν νου ου δυ υ υ υ σθε ε ον

γλωσ σα αλ γι ι ι α αν οις ει ει ει ει κα

α θε ε ε πυρ α α α σπε ε τον τω ω

Δε ε ε σπο ο ο ο τη λε ε γου ου σιν εις αι

ω ω ω νας ε ε ευ λο ο γη το ο ο ος ει ῶδὴ ἡ'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου με

εν τον Κυ ρι ι ον

Μ η η τραν α φλε ε ε κτως ει ει ει κο ο νι

ι ι ζου ου σι ι κο ο ο ο ο ρης οι της πα λαι α ας

πυ υρ πο ο λου ου ου με ε νοι οι οι νε ε ε ε ε

ου περ φυ υ ως κυ υ ουου σα αν ε σφρα α

γι ι σμε ε ε νη ην αμ φω ω δε δρω ω ω

σα α θα α αυ μα α τουρ γι ι α μι ι ι ι ι

α λα ους προς υ υ υ υ υ μνο ο ο ο ο ον ε

ε εξ α αν ι ι ι ι στη η σι χα α α α α

ρι ι ι ις

### Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου<sup>9</sup>

ῥδθ α'

Ἦχος ᾠ Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.297/3020\*

ε σω σε ε λα α α ο ον θα α α αυ μα

α του ουρ γω ων Δε ε σπο ο ο της υ γρο ον θα

<sup>9</sup> Εἰς τὰς καταβασίας ταύτας ἐπεφέραμεν ἐλαφρὰς τινὰς μεταβολὰς πρὸς ἀποφυγὴν παρατονισμῶν καὶ ἀστόχου χωρισμοῦ λέξεων. Οὐσιαστικωτέρας διορθώσεις πρὸς καλυτέραν ἀπόδοσιν τοῦ νοήματος καὶ σύντημσιν μουσικῶν τινῶν γραμμῶν παραθέτομεν μεθ' ἑκάστην καταβασίαν.

λα α α α α α σης <sup>Δ</sup>δλ κυ υ υ μα α χερ σω

ω ω σας πα α α α α λαι <sup>π</sup>ρ ε κων δε τε ε χθει εις

ε εκ κο ο ρης τρι ι ι βο ον βα α τη η η

ην <sup>Δ</sup>δλ πο λου *\** τι ι θη η <sup>Δ</sup>δλ η η η μι ιν

ον κα ατ ου ου ου <sup>π</sup>ρ σι ι ι ι ι αν ι ι

ι ι ι ι σο ο ο ο ο ο ον τε Πα α τρι ι

ι <sup>ζ</sup> και βρο τοι οισ δο ο ξα α α α α ζο ο ο

ο <sup>π</sup>ρ μεν

*\* ἄλλη γραμμὴ* τι ι θη η <sup>Δ</sup>δλ σι ι ιν η η μι <sup>η</sup>η ο ο ον ...

ῥδὴ γ'



Νευσοοοον προς υ υ μνου ου ου ους οι

οι οι κε ε τω ω ω ων ε ε ευ ερ γε ε ε ε

τα ε χθρου ου ουου τα α πει ει ει νω ων την

ε ε πη ηρ με ε ε ε ε νη ην ο ο ο φρυν

φε ε ε ρω ων τε παν τε πο ο ο πτα α της α

μαρ τι α ας υ υ πεερ θε εν ακλο ονη ητο ον

ε στη η ρι ι ι γμε ε ε ε ε νους μα α

α α α α κα α α α α αρ με λω ω δου ου

ους χοθός α' τη βα α σει ει τη ης πι ι ι ι

ι στε ε ε ε ως

\* ἄλλη γραμμὴ

μα κα αρμε λω ω δου ου ου ου ου ους χορός α' τη βα

α ...

ῶδὴ δ'

Γ ε νους βρο τει ει ει ου ου τη ην α α να α α

α πλα α σι ιν πα α α λαι α δων προ ο φη η η

τη ης Αβ βα κου ου ουμ προ ο μη η η νυ υ υ

υ υ ει ι δειν α φρα α α α στω ως α α ξι ι

ω θει εις το ον τυ υ υ υ υ πον νε ον βρε φος γα αρ

εξ ο ο ο ρους τη ης Παρ θε ε ε ε νου εξ

η η η ηλ θε ε λα α α ω ω ω ω ω ω ω

ων ει εις α α να α α πλα α σι ι ιν Λο ο ο

ο ο γος π ρ

ὠδή ε'

Ε κ νυ κτος ε ε εργων ε ε σκο ο τι σμε νη

ης πλα α α νης ι λα σμον η η μι ιν Χρι στε

ε τοις ε ε ε γρη γο ο ο ο ρως νυν σοι τε

λου ου ου ου σι ιν υ υ υ υ μνο ον ως ε ευ

ε εργε ε ε τη η ελ θοις πο ο ρι ι ι

ζω ων ε ευ χε ε ρη η η τε ε τη η ην τρι ι

ι ι βον καθ ην α να τρε χο οντες ε ε ευ ροι οι

μεν κλε ε ε ε ε ος π ρ

ῥοδής

Ναι αι ων Ι ι ω ω ω να ας ε εν μυ υ χοι

οι οισ θα α λα ατ τι ι ι οι οισ ε ελ

θει ειν ε ε δει ει ει το ο και αι αι ζα α λην

α α α παρ κε ε ε ε ε σαι νυ γεις ε γω

ω ω ω δε ε τω ω τυ υ ρα αν νου ουν το ος βε

ε ε λει ει Χρι στε ε ε ε ε προ οσ α α αυ

δω τον κα α κω ω ων α α ναι αι αι ρε ε ε

ε ε την θατ τον μο λει ει ει ει ειν σε τη

η ης ε ε μη η η ης ρα α θυ υ υ μι ι ι ι

ας π ρ

ῶδηζ

ω ω παν τα να α κτο ος ε εξ ε φα αυ λι ι

σα αν πο ο ο ο θω α πλη τα θυ μαι αι νον το

ος η η ηγ κι ι στρω ω ω με ε ε ε ε νοι

παι δες τυ ρα α αν νου ου δυ υ υ υσ θε ε ον

γλωσ σα αλ γι ι ι α αν οις ει ει ει ει

κα α θε ε ε πυρ α α α σπε ε τον τω ω

Δε ε ε σπο ο ο ο τη λε ε γου ου σιν εις αι ω

ω ω νας ε ε ευ λο ο γη το ο ο ος ει π ρ

διασκευές πρωτ.Κων.Παπαγιάννη

\* η η γ κι στρω με ε ε νοι παι αι αι αι δεσ τυ π ρ

ρα α αν...

\* ο ις ει ει ει ει κα α α α θε π υ υ ρ α π ρ

α σπε ε ε τον τω Δε σπο ο τη η λε γου ου σιν π ρ

εις αι ω ω ω νας ... π ρ

ᾠδὴ ἡ'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου με

εν τον Κυ ρι ι ον π ρ

Μ η η τραν α φλε ε ε κτως ει ει ει κο ο

νι ι ι ζου ουσι ι Κο ο ο ο ο ρης <sup>χ</sup>οι της παλαι  
 αι ας πυ υρ πο ο λου ου ου με ε νοι οι οι νε ε ε  
 ε ε οι <sup>π</sup>υ περ φυ υ ως κυ υ ου ου σα αν ε  
 σφρα α γι ι σμε ε ε νη ην <sup>Δ</sup>αμ φω δε  
 ε δρω ω ω σα α <sup>Δ</sup>θα αυ μα τουρ γι ι ι α α μι  
 ι ι α <sup>π</sup>λα ους προς υ υ υ υ υ μνον ε  
 ε εξ α α νι ι ι ι στη η σι χα α α α α  
 ρι ι ι ις <sup>π</sup>

## Τιμιωτέρα

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

Λουκᾶ κεφ. 1

ἦχος α'

∴ Μεγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἠγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ

σωτήρί μου. 46-47

- ∴ Ὅτι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48
  - ∴ Ὅτι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεάν καὶ γενεάν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50
  - ∴ Ἐποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσκόρπισεν ὑπερηφάνους διανοίᾳ καρδίας αὐτῶν. 51
  - ∴ Καθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξαπέστειλε κενούς. 52-53
  - ∴ Ἀντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55
- Τὴν Τιμιωτέραν τῶν Χερουβὶμ, καὶ ἑνδοξοτέραν ἀσυγκρίτως τῶν Σεραφίμ, τὴν ἀδιαφθόρως Θεὸν Λόγον τεκοῦσαν, τὴν ὄντως Θεοτόκον, σὲ μεγαλύνομεν.**

Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη



## Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου


### Ἦχος ᾠ Πα —

Λουκᾶ κεφ. 1

- ∴ Μεγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἠγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ σωτήρί μου. 46-47
- ∴ Ὅτι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48
- ∴ Ὅτι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ Δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεάν καὶ γενεάν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50
- ∴ Ἐποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσκόρπισεν ὑπερηφάνους διανοίᾳ καρδίας αὐτῶν. 51
- ∴ Καθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξαπέστειλε κενούς. 52-53
- ∴ Ἀντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55

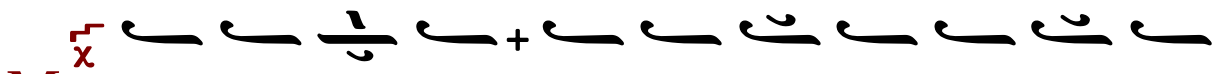


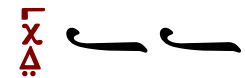





**Τ** ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ  και εν δο  

ξο τε ραν α συγ κρι ι τως των Σε ρα φιμ την α δι  

α φθο ρως Θε ον Λο γον τε κου ου σαν  την ον τως Θε ο  

το κον σε μεγα λυ υ νο ο μεν  π

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη


**Μ** ε γα λυ νει η ψυ χη μου τον Κυ ρι  

ον  και η γαλ λι α σε το πνευ μα μου  ε πι  

τω Θε ω τωσω τη ρι μου 

**Τ**ην τιμιωτεραν των Χερουβιμ και ενδοξο

τεραν ασυγκριτως των Σεραφιμ την αδια

φθορως Θεον Λογον τεκουσαν την οντως Θεο

τοκον σεμεγαλυνοομεν <sup>πρ</sup>

**Ο**τι επεβλεψεν επιτην ταπεινω

σιντης δουλης αυτου ιδου γαρ απο του νυν μακα

ρι ουσι με πασαι αι γενεαι

**Τ**ην τιμιωτεραν των Χερουβιμ και ενδοξο

τεραν ασυγκριτως των Σεραφιμ την αδια

φθορως Θεον Λογον τεκουσαν την οντως Θεο

το κον σε μεγαλυνοομεν π ρ

Ο τι ε ποιησε μοι μεγαλεια ο

δυνατος και αγιοντο ονομα αυτου και το ε

λεος αυτου εις γενεαν και γενεαν τοις φοβου

μενοις αυτον Α

Την τιμιωτεραν των Χερουβιμ και ενδο

ξοτεραν ασυγκριτωσ των Σεραφιμ π ρ την αδι

αφθρωσ Θεον Λογον τεκουσαν Α την οντως Θε

ο κον σε μεγαλυνοομεν π ρ

Ε ποιησε κρατος εν βραχιονι αυ

του δι ε σκορ πι σεν υ περ η φα νους δι α νοι

α καρ δι ας αυ των

Τ ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ και εν δο

ξο τε ραν α συγ κρι ι τως των Σε ρα φιμ την α δι

α φθο ρως Θε ον Λο γον τε κου σαν την ον τως Θε

ο το κον σε μεγα λυ υ νο ο μεν

Κ α θει λε δυ να στας α πο θρο νων και υ ψω σε τα

πει νους πει νων τας εν ε πλη σεν α γα θων και

πλου τουν τας εξ α πε στει λε κε νους

Τ ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ και εν δο

ξο τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ την α δι

α φθο ρως Θε ο ον Λο γον τε κου σαν την ον τως Θε

ο το κον σε μεγα λυ υ νο ο μεν

Α ν τε λα βε το Ισ ρα ηλ παι δος αυ του μνη

σθη ναι ε λε ους κα θως ε λα λη σε προς τους πα

τε ρας η μων τω Α βρα αμ και τω σπερ μα τι αυ

του ε ως αι ω νος

Τ ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ και εν δο

ξο τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ την α δι

α φθο ρως Θε ο ον Λο γον τε κου σαν την ον τως Θε

ο το κον σε μεγα λυ υ νο ο μεν π 9

## Καταβασία θ' φδῆς

ἦχος α'

Μεγάλυνον ψυχῆ μου, τὴν τιμιωτέραν, καὶ ἐνδοξοτέραν τῶν ἄνω στρατευμάτων.

Στέργειν μὲν ἡμᾶς, ὡς ἀκίνδυνον φόβῳ, ῥᾶον σιωπῆν, τῷ πόθῳ δὲ Παρθένε, ὕμνους ὑφαίνειν, συντόνως τεθηγμένους, ἐργῶδές ἐστιν, ἀλλὰ καὶ Μήτηρ σθένος, ὅση πέφυκεν ἢ προαίρεσις δίδου».

Αργή

Σύντομος

Πέτρου Λαμπαδαρίου

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

## Σύντομος

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

φδῆ θ'

ἦχος 4 Πα

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.266#

Μ ε γ α λ υ ν ο ν ψ υ χ η η μ ο υ ο υ τ η ν τ ι μ ι ω τ ε ε

ρ α ν κ α ι ε ν δ ο ξ ο τ ε ε ρ α ν τ ω ν α ν ω σ τ ρ α τ ε υ μ α α

των π 9

Σ τ ε ρ γ ε ι ν μ ε ν η μ α α σ ω σ α κ ι ν δ υ ν ο ν φ ο ο β ω ρ α ο ν

σι ω πην τω πο θω δε Παρ θε νε υ μνους υ φαι νειν συν

το νως τε θη γμε ε νους ερ γω ω δεσ ε στιναλ λα και μη

τηρ σθε ε νος <sup>π ρ</sup> ο ση πε φυ κεν η προ αι ρε σις δι ι δου

ου ου <sup>π ρ</sup>

### Ἄρχή

### Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

ῥδὴ θ'

### Ἦχος ᾠ Πα

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.15#

**Μ** ε γα α λυ νο ον ψυ υ υ χη η η μου ου ου ου

τη ην τι μι ι ω ω τε ε ε ραν <sup>Δ</sup> και

αι ε εν δο ο ξο ο τε ε ε ε ραν τω ων α α νω

στρα α α τευ μα α α α των <sup>π ρ</sup>

Ϟ τε ερ γειν με εν η η η μα ας ω ως α α

κι ιν δυ υ νο ον φο ο ο βω ρα ον σι ω πη η

τω ω ω πο ο θω δε ε Παρ θε ε ε ε ε νε υ

μνους υ φαι αι αι αι νει ει ν συ υ υ υν το ο νως τε

ε θει ει γμε ε ε νουους ερ γω ω ω ω

δε ες ε ε ε σιν α α αλ λα α και Μη η

τηρ σθε ε ε ε ε νος ο ο ο ο ο ο ση η

η η η πε φη η κε ε ε ε ε ε εν η η προ ο

αι αι αι ρε ε σις δι ι ι ι ι ι δου ου ου

Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου



**Μ** ε γ α α λ υ ν ο ο ν ψ υ υ χ η η η μ ο υ ο υ

ο υ ο υ τ η η ν τ ι μ ι ι ω ω τ ε ε ε ρ α ν

κ αι αι ε εν δ ο ο ξ ο ο τ ε ε ε ε ρ α ν τ ω ω ν α α

ν ω σ τ ρ α α α τ ε υ μ α α α α τ ω ν

**Σ** τ ε ρ γ ε ι ν μ ε εν η η η μ α α σ ω ω σ α α

κ ι ι ν δ υ υ ν ο ο ν φ ο ο ο β ω ρ α ο ν σ ι ω π η η ν

τ ω π ο ο θ ω δ ε ε Πα ρ θ ε ε ε ε ν ε υ μ ν ο υ σ υ

φ αι αι αι αι ν ει ει ν σ υ υ ν τ ο ο ν ω σ τ ε ε θ η

η γ μ ε ε ε ν ο υ ο υ σ ε ρ γ ω ω ω ω δ ε ε σ ε

ε ε στιν αλ λα α και Μη η τηρ σθε ε ε ε

νος ο ο ο ο ο ο ση η η η η πε φυ υ κε ε

ε ε ε ε εν η η προ ο αι αι αι ρε ε

σις δι ι ι ι δου ου ου ου

Ἀλλη πρωτ. Κων. Παπαγιάννη κατ' ἔννοιαν τονιστεῖσα

**C** τε ερ γει ει ειιν με εν η η μας ως α κι ιν δυ υ υ

νον φο ο ο βω ω ρα α ο ον σι ω ω πη

ην τω πο θω ω δε Πα αρ θε ε ε νε υ

μνου ους υ υ φαι αι νειν συν το νως τε θη η γμε ε ε

νου ους ερ γω ω ω ω δε ες ε ε ε στιν

αλ λα και Μη η η τηρ σθε ε ε νος ο ση πε ε

ϕυ υ κεν η η προ αι αι αι ρε ε σις δι ι δου

ου ου π ρ

Πεζαὶ καὶ ἱαμβικαὶ  
1, 6, 14 Ἰανουαρίου

## ἤχος β'

α **Β**υθοῦ ἀνεκάλυψε πυθμένα, καὶ διὰ ξηρᾶς οἰκείους ἔλκει, ἐν αὐτῷ κατακαλύψας ἀντιπάλους, ὁ κραταιός, ἐν πολέμοις Κύριος, ὅτι δεδόξασται.

**Σ**τείβει θαλάσσης, κυματούμενον σάλον, ἡπειρον αὔθις, Ἰσραὴλ δεδειγμένον. Μέλας δὲ πόντος, τριστάτας Αἰγυπτίων, ἔκρυψεν ἄρδην, ὕδατόστρωτος τάφος, Ῥώμη κραταιᾶ, δεξιᾶς τοῦ Δεσπότη.

γ **Ἰ**σχὺν ὁ διδούς, τοῖς βασιλεῦσιν ἡμῶν Κύριος, καὶ κέρας χρηστῶν αὐτοῦ ὑψῶν, Παρθένου ἀποτίκτεται, μολεῖ δὲ πρὸς τὸ βάπτισμα· διὸ πιστοὶ βοήσωμεν· οὐκ ἔστιν ἅγιος, ὡς ὁ Θεὸς ἡμῶν, καὶ οὐκ ἔστι δίκαιος, πλὴν σου Κύριε.

**Ἦ**σοι παλαιῶν, ἐκλελύμεθα βρόχων, βορῶν λεόντων, συντεθλασμένων μύλας, ἀγαλλιῶμεν, καὶ πλατύνωμεν στόμα, λόγῳ πλέκοντες, ἐκ λόγων μελωδίαν, ὧ τῶν πρὸς ἡμᾶς, ἡδεταὶ δωρημάτων.

δ **Ἀ**κήκοε Κύριε φωνῆς σου, ὃν εἶπας· φωνὴ βοῶντος ἐν ἐρήμῳ ὅτε ἐβρόντησας πολλῶν ἐπὶ ὑδάτων, τῷ σῶ μαρτυρούμενος Ἰῶν, ὅλος γεγονώς τοῦ παρόντος, Πνεύματος δὲ ἐβόησε· σὺ εἶ Χριστός, Θεοῦ σοφία καὶ δύναμις.

**Π**υρσῶ καθαρθεὶς μυστικῆς θεωρίας, ὑμῶν προφήτης τὴν βροτῶν καινουργίαν, ῥήγνυσι γῆρυν, Πνεύματι κροτουμένην, σάρκωσιν ἐμφαίνουσαν ἀρρήτου Λόγου, ὧ τῶν δυναστῶν τὰ κράτη συνετρίβη.

ε **Ἰ**ησοῦς ὁ ζωῆς ἀρχηγός, λῦσαι τὸ κατάκριμα ἥκει, Ἀδὰμ τοῦ πρωτοπλάστου καθαρσίων δέ, ὡς Θεὸς μὴ δεόμενος, τῷ πεσόντι καθαίρεται ἐν τῷ Ἰορδάνῃ· ἐν ᾧ τὴν ἔχθραν κτείνας, ὑπερέχουσαν πάντα νοῦν, εἰρήνην χαρίζεται.

**Ἐ**χθροῦ ζοφώδους καὶ βεβορβορωμένου, ἰὸν καθάρσει Πνεύματος λελουμένοι, νέαν προσωμίσημεν ἀπλανῆ τρίβον, ἄγουσαν ἀπρόσιτον εἰς θυμηδίαν, μόνοις προσιτήν, οἷς Θεὸς κατηλλάγη.

ς **Ἡ** φωνὴ τοῦ Λόγου, ὁ λύχνος τοῦ φωτός, ὁ ἑωσφόρος, ὁ τοῦ ἡλίου Πρόδρομος, ἐν τῇ ἐρήμῳ. Μετανοεῖτε, πᾶσι βοᾶ τοῖς λαοῖς, καὶ προκαθαίρεσθε· ἰδοὺ γὰρ πάρεστι Χριστός, ἐκ φθορᾶς τὸν κόσμον λυτρούμενος.

Ἰμερτὸν ἐξέφηνε σὺν πανολβίῳ, ἤχῳ Πατῆρ, ὃν γαστρὸς ἐξηρεύξατο. Ναί φησιν, οὔτος, συμφυῆς γόνος πέλων, φώταυγος ἐξώρουσεν ἀνθρώπων γένους, Λόγος τέ μου ζῶν, καὶ βροτὸς προμηθεία.

ζ **Ν**έους εὐσεβεῖς, καμίνῳ πυρὸς προσομιλήσαντας, διασυρίζον πνεῦμα δρόσου, ἀβλαβεῖς διεφύλαξε, καὶ θείου ἀγγέλου συγκατάβασις· ὅθεν ἐν φλογὶ δροσιζόμενοι, εὐχαρίστως ἀνέμελπον· ὑπερύμνητε, ὁ τῶν πατέρων Κύριος, καὶ Θεὸς εὐλογητὸς εἶ.

ῥ **Ε**φλέξε ρείθρῳ τῶν δρακόντων τὰς κάρας, ὁ τῆς καμίνου τὴν μετάρσιον φλόγα, νέους φέρουσιν εὐσεβεῖς κατευνάσας, τὴν δυσκάθεκτον ἀγλὺν ἐξ ἁμαρτίας, ὅλην πλύνει δέ, τῇ δρόσῳ τοῦ Πνεύματος.

Αἰνοῦμεν, εὐλογοῦμεν καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον.

η **Μ**υστήριον παράδοξον, ἡ Βαβυλῶνος ἔδειξε κάμιнос, πηγάσασα δρόσον, ὅτι ρείθροις ἔμελλεν, ἄυλον πῦρ εἰσδέχασθαι ὁ Ἰορδάνης, καὶ στέγειν σαρκί, βαπτιζόμενον τὸν κτίστην, ὃν εὐλογοῦσι λαοί, καὶ ὑπερυψοῦσιν, εἰς πάντας τοὺς αἰῶνας.

ῥ **Ε**λευθέρα μὲν ἡ κτίσις γνωρίζεται. Ἰῶι δὲ φωτὸς, οἱ πρὶν ἐσκοτισμένοι. Μόνος στενάξει, τοῦ σκότους ὁ προστάτης. Νῦν εὐλογεῖτω συντόνως τὸν αἴτιον, ἡ πρὶν τάλαινα τῶν ἔθνῶν παγκληρία.

Αργαί

Πέτρου Λαμπαδαρίου

Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Παπαγιάννη)

Σύντομοι

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου


## Σύντομοι

### Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Καταβασίαι τῶν Θεοφανείων  
ὥδ᾽ α'

Ἦχος  Πά

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρημολόγιον 1903 σ.267#

**Β**  **υ** **θ** **ο** **υ** **α** **ν** **ε** **κ** **α** **λ** **υ** **φ** **ε** **π** **υ** **θ** **μ** **ε** **ν** **α** **κ** **α** **ι** **δ** **ι** **α** **ξ** **η**

υ ρ α ς ο ι κ ε ι ε ι ο υ ς ε λ κ ε ι ε ν α υ τ ω κ α τ α κ α λ υ ψ α ς

α ν τ ι π α λ ο υ ς ο κ ρ α τ α ι ο ς ε ν π ο λ ε μ ο ι ς Κ υ ρ ι ο ς

ο ο τ ι δ ε δ ο ξ α σ τ α ι

ᾠδὴ ἀΐαμβική

Ἦχος ΒΨ

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Ειρημολόγιον 1903 σ.268#

τ ι β ε ι θ α λ α σ σ η ς κ υ μ α τ ο υ μ ε ν ο ν σ α α λ ο ν η π ε ι

ρ ο ν α υ θ ι ς Ι σ ρ α η λ δ ε δ ε ι γ μ ε ν ο ν μ ε λ α ς δ ε π ο

ο ν τ ο ς τ ρ ι σ τ α τ α ς Α ι γ υ π τ ι ι ω ν ε κ ρ υ ψ ε ν α ρ

δ η η ν υ δ α τ ο σ τ ρ ω τ ο ς τ α α φ ο ς ρ ω μ η κ ρ α τ α ι α δ ε

ξ ι α ς τ ο υ ο υ Δ ε σ π ο τ ο υ

ᾠδὴ γ'

Ἦχος Πα

σχυν ο διδους τοις βασιλευσιν ημων Κυριος

και κεραιστων αυτου υψων Παρθενου ααπο τι κτε

ται μο λει δε προς το βαπτισμα διοπιστοι βοη

σωμεν ουκ εστιν αγιος ο Θεος ημων και ουκ

εστι και ος πλην σου Κυριε

ᾠδὴ γ' ἱαμβική

Ἦχος Βϛ

σοι παλαιων εκλελυμεθα βροχων βο

ρων λεοντων συντεθλασμενων μυυλας αγαλλι

ωωμεν και πλατυνωμεν στομα Λογωπλε

κοντες εκλογων μελωδιων προς ημας χορός α' η δε

ται δω ω ρη μα των <sup>ϛ</sup>

ᾠδὴ δ'

Ἦχος Πά

**Α** κη κο α Κυ ρι ε φωνη ης σου ον ει πας φω νη

βο ων τος ε εν ε ρη μω <sup>π</sup> ο τε ε βρον τη σας πολ λων

ε πι υ δα των τω σω μαρ τυ ρου μενος Υι ω ο λος γε

γο νως του πα ρον τος Πνευ μα τος δε ε ε βο η σε <sup>π</sup> συ ει

Χρι στος Θε ου σο φι ι α και δυ να μις <sup>π</sup>

ᾠδὴ δ' ἱαμβική

Ἦχος Ββ

**Π** υρ σω καθ αρ θεις μυστι κης θε ω ρι ι ας <sup>Δ</sup> υ

μνων προ φη της την βρο των και νουρ γι ι αν <sup>ϛ</sup> ρη γνου σι



γῆ ἡ ρυν Πνευματικῶν τοῦ μετενέμεν σαρκῶ

σιν ἐμφανισαμένη τοῦ Λόγου ὡς τῶν δυνά

στων χορὸς β' τακτικῶν ἐπιβή

ὡδὴ ε'

Ἦχος Πά

ἡ σὺς ὁ ζωηρὸς ἀρχηγὸς λύσαι τὰ κα

τὰ κρίμα ἡ κεί Αδὰμ τοῦ πρωτοπλαστοῦ κατὰ

σίων δὲ ὡς Θεοσμηδέομενος τῶ πεσον

τὴ κατὰ ῥεταί ἐν τῷ Ἰορδάνῃ ἐν ὧ τὴν ἐ

χθρὰν κτείνει ἐνάς ὑπερέχουσαν πάντων ἐ

ρηνηνχαρίζεται

Ἦχος Βϛ

Ε χθρου ζο φω δους και βε βορ βο ρω με ε νου ι  
 ον κα θαρ σει Πνευ μα τος λε λου με ε νοι νε αν προ  
 σαρ μι σθη μεν α πλα νη τρι ι βον α γου σαν α  
 προ σι τον εις θυ μη δι αν μο νοις προ σι την *χορὸς α'*  
 οις Θε ος κα τηλ λα γη

Ἦχος Πα

Η φω νη του Λο ο γου ο λυ χνος του φω τος ο  
 ε ω σφο ρος ο του Η λι ου προ δρο μος εν τη ε ρη  
 μω με τα νο ει τε πα σι βο α α τοις λα οις και

προ ο κα θαι ρε σθε ι δου γαρ παρ ε στι Χρι στος εκ

φθο ρας τον κο ο σμον λυ τρου μενος

ᾠδὴ ε' Ἰαμβική

Ἦχος Βϛ

μερ τον εξ ε φη νε συν παν ολ βι ι ω η

χω Πα τηρ ον γα στρο ο ος ε ξη ρευ ξα το ναι φησιν

ου ου τος συμ φυ ης γο νος πε ε λων φω ται

γος ε ξω ρου σεν αν θρω πων γε νους Λο γος τε μου

ζων χορὸς θ' και βρο τος προ ο μη θει α

ᾠδὴ ε'

Ἦχος Πα

Ν ε ους ευ σε βεις κα μι ι νου πυ ρος προσ ο ο μι λη

σαν τας δι α συ ρι ζον Πνευ μα δρο σου α βλα βεις δι ε

φυ λα ξε και θει ει ου Αγ γε λου συυγ κα τα βα σις

ο θεν εν φλο γι δρο σι ζο ο μενοι ευ χα ρι ι στως

ως αν ε μελ πον υ περ υ μνη τε ο των πα τερων Κυ ρι

ος και Θε ος ευ λο γητος ει

ᾠδὴ ζ΄ ἱαμβική

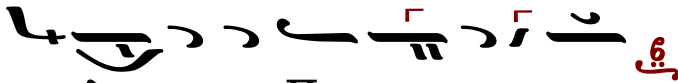
Ἦχος Β΄

Ε φλε ξε ρει θρω των δρα κον των τας κα α ρας ο

της κα μι ι ι νου την με ταρ σι ον φλο ο ο γα νε ους

φε ρου σαν ευ σε βεις κα τευ να α σας την δυσ κα θε

κτον α χλυν εξ α μαρ τι ι ι ας ο λην πλυ νει δε χορὸς α΄



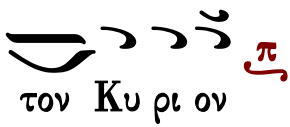
τη δρο σωτου Πνε ευ μαα τος

ὠδὴ γ'

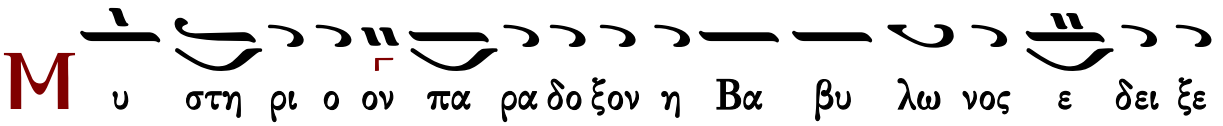
Ἦχος Πά



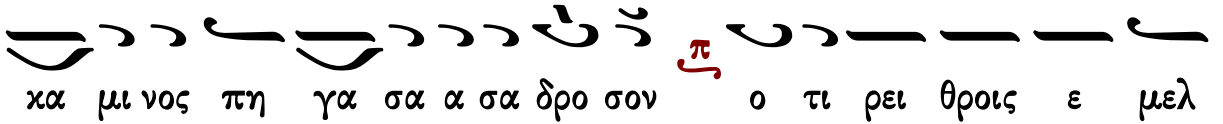
Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ σχυ νου ου με εν



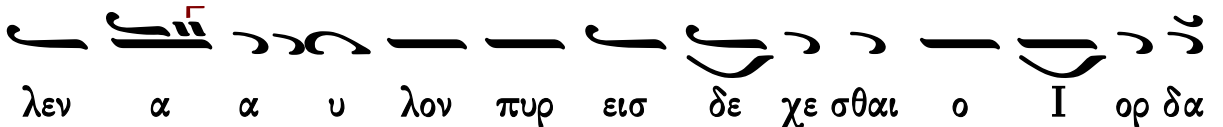
τον Κυ ρι ον



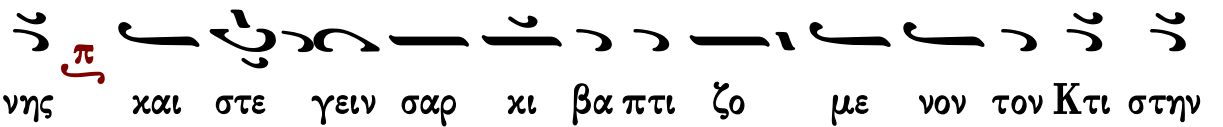
Μ υ στη ρι ο ον πα ρα δο ξον η Βα βυ λω νος ε δει ξε



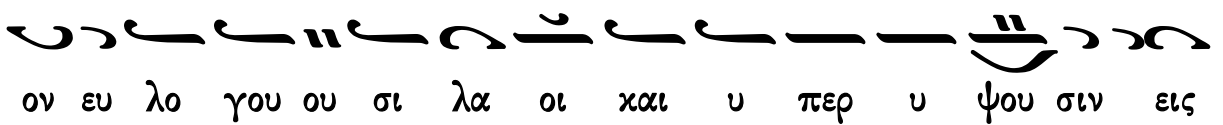
κα μι νος πη γα σα α σα δρο σον ο τι ρει θροις ε μελ



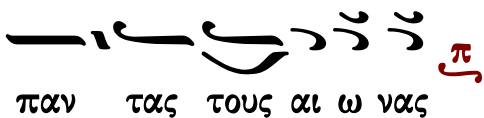
λεν α α υ λον πυρ εις δε χε σθαι ο Ι ορ δα



νης και στε γειν σαρ κι βα πτι ζο με νον τον Κτι στην



ον ευ λο γου ου σι λα οι και υ περ υ ψου σιν εις



παν τας τους αι ω νας

Ελευθεραμενη κτιιι σις γνωριζεται υι  
 οι δε φωτος οι πριν εσκοτισμε ενοι μονος  
 στε να ζει του σκοτους ο προστααα της νυν ευλογει  
 τω συν το ο ο νως τον αιτιον η πριν ταλαινα  
 των εθνων πααγκληρι ιααααα

Αργαί

Πέτρου Λαμπαδαρίου<sup>10</sup>

Βυυυ υυθου ου ου ου α νε κα αααλυ

10 Εἰς τὰς καταβασίας ταύτας ἐπεφέραμεν ἐλαφρὰς τινὰς μεταβολὰς πρὸς ἀποφυγὴν παρατονισμῶν καὶ ἀστόχου χωρισμοῦ λέξεων.

υ ψε πυ θμε ε ε ε ε ε να α α α και

δι ι α ξη η ρα ας οι χει ει ους ε ε ε ε ελ χει ει

εν αυ τω ω κα τα κα α λυ υ υ ψα ας α αν

τι πα α α α λους ο κρα ται αι αι ο ο ο ο ο

ος εν πο λε ε μοις Κυ υ ρι ι ος ο ο ο ο

τι δε ε δο ο ο ο ο ο ο ο ο ξα σται

**C** τει βει θα λα α ασ ση η η ης κυ υ υ μα α του

ου με ε ε νον σα α α α α λο ον η η πει

ει ρο ον α α αυ θι ι ι ις Ι ισ ρα α η ηλ δε ε ε

δει ει γμε ε ε ε ε νον με ε λα ας δε πο ο

ον το ο ο ο ο ος τρι στα ταας Αι αι αι γυ υ

πτι ι ι ι ι ω ων ε κρυ υ ψε εν α α αρ δη η

η ην υ υ δα α το ο στρω ω ω το ος τα α α

α α φος ρω ω ω ω ω ω ω μη η η η κρα

ται αι α α α δε ξι ας του ου ου ου ου Δε ε

σπο ο ο του

Ῥδὴ γ'

Ἦχος Πα

πρωτ. Κων. Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.121\*

σχυ υ υ υν ο ο ο δι ι δους τοις βα σι

λε ευ σι ιν η η μων Κυ ρι ο ος και αι κε ε ρας χρι



στων α αυτου υ υ ψων Παρ θε ε νου ου α α πο τι χτε

ται αι μο λει δε προς το ο βα πτι ι σμα δι ο πι στοι

οι βο η ησω με ε ε ε ε ε ε ε ε εν

ουκ ε ε στιν α γι ι ος ω ω ωως ο ο Θε

ος η η μων και ουκ ε ε στι δι ι και αι ο ο

ος πλη ην σου Κυ υ ρι ι ι ε

Ο σοι οι οι οι πα λαι αι ω ω ωων ε ε εκ λε ε

λυ υ με ε ε θα βρο ο ο ο ο χω ων βο ρω

ω ων λε ε ο ο ον τω ω ων συν τε ε θα α σμε ε ε

νω ων μυ υ υ υ υ λας α γαλ λι ω ω ω ω

με ε ε ε ε ε εν και αι αι πλα α τυ υ νω ω ω

μεν στο ο ο ο ο μα α λο ο γω ω πλε ε κο

οον τε ες εκ λο ο ο γων με ε λω ω ω δι ι ι ι

ι ι αν ω ω ω ω ω ω ω τω ω ω ων

προς η η μα ας χορός α' η η δε ε ται δω ω ω ω

ω ρη η μα α α των

ᾠδὴ δ'

Ἦχος Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.122\*

α κη κο ο ε Κυ ρι ι ε φω ω νη η η

η ης σου ον ει ει ει ει ει πας φω νη βο ω ων

το ος ε ε εν τη η η ε ρη η η μω ο τε

ε βρο ον τη η η σας πολ λω ω ων ε ε πι ι

υ δα α α α α των τω σω ω ω μα αρ τυ υ υ

ρου με ε νο ος Υι υι υι ω ο ο λος γε γο ο

νωσ του πα ρο ον το ος Πνε ευ μα το ο ος δε ε

ε βο η σε ε συ ει Χρι ι στος Θε ου ου σο φι ι ι

ι α α και αι αι αι δυ υ να α α μιν

Π υρ σω ω κα α θα αρ θει ει ει εις μυ υ υ στι ι

κη ης θε ε ε ω ω ρι ι ι ι ι α ας υ

μνω ω ων προ ο φη η η τη η η ης τη η ην βρο ο

των και αι νου ου ουρ γι ι ι ι αν ρη γυσι γη

η η ρυ υ υ υ υν Πνευ μα α τι κρο ο ο του

με ε ε ε ε νη ην σαρ κω σι ι ιν ε εμ

φαι νου ου ου σα αν α α αρ ρη η η του ου Λο

ο ο γου ω ω ω ω ω ω ω ω τω ω ωων

δυ να αστω ων χορός θ' τα κρα α τη συ υ υ

υν ε ε τρι ι ι βη

ᾠδὴ ε'

Ἦχος Πά

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηολόγιον  
2007 σ.124\*

η σους ο ζω η η η ης αρ χη η γος λυ υ

σαι αι το κα α τα κρι μα η η η κει Α α δα α αμ

του ου πρω ω το πλα α α α α στου κα θαρ σι ω ων

δε ως Θε ο ο ο ος μη η δε ο ο με ε ε νος

τω πε σο ο ον τι κα θαι ρε ε ται αι αι αι ε ε

εν τω ω Ι ι ορ δα α α α α νη εν ω την ε

χθρα αν κτει ει ει νας υ περ ε ε ε ε χου ου σαν

παν τα α νουν ει ρη η η η νη ην χα α ρι ι ι

ι ι ι ι ι ζε ται

**Ε** χθρου ου ζο ο φω ω ω δου ου ους και βε ε βο ορ

βο ο ο ρω με ε ε ε ε νου ου ι ο

ο ον κα α θα αρ σει Πνευ μα α τος λε ε ε

λου ου με ε ε ε ε νοι νε α αν προ οσ ωρ

μι ι σθη η η μεν α πλα νη τρι ι ι ι

ι βο ον α γου σα α αν α α προσ ι το ον

ει ει εις θυ υ υ μη η δι ι ι αν μο ο

ο ο ο ο ο νοι οι οι οισ προσ ι ι τη η ην

χορος α' οι οισ Θε ε ος κα α α α α τη ηλ λα

α α γη

ᾠδὴς'

Ἦχος Πά

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.125\*

Η<sup>χ</sup> φω νη του Λο ο ο ο γου ου ο λυ

υ χνος του φω ω το ο ος ο ε ως φο ο ο ο

ρος ο του Η λι ι ουου ου Προδρο ο μο ος ε ε

εν τη η η ε ρη η η μω με τα νο ει τε

πα α α α σι βο ο α τοις λα οι οισ και αι προ ο

κα θαι ρε σθε ε ι δου ου γαρ πα α ρε στι

Χρι ι στος εκ φθο ρα ας τον κο ο ο σμο ον λυ τρου με

νο ος

<sup>6</sup> μερ το ο ον ε εξ ε φη νε ε συ υ υν πα

α ανολ βι ι ι ω η χω ω Πα α α τηρ ον

γα στρο ο ο ος ε εξ η η η ρε ευ ξα α α

το ναι φησιν ου ουου το ο ο ο ο ο ος συ υ υμ

φυ υ ης γο νο ος πε ε ε ε ε λω ων φω ται

γο ο ος ε εξ ω ρου σε εν α α αν θρω ω ω πω ων

γε ε ε νους Λο ο ο ο ο ο ο ο γο ο

ο ος τε μου ου ζω ων χορός θ' και βρο τος προ ο ο ο

ο μη η θει ει ει α

ᾠδὴ ζ'

Ἦχος Πά

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηρολόγιον  
2007 σ.127\*

**N** ε ε ους ευ σε ε βεις κα μι ι ι νω πυ



ρο ος προσ ο ο μι λησαν τα ας δι α συ ρι

ι ι ζο ο ο ον πνευ μα δρο σου ου α βλα βει ει ει εις

δι ι ε φυλα ξε ε καθ θει ου α αγ γε ε ε λου ου

συγ κα τα α βαα σις ο ο θεν εν φλο ο γι δρο

σι ζο ο με ε νοι ευ χα ρι ι ι ι στω ως α νε μελ

πο ον υ περ υ μνη η τε ο των πα τε ε ρων

Κυ ρι ι ος και Θε ο ος ευ λο ο γη το ο ο ο

ος ει

Ϸ φλε ξε ρει ει ει θρω ω ω ω τω ωων δρα α

κο ον τω ω ων τας κα α α α α ρα ας ο της κα

μι ι ι νου ου ουου τη η ην με ε ταρ σι ι ι ο ον

φλο ο ο ο ο γα νε ε ου ους φε ρου

ου ου σα α α αν ε ε ευ σε ε βει εις κα α α τευ

να α α α α σα ας τη ην δυ υσ κα α θε ε κτο

ον α χλυν ε εξ α α α μα αρ τι ι ι ι ι

ας ο ο ο ο λη η η ην πλυ υ νει ει ει

δε ε ε χορός α' τη η δρο σω του Πνε ε ε ευ μα

α α το ος

ᾠδὴ η'

Ἦχος Πά

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηρολόγιον  
2007 σ.128\*

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου ου ου

ου με εν τον Κυ ρι ο ον

Μ υ στη η ρι ι ο ον πα ρα δο ξο ον η Βα βυ

λω νο ο ος ε δει ξε ε ε κα μι ι νος πη γα σα α

α σα δρο ο ο σον ο ο τι ρει θροι οις ε με ελ

λεν α α α υ λο ον πυρ εις δε χε ε σθαι αι

αι ο ο Ι ι ορ δα α α α νης και στε ε

ε γει ει ει ν σα αρ κι βα πτι ι ζο ο ο με ε νο

ον τον κτι ι ι ι στην ον ευ λο γου ου ου σι λα α

οι και υ περ υ υ ψου ου ου ου σιν ει εις πα αν

τας του ους αι ω ω ω ω νας

τας του ους αι ω ω ω ω νας

λευ θε ρα α α μεν η κτι ι σις γνω

λευ θε ρα α α μεν η κτι ι σις γνω

ω ω ρι ι ζε ε ε ε ται υι οι οι δε ε

ω ω ρι ι ζε ε ε ε ται υι οι οι δε ε

φω ω το ος οι πριν ε ε σχο ο ο τι σμε ε ε ε ε

φω ω το ος οι πριν ε ε σχο ο ο τι σμε ε ε ε ε

νοι οι μο νο ος στε ε να α α ζει ει ει του σχο

νοι οι μο νο ος στε ε να α α ζει ει ει του σχο

του ους ο ο ο προ ο στα α α α α της νυν

του ους ο ο ο προ ο στα α α α α της νυν

ε ε ευ λο ο γει ει ει τω συν το ο νως τον αι αι

ε ε ευ λο ο γει ει ει τω συν το ο νως τον αι αι

αι τι ι ι ι ον η περι ι ι ι ι ι ν τα

αι τι ι ι ι ον η περι ι ι ι ι ι ν τα

α λαι αι αι να α α των ε θνων πα α α α

α λαι αι αι να α α των ε θνων πα α α α

α γ κλη η ρι ι ι α α α α α α

α γ κλη η ρι ι ι α α α α α α

Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Παπαγιάννη)<sup>11</sup>

Καταβασίαι τῶν Θεοφανείων  
ὠδὴ α'

Ἦχος Πά

πρωτ. Κων. Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.119\*

**B** <sup>χ</sup> υ θου ου α νε κα λυ ψε ε πυ θμε ε ε ε

<sup>φ</sup> <sup>π</sup> να και δι α ξη ρα ας οι οι οι κει ει ει ους ε

<sup>φ</sup> <sup>π</sup> ε ελ κει εν α αυ τω κα τα κα λυ υ ψα ας α αν

<sup>π</sup> τι πα α α α λους ο κρα ται αι αι ος εν πο

<sup>α</sup> <sup>σ</sup> <sup>Δ</sup> λε ε μοι οις Κυ ρι ι ος ο ο ο τι ι δε δο ο ξα

<sup>φ</sup> <sup>π</sup> σται αι

**C** <sup>z</sup> τει βει θα λα α ασ ση ης κυ μα του ου με ε

<sup>π</sup> ε νον σα α α α α λο ον η η πει ει ρο

<sup>11</sup> Εἰς τὰς καταβασίας ταύτας ἐπεφέραμεν οὐσιαστικωτέρας διορθώσεις πρὸς καλυτέραν ἀπόδοσιν τοῦ νοήματος καὶ σύντημσιν μουσικῶν τινῶν γραμμῶν.  
Γερασμὸς Μοναχὸς Ἁγιορείτης 14 Μαρτίου 2024 Λουκάς Λουκά

ον α α αυ θι ις Ισ ρα η ηλ δε ε ε δει ει γμε ε

ε ε ε νον με ε λα ας δε πο ο ο ο ον

το ος τρι στα τα ας Αι αι αι γυ υ πτι ι ι ι

ι ω ων ε κρυ υ ψε εν α α αρ δη ην υ δα το

ο στρω ω ω το ος τα α α α α φος ρω ω μη

η κρα ται αι α α δε ξι ας του ου ου ου ου Δε ε

σπο ο ο του

ῥοδὴ γ'

Ἦχος Πά

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηθολόγιον  
2007 σ.121\*

σχυ υ υ υν ο ο ο δι ι δους τοις βα σι λευ

σιν η μω ω ωων Κυ υ ρι ι ι ος και αι

κε ε ρας χρι στων α αυτου υ υ ψων Παρ θε ε νου ου

α α πο τι κτε ται αι μο λει δε προς το ο βα πτι ι σμα

δι ο πι στοι οι βο η ησω με ε ε ε ε ε ε

ε ε ε εν ουκ ε ε στιν α γι ι ος ως ο

Θε ο ο ος η η μων και ουκ ε η ε στι δι ι

και αι ο ο ος πλη ην σου Κυ υ ρι ι ι ε

**Ο** σοι οι πα λαι αι ων εκ λε λυ υ με ε ε θα βρο

ο ο ο ο χων βο ρω ω ων λε ε ο ο ον

των συν τε θλα σμε ε ε νω ων μυ υ υ υ υ

λας α γαλ λι ω ω ω μεν και πλα τυ υ νω ω

ω μεν στο ο ο ο ο μα α λο ο γω ω πλε ε κο ον

τες εκ λο ο ο γων με ε λω ω ω δι ι ι ι

ι ι αν ω των προς η η μα ας χορὸς α' η η

δε ε ται δω ω ω ω ω ρη η μα α α των

Ὠδὴ δ'

Ἦχος Πά

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηρολόγιον  
2007 σ.122\*

α κη κο ο ε Κυ ρι ι ε φω ω νη η η

η ης σου ον ει ει ει ει ει πας φω νη βο ω ων

το ος ε ε εν τη η η ε ρη η η μω ο τε



ε βρο ον τη η η σας πο ολ λω ω ων ε ε πι ι

υ δα α α α α των τω σω ω ω ω μα αρ τυ υ υ

ρου με ε νο ος Υι υι υι ω ο ο λος γε γο ο

νωσ του πα ρο ον το ος Πνε ευ μα το ο ος δε ε

ε βο η σε ε συ ει Χρι ι στος Θε ου ου σο φι ι ι

ι α α και αι αι αι δυ υ να α α μιν

Π υρ σω ω κα α θα αρ θει ει ει εις μυ υ υ στι ι

κη ης θε ε ε ω ω ρι ι ι ι ι α ας υ

μνω ω ων προ ο φη η η τη η η ης τη η ην βρο ο

των και αι νου ου ουρ γι ι ι ι αν ρη γνυ υ



ω το πλα α α α α στου κα θαρ σι ω ω ν δε ως Θε

ο ο ο ος μη η δε ο ο με ε ε νος τω πε

σο ο ο ν τι κα θαι ρε ε ται αι αι αι ε ε εν τω ω

Ι ι ορ δα α α α α νη εν ω την ε χθρα αν κτει

ει ει νας υ περ ε χου σαν παν τα α νουν ει ρη η η

η η η νην χα ρι ι ι ι ζε ε ε ε ε ται

**Ε**<sup>6</sup> χθρου ου ζο ο φω ω ω δους και βε βορ βο ρω με

ε νου ου ι ι ι ον κα θαρ σει Πνευ μα α τος

λε ε ε λου ου με ε ε ε ε νοι νε α αν

προ οσ ωρ μι ι σθη η η μεν α πλα νη τρι

ι ι ι ι βο ον α γου σαν α προσ ι ι το ον

ει ει εις θυ υ υ μη η δι ι ι αν μο ο

ο ο ο ο ο νοι οι οι οισ προσ ι ι τη η ην

χορὸς αἰ οι οισ Θε ε ος κα α α α α τη ηλ λα

α α γη

ᾠδὴς'

Ἦχος Πά

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.125\*

Η φω νη του Λο ο ο ο γου ου ο λυ

υ χνος του φω ω το ο ος ο ε ωσ φο ο ο ο

ρος ο του Η λι ι ουου ου Προδρο ομο ος ε ε

εν τη η η ε ρη η η μω με τα νο ει ει ει

ει τε πασι βο α α α α τοις λα α οις και προ

κα θαι αι αι ρε ε ε ε σθε ι δου ου γαρ πα ρε ε

στι ι ι Χρι ι στος εκ φθο ρα ας τον κο ο ο σμο ον

λυ τρου με νο ος

6  
μερ το ο ον ε εξ ε φη νε συν παν ολ βι ι ι

ω ω η χω ω Πα α α τηρ ον γαστρο ο ο ος

ε εξ η η η ρε ευ ξα α α το ναι φη σι

ιν ου ου τος συμ φυ η ης γο νο ος πε ε ε ε ε

λω ων φω ταυ γο ο ος ε εξ ω ρου σε εν

α α αν θρω ω ω πω ων γε ε ε νους Δο ο

ο ο ο ο ο ο γο ο ο ος τε μου ου ζω ων

χορός 6' και βρο τος προ ο ο ο ο μη η θει ει ει α

ᾠδὴ ζ'

Ἦχος Πά

πρωτ. Κων. Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηολόγιον  
2007 σ.127\*

Ν ε ε ους ευ σε ε βεις κα μι ι ι νω πυ

ρο ος προσ ο ο μι λησαν τα ας δι α συ ρι

ι ι ι ι ζον πνευ μα δρο ο ο σου α βλα βει ει ει εις

δι ι ε φυλα ξε ε και θει ου α αγ γε ε ε λου συγ

κα α τα βα α σι ις ο ο θεν εν φλο ο γι δρο

— σι ζο ο με ε νοι ευ χα ρι ι ι ι στω ως α νε μελ

πο ον υ περ υ μνη η τε ο των πα τε ε ρων

Κυ ρι ι ος και Θε ο ος ευ λο ο γη το ο ο ο

ος ει

Ε φλε ξε ρει ει ει θρω ω ω ω τω ω ω ν δρα α

κο ον τω ω ω ν τας κα α α α α ρα ας ο της κα

μι ι ι νου ου ου ου τη η ην με ε ταρ σι ι ι ο ον

φλο ο ο ο ο γα νε ε ου ους φε ρου

ου ου σα α α αν ε ε ευ σε ε βει εις κα α α τευ

να α α α α σα ας τη ην δυ υσ κα α θε ε κτον α

χ λ υ υ ν ε ξ α α α μα αρ τι ι ι ι ι ας

ο ο ο ο λ η η η η ν π λ υ υ ν ει ει ει δε ε

ε χορὸς ἀ τ η η δ ρ ο σω του Πνε ε ε ευ μα α α

το ος

ᾠδὴ ἡ'

Ἦχος Πά

πρωτ. Κων. Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.128\*

α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου ου ου

ου με εν τον Κυ ρι ο ον

Μ υ στη η ρι ι ο ον πα ρα δο ξο ον η Βα βυ

λω νο ο ος ε δει ξε ε ε κα μι ι νος π η γ α σα α



ασαδρο ο οσον ο οτι ρει θροι οισ ε με ελ

λεν α α α υ λο ον πυρ εις δε χε ε σθαι αι

αι ο ο Ι ι ορ δα α α α νης και στε ε ε

γει ειν σαρ κι ι βα πτι ζο ο με νο ον τον κτι ι ι

ι στην ον ευ λο γου ου ου σι λα α οι και υ περ

υ υ ψου ου ου ου σιν ει εις πα αν τας του ους αι ω ω

ω ω νας

Ελευθερα α α μεν η κτι ι σις γνω

ω ω ρι ι ζε ε ε ε ται υι οι οι δε ε

φω ω το ος οι πριν ε ε σχο ο ο τι σμε ε ε ε ε

νοι οι μο νο ος στε ε να α α ζει ει ει του σκο  
 του ους ο ο ο προ ο στα α α α α της νυν  
 ε ε ευ λο ο γει ει ει τω συν το ο νως τον αι αι  
 αι τι ι ι ι ον η πρι ιν τα α λαι αι αι  
 να α α των ε θνων πα α α α αγ κλη η ρι ι  
 ι α α α α α α

### φδὴ θ'

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

κανὸν τῆς ἑορτῆς

ἦχος β'

Μεγάλυνον ψυχὴ μου, τὴν τιμιωτέραν, τῶν ἄνω στρατευμάτων

Ἡ τὸν πρὸ ἡλίου φωστῆρα, τὸν Θεὸν ἐξανατείλαντα, σωματικῶς ἡμῖν ἐπιδημήσαντα, ἐκ λαγόνων παρθενικῶν, ἀφράστως σωματώσασα, εὐλογημένη Πάναγνε, σὲ Θεοτόκε μεγαλύνομεν.

Μεγάλυνον ψυχὴ μου, τὸν κατὰ τὸν Νόμον, σαρκὶ περιτιμηθέντα. ✠

Μεγάλυνον ψυχὴ μου, τὸν ἐν τῇ ὀγδόῃ, περιτομὴν λαβόντα.

Ὑπερβὰς τοὺς ὅρους Χριστός, τῆς ἀνθρωπίνης ὄλης, φύσεως, ὑπερφυῶς ἐκ Παρθένου ἀποτίκτεται, καὶ τὸ γράμμα τὸ νομικόν, καθὼς διακελεύεται, τὴν σάρκα περιτέμνεται,

καὶ πληρωτῆς τοῦ νόμου δείκνυται.

**Σ**ήμερον ὁ Δεσπότης, σαρκὶ περιετμήθη, καὶ Ἰησοῦς ἐκλήθη.

**Δ**εῦτε τοῦ Δεσπότη τοῦ ἐνδοξοῦ, Χριστοῦ ὀνομαστήρια, ἐν ἀγιότητι πανηγυρίσωμεν Ἰησοῦς γὰρ θεοπρεπῶς, ἀνηγόρευται σήμερον, σὺν τούτοις καὶ τὴν μνήμην δέ, τοῦ ἱεράρχου μεγαλύνωμεν.

κανὼν τοῦ **Μ. Βασιλείου**

**Μ**εγάλυνον ψυχὴ μου, τὸν ἐν ἱεράρχαις, Βασίλειον τὸν Μέγαν.

**Τ**οῦ ἀρχιποίμενος ὡς πρόβατον, πιστὸν Χριστοῦ Βασίλειε, τοῖς ζωηφόροις ἔχνεσιν ἐπηκολούθησας· τῷ τυράννῳ γὰρ τὴν σαυτοῦ ψυχὴν πάτερ προδέδωκας, προκινδυνεύων ἄριστα, τῆς Ἐκκλησίας παμμακάριστε.

**Μ**εγάλυνον ψυχὴ μου, τὸν ἐκ Καισαρείας, Βασίλειον τὸν Μέγαν.

**Τ**ὸ τῆς Ἐκκλησίας πανίερον, Χριστοῦ κατιδὼν σύστημα, ὑπὸ τῆς σῆς κοσμούμενον ἱεραρχίας σοφέ, ὁ πανώλης ἐμβροντηθεὶς, καταπέπτωκε τύραννος· τὴν γὰρ ἐν σοὶ τοῦ Πνεύματος, αἴγλην οὐκ ἤνεγκε Βασίλειε.

**Δ**όξα Πατρὶ καὶ Υἱῷ καὶ ἀγίῳ Πνεύματι.

**Μ**εγάλυνον ψυχὴ μου, τῆς τρισυποστάτου, καὶ ἀδιαιρέτου, θεότητος τὸ κράτος.

**Τ**ῆς τῶν ἀποστόλων καθέδρας, τῆς χορείας τε τῶν ἀθλοφόρων, Χριστοῦ πατριαρχῶν σκηνῆς, καὶ τῶν δικαίων τρυφῆς, τῆς χορείας τε τῶν προφητῶν, ἡξιώθης Βασίλειε· τῆς Θεοτόκου μύστης γὰρ, καὶ τῆς Τριάδος λάτρις γέγονας.

**Κ**αὶ νῦν καὶ ἀεὶ καὶ εἰς τοὺς αἰῶνας τῶν αἰώνων, ἀμήν.

**Μ**εγάλυνον ψυχὴ μου, τὴν λυτρωσαμένην, ἡμᾶς ἐκ τῆς κατάρας.













**Ὁ** τὰ ὑπερῶνα ἐν ὕδασι, στεγάζων μόνος Κύριος, ἀναχαιτίζων θάλασσαν, ἀβύσσους τε ὀξηραίνων, ἐκ σοῦ ἀγνή τὴν σάρκα προσλαβόμενος, ἐκ Βηθλεὲμ ἐπείγεται, πρὸς Ἰορδάνην βαπτισθῆναι σαρκί.

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

ὑδὴ θ', κανὼν τῆς ἐορτῆς

Ἦχος  Πά

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.35/33\*

**Μ**              
ε γ α λ υ ν ο ν ψ υ χ η μ ο υ ο υ τ η ν τ ι μ ι ω τ ε ε

ραντων α νω στρα τευ μα των

**Η** τον προ η λι ου φω στη ρα τον Θε ον εξ α

α να τει λαν τα σω μα τι κως η μιν ε πι δη μη σαν

τα εκ λα γο ο νων παρ θε νι κων α φρα στως σω

ω μα τω σα σα ευ λο γη με νη παν α γνε σε ε Θε

ο το κε με γα λυ νο μεν

**Μ** ε γα λυ νον ψυ χη μου ου τον κα τα τον νο ο

μον σαρ κι πε ρι τμη θεν τα

**Η** τον προ η λι ου φω στη ρα τον Θε ον εξ α

α να τει λαν τα σω μα τι κως η μιν ε πι δη μη σαν

τα εκ λα γο ο νων παρ θε νι κων α φρα στως σω

ω μα τω σα σα ευ λο γη με νη παν α γνε σε ε Θε

ο το κε με γα λυ νο μεν

**Μ** ε γα λυ νον ψυ χη μου τον εν τη ο γδο η πε ρι

το μην λα βον τα

**Υ** περ βασ τους ο ρους Χρι στος της αν θρω πι νης

ο λης φυ σε ως υ περ φυ ως εκ Παρ θε νου α πο τι

κτε ται και το γρα αμ μα το νο μι κον κα θως δι α α

κε λευ ε ται την σα ρ κα πε ρι τε με νει και πλη ρω

της του νο μου δει κνυ ται

Ἐν ἡμέρῃ τῇ ἐκείνῃ ἡ σὰρξ περιετμήθη

καὶ ἡ σὺς ἐκλήθη

Δεῦτε τοῦ Δεσποτοῦ τα ἐν δόξῃ Χριστοῦ ὀνομα

στηρία ἐν ἀγιότητι πάντῃ γυρίσωμεν

Ἰησοῦς γὰρ θεὸς ἦν ἡ ἀννηγορεύει

ταὶ σήμερον σὺν τοῖς καὶ τὴν μνημὴν δε τοῦ

ἐρὰρ χου μέγα λυνομένη

ὕδὴ θ', κανὼν τοῦ ἁγίου...

Ἦχος Πά

πρωτ. Κων. Παπαγιάννη  
Μουσικὸν Μηνολόγιον  
2007 σ.36/34\*

Μεγαλὸν ψυχή μου σου ἐν ἐραρ

χαις Βα σι λει ον τον με γαν

**Τ**ου αρ χι ποι με νος ως προ βα τον πι στον Χρι στου ου

Βα σι λει ε τοις ζω η φο ροις ι χνε σιν ε πη κο

λου θη σας τω τυ ραν νω γαρ την σου του ψυ χην πα α

τερ προ δε δω κας προ κιν δυ νευ ων α ρι στα της

Εκ κλη σι ας παμ μα κα ρι στε

**Μ**ε γα λυ νον ψυ χη μου ου τον εκ Και σα ρει ει ας

Βα σι λει ον τον με γαν

**Τ**ο της Εκ κλη σι ι ας παν ι ε ρον Χρι στου

κα τι δων συ στη μα υ πο της σης κο σμου με νον ι

ε ραρ χι ας σο φε <sup>π</sup> ο παν ω ω λης εμ βρον τη θεις <sup>Δ</sup>

κα τα πε ε πτω ω κε τυ ραν νος <sup>π</sup> την γαρ εν σοι

του Πνευ μα τος αι γλην ουκ η νεγ κε Βα σι λει ε <sup>π</sup>

<sup>Δ</sup> ο ξα Πα τρι και Υι ω και α γι ω Πνευ μα τι <sup>π</sup>

<sup>Μ</sup> ε γα λυ νον ψυ χη μου ου της τρι σ υ πο στα του <sup>Δ</sup>

και α δι αι ρε του Θε ο τη τος το κρα τος <sup>π</sup>

<sup>Τ</sup> ης των α πο στο λων κα θε δρας <sup>Δ</sup> της χο ρει ας

τε των α θλο φο ρων Χρι στου <sup>π</sup> πα τρι αρ χων σκη νης

και των δι και ων τρυ φης <sup>π</sup> της χο ρει ας τε των προ φη

των <sup>Δ</sup> η ξι ω ω θη ης Βα σι λει ε <sup>π</sup> της Θε ο το



κου μου στης γαρ και της Τρι α δος λατρης γε γονας

**Κ** αι νυν και α ει και εις τους αι ω νας των αι ω

νων α μην

**Μ** ε γα λυ νον ψυ χη μου την λυ τρω σα με νην η

μας εκ της κατα ρας

**Ο** τα υ περ ω ω α εν υ δα σι στε

γα ζων μο νος Κυ ρι ος α να χαι τι ζων θα λασ σαν

α βυσ σους τε ο ο ξη ραι νων εκ σου α γνη την σαρ

κα προσ λα βο με νος εκ Βη θλε εμ ε πει γε ται

προς Ι ορ δα νην βα πτι σθη ναι σαρ κι

# καταβασίαι θ' φδῆς

## ἦχος β'

Μεγάλυνον ψυχῆ μου, τὴν τιμιωτέραν, καὶ ἐνδοξοτέραν τῶν ἄνω στρατευμάτων.

Ἄπορεῖ πᾶσα γλῶσσα, εὐφημεῖν πρὸς ἀξίαν, ἰλιγγιᾷ δὲ νοῦς καὶ ὑπερκόσμιος, ὕμνεῖν σε Θεοτόκε· ὅμως ἀγαθὴ ὑπάρχουσα, τὴν πίστιν δέχου· καὶ γὰρ τὸν πόθον οἶδας, τὸν ἔνθεον ἡμῶν· σὺ γὰρ χριστιανῶν εἶ προστάτις, σὲ μεγαλύνομεν.

Μεγάλυνον ψυχῆ μου, τὴν λυτρωσαμένην, ἡμᾶς ἐκ τῆς κατάρας.

Ὡ τῶν ὑπὲρ νοῦν, τοῦ τόκου σου θαυμάτων! Νύμφη πάναγνε, Μῆτερ εὐλογημένη δι' ἧς τυχόντες παντελοῦς σωτηρίας, ἐπάξιον κροτοῦμεν ὡς εὐεργέτη, δῶρον φέροντες ὕμνον εὐχαριστίας.

Ἀργαῖ

Χουρμουζίου Χαρτοφύλακος

Πέτρου Λαμπαδαρίου

Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Παπαγιάννη)

Σύντομοι

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

## Σύντομος

### Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

ᾠδὴ θ'

ἦχος Πά

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.283#

Μ ε γ α λ υ ν ο ν ψ υ χ η μ ο υ τ η ν τ ι μ ι ω τ ε

ρ α ν τ ω ν α ν ω σ τ ρ α τ ε υ μ α τ ω ν

Α π ο ρ ε ι π α α σ α γ λ ω σ σ α ε υ φ η μ ε ι ε ι ν π ρ ο σ α ξ ι α ν

ι λιγ γι α δε νους και υ περ κο σμι ος υ μνειν σε Θε

ε ο το κε ο μως α γα θη υ παρ χου σα την πι στιν

δε χου και γαρ τον πο θον οι δας τον εν θε ον η μων

συ υ γαρ χρι στι α νων ει προ στα τις σε ε μεγα λυ νο

μεν

Μ ε γα λυ νον ψυ χη μου την λυ τρω σα με νην η

μας εκ της κατα ρας

ἱαμβική

Ἦχος Ββ

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Ειρμολόγιον 1903 σ.285#

ω των υ περ νουν του το κου σου θαυ μα α των

νυμ φη παν α γνε μη τερ ευ λο γη με ε ε νη δι ης τυ

χο ον τες παν τε λους σω τη ρι ι ας ε πα

ξι ον κρο του μεν ως ε ευερ γε τη δω ρον φε ρον τες

υ μονον ευ χα ρι σι ι α α α ας

Ἄεθ' ἡ

Χουρμουζίου Χαρτοφύλακος

Ῥδὴ θ'

Ἦχος Πά

Χουρμουζίου Χαρτοφύλακος  
Ειρμολόγιον 1825 σ.53#

Μ ε γα α λυ νον ψυ χη η η η η μου

ου τη ην τι μι ι ι ω ω τε ε ε ε ρα αν

και αι ε εν δο ξο ο τε ε ε ραν τω ων α α νω

στρα α τευ μα α α α των

α πο ρει πα α α σα γλω ω ωσ σα ε

Ευφημειειειεινπροοςαξιιιαν

ιλιγγιαααδεεεενουουςκαιυ

πεερκοσμιιωςυυμνειειεινσεεθεεο

τοοοοοκεομωσαγαθηυυυπαρχουου

σαατηηηνπιιιστινδεεεχουκαιγα

αρτονποθονοιοιοιοιδααστοονεεεν

θεεεοονηηημωνσυυγαρχρι

στιααωνειειπροοσταατιςσεεεμεεγα

λυνομεεν

**Μ**εγααλυνονψυυχηηηηημου

ου τη ην λυ τρω ω ω σα α με ε ε ε νη ην η

η μα ας εκ τη ης κα τα α α α ρας

ἱαμβική

Ἦχος ΒΨ

Χουρμουζίου Χαρτοφύλακος  
Ειρμολόγιον 1825 σ.55#

ω τω ω ω νν υ υ υ πε ερ νου ου ου ουν του

το κου σου ου ου θαυ μα α α α α τω νν Νυ

υ υμ φη η πα αν α α α γνε ε ε Μη τε

ερ ευ λο ο ο γη η με ε ε ε ε νη δι

ης τυ χο ο ο ον τε ε ε ε ε ε ες πα α αν τε ε

λου ους σω ω ω τη ρι ι ι ι ι α ας ε ε

πα ξι ον κρο ο του ου ου με εν ω ω ως ε ε ε ευ

εργε εετη δω ω ω ω ρο ο οονφε

ερο οον τε ε ες υ υ μνο ον ευ χα α α

α α ρι ι στι ι ι α α α α ας

Πέτρου Λαμπαδαρίου

ῥοδῆθ'

Ἦχος Πά

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2001 σ.133\*

Μεγα αλυ νον ψυ υ χη η η η μου ου

τη ην τι ι μι ω ω τε ε ε ραν τω ων α α νω

στρα α τευ μα α α α των

α πο ρει πα α α σα γλω ω ω σ σα ε ευ

φη η μει ει ει ει ν προ ος α ξι ι ι ι αν ι

λιγ γι α α α δε ε ε ε νου ους και υ πε ερ

κο σμι ι ος υ υ μνει ει ει ν σε ε Θε ε ο το ο ο

ο κε ο μως α γα θη υ υ υ παρ χου ου σα α

τη η ην πι ι ι στιν δε ε ε χου και γα αρ

τον πο θο ον οι οι οι οι δα ας το ον ε εν θε ε

ε ο ον η η η μων συ υ γαρ χρι στι α α

νω ων ει ει προ στα α α της σε ε ε με ε γα λυ νο

με εν

η με ε ρον ο Δε σπο ο ο ο τη ης κλι

ι νει ει ει το ο ον αυ χε ε ε να χει ρι ι



ι τη του ου Προδροοοομου

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2001 σ.134\*

ω τω ω ωων υ πε ερ νου ου ου ουντου το κου ου

σου ου ου θαυμα α α α α τωων Νυ υ υμ

φη η παν α α αγνε Μη τε ερ ευ λο ο ο

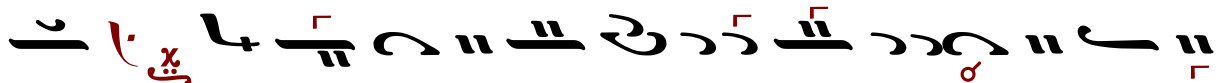
γη η με ε ε ε ε νη δι ης τυ χο ο ο ον τε


ε ε ε ε ε ες πα α αν τε ε λου ους σω ω ω τη

ρι ι ι ι ι α ας ε ε πα ξι ι ο ον κρο ο του

ου ου με εν ω ω ως ε ε ευ ε ερ γε ε ε τη

δω ω ω ω ρο ο ο ον γε ε ρο ο ον τε ε


  
 ες υ υ μον ον ευ χα α α α α ρι ι στι ι



  
 ι α α α α α ας


Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Παπαγιάννη)

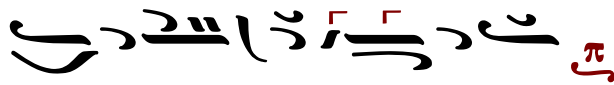
ᾠδὴ θ'


Ἦχος Πά

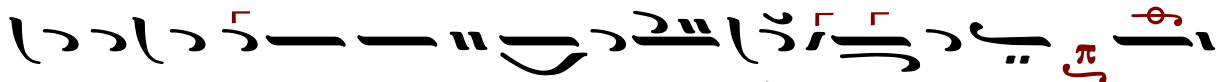
πρωτ. Κων. Παπαγιάννη  
 Μουσικόν Μηολόγιον  
 2001 σ.133\*


  
**Μ** ε γα α λυ νον ψυ υ χη η η η μου ου


  
 τη ην τι ι μι ω ω τε ε ε ραν τω ων α α νω


  
 στρα α τευ μα α α α των


  
**Α** πο ρει πα α α σα γλω ω ω σ σα ε ευ


  
 φη η μει ει ει ει ν προ ος α ξι ι ι ι αν ι


  
 λιγ γι α α α δε ε ε ε νου ους και υ πε ερ

χο σμι ι ος υ υ μνει ει ει ν σε ε Θε ε ο το ο ο

ο κε ο μως α γα θη υ υ υ παρ χου ου σα α

τη η ην πι ι ι στιν δε ε ε χου και γα αρ

τον πο θο ον οι οι οι οι δα ας το ον ε εν θε ε

ε ο ον η η η μων συ υ γαρ χρι στι α α

νω ων ει ει προ στα α α της σε ε ε με ε γα λυ νο

με εν

η με ε ρον ο Δε σπο ο ο ο τη ης κλι

ι νει ει ει το ο ον αυ χε ε ε να χει ρι ι

ι τη του ου Προ δρο ο ο ο μου

ω τω ω ωων υ πε ερ νου ου ου ουντου το κου ου

σου ου ου θαυ μα α α α α τω ων Nu υ υμ

φη η παν α α α γνε Μη τε ερ ευ λο ο ο

γη η με ε ε ε ε νη δι ης τυ χο ον τε

ες παν τε λου ους σω ω ω τη ρι ι ι ι ι α

ας ε ε πα ξι ι ο ον κρο ο του ουου με εν ω ω

ως ε ε ευ ε ερ γε ε ε τη δω ω ω ρο ον φε

ε ρο ο ον τε ες υ υ μνο ον ευ χα α α α

α ρι ι στι ι ι α α α α α ας

# Τῶν Θεοφανείων

Πεζαὶ καὶ ἰαμβικαὶ  
1, 6, 14 Ἰανουαρίου

## ἤχος β'

α **Β**υθοῦ ἀνεκάλυψε πυθμένα, καὶ διὰ ξηρᾶς οἰκείους ἔλκει, ἐν αὐτῷ κατακαλύψας ἀντιπάλους, ὁ κραταιός, ἐν πολέμοις Κύριος, ὅτι δεδόξασται.

**Σ**τείβει θαλάσσης, κυματούμενον σάλον, ἡπειρον αὔθις, Ἰσραὴλ δεδειγμένον. Μέλας δὲ πόντος, τριστάτας Αἰγυπτίων, ἔκρυψεν ἄρδην, ὕδατόστρωτος τάφος, Ῥώμη κραταιᾶ, δεξιᾶς τοῦ Δεσπότη.

γ **Ἰ**σχὺν ὁ διδούς, τοῖς βασιλεῦσιν ἡμῶν Κύριος, καὶ κέρας χρηστῶν αὐτοῦ ὑψῶν, Παρθένου ἀποτίκτεται, μολεῖ δὲ πρὸς τὸ βάπτισμα· διὸ πιστοὶ βοήσωμεν· οὐκ ἔστιν ἅγιος, ὡς ὁ Θεὸς ἡμῶν, καὶ οὐκ ἔστι δίκαιος, πλὴν σου Κύριε.

**Ἦ**σοι παλαιῶν, ἐκλελύμεθα βρόχων, βορῶν λεόντων, συντεθλασμένων μύλας, ἀγαλλιῶμεν, καὶ πλατύνωμεν στόμα, λόγῳ πλέκοντες, ἐκ λόγων μελωδίαν, ᾧ τῶν πρὸς ἡμᾶς, ἡδεῖται δωρημάτων.

δ **Ἀ**κήκοε Κύριε φωνῆς σου, ὃν εἶπας· φωνὴ βοῶντος ἐν ἐρήμῳ ὅτε ἐβρόντησας πολλῶν ἐπὶ ὑδάτων, τῷ σῶ μαρτυρούμενος Ἰῶ, ὅλος γεγονώς τοῦ παρόντος, Πνεύματος δὲ ἐβόησε· σὺ εἶ Χριστός, Θεοῦ σοφία καὶ δύναμις.

**Π**υρσῶ καθαρθεὶς μυστικῆς θεωρίας, ὑμῶν προφήτης τὴν βροτῶν καινουργίαν, ῥήγνυσι γῆρυν, Πνεύματι κροτουμένην, σάρκωσιν ἐμφαίνουσαν ἀρρήτου Λόγου, ᾧ τῶν δυναστῶν τὰ κράτη συνετρίβη.

ε **Ἰ**ησοῦς ὁ ζωῆς ἀρχηγός, λῦσαι τὸ κατάκριμα ἥκει, Ἀδὰμ τοῦ πρωτοπλάστου· καθαρσίων δέ, ὡς Θεὸς μὴ δεόμενος, τῷ πεσόντι καθαίρεται ἐν τῷ Ἰορδάνῃ· ἐν ᾧ τὴν ἔχθραν κτείνας, ὑπερέχουσαν πάντα νοῦν, εἰρήνην χαρίζεται.

**Ἐ**χθροῦ ζοφώδους καὶ βεβορβορωμένου, ἰὸν καθάρσει Πνεύματος λελουμένοι, νέαν προσωμίσημεν ἀπλανῆ τρίβον, ἄγουσιν ἀπρόσιτον εἰς θυμηδίαν, μόνοις προσιτήν, οἷς Θεὸς κατηλλάγη.

ς **Ἡ** φωνὴ τοῦ Λόγου, ὁ λύχνος τοῦ φωτός, ὁ ἑωσφόρος, ὁ τοῦ ἡλίου Πρόδρομος, ἐν τῇ ἐρήμῳ. Μετανοεῖτε, πᾶσι βοᾷ τοῖς λαοῖς, καὶ προκαθαίρεσθε· ἰδοὺ γὰρ πάρεστι Χριστός, ἐκ φθορᾶς τὸν κόσμον λυτρούμενος.

Ἰμερτόν ἐξέφηνε σὺν πανολβίῳ, ἤχῳ Πατῆρ, ὃν γαστρὸς ἐξηρεύξατο. Ναί φησιν, οὗτος, συμφυῆς γόνος πέλων, φώταυγος ἐξώρουσεν ἀνθρώπων γένους, Λόγος τέ μου ζῶν, καὶ βροτὸς προμηθεία.

ζ Νέους εὐσεβεῖς, καμίνῳ πυρὸς προσομιλήσαντας, διασυρίζον πνεῦμα δρόσου, ἀβλαβεῖς διεφύλαξε, καὶ θείου ἀγγέλου συγκατάβασις· ὅθεν ἐν φλογὶ δροσιζόμενοι, εὐχαρίστως ἀνέμελλον· ὑπερύμνητε, ὁ τῶν πατέρων Κύριος, καὶ Θεὸς εὐλογητὸς εἶ.

Ἐφλεξε ρείθρῳ τῶν δρακόντων τὰς κάρας, ὁ τῆς καμίνου τὴν μετάρσιον φλόγα, νέους φέρουσαν εὐσεβεῖς κατευνάσας, τὴν δυσκάθεκτον ἀχλὺν ἐξ ἁμαρτίας, ὅλην πλύνει δέ, τῇ δρόσῳ τοῦ Πνεύματος.

Αἰνοῦμεν, εὐλογοῦμεν καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον.

η Μυστήριον παράδοξον, ἡ Βαβυλῶνος ἔδειξε κάμιнос, πηγάσασα δρόσον, ὅτι ρείθροις ἔμελλεν, ἄυλον πῦρ εἰσδέχεσθαι ὁ Ἰορδάνης, καὶ στέγειν σαρκί, βαπτιζόμενον τὸν κτίστην, ὃν εὐλογοῦσι λαοί, καὶ ὑπερυψοῦσιν, εἰς πάντας τοὺς αἰῶνας.

Ἐλευθέρα μὲν ἡ κτίσις γνωρίζεται. Υἱοὶ δὲ φωτός, οἱ πρὶν ἐσκοτισμένοι. Μόνος στενάξει, τοῦ σκότους ὁ προστάτης. Νῦν εὐλογεῖτω συντόνως τὸν αἴτιον, ἡ πρὶν τάλαινα τῶν ἐθνῶν παγκληρία.

Αργαί

Σύντομοι

Πέτρου Λαμπαδαρίου

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Παπαγιάννη)

## Σύντομοι

### Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Καταβασαί τῶν Θεοφανεῶν  
ῥῆθ' α'

Ἦχος Πά

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.267#

Β υ θου α νε κα λυ ψε πυ θμε να και δι α ξη



σχυν ο διδους τοις βασιλευσιν ημων Κυριος

και κεραιστων αυτου υψων Παρθενου ααποτικτη

ται μολει δε προς το βαπτισμα διοπιστοι βοη

σωμεν ουκ εστιν αγιος ο Θεος ημων και ουκ

εστι δικαιο πλην σου Κυριε

ᾠδὴ γ' ἱαμβική

Ἦχος ΒΨ

σοι παλαιων εκλελυμεθα βροχων βο

ρων λεοντων συντεθλασμενων μυυλας αγαλλι

ωωμεν και πλατυνωμεν στομα Λογωπλε

κοντες εκλογων μελωδιων των προς ημας χοροσ αη



δε ται δω ω ρη μα των

δε ται δω ω ρη μα των

ᾠδὴ δ'

Ἦχος Πά

α κη κο α Κυ ρι ε φω νη ης σου ον ει πας φω νη

βο ων τος ε εν ε ρη μω ο τε ε βρον τη σας πολ λων

ε πι υ δα των τω σω μαρ τυ ρου μενος Υι ω ο λος γε

γο νως του πα ρον τος Πνευ μα τος δε ε ε βο η σε συ ει

Χρι στος Θε ου σο φι ι α και δυ ναμις

ᾠδὴ δ' ἱαμβική

Ἦχος ΒΨ

Π υρ σω καθ αρ θεις μυστι κης θε ω ρι ι ας υ

μνων προ φη της την βρο των και νουρ γι ι αν ρη γνου σι

γῆ ἡ ρυν Πνευματικῶν τοῦ μετενέμεν σαρκῶ

σιν ἐμφανισαμένη τοῦ Λόγου ὡς τῶν δυνά

στων χορῶν τακτικῶν ἐπιβή

ὡδὴ ε'

Ἦχος Πά

ἡ σὺς ὁ ζωηρῶς ἀρχηγὸς λύσαι τὸ κα

τακτικῶν καὶ ἀδὰμ τοῦ πρώτου πλαστοκαθάρ

σίων δὲ ὡς Θεοσμοδὸς ὁ μόνος τῶν πεσον

τικαθάρται ἐν τῷ Ἰορδάνῃ ἐν ὧ τὴν ἐ

χθρὰν κτείνει ἐν ἡσυχίᾳ ὑπερέχουσαν πάντων ἐ

ρηνηνχαρίζεται

Ἦχος Βϛ

Ε χθρου ζο φω δους και βε βορ βο ρω με ε νου ι  
 ον κα θαρ σει Πνευ μα τος λε λου με ε νοι νε αν προ  
 σωρ μι σθη μεν α πλα νη τρι ι βον α γου σαν α  
 προ σι τον εις θυ μη δι αν μο νοις προ σι την χορὸς α'  
 οις Θε ος κα τηλ λα γη

Ἦχος Πα

Η φω νη του Λο ο γου ο λυ χνος του φω τος ο  
 ε ω σφο ρος ο του Η λι ου προδρο μος εν τη ε ρη  
 μω με τα νο ει τε πα σι βο α α τοις λα οις και

προ ο κα θαι ρε σθε ι δου γαρ παρ ε στι Χρι στος εκ

φθο ρας τον κο ο σμον λυ τρου μενος

ᾠδὴ ε' Ἰαμβική

Ἦχος Βϛ

μερ τον εξ ε φη νε συν παν ολ βι ι ω η

χω Πα τηρ ον γα στρο ο ος ε ξη ρευ ξα το ναι φησιν

ου ου τος συμ φυ ης γο νος πε ε λων φω ταυ

γος ε ξω ρου σεν αν θρω πων γε νους Λο γος τε μου

ζων χορὸς θ' και βρο τος προ ο μη θει α

ᾠδὴ ε'

Ἦχος Πα

Ν ε ους ευ σε βεις κα μι ι νου πυ ρος προσ ο ο μι λη

σαν τας δι α συ ρι ζον Πνευ μα δρο σου α βλα βεις δι ε

φυ λα ξε και θει ει ου Αγ γε λου συυγ κα τα βα σις

ο θεν εν φλο γι δρο σι ζο ο μενοι ευ χα ρι ι στως

ως αν ε μελ πον υ περ υ μνη τε ο των πα τερων Κυ ρι

ος και Θε ος ευ λο γητος ει

ᾠδὴ ζ΄ ἱαμβική

Ἦχος Β΄

ε φλε ξε ρει θρω των δρα κον των τας κα α ρας ο

της κα μι ι ι νου την με ταρ σι ον φλο ο ο γα νε ους

φε ρου σαν ευ σε βεις κα τευ να α σας την δυσ κα θε

κτον α χλυν εξ α μαρ τι ι ι ας ο λην πλυ νει δε χορὸς α΄

Ἐξ ὧν ἔγεννησεν ὁ υἱος

τη δρο σωτου Πνε ευ μαα τος

ᾠδὴ γ'

Ἦχος Πά

Ἄι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ σχυ νου ου με εν

τον Κυ ρι ον

Μυ στη ρι ο ον πα ρα δο ξον η Βα βυ λω νος ε δει ξε

κα μι νος πη γα σα α σα δρο σον ο τι ρει θροις ε μελ

λεν α α υ λον πυρ εις δε χε σθαι ο Ι ορ δα

νης και στε γειν σαρ κι βα πτι ζο με νον τον Κτι στην

ον ευ λο γου ου σι λα οι και υ περ υ ψου σιν εις

παν τας τους αι ω νας

παν τας τους αι ω νας

Ελευθεραμενη κτιιι σις γνωριζεται υι  
 οι δε φωτος οι πριν εσκοτισμε ενοι μονος  
 στε να ζει του σκοτους ο προστααα της νυν ευλογει  
 τω συν το ο ο νως τον αιτιον η πριν ταλαινα  
 των εθνων πααγκληρι ιααααα

Αργαί

Πέτρου Λαμπαδαρίου<sup>12</sup>

Βυυυ υυθου ου ου ου α νε κα αααλυ

<sup>12</sup> Εἰς τὰς καταβασίας ταύτας ἐπεφέραμεν ἐλαφρὰς τινὰς μεταβολὰς πρὸς ἀποφυγὴν παρατονισμῶν καὶ ἀστόχου χωρισμοῦ λέξεων.  
Γερασῖμος Μοναχὸς Ἀγιορείτης

υ ψε πυ θμε ε ε ε ε ε να α α α και

δι ι α ξη η ρα ας οι χει ει ους ε ε ε ε ελ χει ει

εν αυ τω ω κα τα κα α λυ υ υ ψα ας α αν

τι πα α α α λους ο κρα ται αι αι ο ο ο ο ο

ος εν πο λε ε μοις Κυ υ ρι ι ος ο ο ο ο

τι δε ε δο ο ο ο ο ο ο ο ο ξα σται

**C** τει βει θα λα α ασ ση η η ης κυ υ υ μα α του

ου με ε ε νον σα α α α α λο ον η η πει

ει ρο ον α α αυ θι ι ι ις Ι ισ ρα α η ηλ δε ε ε

δει ει γμε ε ε ε ε νον με ε λα ας δε πο ο



ον το ο ο ο ο ος τρι στα ταας Αι αι αι γυ υ

πτι ι ι ι ι ω ων ε κρυ υ ψε εν α α αρ δη η

η ην υ υ δα α το ο στρω ω ω το ος τα α α

α α φος ρω ω ω ω ω ω ω μη η η η κρα

ται αι α α α δε ξι ας του ου ου ου ου Δε ε

σπο ο ο του

Ῥδὴ γ'

Ἦχος Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.121\*

σχυ υ υ υν ο ο ο δι ι δους τοις βα σι

λε ευ σι ιν η η μων Κυ ρι ο ος και αι κε ε ρας χρι

στων α αυτου υ υ ψων Παρ θε ε νου ου α α πο τι χτε

ται αι μο λει δε προς το ο βα πτι ι σμα δι ο πι στοι

οι βο η ησω με ε ε ε ε ε ε ε ε εν

ουκ ε ε στιν α γι ι ος ω ω ωως ο ο Θε

ος η η μων και ουκ ε ε στι δι ι και αι ο ο

ος πλη ην σου Κυ υ ρι ι ι ε

Ο σοι οι οι οι πα λαι αι ω ω ωων ε ε εκ λε ε

λυ υ με ε ε θα βρο ο ο ο ο χω ων βο ρω

ω ων λε ε ο ο ον τω ω ων συν τε ε θλα α σμε ε ε

νω ων μυ υ υ υ υ λας α γαλ λι ω ω ω ω

με ε ε ε ε ε εν και αι αι πλα α τυ υ νω ω ω

μεν στο ο ο ο ο μα α λο ο γω ω πλε ε κο

οον τε ες εκ λο ο ο γων με ε λω ω ω δι ι ι ι

ι ι αν ω ω ω ω ω ω ω τω ω ω ων

προς η η μα ας χορός α' η η δε ε ται δω ω ω ω

ω ρη η μα α α των

ᾠδὴ δ'

Ἦχος Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.122\*

α κη κο ο ε Κυ ρι ι ε φω ω νη η η

η ης σου ον ει ει ει ει ει πας φω νη βο ω ων

το ος ε ε εν τη η η ε ρη η η μω ο τε

ε βρο ον τη η η σας πολ λω ω ων ε ε πι ι

υ δα α α α α των τω σω ω ω μα αρ τυ υ υ

ρου με ε νο ος Υι υι υι ω ο ο λος γε γο ο

νωσ του πα ρο ον το ος Πνε ευ μα το ο ος δε ε

ε βο η σε ε συ ει Χρι ι στος Θε ου ου σο φι ι ι

ι α α και αι αι αι δυ υ να α α μιν

Π υρ σω ω κα α θα αρ θει ει ει εις μυ υ υ στι ι

κη ης θε ε ε ω ω ρι ι ι ι ι α ας υ

μνω ω ων προ ο φη η η τη η η ης τη η ην βρο ο

των και αι νου ου ουρ γι ι ι ι αν ρη γυσι γη

η η ρυ υ υ υ υν Πνευ μα α τι κρο ο ο του

με ε ε ε ε νη ην σαρ κω σι ι ιν ε εμ

φαι νου ου ου σα αν α α αρ ρη η η του ου Λο

ο ο γου ω ω ω ω ω ω ω ω τω ω ωων

δυ να αστω ων χορός θ' τα κρα α τη συ υ υ

υν ε ε τρι ι ι βη

ᾠδὴ ε'

Ἦχος Πά

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηολόγιον  
2007 σ.124\*

η σους ο ζω η η η ης αρ χη η γος λυ υ

σαι αι το κα α τα κρι μα η η η κει Α α δα α αμ

του ου πρω ω το πλα α α α α στου κα θαρ σι ω ων

δε ως Θε ο ο ο ος μη η δε ο ο με ε ε νος

τω πε σο ο ον τι κα θαι ρε ε ται αι αι αι ε ε

εν τω ω Ι ι ορ δα α α α α νη εν ω την ε

χθρα αν κτει ει ει νας υ περ ε ε ε ε χου ου σαν

παν τα α νουν ει ρη η η η νη ην χα α ρι ι ι

ι ι ι ι ι ζε ται

**Ε** χθρου ου ζο ο φω ω ω δου ου ους και βε ε βο ορ

βο ο ο ρω με ε ε ε ε νου ου ι ο

ο ον κα α θα αρ σει Πνευ μα α τος λε ε ε

λου ου με ε ε ε ε νοι νε α αν προ οσ ωρ

μι ι σθη η η μεν α πλα νη τρι ι ι ι

ι βο ον α γου σα α αν α α προσ ι το ον

ει ει εις θυ υ υ μη η δι ι ι αν μο ο

ο ο ο ο ο ο νοι οι οι οισ προσ ι ι τη η ην

χορδς α' οι οισ Θε ε ος κα α α α α τη ηλ λα

α α γη

ᾠδής'

Ἦχος Πά

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηολόγιον  
2007 σ.125\*

Η<sup>χ</sup> φω νη του Λο ο ο ο γου ου ο λυ

υ χνος του φω ω το ο ος ο ε ως φο ο ο ο

ρος ο του Η λι ι ουου ου Προδρο ο μο ος ε ε

εν τη η η ε ρη η η μω με τα νο ει τε

πα α α α σι βο ο α τοις λα οι οισ και αι προ ο

κα θαι ρε σθε ε ι δου ου γαρ πα α ρε στι

Χρι ι στος εκ φθο ρα ας τον κο ο ο σμο ον λυ τρου με

νο ος

6  
| μερ το ο ον ε εξ ε φη νε ε συ υ υν πα

α ανολ βι ι ι ω η χω ω Πα α α τηρ ον



γα στρο ο ο ος ε εξ η η η ρε ευ ξα α α

το ναι φησιν ου ουου το ο ο ο ο ο ος συ υ υμ

φυ υ ης γο νο ος πε ε ε ε ε λω ων φω ται

γο ο ος ε εξ ω ρου σε εν α α αν θρω ω ω πω ων

γε ε ε νους Λο ο ο ο ο ο ο ο γο ο

ο ος τε μου ου ζω ων χορός θ' και βρο τος προ ο ο ο

ο μη η θει ει ει α

Ὁδὴ ζ'

Ἦχος Πά

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηρολόγιον  
2007 σ.127\*

Ν ε ε ους ευ σε ε βεις κα μι ι ι νω πυ

ρο ος προσ ο ο μι λησαν τα ας δι α συ ρι

ι ι ζο ο ο ον πνευ μα δρο σου ου α βλα βει ει ει εις

δι ι ε φυλα ξε ε καθ θει ου α αγ γε ε ε λου ου

συγ κα τα α βαα σις ο ο θεν εν φλο ο γι δρο

σι ζο ο με ε νοι ευ χα ρι ι ι ι στω ως α νε μελ

πο ον υ περ υ μνη η τε ο των πα τε ε ρων

Κυ ρι ι ος και Θε ο ος ευ λο ο γη το ο ο ο

ος ει

Ϸ φλε ξε ρει ει ει θρω ω ω ω τω ωων δρα α

κο ον τω ω ων τας κα α α α α ρα ας ο της κα

μι ι ι νου ου ουου τη η ην με ε ταρ σι ι ι ο ον

φλο ο ο ο ο γα νε ε ου ους φε ρου

ου ου σα α α αν ε ε ευ σε ε βει εις κα α α τευ

να α α α α σα ας τη ην δυ υσ κα α θε ε κτο

ον α χλυν ε εξ α α α μα αρ τι ι ι ι ι

ας ο ο ο ο λη η η ην πλυ υ νει ει ει

δε ε ε χορός α' τη η δρο σωτου Πνε ε ε ευ μα α

α το ος

ᾠδὴ η'

Ἦχος Πά

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.128\*

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου ου ου

ου με εν τον Κυ ρι ο ον

Μ υ στη η ρι ι ο ον πα ρα δο ξο ον η Βα βυ

λω νο ο ος ε δει ξε ε ε κα μι ι νος πη γα σα α

α σα δρο ο ο σον ο ο τι ρει θροι οις ε με ελ

λεν α α α υ λο ον πυρ εις δε χε ε σθαι αι

αι ο ο Ι ι ορ δα α α α νης και στε ε

ε γει ει ει ν σα αρ κι βα πτι ι ζο ο ο με ε νο

ον τον κτι ι ι ι στην ον ευ λο γου ου ου σι λα α

οι και υ περ υ υ ψου ου ου ου σιν ει εις πα αν

τας του ους αι ω ω ω ω νας

τας του ους αι ω ω ω ω νας

λευ θε ρα α α μεν η κτι ι σις γνω

λευ θε ρα α α μεν η κτι ι σις γνω

ω ω ρι ι ζε ε ε ε ται υι οι οι δε ε

ω ω ρι ι ζε ε ε ε ται υι οι οι δε ε

φω ω το ος οι πριν ε ε σχο ο ο τι σμε ε ε ε ε

φω ω το ος οι πριν ε ε σχο ο ο τι σμε ε ε ε ε

νοι οι μο νο ος στε ε να α α ζει ει ει του σχο

νοι οι μο νο ος στε ε να α α ζει ει ει του σχο

του ους ο ο ο προ ο στα α α α α της νυν

του ους ο ο ο προ ο στα α α α α της νυν

ε ε ευ λο ο γει ει ει τω συν το ο νως τον αι αι

ε ε ευ λο ο γει ει ει τω συν το ο νως τον αι αι

αι τι ι ι ι ον η περι ι ι ι ι ι ν τα

αι τι ι ι ι ον η περι ι ι ι ι ι ν τα

α λαι αι αι να α α των ε θνων πα α α α

α λαι αι αι να α α των ε θνων πα α α α

α γ κλη η ρι ι ι α α α α α α

α γ κλη η ρι ι ι α α α α α α

Καταβασίαι τῶν Θεοφανείων  
ὥδ' ἄ'

Ἦχος Πά

πρωτ. Κων. Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.119\*

**B** <sup>χ</sup> υ θου ου α νε κα λυ ψε ε πυ θμε ε ε ε

<sup>φ</sup>  
<sup>π</sup> να και δι α ξη ρα ας οι οι οι κει ει ει ους ε

<sup>φ</sup>  
<sup>π</sup> ε ελ κει εν α αυ τω κα τα κα λυ υ ψα ας α αν

<sup>π</sup> τι πα α α α λους ο κρα ται αι αι ος εν πο

<sup>α</sup>  
<sup>σ</sup> λε ε μοι οις Κυ ρι ι ος ο ο ο τι ι δε δο ο ξα

<sup>φ</sup>  
<sup>π</sup> σται αι

**C** <sup>z</sup> τει βει θα λα α ασ ση ης κυ μα του ου με ε

<sup>φ</sup>  
<sup>π</sup> ε νον σα α α α α λο ον η η πει ει ρο

<sup>13</sup> Εἰς τὰς καταβασίας ταύτας ἐπεφέραμεν οὐσιαστικωτέρας διορθώσεις πρὸς καλυτέραν ἀπόδοσιν τοῦ νοήματος καὶ σύντημσιν μουσικῶν τινῶν γραμμῶν.  
Γεράσιμος Μοναχὸς Ἁγιορείτης 14 Μαρτίου 2024 Λουκάς Λουκά

ον α α αυ θι ις Ισ ρα η ηλ δε ε ε δει ει γμε ε

ε ε ε νον με ε λα ας δε πο ο ο ο ον

το ος τρι στα τα ας Αι αι αι γυ υ πτι ι ι ι

ι ω ων ε κρυ υ ψε εν α α αρ δη ην υ δα το

ο στρω ω ω το ος τα α α α α φος ρω ω μη

η κρα ται αι α α δε ξι ας του ου ου ου ου Δε ε

σπο ο ο του

ῥδῆ γ'

Ἦχος Πά

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηολόγιον  
2007 σ.121\*

σχυ υ υ υν ο ο ο δι ι δους τοις βα σι λευ

σιν η μω ω ωων Κυ υ ρι ι ι ος και αι

κε ε ρας χρι στων α αυτου υ υ ψων Παρ θε ε νου ου

α α πο τι κτε ται αι μο λει δε προς το ο βα πτι ι σμα

δι ο πι στοι οι βο η ησω με ε ε ε ε ε ε

ε ε ε εν ουκ ε ε στιν α γι ι ος ως ο

Θε ο ο ος η η μων και ουκ ε η ε στι δι ι

και αι ο ο ος πλη ην σου Κυ υ ρι ι ι ε

σοι οι πα λαι αι ων εκ λε λυ υ με ε ε θα βρο

ο ο ο ο χων βο ρω ω ων λε ε ο ο ον

των συν τε θλα σμε ε ε νω ων μυ υ υ υ υ



λας α γαλ λι ω ω ω μεν και πλα τυ υ νω ω

ω μεν στο ο ο ο ο μα α λο ο γω ω πλε ε κοον

τες εκ λο ο ο γων με ε λω ω ω δι ι ι ι

ι ι αν ω των προς η η μα ας χορός α η η

δε ε ται δω ω ω ω ω ρη η μα α α των

Ὠδὴ δ'

Ἦχος Πά

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.122\*

α κη κο ο ε Κυ ρι ι ε φω ω νη η η

η ης σου ον ει ει ει ει ει πας φω νη βο ω ων

το ος ε ε εν τη η η ε ρη η η μω ο τε

ε βρο ον τη η η σας πο ολ λω ω ων ε ε πι ι

υ δα α α α α των τω σω ω ω ω μα αρ τυ υ υ

ρου με ε νο ος Υι υι υι ω ο ο λος γε γο ο

νωσ του πα ρο ον το ος Πνε ευ μα το ο ος δε ε

ε βο η σε ε συ ει Χρι ι στος Θε ου ου σο φι ι ι

ι α α και αι αι αι δυ υ να α α μιν

Π υρ σω ω κα α θα αρ θει ει ει εις μυ υ υ στι ι

κη ης θε ε ε ω ω ρι ι ι ι ι α ας υ

μνω ω ων προ ο φη η η τη η η ης τη η ην βρο ο

των και αι νου ου ουρ γι ι ι ι αν ρη γνυ υ



ω το πλα α α α α στου κα θαρ σι ω ω ν δε ως Θε

ο ο ο ος μη η δε ο ο με ε ε νος τω πε

σο ο ο ν τι κα θαι ρε ε ται αι αι αι ε ε εν τω ω

Ι ι ορ δα α α α α νη εν ω την ε χθρα αν κτει

ει ει νας υ περ ε χου σαν παν τα α νουν ει ρη η η

η η η νην χα ρι ι ι ι ζε ε ε ε ε ται

<sup>6</sup>ε χθρου ου ζο ο φω ω ω δους και βε βορ βο ρω με

ε νου ου ι ι ι ον κα θαρ σει Πνευ μα α τος

λε ε ε λου ου με ε ε ε ε νοι νε α αν

προ οσ ωρ μι ι σθη η η μεν α πλα νη τρι

ι ι ι ι βο ον α γου σαν α προσ ι ι το ον

ει ει εις θυ υ υ μη η δι ι ι αν μο ο

ο ο ο ο ο νοι οι οι οισ προσ ι ι τη η ην

χορὸς αἰ οι οισ Θε ε ος κα α α α α τη ηλ λα

α α γη

ᾠδὴς'

Ἦχος Πά

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.125\*

Η φω νη του Λο ο ο ο γου ου ο λυ

υ χνος του φω ω το ο ος ο ε ωσ φο ο ο ο

ρος ο του Η λι ι ουου ου Προδρο ο μο ος ε ε

εν τη η η ε ρη η η μω με τα νο ει ει ει

ει τε πασι βο α α α α τοις λα α οις και προ

κα θαι αι αι ρε ε ε ε σθε ι δου ου γαρ πα ρε ε

στι ι ι Χρι ι στος εκ φθο ρα ας τον κο ο ο σμο ον

λυ τρου με νο ος

6  
μερ το ο ον ε εξ ε φη νε συν παν ολ βι ι ι

ω ω η χω ω Πα α α τηρ ον γαστρο ο ο ος

ε εξ η η η ρε ευ ξα α α το ναι φη σι

ιν ου ου τος συμ φυ η ης γο νο ος πε ε ε ε ε

λω ων φω ταυ γο ο ος ε εξ ω ρου σε εν

α α αν θρω ω ω πω ων γε ε ε νους Δο ο

ο ο ο ο ο ο γο ο ο ος τε μου ου ζω ων

χορός 6' και βρο τος προ ο ο ο ο μη η θει ει ει α

ᾠδὴ ζ'

Ἦχος Πά

πρωτ. Κων. Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηολόγιον  
2007 σ.127\*

Ν ε ε ους ευ σε ε βεις κα μι ι ι νω πυ

ρο ος προσ ο ο μι λησαν τα ας δι α συ ρι

ι ι ι ι ζον πνευ μα δρο ο ο σου α βλα βει ει ει εις

δι ι ε φυλα ξε ε και θει ου α αγ γε ε ε λου συγ

κα α τα βα α σι ις ο ο θεν εν φλο ο γι δρο





χ λ υ υ ν ε ξ α α α μα αρ τι ι ι ι ι ας

ο ο ο ο λ η η η ην π λ υ υ ν ει ει ει δε ε

ε χορὸς ἀ τη η δρο σω του Πνε ε ε ευ μα α α

το ος

ᾠδὴ ἡ'

Ἦχος Πά

πρωτ. Κων. Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.128\*

α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου ου ου

ου με εν τον Κυ ρι ο ον

Μ υ στη η ρι ι ο ον πα ρα δο ξο ον η Βα βυ

λω νο ο ος ε δει ξε ε ε κα μι ι νος πη γα σα α

ασαδρο ο οσον ο οτι ρει θροι οισ ε μεελ

λεν α α α υ λοον πυρ εισ δε χε ε σθαι αι

αι ο ο Ι ι ορ δα α α α νης και στε ε ε

γει ειν σαρ κι ι βα πτι ζο ο με νο ον τον κτι ι ι

ι στην ον ευ λο γου ου ου σι λα α οι και υ περ

υ υ ψου ου ου ου σιν ει εις πα αν τας του ους αι ω ω

ω ω νας

Ελευθερα α α μεν η κτι ι σις γνω

ω ω ρι ι ζε ε ε ε ται υι οι οι δε ε

φω ω το ος οι πριν ε ε σχο ο ο τι σμε ε ε ε ε

νοι οι μο νο ος στε ε να α α ζει ει ει του σκο  
 του ους ο ο ο προ ο στα α α α α της νυν  
 ε ε ευ λο ο γει ει ει τω συν το ο νως τον αι αι  
 αι τι ι ι ι ον η πρι ιν τα α λαι αι αι  
 να α α των ε θνων πα α α α αγ κλη η ρι ι  
 ι α α α α α α

## ὠδή θ' τῆς ἑορτῆς

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

ὠδὴ θ' κανὼν α'

ἦχος β'

**Μ**εγάλυνον ψυχὴ μου, τὴν τιμιωτέραν, καὶ ἐνδοξοτέραν τῶν ἄνω στρατευμάτων.

**Ἄ**πορεῖ πᾶσα γλῶσσα, εὐφημεῖν πρὸς ἄξιαν, ἰλιγγιᾷ δὲ νοῦς καὶ ὑπερκόσμιος, ὕμνεῖν σε Θεοτόκε· ὅμως ἀγαθὴ ὑπάρχουσα, τὴν πίστιν δέχου· καὶ γὰρ τὸν πόθον οἶδας, τὸν ἔνθεον ἡμῶν· σὺ γὰρ χριστιανῶν εἶ προστάτις, σὲ μεγαλύνομεν.

**Μ**εγάλυνον, ψυχὴ μου, τὸν ἐν Ἰορδάνῃ ἐλθόντα βαπτισθῆναι.

**Δ**αυτὸ πάρεσο, Πνεύματι τοῖς φωτιζομένοις· νῦν προσέλθετε, ἄδε πρὸς Θεόν, ἐν πίστει λέγων φωτίσθητε· οὗτος ὁ πτωχὸς ἐκέκραξεν Ἀδὰμ ἐν πτώσει· καὶ γὰρ αὐτοῦ εἰσήκουσε Κύριος ἐλθὼν, ρέιθροις τοῦ Ἰορδάνου, φθαρέντα δὲ ἀνεκαίνισεν.

**Μ**εγάλυνον, ψυχὴ μου, τὸν ὑπὸ Προδρόμου τὸ βάπτισμα λαβόντα.

Ὁ Ἡσαΐας λούσασθε, καὶ καθάρθητε φάσκει· τὰς πονηρίας ἔναντι, ἀφέλεσθε Κυρίου· οἱ διψῶντες, ὕδωρ ἐπὶ ζῶν πορεύεσθε· ῥανεῖ γὰρ ὕδωρ καινοποιὸν Χριστός, τοῖς προστρέχουσιν αὐτῷ ἐν πίστει, καὶ πρὸς ζωὴν τὴν ἀγήρω, βαπτίζει Πνεύματι.

Μεγάλυον, ψυχὴ μου, τὸν ἐκ τῆς πατρῴας φωνῆς μαρτυρηθέντα.

Συντηρώμεθα χάριτι, πιστοὶ καὶ σφραγιδι· ὡς γὰρ ὄλεθρον ἔφυγον, φλιᾶς Ἑβραῖοι πάλαι αἰμαχθείσης· οὕτω καὶ ἡμῖν, ἐξόδιον τὸ θεῖον τοῦτο, τῆς παλιγγενεσίας λουτήριον ἔσται· ἔθεν καὶ τῆς Τριάδος, ὀφόμεθα φῶς τὸ ἄδυτον.

ὦδὴ θ' κανὼν β'

ἦχος β'

Σήμερον ὁ Δεσπότης, κλίνει τὸν ἀρχένα χειρὶ τῆ τοῦ Προδρόμου.

Ὡ τῶν ὑπὲρ νοῦν, τοῦ τόκου σου θαυμάτων! Νύμφη πάνταγνε, Μητέρα εὐλογημένη· δι' ἧς τυχόντες παντελοῦς σωτηρίας, ἐπάξιον κροτοῦμεν ὡς εὐεργέτη, δῶρον φέροντες ὕμνον εὐχαριστίας.

Σήμερον Ἰωάννης, βαπτίζει τὸν Δεσπότην ἐν ρεῖθροις Ἰορδάνου. ✠

Δόξα Πατρὶ καὶ Υἱῷ καὶ ἀγίῳ Πνεύματι.

Μεγάλυον ψυχὴ μου, τῆς τρισυποστάτου, καὶ ἀδιαιρέτου, Θεότητος τὸ κράτος.

Ἰδμεν τὰ Μωσεῖ τῇ βᾶτῳ δεδειγμένα, δεῦρο ξένοις, θεσμοῖσιν ἐξειργασμένα. Ὡς γὰρ σέσωσται, πυρφοροῦσα Παρθένος, σελασφόρον τεκοῦσα τὸν εὐεργέτην, Ἰορδάνου τε, ρεῖθρα προσδεδεγμένα.

Καὶ νῦν καὶ ἀεὶ καὶ εἰς τοὺς αἰῶνας τῶν αἰώνων, ἀμήν.

Μεγάλυον ψυχὴ μου, τὴν λυτρωσαμένην, ἡμᾶς ἐκ τῆς κατάρας.

Χρῆεις τελειῶν, τὴν βρότειον οὐσίαν, ἀναξ ἀναρχε, Πνεύματος κοινωνία, ῥοαῖς ἀχράντοις, ἐκκαθάρας καὶ σκότους, ἰσχὺν θριαμβεύσας τε, τὴν ἐπηρμένην, νῦν εἰς ἄληκτον, ἐξαμείβεαι βίον.

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Κανὼν α' κυρίου Κοσμᾶ

ἦχος Πά

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.283#

Μ ε γ α λ υ ν ο ν ψ υ χ η μου τ η ν τ ι μι ω τε

ραν των α νω στρα τευ μα των π

Α πο ρει πα α σα γλωσ σα ευ φημει ει ν προς α ξι αν

ι λιγ γι α δε νους και υ περ κο σμι ος υ μνει ν σε Θε

ε ο το κε ο μως α γα θη υ παρ χου σα την πι στι ν π

δε χου και γαρ τον πο θον οι δας τον εν θε ον η μων Δ ς

υ γαρ χρι στι α νων ει προ στα τισ σε ε μεγα λυ νο μεν π

Μ ε γα λυ νον ψυ χη μου τον εν Ι ορ δα α

νη ελ θον τα βα πτι σθη ναι π

Δ α βιδ πα ρε σο πνευ μα τι τοις φω τι ι ζο με νοις π

νυ ν προσ ελ θε τε α δε προς Θε ον εν πι στει λε ε γω ων ρ

φωτισθητε <sup>π</sup> ουτος ο πτωχος ε κε κραξεν Αδαμ εν

πτωσει και γαρ αυτου εισ ηκουσε Κυριος ελθων <sup>Δ</sup>

ρει ειθροισ του Ιορδανου φθαρε ενταδεαν ε και νισεν <sup>π</sup>

**Μ**εγαλυνον ψυχημου τον υπο Προδρομου το

βαπτισμα λαβοντα <sup>π</sup>

**Ο** Ησας λουσασθε και καθαρθηητε φασκει

τας πονηριας εναντια φελεσθε Κυρι

<sup>π</sup> ου οι διψωντες υδωρε πιζων πορευεσθε <sup>π</sup>

ρα νει γαρ υδωρ και νοποιον Χριστος <sup>Δ</sup> τοις προστρε

χουσιν αυτω ενπιστει <sup>π</sup> και προς ζωην την αγηρω

βαπτίζει Πνευματι

Μεγαλυνον ψυχη μου ου τον εκ της πατρωας φωνης

μαρτυρηθεντα

Κυνηρωωμεθα χαριτι πιστοι οι και σφραγιδι

ως γαρ ο λεθρον εφυγον φλιας Εβραι οι παλαι αι

αιμαχθεισης ουτω και ημιν εξοδιον τοθειοντου

το της παλιγγενεσι αςλου τη ριι ον εσται

ενθεν και της Τριαδος ο ψομεθαφωστο αδυτον

Κανών 6'

ιαμβικός

Ἦχος Πά

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Ειρμολόγιον 1903 σ.283#

Ϟ η με ρον ο Δε σπο τη ης κλι νει τον αυ χε ε να

χει ρι τη του Προδρομου π B8

Ω των υ περ νουν του το κου σου θαυ μα α των A

νυμ φη παν αγνε μη τερ ευ λο γη με ε ε νη δι ης τυ

χο ον τες παν τε λους σω τη ρι ι ας ε πα A

ξι ον κρο του μεν ως ε ευερ γε τη δω ρον φε ρον τες

z' υ μονον ευ χα ρι στι ας ε Πα

Ϟ η με ρον Ι ω αν νης βα πτι ζει τον Δε σπο τη ν εν

ρει θροις Ι ορδα νου π B8

Ω των υ περ νουν του το κου σου θαυ μα α των A



νυμφή παν αγνε μητέρ ευ λο γη με ε ε νη δι ης τυ

χο ον τες παν τε λους σω τη ρι ι ας ε πα

ξι ον κρο του μεν ως ε ευερ γε τη δω ρον φε ρον τες

υ μονν ευ χα ρι στι ας

Δ ο ξα Πα τρι και Υι ω και Α γι ω Πνευ μα τι

Μ ε γα λυ νον ψυ χη μου ου της τρις υ πο στα α

του και α δι αι ρε του Θε ο τη τος τοκρατος

Ι δ μεν τα Μω σει τη βα τω δε δει γμε ε να δευ ρο

ξε νοις θε σμοι σιν ε χει ειρ γα σμε να ως γαρ σε σω σται

πυρ φο ρου σα Παρ θε ε νος σε λα σφο ρον τε κου σα

τον ευ ερ γε την Ι ορ δα νου τε ρει θρα προς

δε δε γμε να Πα

**Κ** αι νυν και α ει και εις τους αι ω νας των αι ω νων

α μην π

**Μ** ε γα λυ νον ψυ χη μου την λυ τρω σα με νην η

μας εκ της κατα ρας Βϛ

**Χ** ρι εις τελει ων την βρο τει ον ου σι ι αν α

ναξ α ναρχε Πνευ μα τος κοι νω νι ι α ρο αις α χρα

αν τοις εκ θα ρας και σκο ο τους ι σχυν θρι αμ

βευ σας τε την ε ε πηρ με νην νυν εις α λη κτον εξ α μει

βε ε αι βι ον

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Κανών α'

Ἦχος Πά

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηρολόγιον  
2007 σ.130\*

Με γα λυ νον ψυ χη μου ουτην τι μι ω τε ραν των α

νω στρα τευ μα των

α πο ρει πα α σα γλωσ σα ευ φη μειν προς α ξι

αν ι λιγ γι α δε νους και υ περ κο σμι ος υ μνειν

σε Θε ε ο το κε ο μως α γα θη υ παρ χου σα την

πι στιν δε χου και γαρ τον πο θον οι δας τον εν θε ον

η μων σου γαρ χριστιανων ειπροστατις σε

ε μεγαλυνομεν

Μεγαλυνον ψυχη μου τον εν Ιορδανη ελ

θοντα βαπτισθη ναι

Δαβιδ παρесо Πνευματι τοις φωτι ιζομεν οις

πουν προσελθε τε αδε προς Θεον εν πιστει λεεγω

ων φωτισθη τε ουτος οπτωχος ε κεκραξεν Α

δαμ ενπτωσει και γαρ αυτου εισηκουσε Κυριος

ελθων ρειειθροις του Ιορδανου φθαρεντα δεεα

νε και νισε

Μεγαλυνον ψυχη μου ου τον υπο προδρο μου

το βαπτισμα λαβον τα

Ο Ησαϊας λουσασθε και καθαρθη η τε φα

σκει τας πονηριας εν αντιαφελεσθε

Κυριοι διψωντες υδωρε πιζων πορευε

σθε ρανει γαρ υδωρ και νοποιον Χριστος τοις

προστροχουσιν αυτω ενπιστει και προς ζωην την

αγηρω βαπτισει Πνευματι

Μεγαλυνον ψυχη μου ου τον εκ της πατρωας φωνης

μαρτυρηθη τα

Ϟυν τη ρω ω με θα χα ρι τι πι στοι οι και σρα γι δι π

ως γαρ ο λεθρον ε φυγον φλι ας Ε βραι οι πα λαι αι

αι μα χθει σης π ου τω και η μιν εξ ο δι ον το θει ον

του το π της πα λιγ γε νε σι ας λου τη ρι ι ον ε

σται π ε εν θεν και της Τρι α δος ο ψο με θα φως το α δυ

π  
τον

Κανών 6'

ιαμβικός

Ἦχος π Πά

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.131\*

Ϟη με ρον ο Δε σπο τη ης κλι νει τον αυ χε ε να

χει ρι τη του Προδρομου π

**Ω** <sup>χ</sup>των υπερ νουν του το κου σου θαυ μα α των

νυμ φη παν α γνε Μη τερ ευ λο γη με ε ε νη δι

ης τυ χο ον τες παν τε λους σω τη ρι ι ας

ε πα ξι ον κρο του μεν ως ε ευ ερ γε τη δω ρον

φε ρον τες υ μνον ευ χα ρι στι ας

**Σ** η με ρον Ι ω αν νης βα πτι ζει τον Δε σπο την εν

ρει θροις Ι ορδα νου <sup>το ιδιο</sup>

**Ω** <sup>χ</sup>των υπερ νουν του το κου σου θαυ μα α των

νυμ φη παν α γνε Μη τερ ευ λο γη με ε ε νη δι

ης τυ χο ον τες παν τε λους σω τη ρι ι ας

ε πα ξι ον κρο του μεν ως ε ευ ερ γε τη δω ρον

φε ρον τες υ μνον ευ χα ρι στι ας

Δ ο ξα Πα τρι και Υι ω και Α γι ω Πνευ μα τι

Μ ε γα λυ νον ψυ χη μου ου της τρισ υ πο στα α

του και α δι αι ρε του Θε ο τη τος το κρα

τος

Ι δμεν τα Μω σει τη βα τω δε δει γμε ε να δευ

ρο ξε νοις θε σμοι σιν εξ ει ειρ γα σμε να ως γαρ σε

σω σται πυρ φο ρου σα παρ θε ε νος σε λα σφο ρον

τε κου σα τον ε ευ ερ γε την Ι ορ δα νου τε ρει



θρα προσ δε δε γμε να

**Κ** αι νυν και α ει και εις τους αι ω νας των αι ω νων

α μην

**Μ** ε γα λυ νον ψυ χη μου την λυ τρω σα με νην η

μας εκ της καταρας

**Χ** ρι εις τελει ων την βρο τει ον ου σι ι αν

α ναξ α ναρχε Πνευ μα τος κοι νω νι ι α ρο αις α

χραν τοις εκ κα θα α ρας και σκο τους ι σχυν θρι αμ

βευ σας τε την ε ε πηρ με νην νυν εις α λη κτον εξ

α μει βε ε αι βι ον

# Καταβασία Θ' φδῆς

## ἦχος β'

Μεγάλυνον ψυχῆ μου, τὴν τιμιωτέραν, καὶ ἐνδοξοτέραν τῶν ἄνω στρατευμάτων.

Ἄπορεῖ πᾶσα γλῶσσα, εὐφημεῖν πρὸς ἀξίαν, ἰλιγγιᾷ δὲ νοῦς καὶ ὑπερκόσμιος, ὕμνεῖν σε Θεοτόκε· ὁμως ἀγαθὴ ὑπάρχουσα, τὴν πίστιν δέχου· καὶ γὰρ τὸν πόθον οἶδας, τὸν ἔνθεον ἡμῶν· σὺ γὰρ χριστιανῶν εἶ προστάτις, σὲ μεγαλύνομεν.

Μεγάλυνον ψυχῆ μου, τὴν λυτρωσαμένην, ἡμᾶς ἐκ τῆς κατάρας.

Ὡ τῶν ὑπὲρ νοῦν, τοῦ τόκου σου θαυμάτων! Νύμφη πάναγνε, Μῆτηρ εὐλογημένη δι' ἧς τυχόντες παντελοῦς σωτηρίας, ἐπάξιον κροτοῦμεν ὡς εὐεργέτη, δῶρον φέροντες ὕμνον εὐχαριστίας.

Ἀργαῖ

Χουρμουζίου Χαρτοφύλακος

Πέτρου Λαμπαδαρίου

Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Παπαγιάννη)

Σύντομοι

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

## Σύντομος

### Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Ῥδῆ θ'

ἦχος Πά

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.283#

Μ ε γ α λ υ ν ο ν ψ υ χ η μ ο υ τ η ν τ ι μ ι ω τ ε

ρ α ν τ ω ν α ν ω σ τ ρ α τ ε υ μ α τ ω ν

Α π ο ρ ε ι π α α σ α γ λ ω σ σ α ε υ φ η μ ε ι ε ι ν π ρ ο σ α ξ ι α ν

ι λιγ γι α δε νους και υ περ κο σμι ος υ μνειν σε Θε

ε ο το κε ο μως α γα θη υ παρ χου σα την πι στιν

δε χου και γαρ τον πο θον οι δας τον εν θε ον η μων

συ υ γαρ χρι στι α νων ει προ στα τις σε ε μεγα λυ νο

μεν

Με γα λυ νον ψυ χη μου την λυ τρω σα με νην η

μας εκ της κατα ρας

ἱαμβική

Ἦχος Ββ

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Ειρμολόγιον 1903 σ.285#

ων υ περ νουν του το κου σου θαυ μα α των

νυμ φη παν α γνε μη τερ ευ λο γη με ε ε νη δι ης τυ

χο ον τες παν τε λους σω τη ρι ι ας ε πα

ξι ον κρο του μεν ως ε ευερ γε τη δω ρον φε ρον τες

υ μονον ευ χα ρι σι ι α α α ας

Ἄεθ' ἡ

Χουρμουζίου Χαρτοφύλακος

Ῥδὴ θ'

Ἦχος Πά

Χουρμουζίου Χαρτοφύλακος  
Ειρμολόγιον 1825 σ.53#

Μ ε γα α λυ νον ψυ χη η η η η μου

ου τη ην τι μι ι ι ω ω τε ε ε ε ρα αν

και αι ε εν δο ξο ο τε ε ε ραν τω ων α α νω

στρα α τευ μα α α α των

α πο ρει πα α α σα γλω ω ωσ σα ε

Ευφημειειειεινπροοςαξιιιαν

ιλιγγιαααδεεεενουουςκαιυ

πεερκοσμιιωςυυμνειειεινσεεθεεο

τοοοοοκεομωσαγαθηυυυπαρχουου

σαατηηηνπιιιστινδεεεχουκαιγα

αρτονποθονοιοιοιοιδααστοονεεεν

θεεεοονηηημωνσυυγαρχρι

στιααωνειειπροοσταατιςσεεεμεεγα

λυνομεεν

**Μ**εγααλυνονψυυχηηηηημου

ου τη ην λυ τρω ω ω σα α με ε ε ε νη ην η

η μα ας εκ τη ης κα τα α α α ρας

ἱαμβική

Ἦχος Β̅ϛ̅

Χουρμουζίου Χαρτοφύλακος  
Ειρμολόγιον 1825 σ.55#

ω τω ω ω νν υ υ υ πε ερ νου ου ου ουν του

το κου σου ου ου θαυ μα α α α α τω νν Νυ

υ υμ φη η πα αν α α α γνε ε ε Μη τε

ερ ευ λο ο ο γη η με ε ε ε ε νη δι

ης τυ χο ο ο ον τε ε ε ε ε ε ες πα α αν τε ε

λου ους σω ω ω τη ρι ι ι ι ι α ας ε ε

πα ξι ον κρο ο του ου ου με εν ω ω ως ε ε ε ευ

ερ γε ε ε τη δω ω ω ω ρο ο ο ον φε  
 ε ρο ο ον τε ε ες υ υ μνο ον ευ χα α α  
 α α ρι ι στι ι ι α α α α α ας

Πέτρου Λαμπαδαρίου

ῥοδῆ θ'

Ἦχος Πά

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2001 σ.133\*

**Μ** ε γα α λυ νον ψυ υ χη η η η μου ου  
 τη ην τι ι μι ω ω τε ε ε ραν τω ων α α νω  
 στρα α τευ μα α α α των  
**Α** πο ρει πα α α σα γλω ω ω σ σα ε ευ  
 φη η μει ει ει ει ν προ ος α ξι ι ι ι αν ι

λιγ γι α α α δε ε ε ε νου ους και υ πε ερ

κο σμι ι ος υ υ μνει ει ει ν σε ε Θε ε ο το ο ο

ο κε ο μως α γα θη υ υ υ παρ χου ου σα α

τη η ην πι ι ι στιν δε ε ε χου και γα αρ

τον πο θο ον οι οι οι οι δα ας το ον ε εν θε ε

ε ο ον η η η μων συ υ γαρ χρι στι α α

νω ων ει ει προ στα α α της σε ε ε με ε γα λυ νο

με εν

η με ε ρον ο Δε σπο ο ο ο τη ης κλι

ι νει ει ει το ο ον αυ χε ε ε να χει ρι ι



ι τη του ου Προδρο ο ο ο μου

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2001 σ.134\*

ω τω ω ωων υ πεερ νου ου ου ουντου το κου ου

σου ου ου θαυμα α α α α τωων Νυ υ υμ

φη η παν α α α γνε Μη τεερ ευ λο ο ο

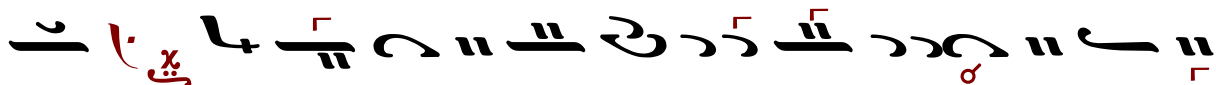
γη η μεεε εεε νη δι ης τυ χο ο ο ον τε


εεε εεεσ πα αν τε ε λου ους σω ω ω τη

ρι ι ι ι ι α ας εεε παξι ι ο ον κρο ο του

ου ου με εν ω ω ως εεε ευ εερ γε εεε τη

δω ω ω ω ρο ο ο ον γεε ρο ο ον τεε


  
 ες υ υ μον ον ευ χα α α α α ρι ι στι ι



  
 ι α α α α α ας


Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Παπαγιάννη)


ᾠδὴ θ'

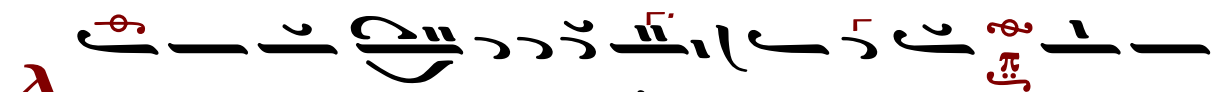
Ἦχος Πά

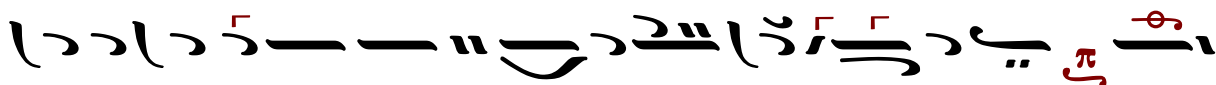
πρωτ. Κων. Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2001 σ.133\*


  
**Μ** ε γα α λυ νον ψυ υ χη η η η μου ου


  
 τη ην τι ι μι ω ω τε ε ε ραν τω ων α α νω


  
 στρα α τευ μα α α των


  
**Α** πο ρει πα α α σα γλω ω ω σ σα ε ευ


  
 φη η μει ει ει ει εν προ ος α ξι ι ι ι αν ι


  
 λιγ γι α α α δε ε ε ε νου ους και υ πε ερ

χο σμι ι ος υ υ μνει ει ει ν σε ε Θε ε ο το ο ο

ο κε ο μως α γα θη υ υ υ παρ χου ου σα α

τη η ην πι ι ι στιν δε ε ε χου και γα αρ

τον πο θο ον οι οι οι οι δα ας το ον ε εν θε ε

ε ο ον η η η μων συ υ γαρ χρι στι α α

νω ων ει ει προ στα α α της σε ε ε με ε γα λυ νο

με εν

η με ε ρον ο Δε σπο ο ο ο τη ης κλι

ι νει ει ει το ο ον αυ χε ε ε να χει ρι ι

ι τη του ου Προ δρο ο ο ο μου

ω τω ω ωων υ πε ερ νου ου ου ουντου το κου ου

σου ου ου θαυ μα α α α α τω ων Νυ υ υμ

φη η παν α α α γνε Μη τε ερ ευ λο ο ο

γη η με ε ε ε ε νη δι ης τυ χο ον τε

ες παν τε λου ους σω ω ω τη ρι ι ι ι ι α

ας ε ε πα ξι ι ο ον κρο ο του ουου με εν ω ω

ως ε ε ευ ε ερ γε ε ε τη δω ω ω ρο ον φε

ε ρο ο ον τε ες υ υ μνο ον ευ χα α α α

α ρι ι στι ι ι α α α α α ας

# Τῶν Θεοφανείων, πεζαί

2-5 Ιανουαρίου

## ἤχος β'

- α Βυθοῦ ἀνεκάλυψε πυθμένα, καὶ διὰ ξηρᾶς οἰκείους ἔλκει, ἐν αὐτῷ κατακαλύψας ἀντιπάλους, ὁ κραταίος, ἐν πολέμοις Κύριος, ὅτι δεδόξασται.
- γ Ἰσχὺν ὁ διδούς, τοῖς βασιλεῦσιν ἡμῶν Κύριος, καὶ κέρας χρηστῶν αὐτοῦ ὑψῶν, Παρθένου ἀποτίκτεται, μολεῖ δὲ πρὸς τὸ βάπτισμα· διὸ πιστοὶ βοήσωμεν· οὐκ ἔστιν ἅγιος, ὡς ὁ Θεὸς ἡμῶν, καὶ οὐκ ἔστι δίκαιος, πλήν σου Κύριε.
- δ Ἀκήχοε Κύριε φωνῆς σου, ὃν εἶπας· φωνὴ βοῶντος ἐν ἐρήμῳ ὅτε ἐβρόντησας πολλῶν ἐπὶ ὑδάτων, τῷ σῶ μαρτυρούμενος Υἱῷ, ὅλος γεγονώς τοῦ παρόντος, Πνεύματος δὲ ἐβόησε· σὺ εἶ Χριστός, Θεοῦ σοφία καὶ δύναμις.
- ε Ἰησοῦς ὁ ζωῆς ἀρχηγός, λῦσαι τὸ κατάκριμα ἣκει, Ἀδὰμ τοῦ πρωτοπλάστου καθαρσίων δέ, ὡς Θεὸς μὴ δεόμενος, τῷ πεσόντι καθαίρεται ἐν τῷ Ἰορδάνῃ· ἐν ᾧ τὴν ἔχθραν κτείνας, ὑπερέχουσαν πάντα νοῦν, εἰρήνην χαρίζεται.
- ς Ἡ φωνὴ τοῦ Λόγου, ὁ λύχνος τοῦ φωτός, ὁ ἑωσφόρος, ὁ τοῦ ἡλίου Πρόδρομος, ἐν τῇ ἐρήμῳ. Μετανοεῖτε, πᾶσι βοᾶ τοῖς λαοῖς, καὶ προκαθαίρεσθε· ἰδοὺ γὰρ πάρεστι Χριστός, ἐκ φθορᾶς τὸν κόσμον λυτρούμενος.
- ζ Νέους εὐσεβεῖς, καμίνῳ πυρὸς προσομιλήσαντας, διασυρίζον πνεῦμα δρόσου, ἀβλαβεῖς διεφύλαξε, καὶ θείου ἀγγέλου συγκατάβασις· ὅθεν ἐν φλογὶ δροσιζόμενοι, εὐχαρίστως ἀνέμελλον· ὑπερύμνητε, ὁ τῶν πατέρων Κύριος, καὶ Θεὸς εὐλογητὸς εἶ.

Αἰνοῦμεν, εὐλογοῦμεν καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον.

- η Μυστήριον παράδοξον, ἡ Βαβυλῶνος ἔδειξε κάμιμος, πηγάσασα δρόσον, ὅτι ρεῖθροις ἔμελλεν, αἴθλον πῦρ εἰσδέχασθαι ὁ Ἰορδάνης, καὶ στέγειν σαρκί, βαπτιζόμενον τὸν κτίστην, ὃν εὐλογοῦσι λαοί, καὶ ὑπερυψοῦσιν, εἰς πάντας τοὺς αἰῶνας.

Ἀργαί

Πέτρου Λαμπαδαρίου

Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Παπαγιάννη)

Σύντομοι

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

## Σύντομοι

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

**Β** υ θου α νε κα λυ ψε πυθμε να και δι α ξη

ρας οι κει ει ους ελ κει εν αυ τω κα τα κα λυ ψας

αν τι πα λους ο κρα ται ος εν πο λε μοις Κυ ρι ος

ο ο τι δε δο ξασται

ῥδὴ γ'

**Ι** σχυν ο δι δους τοις βα σι λευ σιν η μων Κυ ρι ος

και κε ρας χρι στων αυ του υ ψων Παρ θε νου α α πο τι κτε

ται μο λει δε προς το βα πτι σμα δι ο πι στοι βο η

σω μεν ουκ ε στιν α γι ος ως ο Θε ος η μων

χορὸς α'

και ουκ ε στι δι και ος πλην σου Κυ ρι ε

ῥδὴ δ'

**Α** κη κο α Κυ ρι ε φω νη ης σου ον ει πας φω νη

βο ων τος ε εν ε ρη μω **π** ο τε ε βρον τη σας πολ λων

ε πι υ δα των τω σω μαρ τυ ρου μενος Υι ω ο λος γε

γο νως του πα ρον τος Πνευ ματος δε ε ε βο η σε **π** συ ει

Χρι στος Θε ου σο φι ι α και δυ ναμις **π** ῶδῆ ε'

**Ι** η σους ο ζω η ης αρ χη γος **Δ** λυ σαι το κα

τα κρι μα η κει **π** Α δαμ του πρω το πλα στου κα θαρ

σι ων δε ως Θε ο οςμη δε ο μενος **π** τω πε σον

τι κα θαι ρεται εν τω **π** Ι ορ δα νη εν ω την ε

χθραν κτει ει ει νας **Δ** **δ** υ περ ε ε χου σαν παν τα νουν ει

ρη η νη η χ α ρ ι ζ ε τ α ι π

ὠδὴ στ'

Η φω νη του Λο ο γου ο λυ χνος του φω τος ο

ε ω σφο ρος ο του Η λι ου προ δρο μος εν τη ε ρη

μω με τα νο ει τε πα σι βο α α τοις λα οις και

προ ο κα θαι ρε σθε ι δου γαρ παρ ε στι Χρι στος εκ

φθο ρας τον κο ο σμον λυ τρου μενος π

ὠδὴ ζ'

Ν ε ους ευ σε βεις κα μι ι νου πυ ρος προσ ο ο μι λη

σαν τας δι α συ ρι ζον Πνευ μα δρο σου α βλα βεις δι ε

φυ λα ξε και θει ει ου Αγ γε λου συ υγ κα τα βα σις π

ο θεν εν φλο γι δρο σι ζο ο μενοι ευ χα ρι ι στως





# Ἄργαι

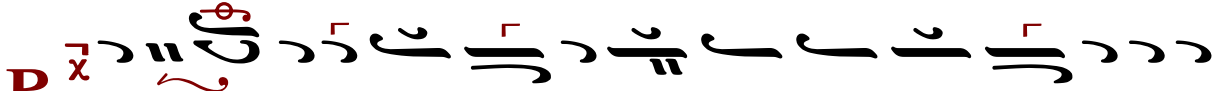
## Πέτρου Λαμπαδαρίου

Εἰς τὰς καταβασίας ταύτας ἐπέφεραμεν ἐλαφρὰς τινὰς μεταβολὰς πρὸς ἀποφυγὴν παρατονησῶν καὶ ἀστόχου χωρισμοῦ λέξεων. [πρωτ.Κων.Παπαγιάννης]

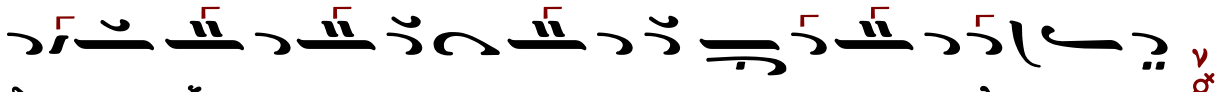
Ῥοδὴ α'


Ἦχος Πά

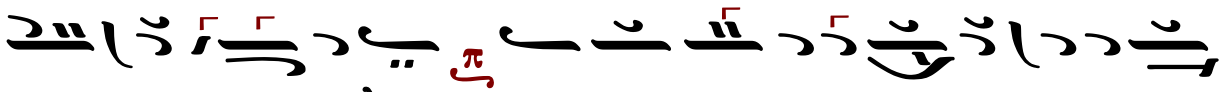
πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.119\*

**B**   
υ υ υ υ υ θου ου ου ου α νε κα α α α λυ


  
υ ψε πυ θμε ε ε ε ε ε να α α α και

  
δι ι α ξη η ρα ας οι κει ει ους ε ε ε ε ελ κει ει

  
εν αυ τω ω κα τα κα α λυ υ υ ψα ας α αν

  
τι πα α α α λους ο κρα ται αι αι ο ο ο ο ο

  
ος εν πο λε ε μοις Κυ υ ρι ι ος ο ο ο ο

  
τι δε ε δο ο ο ο ο ο ο ο ο ο ξα σται

Ῥοδὴ γ'

σχυ υ υ υν ο ο ο δι ι δους τοις βα σι λε

ευ σι εν η η μων Κυ ρι ο ος και αι κε ε ρας χρι στων

α αυ του υ υ ψων Παρ θε ε νου ου α α πο τι κτε

ται αι μο λει δε προς το ο βα πτι ι σμα δι ο πι στοι

οι βο η ησω με ε ε ε ε ε ε ε εν

ουκ ε ε στιν α γι ι ος ω ω ωως ο ο Θε

ος η η μων και ουκ ε ε στι δι ι και αι ο ο

ος χορὸς ἀ πλη ην σου Κυ υ ρι ι ι ε

α κη κο ο ε Κυ ρι ι ε φω ω νη η η η

ης σου ον ει ει ει ει ει πας φω νη βο ω ων το ος

ε ε εν τη η η ε ρη η η μω ο τε ε

βρο ον τη η η σας πο ολ λω ω ων ε ε πι ι

υ δα α α α α των τω σω ω ω ω μα αρ τυ υ υ

ρου με ε νο ος Υι υι υι ω ο ο λος γε γο ο

νωσ του πα ρο ον το ος Πνε ευ μα το ο ος δε ε

ε βο η σε ε συ ει Χρι ι στος Θε ου ου σο φι ι ι

ι α α και αι αι αι δυ υ να α α μεις ᾠδὴ ε'

η σουσ ο ζω η η η ησ αρ χη η γος λυ υ

σαι αι το κα α τα κρι μα η η η κει Α α δα α αμ

του ου πρω ω το πλα α α α α στου κα θαρ σι ω ων

δὲ ὡς Θεοῦ ὁ ὁ ὁ ὁς μὴ ἡ δὲ ὁ ὁ με ἐ ἐ νος

τῶ πε σο ὀ ον τι κα θαί ρε ἐ ται αἰ αἰ αἰ ἐ ἐ

ἐν τῶ Ἰ ἰ ορ δα α α α α νη ἐν ὠ τῆν ἐ

χθρα ἀν κτει εἰ εἰ νας ὑ περ ἐ ἐ ἐ ἐ χου οὐ σάν

παν τὰ ἀ νουν εἰ ρη ἡ ἡ ἡ νη ἡν χα ἀ ρι ἰ ἰ

ἰ ἰ ἰ ἰ ἰ ζε ται

Ὁδὴς'

**Η** φω νη του Λο ο ο ο γου ου ο λυ

υ χνος του φω ω το ο ος ο ε ωσ φο ο ο ο

ρος ο του Η λι ἰ ουου ου Προ δρο ο μο ος ἐ ἐ

ἐν τῆ ἡ ἡ ἐ ρη ἡ ἡ μω με τα νο εἰ τε

πα α α α σι βο ο α τοις λα οι οις και αι προ ο

κα θαι ρε σθε ε ι δου ου γαρ πα α ρε στι

Χρι ι στος εκ φθο ρα ας τον κο ο ο σμο ον λυ τρου με

νο ος

ᾠδὴ ζ'

**N** ε ε ους ευ σε ε βεις κα μι ι ι νω πυ

ρο ος προσ ο ο μι λησαν τα ας δι α συ ρι

ι ι ζο ο ο ον πνευ μα δρο σου ου α βλα βει ει ει εις

δι ι ε φυ λα ξε ε καθ θει ου α αγ γε ε ε λου ου

συ γ κα τα α βα α σις ο ο θεν εν φλο ο γι δρο

σι ζο ο με ε νοι ευ χα ρι ι ι ι στω ως α νε μελ

π ο ν υ π ε ρ υ μ ν η η τ ε ο τ ω ν π α τ ε ε ρ ω ν

Κυ ρι ι ο ς και Θε ο ο ς ευ λο ο γ η τ ο ο ο ο

ο ς ει

ᾠδὴ η'

Α ι ν ο υ μ ε ν ευ λο γ ο υ μ ε ν και π ρ ο ς κ υ ν ο υ ο υ

ο υ μ ε εν τ ο ν Κυ ρι ο ο ν

Μ υ σ τ η η ρι ι ο ο ν πα ρ α δ ο ξ ο ο ν η Β α β υ

λ ω ν ο ο ς ε δει ξ ε ε ε κ α μ ι ι ν ο ς π η γ α σ α α

α σ α δ ρ ο ο ο σ ο ν ο ο τ ι ρ ει θ ρ ο ι ο ι ς ε μ ε ε λ

λ ε ν α α α υ λ ο ο ν π υ ρ ει ς δ ε χ ε ε σ θ α ι α ι

αι ο ο Ι ι ο ρ δ α α α α ν η ς και σ τ ε ε

ε γει ει ει ν σα αρ κι βα πτι ι ζο ο ο με ε νο

ον τον κτι ι ι ι στην ον ευ λο γου ου ου σι λα α

οι και υ περ υ υ ψου ου ου ου σιν ει εις πα αν

τας του ους αι ω ω ω ω να α α ας

### Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Παπαγιάννη)

εις τας καταβασιας ταυτας εφεφεραμεν ουσιαστικωτερας διορθωσεις προς καλυτεραν αποδοσιν του νοηματος και συντημσιν μουσικων τινων γραμμων. [πρωτ.Κων.Παπαγιαννης]

ᾠδὴ α'

Ἦχος Πά

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.119\*

**Β** χ υ θου ου α νε κα λυ ψε ε πυ θμε ε ε ε

να και δι α ξη ρα ας οι οι οι κει ει ει ους ε

ε ελ κει εν α αυ τω κα τα κα λυ υ ψα ας α αν

τι πα α α α λους ο κρα ται αι αι ος εν πο



λε ε μοι οἰς Κυ ρι ι ος ο ο ο τι ι δε δο ο ξα

σται αι

Ῥδλγ'

σχυ υ υ υν ο ο ο δι ι δους τοις βα σι λευ

σιν η μω ω ωων Κυ υ ρι ι ι ος και αι

κε ε ρας χρι στων α αυ του υ υ ψων Παρ θε ε νου ου

α α πο τι κτε ται αι μο λει δε προς το ο βα πτι ι σμα

δι ο πι στοι οι βο η ησω με ε ε ε ε ε ε

ε ε ε εν ουκ ε ε στιν α γι ι ος ως ο

Θε ο ο ος η η μων και ουκ ε ε στι δι ι

και αι ο ο ος χορός α' πλη ην σου Κυ υ ρι ι ι ε

**Α** κη κο ο ε Κυ ρι ι ε φω ω νη η η η

ης σου ον ει ει ει ει πας φω νη βο ω ων το ος

ε ε εν τη η η ε ρη η η μω ο τε ε

βρο ον τη η η σας πο ολ λω ω ων ε ε πι ι

υ δα α α α α των τω σω ω ω ω μα αρ τυ υ υ

ρου με ε νο ος Υι υι υι ω ο ο λος γε γο ο

νωσ του πα ρο ον το ος Πνε ευ μα το ο ος δε ε

ε βο η σε ε συ ει Χρι ι στος Θε ου ου σο φι ι ι

ι α α και αι αι αι δυ υ να α α μιν

**Ι** η σουσ ο ζω η η η ης αρ χη η γος λυσαι το

κα τα χρι μα η η η κει Α α δα α αμ του ου πρω ω

το πλα α α α α στου κα θαρ σι ω ω ν δε ως Θε

ο ο ο ος μη η δε ο ο με ε ε νος τω πε

σο ο ο ν τι κα θαι ρε ε ται αι αι αι ε ε εν τω ω

Ι ι ορ δα α α α α νη εν ω την ε χθρα αν κτει

ει ει νας υ περ ε χου σαν παν τα α νουν ει ρη η η

η η η νην χα ρι ι ι ι ζε ε ε ε ται

ῶδής'

**Η** φω νη του Λο ο ο ο γου ου ο λυ

υ χνος του φω ω το ο ος ο ε ωσ φο ο ο ο

ρος ο του Η λι ι ουου ου Προδρο ο μο ος ε ε

εν τη η η ε ρη η η μω με τα νο ει ει ει

ει τε πασι βο α α α α τοις λα α οις και προ

κα θαι αι αι ρε ε ε ε σθε ι δου ου γαρ πα ρε ε

στι ι ι Χρι ι στος εκ φθο ρα ας τον κο ο ο σμο ον

λυ τρου με νο ος Ὁδὴ ζ'

**N** ε ε ους ευ σε ε βεις κα μι ι ι νω πυ

ρο ος προσ ο ο μι λησαν τα ας δι α συ ρι

ι ι ι ι ζον πνευ μα δρο ο ο σου α βλα βει ει ει εις

δι ι ε φυλα ξε ε και θει ου α αγ γε ε ε λου συγ

κα α τα βα α σι ις ο ο θεν εν φλο ο γι δρο

σι ζο ο με ε νοι ευ χα ρι ι ι ι στω ως α νε μελ

πο ον υ περ υ μνη η τε ο των πα τε ε ρων

Κυ ρι ι ος και Θε ο ος ευ λο ο γη το ο ο ο

ος ει

ᾠδὴ 1'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου ου ου

ου με εν τον Κυ ρι ο ον

Μ υ στη η ρι ι ο ον πα ρα δο ξο ον η Βα βυ

λω νο ο ος ε δει ξε ε ε κα μι ι νος πη γα σα α

α σα δρο ο ο σον ο ο τι ρει θροι οις ε με ελ

λεν α α α υ λο ον πυρ εις δε χε ε σθαι αι  
 αι ο ο Ι ι ορ δα α α α νης και στε ε ε  
 γει ειν σαρ κι ι βα πτι ζο ο με νο ον τον κτι ι ι  
 ι στην ον ευ λο γου ου ου σι λα α οι και υ περ  
 υ υ ψου ου ου ου σιν ει εις πα αν τας του ους αι ω ω  
 ω ω να α α ας

## ὥδη θ' τῆς ἑορτῆς

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

ὥδη θ' κανὼν α'

ἦχος β'

Μεγάλυνον ψυχὴ μου, τὴν τιμιωτέραν, καὶ ἐνδοξοτέραν τῶν ἄνω στρατευμάτων.

Ἄπορεῖ πᾶσα γλῶσσα, εὐφημεῖν πρὸς ἀξίαν, ἰλιγγιᾷ δὲ νοῦς καὶ ὑπερκόσμιος, ὕμνεῖν σε Θεοτόκε· ὅμως ἀγαθὴ ὑπάρχουσα, τὴν πίστιν δέχου· καὶ γὰρ τὸν πόθον οἶδας, τὸν ἔνθεον ἡμῶν· σὺ γὰρ χριστιανῶν εἶ προστάτις, σὲ μεγαλύνομεν.

Μεγάλυνον, ψυχὴ μου, τὸν ἐν Ἰορδάνῃ ἐλθόντα βαπτισθῆναι.

Δαβιδ πάρεσο, Πνεύματι τοῖς φωτιζομένοις· νῦν προσέλθετε, ἄδε πρὸς Θεόν, ἐν πίστει λέγων φωτίσθητε· οὗτος ὁ πτωχὸς ἐκέκραξεν Ἀδὰμ ἐν πτώσει· καὶ γὰρ αὐτοῦ εἰσήκουσε Κύριος ἐλθὼν, ρέιθροις τοῦ Ἰορδάνου, φθαρέντα δὲ ἀνεκαίνισεν.

Δόξα Πατρὶ καὶ Υἱῷ καὶ ἀγίῳ Πνεύματι.

Μεγάλυνον, ψυχή μου, τὸν ὑπὸ Προδρόμου τὸ βάπτισμα λαβόντα.

Ὁ Ἡσαΐας λούσασθε, καὶ καθάρθητε φάσκει· τὰς πονηρίας ἔναντι, ἀφέλεσθε Κυρίου· οἱ διψῶντες, ὕδωρ ἐπὶ ζῶν πορεύεσθε· ῥανεῖ γὰρ ὕδωρ καινοποιὸν Χριστός, τοῖς προστρέχουσιν αὐτῷ ἐν πίστει, καὶ πρὸς ζωὴν τὴν ἀγήρω, βαπτίζει Πνεύματι.

Καὶ νῦν καὶ ἀεὶ καὶ εἰς τοὺς αἰῶνας τῶν αἰώνων, ἀμήν.

Μεγάλυνον, ψυχή μου, τὸν ἐκ τῆς πατρῴας φωνῆς μαρτυρηθέντα.

Συντηρώμεθα χάριτι, πιστοὶ καὶ σφραγιῖδι· ὡς γὰρ ὄλεθρον ἔφυγον, φλιᾶς Ἑβραῖοι πάλαι αἰμαχθείσης· οὕτω καὶ ἡμῖν, ἐξόδιον τὸ θεῖον τοῦτο, τῆς παλιγγενεσίας λουτήριον ἔσται· ἔνθεν καὶ τῆς Τριάδος, ὀφόμεθα φῶς τὸ ἄδυτον.

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

## Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

### Κανὼν α' κυρίου Κοσμᾶ

ὠδὴ θ'

Ἦχος Πά

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.283#

Μεγάλυνον ψυχή μου την τιμιωτεραν των

ανωστρατευματων

απειπαα σα γλωσσα ευφημειειν προς αξιαν

ι λιγγια δε νους και υπερκοσμιος υμνειν σε Θε

εοτοκεο μως αγαθη υπαρχουσα την πιστιν

δεχου και γαρ τον ποθον οι δαστον εν θεον ημων σου

υ γαρ χριστιανων ειπροστατισε εμεγαλυνομεν

**Μ**εγαλυνον ψυχημου τον εν Ιορδαανη

ελθοντα βαπτισθηναι

**Δ**αβιδ παρσοπνευματι τοις φωτιιζομενοις

νυν προσελθε τε αδε προς Θεον εν πιστει λεεγων

φωτισθητε ουτος οπτωχος εκεκραξεν Αδαμ εν

πτωσει και γαρ αυτου εισηκουσε Κυριος ελθων

ρει ειθροις του Ιορδανου φθαρεντα δε ανεκαινισεν

**Δ**οξα Πατρι και Υιω και Αγιω Πνευματι



Μεγαλυνοψυχημου τον υποδρομου το  
βαπτισμα λαβοντα

Ο Ησαϊας λουσαθε και θαρθη η τε φασκει  
τας πονηριας εν αντιαφελεσθε Κυρι

ου οι διψωντες υδωρεπιζων πορευεσθε

ρα νει γαρ υδωρ και νοποιον Χριστος τοις προστρε

χουσιν αυτω ενπιστει και προς ζωην την αγηρω

βαπτizei Πνευματι

Και νυν και αι και εις τους αιωνας των αιωνων

αμην

Μεγαλυνον ψυχη μου ου τον εκ της πα τρω ας φω νης

μαρ τυ ρηθεν τα

Κυνηρω ω με θα χα ρι τι πι στοι οι και σφρα γι δι

ως γαρ ο λε θρον ε φυγον φλι ας Εβραι οι πα λαι αι

αι μα χθει σης ου τω και η μιν ε ξο δι ον το θει ον του

το της πα λιγ γε νε σι ας λου τη ρι ι ον ε σται ε

ενθεν και της Τρι α δος ο ψο με θα φως το α δυ τον

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Κανών α'

Ἦχος Πά

ῥοή θ'

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.130\*

Μεγαλυνον ψυχη μου ουτην τι μι ω τε ραν των α

νω στρα τευ μα των π

νω στρα τευ μα των

Α πο ρει πα α σα γλωσ σα ευ φη μειν προς α ξι

αν ι λιγ γι α δε νους και υ περ κο σμι ος υ μνειν

σε Θε ε ο το κε ο μως α γα θη υ παρ χου σα την

πι στιν δε χου και γαρ τον πο θον οι δας τον εν θε ον

η μων σου γαρ χρι στι α νων ει προ στα τις σε

ε μεγα λυ νομεν π

Μ ε γα λυ νον ψυ χη μου τον εν Ι ορ δα νη ελ

θον τα βα πτι σθη ναι π

Α α βιδ πα ρε σο Πνευ μα τι τοις φω τι ι ζο με νοις

π νυν προσ ελ θε τε α δε προς Θε ον εν πι στει λε ε γω

ων φω τι σθη τε π ου τος ο πτω χος ε κε κρα ξεν Α

δαμ εν πτω σει και γαρ αυ του εισ η κου σε Κυ ρι ος

ελ θων ρει ει θροις του Ι ορδα νου π φθα ρεν τα δε ε α

π νε και νι σε

Δ ο ξα Πα τρι και Υι ω και Α γι ω Πνευμα τι π

Μ ε γα λυ νον ψυ χη μου ου τον υ πο Προ δρο ο μου

π το βα πτι σμα λαβον τα

Ο Η σα ι ας λου σα σθε και κα θαρ θη η τε φα

π σκει τας πο νη ρι ας εν αν τι α φε λε σθε

Κυ ρι ου <sup>π</sup> οι δι ψων τες υ δωρ ε πι ζων πο ρευ ε

σθε <sup>π</sup> ρα νει γαρ υ δωρ και νο ποι ον Χρι στος τοις

προσ τρε χου σιν αυ τω εν πι στει <sup>π</sup> και προς ζω ην την

α γη ρω βα πτι ζει Πνευ μα τι <sup>π</sup>

**Κ** αι νυν και α ει και εις τους αι ω νας των αι ω νων

α μην <sup>π</sup>

**Μ** ε γα λυ νον ψυ χη μου ου τον εκ της πα τρω ας φω νης

μαρ τυ ρηθεν τα <sup>π</sup>

**Σ** υν τη ρω ω με θα χα ρι τι πι στοι οι και σρα γι δι <sup>π</sup>

ως γαρ ο λεθρον ε φυγον φλι ας Ε βραι οι πα λαι αι

αι μα χθει σης ου τω και η μιν εξ ο δι ον το θει ον

του το της πα λιγ γε νε σι ας λου τη ρι ι ον ε

σται ε ενθεν και της Τρι α δος ο ψο μεθαφως το α δυ

τον

## Καταβασία θ' φδῆς

ἦχος β'

[Μεγάλυνον ψυχῆ μου, τὴν τιμιωτέραν, καὶ ἐνδοξοτέραν τῶν ἄνω στρατευμάτων.]

Ἄπορεῖ πᾶσα γλῶσσα, εὐφημεῖν πρὸς ἀξίαν, ἰλιγγιᾶ δὲ νοῦς καὶ ὑπερκόσμιος, ὕμνεῖν σε Θεοτόκε· ὁμως ἀγαθὴ ὑπάρχουσα, τὴν πίστιν δέχου· καὶ γὰρ τὸν πόθον οἶδας, τὸν ἔνθεον ἡμῶν· σὺ γὰρ χριστιανῶν εἶ προστάτις, σὲ μεγαλύνομεν.

Ἀργὴ

Χουρμουζίου Χαρτοφύλακος

Πέτρου Λαμπαδαρίου

Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Παπαγιάννη)

Σύντομος

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

### Σύντομος

### Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

ᾠδὴ θ'

ἦχος Πα

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρημολόγιον 1903 σ.283#

Μ ε γ α λ υ ν ο ν ψ υ χ η μ ο υ τ η ν τ ι μ ι ω τ ε

ρ α ν τ ω ν α ν ω σ τ ρ α τ ε υ μ α τ ω ν

Α πο ρ ει πα α σα γ λ ω σ σα ευ φ η μ ει ει ν π ρ ο σ α ξ ι αν

ι λι γ γ ι α δε ν ο υ σ και υ πε ρ κο σ μι ο σ υ μ ν ει ν σε Θε

ε ο το κε ο μ ω σ α γ α θ η υ πα ρ χ ο υ σα τ η ν πι σ τ ι ν

δε χ ο υ και γ α ρ τ ο ν πο θ ο ν οι δ α σ τ ο ν εν θε ο ν η μ ω ν συ

υ γ α ρ χ ρ ι σ τ ι α ν ω ν ει π ρ ο σ τ α τ ι σ σε ε μ ε γ α λ υ νο με

ε εν

Ἄγι

Χουρμουζίου Χαρτοφύλακος

Ἦχος Πα

Χουρμουζίου Χαρτοφύλακος  
Ειρμολόγιον 1825 σ.53#

Μ ε γ α α λ υ ν ο ν ψ υ χ η η η η η μου

ου τη ην τι μι ι ι ω ω τε ε ε ε ρ α αν

και αι ε εν δο ξο ο τε ε ε ρ αν τ ω ω ν α α ν ω

στ ρ α α τ ευ μα α α α τ ω ν

α πο ρ ει πα α α σα γ λ ω ω ω σ σα ε

ευ φ η η μ ει ει ει ει εν προ ος α ξ ι ι ι ι αν

ι λι γ γ ι α α α δε ε ε ε ν ο υ ο υ σ και υ

πε ε ρ κ ο σ μι ι ο σ υ υ μ ν ει ει ει εν σε ε Θε ε ο

το ο ο ο κε ο μ ω σ α γ α θ η υ υ υ πα ρ χ ο υ ο υ

σα α τη η ην πι ι ι σ τ ι ν δε ε ε χ ο υ και γ α



αρ τον πο θον οι οι οι οι δα ας το ον ε ε εν

θε ε ε ο ον η η η μων σου γαρ Χρι

στι α α νων ει ει προ ο στα α τισ σε ε ε με ε γα

λυ υ νο ο με ε ε εν

Πέτρου Λαμπαδαρίου

ᾠδὴ θ'

Ἦχος Πά

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2001 σ.133\*

Με γα α λυ νον ψυ υ χη η η η μου ου

τη ην τι ι μι ω ω τε ε ε ραν τω ων α α νω

στρα α τευ μα α α α των

α πο ρει πα α α σα γλω ω ω σ σα ε ευ

φη η μεις ει ει εν προ ος α ξι ι ι ι αν ι

λιγ γι α α α δε ε ε ε νου ους και υ πε ερ

χο σμι ι ος υ υ μνει ει εν σε ε Θε ε ο το ο ο

ο κε ο μως α γα θη υ υ υ παρ χου ου σα α

τη η ην πι ι ι στιν δε ε ε χου και γα αρ

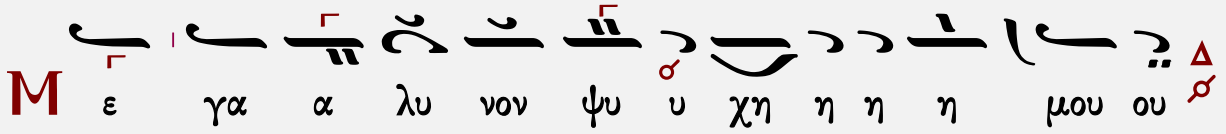
τον πο θο ον οι οι οι οι δα ας το ον ε εν θε ε

ε ο ον η η η μων συ υ γαρ χρι στι α α

νω ων ει ει προ στα α α της σε ε ε με ε γα λυ νο ο

με ε ε εν

Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Παπαγιάννη)


**Μ** ε γ α α λ υ ν ο ν ψ υ υ χ η η η η μ ο υ ο υ  
 τ η η ν τ ι ι μ ι ω ω τ ε ε ε ρ α ν τ ω ω ν α α ν ω  
 σ τ ρ α α τ ε υ μ α α α α τ ω ν


**Α** π ο ρ ει π α α α σ α γ λ ω ω ω σ σ α ε ε υ  
 φ η η μ ει ει ει ει ν π ρ ο ο ς α ξ ι ι ι ι α ν ι  
 λ ι γ γ ι α α α δ ε ε ε ε ν ο υ ο υ ς κ αι υ π ε ε ρ  
 κ ο σ μ ι ι ο ς υ υ μ ν ει ει ει ν σ ε ε Θ ε ε ο τ ο ο ο  
 ο κ ε ο μ ω ς α γ α θ η υ υ υ π α ρ χ ο υ ο υ σ α α  
 τ η η η ν π ι ι ι σ τ ι ν δ ε ε ε χ ο υ κ αι γ α α ρ

τον πο θο ον οι οι οι οι δα ας το ον ε εν θε ε

ε ο ον η η η μων σου γαρ χρι στι α α

νω ων ει ει προ στα α α της σε ε ε με ε γα λυ νο ο

με ε ε εν

# Τῶν Θεοφανείων, ιαμβικαί

7-13 Ἰανουαρίου

## ἤχος β΄

- α **Σ**τείβει θαλάσσης, κυματούμενον σάλον, ἤπειρον αὔθις, Ἰσραήλ δεδειγμένον. Μέλαις δὲ πόντος, τριστάτας Αἰγυπτίων, ἔκρυψεν ἄρδην, ὕδατόστρωτος τάφος, ῥώμη κραταιᾶ, δεξιᾶς τοῦ Δεσπότη.
- γ **Ὅ**σοι παλαιῶν, ἐκλελύμεθα βρόχων, βορῶν λεόντων, συντεθλασμένων μύλας, ἀγαλλιῶμεν, καὶ πλατύνωμεν στόμα, λόγῳ πλέκοντες, ἐκ λόγων μελωδίαν, ᾧ τῶν πρὸς ἡμᾶς, ἤδεται δωρημάτων.
- δ **Π**υρσῶ καθαρθεὶς μυστικῆς θεωρίας, ὑμῶν προφήτης τὴν βροτῶν καινουργίαν, ῥήγνυσι γῆρυν, Πνεύματι κροτουμένην, σάρκωσιν ἐμφαίνουσιν ἀρρήτου Λόγου, ᾧ τῶν δυναστῶν τὰ κράτη συνετρίβη.
- ε **Ἐ**χθροῦ ζοφώδους καὶ βεβορβορωμένου, ἰὸν καθάρσει Πνεύματος λελουμένοι, νέαν προσωρμίσθημεν ἀπλανῆ τρίβον, ἄγουσαν ἀπρόσιτον εἰς θυμηδίαν, μόνις προσιτήν, οἷς Θεὸς κατηλλάγη.
- ς **Ἰ**μερτὸν ἐξέφηγε σὺν πανολβίῳ, ἤχῳ Πατῆρ, ὃν γαστρὸς ἐξηρεύεζατο. Ναί φησιν, οὔτος, συμφυῆς γόνος πέλων, φώταυγος ἐξώρουσεν ἀνθρώπων γένους, Λόγος τέ μου ζῶν, καὶ βροτὸς προμηθεΐα.
- ζ **Ἐ**φλεξε ρείθρω τῶν δρακόντων τὰς κάρας, ὃ τῆς καμίνου τὴν μετάρσιον φλόγα, νέους φέρουσιν εὐσεβεῖς κατευνάσας, τὴν δυσκάθεκτον ἀχλὺν ἐξ ἁμαρτίας, ὅλην πλύνει δέ, τῇ δρόσῳ τοῦ Πνεύματος.
- Αἰ**νοῦμεν, εὐλογοῦμεν καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον.
- η **Ἐ**λευθέρα μὲν ἢ κτίσις γνωρίζεται. Υἱοὶ δὲ φωτός, οἱ πρὶν ἐσκοτισμένοι. Μόνος στενάζει, τοῦ σκότους ὃ προστάτης. Νῦν εὐλογεῖτω συντόνως τὸν αἴτιον, ἢ πρὶν τάλαινα τῶν ἔθνῶν παγκληρία.

Ἀργαί

Πέτρου Λαμπαδαρίου

Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Παπαγιάννη)

Σύντομοι

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

## Σύντομοι

### Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

**Κ** τει βει θα λασ σης κυ μα του με νον σα α λον η πει  
 ρον αυ θις Ισ ρα ηλ δε δει γμε νον με λας δε πο  
 ον τος τρι στα τας Αι γυ πτι ι ων ε κρυ ψεν αρ  
 δη ην υ δα το στρω τος τα α φος ρω μη κρα ται α δε  
 ξι ας του ου Δε σπο του

ῥδὴ γ'

**Ο** σοι παλαι ων εκ λε λυ με θα βρο ο χων βο  
 ρων λε ον των συν τε θλα σμε νων μυ υ λας α γαλ λι  
 ω ω μεν και πλα τυ νω μεν στο ο μα Λο γω πλε  
 κοντες εκ λο γων με ε λω δι αν ω των προς η μας χορὸς α' η δε

τα δω ω ρη μα των

ῥδδ' δ'

**Π**υρ σω καθαρ θεις μου στι κης θε ω ρι ι ας υ

μων προ φη της την βρο των και νουρ γι ι αν ρη γνου σι

γη η ρυν Πνευ μα τι κρο του με ε νην σαρ κω

σιν εμ φαι νου σαν αρ ρη του Λο γου ω των δυ να

στων τα κρα τη συν ε τρι βη

ῥδδ' ε'

**Ε**χθρου ζο φω δους και βε βορ βο ρω με ε νου ι

ον κα θαρ σει Πνευ μα τος λε λου με ε νοι νε αν προ

σωρ μι σθη μεν α πλα νη τρι ι βον α γου σαν α

προ σι τον εις θυ μη δι αν μο νοις προ σι την οις

Θε ος κα τηλ λα γη

Θε ος κα τηλ λα γη

ὠδὴ στ'

μερ τον εξ ε φη νε συν παν ολ βι ι ω η

μερ τον εξ ε φη νε συν παν ολ βι ι ω η

χω Πα τηρ ον γα στρο ο ος ε ξη ρευ ξα το ναι φησιν

χω Πα τηρ ον γα στρο ο ος ε ξη ρευ ξα το ναι φησιν

ου ου τος συμ φυ ης γο νος πε ε λων φω ταυ

ου ου τος συμ φυ ης γο νος πε ε λων φω ταυ

γος ε ξω ρου σεν αν θρω πων γε νους Λο γος τε μου

γος ε ξω ρου σεν αν θρω πων γε νους Λο γος τε μου

ζων και βρο τος προ ο μη θει α

ζων και βρο τος προ ο μη θει α

ὠδὴ ζ'

φλε ξε ρει θρω των δρα κον των τας κα α ρας ο

φλε ξε ρει θρω των δρα κον των τας κα α ρας ο

της κα μι ι ι νου την με ταρ σι ον φλο ο ο γα νε ους

της κα μι ι ι νου την με ταρ σι ον φλο ο ο γα νε ους

φε ρου σαν ευ σε βεις κα τευ να α σας την δυσ κα θε

φε ρου σαν ευ σε βεις κα τευ να α σας την δυσ κα θε

κτον α χλυν εξ α μαρ τι ι ι ας ο λην πλυ νει δε τη

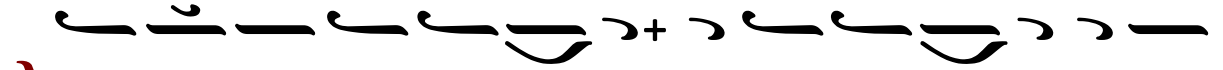
κτον α χλυν εξ α μαρ τι ι ι ας ο λην πλυ νει δε τη



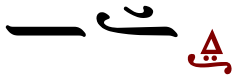


δρο σωτου Πνε ευ μαα τος

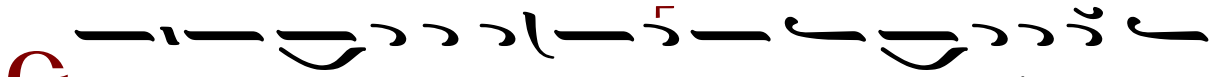
ᾠδὴ ἡ'



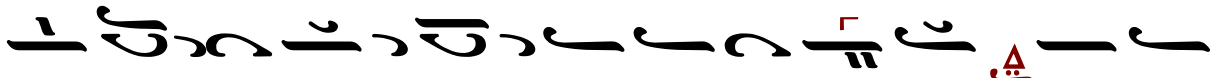
Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προ σκυ νου μεν τον Κυ



ρι ον



Ε λευ θε ρα μεν η κτι ι ι σις γνω ρι ζε ται υι



οι δε φω τος οι πριν ε σκο τι σμε ε νοι μο νος



στε να ζει του σκο τους ο προ στα α α της νυν ευ λο γει



τω συν το ο ο νως τον αι τι ον η πριν τα λαι να




των ε θνων πα αγ κλη ρι ι α α α α α

## Αργαί

### Πέτρου Λαμπαδαρίου

Θις τὰς καταβασίας ταύτας ἐπεφέραμεν ἐλαφρὰς τινὰς μεταβολὰς πρὸς ἀποφυγὴν παρατονημῶν καὶ ἀστοχου χωρισμοῦ λέξεων. [πρωτ.Κων.Παπαγιάννης]


 τει βει θα λα α ασ ση η η ης κυ υ υ μα α  
 του ου με ε ε νον σα α α α λο ον η η  
 πει ει ρο ον α α αυ θι ι ι ις Ι ισ ρα α η ηλ δε ε  
 ε δει ει γμε ε ε ε ε νον με ε λα ας δε  
 πο ο ον το ο ο ο ο ος τρι στα τα ας Αι αι αι  
 γυ υ πτι ι ι ι ι ω ων ε κρυ υ ψε εν α  
 α αρ δη η η ην υ υ δα α το ο στρω ω ω το ος τα  
 α α α α φος ρω ω ω ω ω ω ω μη η  
 η η κρα ται αι α α α δε ξι ας του ου ου ου

ου Δε ε σπο ο ο του

Ὁδὴ γ'

σοι οι οι οι πα λαι αι ω ω ωων ε ε εκ λε ε

λυ υ με ε ε θα βρο ο ο ο ο χω ων βο ρω

ω ων λε ε ο ο ον τω ω ων συν τε ε θα α σμε ε ε

νω ων μυ υ υ υ υ λας α γαλ λι ω ω ω ω

με ε ε ε ε ε εν και αι αι πλα α τυ υ νω ω ω

μεν στο ο ο ο ο μα α λο ο γω ω πλε ε κο

ο ον τε ες εκ λο ο ο γων με ε λω ω ω δι ι ι ι

ι ι αν ω ω ω ω ω ω ω τω ω ω ων

προς η η μα ας χορός α' η η δε ε ται δω ω ω ω

ⲉⲃⲣⲓ ⲙⲁ ⲁⲁⲧⲱⲛ

Ὁδὴ δ'

Ⲡ ⲱⲣ ⲟⲩⲱ ⲕⲁⲁⲱⲁ ⲱⲁⲣ ⲱⲩⲉ ⲉ ⲉ ⲉ ⲓⲥ ⲙⲰ ⲱ ⲱ ⲟⲩⲱ ⲓ

ⲕⲉⲩⲱ ⲱⲩⲉ ⲉ ⲉ ⲱ ⲱ ⲣ ⲓ ⲓ ⲓ ⲓ ⲁ ⲁⲩ ⲱ

ⲙⲛⲱ ⲱ ⲱⲛ ⲣⲟⲟⲩⲱ ⲉⲩⲱ ⲩⲱ ⲉⲩⲱ ⲩⲱ ⲉⲩⲱ ⲩⲱ ⲟⲩⲱ ⲟⲩⲱ

ⲧⲱⲛ ⲕⲁ ⲁ ⲓ ⲛⲱ ⲟⲩⲱ ⲟⲩⲱ ⲕⲓ ⲓ ⲓ ⲓ ⲓ ⲁⲛ ⲣⲉ ⲕⲛⲟⲩⲱ ⲓ ⲕⲉ

ⲉⲩⲱ ⲉⲩⲱ ⲉⲩⲱ ⲉⲩⲱ ⲉⲩⲱ ⲉⲩⲱ ⲉⲩⲱ ⲉⲩⲱ ⲉⲩⲱ ⲉⲩⲱ ⲉⲩⲱ

ⲙⲉ ⲉ ⲉ ⲉ ⲉ ⲉⲩⲱ ⲉⲩⲱ ⲟⲩⲱ ⲕⲱ ⲟⲩⲱ ⲓ ⲓ ⲉ ⲉⲩⲱ

ⲩⲱ ⲉⲩⲱ ⲟⲩⲱ ⲟⲩⲱ ⲟⲩⲱ ⲉⲩⲱ ⲉⲩⲱ ⲟⲩⲱ ⲟⲩⲱ ⲟⲩⲱ ⲟⲩⲱ

ⲟⲩⲱ ⲟⲩⲱ ⲟⲩⲱ ⲟⲩⲱ ⲟⲩⲱ ⲟⲩⲱ ⲟⲩⲱ ⲟⲩⲱ ⲟⲩⲱ ⲟⲩⲱ

ⲃⲰ ⲛⲁ ⲁⲟⲩⲱ ⲱⲛ ⲧⲁ ⲕⲣⲁ ⲁⲧⲉ ⲟⲩⲱ ⲟⲩⲱ ⲟⲩⲱ ⲟⲩⲱ ⲉ ⲉ



ⲁ ⲁ ⲛⲏ  
α α γη

Ὠδὴ ε'

ⲙⲉⲣ ⲧⲟ ⲟ ⲟⲛ ⲉ ⲉϷ ⲉ ⲫⲏ ⲛⲉ ⲉ ⲥⲩ ⲩ ⲩⲛ ⲫⲁ  
μερ το ο ον ε εξ ε φη νε ε συ υ υν πα

ⲁ ⲛⲟⲗ ⲃⲓ ⲓ ⲓ ⲱ ⲏ ⲕⲱ ⲱ ⲫⲁ ⲁ ⲁ ⲧⲏⲣ ⲟⲛ  
α ανολ βι ι ι ω η χω ω Πα α α τηρ ον

ⲕⲁ ⲥⲧⲣⲟ ⲟ ⲟ ⲟⲥ ⲉ ⲉϷ ⲏ ⲏ ⲏ ⲣⲉ ⲉⲩ ⲁ ⲁ  
γα στρο ο ο ος ε εξ η η η ρε ευ ξα α α

ⲧⲟ ⲛⲁⲓ ⲫⲏ ⲥⲓⲛ ⲟⲩ ⲟⲩⲟⲩ ⲧⲟ ⲟ ⲟ ⲟ ⲟ ⲟ ⲟⲥ ⲥⲩ ⲩ ⲩⲙ  
το ναι φη σιν ου ουου το ο ο ο ο ο ο ος συ υ υμ

ⲫⲩ ⲩ ⲏⲥ ⲕⲟ ⲛⲟ ⲟⲥ ⲫⲉ ⲉ ⲉ ⲉ ⲉ ⲕⲱ ⲱⲛ ⲫⲱ ⲧⲁⲩ  
φυ υ ης γο νο ος πε ε ε ε ε λω ων φω ται

ⲕⲟ ⲟ ⲟⲥ ⲉ ⲉϷ ⲱ ⲣⲟⲩ ⲥⲉ ⲉⲛ ⲁ ⲁ ⲁⲛ ⲑⲣⲱ ⲱ ⲱ ⲫⲱ ⲱⲛ  
γο ο ος ε εξ ω ρου σε εν α α αν θρω ω ω πω ων

ⲕⲉ ⲉ ⲉ ⲛⲟⲩⲥ ⲕⲟ ⲟ ⲟ ⲟ ⲟ ⲟ ⲟ ⲟ ⲟ ⲕⲟ ⲟ  
γε ε ε νους Λο ο ο ο ο ο ο ο ο γο ο

ⲟ ⲟⲥ ⲧⲉ ⲙⲟⲩ ⲟⲩ ⲕⲱ ⲱⲛ ⲕⲁⲓ ⲃⲣⲟ ⲧⲟⲥ ⲫⲣⲟ ⲟ ⲟ ⲟ ⲟ ⲙⲏ ⲏ  
ο ος τε μου ου ζω ων και βρο τος προ ο ο ο ο μη η

ⲑⲉⲓ ⲉⲓ ⲉⲓ ⲁ  
θει ει ει α

Ὠδὴ ζ'



Αἰ νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου με εν

τον Κυ υ υ ρι ον

Ελευ θε ρα α α μεν η χτι ι σις γνω

ω ω ρι ι ζε ε ε ε ται υι οι οι δε ε

φω ω το ος οι πριν ε ε σχο ο ο τι σμε ε ε ε ε

νοι οι μο νο ος στε ε να α α ζει ει ει του σχο

του ος ο ο ο προ ο στα α α α α της νυν

ε ε ευ λο ο γει ει ει τω συν το ο νως τον αι αι

αι τι ι ι ι ον η πρι ι ι ι ι ι ν τα

α λαι αι αι να α α των ε θνων πα α α α



α γ κ λ η η ρ ι ι α α α α α α

Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Παπαγιάννη)<sup>14</sup>

ᾠδὴ α'

Ἦχος λ π Πά

πρωτ. Κων. Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηρολόγιον  
2007 σ.120\*

τ ει β ει θ α λ α α σ η η σ κ υ μ α τ ο υ ο υ μ ε ε

ε ν ο ν σ α α α α α λ ο ο ν η η π ει ει ρ ο

ο ν α α α υ θ ι ι σ Ι σ ρ α η η λ δ ε ε ε δ ει ει γ μ ε ε

ε ε ε ν ο ν μ ε ε λ α α σ δ ε π ο ο ο ο ο ν

τ ο σ τ ρ ι σ τ α τ α α σ Α ι α ι α ι γ υ υ π τ ι ι ι ι

ι ω ω ν ε κ ρ υ ψ ε ε ν α α α ρ δ η η ν υ δ α τ ο

ο σ τ ρ ω ω ω τ ο ο σ τ α α α α α φ ο ς ρ ω ω μ η

<sup>14</sup> Εἰς τὰς καταβασίας ταύτας ἐπεφέραμεν οὐσιαστικωτέρας διορθώσεις πρὸς καλυτέραν ἀπόδοσιν τοῦ νοήματος καὶ σύντημσιν μουσικῶν τινῶν γραμμῶν.  
Γερασμὸς Μοναχὸς Ἁγιορείτης 14 Μαρτίου 2024 Λουκάς Λουκά

η κρα ται αι α α δε ξι ας του ουου ου ου Δε ε

σπο ο ο του ᾠδὴ γ'

**Ο** σοι οι πα λαι αι ων εκ λε λυ υ με ε ε θα βρο

ο ο ο ο χων βο ρω ω ων λε ε ο ο ον

των συν τε θλα σμε ε ε νω ων μυ υ υ υ υ

λας α γαλ λι ω ω ω μεν και πλα τυ υ νω ω

ω μεν στο ο ο ο ο μα α λο ο γω ω πλε ε κο ον

τες εκ λο ο ο γων με ε λω ω ω δι ι ι ι

ι ι αν ω των προς η η μα ας χορὸς α' η η

δε ε ται δω ω ω ω ω ρη η μα α α των ᾠδὴ δ'

Π Ὑρ σω ω κα α θα αρ θει ει ει εις μυ υ υ στι ι

κη ης θε ε ε ω ω ρι ι ι ι ι α ας υ

μνω ω ων προ ο φη η η τη η η ης τη η ην βρο ο

των και αι νου ου ουρ γι ι ι ι αν ρη γνυ υ

σι ι γη η η ρυν Πνευ μα α τι χρο ο ο του με

ε ε ε ε νη ην σαρ κω σι ι ιν ε εμ φαι

νου ου ου σα αν α α αρ ρη η η του ου Λο ο ο

γου ω ω ω ω ω ω ω ω τω ω ω ων δυ

να α στω ων τα κρα α τη συ υ υ υν ε ε τρι

ι ι βη

Ῥδῆ ε'

**Ε** <sup>6</sup> χθρου ου ζο ο φω ω ω δους και βε βορ βο ρω με

ε νου ου ι ι ι ον κα θαρ σει Πνευ μα α τος

λε ε ε λου ου με ε ε ε ε νοι νε α αν

προ οσ ωρ μι ι σθη η η μεν α πλα νη τρι

ι ι ι ι βο ον α γου σαν α προσ ι ι το ον

ει ει εις θυ υ υ μη η δι ι ι αν μο ο

ο ο ο ο ο νοι οι οι οισ προσ ι ι τη η ην

οι οισ Θε ε ος κα α α α α τη ηλ λα

α α γη

ᾠδὴς'

**Ι** <sup>6</sup> μερ το ο ον ε εξ ε φη νε συν παν ολ βι ι ι

ω ω η χω ω Πα α α τηρ ον γαστρο ο ο ος

ε εξ η η η ρε ευ ξα α α το ναι φη σι

ιν ου ου τος συμ φυ η ης γο νο ος πε ε ε ε ε

λω ων φω ταυ γο ο ος ε εξ ω ρου σε εν

α α αν θρω ω ω πω ων γε ε ε νους Λο ο

ο ο ο ο ο ο γο ο ο ος τε μου ου ζω ων και

βρο τος προ ο ο ο ο μη η θει ει ει α

ε φλε ξε ρει ει ει θρω ω ω ω τω ω ω ν δρα α

χο ον τω ω ω ν τας κα α α α α ρα ας ο της κα

μι ι ι νου ου ου ου τη η ην με ε ταρ σι ι ι ο ον

φλο ο ο ο ο γα νε ε ου ους φε ρου

ου ου σα α α αν ε ε ευ σε ε βει εις κα α α τευ

να α α α α σα ας τη ην δυ υσ κα α θε εκτον α

χλυ υν εξ α α α μα αρ τι ι ι ι ι ας

ο ο ο ο λη η η ην πλυ υ νει ει ει δε ε

ε τη η δρο σωτου Πνε ε ε ευ μα α α το ος

ᾠδὴ ἡ'

<sup>6</sup> <sub>χ</sub> α ι νου μεν ευ λο <sub>χ</sub> γου μεν και προσ κυ νου με εν

τον Κυ υ υ ρι ον

ε λευ θε ρα α α μεν η κτι ι σις γνω

ω ω ρι ι ζε ε ε ε ται υι οι οι δε ε

φω ω το ος οι πριν ε ε σκο ο ο τι σμε ε ε ε ε

νοι οι μο νο ος στε ε να α α ζει ει ει του σκο

του ους ο ο ο προ ο στα α α α α της νυν

ε ε ευ λο ο γει ει ει τω συν το ο νως τον αι αι

αι τι ι ι ι ον η πριν τα α λαι αι αι

να α α των ε θνων πα α α α αγ κλη η ρι ι

ι α α α α α

### ὠδὴ θ' τῆς ἑορτῆς

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

ὠδὴ θ' κανὼν α'

ἤχος β'

Μεγάλυνον ψυχῆ μου, τὴν τιμιωτέραν, καὶ ἐνδοξοτέραν τῶν ἄνω στρατευμάτων.

Ἀπορεῖ πᾶσα γλῶσσα, εὐφημεῖν πρὸς ἀξίαν, ἰλιγγιᾷ δὲ νοῦς καὶ ὑπερκόσμιος, ὑμνεῖν σε Θεοτόκε· ὅμως ἀγαθὴ ὑπάρχουσα, τὴν πίστιν δέχου· καὶ γὰρ τὸν πόθον οἶδας, τὸν ἔνθεον ἡμῶν· σὺ γὰρ χριστιανῶν εἶ προστάτις, σὲ μεγαλύνομεν.

Μεγάλυνον, ψυχὴ μου, τὸν ἐν Ἰορδάνῃ ἐλθόντα βαπτισθῆναι.

Δαβὶδ πάρεσο, Πνεύματι τοῖς φωτιζομένοις· νῦν προσέλθετε, ἄδε πρὸς Θεόν, ἐν πίστει λέγων φωτίσθητε· οὗτος ὁ πτωχὸς ἐκέκραξεν Ἀδὰμ ἐν πτώσει· καὶ γὰρ αὐτοῦ εἰσήκουσε Κύριος ἐλθῶν, ρεῖθροις τοῦ Ἰορδάνου, φθαρέντα δὲ ἀνεκαίνισεν.

Δόξα Πατρὶ καὶ Υἱῷ καὶ ἀγίῳ Πνεύματι.

Μεγάλυνον, ψυχὴ μου, τὸν ὑπὸ Προδρόμου τὸ βάπτισμα λαβόντα.

Ὁ Ἡσαΐας λούσασθε, καὶ καθάρθητε φάσκει· τὰς πονηρίας ἔναντι, ἀφέλεσθε Κυρίου· οἱ διψῶντες, ὕδωρ ἐπὶ ζῶν πορεύεσθε· ρανεῖ γὰρ ὕδωρ καινοποιὸν Χριστός, τοῖς προστρέχουσιν αὐτῷ ἐν πίστει, καὶ πρὸς ζωὴν τὴν ἀγήρω, βαπτίζει Πνεύματι.

Καὶ νῦν καὶ ἀεὶ καὶ εἰς τοὺς αἰῶνας τῶν αἰώνων, ἀμήν.

Μεγάλυνον, ψυχὴ μου, τὸν ἐκ τῆς πατρῴας φωνῆς μαρτυρηθέντα.

Συντηρώμεθα χάριτι, πιστοὶ καὶ σφραγιῖδι· ὡς γὰρ ὄλεθρον ἔφυγον, φλιᾶς Ἑβραῖοι πάλαι αἰμαχθείσης· οὕτω καὶ ἡμῖν, ἐξόδιον τὸ θεῖον τοῦτο, τῆς παλιγγενεσίας λουτήριον ἔσται· ἔνθεν καὶ τῆς Τριάδος, ὀψόμεθα φῶς τὸ ἄδυτον.

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

## Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Κανὼν κυρίου Κοσμά ᾠδὴ θ'

Ἦχος Πά

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρημολόγιον 1903 σ.283#

Μεγαλυνον ψυχη μου την τιμιωτεραν των

ανω στρατευματων

απορει πασα γλωσσα ευφημειν προς αξιαν



ι λιγ γι α δε νους και υ περ κο σμι ος υ μνειν σε Θε

ε ο το κε ο μως α γα θη υ παρ χου σα την πι στιν

δε χου και γαρ τον πο θον οι δας τον εν θε ον η μων σου

υ γαρ χρι στι α νων ει προ στα τις σε ε μεγα λυ νομεν

**Μ** ε γα λυ νον ψυ χη μου τον εν Ι ορ δα α νη

ελ θον τα βα πτι σθη ναι

**Δ** α βιδ πα ρε σο πνευ μα τι τοις φω τι ι ζο με νοις

νυν προσ ελ θε τε α δε προς Θε ον εν πι στει λε ε γω ων

φω τι σθη τε ου τος ο πτω χος ε κε κρα ξεν Α δαμ εν

πτω σει και γαρ αυ του εις η κου σε Κυ ρι ος ελ θων

ρει ειθροισ του Ι ορδανου φθα ρε ενταδεαν ε και νισεν

Δ ο ξα Πα τρι και Υι ω και Α γι ω Πνευ μα τι

Μ ε γα λυ νον ψυ χη μου τον υ πο Προδρο μου το

βα πτι σμα λαβοντα

Ο Η σα ι ας λου σασθε και κα θαρ θη η τε φα σκει

τας πο νη ρι ας εν αν τι α φε λε σθε Κυ ρι

ου οι δι ψων τεσ υ δωρ ε πι ζων πο ρευ ε σθε

ρα νει γαρ υ δωρ και νο ποι ον Χρι στος τοις προσ τρε

χου σιν αυ τω εν πι στει και προς ζω ην την α γη ρω

βα πτι ζει Πνευ μα τι

Και νυν και α ει και εις τους αι ω νας των αι ω νων

α μην

Με γα λυ νον ψυ χη μου ου τον εκ της πα τρω ας φω νης

μαρ τυ ρηθεντα

Συν τη ρω ω με θα χα ρι τι πι στοι οι και σφρα γι δι

ως γαρ ο λε θρον ε φυγον φλι ας Εβραι οι πα λαι αι

αι μα χθει σης ου τω και η μιν ε ξο δι ον το θει ον του

το της πα λιγ γε νε σι ας λου τη ρι ι ον ε σται ε

ενθεν και της Τρι α δος ο ψο με θα φως το α δυτον

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

**Μ** ε γ α λ υ ν ο ν ψ υ χ η μ ο υ ο υ τ η ν τ ι μ ι ω τ ε ρ α ν τ ω ν α

ν ω σ τ ρ α τ ε υ μ α τ ω ν

**Α** π ο ρ ε ι π α α σ α γ λ ω σ σ α ε υ φ η μ ε ι ν π ρ ο σ α ξ ι

α ν ι λ ι γ γ ι α δ ε ν ο υ σ κ α ι υ π ε ρ κ ο σ μ ι ο σ υ μ ν ε ι ν

σ ε Θ ε ε ο τ ο κ ε ο μ ω σ α γ α θ η υ π α ρ χ ο υ σ α τ η ν

π ι σ τ ι ν δ ε χ ο υ κ α ι γ α ρ τ ο ν π ο θ ο ν ο ι δ α σ τ ο ν ε ν θ ε ο ν

η μ ω ν σ υ υ γ α ρ χ ρ ι σ τ ι α ν ω ν ε ι π ρ ο σ τ α τ ι σ σ ε

ε μ ε γ α λ υ ν ο μ ε ν

**Μ** ε γ α λ υ ν ο ν ψ υ χ η μ ο υ τ ο ν ε ν Ι ο ρ δ α ν η ε λ

ὁ ἄβυσθος βαπτισθηναί

**Δ**αβιδ παρ εσο Πνευματι τοις φωτι ιζομενοις

**π** νυν προσελθετε αδε προς Θεον εν πιστει λεεγω

**π** ων φωτισθητε ουτος ο πτωχος εκεκραξεν **Α**

**π** δαμ εν πτωσει και γαρ αυτου εισηκουσε Κυριος

ελθων ρειειθροις του Ιορδανου φθαρεντα δεεα

**π** νε και νισε

**π** Δοξα Πατρι και Υιω και Αγιω Πνευματι

**Μ**εγαλον ψυχμου ο τον υποτροδρον μου

**π** το βαπτισμα λαβοντα

**Ο** Η σα ι ας λου σα σθε και κα θαρ θη η τε φα

σκει <sup>π</sup> τας πο νη ρι ας εν αν τι α φε λε σθε

Κυ ρι ου <sup>π</sup> οι δι ψων τες υ δωρ ε πι ζων πο ρευ ε

σθε <sup>π</sup> ρα νει γαρ υ δωρ και νο ποι ον Χρι στος τοις

προσ τρε χου σιν αυ τω εν πι στει <sup>π</sup> και προς ζω ην την

α γη ρω βα πτι ζει Πνευ μα τι <sup>π</sup>

**Κ** αι νυν και α ει και εις τους αι ω νας των αι ω νων

α μην <sup>π</sup>

**Μ** ε γα λυ νον ψυ χη μου ου τον εκ της πα τρω ας φω νης

μαρ τυ ρηθεν τα <sup>π</sup>

C
π
 υν τη ρω ω με θα χα ρι τι πι στοι οι και σρα γι δι  
 ως γαρ ο λεθρον ε φυγον φλι ας Ε βραι οι πα λαι αι  
 αι μα χθει σης π ου τω και η μιν εξ ο δι ον το θει ον  
 του το π της πα λιγ γε νε σι ας λου τη ρι ι ον ε  
 σται π ε εν θεν και της Τρι α δος ο ψο με θα φως το α δυ  
 τον π

## Καταβασία θ' φδῆς

ἦχος β'

[Μεγάλυνον ψυχή μου, τὴν τιμιωτέραν, καὶ ἔνδοξοτέραν τῶν ἄνω στρατευμάτων.]

Ω τῶν ὑπὲρ νοῦν, τοῦ τόκου σου θαυμάτων! Νύμφη πάντα γνε, Μῆτερ εὐλογημένη δι' ἧς  
 τυχόντες παντελοῦς σωτηρίας, ἐπάξιον κροτοῦμεν ὡς εὐεργέτη, δῶρον φέροντες ὕμνον  
 εὐχαριστίας.

Ἀργὴ

Χουρμουζίου Χαρτοφύλακος

Πέτρου Λαμπαδαρίου

Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Παπαγιάννη)

Σύντομος

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Σύντομος

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

ῥοδὴ θ'

Ἦχος Πά

Μεγαλον ψχη μου την τιμιω τε

ραν των ανω στρατευμα των

Ἦχος Ββ

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Ειρημολόγιον 1903 σ.285#

ων υπερβουν του τοκου σου θαυματων

νυμφη παναγενη μητερ ευλογημενη διης τυ

χοοντες παντελους σωτηριαιας επα

ξιον κροτου μενωσ ευεργετηδωρον φεροντες

υμνον ευχαριστιαααα

Ἄγι

Χουρμουζίου Χαρτοφύλακος



Μ ε γ α α λ υ ν ο ν ψ υ χ η η η η η μου  
 ου τη ην τι μι ι ι ω ω τε ε ε ε ρα αν  
 και αι ε εν δο ξο ο τε ε ε ραν των α α νω  
 στρα α τευ μα α α α των

ω τω ω ω ν υ υ υ πε ρ νου ου ου ουν του  
 το κου σου ου ου θαυ μα α α α α τω ν Νυ  
 υ υμ φη η πα αν α α α γνε ε ε Μη τε  
 ερ ευ λο ο ο γη η με ε ε ε ε νη δι

ης τυ χο ο ο ον τε ε ε ε ε ε ες πα α αν τε ε

λου ους σω ω ω τη ρι ι ι ι ι α ας ε ε

πα ξι ον χο ο του ου ου με εν ω ω ως ε ε ε ευ

ερ γε ε ε τη δω ω ω ω ρο ο ο ον φε

ε ρο ο ον τε ε ες υ υ μνο ον ευ χα α α

α α ρι ι στι ι ι α α α α ας

Πέτρου Λαμπαδαρίου

ᾠδὴ θ'

Ἦχος Πά

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2001 σ.134\*

Μ ε γα α λυ νον ψυ υ χη η η η μου ου

τη ην τι ι μι ω ω τε ε ε ραν τω ων α α νω

στρα α τευ μα α α των

στρα α τευ μα α α των

πρωτ.Κων.Παλαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2001 σ.134\*

ω τω ω ωων υ πε ερ νου ου ου ουντου το κου ου

σου ου ου θαυ μα α α α α τω ων Nu υ υμ

φη η παν α α α γνε Μη τε ερ ευ λο ο ο

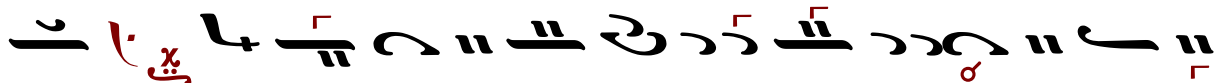
γη η με ε ε ε ε νη δι ης τυ χο ο ο ον τε


ε ε ε ε ε ες πα α αν τε ε λου ους σω ω ω τη

ρι ι ι ι ι α ας ε ε πα ξι ι ο ον κρο ο του

ου ου με εν ω ω ως ε ε ευ ε ερ γε ε ε τη

δω ω ω ω ρο ο ο ον γε ε ρο ο ον τε ε


  
 ες υ υ μνο ον ευ χα α α α α ρι ι στι ι



  
 ι α α α α α ας


Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Παπαγιάννη)


ᾠδὴ θ'

Ἦχος Πά

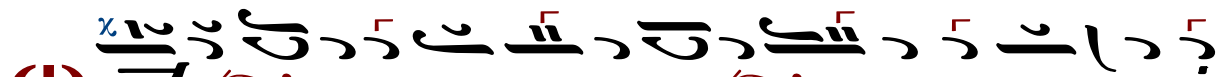
πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2001 σ.134\*



  
**Μ** ε γα α λυ νον ψυ υ χη η η η μου ου

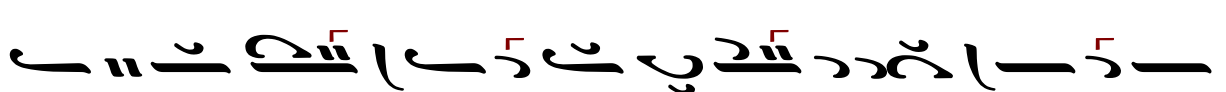

  
 τη ην τι ι μι ω ω τε ε ε ραν τω ων α α νω


  
 στρα α τευ μα α α α των

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2001 σ.134\*


  
**Ω** τω ω ωων υ πε ερ νου ου ου ουντου το κου ου


  
 σου ου ου θαυ μα α α α α τω ων Νυ υ υμ


  
 φη η παν α α α γνε Μη τε ερ ευ λο ο ο

γη η με ε ε ε ε νη δι ης τυ χο ον τε

ες παν τε λου ους σω ω ω τη ρι ι ι ι ι α

ας ε ε πα ξι ι ο ον χρο ο του ου ου με εν ω ω

ως ε ε ευ ε ερ γε ε ε τη δω ω ω ρο ον φε

ε ρο ο ον τε ες υ υ μνο ον ευ χα α α α

α ρι ι στι ι ι α α α α α ας

# Τῆς Ὑπαπαντῆς

15 Ἰανουαρίου μέχρι τῆς ἀποδόσεως τῆς ἑορτῆς τῆς Ὑπαπαντῆς

## ἤχος γ'

α **Χ**έρσον ἄβυσσοτόκον πέδον ἤλιος, ἐπεπόλευσέ ποτε· ὡσεὶ τεῖχος γὰρ ἐπάγη, ἐκατέρωθεν ὕδωρ, λαῶν πεζοποντοποροῦντι, καὶ θεαρέστως μέλποντι. Ἄσωμεν τῷ Κυρίῳ ἐνδόξως γὰρ δεδόξασται.

γ **Τ**ὸ στερέωμα, τῶν ἐπὶ σοὶ πεποιθότων, στερέωσον Κύριε τὴν Ἐκκλησίαν, ἣν ἐκτήσω, τῷ τιμίῳ σου αἵματι.

δ **Ἐ**κάλυψεν οὐρανοῦς, ἡ ἀρετὴ σου Χριστέ· τῆς κιβωτοῦ γὰρ προελθὼν, τοῦ ἁγιάσματος σου, τῆς ἀφθόρου Μητρὸς, ἐν τῷ ναῷ τῆς δόξης σου, ὠφθης ὡς βρέφος, ἀγκαλοφορούμενος, καὶ ἐπληρώθη τὰ πάντα τῆς σῆς αἰνέσεως.

ε **ᾠ**ς εἶδεν Ἡσαΐας συμβολικῶς, ἐν θρόνῳ ἐπηρμένῳ Θεόν, ὑπ' ἀγγέλων δόξης δορυφορούμενον, ὦ τάλας! ἐβόα, ἐγὼ· πρὸ γὰρ εἶδον σωματούμενον Θεόν, φωτὸς ἀνεσπέρου, καὶ εἰρήνης δεσπόζοντα.

ς **Ἐ**βόησέ σοι, ἰδὼν ὁ πρέσβυς, τοῖς ὀφθαλμοῖς τὸ σωτήριον, ὃ λαοῖς ἐπέστη· ἐκ Θεοῦ Χριστέ σὺ Θεός μου.

ζ **Σ**ὲ τὸν ἐν πυρὶ δροσίσαντα, παῖδας θεολογήσαντας, καὶ Παρθένῳ, ἀκηράτῳ, ἐνοικήσαντα, Θεὸν Λόγον ὑμνοῦμεν, εὐσεβῶς μελωδοῦντες· Εὐλογητὸς ὁ Θεός, ὁ τῶν πατέρων ἡμῶν.

Ἀινοῦμεν, εὐλογοῦμεν, καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον.

η **Ἀ**στέκτω πυρὶ ἐνωθέντες, οἱ θεοσεβείας προεστῶτες νεανίαι, τῇ φλογὶ δὲ μὴ λωβηθέντες, θεῖον ὕμνον ἔμελπον· Εὐλογεῖτε πάντα τὰ ἔργα τὸν Κύριον, καὶ ὑπερυψοῦτε, εἰς πάντας τοὺς αἰῶνας.

Σύντομοι

Ἀργαί

## Σύντομοι

Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου

ὥδη α'

Ἦχος ἠΐ Γα

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.286#

**Χ**ερσοναβυσσοτον πεδονηλιος<sup>χ'η'</sup>επεπολευ

σεποτεωσει τειχοςγαρεπαγηεκατεερωθεν

υυδωρ<sup>π'η'</sup>λαωπεζοποντοπορουου ουντικαι

θεαρεστωσμελποντι<sup>π'η'</sup>ασωμεντω Κυριιι

ωενδοξωσγαρδεδοοξαασαι<sup>η'</sup> *ωδ'η'γ'*

**Τ**οστερεωμα<sup>δ'η'</sup>τωνεπισοιπεεποιθο

οοτων<sup>π'η'</sup>στερεωσον Κυριετην Εκκλησιιαν

ηνεκτησω<sup>χ'η'</sup> χοροςα'τω τιμιω σου αι αι μαα

τι<sup>η'</sup> *ωδ'η'δ'*

**Ε**κααλυψενουρανοσ ηαρετησου Χρι

στε <sup>χ'η</sup> της κι βω του γαρ προ ελ θων του α γι α σμα

τος σου της α α φθο ο ρουμητρος <sup>π'η</sup> εν τω να ω της δο ξης

σου <sup>χ'η</sup> ω φθη ης ως βρε φος αγ καλοφο ο ρου ου με ε νος <sup>π'η</sup> και

ε πλη ρω θη τα πα <sup>σ</sup> αν τα της σης αι νε ε σε ε

ως <sup>η</sup>

ᾠδὴ ε'

**ω** ς ει δεν Η σα ι ας συμβο λι κως <sup>χ'η</sup> εν θρο νω

ε πηρ με νω Θε ον υπ Αγ γε λων δο ξης δο ρυ φο ο

ρου ου με ε νον ω τα α λας ε βο α ε γω προ γαρ ει

δον σω μα του με νον Θε ον φω τος α α νε σπε ρου και

ει ρη η νης δε σπο ο ζο ον τα <sup>σ</sup> <sup>η</sup>

ᾠδὴ ε'



Ε βο ο ο η σε ε ε σοι ι δων ο πρε ε ε

σβυς π ρ τοις ο φθαλ μοι οισ το σω ω τη η ρι ι ον π ρ ο λα

οις ε πε στη εκ Θε ου Χρι στε συ υ Θε ος μου ρ η ω δ η ζ'

Σ ε τον εν πυ ρι δρο σι σαν τα παι δας θε ο λο ο γη η σα

αντας και Πα ρ θε νω α κη ρα τω εν οι κη σαν τα χ ρ Θε

ον Λο ο γον υ μνου ου μεν π ρ ευ σε βως με ε λω δου ου ουν

τες π ρ ευ λο γη το ο ος ο Θε ος ο των πα τε ε

ρων η μων ρ η ω δ η η'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν χ ρ και προσ κυ νου ου μεν το

ον Κυ ρι ι ον π ρ

α στε κτω πυ ρι ι ε νω θεν τες <sup>χ</sup>οι θε ο

σε βει α προ ε στω τες νε α νι ι αι τη φλο

γι δε μη η λω βη θεν τες θει ον υ μνο ον ε ε με ελ

πον <sup>π</sup>ευ λο γει τε παν τα τα ερ γα τον Κυ ρι ον <sup>χ</sup>και

υ περ υ ψου ου τειεις παν τας τους αι ω νας <sup>η</sup>

### Ἄγαι

Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου<sup>15</sup>

ῥδῆ α'

### Ἦχος ἠ Γα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2002 σ.65/512\*

Χ ερ σον α βυ σ σο το ο ο ο ο κον <sup>π</sup>πε ε δον η

λι ι ος ε ε πε πο ο λε ευ σε ε πο ο ο ο

<sup>15</sup> Εἰς τὰς καταβασίας ταύτας ἐπεφέραμεν ἐλαφρὰς τινὰς μεταβολὰς πρὸς ἀποφυγὴν παρατονισμῶν καὶ ἀστοχῶν χωρισμοῦ λέξεων. Οὐσιαστικωτέρας διορθώσεις πρὸς καλυτέραν ἀπόδοσιν τοῦ νοήματος καὶ σύντημην μουσικῶν τινῶν γραμμῶν παραθέτομεν μεθ' ἑκάστην καταβασίαν. [πρωτ.Κων.Παπαγιάννης]

τε ε <sup>π ρ</sup> ω σ ει τει χο ος γα αρ ε πα α α α γη <sup>χ ρ</sup>

ε ε κα τε ε ε ε ρω ω θεν υ υ υ υ

δω ωρ <sup>π ρ</sup> λα ω πε ζο ο πο ον το πο ρου ου

ου ου ου ουν τι ι <sup>χ ρ</sup> και θε α ρε ε στω ως με ελ

πο ο ο ον τι ι <sup>π ρ</sup> α σω μεν τω ω ω ω Κυ ρι

ω ω εν δο ο ξως γαρ δε ε δο ο ο ο ο ο ξα

α σται <sup>ρ ρ</sup>

διασκευή

**Χ**ερ σον α βυ σσο το ο κον πε ε ε ε ε δον <sup>π ρ</sup> η <sup>ρ</sup>

η λι ι ος ε πε πο ο λε ευ σε ε ε πο ο τε

ε <sup>π ρ</sup> ω σ ει τει χο ος γα αρ ε πα α α α γη <sup>χ ρ</sup> ε

κα τε ε ρω ω θεν υ υ υ υ δω ωρ <sup>π 9</sup> λα

ω πε ζο πον το πο ρου ου ου ου ουν τι ι <sup>ο χ 9</sup> και θε

α ρε ε στως με ελ πο ο ο ον τι ι <sup>π 9</sup> α σω

μεν τω ω ω ω Κυ ρι ω ω εν δο ο ξως γαρ δε ε

δο ο ο ο ο ο ξα α σται <sup>η</sup>

ᾠδὴ γ'

**T**ο στε ε ε ρε ε ε ε ε ω ω μα α α

α α των ε πι ι σοι πε ε ε ε ποι οι θο ο ο τω

ων <sup>π 9</sup> στε ρε ε ε ω ω ω ω σον Κυ υ ρι ι ε ε

ε την **E** εκ κλη σι ι ι ι α αν <sup>π 9</sup> η η η

ην ε ε κτη η η σω <sup>χ ρ</sup> χορὸς ἀ τω ω τι μι ι ι ι

ω σου ου αι αι αι αι αι αι μα α τι <sup>η</sup>

διασκευή

**Τ** ο στε ε ρε ε ε ω ω ω ω μα α <sup>π ρ</sup>

των ε πι ι σοι πε ε ε ε ποι οι θο ο ο τω ων <sup>π ρ</sup>

στε ρε ε ε ω ω ω ω σον Κυ υ ρι ι ε ε ε

την Ε εκ κλη σι ι ι ι α αν <sup>π ρ</sup> η η η

ην ε ε κτη η η σω <sup>χ ρ</sup> χορὸς ἀ τω ω τι μι ι ι ι

ω σου ου αι αι αι αι αι αι μα α τι <sup>η</sup>

ᾠδὴ δ'

**Ε** κα λυ ψε εν ου ου ρα νου ου ους η α α

ρε ε ε τη η σου ου Χρι ι ι στε ε ε

της κι βω του γαρ προ ε ε ελ θων του ου α α α γι

α α σμα το ο ο ος σου ου της α φθο ο ο

ρου ου Μη η τρο ο ος εν τω ω να ω ω τη ης δο ο

ο ξη η η ης σου ου ω ω φθη η ης ω ως βρε

ε ε φος α αγκα λο ο φο ο ρου ου ου με ε ε

ε νο ος και ε πλη ρω ω ω θη τα α πα α αν

τα α της σης αι αι νε ε ε ε ε ε σε ε

ως

διασκευή

κα λυ ψε εν ου ου ρα νου ου ους η α α

ρε ε ε τη η σου ου Χρι ι ι στε ε ε ✠

της κι βω του γαρ προ ε ε ελ θων του α γι α

σμα α α το ο ος σου ου ✠ της α φθο ο ο ρου ου

Μη η τρο ος π εν τω να ω ω ω της δο

ο ξη ης σου ✠ ω ω φθη η η ης ω ως βρε ε ε φος ✠

αγ κα λο φο ρου ου ου με ε ε ε νο ος π και ε

πλη ρω ω ω θη τα α πα α αν τα α της σης αι αι

νε ε ε ε ε ε σε ε ως η

ὥδ' ἐ'

Ω ς ει δε εν Η ♂ η σα ι ι ι ι ας ✠ ♀ συ υμ

βο ο λ ι ι κω ω ως ο εν θρο νω ε ε

ε π η ρ με ε ε ε ε νω ω Θε ε ε ο ν υπ αγ

γε λω ω ν δο ο ο ξ η ς δο ο ρυ υ φο ρου ου ου με

ε ε ε ε νο ο ν π ω τ α α α α α α α α

λα ας ε βο ο ο α α ε ε ε γω ω προ

γα ρ ει ει ει δο ο ν σω μα α του ου με νο ο ο ν Θε ε

ε ε ο ο ν φω το ο ο ς α α α νε σπε ε

ε ε ρου και ει ρ η η η ν η ς δε ε σπο ο ο ο ο

ο ζ ο ν τα

\* σω μα του ου με νο ο ν Θε ε ο ο ν

ἄλλη γραμμὴ



ῶδὴς'

Ε βο ο ο ο η η σε ε ε σοι οι <sup>π ρ</sup> ι δω ω  
 ωων ο ο πρε ε ε σβυ υς <sup>π ρ</sup> τοις ο φθαλ μοι οι οισ το ο  
 σω τη η η ρι ι ι ο ον <sup>π ρ</sup> ο ο λα οι οι  
 οι οισ ε ε πε ε ε στη <sup>χ ρ</sup> εκ Θε ου Χρι στε συ υ  
 υ υ υ Θε ος μου ου <sup>η</sup>

διασκευή

Ε βο ο ο ο η η σε ε ε σοι οι <sup>π ρ</sup> ι δω ω  
 ωων ο ο πρε ε ε σβυ υς <sup>π ρ</sup> τοις ο φθαλ μοι οι οισ το ο  
 σω τη η η ρι ο ο ον ο ο ο λα οι οισ  
 ε πε ε ε ε ε στη η <sup>π ρ</sup> εκ Θε ου Χρι

στε σου υ υ υ υ υ Θε ος μου ου <sup>ⲓ</sup>

ῥδῆζ

**Ⲙ** ε ε τ ο ο ν εν π υ ρ ι ι ι δ ρ ο σ ι ι σα αν τα <sup>ⲕⲑ</sup>

παι αι αι δας θε ο ο λο ο γ η η η σα α α αν

τα ας <sup>ⲡⲑ</sup> και Παρ θε νω ω α κ η ρ α α α α τω εν

οι κ η η σα αν τα <sup>ⲕⲑ</sup> Θε ο ο ο ν Λ ο ο ο ο γ ο

ο ν υ μ ν ο υ ο υ ο υ με εν <sup>ⲡⲑ</sup> ευ σε σ β ω σ με ε ε

λω ω δ ο υ ο υ ο υ ν τε ες <sup>ⲡⲑ</sup> ευ λο γ η το ο ο ο σ ο Θε

ο ο ο σ ο τ ω ν πα α τε ε ε ε ρ ω ω ν η η μ ω

ων <sup>ⲓ</sup>

ῥδῆη'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προς κυ νου ου ου

μεν τον Κυ υ υ ρι ι ι ο ον

α στε εκτω πυ ρι ι ι ι ε εν ω θε ε

ε εν τες οι οι θε ο σε βει ει ει α ας προ ο

ε ε στω ω ω τες νε ε α νι ι ι ι αι

αι τη φλο γι δε μη η λω ω βη θε ε ε εν

τες θει ει ον υ υ μνο ον ε ε ε με ε ε ελ πο

ον ευ λο γει τε πα α αν τα α α τα α ε ε ερ

γα τον Κυ υ υ ρι ι ι ι ον και υ περ υ υ

ψου ου ου τεις πα αν τας τους αι αι ω ω ω ω ω ω



## Τιμιωτέρα

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

Λουκᾶ κεφ. 1

ἦχος γ'

- ∴ Μεγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἠγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ σωτῆρί μου. 46-47
  - ∴ Ὅτι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48
  - ∴ Ὅτι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50
  - ∴ Ἐποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσκόρπισεν ὑπερηφάνους διανοίᾳ καρδίας αὐτῶν. 51
  - ∴ Καθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐπέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξάπέστειλε κενούς. 52-53
  - ∴ Ἀντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55
- Τὴν Τιμιωτέραν τῶν Χερουβίμ, καὶ ἔνδοξοτέραν ἀσυγκρίτως τῶν Σεραφίμ, τὴν ἀδιαφθόρως Θεὸν Λόγον τεκοῦσαν, τὴν ὄντως Θεοτόκον, σὲ μεγαλύνομεν.**

Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

## Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου

Λουκᾶ κεφ. 1

ἦχος ἠΐ Γα

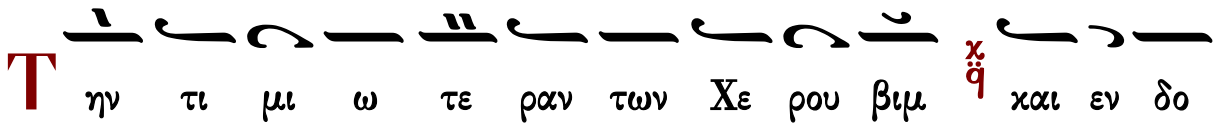
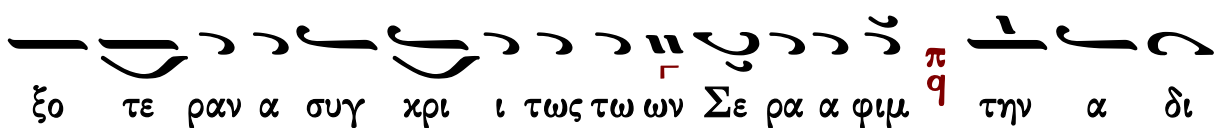
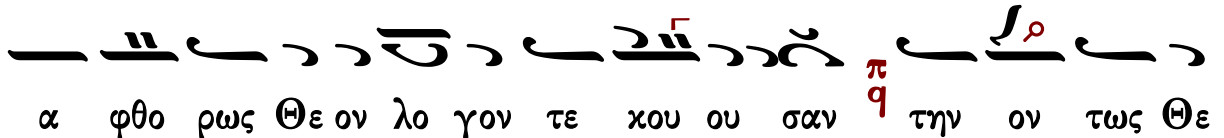
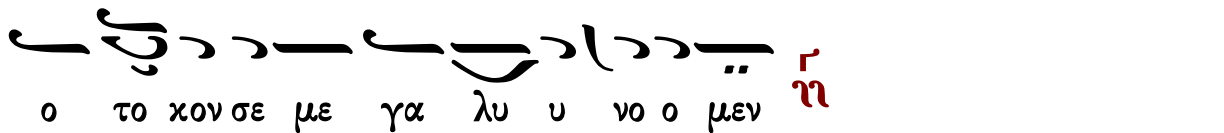
- ∴ Μεγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἠγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ σωτῆρί μου. 46-47
- ∴ Ὅτι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48

- ∴ Ὅτι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ Δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεάν καὶ γενεάν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50
- ∴ Ἐποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσκόρπισεν ὑπερηφάνους διανοία καρδίας αὐτῶν. 51
- ∴ Καθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινοὺς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξαπέστειλε κενούς. 52-53
- ∴ Ἀντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55

Πέτρου Λαμπαδαρίου

## Ἦχος ἤ Γα Πα

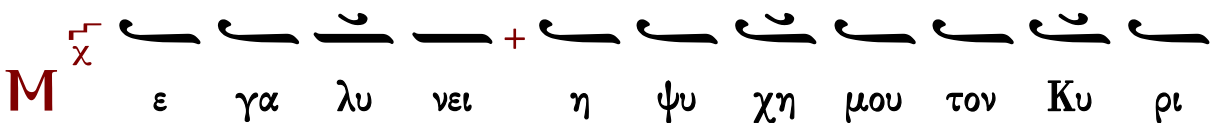
Πανδέκτη  
Ὅρθρος 1850 σ.502#


 Την τιμιωτεραν των Χερουβιμ και ενδο  

 ξοτεραν ασυγκρι ι τωστων Σερα φιμ την αδι  

 α φθο ρως Θεον λογον τε κου ου σαν την ον τως Θε  

 ο τον σε με γαλυ νο ο μεν

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

## Ἦχος ἤ Γα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Τριώδιον Β'  
2003 σ.24#


 Μεγαλυνη ψυχη μου τον Κυρι

ον και η γαλιαια σε το πνευμα μου επι

τω Θεω ωτωσωωτηριμου

Την τιμιωτεραν των Χερουβιμ και ενδο

ξοτεραν ασκριτως των Σεραφιμ την α

διαφθορας Θεον Λογον τεκουουσαν την ον

τως Θεοτοκον σε μεγαλυνοομεν

Οτι επεβλεψεν επι την ταπεινω

σιν της δουλης αυτου ιδου γαρ απο του νυν μα

καριουσι με παασαι αι γενεαι

Την τιμιωτεραν των Χερουβιμ και ενδο

ξο τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ την α

δι α φθο ρως Θε ον Λο γον τε κου ου σαν την ον

τως Θε ο το κον σε με γα λυ υ νο ο μεν

Ο τι ε ποι η σε μοι με γα λει α ο

δυ να τος και α γι ον το ο νο μα αυ του και

το ε λε ος αυ του εις γε νε αν και γε νε αν τοις

φο βου ου με νοις αυ τον

Τ ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βι ιμ και εν

δο ξο τε ραν α συγ κρι ι τως των Σε ρα φιμ την α

δι α φθο ρως Θε ον Λο ο γον τε κου σαν την ον

τως Θεοτόκον σε με γαλυνοομένον

Εποίησε κρατος εν βραχιονι αυτου

του διεσκόπισεν υπερηφάνους διανοικαρδίας αυτων

καρδίας αυτων

Την τιμιωτεραν των Χερουβιμ και ενδοξοτεραν ασυγκριτως των Σεραφιμ

διεφθόρωσ Θεον Λογον τεκουσαν την οντως Θεοτόκον σε με γαλυνοομένον

τως Θεοτόκον σε με γαλυνοομένον

Καθηλιδυναστας αποθρονων και υψωσεται πεινους πεινωντας ενεπλησεν αγα

υψωσεται πεινους πεινωντας ενεπλησεν αγα



θων και πλου τουν τας εξ α πε στει λε κε νους

Την τι μι ω τε ραν των Χε ρου βι ιμ και εν

δο ξο τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ την α δι

α φθο ο ρως Θε ο ον Λο γον τε κου ουσαν την ο ο

ον τως Θε ο το κον σε μεγα λυ υ νο ο μεν

Α ν τε λα βε το Ισ ρα ηλ παι δος αυ του

μνη σθη ναι ε λε ους κα θως ε λα λη σε προς τους

πα τε ρας η μων τω Α βρα αμ και τω σπερ μα τι αυ

του ε ως αι ω ω νος

Την τι μι ω τε ραν των Χε ρου βι ιμ και εν

δο ξο τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ την α δι  
 α φθο ο ρως Θε ο ον Λο γον τε κου ουσαν την ο ο  
 ον τως Θε ο το κον σε μεγα λυ υ νο ο μεν

### Καταβασία θ' φδής

ἦχος γ'

[Θεοτόκε ἡ ἐλπίς, πάντων τῶν χριστιανῶν, σκέπε φρούρει φύλαττε, τοὺς ἐλπίζοντας εἰς σέ.]

Ἐν νόμῳ σκιᾶ καὶ γράμματι, τύπον κατίδωμεν οἱ πιστοί, πᾶν ἄρσεν τὸ τὴν μήτραν  
 διανοῖγον, ἅγιον Θεῶ· διὸ πρωτότοκον Λόγον, Πατὸρ ἀνάρχου Υἱόν,  
 πρωτοτοκούμενον Μητρί, ἀπειράνδρῳ, μεγαλύνομεν.

Πέτρου Λαμπαδαρίου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Σύντομος

Ἀργή

Σύντομος

Ἀργή

### Πέτρου Λαμπαδαρίου (Σύντομος)

φδὴ θ'

ἦχος ἠ Γα

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
 Ειμολόγιον 1903 σ.293#

Θε ο το ο κε η η ελ πι ι ις παν των  
 τω ων Χρι στι ι α α νων σκε πε φρου ου ρει φυ

υ λατ τε ε ε του ους ελ πι ι ζον τα  
ας ει εις σε η

ε ν νο ο μω σκι α και γραμ μα τι τυ υ πον κα

τι ι δω με εν οι οι πι ι στοι παν αρσεν το την μη τραν δι α

νοι οι οι γον α γιον Θε ω π ρ δι ο πρω το ο το κον

Λο γον Πα τρος α να αρ χου Υι ον πρω το το κου με

νον μη τρι α πει ρα α α αν δρω ω ω με γα λυ νο με

ε ε εν η

### Κωνσταντίνου Παπαγιάννη (Σύντομος)

ᾠδὴ θ'

Ἦχος ἠ Γα ρ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2002 σ.74/521\*

Θ ε ο τ ο ο κ ε η η ε ε λ π ι ι ι ς π α ν  
τ ω ν τ ω ω ν χ ρ ι σ τ ι α ν ω ν σ κ ε π ε φ ρ ο υ ο υ ρ ει φ υ  
υ λ α α τ τ ε ε ε του ο υ ς ε λ π ι ι ζ ο ν τ α ς ει  
σε

ε ν νο ο μ ω σ χ ι α και γ ρ α μ μα τι τυ υ π ο ν και  
τι ι δ ω μ ε ν ο ι π ι σ τ ο ι π α ν α ρ σ ε ν τ ο τ η ν μ η τ ρ α ν δι α  
ν ο ι ο ι γ ο ο ν α γ ι ο ν Θε ω δι ο π ρ ω τ ο ο τ ο κ ο ν  
Λ ο γ ο ν Πα τ ρ ο ς α ν α ρ χ ο υ Υ ι ο ν π ρ ω τ ο τ ο κ ο υ  
μ ε ν ο ν Μ η τ ρ ι α π ει ρ α α αν δ ρ ω με γ α λ υ υ νο

ο μεν

το τέλος  
\* με γ α λ υ νο με ε ε εν

Πέτρου Λαμπαδαρίου (Άγιή)

ψδὴ θ'

Ἦχος ἠΐ Γα

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Ειρμολόγιον 1903 σ.50#

Θ <sup>♀</sup> ε ο το ο ο κε η η η η η η η

ε ελ πι ι ι ι ι ις ἠ πα αν των

τω ω ω ωων χρι στι ι ι α α νων ἠ σκε πε φρου

ου ου ρει ει φυ υ υ υ υ λα ατ τε

ε ε ε ε ε ἠ του ους ελ πι ι ι ι ι ζον τα

α ας ει εις σε ἠ

Ε ν νο ο μω σκι ι α α και γρα α αμ μα τι ι ι

ι τυ υ υ πον κα τι ι ι δω ω μεν οι οι οι πι ι ι

ι στοι οι πα αν α αρσεν το την μη τρα αν δι ι α

νοι οι οι οι γο ο ον α α γι ι ο ο ον Θε ε ε ε

ω ω δι ο ο πρω το ο ο ο το ο κον λο ο ο

ο γον πα τρος α να α α αρ χου ου υι υι υι

ο ο ον πρω το το κου με νο ον μη η η τρι ι

ι α α πει ρα α α αν δρω ω ω με γα α λυ υ

υ υ υ νο ο ο με ε ε εν

### Κωνσταντίνου Παπαγιάννη (Άρχή)

## Ἦχος ἠ Γα ρ

ὠδὴ θ'

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2002 σ.75/522\*

Θ ε ο το ο ο κε η η η η η η η η η η

ε ελ πι ι ι ι ι ι ις πα αν των

τω ω ω ω ων χρι στι ι ι α α νων σκε πε

φρου ου ου ρει φυ υ υ υ υ λα ατ τε

ε ε ε ε ε του ους ελ πι ι ι ι ι ζον

τα α ας ει εις σε

τό αυτό συντετμημένον

Θ ε ο το ο κε η η ε ελ πι ι ις πα

αν των τω ων χρι στι ι α α νων σκε πε φρου

ου ρει φυ υ λα ατ τε ε ε του ους ελ πι

ι ζον τα ας ει εις σε

ε ν νο ο μω σκι ι α α και γρα α αμ μα τι ι ι

ι τυ υ υ πον κα τι ι ι δω ω μεν οι οι οι πι ι ι

ι στοι οι πα αν α αρ σεν το την μη τρα αν δι ι α

νοι οι οι οι γο ο ον α γι ι ο ο ον Θε ε ε ε

ω ω δι ο ο πρω το ο ο ο το ο κον Λο ο

ο ο γον Πα τρος α να α α αρ χου ου Υι υι

υι ο ο ον πρω το το κου με νο ον Μη η η τρι

ι ι α α πει ρα α α αν δρω ω ω με γα α λυ

υ υ υ υ νο ο ο με ε ε εν

αλλι γραμμή γον α α γι ο ον Θε ε ω ω



## Τῆς Ὑπαπαντῆς 2/2

2 Φεβρουαρίου

### ἦχος γ'

- α **Χ**έρσον ἄβυσσοτόκον πέδον ἦλιος, ἐπεπόλευσέ ποτε· ὡσεὶ τεῖχος γὰρ ἐπάγη, ἐκατέρωθεν ὕδωρ, λαῶν πεζοποντοποροῦντι, καὶ θεαρέστως μέλποντι. Ἄσωμεν τῷ Κυρίῳ ἐνδόξως γὰρ δεδόξασται.
- γ **Τ**ὸ στερέωμα, τῶν ἐπὶ σοὶ πεποιθότων, στερέωσον Κύριε τὴν Ἐκκλησίαν, ἣν ἐκτήσω, τῷ τιμίῳ σου αἵματι.
- δ **Ἐ**κάλυψεν οὐρανοῦς, ἡ ἀρετὴ σου Χριστέ· τῆς κιβωτοῦ γὰρ προελθὼν, τοῦ ἁγιάσματός σου, τῆς ἀφθόρου Μητρὸς, ἐν τῷ ναῷ τῆς δόξης σου, ὠφθης ὡς βρέφος, ἀγκαλοφορούμενος, καὶ ἐπληρώθη τὰ πάντα τῆς σῆς αἰνέσεως.
- ε **Ἦ**ς εἶδεν Ἡσαΐας συμβολικῶς, ἐν θρόνῳ ἐπηρμένῳ Θεόν, ὑπ' ἀγγέλων δόξης δορυφορούμενον, ὦ τάλας! ἐβόα, ἐγώ· πρὸ γὰρ εἶδον σωματούμενον Θεόν, φωτὸς ἀνεσπέρου, καὶ εἰρήνης δεσπόζοντα.
- ς **Ἐ**βόησέ σοι, ἰδὼν ὁ πρέσβυς, τοῖς ὀφθαλμοῖς τὸ σωτήριον, ὃ λαοῖς ἐπέστη· ἐκ Θεοῦ Χριστέ σὺ Θεός μου.
- ζ **Σ**ὲ τὸν ἐν πυρὶ δροσίσαντα, παῖδας θεολογήσαντας, καὶ Παρθένῳ, ἀκηράτῳ, ἐνοικήσαντα, Θεὸν Λόγον ὑμνοῦμεν, εὐσεβῶς μελωδοῦντες· Εὐλογητὸς ὁ Θεός, ὁ τῶν πατέρων ἡμῶν.
- Αἰ**νοῦμεν, εὐλογοῦμεν, καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον.
- η **Ἀ**στέκτω πυρὶ ἐνωθέντες, οἱ θεοσεβείας προεστῶτες νεανίαι, τῇ φλογὶ δὲ μὴ λωβηθέντες, θεῖον ὕμνον ἔμελπον· Εὐλογεῖτε πάντα τὰ ἔργα τὸν Κύριον, καὶ ὑπερυψοῦτε, εἰς πάντας τοὺς αἰῶνας.

Σύντομοι

Ἀργαί

### Σύντομοι

Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου

ὥδη α'

Ἦχος ἠΐ Γα

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.286#

**Χ**ερσοναβυσσοτον πεδονηλιος <sup>χῆ</sup>επεπολευ

σεποτεωσει τειχοςγαρ επαγηεκατεερωθεν

υυδωρ <sup>πῆ</sup>λαωπεζοποντοπορου ου ουν τι και

θεαρεστωσμελποοντι <sup>πῆ</sup>ασωμεντω Κυρι ι ι

ωενδοξωσγαρ δεδοοξαασαι <sup>ῆ</sup> ῶδῆ γ'

**Τ**οστερεωμα <sup>ῆ</sup>τωνεπισοιπεεποιθο

οοτων <sup>πῆ</sup>στερεωσον Κυριετην Εκκλησιιαν

ηνεκτησω <sup>χῆ</sup>χοροςατω τιμιω σου αι αι μαα

τι <sup>ῆ</sup> ῶδῆ δ'

**Ε**κααλυφενουρα νους ηαρετη σου Χρι

στε <sup>χ'η</sup>της κι βω του γαρ προ ελ θων του α γι α σμα

τος σου της α α φθο ο ρουμητρος <sup>π'η</sup> εν τω να ω της δο ξης

σου <sup>χ'η</sup>ω φθη ης ως βρε φος αγ καλοφο ο ρου ου με ε νος <sup>π'η</sup> και

ε πλη ρω θη τα πα <sup>π'η</sup>αν τα της σης αι νε ε σε ε

ως <sup>π'η</sup>

ωδὴ ε'

**Ω** ς ει δεν Η σα ι ας συμβο λι κως <sup>χ'η</sup> εν θρο νω

ε πηρ με νω Θε ον υπ Αγ γε λων δο ξης δο ρυ φο ο

ρου ου με ε νον ω τα α λας ε βο α ε γω προ γαρ ει

δον σω μα του με νον Θε ον φω τος α α νε σπε ρου και

ει ρη η νης δε σπο ο ζοον τα <sup>π'η</sup>

ωδὴ ε'

Ε βο ο ο η σε ε ε σοι ι δων ο πρε ε ε

σβυς π ρ τοις ο φθαλ μοι οισ το σω ω τη η ρι ι ον π ρ ο λα

οις ε πε στη εκ Θε ου Χρι στε συ υ Θε ος μου ρ η ω δ η ζ'

Σ ε τον εν πυ ρι δρο σι σαν τα παι δας θε ο λο ο γη η σα

αντας και Πα ρ θε νω α κη ρα τω εν οι κη σαν τα χ ρ η Θε

ον Λο ο γον υ μνου ου μεν π ρ ευ σε βως με ε λω δου ου ουν

τες π ρ ευ λο γη το ο ος ο Θε ος ο των πα τε ε

ρων η μων ρ η ω δ η η'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν χ ρ και προσ κυ νου ου μεν το

ον Κυ ρι ι ον π ρ

α στε κτω πυ ρι ι ε νω θεν τες <sup>χ</sup>οι θε ο

σε βει α προ ε στω τες νε α νι ι αι τη φλο

γι δε μη η λω βη θεν τες θει ον υ μνο ον ε ε με ελ

πον <sup>π</sup>ευ λο γει τε παν τα τα ερ γα τον Κυ ρι ον <sup>χ</sup>και

υ περ υ ψου ου τειεις παν τας τους αι ω νας <sup>η</sup>

### Ἄγαι

Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου16

ῥδῆ α'

### Ἦχος ἠ Γα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2002 σ.65/512\*

Χ ερ σον α βυσ σο το ο ο ο ο κον <sup>π</sup>πε ε δον η

λι ι ος ε ε πε πο ο λε ευ σε ε πο ο ο ο

16 Εἰς τὰς καταβασίας ταύτας ἐπεφέραμεν ἐλαφρὰς τινὰς μεταβολὰς πρὸς ἀποφυγὴν παρατονισμῶν καὶ ἀστόχου χωρισμοῦ λέξεων. Οὐσιαστικωτέρας διορθώσεις πρὸς καλυτέραν ἀπόδοσιν τοῦ νοήματος καὶ σύντημσιν μουσικῶν τινῶν γραμμῶν παραθέτομεν μεθ' ἐκάστην καταβασίαν. [πρωτ.Κων.Παπαγιάννης]

τε ε <sup>π ρ</sup> ω σ ει τει χο ος γα αρ ε πα α α α γη <sup>χ ρ</sup>

ε ε κα τε ε ε ε ρω ω θεν υ υ υ υ

δω ωρ <sup>π ρ</sup> λα ω πε ζο ο πο ον το πο ρου ου

ου ου ου ουν τι ι <sup>χ ρ</sup> και θε α ρε ε στω ως με ελ

πο ο ο ον τι ι <sup>π ρ</sup> α σω μεν τω ω ω ω Κυ ρι

ω ω εν δο ο ξως γαρ δε ε δο ο ο ο ο ο ο ξα

α σται <sup>ρ ρ</sup>

διασκευή

**Χ**ερ σον α βυ σσο το ο κον πε ε ε ε ε δον <sup>π ρ</sup> η

η λι ι ος ε πε πο ο λε ευ σε ε ε πο ο τε

ε <sup>π ρ</sup> ω σ ει τει χο ος γα αρ ε πα α α α γη <sup>χ ρ</sup> ε

κα τε ε ρω ω θεν υ υ υ υ δω ωρ <sup>π 9</sup> λα

ω πε ζο πον το πο ρου ου ου ου ουν τι ι <sup>ο χ 9</sup> και θε

α ρε ε στως με ελ πο ο ο ον τι ι <sup>π 9</sup> α σω

μεν τω ω ω ω Κυ ρι ω ω εν δο ο ξως γαρ δε ε

δο ο ο ο ο ο ξα α σται <sup>η</sup>

ᾠδὴ γ'

**T** ο στε ε ε ρε ε ε ε ε ω ω μα α α

α α των ε πι ι σοι πε ε ε ε ποι οι θο ο ο τω

ων <sup>π 9</sup> στε ρε ε ε ω ω ω ω σον Κυ υ ρι ι ε ε

ε την **E** εκ κλη σι ι ι ι α αν <sup>π 9</sup> η η η

ην ε ε κτη η η σω χορός α τω ω τι μι ι ι ι

ω σου ου αι αι αι αι αι αι μα α τι

διασκευή

Τ ο στε ε ρε ε ε ω ω ω ω μα α

των ε πι ι σοι πε ε ε ε ποι οι θο ο ο τω ων

στε ρε ε ε ω ω ω ω σον Κυ υ ρι ι ε ε ε

την Ε εκ κλη σι ι ι ι α αν η η η

ην ε ε κτη η η σω χορός α τω ω τι μι ι ι ι

ω σου ου αι αι αι αι αι αι μα α τι

ᾠδὴ δ'

Ε κα λυ ψε εν ου ου ρα νου ου ους η α α



ρε ε ε τη η σου ου Χρι ι ι στε ε ε

της κι βω του γαρ προ ε ε ελ θων του ου α α α γι

α α σμα το ο ο ος σου ου της α φθο ο ο

ρου ου Μη η τρο ο ος εν τω ω να ω ω τη ης δο ο

ο ξη η η ης σου ου ω ω φθη η ης ω ως βρε

ε ε φος α αγκα λο ο φο ο ρου ου ου με ε ε

ε νο ος και ε πλη ρω ω ω θη τα α πα α αν

τα α της σης αι αι νε ε ε ε ε ε σε ε

ως

διασκευή

κα λυ ψε εν ου ου ρα νου ου ους η α α

ρε ε ε τη η σου ου Χρι ι ι στε ε ε ✠

της κι βω του γαρ προ ε ε ελ θων του α γι α

σμα α α το ο ος σου ου ✠ της α φθο ο ο ρου ου

Μη η τρο ος π εν τω να ω ω ω της δο

ο ξη ης σου ✠ ω ω φθη η η ης ω ως βρε ε ε φος ✠

αγ κα λο φο ρου ου ου με ε ε ε νο ος π και ε

πλη ρω ω ω θη τα α πα α αν τα α της σης αι αι

νε ε ε ε ε ε σε ε ως η

ᾠδὴ ε'

Ω ς ει δε εν Η ♂ η σα ι ι ι ι ας ✠ ♀ σου υμ

βο ο λ ι ι κω ω ως ο εν θρο νω ε ε

ε π η ρ με ε ε ε ε νω ω Θε ε ε ο ν υπ αγ

γε λω ω ν δο ο ο ξ η ς δο ο ρυ υ φο ρου ου ου με

ε ε ε ε νο ο ν π ω τα α α α α α α

λα ας ε βο ο ο α α ε ε ε γω ω προ

γα ρ ει ει ει δο ο ν σω μα α του ου με νο ο ο ν Θε ε

ε ε ο ο ν φω το ο ο ς α α α νε σπε ε

ε ε ρου και ει ρ η η η ν η ς δε ε σπο ο ο ο ο

ο ζ ο ν τα

\* σω μα του ου με νο ο ν Θε ε ο ο ν

ἄλλη γραμμὴ

ῶδὴς'

Ε βο ο ο ο η η σε ε ε σοι οι <sup>π ρ</sup> ι δω ω  
 ωων ο ο πρε ε ε σβυ υς <sup>π ρ</sup> τοις ο φθαλ μοι οι οισ το ο  
 σω τη η η ρι ι ι ο ον <sup>π ρ</sup> ο ο λα οι οι  
 οι οισ ε ε πε ε ε στη <sup>χ ρ</sup> εκ Θε ου Χρι στε συ υ  
 υ υ υ Θε ος μου ου <sup>η</sup>

διασκευή

Ε βο ο ο ο η η σε ε ε σοι οι <sup>π ρ</sup> ι δω ω  
 ωων ο ο πρε ε ε σβυ υς <sup>π ρ</sup> τοις ο φθαλ μοι οι οισ το ο  
 σω τη η η ρι ο ο ον ο ο ο λα οι οισ  
 ε πε ε ε ε ε στη η <sup>π ρ</sup> εκ Θε ου Χρι

στε σου υ υ υ υ υ Θε ος μου ου <sup>ⲓ</sup>ⲛⲏ

ῥδῆζ

**Ⲙ** ε ε τ ο ο ν εν π υ ρ ι ι ι δ ρ ο σ ι ι σα αν τα <sup>ⲓ</sup>ⲛⲏ

παι αι αι δας θε ο ο λο ο γ η η η σα α α αν

τα ας <sup>ⲓ</sup>ⲛⲏ και Παρ θε νω ω α κ η ρ α α α α τω εν

οι κ η η σα αν τα <sup>ⲓ</sup>ⲛⲏ Θε ο ο ο ν Λ ο ο ο ο γ ο

ο ν υ μ ν ο υ ο υ ο υ με εν <sup>ⲓ</sup>ⲛⲏ ευ σε σ β ω σ με ε ε

λ ω ω δ ο υ ο υ ο υ ν τε ες <sup>ⲓ</sup>ⲛⲏ ευ λο γ η τ ο ο ο ο σ ο Θε

ο ο ο σ ο τ ω ν πα α τε ε ε ε ρ ω ω ν η η μ ω

ων <sup>ⲓ</sup>ⲛⲏ

ῥδῆη'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προς κυ νου ου ου

μεν τον Κυ υ υ ρι ι ι ο ον

στε εκτω πυ ρι ι ι ι ε εν ω θε ε

ε εν τες οι οι θε ο σε βει ει ει α ας προ ο

ε ε στω ω ω τες νε ε α νι ι ι ι αι

αι τη φλο γι δε μη η λω ω βη θε ε ε εν

τες θει ει ον υ υ μνο ον ε ε ε με ε ε ελ πο

ον ευ λο γει τε πα α αν τα α α τα α ε ε ερ

γα τον Κυ υ υ ρι ι ι ι ον και υ περ υ υ

ψου ου ου τεεις πα αν τας τους αι αι ω ω ω ω ω ω



## Θ' ᾠδὴ τῆς Ὑπαπαντιῆς

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

### ἦχος γ'

Ἀκατάληπτόν ἐστι, τὸ τελούμενον ἐν σοί, καὶ ἀγγέλοις καὶ βροτοῖς, Μητροπάρθενε ἀγνή.

Ἀγαλίζεται χερσίν, ὁ πρεσβύτες Συμεών, τὸν τοῦ νόμου ποιητήν, καὶ Δεσπότην τοῦ παντός.

Βουλευθεὶς ὁ Πλαστοουργός, ἵνα σώσῃ τὸν Ἀδάμ, μήτραν ᾤκησε τὴν σὴν, τῆς Παρθένου καὶ ἀγνῆς.

Γένος ἅπαν τῶν βροτῶν, μακαρίζει σε ἀγνή, καὶ δοξάζει σε πιστῶς, ὡς Μητέρα τοῦ Θεοῦ.

Δεῦτε ἴδετε Χριστόν, τὸν Δεσπότην τοῦ παντός, ὃν βαστάζει Συμεών, σήμερον ἐν τῷ ναῷ.

Ἐπιβλέπεις πρὸς τὴν γῆν, καὶ ποιεῖς τρέμειν αὐτήν, καὶ πῶς γέρων κεκμηκώς, σὲ κατέχει ἐν χερσὶ;

Ζήσας ἔτη Συμεών, ἕως εἶδε τὸν Χριστόν, καὶ ἐβόα πρὸς αὐτόν. Νῦν ἀπόλυσιν ζητῶ.

Ἡ λαβὴς ἢ μυστικὴ, ἢ τὸν ἄνθρακα Χριστόν, συλλαβοῦσα ἐν γαστρὶ, σὺ ὑπάρχεις Μαριάμ.

Θέλων ἐνηθρώπησας, ὁ προάναρχος Θεός, καὶ ναῷ προσφέρεσαι, τεσσαρακονθήμερος.

Κατελθόντ' ἐξ οὐρανοῦ, τὸν Δεσπότην τοῦ παντός, ὑπεδέξατο αὐτόν, Συμεών ὁ ἱερεὺς.

Λάμπρυνόν μου τὴν ψυχὴν, καὶ τὸ φῶς τὸ αἰσθητόν, ὅπως ἴδω καθαρῶς, καὶ κηρύξω σε Θεόν.

Ἐν νόμου σκιᾷ καὶ γράμματι, τύπον κατίδωμεν οἱ πιστοί, πᾶν ἄρσεν τὸ τὴν μήτραν διανοίγον, ἅγιον Θεῷ· διὸ πρωτότοκον Λόγον, Πατρὸς ἀνάρχου Υἱόν, πρωτοτοκούμενον Μητρί, ἀπειράνδρω, μεγαλύνομεν.

Μητροπάρθενε ἀγνή, τί προσφέρεις τῷ ναῷ, νέον βρέφος ἀποδούς, ἐν ἀγκάλαις Συμεών;

Ἐν νόμου σκιᾷ καὶ γράμματι, τύπον κατίδωμεν οἱ πιστοί, πᾶν ἄρσεν τὸ τὴν μήτραν διανοίγον, ἅγιον Θεῷ· διὸ πρωτότοκον Λόγον, Πατρὸς ἀνάρχου Υἱόν, πρωτοτοκούμενον Μητρί, ἀπειράνδρω, μεγαλύνομεν.

Νῦν ἀπόλυσιν ζητῶ, ἀπὸ σοῦ τοῦ πλαστοουργοῦ, ὅτι εἶδόν σε Χριστέ, τὸ σωτήριόν μου φῶς.

Τοῖς πρὶν νεογνῶν τρυγόνων ζευγος, δυάς τε ἦν νεοσσῶν, ἀνθ' ὧν ὁ θεῖος Πρέσβυς, καὶ σώφρων Ἄννα προφητὶς, τῷ ἐκ Παρθένου τεχθέντι, καὶ οἷω γόνυ Πατρός, ἐν τῷ ναῷ προσιόντι, λειτουργοῦντες ἐμεγάλυνον.

Ὁν οἱ ἄνω λειτουργοί, τρόμῳ λιτανεύουσι, κάτω νῦν ὁ Συμεών, ἀγκαλιζεται χερσί.

Τοῖς πρὶν νεογνῶν τρυγόνων ζευγος, δυάς τε ἦν νεοσσῶν, ἀνθ' ὧν ὁ θεὸς πρέσβυς, καὶ σώφρων Ἄννα προφήτις, τῷ ἐκ Παρθένου τεχθέντι, καὶ οἴῳ γόνῳ Πατρός, ἐν τῷ ναῷ προσιόντι, λειτουργοῦντες ἔμεγάλυνον.

Δόξα Πατρὶ καὶ Υἱῷ καὶ ἀγίῳ Πνεύματι.

Ἡ τῇ φύσει μὲν Μονάς, τοῖς προσώποις δὲ Τριάς, φύλαττε τοὺς δούλους σου, τοὺς πιστεύοντας εἰς σέ.

Ἀπέδωκάς μοι ἔβρα Συμεών, τοῦ σωτηρίου σου Χριστὲ ἀγαλλίασιν' ἀπόλαβέ σου τὸν λάτριν, τὸν τῇ σκιᾷ κεκμηκότα, νέον τῆς χάριτος, ἱεροκήρυκα μύστην, ἐν αἰνέσει μεγαλύνοντα.

Καὶ νῦν καὶ αἰεὶ καὶ εἰς τοὺς αἰῶνας τῶν αἰώνων, ἀμήν.

Θεοτόκε ἡ ἐλπίς, πάντων τῶν χριστιανῶν, σκέπε φρούρει φύλαττε, τοὺς ἐλπίζοντας εἰς σέ.

Ἱεροπρεπῶς ἀνθωμολογεῖτο, Ἄννα ὑποφητεύουσα, ἡ σώφρων καὶ ὁσία, καὶ πρέσβυρα τῷ Δεσπότῃ, ἐν τῷ ναῷ διαρρήδην, τὴν Θεοτόκον δὲ ἀνακηρύττουσα, πᾶσι τοῖς παροῦσιν ἔμεγάλυνεν.

Σιμωνόπετρας (Ἀγγελικὸς Χορὸς)

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

## Σιμωνόπετρας (Ἀγγελικὸς Χορὸς)

θ' ᾠδὴ

### Ἦχος ἤ Γα

Ἀγγελικὸς Χορὸς, Ὁρθρος  
Ι. Μ. Σίμωνος Πέτρας  
Ἅγιος Ὄρος, 2001#

κα τα α λη πτον ε στι ι ι το ο τε

λου με νον εν σοι ἦ και αγ γε ε λοις και βρο

τοι οι οις Μη η τρο παρ θε νε α γνη ἦ

α γ κα λι ι ζε ται χερ σι ι ιν ο ο πρε



σβυ της Συ με ων τον του νο ο μου ποι η

τη η ην και αι Δε σπο οτην του παν τος

**Β** ου λη θεις ο Πλα στουρ γο ο ος ι ι να σω

ση τον Α δαμ μη τραν ω ω κη σε ε την ση η ην

τη ης Παρ θε ενου και α γνης

**Γ** ε νος α α παν τω ων βρο τω ων μα α κα ρι ζει

σε ε ε α γνη και δο ξα α ζει σε ε πι στω ως

ως μη τε ε ε ρα του ου Θε ου

**Δ** ευ τε ι ι δε τε ε Χρι στο ο ον το ον Δε σπο ο

την του παν τος ον βα στα α ζει Συ υ με ω ω ων

ση με ρο ον εν τω να ω **η**

**Ε** πι βλε πεις προς την γη η ην και ποι εις

τρε μειν αυ την **χ** και πως γε ρων κε χμη κως σε ε

κα τε χει εν χερ σι **η**

**Ζ** η σας ε τη Συ με ω ων ε ε ως ει δε

τον Χρι στον **η** και ε βο α προ ος αυ τον νυ υν α

πο ο λυ σιν ζη τω **η**

**Η** λα βις η μυ υ σι κη η η η η τον

α αν θρα κα α Χρι στον **χ** συλ λα βου σα ε εν γα

στρι ι ι συ υ υ πα αρχεις Μα ρι αμ **η**

Θ ε λων εν ην θρω ω πη σα α ας ο ο προ α α

ναρ χοος Θε ος και να ω προς φε ερεσαι τε

εσ σα ρα κον θη με ρος

Κ α τελ θοντ εξ ου ρα νου ου ου το ον Δε σποτην

του παν τος υ πε δε ε ξα το ο αυ τον

Συ με ων ο ι ε ρευς

Λ αμ πυ νον μου την ψυ χη η ην και αι το φως το

αι αι σθη τον ο πως ι δω κα α θα ρω ως και

κη ρυ υ ξω σε Θε ον

Ε ν νο ο μου σκι α και γραμ μα τι τυ υ πον κα

τι ἰδωμεν οἱ οἱ πῖστοι πάν ἄρσεν τὴν μητράν διὰ

νοῖ οἱ οἱ γόν ἄγιον Θεῶ <sup>πρ</sup> διὸ πρῶτο ὁ τοκόν

Λόγον Πατρός ἀναρχοῦ Ὑῖον πρῶτο τοκού με

νον μητρί <sup>χρ</sup> ἀπειράνθρωπε γὰρ λυυνομέν <sup>η</sup>

**Μ**ητροπαθενεαγνητιῖπροσφεις ἐννα

ω <sup>χρ</sup> νεόνβροφος ἀποδους ἐν ἀγκάλαις

<sup>φ</sup> <sup>σ</sup> <sup>η</sup>  
Συμεών <sup>η</sup>

**Ε**ννομούσια και γραμματιτυπονκα

τι ἰδωμεν οἱ οἱ πῖστοι πάν ἄρσεν τὴν μητράν διὰ

νοῖ οἱ οἱ γόν ἄγιον Θεῶ <sup>πρ</sup> διὸ πρῶτο ὁ τοκόν

Λο γον Πα τρος α να αρ χου Υι ον πρω το το κου με

νον μη τρι <sup>χ</sup>α πει ραν δρω με γα λυ υ νο μεν <sup>η</sup>

**N** υν α πο λυ σιν ζη τω ω ω α α πο σου του

πλα στουρ γου <sup>η</sup> ο τι ει δον σε ε Χρι στε τω σω

τη ρι ον μου φως <sup>η</sup>

**T** οις περι εν νε ο γνω ν τρυ γο νων ζευ γος <sup>χ</sup>δυ ας τε η

ην νε οσσων <sup>π</sup>αν θων ο θει ος πρε ε σβυς και σω φρον Α αν

να προ φη η τις <sup>π</sup>τω εκ Παρ θε ε νου τε χθεν τι και

οι ω γο ο νω Πα τρος <sup>χ</sup>εν τω να ω προ σι ον

τι <sup>χ</sup>λει τουρ γουν τες ε με γα α λυ νον <sup>η</sup>

Ο ν ο ι α ν ω λ η ι τ ο υ ρ γ ο ι ο ι ο ι τ ρ ο μ ω λ ι ι τ α

ν ε υ ο υ σ ι κ α τ ω ν υ ν ο Σ υ μ ε ω ω ω ν α γ

κ α λ ι ζ ε τ α ι χ ε ρ σ ι

Τ ο ι σ π ρ ι ν ν ε ο γ ν ω ν τ ρ υ γ ο ν ω ν ζ ε υ γ ο ς δ υ α ς τ ε η

η ν ν ε ο σ σ ω ν α ν θ ω ν ο θ ε ι ο ς π ρ ε ε σ β υ ς κ α ι σ ω φ ρ ο ν Α α ν

ν α π ρ ο φ η η τ ι ς τ ω εκ Πα ρ θε ε ν ο υ τε χ θ ε ν τ ι κ α ι

ο ι ω γ ο ο ν ω Πα τ ρ ο ς εν τ ω ν α ω π ρ ο σ ι ο ν

τ ι λ η ι τ ο υ ρ γ ο υ ν τ ε ς ε μ ε γ α α λ υ ν ο ν

Δ ο ξ α Πα τ ρ ι κ α ι Υ ι ω κ α ι α γ ι ω Π ν ε υ μ α

τ ι

Ἡ τη φη σει μεν Μο να α ας τοι οἰς προ σω

ποις δε Τρι ας ϩη φυ λατ τε τους δου ουλους σου ου

ου του ους πι στευ ον τας εις σε ϩη

Α πε δω κας μοι ε βο α Συ με ων ϫη του σω τη

ρι ουσου Χρι στε ε α γα αλ λι α α σιν πα πο λα βε ε σου

τον λα α τριν τον τη σκι α κε εκμη κο ο ο τα πα νε ε ον

της χα ρι τος ι ε ρο κη ρυ κα μυ υ υ στην ϫη

εν αι νε σει με γα λυ υ νο ον τα ϩη

Και νυν και α ει και εις τους αι ω νας των ϫη

αι ω νων α μην ϩη ϩη ϩη

Θ ε ο τ ο κ ε η ε λ π ι ι ι ς π α α ν τ ω ν τ ω ν Χ ρ ι

σ τ ι α ν ω ν ρ̣ σ κ ε π ε φ ρ ο υ ο υ ρ ε ι φ υ υ λ α τ τ ε ε ε

τ ο υ ο υ ς ε λ π ι ζ ο ν τ α ς ε ι ς σ ε ρ̣

ε ρ ο π ρ ε π ω ς α ν θ ω μ ο λ ο γ ε ι ε ι τ ο <sup>κ̣ ρ̣</sup> Α ν ν α υ

π ο φ η τ ε υ ο υ ς α η σ ω φ ρ ω ν κ α ι ο σ ι ι α <sup>π̣ ρ̣</sup> κ α ι π ρ ε σ β υ

ρ α α τ ω Δ ε σ π ο τ η <sup>κ̣ ρ̣</sup> ε ν τ ω Ν α ω δ ι ι α ρ ρ η η η δ η ν <sup>π̣ ρ̣</sup>

τ η ν Θ ε ο τ ο κ ο ν δ ε α ν α κ η ρ υ τ τ ο υ ς α <sup>κ̣ ρ̣</sup> π α α σ ι

τ ο ι ς π α ρ ο υ σ ι ν ε μ ε γ α α λ υ υ ν ε ρ̣

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

θ' ᾠδὴ<sup>17</sup>

Ἦχος ἠ Γα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2002 σ.70/517\*



**Α** κα τα λη πτον ε στι ι ι το ο τε λου ου με

νο ον εν σοι και αγ γε λους και βροτοι οι ος Μη

η τρο πα αρθε νε ε α γνη

**Α** γ κα λι ζεται χερ σι εν ο πρε σβυ υ της Συ υ

με ων τον του νο μου ποι η τη ην και Δε σπο την

του ου παν τος

**Β** ου λη θεις ο πλα στουρ γο ος ι ι να σω ω ση το

ον Α δαμ μη τραν ω κη σε την ση ην της Παρ θε ε νου

και αι α γνης

**Γ** ε νος α παν των βρο τω ων μα κα ρι ι ζει σε ε

α γνη και δο ξα ζει σε πι στω ως ως Μη τε ρα του ου

Θε ου

Δευ τε ι δε τε Χρι στο ον το ον Δε σπο ο την του ου παν

τος ον βα στα ζει Συ με ω ων ση με ρον εν τω να ω

Επι βλε πεις προς την γη η ην και ποι ει εις

τρε μει ει ν αυ την και πω ως γε ρων κε χμη κω ως σε

κα τε χει εν χερ σι

Ζη σας ε τη Συ με ω ων ε ως ει δε τον Χρι στον α

νε βο α προς αυ το ον νυν α πο ο λυ σι εν ζη τω

Η λα βις η μυστι κη η η η τον αν θρα κα α Χρι

στον ἡ σὺ λ α β ο υ σ α ε ν γ α σ τ ρ ι ι σ υ υ π α ρ χ ε ι ς Μ α α

ρι α μ ἡ

Θ ε λ ω ν ε ε ν η ν θ ρ ω π η σ α ς ο π ρ ο α ν α ρ χ ο ς Θ ε ο ς και

να ω π ρ ο σ φ ε ρ ε σ α ι τ ε ς σ α ρ α κ ο ν θ η μ ε ρ ο ς ἡ

Κ α τ ε λ θ ο ν τ ε ξ ο υ ρ α ν ο υ ο υ τ ο ν Δ ε σ π ο ο τ η ν τ ο υ ο υ

π α ν τ ο ς ἡ υ π ε δ ε ξ α τ ο α υ τ ο ο ν Σ υ μ ε ω ω ν ο

ι ι ε ρ ε υ ς ἡ

Λ α μ π ρ υ ν ο ν μ ο υ τ η ν ψ υ χ η η ν και τ ο φ ω ς τ ο α ι σ θ η τ ο ν

ο π ω ς ι δ ω κ α θ α ρ ω ς και α ι κ η ρ υ υ ξ ω σε Χ ρ ι ι

στον ἡ

**Ε** ν νο ο μου σκι α και γραμ μα τι ⲭⲱϥ τυ υ πον κα

τι ι δω μεν οι πι στοι ⲛ παν αρ σεν το την μη τραν δι α

νοι οι οι γο ον α γιον **Θ**ε ω ⲡϩ δι ο πρω το ο το κον

Λο γον Πα τρος α να αρ χου Υι ον ⲭⲱϥ πρω το το κου

με νον **Μ**η τρι α πει ρα α αν δρω ⲭⲱϥ με γα λυ υ νο

ⲟ μεν ⲛ

**Μ** η τρο παρ θε νε ε α γνη η τι προσ φε ρεις τω να ω ⲭⲱϥ

νε ον βρε φος α πο δου ουσ εν αγ κα α λαις Συ υ με

ⲟ ων ⲛ

**Ε** ν νο ο μου σκι α και γραμ μα τι ⲭⲱϥ τυ υ πον κα

τι ἰδωμενοὶ πιστοὶ ἤπαν ἄρσεν τὸ τὴν μητρὰν διὰ

νοὶ οἰογόν ἄγιον Θεω πῆ διὸ πρῶτο ὀτοκόν

Λόγον Πατρὸς ἄναρχου Υἱὸν χῆ πρῶτο τοκού

μενον Μητρίαπειρα ἄνδρω χῆ μεγαλυνο

ο μὲν ἤ

Νυν ἄπο λυσιν ζήτω ἄπο σου τοῦ πλαστοῦργου ὀτι

εἰδόν σε Χριστέ ἐτο ὀσωτή ἠριον μου φως ἤ

Τοῖς πρίν νεὸ γνων τρυγόνων ζευγὸς δυάσ τε ἠ

ἠνεοσων πῆ ἄνθων ὀθειὸς πρεσβυς καὶ σωφρων Ἄνα

προφηητις πῆ τω ἐκ Παρθενοῦ τε χθεν τι καὶ οἰ

ω γο ο νω Πα τρος εν τω να ω προσ ι ο ο ο ν

τι λει τουρ γουν τες ε με γα α λυ υ νον

Ο ν οι α νω λει τουρ γοι οι τρο μω λι ι τα νευ ου σι κα τω

νυν ο Συ με ω ω ν αγ κα λι ζεται αι χερ σι

Τ οις περι εν νε ο γνων τρυ γο νων ζευ γος δυ ας τε η

ην νε οσσων ανθ ων ο θει ος πρε σβυς και σω φρων Α αν να

προ φη η τις τω εκ Παρ θε ε νου τε χθεν τι και οι

ω γο ο νω Πα τρος εν τω να ω προσ ι ο ο ο ο ν

τι λει τουρ γουν τες ε με γα α λυ υ νον

Δ ο ξα Πα τρι και Υι ω και α γι ω Πνευ μα

τι

Η τη φυ σει μεν μο να α ας τοι οισ προσ ω ποις δε ε

Τρι ας φυ λατ τε ε τους δου ουλους σου τους πι στευ οντα ας

εις σε

Α πε δω κας μοι ε βο α Συ με ων του σω τη

ρι ουσου Χρι στε ε α γα αλ λι α α σιν α πο λα βε ε

σου τον λα τριν τον τη σκι α α κε κμη κο ο τα νε ε ον

της χα ρι τος ι ε ρο κη ρυ κα μ υ υ στην εν

αι νε σει με γα λυ υ νο ον τα

Κ αι νυν και α ει και εις τους αι ω νας των

αι ω νων α μην

Θ ε ο το κε η η ελ πι ι ις παν των τω ων Χρι

στι ι α νων σκε πε φρου ου ρει φυ υ λατ τε τους ελ πι

ζον τας εις σε

ε ρο πρε πωσ ανθ ω μο λο γει το Αν να υ πο

φη τευ ου ου σα η σω φρων και ο σι α και πρε σβυ

ρα τω ω Δε σπο τη εν τω να ω ω δι αρ ρη η δην την

Θε ο το κον δε α να κη ρυτ του σα πα σι τοις πα

ρου σιν ε με γα α λυ υ νε

### Καταβασία θ' φδῆς

ἦχος γ'



Θεοτόκε ἡ ἐλπίς, πάντων τῶν χριστιανῶν, σκέπε φρούρει φύλαττε, τοὺς ἐλπίζοντας εἰς σέ.  
 Ἐν νόμῳ σκιᾶ καὶ γράμματι, τύπον κατίδωμεν οἱ πιστοί, πᾶν ἄρσεν τὸ τὴν μήτραν  
 διανοῖγον, ἅγιον Θεῶ· διὸ πρωτότοκον Λόγον, Πατρὸς ἀνάρχου Υἱόν,  
 πρωτοτοκούμενον Μητρί, ἀπειράνδρω, μεγαλύνομεν.

Πέτρου Λαμπαδαρίου

Σύντομος

Ἀργή

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Σύντομος

Ἀργή

## Σύντομος Πέτρου Λαμπαδαρίου

ῥδθ θ'

Ἦχος ἠ Γα

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
 Ἐρμολόγιον 1903 σ.293#

Θ ε ο το ο κε η η ελ πι ι ις παν των  
 των Χρι στι ι α α νων σκε πε φρου ου ρει φυ  
 υ λατ τε ε ε του ους ελ πι ι ζον τα  
 ας ει εις σε

Ε ν νο ο μω σκι α και γραμ μα τι τυ υ πον κα  
 τι ι δω με εν οι οι πι ι στοι παν αρσεν το την μη τραν δι α

νοι οι οι γον α γιον Θεω <sup>π</sup>9 δι ο πρω το ο το κον

Λο γον Πα τρος α να αρ χου Υι ον πρω το το κου με

νον μη τρι α πει ρα α α αν δρω ω ω με γα λυ νο με

ε ε εν η

### Σύντομος Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

ᾠδὴ θ'

### Ἦχος ἠ Γα ρ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2002 σ.74/521\*

Θ ε ο το ο κε η η ε ελ πι ι ις <sup>η</sup>παν

των τω ων χρι στι α νων <sup>η</sup>σκε πε φρου ου ρει φυ

υ λα ατ τε ε ε <sup>η</sup>του ους ελ πι ι ζον τας ει

σε η

Ε ν νο ο μω σκι α και γραμ μα τι <sup>♀</sup> <sub>χ</sub> <sub>q</sub> τυ υ πον κα

τι ι δω μεν οι πι στοι <sup>♂</sup> <sub>η</sub> παν αρ σεν το την μη τραν δι α

νοι οι οι γο ον α γι ον Θε ω <sup>♂</sup> <sub>π</sub> <sub>q</sub> δι ο πρω το ο το κον

Λο γον Πα τρος α να αρ χου Υι ον <sup>♂</sup> <sub>χ</sub> <sub>q</sub> πρω το το κου

με νον Μη τρι α πει ρα α αν δρω <sup>♂</sup> <sub>χ</sub> <sub>q</sub> \* με γα λυ υ νο

<sup>♂</sup> <sub>ο</sub> <sub>μ</sub> <sub>εν</sub> <sup>♂</sup> <sub>η</sub>

τὸ τέλος

\* <sup>♂</sup> <sub>χ</sub> <sub>q</sub> με γα λυ νο <sup>♂</sup> <sub>χ</sub> με ε ε εν <sup>♂</sup> <sub>η</sub>

### Ἄρχὴ Πέτρου Λαμπαδαρίου

ᾠδὴ θ'

### Ἦχος ἠ Γα

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.50#

Θ ε ο το ο ο κε η η η η η η η η

ε ελ πι ι ι ι ι ις <sup>♂</sup> <sub>η</sub> πα αν των

τω ω ω ω ω ν χ ρ ι σ τ ι ι ι α α ν ω ν σ κ ε π ε φ ρ ο υ

ου ου ρ ει ει φ υ υ υ υ υ λ α α τ τ ε

ε ε ε ε ε του ους ε λ π ι ι ι ι ι ζ ο ν τ α

α ας ει εις σε

ν νο ο μ ω σ κ ι ι α α και γ ρ α α α μ μ α τ ι ι ι


ι τ υ υ υ π ο ν κ α τ ι ι ι δ ω ω μ ε ν ο ι ο ι ο ι π ι ι ι


ι σ τ ο ι ο ι πα αν α αρ σ εν τ ο τ η ν μ η τ ρ α αν δι ι α


νοι ο ι ο ι ο ι γ ο ο ο ν α α γ ι ι ο ο ο ν Θε ε ε ε ε

ω ω δι ο ο π ρ ω τ ο ο ο ο τ ο ο κ ο ν λ ο ο ο

ο γ ο ν πα τ ρ ος α ν α α α αρ χ ο υ ο υ ι ι ι ι


  
 ο ο ον <sup>χ</sup>πρω το το κου με νο ον μη η η τρι ι


  
 ι α α πει ρα α α αν δρω ω ω με γα α λυ υ



  
 υ υ υ νο ο ο με ε ε εν <sup>η</sup>


Ἄσπρη Κωνσταντίνου Παπαγιάννη


ᾠδὴ θ'

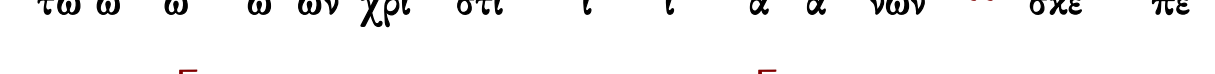
Ἦχος ἠ Γα ρ

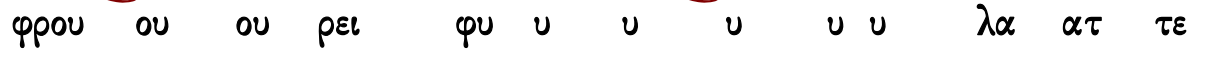
πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
 Μουσικόν Μηνολόγιον  
 2002 σ.75/522\*


  
 Θ <sup>♀</sup> ε ο το ο ο κε η η η η η η η


  
 ε ελ πι ι ι ι ι ι ις <sup>η</sup> πα αν των


  
 τω ω ω ω ων χρι στι ι ι α α νων <sup>η</sup> σκε πε


  
 φρου ου ου ρει φυ υ υ υ υ υ λα ατ τε


  
 ε ε ε ε ε <sup>η</sup> του ους ελ πι ι ι ι ι ζον

τά α ας ει εις σε

τὸ αὐτὸ συντετμημένον

Θ ε ο το ο κε η η ε ελ πι ι ις πα

αν των τω ων χρι στι ι α α νων σκε πε φρου

ου ρει φυ υ λα ατ τε ε ε του ουσ ελ πι

ι ζον τα ας ει εις σε

ε ν νο ο μω σκι ι α α και γρα α αμ μα τι ι ι

ι τυ υ υ πον κα τι ι ι δω ω μεν οι οι οι πι ι ι

ι στοι οι πα αν α αρσεν το την μη τρα αν δι ι α

νοι οι οι οι γο ο ον α γι ι ο ο ον Θε ε ε ε ε

ω ω δι ο ο πρω το ο ο ο το ο κον Λο ο



# Τῶν Κυριακῶν Τελώνου-Φαρισαίου καὶ Τυρινῆς

Ἐάν ἐγένετο ἡ ἀπόδοσις τῆς ἐορτῆς τῆς Υπαπαντῆς

ἦχος πλ.β'

α Ὡς ἐν ἠπειρῷ πεζεύσας ὁ Ἰσραήλ, ἐν ἀβύσσῳ ἴχνησι, τὸν διώκτην Φαραῶ, καθορῶν ποντούμενον, Θεῷ ἐπινίκιον ὠδήν, ἐβόα, ἄσωμεν.

γ Οὐκ ἔστιν ἅγιος ὡς σύ, Κύριε ὁ Θεός μου, ὁ ὑψώσας τὸ κέρασ, τῶν πιστῶν σου ἀγαθέ, καὶ στερεώσας αὐτούς, ἐν τῇ πέτρα τῆς ὁμολογίας σου.

δ Χριστός μου δύναμις, Θεὸς καὶ Κύριος, ἡ σεπτὴ Ἐκκλησία θεοπρεπῶς, μέλπει ἀνακράζουσα, ἐκ διανοίας καθαρὰς, ἐν Κυρίῳ ἐορτάζουσα.

ε Τῷ θείῳ φέγγει σου ἀγαθέ, τὰς τῶν ὀρθριζόντων σοὶ ψυχὰς, πόθῳ καταύγαυσον δέομαι, σὲ εἰδέναι Λόγε Θεοῦ, τὸν ὄντως Θεόν, ἐκ ζόφου τῶν πταισμάτων ἀνακαλούμενον.

ς Τοῦ βίου τὴν θάλασσαν, ὑψομένην καθορῶν, τῶν πειρασμῶν τῷ κλύδωνι, ἐν εὐδίῳ λιμένι σου προσδραμῶν, βοῶ σοί, ἀνάγαγε ἐκ φθορᾶς τὴν ζωὴν μου πολυέλεε.

ζ Δροσοβόλον μὲν τὴν κάμινον εἰργάσατο, ἄγγελος τοῖς ὁσίοις παισί, τοὺς Χαλδαίους δὲ καταφλέγον πρόσταγμα Θεοῦ, τὸν τύραννον ἔπεισε βοᾶν. Εὐλογητὸς εἶ ὁ Θεὸς ὁ τῶν πατέρων ἡμῶν.

Αἰνοῦμεν εὐλογοῦμεν καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον.

η Ἐκ φλογὸς τοῖς ὁσίοις, δρόσον ἐπήγασας, καὶ δικαίου θυσίαν, ὕδατι ἔφλεξας, ἅπαντα γὰρ ὄρᾳ Χριστέ, μόνῳ τῷ βούλεσθαι. Σὲ ὑπερυψοῦμεν εἰς πάντας τοὺς αἰῶνας.

Σύντομοι

Ἀργαί

## Σύντομοι

ὠδὴ α'

ἦχος λ π̣ Ḅ8

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Ἀναστασιματάριον  
1905 σ.283#

ω ς εν η πει ρω πε ζευ σας ο Ι σρα ηλ εν



α βυσσω ι χνεσι τον δι ω κτην Φα ρα ω κα θο

ρων πον του με νον Θε ω ε πι νι κι ον ω δην ε

βο α α σω ω με εν ψδὴ γ'

**Ο** υκ ε στιν Α γι ος ως συ Κυ ρι ε ο Θε

ος μου ο υ ψω σας το κε ρας των πι στων σου Α γα θε ψδὴ δ'

και στε ρε ω σας η μας α' χορός εν τη πε τρα της ο

μο λο γι α α σου ψδὴ δ'

**Χ** ρι στος μου δυ να μις Θε ος και Κυ ρι ος η σε

πτη Εκ κλη σι α θε ο πρε πως μελ πει α να κρα

ζου σα εκ δι α νοι ας κα θα ρας εν Κυ ρι ω

ε ορ τα ζου ουσα

ῥδῆ ε'

Τ ω θει ω φεγ γει σου Α γα θε τας των ορ θρι ζον

των σοι ψυ χας πο θω κα τα αυ γα σον δε ο μαι σε ει

δε ναι Λο γε Θεου τον ον τως Θε ον εκ ζο φου των

πται σμα α των α να κα λου με ε νον

ῥδῆ ε'

Τ ου βι ου την θα λασ σαν υ ψου με νην κα θο ρων

των πει ρα σμων τω κλυ δω νι τω ευ δι ω λι

με νι σου προσ δρα μων βο ω σοι α να γα γε εκ φθο

ρας την ζω ην μου Πο λυ ε λε ε ε

ῥδῆ ζ'

Δ ρο σο βο λον μεν την κα μι νον ειρ γα σα το Αγ

γελος τοις οσι οισ παισι τους Χαλδαιους δε κα τα φλε

γον προσ τα γμα Θεου τον τυραννον επεισεβο αν

ευ λο γη τος ει ο Θεος ο των πατερων η μω

ων

ὠδὴ η'

Δι νου μεν ευ λο γου μεν και προσκυ νου μεν τον Κυ

ρι ον

Εκ φλο γος τοις οσι ι ι οισ δρο σον ε πη

γασας και δι και ου θυ σι αν υ υ δα τι ε φλε

ξας α παν τα γαρ δρας Χρι στε μο νω τω βου λε σθαι

σε υ περ υ ψου μενεις παν τας του ουσ αι ω ω να

α α α ας

# Άγαι

Πέτρου Βυζαντίου

Ἦχος λ π τ Βϛ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Τριώδιον Α'  
2003 σ.12\*

ὠδή α'

Ω ς εν η πει ρω ω πε ζε ε ε ευ σα α

ας ο Ισ ρα α ηλ εν α βυσσω ω ι ι χνε ε σι τον

δι ω ω ω κτην Φα ρα α ω κα θο ρω ων πο ο

ον του ου με ε ε νον Θε ω ω ω ε πι ι

ι νι ι κι ι ο ο ον ω δη ην ε βο ο ο

α α α α σω ω με εν

ὠδή γ'

Ο υκ ε στιν α α γι ος ω ως συ Κυ ρι ι

ε ο ο Θε ε ο ο ος μου ο υ ψω ω

ω σα ας το ο ο κε ε ε ρας τω ω ων πι στω ων

σου ου ου α α γα α α θε και στε ρε ω ω

ω ω σα ας η η μας *χρὸς α'* εν τη πε ε ε ε ε

τρα τη η ης ο μο ο ο λο ο γι ι α ας σου ου

*ὠδὴ δ'*

**Χ**ρι στο ος μου ου ου δυ υ να α α μισ Θε

ο ο ος και αι Κυ υ ρι ι ο ος η σε πτη Εκ

κλη σι ι ι ι α α α θε ο πρε ε πω ως

μελ πει α να κρα α α ζου σα εκ δι α νοι α α

ας κα α θα α α ρας εν Κυ ρι ι ι ω

ε ε ε ο ορ τα α ζου ου σα α ωδὴ ε'

**T**ω θει ω φε ε ε εγ γει ει ει σου α γα α

θε τας των ορ θρι ζον των σοι ψυ υ υ χας πο θω ω κα

τα αυ γα α σον δε ο μαι αι σε ει δε ναι Λο ο

ο γε ε Θε ε ε ου τον ο ο ο ον τωως

Θε ε ον ε εκ ζο ο ο ο ο φου των πται σμα α α

τω ων α να α α κα α λου ου με ε νο ον ωδὴ ς'

**T**ου ου βι ου ου την θα α α λασ σαν υ υ ψου

με ε νη η ην κα α θο ο ο ρων των πει ρα

σμων τω ω κλυ υ δωω νι τω ευ δι ω ω λι με ε ε

ε νι ι ι σου προσ δρα α μω ων βο ω ω

ω ω σοι α α α να α γα α γε εκ φθο ρα α α

α ας την ζω η η ην μου πο ο ο λυ υ ε ε

λε ε ε ε

ωδη ζ'

**Δ**ρο σο βο λον μεν τη ην κα α μι νον ει ει ειρ γα

α σα α το α α αγ γε ε ε λος τοι οι οισ ο σι ι

ι ι ι οι οισ παι αι αι σι τους Χαλ δαι αι ου

ους δε κα τα φλε γον προ ο οσ τα γμα Θε ε ου ου τον

τυ υ υ υ ραν νο ον ε ε πει ει ει σε ε βο

ο ο αν ευ λο γη το ο ο ο ος ει ο Θε

ο ο ος ο τω ω ων πα α τε ε ε ε ε ρω

ων η η η μων

ὠδή η'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου με

εν τον Κυ υ υ ρι ον

Ε κ φλο γος τοι ο ις ο ο σι ι ι ο ις ορο ο ο σο ο ον

ε ε πη η γα α σα ας και δι και ου ου θυ υ σι

ι ι αν υ υ υ δα α α τι ι ε ε φλε ε ξα

ας α α παν τα γα αρδρας Χρι ι στε ε μο νω τω ω

ω βου ου λε ε σθαι σε ε ε υ πε ε ερ υ ψου ου



ου ου ου μεν εις πα α αν τας του ου ου ους αι αι ω  
 ω ω να α α α ας

## Τιμιωτέρα

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

Λουκᾶ κεφ. 1

ἦχος πλ.β'

- ∴ Μεγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἠγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ σωτῆρί μου. 46-47
  - ∴ Ὅτι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48
  - ∴ Ὅτι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50
  - ∴ Ἐποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσχόρπισεν ὑπερηφάνους διανοίᾳ καρδίας αὐτῶν. 51
  - ∴ Καθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξαπέστειλε κενούς. 52-53
  - ∴ Ἄντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55
- Τὴν Τιμιωτέραν τῶν Χερουβὶμ, καὶ ἐνδοξοτέραν ἀσυγκρίτως τῶν Σεραφίμ, τὴν ἀδιαφθόρως Θεὸν Λόγον τεκοῦσαν, τὴν ὄντως Θεοτόκον, σὲ μεγαλύνομεν.**

Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου

## Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου

Λουκᾶ κεφ. 1

ἦχος λ π Βε

- ∴ Μεγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἠγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ

σωτήρί μου. 46-47

∴ Ὅτι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48

∴ Ὅτι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ Δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50

∴ Ἐποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσκόρπισεν ὑπερηφάνους διανοία καρδίας αὐτῶν. 51

∴ Καθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξάπέστειλε κενούς. 52-53

∴ Ἀντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55

Πέτρου Λαμπαδαρίου

Ἦχος λ π̣ Ḅ

Πανδέκτη Ὁρθρος 1850 σ.503#


**Τ** ἡν τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ  και εν δο


 ξο τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ  την α δι α


 φθο ο ρως Θε ον Λο γο ον τε κου σαν  την ον τως Θε ο


 το κον σε με γα λυ νο ο με εν 

### Καταβασία Θ' φδῆς

ἦχος πλ.β'

Θεὸν ἀνθρώποις ἰδεῖν ἀδύνατον, ὃν οὐ τολμᾷ ἀγγέλων ἀτενίσαι τὰ τάγματα, διὰ σοῦ δὲ Πάναγνε ὠράθη βροτοῖς, Λόγος σεσαρκωμένος, ὃν μεγαλύνοντες, σὺν ταῖς οὐρανίαις στρατιαῖς, σὲ μακαρίζομεν.

Σύντομος

Ἦχος λ π ς Βϛ Ϟ

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Αναστασιματάριον  
1905 σ.292#

Θ ε ον αν θρω ω ποις ι δειν α δυ να τον ον  
ου τολ μα Αγ γε λων α τε νι σαι τα τα γμα τα δι α  
σου δε παν α γνε ω ρα θη βρο τοις Λο γος σε σαρκω  
με νος ον μεγα λυ νον τες συν ταις ου ρα νι αις  
στρα τι αις σε μα κα ρι ι ζο ο με ε εν

Ἀργὴ Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Ἦχος λ π ς Βϛ Ϟ

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.78#

Θ ε ον ανθρω ω ποι οις ι δει ει ει ν α α δυ

υ να α το ον ον ου τολ μα α αγ γε ε λων α τε

νι σαι τα τα γμα τα α δι α σου ου δε ε Πα αν

α γνε ε ω ω ω ρα α α θη βρο ο τοι οις Λο γο ος σε

σα αρ κω ω με ε ε νος ο ο ον με γα α

α λυ υ νο ον τες συ υ υν ταις ου ου ου ρα νι ι

ι ι ι αις στρα τι αι αι αις σε μα κα ρι ζο ο

με ε ε εν

### Ἄρχὴ Πέτρου Βυζαντίου

ὠδὴ θ'

Ἦχος λ π Βε

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Τριώδιον Α'  
2003 σ.15\*

Θ ε ον αν θρω ω ω ποι οις ι δει ει ει ν

α α δυ υ να α το ον ον ου τολ μα α αγ γε ε ε

λων α τε νι σαι τα ταγμα τα α δι α σου ου δε

ε πα α αν α γνε ω ω ω ρα α αθη βρο ο τοι οις

Λο γο ος σε σα αρ κω ω με ε ε νος ο ο

ον με γα α α λυ υ νο ον τες συν ταις ου ρα νι ι

ι ι ι αις στρα τι αις σε μα κα α ρι ι ζο ο

με ε εν

καί οὕτω

συν ταις ου ρα νι αι αι αις στρα α τι ι ι

αις σε ε ε ε μα α α κα α ρι ι ζο ο με ε

εν

# Τῆς Κυριακῆς τοῦ Ἀσώτου

Ἐὰν ἐγένετο ἡ ἀπόδοσις τῆς ἑορτῆς τῆς Ὑπαπαντῆς

ἦχος β'

- α **Τ**ὴν Μωσέως ᾠδὴν, ἀναλαβοῦσα βόησον ψυχὴ. Βοηθὸς καὶ σκεπαστῆς, ἐγένετό μοι εἰς σωτηρίαν, οὗτός μου Θεὸς καὶ δοξάσω αὐτόν.
- γ **Σ**τειρωθέντα μου τὸν νοῦν, καρποφόρον ὁ Θεὸς ἀνάδειξόν με, γεωργὲ τῶν καλῶν, φυτουργὲ τῶν ἀγαθῶν, τῇ εὐσπλαγχνίᾳ σου.
- δ **Τ**ὴν ἐκ Παρθένου σου γέννησιν, ὁ προφήτης προβλέπων, ἀνεκῆρυττε βοῶν· Τὴν ἀκοήν σου ἀκήκοα καὶ ἐφοβήθην, ὅτι ἀπὸ Θαιμάν, καὶ ἐξ ὄρους ἁγίου κατασκίου, ἐπεδήμησας, Χριστέ.
- ε **Τ**ῆς νυκτὸς διελθούσης, ἤγγικεν ἡ ἡμέρα, καὶ τὸ φῶς τῷ κόσμῳ ἐπέλαμψε· διὰ τοῦτο ὑμνεῖ σε τάγματα ἀγγέλων καὶ δοξολογεῖ σε Χριστέ ὁ Θεός.
- ς **Β**υθῷ ἀμαρτημάτων, συνέχομαι Σωτήρ, καὶ ἐν πελάγει τοῦ βίου βυθίζομαι ἀλλ' ὥσπερ τὸν Ἰωνᾶν ἐκ τοῦ θηρός, κάμῃ τῶν παθῶν ἀνάγαγε, καὶ διάσωσόν με.
- ζ **Τ**ὰ Χερουβὶμ μιμούμενοι, Παῖδες, ἐν τῇ καμίνῳ ἐχόρευον βοῶντες· Εὐλογητὸς εἶ ὁ Θεός, ὅτι ἐν ἀληθείᾳ καὶ κρίσει, ἐπήγαγες ταῦτα πάντα διὰ τὰς ἀμαρτίας ἡμῶν, ὁ ὑπερύμνητος καὶ δεδοξασμένος εἰς πάντας τοὺς αἰῶνας.

Αἰνοῦμεν εὐλογοῦμεν καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον.

- η **Τ**ὸν ἐν τῇ βάρῃ Μωσῆ, τῆς Παρθένου τὸ θαῦμα, ἐν Σιναίῳ τῷ ὄρει προτυπώσαντα ποτέ, ὑμνεῖτε, εὐλογεῖτε, καὶ ὑπερυψοῦτε εἰς πάντας τοὺς αἰῶνας.

Σύντομοι

Ἄργαί

## Σύντομοι

ᾠδὴ α'

ἦχος Πά

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.320#

Τ ἠν Μω σε ε ως ω δην α να λα βου σα βο

η σονψυχη βο ο η θος και σκεπα στης ε γε νε το ο

μοι εις σω τη ρι ι αν ου τος μου Θε ος και δο ξα

σω αυτον

ᾠδὴ γ'

τσι ει ρω θεν τα μου τον νουν καρ πο φο ρον ο Θε

ος α να α δει ξον με γε ωρ γε ε των κα λων α' χορός

φυ τουρ γε των α γα θων τη ευσπλαγ χνι α σου

ᾠδὴ δ'

την εκ Παρ θε ε νου σου γεν νησιν ο Προ φη η της

προ βλε πων α αν ε κη ρυτ τε βο ων την α κο ην

σου α κη κο α και ε φο βη θην ο ο τι α πο Θαι

μαν και εξ ο ρους α γι ου κατα σχι ι ου επ ε δη

μη σας Χριστε

ῥδῆ ε'

Της νυκτος διελθουσης η ηγγικεν η ημερα

και το φωστωκο σμωπε ελαμψε δια του ουτου

μνει σε ταγματα Αγγων και δοξολογει σε Χρι

στε ο Θεος

ῥδῆ ε'

Βυθωαμαρτηματων συνεχομαι σωτηρ και εν

πελαγει του βιουου βυθιζομαι αλλωωσπερ τον

Ιωναν εκ του θηρος καμετων παθων αναα

γαγε και διασωσον με

ῥδῆ ζ'

Τα Χερουβιμιμου μενοι παιαιδες εν τη καμινω



ε χο ρευ ο ον βο ων τες <sup>π</sup> ευ λο γη τος ει ο Θε ος <sup>π</sup>

ο ο τι εν α λη θει α και κρι σει επ η η γα γες ταυ <sup>δ</sup> <sup>σ</sup>

τα πα αν τα δι α τας α μαρ τι ας η μων ο υ περ

υ μνη τος και δε δο ξα σμε νος εις παν τας τους αι ω

νας <sup>π</sup> ῶδὴ ἡ'

**Α** ι νου μεν ευ λο γου μεν και προ σκυ νου ου μεν το ον <sup>π</sup>

**Κυ** ρι ον <sup>π</sup>

**Τ** ον εν τη βα α τω Μω ση <sup>Δ</sup> της Παρ θε ε νου το <sup>σ</sup>

θαυ μα εν Σι ναι ω τω ο ρει προ τυ πω σαν τα πο

τε <sup>π</sup> υ μνει τε ευ λο γει τε <sup>Δ</sup> και υ περ υ ψου <sup>σ</sup>

τε εις παν τας τους αι ω ω να α ας

### Άγαι

Πέτρου Βυζαντίου

## Ἦχος Πά

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Τριώδιον Α'  
2003 σ.30\*

ὠδή α'

την Μω σε ε ε ω ω ως ω ω δην α να λα βου

ου σα α α βο ο η σο ον ψυ υ υ χη βο η

θο ος και σκε πα α στης ε γε νε το ο ο ο μοι οι

οι ει εις σω ω τη ρι ι ι ι αν ου ου τος μου

Θε ε ος και αι δο ο ξα α α α σω ω α α

αυ τον

ὠδή γ'

C τει ει ρω ω θεν τα α μου ου το ο ον νου ου ου ουν

κα αρ πο ο φο ρο ον ο ο Θε ε ε ος α

να δει ει ει ξο ο ον με ε γε ωρ γε ε ε ε

τω ω ων κα α λων *α' χορός* φυ τουρ γε ε των α γα θω ων

τη η ε ευσπλαγχνι α σου ου *ωδή δ'*

**T**ην εκ Παρ θε νου σου ου ου γεν νη η σιν ο προ φη η

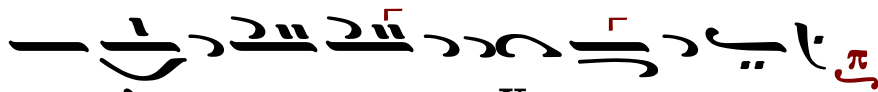
τη η ης προ βλε ε ε πων α α νε ε κη ρυ υτ τε

ε βο ο ο ων την α κο η η ην σου ου α

κη κο ο α α α και αι ε ε φο βη η η η θην

ο ο τι α α πο Θαι αι μαν και εξ ο ρους α

γι ι ου κα τα σκι ι ι ου ου ε ε πε ε



ε δη η μη σα ας Χρι ι ι στε

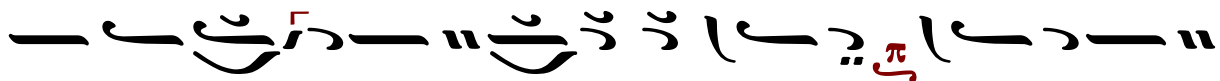
ὠδὴ ε'



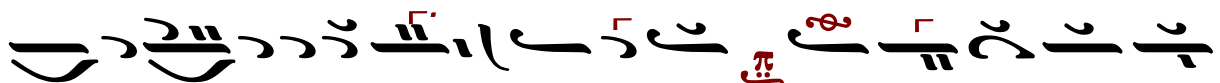
**T** ης νυ κτος δι ι ι ελ θου ου ου σης η η η



ηγ γι ι ι κε εν η η η με ε ε ε ρα και το



φως τω κο ο ο σμω ω ε πε λαμ ψε ε δι ι α α



του ου το ο ο υ μνει ει ει σε τα α γμα τα αγ



γε ε ε λω ων και αι δο ο ξο λο ο γει ει ει



σε ε Χρι ι στε ε ε ε ο ο Θε ε ε ος

ὠδὴ ς'



**B** υ θω ω α μαρ τη μα α α α α των συν ε



ε χο μαι Σω ω τηρ και εν πε λα α γει του βι ι ι



ου ου χει μα ζο μαι αι α αλλ ω ω σπερ τον Ι ι

ω ω ναν ε εκ του ου θη η η ρος κα με ε

ε τω ω ω ν πα α θων α να α γα α γε ε ε ε

και αι αι δι ι α α σω σο ο ο ον με ωδηζ'

**T** α Χε ρου ου βιμ μι μου με ε νοι παι αι αι αι δε ε

ες ε εν τη η κα μι ι ι ι νω ε χο ρευ ο

ο ον βο ω ω ω ν τες ευ λο ο γη η τος ει ει ο

ο Θε ε ε ος ο ο τι εν α λη θει α α α

και χρι ι ι σει ε πη γα γε ες ταυ τα πα α

αν τα α δι α τας α μαρ τι ι ι ι α

ας η η η μων ο υ περ υ υ μνη το ο ο

ο ο ο ο ο ο ο ος και δε δο ξα σμε ε ε

ε νος εις πα αν τας του ους αι ω ω ω ω νας *ωδη η'*

**Α** ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου ου ου ου

με εν τον Κυ ρι ο ον

**Τ** ον εν τη βα α α τω Μω ω ση της Παρ θε ε ε

νου ου το θα α α αυ μα ε εν Σι ι ναι αι ω ω

ω τω ο ο ο ρει προ ο τυ υ πω σα αν τα

α πο ο ο τε υ μνει ει τε ευ λο γει ει ει

ει τε ε και αι υ υ περ υ υ ψου ου ου τε ει

εις πα α αν τα ας του ους αι ω ω ω ω να α α

## Τιμιωτέρα

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν..

Λουκᾶ κεφ. 1

ἦχος β'

- ∴ Μεγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἠγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ σωτῆρί μου. 46-47
  - ∴ Ὅτι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48
  - ∴ Ὅτι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50
  - ∴ Ἐποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσκόρπισεν ὑπερηφάνους διανοίᾳ καρδίας αὐτῶν. 51
  - ∴ Καθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐπέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξάπέστειλε κενούς. 52-53
  - ∴ Ἀντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55
- Τὴν Τιμιωτέραν τῶν Χερουβίμ, καὶ ἔνδοξοτέραν ἀσυγκρίτως τῶν Σεραφίμ, τὴν ἀδιαφθόρως Θεὸν Λόγον τεκοῦσαν, τὴν ὄντως Θεοτόκον, σὲ μεγαλύνομεν.**

Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου

## Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου

Λουκᾶ κεφ. 1

ἦχος Πά

- ∴ Μεγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἠγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ σωτῆρί μου. 46-47
- ∴ Ὅτι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48

∴ Ὅτι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ Δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεάν καὶ γενεάν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50

∴ Ἐποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσκόρπισεν ὑπερηφάνους διανοία καρδίας αὐτῶν. 51

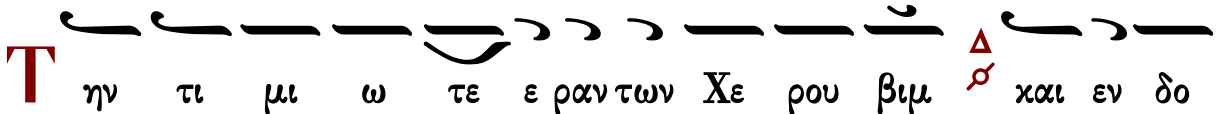
∴ Καθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινοὺς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξαπέστειλε κενούς. 52-53


∴ Ἀντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55

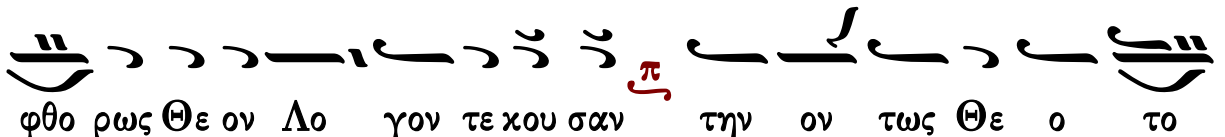
Πέτρου Λαμπαδαρίου

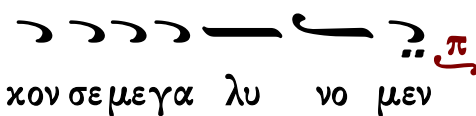
## Ἦχος Πά

Πανδέκτη Ὅρθρος 1850 σ.502#


 Τ η ν τ ι μ ι ω τ ε ε ρ α ν τ ω ν Χ ε ρ ο υ β ι μ και ε ν δ ο


 ξ ο τ ε ρ α ν α σ υ γ κ ρ ι ι τ ω ς τ ω ν Σ ε ρ α φ ι μ τ η ν α δι α


 φ θ ο ρ ω ς Θε ο ν Λ ο γ ο ν τ ε κ ο υ σ α ν τ η ν ο ν τ ω ς Θε ο τ ο


 κ ο ν σ ε μ ε γ α λ υ ν ο μ ε ν

## Καταβασία θ' φδῆς

### ἦχος β'

Τῶν γηγενῶν τίς ἤκουσε τοιοῦτον, ἢ τίς εἰώρακε ποτέ; ὅτι παρθένος εὐρέθη ἐν γαστρὶ ἔχουσα, καὶ ἀνωδίνως τὸ βρέφος ἀποτεκοῦσα τοιοῦτόν σου τὸ θαῦμα καὶ σὲ ἀγνή Θεοκυῆτορ Μαρία μεγαλύνομεν.

Σύντομος





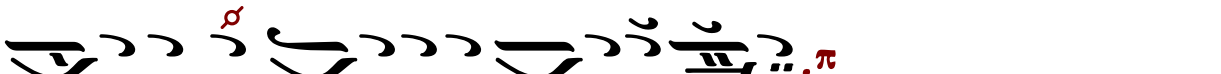
Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Ἀργή



Πέτρου Βυζαντίου

## Σύντομος




**T**ων γη γε νων τις η κου σετοι ου ου τον η τις  

 ε ω ρα κε πο τε <sup>π</sup>ο τι Παρ θε νος ευ ρε θη εν γα  

 στρι ε χου σα και α νω δυ νως το βρε ε φος α πο τε κου  

 σα ται ου τον σου το θαυ μα <sup>Δ</sup> και σε α γνη Θε ο κυ  

 η η τορ Μα ρι α μεγα λυ νο με ε εν

Ἄρχὴ Ἰωάννου Πρωτοψάλτου


**T**ων γη γε ε νων τις η η κου ου σε ται οι ου ου  

 ου το ον η τι ις ε ε ε ω ω ρα κε ε πο



  
 ο ο τε ο τι παρ θε νος ε ε ευ ρε ε ε θη εν γα  
  
 στρι ε ε χου ου σα και α νω δυ υ υ υ νω ως  
  
 το βρε ε ε ε φο ο ος α α πο ο τε κου ου ου ου  
  
 σα τοι ου ου τουν σου το ο θα α αυ μα α και  
  
 σε α α γνη θε ο κυ υ η το ορ Μα ρι α α α με  
  
 γα λυ υ νο ο ο με ε ε εν

Ἄσκη Πέτρου Βυζαντίου

ὠδή θ'

Ἦχος Πάχ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
 Μουσικόν Τριώδιον Α'  
 2003 σ.33\*

  
**T**ων γη γε ε νων τις η η κου ου σε τοι οι ου ου  
  
 ου το ον η τι ις ε ε ε ω ω ρα κε ε πο

ο ο τε ο τι Παρ θε νος ε ε ευ ρε ε ε θη εν

γα στρι ι ε ε χου ου σα και α νω δυ υ υ υ

νω ως το βρε ε ε ε φο ο ος α α πο ο τε κου

ου ου ου σα τρι ου ου τουν σου το ο θα α αυ

μα α και σε Α α γνη θε ο κυ υ η η η τορ Μα

ρι ι α α με γα λυ υ νο ο ο με ε ε εν

# Τῷ Σαββάτῳ πρὸ τῆς Απόκρεφ

Ψυχοσάββατον

ἦχος πλ.δ'

- α Ἄσμα ἀναπέμφωμεν λαοί, τῷ θαυμαστῷ Θεῷ τῷ ἡμῶν, ἀπαλλάξαντι τὸν Ἰσραὴλ ἐκ δουλείας, ὣδὴν ἐπινίκιον ἄδοντες καὶ βοῶντες· Ἄσωμέν σοι, τῷ μόνῳ Δεσπότη.
- β Ἴδετε, ἴδετε, ὅτι ἐγὼ εἶμι ὁ Θεὸς ὑμῶν, ὁ πρὸ τῶν αἰῶνων γεννηθεὶς ἐκ τοῦ Πατρὸς, καὶ ἐκ τῆς Παρθένου ἐπ' ἐσχάτων, πλὴν ἀνδρὸς κυηθείς, καὶ λύσας τὴν ἁμαρτίαν, τοῦ προπάτορος Ἀδάμ, ὡς φιλόανθρωπος.
- γ Ὁ στερεώσας ἐν τῇ χειρὶ σου, Λόγε Θεοῦ τοὺς οὐρανοὺς ἐν τῷ φωτισμῷ, τῆς σῆς ἀληθοῦς ἐπιγνώσεως, στερέωσον καὶ ἡμῶν, τῶν ἐπὶ σοὶ πεποιθότων τὰς καρδίας.
- δ Ἐξ ὄρους κατασκίου, Λόγε ὁ προφήτης, τῆς μόνης Θεοτόκου, μέλλοντος σαρκουῖσθαι, θεοπτικῶς κατενόει, καὶ τῷ φόβῳ, ἐδοξολόγει σου τὴν δύναμιν.
- ε Ὁρθρίζει τὸ πνεῦμά μου, πρὸς σέ ὁ Θεός, διότι φῶς τὰ προστάγματα, τῆς παρουσίας σου· ἐν αὐτοῖς οὖν καταύγασον, τὸν νοῦν ἡμῶν Δέσποτα, καὶ ὁδήγησον, ἐν τρίβῳ ζωῆς.
- ς Συνεχόμενον δέξαι με φιλόανθρωπε, ἐκ πταισμάτων πολλῶν, προσπίπτοντα τοῖς οἰκτιρμοῖς σου, ὡς τὸν προφήτην Κύριε, καὶ σῶσόν με.
- ζ Ὁ ἐν ἀρχῇ, τὴν γῆν θεμελιώσας, καὶ οὐρανοὺς τῷ λόγῳ, στερεώσας, εὐλογητὸς εἶ εἰς τοὺς αἰῶνας Κύριε, ὁ Θεὸς τῶν πατέρων ἡμῶν.
- η Τὸν ἐν ὄρει, ἀγίῳ δοξασθέντα, καὶ ἐν βάτῳ, πυρὶ τὸ τῆς Ἀειπαρθένου, τῷ Μωϋσῆ μυστήριον γνωρίσαντα, Κύριον ὑμνεῖτε, καὶ ὑπερυψοῦτε εἰς πάντας τοὺς αἰῶνας.

Αἰνοῦμεν εὐλογοῦμεν καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον.

Ἀποστόλου Παπαχρήστου

## Σύντομοι

### Ἀπόστολος Παπαχρήστου

ὣδὴ α'

ἦχος π λ δ Νη

Ἀπόστολος Παπαχρήστου  
Εἰρηολόγιον 1998 σ.231#

Ἀσμα ἀναμελψώμεν λαοὶ τῶ θαυμαστω Θε

ω ἡμῶν τῶ ἀπαλάξαντι τὸν Ἰσραήλ δουλεί

ας ὧ δὴν ἐπινηκίον ἀαδόντες καὶ βῶντες ἀ

σο με ἐν σοὶ τῶ μο ὦ νῶ Δεσποτῆ γ δλ ῶδὴ β'

ἰ δε τε ἰ δε τε ὅ τι ἐγω εἰμι ὅ

Θεὸς ἡμῶν γ δλ ὁ προτῶν αἰῶν ἡ γεννη

θεις ἐκ τοῦ πατρὸς γ δλ καὶ ἐκ τῆς πατρὸς ἐπέσχα

α α τῶν πλην ἀνδρὸς κυθηθεις γ δλ καὶ λυυσας τὴν ἀμαρτι

ἰαν γ δλ τοῦ προπατορὸς Ἀδάμ ὡς φιλάθρωπος γ δλ

ῶδὴ γ'

Ὁ στε ρε ω σας εν τη χει ρι σου Λο γε Θε

ου τους ου ρα νους εν τω φω τι σμω της σης α λη

θους ε πι γνω σεως στε ρε ω σον και η μων των ε πι

σοι οι πε ποι θο των τας καρ δι ας γ δ ῶδὴ δ'

Ε ξ ο ρους κα τα σκι ου Λο γε ο προ φη της της

μο νης Θε ο το ο κου μελλοντα σαρ κου σθαι θε ο πι

κως κα τε νο η σεν εν φο ο βω και ε δο ξο λο

γει σου την δυ να α μιν γ δ ῶδὴ ε'

Ὁ ρ θρι ι ζει το πνευ μα μου προς σε ε ο Θε ος

δι ο τι φως τα προσ τα γμα τα της πα ρου σι ας σου γ δ

συν αυ τοι οις ουν κα ταυ γα σον τον νουν η μων Δε σπο τα

και ο δη γησον εν τρι βωζωης <sup>ν</sup> <sub>δλ</sub> ψδὴ ζ'

**C** υν ε χο μενον δε ξαι με φι λανθρωπε <sup>ν</sup> <sub>δλ</sub> εκ πται

σμα των πολ λων προσ πι πτον τα τοις οι κτιρ μοις σου <sup>Δ</sup> <sub>δλ</sub> ως

τον προ φη την Κυ ρι ε και σω ω σο ον με <sup>ν</sup> <sub>δλ</sub> ψδὴ ζ'

**O** εν αρ χη την γην θε με λι ω σας και ου

ρα νους τω λο γω στε ρε ω σας <sup>ν</sup> <sub>δλ</sub> ευ λο γη το ος

ει εις τους αι ω νας Κυ ρι ι ε ο Θε ος ο των πα

τε ρων η μων <sup>ν</sup> <sub>δλ</sub> ψδὴ η

**A** ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσκυ νου ου με εν τον

Κυριον <sup>γ</sup>  
δλ

Τον εν ορει α γιω δο ξα σθε εν τα <sup>Δ</sup>  
δλ και εν  
βα α τω πυ ρι <sup>Δ</sup>  
δλ το της α ει παρ θε νου <sup>γ</sup>  
δλ τω  
Μω υ ση μου στη ρι ον γνω ρι σαν τα <sup>β</sup>  
λκ Κυ ρι ον υ  
μνει τε και υ περ υ ψου ου τε εις παν τας τους αι ω ω να  
α α ας <sup>γ</sup>  
δλ

## Τιμιωτέρα

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν..

Λουκά κεφ. 1

ἦχος πλ.δ'

- ∴ Μεγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἠγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ σωτῆρί μου. 46-47
- ∴ Ὅτι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48
- ∴ Ὅτι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50
- ∴ Ἐποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσχόρπισεν ὑπερηφάνους διανοίᾳ καρδίας αὐτῶν. 51



∴ Καθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξαπέστειλε κενούς. 52-53

∴ Ἀντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55

**Τὴν Τιμιωτέραν τῶν Χερουβίμ, καὶ ἐνδοξοτέραν ἀσυγκρίτως τῶν Σεραφίμ, τὴν ἀδιαφθόρως Θεὸν Λόγον τεκοῦσαν, τὴν ὄντως Θεοτόκον, σὲ μεγαλύνομεν.**

Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου

## Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου

Λουκᾶ κεφ. 1

### Ἦχος λ π ς Νη

∴ Μεγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἠγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ σωτῆρί μου. 46-47

∴ Ὅτι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48

∴ Ὅτι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ Δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεάν καὶ γενεάν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50

∴ Ἐποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσχόρπισεν ὑπερηφάνους διανοίᾳ καρδίας αὐτῶν. 51

∴ Καθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξαπέστειλε κενούς. 52-53

∴ Ἀντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55

Πέτρου Λαμπαδαρίου

### Ἦχος λ π ς Νη

Πανδέκτη, Ὁρθροῦ  
1850 σ.504#

Τὴν τιμιωτέραν των Χερουβιμ και ενδοξοτέραν ασυγκρίτως των Σεραφιμ την αδιαφθοραν ασυγκρίτως των Σεραφιμ την αδιαφθοραν ασυγκρίτως των Σεραφιμ την αδιαφθοραν

φθο ρως Θε ον λο ο γον τε κου σαν <sup>Δ</sup>την ον τως Θε  
ο το κον σε ε μεγα λυ υ νο ο μεν <sup>γ</sup>λι

### Καταβασία θ' φδῆς

<sup>ῥ</sup>ῆχος πλ.δ'

Τὸν προδηλωθέντα ἐν ὄρει τῷ νομοθέτῃ, ἐν πυρὶ καὶ βάτῳ, τόκον τὸν τῆς Ἀειπαρθένου, εἰς ἡμῶν τῶν πιστῶν σωτηρίαν, ὕμνοις ἀσιγήτοις μεγαλύνομεν.

Σύντομος

✠ Ἀπόστολου Παπαχρήστου ✠

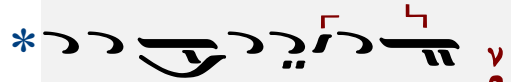

Ἀργή

### Σύντομος Ἀπόστολου Παπαχρήστου

<sup>ῥ</sup>ῆχος λ π δι Νη

Ἀπόστολος Παπαχρήστου  
Εἰρμολόγιον 1998 σ.235#

Τ ον προ δη λω θε εν τα εν ο ο ρει τω νο μο  
θε τη εν πυ ρι και βα τω το ο κον τον της α ει παρ  
θε νου <sup>γ</sup>λι εις η μων των πι στω ων σω τη ρι  
αν <sup>Δ</sup>λι υ υ μνοις α σι γη τοις \* μεγα λυ υ νο ο μεν <sup>γ</sup>λι



\*    
 μεγα λυ νο με ε ε εν 

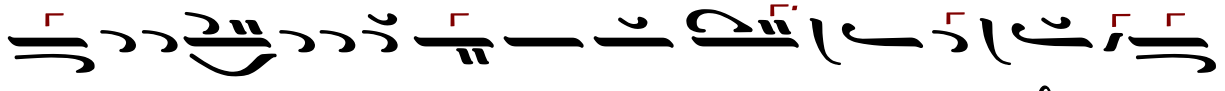
Ἄσγη Ἀπόστολου Παπαχρήστου

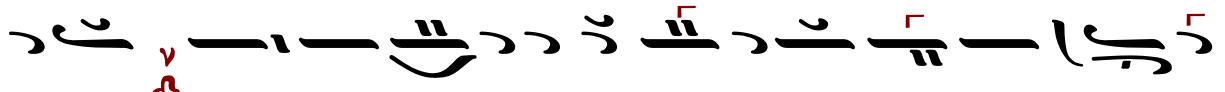

Ἦχος λ π ρι Νη

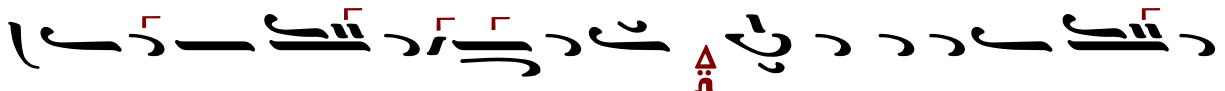

Ἀπόστολος Παπαχρήστου  
 Εἰρμολόγιον 1998 σ.22#



**Τ**    
 τον προ δη λω ω θε ε ε εν τα  εν ο ρει ει τω νο

   
 μο ο θε ε ε τη η  εν πυ ρι ι και αι βα τω το

   
 ο ο ο κον τον τη ης α ει πα α αρ θε ε ε

   
 ε νου  εις η μω ω ω ν των πι ι στω ω ω ν σω ω

   
 τη η η ρι ι ι ι αν  υ μνοι ο ις α σι γη η

   
 τοις με γα λυ υ νο ο με ε ε εν 

# Τῆς Κυριακῆς τῆς Απόκρεφ

Ἐὰν ἐγένετο ἡ ἀπόδοσις τῆς ἑορτῆς τῆς Ὑπαπαντῆς

ἦχος πλ.β'

Ποίημα Θεοδώρου τοῦ Στουδίτου

α Βοηθὸς καὶ σκεπαστὴς ἐγένετό μοι εἰς σωτηρίαν, οὗτός μου Θεός, καὶ δοξάσω αὐτόν, Θεὸς τοῦ Πατρὸς μου καὶ ὑψώσω αὐτόν· ἐνδόξως γὰρ δεδόξασται.

γ Στερέωσον, Κύριε, ἐπὶ τὴν πέτραν τῶν ἐντολῶν σου, σαλευθεῖσαν τὴν καρδίαν μου, ὅτι μόνος ἅγιος ὑπάρχεις καὶ Κύριος.

δ Ἀκήκοεν ὁ προφήτης, τὴν ἔλευσίν σου Κύριε, καὶ ἐφοβήθη, ὅτι μέλλεις ἐκ Παρθένου τίχτεσθαι, καὶ ἀνθρώποις δείκνυσθαι, καὶ ἔλεγεν Ἀκήκοα τὴν ἀκοήν σου καὶ ἐφοβήθην· δόξα τῇ δυνάμει σου Κύριε.

ε Ἐκ νυκτὸς ὀρθρίζοντα φιλόνητο, φώτισον δέομαι, καὶ ὁδήγησον καὶ ἐν τοῖς προστάγμασί σου, καὶ δίδαξόν με ποιεῖν, αἰεὶ τὸ θέλημά σου.

ς Ἐβόησα, ἐν ὅλῃ καρδίᾳ μου, πρὸς τὸν οἰκτίρμονα Θεόν, καὶ ἐπήκουσέ μου, ἐξ Ἄδου κατωτάτου, καὶ ἀνήγαγεν, ἐκ φθορᾶς τὴν ζωὴν μου.

ζ Ἠμάρτομεν, ἠνομήσαμεν, ἠδικήσαμεν ἐνώπιόν σου, οὐδὲ συνετηρήσαμεν, οὐδὲ ἐποιήσαμεν, καθὼς ἐνετείλω ἡμῖν, ἀλλὰ μὴ παραδώῃς ἡμᾶς εἰς τέλος, ὁ τῶν πατέρων Θεός.

Αἰνοῦμεν εὐλογοῦμεν καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον.

η Ὅν στρατιαὶ οὐρανῶν δοξάζουσι καὶ φρίττει τὰ Χερουβὶμ καὶ τὰ Σεραφίμ, πᾶσα πνοὴ καὶ κτίσις ὑμνεῖτε, εὐλογεῖτε, καὶ ὑπερυψοῦτε εἰς πάντας τοὺς αἰῶνας.

Σύντομοι

Ἀργαί

## Σύντομοι

ψδὴ α'

ἦχος λ π̄ B̄8

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.325#

Β ο η θος και σκε πα στης ε γε νε το ο μοι εις σω

τη ρι ι αν ου τος μου Θε ος και δο ξα σω αυτον

Θε ος του Πα τρος μου και υ ψω σω αυτον εν δο ξως γαρ

δε δο ξα α σται ῥδὴ γ'

**C** τε ρε ω σον Κυ ρι ε ε πι την πε ε τραν

των εν το λω ων σου σα λευ θει σαν την καρ δι ανμου

ο τι μο νος α γι ος α' χορός υ πα αρ χεις και Κυ υ

ρι ι ο ος ῥδὴ δ'

**A** κη κο εν ο ο Προ φη της την ε λευ σιν σου

Κυ ρι ε και ε φο βη η θη ο τι μελ λεις εκ

Παρ θε νου τι κτε σθαι και αν θρω ποις δει κνυ σθαι αι και ε λε

γεν α κη κο α την α κο ην σου και ε φο βη η

θην δο ξατη δυ να α μει σου Κυ υ ρι ι ε ε ὠδὴ ε'

Ε χ νυ κτος ορ θρι ζοντα φι λαν θρω πε φω τι σον δε ο

μαι και ο δη γη σον κα με ε εν τοις προσ τα γμα σι ι

σου και δι δα ξο ον με Σωτηρ ποι ει ν το θε ε λη μα σου ὠδὴ ε'

Ε βο η σα εν ο λη καρ δι α μου προ ος τον οι

κτιρ μο να Θε ον και ε πη κου σε ε μου εξ α δου κα

α τω τα του και α νη γα γεν εκ φθο ρας τη ην ζω ην

μου ὠδὴ ζ'

**Η** μαρ το μεν η νο μη σα μεν η δι κη σα μεν ε

νω πι ο ον σου ου δε συν ε τη ρη σα μεν ου

δε ε ποι η σα μεν κα θως ε νε τει λω η μιν αλ λα μη πα

ρα δω ω ης η μας εις τε ε λος ο των πα τε ε

ρων Θε ο ος

ᾠδὴ γ'

**Α** ι νου μεν ευ λο γου μεν και προ σκυ νου με εν τον Κυ

ρι ον

**Ο** ν στρα τι αι ου ρα νων δο ξα ζου σι και φριτ τει τα Χε ρου

βι ιμ και τα Σε ρα φιμ πα α σα πνο η και κτι ι σις

υ μνει τε ευ λο γει ει τε και υ περ υ ψου ου τε εις

παν τας του ους αι ω ω να α ας

# Άγαι

Πέτρου Βυζαντίου

Ἦχος λ π Β8

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Τριώδιον Α'  
2003 σ.52\*

ὠδή α'

**Β** ο η θος και αι σκε πα α α στη ης ε γε νε το ο

μοι εις σω ω τη ρι ι ι ι ι α α αν ου τος

μου Θε ε ε ος και αι αι δο ξα α α α α σω

ω α α αυ τον Θε ος του ου ου Πα τρο ο ο ο

ος μου ου και υ ψω ω ω σω ω α αυ το ον εν δο

ο ο ξως γα α αρ δε ε ε δο ο ο ο ο ξα α

α α σται

ὠδή γ'



**C** τε ε ρε ω ω σον Κυ υ υ ρι ε ε πι τη ην

πε τραν των ε ε εν το λω ω ω ω ν σου ου σα

λευ θει σαν την κα α αρ δι ι α αν μου ο τι μο νο ος

α α α γι ι ι ος *α'χορός* υ πα α αρ χει ει εις

και αι Κυ υ ρι ι ο ος *ωδὴ δ'*

**A** κη κο ε ε εν ο ο ο προ φη η η της

την ε λευ σι ι εν σου ου Κυ ρι ι ε και ε φο

ο βη η η η η θη η ο τι με ε ελ

λει εις εκ Παρ θε ε νου ου ου τι ι κτε ε ε

σθαι και αν θρω ποις δει ει ει κνυ σθαι αι και αι ε

ε λε ε ε γεν α κη κο α α τη ην α κο

ην σου ου και ε ε ε ε φο ο βη η η θην δο

ξα τη δυ να α α μει ει ει σου ου Κυ υ ρι ι ε

ε ωδὴ ε'

Ε κ νυ κτος ο ο ορ θρι ζο οντα φι ι ι λαν θρω ω

πε φω ω ω τι σο ο ον δε ε ο ο μαι και αι

αι ο δη η γη η η σο ον κα α α με

ε ε ε εν τοι οι οις προσ τα γμα σι ι ι ι σου

και δι δα ξο ον με Σω ω τηρ ποι ει ει εν το θε ε ε

ε λη η μα α α σου ωδὴ ε'

Ε β ο η σα α α α α ε εν ο λη η καρ δι ι

ι α μου προ ο ο ος το ο ον οι κτιρ μο να

α θε ε ε ον και ε πη κου ου σε μου ου εξ α δου

κα α α τω ω τα α α του και α νη η γα α γε εν

εκ φθο ρας τη η η η ην ζω ω η η ην μου

ωδη ζ'

Η μα αρ το με ε ε ε εν η νο μη η η σα

μεν η δι κη σα α μεν εν ω πι ο ο ο ο ον σου

ου ου δε ε συν ε τη η η ρη η σα α α

μεν ου δε ε ε ε ποι οι οι η η σα α μεν κα θως

ε εν ε τει ει ει ει ει λω ω η η η μιν

αλ λα μη η η πα ρα α δω η ης η μα α α ας ει

εις τε ε ε λο ος ο τω ω ων πα α α τε

ε ε ε ρω ων Θε ε ε ος

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου με

εν τον Κυ υ υ ρι ον

Ο ο ον στρα α τι ι αι ου ου ου ρα νω ων

δο ο ο ξα α ζου ου ου σι και φρι ι ιτ τει

τα Χε ε ρου ου βι ι ι ιμ και τα Σε ε ρα α α

φιμ πα α α α σα α α πνο η η η και κτι ι

ι ι σις υ μνει ει τε ε ευ λο ο γει ει ει ει ει  
 τε και αι υ υ περ υ ψου τε ε α αυ τον εις πα  
 αν τας του ου ου ους αι αι ω ω ω να α α α ας

## Τιμιωτέρα

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

Λουκᾶ κεφ. 1

ἦχος πλ.β'

- ∴ Μεγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἠγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ σωτῆρί μου. 46-47
  - ∴ Ὅτι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπεινῶσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48
  - ∴ Ὅτι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50
  - ∴ Ἐποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσχόρησεν ὑπερηφάνους διανοίᾳ καρδίας αὐτῶν. 51
  - ∴ Καθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξαπέστειλε κενούς. 52-53
  - ∴ Ἄντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55
- Τὴν Τιμιωτέραν τῶν Χερουβίμ, καὶ ἐνδοξοτέραν ἀσυγκρίτως τῶν Σεραφίμ, τὴν ἀδιαφθόρως Θεὸν Λόγον τεκοῦσαν, τὴν ὄντως Θεοτόκον, σὲ μεγαλύνομεν.**

Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου

Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου

# Ἦχος λ π ̣ ̣ Β̣ϛ ̣ ̣

- ∴ Μεγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἠγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ σωτῆρί μου. 46-47
- ∴ Ὅτι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48
- ∴ Ὅτι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ Δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεάν καὶ γενεάν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50
- ∴ Ἐποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσχόρπισεν ὑπερηφάνους διανοίᾳ καρδίας αὐτῶν. 51
- ∴ Καθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξάπέστειλε κενούς. 52-53
- ∴ Ἀντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55

# Ἦχος λ π ̣ ̣ Β̣ϛ ̣ ̣

Τ ἠν τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ και εν δο  
 ξο τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ την α δι α  
 φθο ο ρως Θε ον Λο γο ον τε κου σαν την ον τως Θε ο  
 το κον σε με γα λυ νο ο με εν

## Καταβασία θ' φδῆς

ἦχος πλ.β'

Ἀσπόρου συλλήψεως, ὁ τόκος ἀνερμήνευτος, Μητρὸς ἀνάνδρου, ἄσπορος ἡ κύησις· Θεοῦ γὰρ ἡ γέννησις καινοποιεῖ τὰς φύσεις· διὸ σε πᾶσαι αἱ γενεαί, ὡς Θεόνυμφον Μητέρα, ὀρθοδόξως μεγαλύνομεν.

Σύντομος

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Ἀργή

Πέτρου Βυζαντίου

### Σύντομος

ἦχος λ π Β̅̅

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.329#

Ἀ σπο ρου συλ λη ψε ως ο το κος α νερ μη νευ  
 τος μη τρο ος α ναν δρου α φθο ρος η κυ η σις Θε  
 ου γαρ η γεν νη σις και αι νο ποι ει τας φυ υ σεις δι  
 ο σε πα σαι αι γε νε αι ως Θε ο νυμ φον μη  
 τε ρα ὀ ρθ ο δο ξως με γα λυ νο με ε εν

### Ἀργὴ Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

ἦχος λ π Β̅̅

Πέτρου Βυζαντίου

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.82#

α σπο ρου ου συλ λη η η ψε ως ο το κος

α νε ε ερ μη νευτος μη η η τρο ο ος α να α αν

δρου ου α φθο ρο ο ος η κυ υ η η σι ις

θε ε ου ου ου γαρ η η η γε εννηη σι ις και αι αι

αι νο ο ο ποι ει ει ει τας φυ υ υ σει εις δι

ο σε πα α α α σαι αι αι αι γε νε ε αι

ως θε ο νυμ φο ο ον Μη τε ε ε ε ε ρα ορ

θο δο ξως μεγα α λυ υ νοο με ε ε εν

Ἄρχὴ Πέτρου Βυζαντίου

Ἦχος λ π Βϛ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Τριώδιον Α'  
2003 σ.55\*



α σπο ρου ου συλ λη η η ψε ως ο το κος

α νε ε ερ μη νευ τος Μη η η τρο ο ος α να

α αν δρου ου α φθο ρο ο ος η κυ υ η η

σι ις Θε ε ου ου ου γαρ η η η γε εν νη η σι

ις και αι αι αι νο ο ο ποι ει ει ει τας φυ υ υ

σει εις δι ο σε πα α α α σαι αι αι αι γε

νε ε αι ως Θε ο νυμ φο ο ον Μη τε ε ε

ε ε ρα ορ θο δο ξως με γα α λυ υ νο ο με ε

ε εν

# Τῆς α΄ Κυριακῆς τῶν νηστειῶν

## ἤχος δ΄

- α **Θ**αλάσσης τὸ ἐρυθραῖον πέλαγος, ἀβρόχοις ἴχνεσιν, ὁ παλαιὸς πεζεύσας Ἰσραὴλ, σταυροτύποις Μωσέως χερσί, τοῦ Ἀμαλήκ τὴν δύναμιν, ἐν τῇ ἐρήμῳ ἐτροπώσατο.
- γ **Εὐ**φραίνεται ἐπὶ σοί, ἡ Ἐκκλησία σου Χριστέ κράζουσα· σύ μου ἰσχύς Κύριε, καὶ καταφυγὴ καὶ στερέωμα.
- δ **Ἐ**παρθέντα σε ἰδοῦσα ἡ Ἐκκλησία, ἐπὶ τὸν ἥλιον τῆς δικαιοσύνης, ἔστη ἐν τῇ τάξει αὐτῆς, εἰκότως κραυγάζουσα· δόξα τῇ δυνάμει σου Κύριε.
- ε **Σὺ** Κύριέ μου φῶς, εἰς τὸν κόσμον ἐλήλυθας, φῶς ἅγιον ἐπιστρέφον, ἐκ ζοφώδους ἀγνοίας, τοὺς πίστει ἀνυμνοῦντάς σε.
- ς **Θύ**σω σοι, μετὰ φωνῆς αἰνέσεως Κύριε, ἡ Ἐκκλησία βοᾷ σοι· ἐκ δαιμόνων λύθρου κεκαθαρμένη, τῷ δι' οἶκτον, ἐκ τῆς πλευρᾶς σου ρεύσαντι αἵματι.
- ζ **Ἐ**ν τῇ καμίνῳ, Ἀβραμιαῖοι παῖδες τῆ περσικῆ, πόθῳ εὐσεβείας μᾶλλον ἢ τῇ φλογί, πυρπολούμενοι ἐκραύγαζον· εὐλογημένος εἶ, ἐν τῷ ναῷ τῆς δόξης σου Κύριε.
- Αἰ**νοῦμεν εὐλογοῦμεν καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον.
- η **Χ**εῖρας ἐκπετάσας Δανιὴλ, λεόντων χάσματα, ἐν λάκκῳ ἔφραξε· πυρὸς δὲ δύναμιν ἔσβεσαν, ἀρετὴν περιζωσάμενοι, οἱ εὐσεβείας ἔρασταί, παῖδες κραυγάζοντες· εὐλογεῖτε, πάντα τὰ ἔργα Κυρίου τὸν Κύριον.

Σύντομοι

Ἀργαί

## Σύντομοι

ὦδὴ α΄

Ἦχος δ΄  Ββ

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Ἀναστασιματάριον 1905 σ.178#

**Θ** α λ α σ σ η ς τ ο ε ρ υ θ ρ α ι ο ν π ε λ α γ ο ς α β ρ ο χ ο ι ς  
ι χ ν ε σ ι ν **λ** ο π α λ α ι ο ς π ε ζ ε υ σ α ς Ἰ σ ρ α η λ σ τ α υ ρ ο

τυ ποις Μω σε ως χερ σι <sup>π</sup><sub>9</sub> του Α μα ληκ την δυ ναμιν

εν τη ε ρη μω ε τρο πω σατο <sup>6</sup><sub>λ</sub> ὠδὴ γ'

**Ε** υ φραι νε ται ε πι σοι η Εκ κλη σι α σου Χρι στε

κραζουσα <sup>π</sup><sub>9</sub> σου μου ι σχυς Κυ ρι ε χορὸς α' και κα τα φυ γη και

στε ρε ωμα <sup>6</sup><sub>λ</sub> ὠδὴ δ'

**Ε** παρ θεν τα σε ι δου ου σα η Εκ κλη σι ι

α ε πι Σταυ ρου τον Η λι ον της δι και ο συ νης <sup>6</sup><sub>λ</sub> ε

στη εν τη τα ξει αυ της <sup>π</sup><sub>9</sub> ει κο ο τως κραυ γα ζου σα δο ξα

τη δυ να μει σου Κυ ρι ε <sup>6</sup><sub>λ</sub> ὠδὴ ε'

**С** υ Κυ ρι ε μου φως εις τον κο σμον ε λη λυ υ θας <sup>π</sup><sub>9</sub> φως

α γι ον ε πι στρε φον <sup>π ρ</sup> εκ ζο φω δους α γνοι οι ας

τους πι στει α νυ μνουν τας σε <sup>6 λ</sup> ὠδὴ ζ'

**Θ** υ σω σοι με τα φω νης αι νε σε ως Κυ ρι ε <sup>6 λ</sup>

η Εκ κλη σι α βο α σοι <sup>π ρ</sup> εκ δαι μο νων λυ υ

θρου κε κα θαρ με νη τω δι οι κτον εκ της πλευ ρας σου

ρευ σαν τι αι μα τι <sup>6 λ</sup> ὠδὴ ζ'

**Ε** ν τη κα μι νω Α βρα μι αι οι Παι δες τη Περ σι

κη πο θω ευ σε βει ας μαλ λον η τη φλο γι πυρ πο <sup>6 ρ</sup>

λου μενοι ε κραυ γα α ζον <sup>π ρ</sup> ευ λο γη με νος ει εν τω

Να ω της δο ξης σου Κυ ρι ε <sup>6 λ</sup> ὠδὴ η'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου ου μεν

τον Κυ ρι ον <sup>6</sup>λ

Χ ει ει ρας εκ πε τα σας Δα νι ηλ λε ον των

χα σματα εν λακ κω ε φρα ξε <sup>6</sup>λ πυ ρος δε δυ ναμιν ε

σβε σαν α ρε την πε ρι ζω σα με ε νοι <sup>π</sup>9 οι ευ σε βει

ας ε ρα σται Παι δες κραυ γα ζον τες ευ λο γει τε παν τα

τα ερ γα Κυ ρι ου τον Κυ ρι ο ο ο ο ον <sup>6</sup>λ

### Άγαι

Πέτρου Βυζαντίου

ψδθ' α'

Ἦχος <sup>4</sup>δὲ Ββ

πρωτ.Κων.Πασιάννη  
Μουσικόν Τριώδιον Β'  
2003 σ.94\*

Θ <sup>χ</sup>α λα α α σ σης <sup>Δ</sup>δὲ το ε ρυ θρ αι αι ο ον πε λα

γος α α βρο ο χοις ι ι χνε ε σι ιν ο πα λαι ος

πε ζε ευ σα ας Ισ ρα α ηλ σταυ ρο τυ ποις Μω ω σε

ε ε ω ως χε ερ σι ι του Α μα ληχ την δυ

υ υ να α α α μι ιν εν τη ε ε ρη η μω ω ε

τρο ο πω σα α το ο

ῶδὴ γ'

Ε υ φραι νε ε ται αι αι αι ε πι ι σοι οι η Εκ κλη

σι α σου Χρι στε ε κρα α α α ζου ου ου ου

σα σου υ υ υ υ μου ι ι σχυς Κυ υ υ ρι ι ι ι

ε ε χορὸς α' και κα τα φυ γη η η και αι στε ρε ε ω

ω μα α

ῶδὴ δ'

Ε παρ θε εν τα σε ι ι ι δου ου ου σα η η Εκ

κλη η η σι ι ι α α ε πι στα αυ ρου τον η

λι ι ο ο ο ο ντης δι ι και ο ο ο συ υ υ νη

ησ ε στη εν τη η τα α α ξει ει α αυ τη ης

ει κο ο ο τω ως κρα α αυ γα α ζου ου ου

σα δο ο ξα τη δυ να α α μει σου ου Κυ ρι ι ε

ε ε δὴ ε'

υ υ υ υ Κυ ρι ι ε μου ου φως εις τον κο ο ο

σμο ον ε λη η λυ υ θα ας φω ω ως α α α α γι ι

ον ε ε πι ι στρε φο ον εκ ζο φω ω ω δου ους

α α α γνοι οι οι οι οι ας τους πι ι στει ει α νυ

υ μνουν ταας σε ε <sup>6</sup> λ ῶδῆ ζ'

Θ υ σω σοι οι οι με τα φω ω νης αι νε ε ε σε

ε ως Κυ ρι ι ε ε <sup>6</sup> λ η Εκ κλη σι ι ι α α

βο ο ο α α α α σοι εκ δαι μο ο ο

ο νων λυ υ υ θρου κε κα α α α α θα αρ με

ε ε νη <sup>6</sup> λ τω δι οι οι οι οι οι κτον εκ

τη ης πλε ευ ρα α ας σου ρε ε ε ευ σαν τι ι αι μα α

τι ι <sup>6</sup> λ ῶδῆ ζ'

Ε ν τη η κα α μι νω ω Α βρα μι αι αι αι αι οι



παι αι αι δες τη περ σι ι κη πο θω ε ευ σε βει

ει ει ας μα ααλ λο ον η τη η φλο ο γι πυρ πο

λου με ε νοι οι ε κρα α αυ γα α α α ζον ευ λο

γη με ε ε νο ο ο ος ει ει εν τω να ω ω της

δο ο ο ξης σου Κυ ρι ι ε ε

ᾠδὴ η'

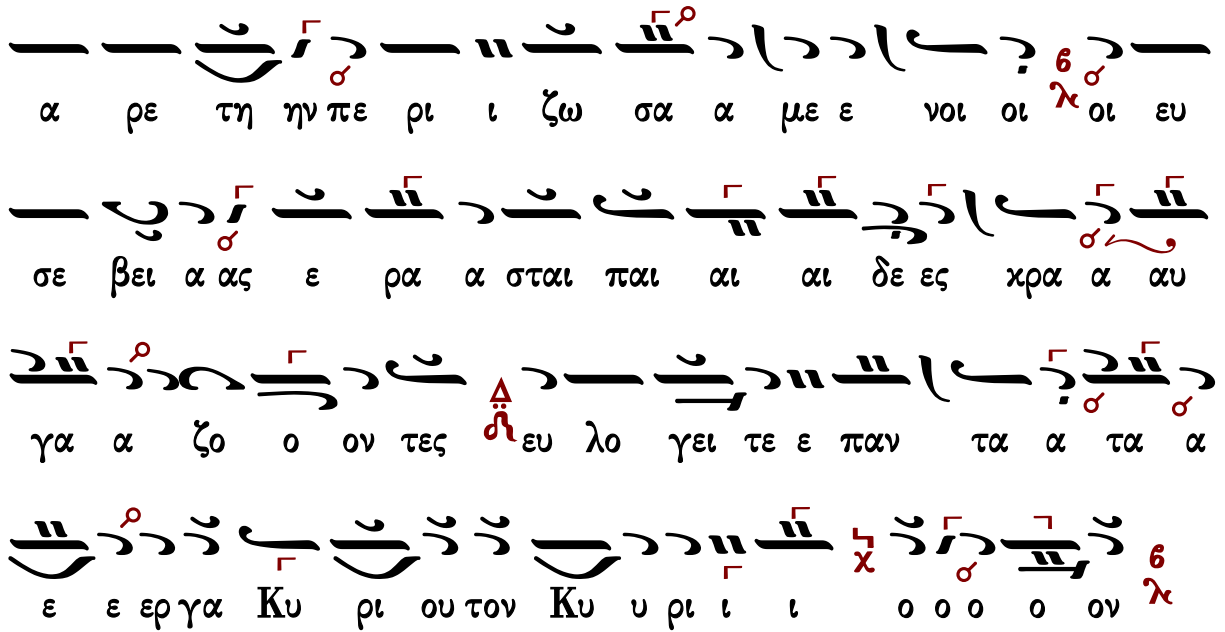
Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου ου ου

με εν τον Κυ υ ρι ι ο ον

Χ ει ρας εκ πε τα α σας Δα α νι ι ηλ λε ο

ον των χα σμα α τα ε εν λα ακ κω ε ε φρα α ξε ε

πυ ρος δε δυ να μι ν ε ε ε σβε ε ε ε σα αν



## Τιμιωτέρα

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

Λουκᾶ κεφ. 1

ἤχος δ'

- ∴ Μεγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἠγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ σωτῆρί μου. 46-47
- ∴ Ὅτι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48
- ∴ Ὅτι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεάν καὶ γενεάν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50
- ∴ Ἐποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσκόρπισεν ὑπερηφάνους διανοία καρδίας αὐτῶν. 51
- ∴ Καθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξαπέστειλε κενούς. 52-53
- ∴ Ἀντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55

**Τὴν Τιμιωτέραν τῶν Χερουβὶμ, καὶ ἐνδοξοτέραν ἀσυγκρίτως τῶν Σεραφίμ, τὴν ἀδιαφθόρως Θεὸν Λόγον τεκοῦσαν, τὴν ὄντως Θεοτόκον, σὲ μεγαλύνομεν.**

Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

# Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου

Λουκά κεφ. 1

Ἦχος δὲ Βϩ

- ∴ Μεγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἠγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ σωτήρῳ μου. 46-47
- ∴ Ὅτι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48
- ∴ Ὅτι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεάν καὶ γενεάν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50
- ∴ Ἐποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσκόρπισεν ὑπερηφάνους διανοίᾳ καρδίας αὐτῶν. 51
- ∴ Καθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξαπέστειλε κενούς. 52-53
- ∴ Ἄντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55

Πέτρου Λαμπαδαρίου

Πανδέκτη, Ὁρθρος 1850 σ.502#

Τ ἡν τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ <sup>6</sup> και εν δο ξο  
 τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ <sup>6</sup> την α δι α  
 φθο ρως Θε ον Λο γον τε κου σαν <sup>6</sup> την ον τως Θε ο  
 το ο κον σε με γα α λυ νο μεν <sup>6</sup>

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Ἦχος δὲ Ββ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Τριώδιον Β'  
2003 σ.26#

**Μ** ε γ α λ υ ν ε ι η ψ υ χ η μ ο υ τ ο ν Κ υ ρ ι ο ν

κ α ι η γ α λ λ ι α σ ε τ ο π ν ε υ μ α μ ο υ ε π ι τ ω Θ ε

ω ω τ ω σ ω τ η ρ ι μ ο υ

**Τ** η ν τ ι μ ι ω τ ε ρ α ν τ ω ν Χ ε ρ ο υ β ι μ και ε ν δ ο

ξ ο τ ε ρ α ν α σ υ γ κ ρ ι τ ω σ τ ω ν Σ ε ρ α φ ι μ τ η ν α δ ι α

φ θ ο ρ ω σ Θ ε ο ν Λ ο ο γ ο ν τ ε κ ο υ σ α ν τ η ν ο ν τ ω σ Θ ε ο

τ ο κ ο ν σ ε μ ε γ α λ υ ν ο μ ε ν

**Ο** τ ι ε π ε β λ ε ψ ε ν ε π ι τ η ν τ α π ε ι ν ω σ ι ν

τ η σ δ ο υ λ η σ α υ τ ο υ ι δ ο υ γ α ρ α π ο τ ο υ ν υ ν μ α κ α

ρι ου σι με πα σαι αι γε νε αι <sup>6</sup> <sup>λ</sup>

**Τ** ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ <sup>6</sup> <sup>λ</sup> και εν <sup>σ</sup> δο

ξο τε ραν α συγ χρι τως των Σε ρα φιμ <sup>6</sup> <sup>λ</sup> την α δι α

φθο ρως Θε ον Λο ο γον τε κου σαν <sup>6</sup> <sup>λ</sup> την ον τως Θε ο

το κον σε μεγα λυ νο μεν <sup>6</sup> <sup>λ</sup>

**Ο** <sup>χ</sup> τι ε ποι η σε μοι με γα λει α ο δυ να

τος <sup>6</sup> <sup>λ</sup> και α γι ον το ο νο μα αυ του <sup>6</sup> <sup>λ</sup> και το ε λε

ος αυ του εις γε νε αν και γε νε αν τοις φο βου

με νοις αυ τον <sup>6</sup> <sup>λ</sup>

**Τ** ην <sup>σ</sup> τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ <sup>6</sup> <sup>λ</sup> και εν <sup>σ</sup>

δο ξο τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ <sup>6</sup> την α δι

α φθο ο ρως Θε ον Λο ο γον τε κου σαν <sup>6</sup> την ον τως

Θε ο το κον σε ε μεγα λυ νομεν <sup>6</sup>

<sup>χ</sup> ποι η σε κρα τος εν βρα χι ο νι αυ

του <sup>6</sup> δι ε σχορ πι σεν υ περ η <sup>χ</sup> φα νους δι α νοι α

καρ δι ας αυ των <sup>6</sup>

<sup>σ</sup> την τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ <sup>6</sup> και εν

δο ξο τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ <sup>6</sup> την α δι

α φθο ο ρως Θε ον Λο ο γον τε κου σαν <sup>6</sup> την ον τως

Θε ο το κον σε ε μεγα λυ νομεν <sup>6</sup>

**Κ** α θει λε δυ να στας α πο θρο νων και υ υ

ψω σε τα πει νους πει νων τας εν ε πλη σεν α γα

θων και πλου τουν τας εξ α πε στει λε κε νους

**Τ** ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ και εν δο ξο

τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ την α δι α φθο

ρως Θε ο ον Λο γον τε κου σαν την ον τως Θε ο

το κον σε ε μεγα λυ νο μεν

**Α** ν τε λα βε το Ισ ρα ηλ παι δος αυ του

μνη σθη ναι ε λε ους κα θως ε λα λη σε προς τους πα

τε ρας η μων τω Α βρα αμ και τω σπερ μα τι αυ

του εως αιωνος <sup>6</sup><sub>λκ</sub>

Την τιμιωτεραν των Χερουβιμ <sup>Δ</sup><sub>λι</sub> και ενδοξο

τεραν ασχριτως των Σεραφιμ <sup>Δ</sup><sub>λι</sub> την αδιαφθο

ρως <sup>Δ</sup><sub>λι</sub> Θεοονλογουσαν <sup>π</sup><sub>9</sub> την οντως Θεο

τοκον σεεμεγαλυνομεν <sup>6</sup><sub>λκ</sub>

## Καταβασία θ' φδῆς

<sup>ἦχος δ'</sup>

Λίθος ἀχειρότμητος ὄρους, ἐξ ἀλαξεύτου σου Παρθένε, ἀκρογωνιαῖος ἐτμήθη, Χριστὸς συνάψας τὰς διεστώτας φύσεις. Διὸ ἐπαγαλλόμενοι σὲ Θεοτόκε μεγαλύνομεν.

Σύντομος

Ἀργὴ Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Ἀργὴ Πέτρου Βυζαντίου

## Σύντομος

<sup>ἦχος δ'</sup> Β8

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Ἀναστασιματᾶριον 1905 σ.187#

Λίθος ἀχειροτμητος οορους ἐξ ἀλαξευ



του σου Παρ θε νε <sup>6</sup>λα κρο γω νι αι ος ε τμη θη Χρι

στος <sup>π</sup>9 συν α α ψας τας δι ε στω σας φυ υ σεις δι

ο ε πα γαλ λο μενοι σε Θε ο το κεμεγα λυ νομε ε ε ε

εν <sup>6</sup>λα

Ἄρχὴ Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Πέτρος Βυζαντίου

Ἦχος <sup>4</sup>δὲ Ββ

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἱρμολόγιον 1903 σ.63#

Λ ι θος α χει ρο τμη τος ο ο ο ο ο ρους <sup>Δ</sup>δὲ εξ

α λα α ξευ του ου σου Πα αρ θε ε ε νε ε <sup>6</sup>λα α

α κρο γω νι αι ος ε ε τμη η η θη Χρι στος συν α α

α α ψας τας δι ε ε στω ω σα ας φυ υ υ σεις <sup>6</sup>λα



ε πα γα αλ λο ο ο ο ο ο ο με ε ε ε ε νοι

σε ε Θε ο το ο κε ε με γα λυ υ νο ο ο με ε ε ε

εν

# Εἰς ἑορτάς τῆς Θεοτόκου (ἐν Τριωδίῳ)

Τῆ β', δ' καὶ ε' Κυριακῇ τῶν Νηστειῶν

ἤχος δ'

α Ἀνοίξω τὸ στόμα μου, καὶ πληρωθήσεται Πνεύματος, καὶ λόγον ἐρεύξομαι, τῇ βασιλίδι Μητρί, καὶ ὀφθήσομαι, φαιδρῶς πανηγυρίζων, καὶ ἄσω γηθόμενος, ταύτης τὰ θαύματα.

γ Τοὺς σοὺς ὕμνολόγους Θεοτόκε, ὡς ζῶσα καὶ ἄφθονος πηγῆ, θίασον συγκροτήσαντας πνευματικόν, στερέωσον· καὶ ἐν τῇ θεῖα δόξῃ σου, στεφάνων δόξης ἀξίωσον.

δ Τὴν ἀνεξιχνίαστον θείαν βουλήν, τῆς ἐκ τῆς Παρθένου σαρκώσεως, σοῦ τοῦ Ὑψίστου, ὁ προφήτης, Ἀββακούμ, κατανοῶν ἐκραύγαζε· δόξα τῇ δυνάμει σου Κύριε.

ε Ἐξέστη τὰ σύμπαντα, ἐπὶ τῇ θεῖα δόξῃ σου· σὺ γὰρ ἀπειρόγαμε Παρθένε, ἔσχες ἐν μήτρᾳ, τὸν ἐπὶ πάντων Θεόν, καὶ τέτοκας ἄχρονον Υἱόν, πᾶσι τοῖς ὕμνοῦσί σε, σωτηρίαν βραβεύοντα.

ς Τὴν θείαν ταύτην καὶ πάντιμον, τελοῦντες ἑορτὴν οἱ θεόφρονες, τῆς Θεομήτορος, δεῦτε τὰς χεῖρας κροτήσωμεν, τὸν ἐξ αὐτῆς τεχθέντα Θεὸν δοξάζοντες.

ζ Οὐκ ἐλάτρευσαν τῇ κτίσει οἱ θεόφρονες, παρὰ τὸν κτίσαντα, ἀλλὰ πυρὸς ἀπειλήν ἀνδρείως πατήσαντες, χαίροντες ἔψαλλον· ὑπερύμνητε, ὁ τῶν πατέρων Κύριος καὶ Θεὸς εὐλογητὸς εἶ.

Αἰνοῦμεν εὐλογοῦμεν καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον.

η Παῖδας εὐαγεῖς ἐν τῇ καμίνῳ, ὁ τόκος τῆς Θεοτόκου διεσώσατο, τότε μὲν τυπούμενος, νῦν δὲ ἐνεργούμενος, τὴν οἰκουμένην ἅπασαν, ἀγείρει ψάλλουσαν· τὸν Κύριον ὑμνεῖτε τὰ ἔργα, καὶ ὑπερυψοῦτε, εἰς πάντας τοὺς αἰῶνας.

Σύντομοι

Αργαί

Σύντομοι

Ἦχος δ' Ββ

ὠδὴ α'

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.330#

**Α** νοι ξω το στο μα μου και πλη ρω θη σε ται

πνευ μα τος <sup>6</sup> και λο γον ε ρευ ξομαι τη βα σι λι δι Μη <sup>λ</sup>

τρι και ο φθη σομαι φαι δρωσ πα νη γυ ρι ζων <sup>π</sup> και <sup>9</sup>

α σωγη θο μενος ταυ της τα θαυ ματα <sup>6</sup> <sup>λ</sup> ῶδὴ γ'

**Τ** ους σου ους υ μνο λο γους Θε ο το ο κε η

ζω ω σα και α φθο νος πη γη <sup>Δ</sup> θι α σον συγ κρο τη σαν <sup>Δ</sup>

τας πνευ μα τι κον στε ρε ω ω σον <sup>π</sup> και εν τη θει α <sup>9</sup>

δο ξη σου <sup>Δ</sup> χορὸς α' στε φα νων δο ξης α ξι ω σον <sup>6</sup> <sup>λ</sup> ῶδὴ δ'

**Τ** ην α νε ξι χνι α στον θει αν βου λην <sup>6</sup> της εκ <sup>λ</sup>

της Παρ θε ε νου σαρ κω σε ως <sup>6</sup> σου του υ ψι στου <sup>λ</sup> <sup>6</sup> <sup>λ</sup>

ο Προ φη της Αβ βα κουμ <sup>6</sup> κα τα νο ων ε κραυ

γα ζε <sup>Δ</sup> δο ξατη δυ να μει σου Κυ ρι ε <sup>6</sup> ←ειρμολόγιον ΖΩΗΣ ῶδῆ ε'

**Ε** ξε στη τα συμ παν τα ε πι τη θει α δο

ξη σου <sup>Δ</sup> συ υ γα αρ α πει ρο γα με Παρ θε ε νε ε

σχες εν μη η τρα τον ε πι πα αν των Θε ον και τε

ε το κας α χρονον Υι ον πα σι τοις υ μνου σι σε <sup>6</sup> σω τη

ρι ι αν βρα βευ οντα <sup>6</sup> ῶδῆ ε'

**Τ** ην θει αν ταυ την και παν τι μον τε λουν τες ε ορ την

οι θε ο φρο νες της Θε ο μη τορος <sup>π</sup> δευ τετας χει ρας κρο

τη σω μεν τον εξ αυ της τε χθε εν τα Θε ον δο ξα ζον

6  
λ  
τες

ᾠδὴ ζ'

**Ο**υκ ελατρευσαν τηκτισειοι θεοφρονες πα  
ρα τον κτισαντα **6** λ αλλα πυροσ απειλην **6** λ αν  
δρειωσπατησαντες χαιροντες εψαλλον **6** λ υπερυμνη  
ητεοτων πατερων Κυριος και Θεος ελογητο

6  
λ  
ος ει

ᾠδὴ η'

**Α**ινου μεν ελογουμεν και προσκυνουομεν  
τον Κυριον **6** λ  
**Π**αιαιδας ευαγεις εντηκαμιινωο  
τοοκος της Θεοτοκουδιεσωσατοοτοτε

μεν τυ που μενος νυν δε ε νερ γου με ε νος π<sup>9</sup> την οι

κου με νην α πα σαν α γει ρει ψα αλλου ου σαν τον

Κυ ρι ο ον υ υ μνει τε τα ερ γα και υ περ υ ψου ου

τεεις παν τας τους αι ω ω να α α α ας 6 λ

### Άγαι

Πέτρου Λαμπαδαρίου του Πελοποννησίου

ψδὴ α'

Ἦχος δὲ Ββ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Τριώδιον  
2003 σ.112\*

α<sup>χ</sup> νοι ξω το στο ο μα α μου ου και πλη ρω θη

η σε ε ται Πνευ μα α το ος και λο ο γο ον ε ε ρε

ευ ξο ο μαι αι τη η βα α σι λι ι δι Μη η τρι ι

ι και ο φθη σο ο μαι αι φαι δρω ω ω ως



πα αν η η γυ υ ρι ζων και α α σω ω γη η θο ο

με ε ε νος τα α α αυ τη ης τα α θαυ μα α τα α

ῥδὴ γ'

Τ ους σου ου ου ους υ μνο ο λο ο γου ους Θε ε ο

ο το ο ο ο κε ως ζω ω ω ω σα α και αι

α α α φθο νος πη η γη θι α α σο ον συ υγ

κρο τη η σα αν τας πνε ευ μα τι ι κον στε ρε ε ε ω ω

ω ω σον και εν τη θει α α δο ο ξη η σου

χαρὸς α'

στε φα α α α α α α α α νω ων δο ο ο

ο ξη ης α α ξι ω ω σο ον

ῥδὴ δ'

Την ανεξιχνίαστον θειειαν

βουουληνην της εκ της Παρθενουσαρκωω

ωσεεεεωωωσουτουουΎυψι

στουουοπροφηητης Αββακουμκατα

νοωνεεκραυγααζεεδοοοοξα

τηδυναααμειεισου Κυριεε

Εξεστηητασυυμπααντααεπι

τηθειειααδοοξηησουσουυγααα

ααραπειειροογααμε Παρθεεενεε

σχεσενμηηηηητρατονεπιιιπααα

α αν τω ων Θε ε ε ον και αι τε ε ε το ο ο ο

κας α α χρο ο νο ον Υι υι ο ο ο ον πα α σι

ι τοι οισ υ μνου σι ι σε ε ε ε την ει ει ρη η η η νη

ην βρα βε ευ ο ον τα α 6 λ ῥδῆς'

**T** ην θει αν τα αυ τη ην και πα αν τι ι μον τε λου ουν

τε ες ε ε ο ορ τη ην οι οι θε ε ο ο ο

φρο ο νες της Θε ο μη η η το ο ο ο ρος π ρ δευ τε τας

χει ρα α ας χρο τη η σω ω μεν Α τον εξ αυ τη

ης τε ε χθε ε εν τα Θε ε ο ον δο ξα ζο ον τε ες 6 λ ῥδῆς'

Ο υκ ε λα α α τρε ε ε ευ σαν τη κτι ι

σει ει οι οι θε ο φρο ο νες πα ρα το ο ον κτι ι

σα α α αν τα α <sup>6</sup> <sub>λ</sub> αλ λα α α α πυ ρο ος α πει ει

λη ην αν δρει ει ω ως πα α τη η σα αν τες χαι αι ρο ον

τες ε ψα αλ λο ον <sup>6</sup> <sub>λ</sub> υ περ υ υ υ μνη η

η η τε ε <sup>π</sup> <sub>9</sub> ο των πα τε ρω ων Κυ ρι ι ο ος

και Θε ε ος ε ευ λο γη η το ο ος ει ει <sup>6</sup> <sub>λ</sub> ῶδῆ ἡ

Α <sup>σ</sup> <sub>Γ</sub> <sup>χ</sup> νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου ου ου

με εν τον Κυ υ ρι ι ο ον <sup>6</sup> <sub>λ</sub>

Π αι αι αι αι δας ευ α γει εις ε εν τη η κα μι ι

ι νω ω <sup>6</sup> ο το ο ο ο ο ο ο κος της Θε ε  
<sup>λ</sup>  
 ο το ο κου δι ε ε σω ω σα α το <sup>Δ</sup> το ο τε ε με  
<sup>♂</sup>  
 εν τυ που με ε νο ος <sup>6</sup> νυ υν δε ε ε νερ γου ου  
<sup>λ</sup>  
 ου με ε ε ε νος <sup>π</sup> την οι κου με ε νη ην α πα α  
<sup>9</sup>  
 σαν α γει ει ρει ει ει ψα α α αλ λου ου ου ου  
<sup>♂</sup>  
 σαν <sup>Δ</sup> τον Κυ υ υ ρι ι ι ι ο ο ο ον υ υ μνει  
<sup>♂</sup>  
 τε ε τα α ερ γα α <sup>π</sup> και αι υ περ υ ψου ου ου  
<sup>9</sup>  
 ου τε ε <sup>Δ</sup> εις πα αν τας τους αι ω ω ω ω ω  
<sup>♂</sup>  
 να α α α α ας <sup>6</sup>

## Τιμιωτέρα

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

- ∴ **Μεγαλύνει** ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἠγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ σωτῆρί μου. 46-47
- ∴ **Ὅτι** ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48
- ∴ **Ὅτι** ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50
- ∴ **Ἐποίησε** κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσκόρπισεν ὑπερηφάνους διανοίᾳ καρδίας αὐτῶν. 51
- ∴ **Καθεῖλε** δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξαπέστειλε κενούς. 52-53
- ∴ **Ἀντελάβετο** Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55
- Τὴν Τιμιωτέραν τῶν Χερουβίμ, καὶ ἐνδοξοτέραν ἀσυγκρίτως τῶν Σεραφίμ, τὴν ἀδιαφθόρως Θεὸν Λόγον τεκοῦσαν, τὴν ὄντως Θεοτόκον, σὲ μεγαλύνομεν.**





Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη




## Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου

### Ἦχος δ' ᾠδὴ Ββ

- ∴ **Μεγαλύνει** ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἠγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ σωτῆρί μου. 46-47
- ∴ **Ὅτι** ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48
- ∴ **Ὅτι** ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50
- ∴ **Ἐποίησε** κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσκόρπισεν ὑπερηφάνους διανοίᾳ καρδίας αὐτῶν. 51
- ∴ **Καθεῖλε** δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξαπέστειλε κενούς. 52-53
- ∴ **Ἀντελάβετο** Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55


**Τ** ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ <sup>6</sup> και εν δο ξο  

 τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ <sup>6</sup> την α δι α  

 φθο ρως Θε ον Λο γον τε κου σαν <sup>6</sup> την ον τως Θε ο  

 το ο κον σε με γα α λυ νο μεν <sup>6</sup>

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη


**Μ** ε γα λυ νει η ψυ χη μου τον Κυ ρι ον <sup>6</sup>  

 και η γαλ λι α σε το πνευ μα μου ε πι τω Θε  

 ω ω τω σω τη ρι μου <sup>6</sup>

**Τ** ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ <sup>6</sup>λ και εν <sup>σ</sup>δο

ξο τε ραν <sup>σ</sup>α συγ κρι τως των <sup>σ</sup>Σε ρα φιμ <sup>6</sup>λ την α δι α

φθο ρως Θε ον Λο ο γον τε κου σαν <sup>6</sup>λ την ον τως Θε ο

το κον σε μεγα λυ νο μεν <sup>6</sup>λ

**Ο** <sup>χ</sup>τι ε πε βλε ψεν ε πι την τα πει νω σιν

της δου λης <sup>σ</sup>αυ του <sup>6</sup>λ ι δου γαρ α πο του <sup>χ</sup>νυν μα κα

ρι ου σι με πα σαι αι γε νε αι <sup>6</sup>λ

**Τ** ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ <sup>6</sup>λ και εν <sup>σ</sup>δο

ξο τε ραν <sup>σ</sup>α συγ κρι τως των <sup>σ</sup>Σε ρα φιμ <sup>6</sup>λ την α δι α

φθο ρως Θε ον Λο ο γον τε κου σαν <sup>6</sup>λ την ον τως Θε ο



το κόν σε μεγα λυ νομεν<sup>6</sup>  
<sup>λ</sup>

**Ο**<sup>χ</sup> τι ε ποι η σε μοι με γα λει α ο δυ να<sup>♂</sup><sup>♂</sup>

τος<sup>6</sup><sup>λ</sup> και α γι ον το ο νο μα αυ του<sup>♂</sup><sup>♂</sup> και το ε λε<sup>6</sup><sup>λ</sup>

ος αυ του εις γε νε αν και γε νε αν τοις φο βου<sup>♂</sup><sup>χ</sup>

με νοις αυτον<sup>6</sup><sup>λ</sup>

**Τ** ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ<sup>♂</sup><sup>♂</sup> και εν<sup>6</sup><sup>λ</sup>

δο ξο τε ραν α συγ κρι τωσ των Σε ρα φιμ<sup>♂</sup><sup>λ</sup> την α δι

α φθο ο ρωσ Θε ον Λο ο γον τε κου σαν<sup>♂</sup><sup>λ</sup> την ον τωσ

Θε ο το κόν σε ε μεγα λυ νομεν<sup>6</sup><sup>λ</sup>

**Ε**<sup>χ</sup> ποι η σε κρα τος εν βρα χι ο νι αυ<sup>♂</sup>

του δι ε σκορπισεν υ περ η φανους δι α νοι α

καρ δι ασαυτων

Την τιμιωτεραν των Χερουβιμ και εν

δοξοτεραν ασυγκριτως των Σεραφιμ την αδι

αφθοορως Θεον Λογον τεκουσαν την οντως

Θεοτοκον σεεμεγαλυνομεν

Καθειλεδυναστας αποθρωνων και υυ

ψωσεταπεινους πεινωντας ενεπλησεν αγα

θων και πλουτωντας εξαπεστειλεκενους

Την τιμιωτεραν των Χερουβιμ και ενδοξο

τε ραν α συγ χρι τως των Σε ρα φιμ **Δ** την α δι α φθο

ρως **Δ** Θε ο ον Λο γον τε κου σαν **π ρ** την ον τως Θε ο

το κον σε ε μεγα λυ νο μεν **β λ**

**Α** ν τε λα βε το Ισ ρα ηλ παι δος αυ του

μνη σθη ναι ε λε ους **β λ** κα θως ε λα λη σε προς τους πα

τε ρας η μων **β λ** τω Α βρα αμ και τω σπερ μα τι αυ

του ε ως αι ω νος **β λ**

**Τ** ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ **Δ** και εν δο ξο

τε ραν α συγ χρι τως των Σε ρα φιμ **Δ** την α δι α φθο

ρως **Δ** Θε ο ον Λο γον τε κου σαν **π ρ** την ον τως Θε ο

το κων σε ε μεγα λυ νομεν <sup>6</sup> <sup>λ</sup>

## Καταβασία θ' φδῆς

ἦχος δ'

Ἄπας γηγενής, σκιρτάτω τῷ πνεύματι, λαμπαδουχούμενος· πανηγυρίζετω δέ, αὐλῶν νόων, φύσις γεραίρουσα, τὴν ἱεράν πανήγυριν, τῆς Θεομήτορος, καὶ βοάτω· Χαίροις παμμακάριστε, Θεοτόκε ἀγνή, ἀειπάρθενε.

Σύντομος

Ἀργή

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Πέτρου Πελοποννησίου

### Σύντομος

φδῆ θ'

ἦχος δ' <sup>λ</sup> <sup>π</sup> Βα

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.330#

α πας γηγε νης σκιρ τα τω τω πνευ μα τι λαμ πα δου χου

με νος <sup>6</sup> <sup>λ</sup> παν η γυ ρι ζε τω ω δε <sup>π</sup> <sup>9</sup> α υ

λων νο ο ων φυ σις γε ραι ρου σα <sup>6</sup> <sup>λ</sup> την ι ε ραν παν

η γυ ριν της Θε ο μη η το ο ρος <sup>Δ</sup> <sup>δ</sup> και βο α

α α α α τω χαι ροις παμμα κα ριστε Θε ο

το κε α γνη η α ει παρ θε νε ε ε ε ε

Ἄρχη Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

ὠδὴ θ'

Ἦχος δὲ Ββ

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1905 σ.55#

α πας γη γε νη η ης σχιρ τα τω τω πνε ευμα

τι ι λααμ πα α δου χου με ε νο ο ος παν η γυ

υ ρι ζε ε ε τωω ω ω δε α υ λωων νο ο

ο ο ω ων φυ υ σι ις γε ραι αι ρου ου σα α την ι

ε ρα ανπα αν η η γυ υ ριν της Θε ο ο ο μη

η η η η το ο ο ο ρο ο ος και αι βο α α α

α α τω **Α** χαι αι ροι οις πα αμ μα κα ρι ι στε ε **6 λ**

Θε ο το ο κε α γνη η η η α ει πα αρθε ε ε νε ε ε

ε ε **6 λ**

### Ἀρχὴ Πέτρου Πελοποννησίου

ᾠδὴ θ'

Ἦχος **Β** **Βα λ**

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Τριῶδιον  
2003 σ.115\*

**Α** α πας γη γε νη η ης σκίρ τα τω τω πνε ευ μα

τι ι λααμ πα α δου χου με ε νο ος **6 λ** παν η γυ υ

υ ρι ζε ε ε τω ω ω δε **π 9** α υ λωων νο ο

ο ο ων φυ υ σι ις γε ραι αι ρου ου σα α **6 λ** την ι ε

ρα αν πα αν η η γυ υ ριν της Θε ο ο ο μη η

η η το ο ο ο ρο ο ος και αι βο α α α α

τω και αι ροι οις πα αμ μα κα ρι ι στε ε Θε

ο το ο κε α γνη η η η α ει πα αρ θε ε ε νε ε ε

ε ε

# Τῆς Σταυροπροσκυνήσεως

## ἤχος α'

- α Ὁ θειότατος προετύπωσε πάλαι Μωσῆς, ἐν ἐρυθρᾷ θαλάσῃ, διαβιβάσας Ἰσραὴλ, τῷ Σταυρῷ σου τὴν ὑγρὰν, τῇ ῥάβδῳ τεμῶν, ὠδὴν σοι ἐξόδιον, ἀναμέλπων Χριστέ ὁ Θεός.
- γ Στερέωσον δέσποτα Χριστέ, τῷ Σταυρῷ σου ἐν πέτρα με τῇ τῆς πίστεως μὴ σαλευθῆναι τὸν νοῦν, ἐχθροῦ προσβολαῖς τοῦ δυσμενοῦς· μόνος γὰρ εἶ ἅγιος.
- δ Ἐπὶ σταυροῦ σε δυνατὴ φωστὴρ ὁ μέγας κατιδῶν τρόμῳ ἐπαρθεὶς τὰς ἀκτῖνας συνέστειλεν ἔκρυψε, πᾶσα δὲ κτίσις ὑμνησεν, ἐν φόβῳ τὴν σὴν μακροθυμίαν· καὶ γὰρ ἐπλήσθη ἡ γῆ, τῆς σῆς αἰνέσεως.
- ε Ὅρθρίζοντες σὲ ἀνυμνοῦμεν, Σωτὴρ τοῦ κόσμου εἰρήνην, εὐράμενοι τῷ Σταυρῷ σου, δι' οὗ ἀνεκαίνισας, τὸ γένος τὸ ἀνθρώπινον, φῶς πρὸς ἀνέσπερον ἄγων ἡμᾶς.
- ς Τὸν τύπον τοῦ θεοῦ Σταυροῦ Ἰωνᾶς ἐν κοιλίᾳ τοῦ κήτους, τεταμέναις παλάμαις, προδιεχάραξε καὶ ἀνέθορε σεσωσμένος τοῦ θηρὸς τῇ δυνάμει σου Λόγε.
- ζ Φλογώσεως ὁ παῖδας ῥυσάμενος σάρκα προσλαβόμενος, ἦλθεν ἐπὶ γῆς καὶ Σταυρῷ προσηλωθεὶς, σωτηρίαν ἡμῖν ἐδωρήσατο, ὁ μόνος εὐλογητὸς τῶν πατέρων Θεός, καὶ ὑπερένδοξος.
- η Αἰνοῦμεν εὐλογοῦμεν, καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον.
- η Χεῖρας ἐν τῷ λάκκῳ βληθεὶς τῶν λεόντων ποτέ, ὁ μέγας ἐν προφήταις, σταυροειδῶς ἐκπετάσας, Δανιὴλ ἀβλαβῆς ἐκ τῆς τούτων καταβρώσεως σέσωσται, εὐλογῶν Χριστόν τὸν Θεὸν εἰς τοὺς αἰῶνας.

Σύντομοι

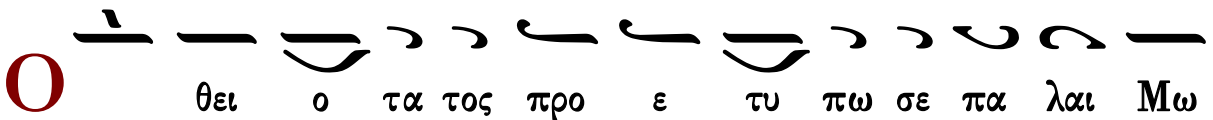
Ἄργαι

## Σύντομοι

ὠδὴ α'

## Ἦχος ᾠ Πα

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.432#





σης εν Ερυθρα θαλασση **Δ** διαβιβασας

Ισραηλ τω Σταυρω σου την υγραντηρα αβδωτεμων

ωδηγησολ εξοδιον αναμελων Χριστε ε ο Θε

ος **π** **9** ωδηγ'

**C** τερεωσον δεσποτα Χριστε τω Σταυρω σου εν πε

ετραμετη τηςπιστεως **π** **9** μησαλευθη ναι τον νουν **Δ**

εχθρου ουπροσβολαις του δυσμενους **Δ** *α' χορός* μονος γαρ ει

ααγιος **π** **9** ωδηδ'

**E** πισταυρου σεδυνατε **Δ** φωστηρο μεγαςκατι

δων τρομωεπαρθειστας ακτιινας **Δ** **9** συνεεστει

λεν ε κρυψε πα α σα δε κτι σις υ μνησεν εν φο βω την

ση ην μα κρο θυ μι αν και γαρ ε πλη η σθη η

γη της σης αι νε ε σε ε ως π ρ ῶδῆ ε'

**Ο** ρ θρι ζον τες σε α νυ μνου ουου μεν Σω τηρ οι κτι

ιρ μον ει ρη νην ευ ρα α με νοι τω Σταυ ρω ω

σου π ρ δι ου α νε και νι σας το γε νος το αν θρω πι νον

φως προς α νε σπερον α α γων η μα ας π ρ ῶδῆ ε'

**Τ** ον τυ ποντου θει ου Σταυ ρου Ι ω να ας εν κοι

λι ι α του κη η τους Δ δ τε τα με ναις πα λα α μαις

προ δι ε χα ρα ξε και α νε θορε π ρ σε σω σμε νος

του θη ρος **η** τη δυ να μει σου Λο ο γε **π**<sup>9</sup> ῶδή ζ'

**Φ** λο γω σε ως ο παι δας ρυ σα μενος **Δ**<sup>Δ</sup> σαρ κα προσ λα

βο μενος ηλ θες ε πι γης και εν Σταυ ρω προσ η λω

θεις **Δ**<sup>Δ</sup> σω τη ρι αν η μιν ε δω ρη η σω Χρι στε **π**<sup>9</sup> ο

μο ο νος ευ λο γη τος των πα τε ε ρων **Δ**<sup>Δ</sup> Θε ος και


υ περ ε εν δο ο ξος **π**<sup>9</sup> ῶδή η'


**Δ** ι νου μεν ευ λο γου μεν και προ σκυ νου μεν τον

Κυ ρι ον **Δ**<sup>Δ</sup>

**Χ** ει ρας εν τω λακ κω βλη θεις των λε ον των πο τε **Δ**<sup>Δ</sup>

ο με γας εν Προ φη η ταις σταυ ρο ει δω ως εκ πε τα α


  
 σας <sup>π ρ</sup> Δα νι ηλ α βλα βης εκ της του ου των <sup>Δ ρ</sup> κα τα  

  
 βρω ω σε ως σε σω σται ευ λο γων Χρι στον <sup>Δ ρ</sup> τον Θε  

  
 ον εις τους αι ω ω να α ας <sup>π ρ</sup>





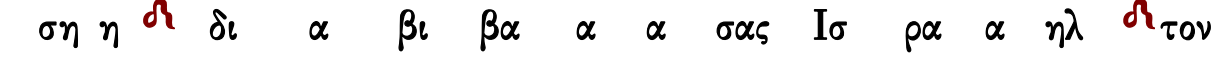
## Άρχαι

Πέτρου Βυζαντίου

ὠδὴ α'

Ἦχος <sup>4</sup>/<sub>ϩ</sub> Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Τριώδιον  
τ.Α' 2003 σ.133\*


  
**Ο** <sup>χ ϩ</sup> θει ο ο τα τος <sup>χ ϩ</sup> προ ε τυ υ υ  

  
 πω ω σε ε ε πα α α λαι αι Μω ω ω σης <sup>Δ ρ</sup>  

  
 ε ε ε εν Ε ε ρυ θρα α θα α λα α ασ  

  
 ση η <sup>Δ ρ</sup> δι α βι βα α α σας Ισ ρα α ηλ <sup>Δ ρ</sup> τον  

  
 Σταυ ρο ον σου την υ γρα αν τη η ρα α α α

α βδω ω τε ε ε μων π ρ ω δη η η ην σοι οι

ε ε εξ ο ο δι ι ι ον α να α μελ πω ων

Χρι ι στε ε ε ε ε ο ο Θε ε ε ος

\* Γράφεται συνήθως κατά δοτική «τῷ Σταυρῷ σου» ἀντὶ αἰτιατικῆς. Ἄλλ’ ἡ γραφή αὕτη εἶναι ἐσφαλμένη συντακτικῶς καὶ ἱστορικῶς-συντακτικῶς μὲν διότι ἀφήνει ἄνευ ἀντικειμένου το ρῆμα «προσετύπωσεν» ἐνῶ προσθέτει καὶ δευτέραν δοτικὴν ὀργανικὴν εἰς τὴν μετοχὴν «τεμῶν» («τῷ Σταυρῷ σου», «τῇ ράβδῳ»). ἱστορικῶς δὲ, διότι ὁ Μωϋσῆς δὲν ἔτεμε τὴν θάλασσαν «τῷ Σταυρῷ» ἀλλὰ «τῇ ράβδῳ», προστύπωσε δὲ διὰ τῶν κινήσεων τῆς ράβδου τὸν Σταυρὸν (βλ. ἀναλυτικωτέραν διατύπωσιν εἰς τὸν εἰρμὸν «Σταυρὸν χαράξας Μωσῆς». ὅθεν ἐγράψαμεν τὴν ὀρθὴν γραφήν, τόσον εἰς τὸν εἰρμόν, ὅσον καὶ ἐνταῦθα, τροποποιήσαντες ἐλαφρῶς τὸ μέλος. [πρωτ.Κων.Παπαγιάννης]

ῶδὴ γ'

τε ρε ω σον Δε ε σπο τα Χρι ι στε τω Σταυ

ρω ω σου εν πε ε τρα α με ε ε ε τη η η ης

πι ι στε ε ε ω ως μη σα λευ θη η η ναι το ον

νουν ε χθρου ου προσ βο λαι αις του δυσ με ε ε νου

ους α' χορός μο ο νος γα αρ ει ει α α α α

α γι ι ι ι ος

ῶδὴ δ'

Επι Σταυρου ου ου σε ε ε Δυ να α

τε φω στη ηρ ο με ε γα α ας κα α

τι ι ι δων τρο μω ε πα αρ θει εις τας α κτι ι ι

να ας συν ε ε ε ε στει ει λε εν ε ε κρυ υ υ

ψε ε πα α σα δε ε ε κτι ι σι ι ις

υ υ μνη η η σεν εν φο ο βω την ση η η η

ην μα κρο θυ υ υ μι ι αν και γαρ ε ε πλη η η

σθη η η γη η της ση ης αι αι νε ε ε ε σε ε

ε ε ως

ᾠδὴ ε'

Ο ρ θρι ι ζο ον τες σε α νυ μνου ου ου ου με εν Σω

τη ηρ του ου χο ο ο σμου ου ει ρη η

η νην ευ ρα α α α με ε νοι τω ω Σταυ ρω ω ω ω

σου δι ου ου α α νε και αι νι ι σας το ο

γε ε νος το ο α α αν θρω ω πι ι ι

νον φω ως προ ος α α α νε σπε ε ρο ον α

α α α α γω ων η η η μας

τον τυ υ υ υ πον του θει ει ει ει ου Στα

α αυ ρου ου ου ου Ι ι ω ω ω νας ε εν κοι οι

λι ι ι α α του ου κη η η του ους τε

τα με ε ναις πα λα α μαι αις προ ο ο ο δι ι

ε ε χα α ρα α α ξε ε και α α νε θο ο

ρε ε σε σω σμε ε ε νος του θη η ρος τη δυ υ

να α α μει ει σου Λο ο ο ο ο γε

Φ λο γω ω σε ω ως ο παι αι αι δας ρυ σα

α με ε νο ος σα αρ κα α προ οσ λα βο με ε νο

ος ηλ θε εν ε πι ι γης και αι αι ε εν Σταυ ρω

ω ω προσ η η λω ω ω θεις σω τη ρι ι

αν η μι ιν ε ε δω ω ρη η η η σα α α α α

το ο μο ο ο νος ευ λο γη η το ο ος τω

ων πα α τε ε ε ρω ων Θε ο ος και



υ υ πε ερ ε ε ε εν δο ο ο ο ξος π ρ φδὴ η'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου με

εν τον Κυ υ ρι ι ον Δ

Χ ει ει ρας εν τω λα ακ κω βλη η θεις των λε

ο ο ον τω ων ο με ε ε γα ας ε εν

προ ο φη η η ται αις σταυ ρο ει ει δω ω ως ε εκ

πε τα α α α α σας Δα α νι ι ηλ α βλα

βης εκ τη ης του ου ου τω ων κα τα βρω ω ω σε ε

ως σε ε ε σω ω σται αι ευ λο γων Χρι ι

στον τον Θε ε ο ον εις του ους αι ω ω ω ω να

α α ας π ρ

## Τιμιωτέρα

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

Λουκᾶ κεφ. 1

ἦχος α'

- ∴ Μεγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἠγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ σωτῆρί μου. 46-47
  - ∴ Ὅτι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48
  - ∴ Ὅτι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεάν καὶ γενεάν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50
  - ∴ Ἐποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσκόρπισεν ὑπερηφάνους διανοία καρδίας αὐτῶν. 51
  - ∴ Καθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξάπέστειλε κενούς. 52-53
  - ∴ Ἀντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55
- Τὴν Τιμιωτέραν τῶν Χερουβὶμ, καὶ ἐνδοξοτέραν ἀσυγκρίτως τῶν Σεραφίμ, τὴν ἀδιαφθόρως Θεὸν Λόγον τεκοῦσαν, τὴν ὄντως Θεοτόκον, σὲ μεγαλύνομεν.**

Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

## Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου

Λουκᾶ κεφ. 1

ἦχος ᾠ Πα

- ∴ Μεγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἠγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ σωτῆρί μου. 46-47
- ∴ Ὅτι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48

- ∴ Ὅτι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ Δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεάν καὶ γενεάν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50
- ∴ Ἐποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσκόρπισεν ὑπερηφάνους διανοία καρδίας αὐτῶν. 51
- ∴ Καθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξάπέστειλε κενούς. 52-53
- ∴ Ἀντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55

Πέτρου Λαμπαδαρίου

## Ἦχος ♯ Πα

Πανδέκτη  
Ὅρθρος 1850 σ.501#


**Τ** ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ  και εν δο


 ξο τε ραν α συγ κρι ι τως των Σε ρα φιμ την α δι




 α φθο ρως Θε ον Λο γον τε κου ου σαν  την ον τως Θε ο


 το κον σε μεγα λυ υ νο ο μεν  **π**

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

## Ἦχος ♯ Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Τριώδιον Β'  
2003 σ.19#


**Μ**  ε γα λυ νει η ψυ χη μου τον Κυ ρι

ον και η γαλιαια σε το πνευμα μου επι

τω θεω τωσωτηρι μου

την τιμιωτεραν των χειριβι και ενδοξο

τεραν ασυγκριιτως των Σεραφιμ την αδια

φθορωσ θεον λογον τεκουσαν την οντως θεο

τοκον σε μεγαλυνοομεν

οτι επεβλεψεν επι την ταπεινω

σιντης δουλης αυτου ιδου γαρ απο του νυν μακα

ριουσι με πασαι αι γενεαι

την τιμιωτεραν των χειριβι και ενδοξο

τε ραν α συγ κρι ι τως των Σε ρα φιμ **Δ** την α δι α

φθο ρως Θε ον Λο γον τε κου σαν **Δ** την ον τως Θε ο

το κον σε μεγα λυ υ νο ο μεν **π**

**Ο** τι ε ποι η σε μοι με γα λει α ο

δυ να τος και α γι ον το ο νο μα αυ του **Δ** και το ε

λε ος αυ του εις γε νε αν και γε νε αν τοις φο βου

με νοις αυ τον **Δ**

**Τ** ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ **Δ** και εν δο

ξο τε ραν α συγ κρι ι τως των Σε ρα φιμ **π** την α δι

α φθο ρως Θε ον Λο γον τε κου σαν **Δ** την ον τως Θε

ο το κον σε μεγα λυ υ νο ο μεν <sup>π ρ</sup>

**Ε** <sup>χ</sup> ποι η σε κρα τος εν βρα χι ον ι αυ

του <sup>Δ</sup> δι ε σκορ πι σεν υ περ η <sup>χ</sup> φα νους δι α νοι

α καρ δι ας αυ των <sup>Δ</sup>

**Τ** ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ <sup>Δ</sup> και εν δο

ξο τε ραν α συγ κρι ι τως των Σε ρα φιμ <sup>π ρ</sup> την α δι

α φθο ρως Θε ον Λο γον τε κου σαν <sup>Δ</sup> την ον τως Θε

ο το κον σε μεγα λυ υ νο ο μεν <sup>π ρ</sup>

**Κ** <sup>χ</sup> α θει λε δυ να στας α πο θρο νων και υ ψω σε τα

πει νους <sup>ζ</sup> πει νων τας εν ε πλη σεν α γα θων <sup>χ ρ η</sup> και

πλου τουν τας εξ α πε στει λε κε νους

**Τ**ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ και εν δο

ξο τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ την α δι

α φθο ρως Θε ο ον Λο γον τε κου σαν την ον τως Θε

ο το κον σε μεγα λυ υ νο ο μεν

**Α**ν τε λα βε το Ισ ρα ηλ παι δος αυ του μνη

σθη ναι ε λε ους και θως ε λα λη σε προς τους πα

τε ρας η μων τω Α βρα αμ και τω σπερ μα τι αυ

του ε ως αι ω νος

**Τ**ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ και εν δο

ξο τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ την α δι  
 α φθο ρως Θε ο ον Λο γον τε κου σαν την ον τως Θε  
 ο το κον σε μεγα λυ υ νο ο μεν

### Καταβασία θ' φδῆς

ἦχος α'

Ω Μῆτερ Παρθένε, καὶ Θεοτόκε ἀψευδῆς, ἡ τεκοῦσα ἀσπόρως, Χριστὸν τὸν Θεὸν  
 ἡμῶν, τὸν ἐν Σταυρῷ ὑψωθέντα σαρκί, σὲ οἱ πιστοί, ἅπαντες ἀξίως, σὺν τούτῳ νῦν  
 μεγαλύνομεν.

Σύντομος

Ἀργή

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Πέτρου Βυζαντίου

### Σύντομος

φδῆ θ'

ἦχος ἦ Πα

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.439#

ω μη τερ παρ θε ε ε νε και Θε ο το κε α ψευ  
 δης η τε κου σα α σπο ο ρως Χρι στο ον τον Θε ον  
 η μων τον εν Σταυ ρω ω ω υ ψω θε εν τα σαρ κι



σε ε οι πιστοι οι οι α παντες α ξι ι ως **Δ** συν του τω νυν

μεγα λυ υ νο ο με ε ε εν **π**

### Ἄρχὴ Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

ψδλθ'

### Ἦχος **Λ** Πα

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.21#

**Ω** μη η η τερ Παρ θε ε ε νε ε **ν** και Θε

ε ε ο ο το ο κε ε α α α ψε ε ευ

δη ης **π** η τε κου ου σα α α α σπο ο ρως Χρι

στο ο ο ον το ον Θε ε ο ον η η η μω ων **π** το

ο ον ε εν Στα αυ ρω ω ω υ υ ψω θε ε ε

ε εν τα α σα α αρ κι **Δ** σε ε ε ε οι οι πι

ι ι σ τοι οι οι οι α α παν τε ες α α ξι

ι ι ω ως <sup>Δ</sup> συν του ου τω ω νυν με ε γα α λυ

υ υ υ υ νο ο ο ο με ε ε εν <sup>π ρ</sup>

Ἄρχὴ Πέτρου Βυζαντίου

ῥοδὴ θ'

Ἦχος <sup>Λ</sup> Πα <sup>χ</sup>

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Τριώδιον  
τ.Α' 2003 σ.136\*

ω Μη η η τερ Παρ θε ε ε νε ε <sup>ν ρ</sup> και Θε

ε ε ο ο το ο κε ε α α α ψε ευ

δη ης <sup>π ρ</sup> η τε κου ου σα α α α σπο ο ρως Χρι

στο ο ο ον το ον Θε ε ο ον η η η μω ων <sup>π ρ</sup> το

ο ον ε εν Στα αυ ρω ω ω υ υ ψω θε ε ε

ε εν τα α σα α αρ χι σε ε ε ε οι

οι πι ι ι στοι οι οι οι α α παν τε ες α

α ξι ι ι ωως συν του ουτω ω νυν με ε γα

α λυ υ υ υ υ νο ο ο ο με ε ε εν

# Εἰς τὸν Εὐαγγελισμόν

25/3

ἦχος δ'

- α **Ἀ**νοίξω τὸ στόμα μου καὶ πληρωθήσεται Πνεύματος, καὶ λόγον ἐρεύξομαι, τῇ βασιλίδι Μητρὶ, καὶ ὀφθήσομαι, φαιδρῶς πανηγυρίζων, καὶ ἄσω γηθόμενος, ταύτης τὴν σύλληψιν.
- γ **Τ**οὺς σοὺς ὑμνολόγους, Θεοτόκε, ἡ ζῶσα καὶ ἄφθονος πηγὴ, θίασον συγκροτήσαντας πνευματικόν, στερέωσον· κὰν τῇ σεπτῇ συλλήψει σου, στεφάνων δόξης ἀξίωσον.
- δ **Ὁ** καθήμενος ἐν δόξῃ, ἐπὶ θρόνου Θεότητος, ἐν νεφέλῃ κούφη, ἦλθεν Ἰησοῦς ὁ ὑπέρθεος, τῇ ἀκηράτῳ παλάμῃ/παρθένῳ, καὶ διέσωσε, τοὺς κραυγάζοντας· Δόξα Χριστὲ τῇ δυνάμει σου.
- ε **Ἐ**ξέστη τὰ σύμπαντα, ἐπὶ τῇ θείᾳ δόξῃ σου· σὺ γὰρ ἀπειρόγαμε Παρθένε, ἔσχες ἐν μήτρᾳ τὸν ἐπὶ παντῶν Θεόν, καὶ τέτοκας ἄχρονον Υἱόν, πᾶσι τοῖς ὑμνοῦσί σε, σωτηρίαν βραβεύοντα.
- ς **Ἐ**βόησε, προτυπῶν τὴν ταφὴν τὴν τριήμερον, ὁ προφήτης, Ἰωνᾶς ἐν τῷ κήτει δεόμενος· Ἐκ φθορᾶς με ρῦσαι, Ἰησοῦ βασιλεῦ τῶν δυνάμεων.
- ζ **Ο**ὐκ ἐλάτρευσαν, τῇ κτίσκει οἱ θεόφρονες, παρὰ τὸν κτίσαντα, ἀλλὰ πυρὸς ἀπειλήν, ἀνδρείως πατήσαντες, χαίροντες ἔψαλλον· Ὑπερῦμνητε, ὁ τῶν πατέρων Κύριος, καὶ Θεὸς εὐλογητὸς εἶ.
- Ἄ**ινοῦμεν, εὐλογοῦμεν καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον.
- η **Ἄ**κουε κόρη Παρθένε ἀγνή, εἰπάτω δὴ ὁ Γαβριήλ, βουλὴν Ὑψίστου ἀρχαίαν ἀληθινήν. Γενοῦ πρὸς ὑποδοχὴν ἐτοιμῇ Θεοῦ· διὰ σοῦ γὰρ ὁ ἀχώρητος, βροτοῖς ἀναστραφήσεται· διὸ καὶ χαίρων βοῶ· Εὐλογεῖτε, πάντα τὰ ἔργα Κυρίου τὸν Κύριον.

Σύντομοι

Ἄργαι

Σύντομοι

ἦχος δ'  Β8

ψδδ' α'

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.330#

**Α** νοι ξω το στο μα μου και πλη ρω θη σε ται

πνευ ματος <sup>6</sup> και λο γον ε ρευ ξομαι τη βα σι λι δι Μη <sup>λ</sup>

τρι και ο φθη σομαι φαι δρωσ πα νη γυ ρι ζων <sup>π</sup> και <sup>9</sup>

α σωγη θο μενος ταυ τηςτην συλ ληψιν <sup>6</sup> ῶδὴ γ' <sup>λ</sup>

**Τ** ους σου ους υ μνο λο γους Θε ο το ο κε η

ζω ω σα και α φθονος πη γη <sup>Δ</sup> θι α σον συγ κρο τη σαν <sup>Δ</sup>

τας πνευ μα τι κον στε ρε ω ω σον <sup>π</sup> καν τη σε πτη συλ <sup>9</sup>

λη ψει σου <sup>Δ</sup> ῶδὴ δ' <sup>6</sup> α' χορός στε φα νων δο ξης α ξι ω σον <sup>λ</sup>

**Ο** κα θη μενος εν δο ο ξη <sup>Δ</sup> ε πι θρο νου Θε <sup>Δ</sup>

ο τη τος <sup>6</sup> εν νε φε λη κου ου φη <sup>Δ</sup> ηλ θεν Ι <sup>λ</sup>

η σου ους ο υ περ θε ος <sup>6</sup> λ<sup>κ</sup> τη α κη ρα τω πα λα

μη και δι ε σω σε <sup>π</sup> ρ<sup>9</sup> τους κραυ γα ζοντας δο ξα Χρι στε τη

δυ να μει σου <sup>6</sup> λ<sup>κ</sup> σ.331

ῶδῆ ε'

**Ε** ξε στη τα συμ παν τα ε πι τη θει α δο

ξη σου <sup>Α</sup> ρ<sup>Δ</sup> συ υ γα αρ α πει ρο γα με Παρ θε ε νε ε

σχες εν μη η τρα τον ε πι πα αν των Θε ον και τε

ε το κας α χρο νον Υι ον πα σι τοις υ μνου σι σε <sup>6</sup> λ<sup>κ</sup> σω τη

ρι ι αν βρα βευ ου σα <sup>6</sup> λ<sup>κ</sup>

ῶδῆς'

**Ε** βο ο η η σε προ τυ πων την τα φη η ην τη ην

τρι η με ρον <sup>6</sup> λ<sup>κ</sup> ο προ φη η η η η της Ι ω

νας εντω κη η η τει ει δε ο μενος εκ φθο ρας με

ρυ υ σαι Ι η σου βασι λε ευτωνδυ να μεων

Ο υκ ε λα ατρε ευσαν τη κτι σει οι θε ο φρο νες πα

ρα τον κτι σα αν τα αλ λα πυ ρο ος α πει λην αν

δρει ως πα τη σαν τες χαι ροντες ε ψαλλον υ περ υ μνη

η τε ο των πα τε ρων Κυ ρι ος και Θε ος ευ λο γη

το ος ει

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προ σκυ νου ου μεν

τον Κυ ρι ον

Α κου ε κο ρη Παρ θε νε α γνη ει πα τω δη

ο Γαβριηλ <sup>π</sup>βου λην Υ ψι στου αρ χαι αν α λη θι νην

γε νου προς υ πο δο χην ε ται οι μη Θε ου <sup>π</sup>δι α

σου γαρ ο ο α χω ρητος βρο τοις συν α να στρε φε ε ται <sup>π</sup>

δι ο και χαι ρω βο ων ευ λο γει τε παν τα τα ερ γα Κυ

ρι ου τον Κυ ρι ο ο ο ο ον <sup>6</sup><sub>λ</sub>

### Άγαι

Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου

Εἰς τὰς καταβασίας ταύτας ἐπεφέραμεν ἐλαφράς τινὰς μεταβολὰς πρὸς ἀποφυγὴν παρατονησῶν καὶ ἀστόχου χωρισμοῦ λέξεων. Οὐσιαστικωτέρας διορθώσεις πρὸς καλυτέραν ἀπόδοσιν τοῦ νοήματος καὶ σύντημσιν μουσικῶν τινῶν γραμμῶν παραθέτομεν μεθ' ἑκάστην καταβασίαν. [πρωτ.Κων.Παπαγιάννης]

ὠδὴ α'

Ἦχος <sup>λ</sup>δ̣ Βϛ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικὸν Μηνολόγιον  
2007 σ.220/667\*

α <sup>λ</sup>νοι ξω το στο ο μα α μου ου και <sup>σ</sup>πλη ρω θη

η σε ε ται Πνευ μα α το ος <sup>6</sup><sub>λ</sub> και λο ο γο ον ε ε ρε



ευ ξο ο μαι αι τη η βα α σι λι ι δι Μη η τρι ι

ι και ο φθη σο ο μαι αι φαι δρω ω ω ως

πα αν η η γυ υ ρι ζωων και α σω ω γη η θο ο

με ε ε νος τα α α αυ τη ης τη ην συλ λη η ψι ιν

\* και α α α α σω γη η θο με ε νος...

τους σου ου ουους υ μνο ο λο ο γουους Θε ε ο ο

το ο ο ο κε ως ζω ω ωωσα α και αι α α α

φθο νος πη η γη θι α α σο ον συ υγ κρο τη η σα αν

τας πνε ευ μα τι ι κον στε ρε ε ε ω ω ω ω σον

καν τη σε πτη συ υλ λη η ψει ει σου α' χορός στε φα

α α α α α α α νω ων δο ο ο ο ξη ης α

α ξι ω ω σο ον

\*  
αλλη γραμμή α' χορός  
στε φα α νω ων δο ο ο ξη ης α α ξι

ω ω σο ον

ῶδὴ δ'

Ο κα θη με νο ος εν δο ο ο ξη ε πι θρο ο ο

νου ου θε ο τη η το ος εν νε φε ε λη κου

ου ου φη η ηλθεν Ι η σου ου ους ο ο υ περ

θε ε ο ος τη α κη ρα τω πα α λα μη η και αι

δι ι ε ε ε σω ω ω ω σε ε τους κραυ γα α

α α α α ζο ο ο ον τας δο ο ξα τη δυ να α α α

μοι σου Κυριε εε 6λ

άλλη γραφή

\*πα αλαμηη και δι ε ε σωω ωω σε ε π9

ωδηε'

εξ εστη η τα συ υμ πα αν τα α π9 εν τη

σε πτη η συλ λη η ψει ει σου σου υ υ γα α α

α αρ α πει ει ρο γα α με Παρ θε ε ε νε ε 6λ ε σχες

εν μη η η η η τρα τον ε πι ι ι πα α α αν

τω ων Θε ε ε ον και αι τε ε ε το ο ο ο

κας α α χρο ο νο ον Υι υι ο ο ο ον πα α σι

ι τοι οις υ μνου σι ι σε ε ε ε την ει ει ρη η η η νη

ην βρα βε ευ ο ον τα α 6λ

ἄλλη γραμμὴ

ον και αι τε το ο κας α α χρο ο νον Υι υι

ον πα α σι ι τοι οις...

ῶδής'

ε βο ο ο η η η η σε ε ε ε προ τυ υ

πω ων την τα φη ηην τη ην τρι η με ε ρο ον ο

προ φη η η η η της Ι ω να α α ας εν

τω κη η η τει ει δε ο ο με ε νο ος εκ φθο

ρα α α ας με ε ρυ υ υ σαι Ι η σου ουβα

σι λε ε ε ευ τω ων δυ υ να με ε ω ων

ἄλλη γραμμὴ

ε βο ο η η η η σε ε προ τυ πω ω ω

ων την τα ...

\*<sup>2</sup> 6 λ ο προ φη η η τη ης Ι ω ω νας εν τω ...

ῶδηζ'

Ο υκ ε λα α α τρε ε ε ευ σαν τη κτι ι

σει ει οι οι θε ο φρο ο νες πα ρα το ο ον κτι ι

σα α α αν τα α 6 λ αλ λα α α α πυ ρο ος α πει ει

λη ην 6 λ αν δρει ει ω ως πα α τη η σα αν τες χαι αι ρο ον

τες ε ψα αλ λο ον 6 λ υ περ υ υ υ μνη

η η η η τε ε π 9 ο των πα τε ρω ων Κυ

ρι ι ο ος και Θε ε ος ε ευ λο γη η το ο ος ει

ει 6 λ

\* Κυ ρι ι ο ο ο ος και Θε ε ος ευ λο γη η το ο

ἄλλη γραμμὴ

ος ει ει  
6  
λ

ῶδὴ η'

Α ι νου μεν ευ λο γουμεν και προσ κυ νου ου ου ου

με εν τον Κυ υ ρι ι ο ον  
6  
λ

Α α κου ε ε Κο ο ρη Πα αρ θε ε νε ε α α γνη

η ει πα α τω ω δη ο ο Γα βρι ι ηλ βου λην Υ  
6  
λ π  
9

υ ψι ι ι στου α α αρ χαι αι αν α λη η θι ι νη

ην γε νου προς υ υ πο δο ο χην ε ται οι οι οι οι

μη η Θε ε ε ου δι α σου ου γα αρ ο ο α

χω ρη η το ος βρο ται οις α να α στρα φη η η σε

ε ε ε ται δι ο και αι χαι αι ρω ων βο ω ω  
π  
9 \*

ω ε ευ λο γει ει ει ει ει τε πα αντα τα α ε ε

ερ γα α Κυ ρι ι ουου το ον Κυ υ ρι ι ο ο ο

ο ον

δι ο ο και χαι αι αι αι ρω ων βο ο

ο ω ευ λο γει ει τε πα αντα τα α ε ε ερ

γα Κυ ρι ι ου τον Κυ υ ρι ι ο ο ο ο ον

### Θ' ἡμέρη τῆς ἑορτῆς

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

ἦχος δ'

Εὐαγγελίζου γῆ χαρὰν μεγάλην, αἰνεῖτε οὐρανοὶ Θεοῦ τὴν δόξαν.

«Ὡς ἐμφύχῳ Θεοῦ κιβωτῶ, ψαυέτω μηδαμῶς χεὶρ ἀμυήτων. Χεὶλή δὲ πιστῶν τῇ Θεοτόκῳ ἀσιγήτως· φωνὴν τοῦ ἀγγέλου ἀναμέλποντα, ἐν ἀγαλλιάσει βοάτω· χαῖρε κεχαριτωμένη ὁ Κύριος μετὰ σοῦ».

Εὐαγγελίζου γῆ χαρὰν μεγάλην, αἰνεῖτε οὐρανοὶ Θεοῦ τὴν δόξαν.

Ἦπερ ἔννοιαν συλλαβοῦσα Θεόν, τῆς φύσεως θεσμούς ἔλαθες κόρη. Σὺ γὰρ ἐν τῷ τίκτειν τὰ μητέρων διέδρας. Ῥευστὴ φύσις περ καθεστηκυῖα· ὅθεν ἐπαζίως ἀκούεις· χαῖρε κεχαριτωμένη, ὁ Κύριος μετὰ σοῦ.

Εὐαγγελίζου γῆ χαρὰν μεγάλην, αἰνεῖτε οὐρανοὶ Θεοῦ τὴν δόξαν.

Πῶς πηγάζεις γάλα Παρθένε ἀγνή; Οὐ φέρει ἕξειπειν γλῶσσα βροτεία· ξένον γὰρ φύσεως ἐπιδείκνυσαι πρᾶγμα. Νομίμου γονῆς ὄρους ὑπερβαῖνον· ὅθεν ἐπαξίως ἀκούεις· Χαῖρε κεχαριτωμένη, ὁ Κύριος μετὰ σοῦ.

Εὐαγγελίζου γῆ χαρὰν μεγάλην, αἰνεῖτε οὐρανοὶ Θεοῦ τὴν δόξαν.

Μυστικῶς ταῖς ἱεροτεύκτοις γραφαῖς, λαλεῖται περὶ σοῦ, Μῆτερ Ὑψίστου. Κλίμακα γὰρ πάλαι Ἰακώβ σε προτυποῦσαν· ἰδὼν ἔφη· βάσις Θεοῦ αὕτη· ὅθεν ἐπαξίως ἀκούεις· Χαῖρε κεχαριτωμένη, ὁ Κύριος μετὰ σοῦ.

Δόξα Πατρὶ καὶ Υἱῷ καὶ ἀγίῳ Πνεύματι.

Εὐαγγελίζου γῆ χαρὰν μεγάλην, αἰνεῖτε οὐρανοὶ Θεοῦ τὴν δόξαν.

Θαυμαστὸν τῷ ἱεροφάντῃ Μωσεῖ· ἡ βᾶτος καὶ τὸ πῦρ ἔδειξε τέρας. Ζητῶν δὲ τὸ πέρας εἰς διάβασιν χρόνου. Ἐν κόρῃ ἀγνή, ἔφη, κατοπτέυσω· ἧ ὡς Θεοτόκῳ λεχθείη· Χαῖρε κεχαριτωμένη, ὁ Κύριος μετὰ σοῦ.

Καὶ νῦν καὶ ἀεὶ καὶ εἰς τοὺς αἰῶνας τῶν αἰώνων, ἀμήν.

Εὐαγγελίζου γῆ χαρὰν μεγάλην, αἰνεῖτε οὐρανοὶ Θεοῦ τὴν δόξαν.

Δανιὴλ σε ὄρος καλεῖ νοητόν· γεννήτριαν Θεοῦ ὁ Ἑσαίας· βλέπει δὲ ὡς πόκον Γεδεών, ὁ Δαυτὶδ δέ, αγίασμα φάσκει, πύλην δὲ σε ἄλλος· ὁ δὲ Γαβριὴλ σοι κραυγάζει· χαῖρε κεχαριτωμένη· ὁ Κύριος μετὰ σοῦ.

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

## Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

ψδδθ'

Ἦχος δ' ᾠδ' Ββ

Πρωτ. Κων. Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.225/672#

Εὐ α γ γε λι ι ζου ου γη χα ραν με γα α

λην αι νει ει τε ε ου ρα νοι Θε ουτην δο ο ξαν

Ω ς εμ ψυ χω Θε ου κι βω τω ψαυ ε



τῶ μη δα μως χει εἰρ α μυ η των χει λη δε πι

στων τη Θε ο το κω α σι γη τως φω νη ην του

αγ γε λου α να μελ πον τα εν α γαλ λι α

σει βο α τω χαι ρε Κε χα ρι τω με νη ο Κυ ρι

ος μετα σου

Ε υ αγ γε λι ι ζου ου γη χα ραν με γα α

λην αι νει ει τε ε ου ρα νοι Θε ου την δο ο ξαν

Υ περ εν νοι αν συλ λα βου σα Θε ον της

φυ σε ως θε σμους ε ε λαθες Κο ρη συ γαρ εν τω

τι κτειν τα μη τε ε ρων δι ε ε δρας ρευ στη η φυ

σις περ καθ ε στη κυι α ο θεν ε πα ξι ως α

κου εις χαι ρε Κε χα ρι τω με νη ο Κυ ρι ος μετα

σου

Ε υ αγ γε λι ι ζου ου γη χα ραν με γα α

λην αι νει ει τε ε ου ρα νοι Θε ου την δο ο ξαν

Π ως πη γα ζεις γα λα Παρ θε ε νε α γνη ου

φε ρει εξ ει πειν γλω σσα βρο τει α ξε νον γαρ φυ σε

ως ε πι δει ει κνυ σαι πρα α γμα νο μι

μου γο νης ο ρους υ περ βαι νον ο θεν ε πα

ξι ως α κου εις χαι ρε Κε χα ρι τω με νη ο Κυ ρι ος

μετα σου <sup>6</sup> <sup>λ</sup>

Ευαγγελιιζου ουγη χαραν μεγαα

λην <sup>Δ</sup> <sup>λ</sup> αι νει ει τε ε ου ραι νοι Θεουτην δο οξαν <sup>6</sup> <sup>λ</sup>

Μυστικωσαις ιεροτευκτοις γραφαις <sup>6</sup> <sup>λ</sup>

λαλειται περ σου Μη ητερ Υψιιστου <sup>6</sup> <sup>λ</sup> κλιμα

καγαρ παλαι Ιακωβ σε προ τυ που ουσαν ι

δων εφη <sup>Δ</sup> <sup>λ</sup> βασις Θεου ουαυτη <sup>6</sup> <sup>λ</sup> οθεν επα

ξιως ακουεις <sup>π</sup> <sup>9</sup> χαιρε Κεχαριτω μενη ο Κυριος

μετα σου <sup>6</sup> <sup>λ</sup>

Δοοξα Πατρι και Υιω και αγιω Πνευματι <sup>6</sup> <sup>λ</sup>

Ε υ αγ γε λι ι ζου ου γη χα ραν με γα α

λην <sup>Δ</sup>αι νει ει τε ε ου ρα νοι Θε ου την δο ο ξαν <sup>6</sup> <sup>λ</sup>

Θ αυ μα στον τω ι ε ρο φαν τη Μω σει <sup>6</sup> <sup>λ</sup> η

βα τος και το πυρ ε ε δει ξε τε ρας <sup>6</sup> <sup>λ</sup> ζη των δε το

πε ρας εις δι α α βα σιν χρο ο νου <sup>Δ</sup> εν Κο

ρη α γνη ε φη κα το πτευ σω <sup>6</sup> <sup>λ</sup> η ως Θε ο το

κω λε χθει η <sup>π</sup> <sup>9</sup> και ρε Κε χα ρι τω με νη ο Κυ ρι ος με τα

<sup>6</sup> <sup>λ</sup>  
σου

Κ αι νυν και α ει ει και εις τους αι ω νας των αι

<sup>6</sup> <sup>λ</sup>  
ωνων α μην

Ε υ αγ γε λι ι ζου ου γη χα ραν με γα α  
 λην αι νει ει τε ε ου ρα νοι Θε ουτην δο ο ξαν  
 Δ α νι ηλ σε ο ρος κα λει νο η τον γεν  
 νη τρι αν Θε ου ο Η σα ι ας βλε πει δε ως πο κον  
 Γε δε ων ο Δα βιδ δε α γι ι α σμα φα α  
 σκει πυ λην δε σε αλ λος ο δε Γα βρι ηλ σοι  
 κραυ γα ζει χαι ρε Κε χα ρι τω με νη ο Κυ ρι ος με τα  
 σου

### Καταβασία θ' φδῆς

ἦχος δ'

Εὐαγγελίζου γῆ χαρὰν μεγάλην, αἰνεῖτε οὐρανοὶ Θεοῦ τὴν δόξαν.

Ὡς ἐμφύχῳ Θεοῦ κιβωτῶ, ψαυέτω μηδαμῶς χεῖρ ἀμυήτων. Χείλη δὲ πιστῶν τῇ Θεοτόκῳ ἀσιγήτως· φωνὴν τοῦ ἀγγέλου ἀναμέλποντα, ἐν ἀγαλλιάσει βοάτω· Χαῖρε

Κεχαριτωμένη ὁ Κύριος μετὰ σοῦ.

Σύντομος

Ἀργή

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Πέτρου Πελοποννησίου  
Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

### Σύντομος

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

ψδθ'

Ἦχος δ' Ββ

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.297\*

Ε υ αγ γε λι ι ζου γη χα ραν με γα α λην αι νει

ει τε ε ου ρα νοι Θε ου την δο ο ξαν

Ω ς εμ ψυ χω Θε ου κι βω τω ψαυ ε ε τω

μη δα μω σ χει ρα μυ υ των χει λη δε πι στων τη

Θε ο το κω α σι γη τω σ φω νη ην του αγ γε λου

α να μελ πον τα εν α γαλ λι α σει βο α τω

χαι ρε κε χα ρι τω με νη ο Κυ ρι ος με τα σου ου <sup>6</sup>λ

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Ἦχος δὲ Ββ

Πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.225/672#

Ε υ αγ γε λι ι ζου ου γη χα ραν με γα α

λην <sup>Δ</sup>δλ αι νει ει τε ε ου ρα νοι Θε ου την δο ο ξαν <sup>6</sup>λ

Ω ς εμ ψυ χω Θε ου κι βω τω <sup>6</sup>λ ψαυ ε

τω μη δα μως χει ειρ α μυ η των <sup>6</sup>λ χει λη δε πι

στων τη Θε ο το κω α σι γη τως <sup>6</sup>λ φω νη ην του

αγ γε λου α να μελ πον τα <sup>6</sup>λ εν α γαλ λι α

σει βο α τω <sup>π</sup>π ρι χαι ρε Κε χα ρι τω με νη ο Κυ ρι

ος με τα σου ου ου ου ου <sup>6</sup> <sub>λ</sub>

Ἄρχή

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Ἦχος <sup>4</sup> δὲ Βα

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1905 σ.55#

Ε υ αγ γε λι ι ι ι ζου γη χα α ραν

με ε ε ε ε γα α α α λην <sup>6</sup> <sub>λ</sub> αι νει ει τε ου ρα α νοι

οι Θε ε ου τη ην δο ο ο ξααν <sup>6</sup> <sub>λ</sub>

Ω ς εμ ψυ υ χω Θε ε ου ου κι ι βω ω τω ω <sup>6</sup> <sub>λ</sub>

ψαυ ε ε τω μη δα α μως χει ειρ α μυ υ η η

η των <sup>6</sup> <sub>λ</sub> χει ει ει ει λη δε πι ι στων τη Θε ο ο

το κω ω α σι ι ι γη η η τωως <sup>6</sup> <sub>λ</sub> φω νη



η η ην του αγ γε ε ε λου α να μελ πο ον τα

α εν α α γα α α αλ λι α σει βο ο α τωω και ρε

Κε χα ρι τω ω με ε ε νη ο Κυ ρι ι ο ος με τα

σου ου ου ου ου

Η παρακάτω αρχική κατάληξη της καταβασίας του Ιωάννου, ταίριαζε στα θισόδια και γιαυτό πήρα την κατάληξη από την αρχή του Πέτρου και την πρόσθεσα στην καταβασία του Ιωάννου.

\* ον τως α νω τε ε ρα πα α αν των υ υ πα αρ

χεις Παρ θε ε νε ε Α α γνη η η η η

### Πέτρου Πελοποννησίου

Ἦχος Βα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.227/674\*

ε υ αγ γε λι ι ζου ου γη χα ρα αν με ε ε

γα α α α α λην αι νει ει τε ου ρα α νοι οι Θε ε ε

ου ου την δο ο ο ξααν

ω ς εμ ψυ υ χω Θεε ου ου κι ι βω ω τω ω

ψαυ ε ε τω μη δα α μως χει ειρ α μυ υ η η

η των χει ει ει λη δε πι ι στων τη Θε ο ο

το κω ω α σι ι ι γη η η τωω φω νη

η η ην του αγ γε ε ε λου α να μελ πο ον τα

α εν α γαλ λι α σει βο ο α τωω χαι ρε Κε χα

ρι τω ω με ε ε νη ο Κυ ρι ι ο ος με τα σου ου

ου ου ου

# Τῷ Σαββάτῳ πρὸ τῶν Βαΐων

Τοῦ Λαζάρου

ἤχος πλ.δ'

α Ὑγρὰν διοδεύσας ὡσεὶ ξηράν, καὶ τὴν αἰγυπτίαν, μοχθηρίαν διαφυγών, ὁ Ἰσραηλίτης ἀνεβόα· τῷ λυτρωτῇ καὶ Θεῷ ἡμῶν ἄσωμεν.

γ Οὐρανίας ἀψίδος, ὄροφουργὲ Κύριε, καὶ τῆς Ἐκκλησίας δομητορ, σὺ μὲ στερέωσον, ἐν τῇ ἀγάπῃ τῇ σῆ, τῶν ἐφετῶν ἢ ἀκρότης, τῶν πιστῶν τὸ στήριγμα, μόνε φιλάνθρωπε.

δ Σὺ μου ἰσχύς, Κύριε, σὺ μου καὶ δύναιμις, σὺ Θεός μου, σὺ μου ἀγαλλίαμα, ὁ πατρικὸς κόλπος μὴ λιπών, καὶ τὴν ἡμετέραν, πτωχεῖαν ἐπισκεψάμενος· διὸ σὺν τῷ προφήτῃ, Ἀββακούμ σοι κραυγάζω· τῇ δυνάμει σου δόξα φιλάνθρωπε.

ε Ἴνα τί με ἀπώσω, ἀπὸ τοῦ προσώπου σου, τὸ φῶς τὸ ἄδυτον, καὶ ἐκάλυψέ με, τὸ ἀλλότριον σκότος τὸν δαίλιον· ἀλλ' ἐπίστρεψόν με, καὶ πρὸς τὸ φῶς τῶν ἐντολῶν σου, τὰς ὁδοὺς μου κατεύθυνον δέομαι.

ς Ἰλάσθητί μοι Σωτήρ· πολλαὶ γὰρ αἱ ἀνομίαι μου, καὶ ἐκ βυθοῦ τῶν κακῶν, ἀνάγαγε δέομαι· πρὸς σὲ γὰρ ἐβόησα, καὶ ἐπάκουσόν μου, ὁ Θεὸς τῆς σωτηρίας μου.

ζ Οἱ ἐκ τῆς Ἰουδαίας, καταντήσαντες παῖδες ἐν Βαβυλῶνί ποτε, τῇ πίστει τῆς Τριάδος, τὴν φλόγα τῆς καμίνου, κατεπάτησαν ψάλλοντες· ὁ τῶν πατέρων ἡμῶν, Θεὸς εὐλογητὸς εἶ.

Αἰνοῦμεν, εὐλογοῦμεν, καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον

η Τὸν βασιλέα τῶν οὐρανῶν, ὃν ὑμνοῦσι, στρατιαὶ τῶν ἀγγέλων, ὑμνεῖτε, καὶ ὑπερυψοῦτε, εἰς πάντας τοὺς αἰῶνας.

Σύντομοι

Ἄργαι

## Σύντομοι

ὠδὴ α'

Ἦχος λ π δι —

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.468#

**Υ**γραν δι ο δευ σας ω σει ξη ραν και την αι γυ

πτι ανμο χθη ρι αν δι α φυ γων **δλ** ο Ισ ρα η λι της

α νε βο ο α τω Λυ τρω τη και Θε ω η μων α σω

μεν **δλ** ῥδὴ γ'

**Ο**υ ρα νι ας α ψι δος ο ρο φουρ γε ε Κυ ρι ε και

της Εκ κλη σι ας δο μη τωρ συ με στε ρε ω σον εν

τη α γα α πη τη ση **δλ** των ε φε των η ακ κρο της

των πι στων το στη ρι γμα *ἀχρός* μο νε φι λαν θρω πε **δλ**

ῥδὴ δ'

**Σ**υ μου ι σχυς Κυ ρι ε συ μου και δυ να μις **δλ** συ

Θε ο ος μου συ μου αγαλ λι α μα ο πα τρι κους

κολ πους μη λι πων και την η με τε ε ραν πτω χει αν

ε πι σκε φα με νος δι ο συν τω προ φη τη Αβ βα

κουμ σοι κραυ γα ζω τη δυ να μει σου δο ξα φι λαν

θρω πε

ᾠδὴ ε'

να τι με α πω σω α πο του προ σω που σου

το φως το α δυ τον και ε κα λυ ψε με το αλ λο τρι ον

σκο τος τον δει λαι ον αλλ ε πι στρε ψον με και προς

το φω ως των εν το λων σου τας ο δους μου κα τευ

θυνον δε ο μαι

ᾠδὴ ε'

Ἰ λα σθη τι μοι Σω τηρ πολ λαι γαρ αι α νο μι αι

μου ου και εκ βυ θου των κα κων α να γα γε δε ο μαι

προς σε γαρ ε βο η σα και ε πα κου σο ον μου ο Θε ος

της σω τη ρι ας μου ᾠδὴ ζ'

Ο ι εκ της Ι ου δαι ας κα ταν τη σαν τες παι δες

εν Βα βυ λω ω νι πο τε τη πι στει της Τρι α α δος

την φλο γα της κα μι νου κα τε πα α τη σαν ψα λ λον τες

ο των πα τε ρων η μων Θε ος ευ λο γη τος ει ᾠδὴ η'

Δ ι νου ου μεν ευ λο γου μεν και προ σκυ νου μεν τον

Κυ ρι ον

Τον βασιλεεα των ουρανων ο υμνου ουσι  
στρατιαι των αγγελων υμνειτε και υπερουψου  
τεεις παντας του ουρανω ναααας

### Άγαι

ὑπὸ Γρηγορίου πρωτοψάλτου  
συντηθεῖσαι καὶ διασκευασθεῖσαι

ᾠδὴ α'

Ἦχος λ π δὲ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Τριῶδιον Α'  
2003 σ.237\*

Υγραν δι ο δε ε ευ σας ω σει ει ξη η ραν  
και την αι γυπτι ι ι ι ι α αν μο χθη ρι ι ι  
αν δι α α φυ υ γων ο Ισ ρα η λι ι της  
α νε ε βο ο ο α τω λυ τρω τη και αι Θε  
ω ω ω ω ημων α α σω ω μεν

ᾠδὴ γ'

Ο υ ρα νι ας α ψι ι ι ι ι δος ο ρο φουρ

γε ε Κυ υ ρι ι ε και της Εκ κλη σι ι α

α α ας δο ο μη η η τωρ σου υ υ με στε ρε

ε ω ω σον εν τη α γα α πη η τη η ση των ε

φε των η α κρο ο ο ο ο της των πι στω ων

το ο ο στη η ρι ι ι γμα μο ο ο νε φι

λα αν θρω ω πε

Σ υ μου ι ι σχυς Κυ ρι ι ε σου υ μου και

δυ υ να α μις σου Θε ο ο ο ος μου σου μου α γαλ

λι ι α α μα ο πα τρι κους κο ο λπου ους μη λι ι



πων και την η με τε ε ε ε ε ε ρα αν πτω

ω χει ει ει αν ε πι σκε ψα με ε νος δι ο συν τω

προ φη η τη η η Αβ βα ακουμ σοι κρα αυ γα α α ζω

τη δυ να μει ει σου δο ο ο ο ξα φι λα αν θρω ω

πε

ᾠδὴ ε'

να τι με α πω ω ω σω α πο του προσ ω που σου

το ο φω ως το α α δυ υ υ τον και ε κα α

λυ ψε ε ε ε με το αλ λο τρι ον σχο ο ο τος τον

δει ει λαι αι ον αλλ ε πι ι στρε ψο ο ο ο ο ν

με και προς το φω ω ω ω ως των ε εν το λων σου

τας ο δους μου ου κα τε ε ε ευ θυ νον δε ε ο ο

μαι

ῶδῆς'

λα σθη τι ι μοι Σω ω τηρ πολ λαι γαρ αι α α

νο ο μι ι αι αι μου και εκ βυ θου των κα α α

κων α να α α γα γε δε ο μαι αι προς σε γαρ

ε ε βο ο η η σα και ε πα κου σο ο ο ο

ο ον μου ο Θε ος της σω τη ρι ι α ας μου

Ο ι εκ της Ι ου δαι ας κα ταν τη σαν τες παι αι

δες εν Βα βυ λω ω νι ι πο ο τε τη πι στει της

Τρι ι α α α δος την φλο ο ο ο ο γα της κα α

μι ι ι ι νου κα τε πα α τη σαν ψα αλ λο ον

τες ο των πα τε ε ε ε ρων η η μων Θε ε

ος ευ λο γη το ο ος ει ει ᾠδὴ γ'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου ου ου με εν

τον Κυ υ ρι ο ον

Τ ον βα σι λε ε ε ε α των ου ρα α α νω

ων ο ον υ υ υ μνου ου ου ου ου σι στρα τι αι

των α αγ γε ε ε λω ων υ μνει ει ει τε και υ

περ υ ψου ου ου ου τε εις παν τας του ου ους αι ω

ω ω να α α ας

## Θ' ᾠδὴ τῆς ἑορτῆς

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

Κανὼν α'

ἦχος πλ.δ'

«Τὴν ἀγνὴν ἐνδόξως τιμήσωμεν, λαοὶ Θεοτόκον, τὴν τὸ θεῖον πῦρ ἐν γαστρὶ, ἀφλέκτως συλλαβοῦσαν, ὕμνοις ἀσιγήτοις μεγαλύνωμεν».

Δόξα σοι ὁ Θεὸς ἡμῶν, δόξα σοι.

Οἱ λαοὶ ἰδόντες βαδίζοντα, νεκρὸν τεταρταῖον, ἐκπλαγέντες τῷ θαύματι, ἀνεβόων τῷ Λυτρωτῇ, Θεόν σε ἐν ὕμνοις μεγαλύνομεν.

Δόξα σοι ὁ Θεὸς ἡμῶν, δόξα σοι.

Προπιστῶν τὴν ἐνδοξον ἔγερσιν, τὴν σὴν ὦ Σωτῆρ μου, νεκρὸν τετραήμερον, ἐκ τοῦ Ἄδου ἐλευθεροῖς, τὸν Λάζαρον, ἐν ὕμνοις μεγαλύνω σε.

Κανὼν β'

ἦχος πλ.δ'

Κυρίως Θεοτόκον

Δόξα σοι ὁ Θεὸς ἡμῶν, δόξα σοι.

Τιμῶν σου τὸν Πατέρα, καὶ ἀποδεικνύων, ὡς οὐκ ἀντίθεος ἦσθα, προσεύχη Χριστέ, αὐτεξουσίως ἐγείρας τὸν τετραήμερον.

Δόξα σοι ὁ Θεὸς ἡμῶν, δόξα σοι.

Ἐκ τάφου τεταρταῖον, Λάζαρον ἐγείρας, τῆς τριημέρου Χριστέ μου Ἐγέρσεως, παναληθέστατον πᾶσι, δεικνύεις μάρτυρα.

Δόξα Πατρὶ καὶ Υἱῷ καὶ ἀγίῳ Πνεύματι.

Βαδίζεις καὶ δακρύεις, φθέγγη τε Σωτῆρ μου. Τὴν ἀνθρωπίνην δεικνύς σου ἐνέργειαν, τὴν θεϊκὴν δὲ μνηύων, ἐγείρεις Λάζαρον.

Καὶ νῦν καὶ αἰεὶ καὶ εἰς τοὺς αἰῶνας τῶν αἰώνων. Ἀμήν.

Ἐνήργησας ἀφράστως, Δέσποτα Σωτῆρ μου, καθ' ἑκατέρων τῶν δύο σου φύσεων, αὐτεξουσίῳ θελήσει, τὴν σωτηρίαν μου.

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

ᾠδὴ θ', κανὼν α'

Ἦχος λ π ς Νη

Την α γνην εν δο ξως τι μη σω μεν <sup>ν</sup>λα οι οι Θε

ο το κον <sup>Δ</sup>την το πυ υρ της θε ο τητος <sup>Δ</sup>δε ξα με

νην εν τη γαστρι α φλε κτως <sup>Δ</sup>εν υ μνοις μεγα λυ υ νο

ον τες <sup>ν</sup>(β')

Δ ο ξα σοι ο Θε ο ο ος η μων δοξα σοι <sup>ν</sup>

Ο ι λα οι ι δον τες βα δι ζοντα νε κρο ον τε ταρ

ται ον <sup>Δ</sup>εκ πλα γε εν τες τω θαυ μα τι <sup>Δ</sup>α νε βο ων τω

λυ τρω τη <sup>Δ</sup>Θε ον σε εν υ μνοις μεγα λυ υ νο ο

μεν <sup>ν</sup>

Δ ο ξα σοι ο Θε ο ο ος η μων δοξα σοι <sup>ν</sup>

**Π**ρο πιστων την εν δοξον εγερσιν την ση ην ω  
 Σωτηρ μου νεκρον τετρα ημερον εκ του αδου ελευ  
 θε ροις τον Λαζαρον εν υμνοις μεγαλυ νωω σε

ὑδὴ θ', κανὼν β'

Κυρίως Θεοτόκον

Ἦχος λ̣ ρ̣ δ̣ι̣

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
 Μουσικόν Τριώδιον  
 2003 σ.240#

**Δ**οξα σοι ο Θεος ημων δοξα σοι  
**Τ**ιμων σου τον Πατερα και αποδεικνυ  
 ων ως ουκ αν τι θεος ησθα προσευχη Χριστε  
 αυτε ζουσι ως εγειρας τον τετρα ημερον  
**Δ**οξα σοι ο Θεος ημων δοξα σοι

Ε ξ α φ ο υ τ ε τ α ρ τ α ι ο ν Δ α ζ α ρ ο ν ε γ ε ι ε ι

ρ α ς τ η ς τ ρ ι η μ ε ρ ο υ Χ ρ ι σ τ ε μ ο υ ε γ ε ρ σ ε ω ς

π α ν α λ η θ ε σ τ α τ ο ν π α σ ι δ ε ι κ ν υ ε ι ς μ α ρ τ υ ρ α

Δ ο ξ α Π α τ ρ ι κ α ι Υ ι ω κ α ι α γ ι ω Π ν ε υ μ α

τι

Β α δ ι ι ζ ε ι ς κ α ι δ α κ ρ υ ε ι ς φ θ ε γ γ η τ ε Σ ω τ η η ρ

μ ο υ τ η ν α ν θ ρ ω π ι ν η ν δ ε ι κ ν υ ς σ ο υ ε ν ε ρ γ ε ι α ν

τ η ν θ ε ι κ η ν δ ε μ η ν υ ω ν ε γ ε ι ρ ε ι ς Δ α ζ α ρ ο ν

Κ α ι ν υ ν κ α ι α ε ι κ α ι ε ι ς τ ο υ ς α ι ω ν α ς τ ω ν α ι ω ν ω ν

α μ η ν

εν η ηργη σας α φραστας Δε σπο τα Σω τη  
 ηρ μου καθ ε κα τε ραντων δυ ο σου φυ σε ων  
 αυ τε ξου σι ω θε λη σει την σω τη ρι αν μου

### Καταβασία θ' φδής

ἦχος πλ.δ'

Κυρίως Θεοτόκον, σὲ ὁμολογοῦμεν, οἱ διὰ σοῦ σεσωσμένοι Παρθένε ἀγνή, σὺν ἁσωματοῖς Χορείαις, σὲ μεγαλύνοντες.

Σύντομος

Ἀργὴ Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Ἀργὴ Πέτρου Πελοποννησίου

### Σύντομος

φδὴ θ'

ἦχος λ π δὴ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Τριώδιον  
2003 σ.241#

Κυ ρι ι ως Θε ο το κον σε ο μο λο γου ου  
 μεν οι δι α σου σε σω σμε νοι Παρ θε ε νε α  
 γνη συν α σω μα τοις χο ρει αις σε με γα λυ



ν ο υ ν    τ ε ε ε    ε ς    η

### Ἀρχὴ Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

ῥοδὴ θ'

Ἦχος λ π δὲ

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρημολόγιον 1903 σ.95#

**Κ** υ ρ ι ι ι ι ω ς Θ ε ε ο τ ο κ ο ν σε ε

ο ο μ ο λ ο γ ο υ ο υ ο υ μ ε ν ο ι δ ι α σ ο υ σ ε σ ω ω

σ μ ε ν ο ι Π α ρ θ ε ε ν ε ε α α γ ν η σ υ ν α σ ω μ α

τ ο ι ς χ ο ρ ε ι α ι ς σ ε ε ε μ ε γ α λ υ υ ν ο ο ο μ ε ε ε ε ν

### Ἀρχὴ Πέτρου Πελοποννησίου

ῥοδὴ θ'

Ἦχος λ π δὲ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Τριώδιον Α'  
2003 σ.241\*

**Κ** υ ρ ι ι ι ι ω ς Θ ε ε ο τ ο κ ο ν σε ο μ ο

λ ο γ ο υ ο υ ο υ μ ε ν ο ι δ ι α σ ο υ σ ε σ ω ω σ μ ε ε ε ν ο ι

Παρ θε ε νε ε α α γνη συν α σω μα τοι ο ις χο ο

ρει ει ει αις σε ε ε ε μεγα λυ υ νο ον

τε ε ε ες

# Τῶν Βαΐων

ἦχος δ'

- α Ὁφθησαν, αἱ πηγαὶ τῆς ἀβύσσου, νοτίδος ἄμοιροι, καὶ ἀνεκαλύφθη θαλάσσης, κυμαινούσης τὰ θεμέλια, τῇ καταγιγίδι νεύματι· ταύτης γὰρ ἐπετίμησας, περιούσιον λαὸν δὲ ἔσωσας, ἄδοντα, ἐπινίκιον ὕμνον σοι Κύριε.
- γ Νάουσαν ἀκρότομον, προστάγματι σῶ, στερεὰν ἐθήλασε πέτραν, Ἰσραηλίτης λαός, ἡ δὲ πέτρα σὺ Χριστέ, ὑπάρχεις καὶ ζωὴ, ἐν ἧ ἔστερεώθη ἡ Ἐκκλησία κράζουσα· Ὡσαννά, εὐλογημένος εἶ ὁ ἐρχόμενος.
- δ Χριστὸς ὁ ἐρχόμενος ἐμφανῶς Θεὸς ἡμῶν, ἦξει καὶ οὐ χρονιεῖ, ἐξ ὄρους κατασκίου δασέος, κόρης τικτούσης ἀπειράνδρου, προφήτης πάλαι φησί. Διὸ πάντες βοῶμεν Δόξα τῇ δυνάμει σου Κύριε.
- ε Τὴν Σιών ἐπ' ὄρους ἀνάβηθι, ὁ εὐαγγελιζόμενος, καὶ τὴν Ἱερουσαλήμ, ὁ κηρύσσων ἐν ἰσχυί ὕψωσον φωνήν. Δεδοξασμένα ἐλαλήθη περὶ σοῦ, ἡ πόλις τοῦ Θεοῦ, εἰρήνην ἐπὶ τὸν Ἰσραήλ, καὶ σωτήριον ἔθνεσιν.
- ς Ἐβόησαν, ἐν εὐφροσύνῃ δικαίων τὰ πνεύματα, νῦν τῷ κόσμῳ, διαθήκη καινὴ διατίθεται, καὶ ῥαντίσματι, καινουργείσθω λαὸς θεοῦ αἵματος.
- ζ Ὁ διασώσας ἐν πυρὶ, τοὺς Ἀβραμιαίους σου παῖδας, καὶ τοὺς Χαλδαίους ἀνελών, οἷς ἀδίκως δικαίους ἐνήδρευσαν, ὑπερύμνητε Κύριε, ὁ Θεὸς ὁ τῶν πατέρων, εὐλογητὸς εἶ.

Αἰνοῦμεν, εὐλογοῦμεν, καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον

- η Εὐφράνθητι Ἱερουσαλήμ, πανηγυρίσατε οἱ ἀγαπῶντες Σιών· ὁ βασιλεύων γὰρ εἰς τοὺς αἰῶνας, Κύριος τῶν δυνάμεων ἦλθεν, εὐλαβείσθω πᾶσα ἡ γῆ, ἐκ προσώπου αὐτοῦ, καὶ βοάτω· Πάντα τὰ ἔργα ὑμνεῖτε τὸν Κύριον.

Σύντομοι

Ἄργαί

## Σύντομοι

ῶδη α'

ἦχος δ'  Ββ

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.336#

  
 ω φθη η σαν αι πη γαι της α βυ υ υσ σου νο

τι ἰδος αμοιροι και ανεκαλυφθηθαλα

ασσης κυμαινουσης ταθεμελιατηκα

ται γιδινευμαατι τααυτης γαρ επετιμη

σας περιουσιονλαον δε εεσωσας ααδοντα

επι νικιον υμνονσοι Κυριε ᾠδὴ γ'

**N**αουσαν ακροτομον προσταγματισωστε

ρεανεθηλασεπετραν Ισραηλιτηςλα

ος ηηδεπετρασυ Χριστευπαρχεις και ζωηεν

ηεστερεωωθηη Εκκλησιαακραζουσα

α' χορός ωσαννα ευλογημενος ει οερχομενος

**Χ** ρι στο ος ο ερ χο με νος εμ φα νως Θε ος η

μων η ξει και ου ου χρο νι ει εξ ο ο ρους κα τα

σκι ι ου δα σε ε ος <sup>6</sup> <sub>λ</sub> κο ρησ τι κτου σης α πει ραν

δρου προ φη της πα α λαι φη σι δι ο παν τες βο

ω ω μεν δο ξατηδυ να α μεισου Κυ ρι ε <sup>6</sup> <sub>λ</sub> ὠδὴ ε'

**Τ** ην Σι ων επ ο ο ρους α να βη θι ο ευ αγ

γε λι ζο μενος <sup>6</sup> <sub>λ</sub> και την Ι ε ρου σα λημ ο κη

ρυσ σων <sup>π</sup> <sub>9</sub> εν ι σχυ ι ι υ ψω σον φω νην <sup>6</sup> <sub>λ</sub> δε δο ξα

σμε να ε λα λη η θη <sup>Α</sup> <sub>Δ</sub> πε ρι σου η πο λις του Θε

ου <sup>6</sup> <sub>λ</sub> ει ρη η νη ε πι τον Ισ ρα ηλ και σω τη η ρι ον

ε θνεσιν <sup>6</sup>λ

ῥδῆς'

Ε βο ο η ησαν εν ευ φρο συ νη δι και αι αι ων

τα πνευ ματα <sup>6</sup>λ νυν τω κο ο ο σμω <sup>π</sup>9 δι α θη κη και

νη η η δι α τι θε ται και ραν τι ι σμα τι και

νουρ γει σθω λα ος θει ου αι ματος <sup>6</sup>λ

ῥδῆζ'

Ο δι ι α σω σας εν πυ ρι <sup>6</sup>λ τους Α βρα μι αι

ους σου παι δας <sup>π</sup>9 και του ουσ Χαλ δαι ους α νε λων <sup>6</sup>λ οισ α

δι κως δι και αι αι ους εν η δρευ σαν <sup>6</sup>λ υ περ υ

μνη τε Κυ ρι ε <sup>Δ</sup>ο Θε ος ο των πα τε ρων ευ

λο γη τος ει <sup>6</sup>λ

ῥδῆη'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προ σκυ νου ου μεν τον

Κυ ρι ον <sup>6</sup>λ

Ε υ φρα ανθη τι Ι ε ρου σα λημ πα νη γυ ρι σα

τε παν τες οι α γα πων τες Σι ων <sup>6</sup>λ ο βα σι λευ ων

γα ρεις τους αι ω ω νας Κυ ρι ος των δυνα α με ων η

ηλ θεν <sup>6</sup>λ ευ λα βει σθω πα α σα η γη εκ προ σω

που αυ του ου και βο α α τω παν τα τα ερ γα υ μνει ει τε

τον Κυ ρι ο ο ο ο ον <sup>6</sup>λ

Ἄγαι

Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου

ὠδὴ α'

Ἦχος δὲ Ββ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Τριῶδιον Α'  
2003 σ.270\*

**Ω** ω φθη η η η σα α α αν αι πη γαι αι τη ης

α α βυ υ υσ σου ου νο τι δος α μοι οι ροι και α

νε κα λυ φθη θα α λασ ση ης κυ μαι νου ου σης τα

θε με ε λι ι α α τη κα ται γι ι δι νε ε

ευ μα α α τι τα αυτης γα ααρ ε ε πε τι μη

η σα ας πε ρι ου ου σι ο ον λα α ο ον δε ε

σω ω σα ας α α δο ο ο ον τα α α α ε πι

νι ι κι ι ον υ υ υ υ μνο ον σοι Κυ ρι ι ε ε

ᾠδὴ γ'

**N** α ου σαν α κρο ο το μον προ σ τα α γμα α τι

ι σω ω στε ρε αν ε θη λα σε ε πε τρα αν Ισ ρα



η η λι ι τη ης λα α ος η η δε ε πε ε τρα α συ

Χρι ι στε υ πα α αρ χει εις και αι αι ζω ω ω ω

η η εν η η ε ε στε ρε ω ω ω θη

η η Ε εκ κλη η σι ι α κρα ζου ου σα α

ω σαν να α ευ λο γη η με ε νος ει ει ει ο ε

ερ χο με ε νο ος

Χ ρι στο ος ο ε ερ χο με ε νος ε εμ φα α νω ως

Θε ος η η μω ων η η ξει και αι ου χρο νι

ι ει εξ ο ρου ους κα τα σκι ι ι ου ου ου

δα σε ε ε ε ε ος Κο ο ρης τι κτου ου ου ου

ου ση ης α α πει ει ραν δρου ου <sup>π</sup> προ φη η της πα α λαι

φη η σι <sup>Δ</sup> δι ο ο παν τες βο ω ω ω με εν <sup>Δ</sup> δο ο ξα

τη δυ να α α α μει σου Κυ ρι ι ε ε <sup>6</sup> <sup>λ</sup> ὠδὴ ε'

**T** ην Σι ι ων επ ο ρους α να βη η θι ο ε ευ α

αγ γε ε λι ζο με ε νος <sup>6</sup> <sup>λ</sup> και την Ι ι ε ε ρου σα

λημ ο κη η ρυσ σω ων <sup>π</sup> εν ι σχυ υ υ υ υ ι ι

ι υ υ υ ψω σο ον φω ω ω νην <sup>Δ</sup> δε δο ξα

σμε ε να α ε λα α λη η η θη <sup>Δ</sup> πε ρι σου ου η

η πο ο λισ του ου Θε ε ου ου <sup>6</sup> <sup>λ</sup> ει ρη η νη ε πι ι

ι τον Ισ ρα α ηλ <sup>Δ</sup> και σω τη η η η ρι ι ο ον

ε θνε ε σι εν <sup>6</sup>λ

ῥδῆς'

Ε βο ο η η η η σα α α αν εν ευ φρο συ

υ υ υ νη δι και αι αι ω ων τα πνευ μα α τα α <sup>6</sup>λ

νυν τω ω κο ο ο ο ο σμω <sup>π9</sup> δι α θη η η η κη

και νη η η δι ι α τι θε ε ται <sup>6</sup>λ και ρα αν τι σμα α

τι και νουρ γει ει σθω λα ο ο ος θει ου ου αι μα α το

ος <sup>6</sup>λ

ῥδῆς'

Ο ο δι ι α α σω ω σα ας εν πυ υ ρι <sup>π9</sup> του

ους Α βρα μι αι ους σου ου παι δα ας <sup>π9</sup> και αι του ους Χα

αλ δαι αι ους α νε ε λων <sup>π9</sup> ος α α δι ι κως δι και αι

αι ου ους εν η δρε ευσαν <sup>6</sup> λ u περ υ μνη η τε Κυ ρι ι

ε ο Θε ος ο ο των πα α α τε ε ε ρων ε ευ

λο γη η η το ο ος ει ει <sup>6</sup> λ ᾠδὴ η'

<sup>6</sup> λ <sup>χ</sup> αι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου ου ου ου

με εν τον Κυ υ ρι ι ο ον <sup>6</sup> λ

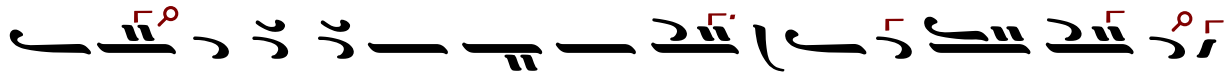
<sup>6</sup> λ <sup>χ</sup> ευ φρανθη η τι Ι ε ρου σα α λημ <sup>Δ</sup> παν η γυ


ρι σα α τε οι οι α α γα πω ωντες Σι ι ω ων <sup>6</sup> λ ο βα


σι λε ευων γα α αρ εις τους αι ω ω ω νας <sup>Δ</sup> Κυ

ρι ι ος τω ων δυ να α α με ε ω ω ων η η η

η ηλ θεν <sup>Δ</sup> ευ λα βει ει σθω πα α σα η η γη <sup>Δ</sup> εκ


  
 προσ ω ω που αυ του ου ου και αι αι βο α α


  
 α α τω πα αντα τα α ε ερ γα υ μνει ει ει τε


  
 ε τον Κυ υ ρι ι ο ο ο ο ον

### Θ' ᾠδὴ τῆς ἑορτῆς

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

ἦχος δ'

«Θεὸς Κύριος, καὶ ἐπέφανεν ἡμῖν, συστήσασθε ἑορτὴν, καὶ ἀγαλλόμενοι, δεῦτε μεγαλύνωμεν Χριστόν, μετὰ βατίων καὶ κλάδων, ὕμνοις κραυγάζοντες· Εὐλογημένος ὁ ἐρχόμενος, ἐν ὀνόματι Κυρίου, Σωτῆρος ἡμῶν». (β')

Δόξα σοι ὁ Θεὸς ἡμῶν, δόξα σοι.

Ἔθνη ἵνα τί ἐφρυάξατε; Γραφεῖς, καὶ Ἱερεῖς, τί κενὰ ἐμελετήσατε; Τίς οὗτος εἰπόντες· ὦ Παῖδες μετὰ βατίων καὶ κλάδων, ὕμνοις κραυγάζουσιν· Εὐλογημένος ὁ ἐρχόμενος, ἐν ὀνόματι Κυρίου, Σωτῆρος ἡμῶν. (β')

Δόξα Πατρὶ καὶ Υἱῷ καὶ ἀγίῳ Πνεύματι.

Οὗτος ὁ Θεός, ὃς παρόμοιος οὐδεὶς, δικαίαν πᾶσαν ὁδὸν ἐξευρών, δέδωκε τῷ ἡγαπημένῳ Ἰσραὴλ· μετὰ δὲ ταῦτα, ἀνθρώποις συνανεστράφη ὀφθεῖς· Εὐλογημένος ὁ ἐρχόμενος, ἐν ὀνόματι Κυρίου, Σωτῆρος ἡμῶν.

Καὶ νῦν καὶ ἀεὶ καὶ εἰς τοὺς αἰῶνας τῶν αἰώνων. Ἀμήν.

Σκάνδαλα τρίβου, τί ἐχόμενα ἡμῖν, τιθέατε ἀπειθεῖς; πόδες ὀξεῖς ὑμῶν, αἷμα διεκχέαι Δεσπότου, ἀλλ' ἀναστήσεται πάντων, σῶσαι τοὺς κράζοντας· Εὐλογημένος ὁ ἐρχόμενος, ἐν ὀνόματι Κυρίου, Σωτῆρος ἡμῶν.

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Θ ε ος Κυ ρι ος και αι ε πε φα νεν η μιν σου

στη σα σθε ε ορ την και α γαλ λο μενοι δε ευ τε

με γα λυ νω μεν Χρι στον με τα βα ι ων και κλα δων

υ υ μνοις κραυ γα ζοντες ευ λο γη με νος ο ερ χο

με νος εν ο νο μα τι Κυ ρι ου Σω τη ρος η μων

Δ ο ξα σοι ο Θε ος η μων δο ξασοι

Ε θνη ι να τι ε φρυ α ξα τε γρα φεις και ι ε ρεις

τι κε να ε με λε τη σα τε τις ου τος ει πον τες

ω παι δες με τα βα ι ων και κλα δων υ μνον κραυ γα

ζου σιν ευ λο γη με νος ο ερ χο με νος εν ο νο

μα τι Κυ ρι ου Σω τη ρος η μων <sup>6</sup>λ (β')

Δ ο ξα Πα τρι και Υι ω <sup>6</sup>λ και α γι ω Πνευ μα

τι <sup>6</sup>λ

Ο υ τος ο Θε ος ω ω πα ρομοι ος ου δεις <sup>6</sup>λ δι και αν

πα α σαν ο δον ε ξευρων δε δω κε τω η γα πη με νω

Ισ ρα ηλ <sup>6</sup>λ με τα δε ταυ τα αν θρω ποις συ να νε στρα φη

ο φθεις <sup>6</sup>λ ευ λο γη με νος ο ερ χο με νος εν ο

νο μα τι Κυ ρι ου Σω τη ρος η μων <sup>6</sup>λ

Κ αι νυν και α ει και εις τους αι ω νας των

αι ω νων Α μην <sup>6</sup>λ

Κ αν δα λα τρι ι βου τι ε χο με να η μιν <sup>6</sup>λ τι

θε ε α τε α πει θεις πο δεσ ο ξεις υ μων αι μα δι εκ

χε αι Δε σπο του <sup>π</sup>9 αλλ α να στη σε ται πα αν των σω

σαι τους κρα ζοντας <sup>6</sup>λ ευ λο γη με νος ο ερ χο με νος

εν ο νο μα τι Κυ ρι ου Σω τη ρος η μων <sup>6</sup>λ

### Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

6 εἰρμός

Ἦχος <sup>4</sup>δ̣ι Ββ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Τριώδιον Α΄  
2003 σ.273\*

Θ <sup>χ</sup>σ ε ο ος Κυ ρι ος και αι ε πε φαν εν η μιν <sup>6</sup>λ συ

στη η σα σθε ε ορ την και α γαλ λο με νοι <sup>6</sup>λ



δε ευ τε με γα λυ νω μεν Χρι στον με τα βα ι ων

και κλα δων υ υ μνοις κραυ γα ζον τες ευ λο γη με νος

ο ερ χο με νος εν ο νο μα τι Κυ ρι ου Σω τη

ρος η μων (β')

Δ ο ξα σοι ο Θε ος η μων δο ξασοι

ε θνη ι να τι ι ε φρυ α ξα τε γρα φεις και

ι ε ρεις τι κε να ε με λε τη σα τε τις ου

τος ει πον τες ω παι αι δες με τα βα ι ων και κλα

δων υ υ μνοις κραυ γα ζου σιν ευ λο γη με νος ο ερ

χο με νος εν ο νο μα τι Κυ ρι ου Σω τη ρος η

μων<sup>6</sup> (β')

Δ ο ξα Πα τρι και Υι ω και α γι ω Πνευ μα τι<sup>6</sup>

Ο υ τος ο Θε ος ω ω πα ρο μοι ος ου δεις<sup>6</sup> δι και

αν πα σαν ο δο ον εξ ευ ρων<sup>6</sup> δε δω κε τω η

γα πη μενω Ισ ρα ηλ<sup>6</sup> με τα δε ταυ τα αν θρω ω ποις

συν α νε στρα φη ο φθεις<sup>6</sup> ευ λο γη με νος ο ερ χο

με νος<sup>6</sup> εν ο νο μα τι Κυ ρι ου Σω τη ρος η μων<sup>6</sup>

Κ αι νυν και α ει και εις τους αι ω νας των αι

ω νων α μην<sup>6</sup>

Σ καν δα λα τρι ι βου τι ε χο με να η μιν τι θε α

τε α πει θεις <sup>6</sup> λ πο δες ο ξεις υ μων αι μα δι εκ χε αι

Δε σπο του <sup>π</sup> ρ αλλ α να στη σε ται παν τως σω ω σαι τους

κρα ζον τας <sup>6</sup> λ <sup>σ</sup> ευ λο γη με νος ο ερ χο με νος <sup>Δ</sup> ρι εν

ο νο μα τι Κυ ρι ου Σω τη ρος η μων <sup>6</sup> λ

### Καταβασία θ' φδῆς

<sup>ἦχος δ'</sup>

Θεὸς Κύριος, καὶ ἐπέφανεν ἡμῖν, συστήσασθε ἑορτὴν, καὶ ἀγαλλόμενοι, δεῦτε μεγαλύνωμεν Χριστόν, μετὰ βαίτων καὶ κλάδων, ὕμνοις κραυγάζοντες· Εὐλογημένος ὁ ἐρχόμενος, ἐν ὀνόματι Κυρίου, Σωτῆρος ἡμῶν.

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Σύντομος

Ἀργή

Σύντομος

Ἀργή

### Σύντομος

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

ὁ εἰρμός

<sup>ἦχος</sup> ρι <sup>Δ</sup> ρι <sup>Β</sup> ρι

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.342#

Θ ε ος Κυ ρι ος και αι ε πε φα νεν η μιν <sup>6</sup> λ συ

στη σα σθε ε ορ την και α γαλ λο μενοι δε ευ τε

με γα λυ νωμεν Χρι στον <sup>6</sup>λ με τα βα ι ων και κλα δων

υ υ μνοις κραυ γα ζοντες <sup>6</sup>λ ευ λο γη με νος ο ερ χο

με νος <sup>Δ</sup>δ εν ο νο μα τι Κυ ρι ου Σω τη ρος η μω

<sup>6</sup>λ ω ω ω ω ν

### Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

6 εἰρμός

Ἦχος <sup>4</sup>δ Β8 <sup>5</sup>χ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Τριώδιον Α΄  
2003 σ.273\*

<sup>σ</sup>Θ ε ο ος Κυ ρι ος και αι ε πε φα νεν η μιν <sup>6</sup>λ συ

στη η σα σθε ε ορ την και α γαλ λο μενοι <sup>6</sup>λ

δε ευ τε με γα λυ νωμεν Χρι στον <sup>6</sup>λ <sup>σ</sup> με τα βα ι ων

και κλαδων υ υ μνοις κραυγα ζοντες <sup>6</sup> <sup>♂</sup> <sup>λ</sup> ευ λο γη με νος

ο ερ χο με νος <sup>Δ</sup> <sup>δ</sup> εν ο νο μα τι Κυ ρι ου Σω τη

ρος η μων <sup>6</sup> <sup>λ</sup>

\* <sup>λ</sup> <sup>χ</sup> <sup>♂</sup> <sup>λ</sup> <sup>6</sup> <sup>λ</sup>  
μω ω ω ω ν

### Ἄεθ' ἄ

### Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

ὁ εἰρμὸς

Ἦχος <sup>λ</sup> <sup>δ</sup> <sup>♂</sup> <sup>λ</sup> Β8

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.67#

Θ ε ος Κυ ρι ο ο ος και αι ε ε πε ε φα α νεν η

η μιν <sup>π</sup> <sup>9</sup> συ στη η σα σθε ε ε ο ορ τη ην και α

γαλ λο με ε νοι οι <sup>6</sup> <sup>λ</sup> δευ τε ε με ε γα α λυ νω ω μεν Χρι ι

στον <sup>π</sup> <sup>9</sup> με ε τα βα ι ι ι ων και αι κλα δων υ

υ μνοι οι ο ις κραυ γα α α α ζο ο ο ον τεσ <sup>π</sup> <sup>9</sup> ευ λο

γη με νος ο ο ερ χο με ε νος εν ο νο μα α  
τι Κυ υ ρι ι ου Σω τη η ρος η η μω ω ω ω ν

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

ὁ εἰρμὸς

Ἦχος Ββ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Τριώδιον Α΄  
2003 σ.275\*

Θ ε ο ος Κυ ρι ι ο ος και αι ε ε πε ε φα α νεν η η  
μιν συ στη η σα α σθε ε ε ε ο ορ τη ην και α α  
γαλ λο με ε νοι οι δευ τε ε με γα λυ υ νω ω μεν Χρι ι στον  
με τα βα ι ι ι ων και αι κλα δω ων υ υ μνοι  
οι οισ κραυ γα α α ζο ο ο ον τεσ ευ λο γη με  
νος ο ο ερ χο με ε νος εν ο νο μα α τι Κυ

υ ρι ι ου Σω τη η ρο ος η η μω ω ω ω ν

# Τῷ Ἁγίῳ καὶ Μεγάλῳ Σαββάτῳ

ἤχος πλ.β'

- α **Κύματι** θαλάσσης, τὸν κρύψαντα πάλαι, διώκτην τύραννον, ὑπὸ γῆς ἔκρυψαν, τῶν σεσωσμένων οἱ Παῖδες, ἀλλ' ἡμεῖς ὡς αἱ νεάνιδες, τῷ Κυρίῳ ἄσωμεν. Ἐνδόξως γὰρ δεδόξασται.
- γ **Σὲ** τὸν ἐπὶ ὑδάτων, κρεμάσαντα πᾶσαν τὴν γῆν ἀσχέτως, ἡ κτίσις κατιδοῦσα, ἐν τῷ Κρανίῳ κρεμάμενον, θάμβει πολλῶ συνέχετο. Οὐκ ἔστιν ἅγιος πλήν σου Κύριε, κραυγάζουσα.
- δ **Τὴν** ἐν Σταυρῷ σου θείαν κένωσιν, προορῶν Ἀββακοῦμ ἐξεστηκῶς ἐβόα. Σὺ δυναστῶν διέκοψας κράτος Ἀγαθέ, ὁμιλῶν τοῖς ἐν Ἄδῃ, ὡς παντοδύναμος.
- ε **Θεοφανείας** σου Χριστέ, τῆς πρὸς ἡμᾶς συμπαθῶς γενομένης, Ἡσαΐας φῶς ἰδὼν ἀνέσπερον, ἐκ νυκτὸς ὀρθρίσας ἐκραύγαζεν. Ἀναστήσονται οἱ νεκροί, καὶ ἐγερθήσονται οἱ ἐν τοῖς μνημείοις, καὶ πάντες οἱ ἐν τῇ γῆ ἀγαλλιάσονται.
- ς **Συνεσχέθη**, ἀλλ' οὐ κατεσχέθη, στέρνοις κητώοις Ἰωνᾶς· σοῦ γὰρ τὸν τύπον φέρων, τοῦ παθόντος καὶ ταφῆ δοθέντος· ὡς ἐκ θαλάμου, τοῦ θηρὸς ἀνέθορε, προσεφώνει δὲ τῇ κουστωδίᾳ. Οἱ φυλασσόμενοι μάταια καὶ ψευδῆ, ἔλεον αὐτοῖς ἐγκατελίπετε.
- ζ **Ἄφραστον** θαῦμα! Ὁ ἐν καμίνῳ ῥυσάμενος, τοὺς ὀσίους Παῖδας ἐκ φλογός, ἐν τάφῳ νεκρός, ἄπνους κατατίθεται, εἰς σωτηρίαν ἡμῶν τῶν μελωδούντων. Λυτρωτά, ὁ Θεὸς εὐλογητὸς εἶ.

Αἰνοῦμεν, εὐλογοῦμεν, καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον

- η **Ἐκστηθι** φρίττων οὐρανέ, καὶ σαλευθήτωσαν τὰ θεμέλια τῆς γῆς· ἰδοὺ γὰρ ἐν νεκροῖς λογίζεται, ὁ ἐν ὑψίστοις οἰκῶν, καὶ τάφῳ σμικρῷ ξενοδοχεῖται, ὃν Παῖδες εὐλογεῖτε, ἱερεῖς ἀνυμνεῖτε, λαὸς ὑπερψοῦτε, εἰς πάντας τοὺς αἰῶνας.

|          |                             |       |
|----------|-----------------------------|-------|
|          | Ἰωάννου Πρωτοψάλτου ☩       | Ἀργαῖ |
| Σύντομοι | ☩ Ἀθανασίου Καραμάνη        |       |
| Σύντομοι | ☩ Κωνσταντίνου Πρίγγου      |       |
| Σύντομοι | ☩ Κωνσταντίνου Παπαγιάννη ☩ | Ἀργαῖ |

## Σύντομοι

### Ἀθανασίου Καραμάνη



**Κ** <sup>χ</sup> υ μα τι θα λα ασ σης τον κρυ ψαν τα πα α

α λαι δι ω κτην τυραννον υ πο γης ε κρυ ψαν των σε

σω σμε νων οι παι δες αλλ η μεις ως αι νε α νι δες

τω Κυ ρι ω α σω μεν εν δο ξως γαρ δε δο ο ξα

α σται αι

ῥδὴ γ'

**Σ** ε τον ε πι ι υ δα των κρε μα σαν τα πα σαν

την γην α σχε τως η κτι σις κα α τι δου σα εν τω Κρα

νι ι ι ω κρε μα μενον θαμ βει πολ λω συν ει χε

το <sup>α</sup> χορδός α' ουκ ε στιν α γι ι ος πλην σου Κυ ρι ε





νε κρος α πνους κα τα τι θε ται εις σω τη ρι

αν η μων των με λω δουν των λυ τρω τα ο Θε ος

ευ λο ο γη τος ει ῶδὴ η'

**Α** ι νου μεν ευ λο γου μεν προσ κυ νου μεν τον Κυ ρι

ον Α

**Ε** κ στη θι φριτ των ουρα νε και σα λευ θη τωσαν τα θε

με λι α της γης ι δου ου γαρ εν νε κροις λο γι ζεται ο

εν υ ψι στοις οικων και τα φω σμι κρω ξε νο δο

χει ται ον Παι δες ευ λο γει τε Ι ε ρει εις α

νυ μνει τε λα ος υ περ υ ψου ου τε εις παν τας του

ουσ αι ω ω να α ας

### Κωνσταντίνου Πρίγγου

ῥοδὴ α'

Ἦχος λ π Δι

Κωνσταντίνου Πρίγγου  
Μ.Εβδομάς 1969 σ.159\*

**Κ** υ μα τι θα λα ασ σης τον κρυ φαν τα πα α

α λαι δι ω κτην τυ ραννον υ πο γης ε κρυ φαν

των σε σω σμε νων οι παι δες αλλ η μεις ως αι νε α

νι δες τω Κυ ρι ω α σω μεν εν δο ξως γαρ δε ε δο

ο ξα α σται αι

ῥοδὴ γ'

**Σ** ε τον ε πι υ δα των κρε μα σαν τα πα σαν

την γην α σχε ε τως η κτι σις κα α τι δου σα εν τω

κ ρ α ν ι ι ι ω κ ρ ε μ α μ ε ν ο ν θ α μ β ε ι π ο λ λ ω σ υ ν ε ι

χ ε τ ο ο υ κ ε σ τ ι ι ν Α α γ ι ι ο ς *χορός α'* π λ η ν σ ο υ Κυ ρ ι ε

κ ρ α α υ γ α α ζ ο υ ο υ σ α α *ᾠδὴ δ'*

**Τ** η ν ε ν Σ τ α υ ρ ω σ ο υ ο υ θ ε ι α ν κ ε ν ω σ ι ν π ρ ο ο

ρ ω ν Α β β α κ ο υ μ ε ξ ε σ τ η κ ω ς ε β ο α σ υ δ υ ν α

σ τ ω ν δι ι ε κ ο ψ α ς κ ρ α α τ ο ς α γ α θε ο μ ι λ ω ν

τ ο ι ς ε ν Α α δ η ω ς π α ν τ ο ο δ υ υ ν α α μ ο ο ς *ᾠδὴ ε'*

**Θ** ε ο φ α ν ε ι α ς σ ο υ Χ ρ ι σ τ ε τ η ς π ρ ο ς η μ α ς σ υ μ π α

θ ω ς γ ε ν ο μ ε ν η ς Η σα ι α ς φ ω ς ι δ ω ν α ν ε

σπε ρον εκ νυ κτος ορ θρι ι ι σας ε κραυ γα ζεν α

να στη η η η σον ται οι νε κροι και ε γερ

θη σον ται οι εν τοις μνη μει οις και πα α α

αν τες οι εν τη γη α γαλ λι ι α α σοον ται αι

ῥδής'

**C**υν ε σχε ε θη αλλ ου κα τε σχε θη στερ νοις

κη τω οις Ι ω νας σου γαρ τον τυ πον φε ρων του πα

θον τως και τα φη δο θε ε εν το ος ως εκ θα

λα α μου του θη ρος α νε θε ρε προσ ε φω νει δε τη

κου στω δι α οι φυ λασ σο ο ο με νοι μα ται

α και ψευδη ελεον αυτοις εγκα τε ελι ι

πεε τεε

ωδηζ'

αφρα στον θα αυμα οενκα μι ι ι νω

ρυσα μενος τους οσι ι ι ους παι αι δας εκ φλο

γος εν τα φω νε κρος απνους κα τα τι θε ται

εις σω τη ρι αν η μων των με λω δουν των λυ

τρω τα ο Θε ος ευ λο ο γη τος ει

ωδηη'

α ι νου μεν ευ λο γου μεν προσ κυ νου μεν τον Κυ ρι

ον

ε κ στη θι φρι των ου ρα νε και σα λευ θη τω σαν



τα θε με λι α της γης ι δου γαρ εν νε κροις λο γι

ζε ται ο εν υ ψι στοις οι κων και τα φω σμι κρω ξε

νο δο χει ται ον Παι δες ευ λο γει τε Ι ε ρεις

α νυ μνει τε λα ο ος υ περ υ ψου ου τε εις

παν τας του ους αι ω νας ω ω να α ας

### Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

ᾠδὴ α'

Ἦχος λ π Βϛ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μεγάλη Εβδομάς  
2004 σ.217\*

Κ υ μα τι θα λα ασ σης τον κρυ ψαν τα πα α

α λαι δι ω κτην τυραννον υ πο γης ε κρυ ψαν των σε

σω σμε νων οι παι δες αλλ η μεις ως αι νε α νι δες



τοῖς ἐν ἀδελφῶς παντοδυναμοῦς

ὠδὴ ε'

**Θ**εοφάνειαςσου Χριστέ της προς ημάς συμπάθως

γενόμενης Ἡσυχίας φως ἰδωνά νεσπε

ρον ἐκ νυκτός ὀρθρίϊϊσας ἐκραυγάζεν ἅ

νάστησονται οἱ νεκροὶ καὶ ἐγερθήσονται οἱ

ἐν τοῖς μνημείοις καὶ παᾶντες οἱ ἐν τῇ

γῆ ἀγαλλίασονται αἱ

ὠδὴ ς'

**Κ**υνεσχέεθη ἀλλοκατέσχεθη στερνοῖς

κῆτωοῖς Ἰωάννης σου γὰρ τὸν τυυπὸν φερῶν τοῦ πα

θόντος καὶ τὰ φηγηδοθε ἐέντος ὡς ἐκθαλα

α μου του θη ρος α νε θε ρε προσ ε φω νει δε τη

κου ου στω δι α οι φυ λασ σο ο ο με νοι μα ται α

και ψευ δη ε λε ον αυ τοις εγ κα τε λι πε ε τε

ε ὠδὴ ζ'

α φρα στον θα αυ μα ο εν κα μι ι ι νω ρυ

σα μενος τους ο σι ι ου ους παι δας εκ φλο γος εν

τα φω νε κρος α πνους κα τα τι θε ται εις σω τη

ρι αν η μων των με ε λω δουν των Λυ τρω τα ο

Θε ος ευ λο ο γη τος ει ὠδὴ η'

α ι νου μεν ευ λο γου μεν προσ κυ νου μεν τον Κυ ρι

ον

ξ

Εκστηθι φριτ των ουρανε και σα λευθη τωσαν

τα θεμελια της γης ιδου ου γαρ εν νε κροισ

λογι ζεται ο εν υ ψι στοισ οικων και τα φωσμι κρω ξε

νο οδο χειται ον παιδες ευ λογει τε ι ε ρεις α α

νυ μνει τε λα ο ος υ περ υ ψου ου τε εις παν τας του ους

αι ω νας

ω ω να α ας

### Αργαί

### Ιωάννου Πρωτοψάλτου

ᾠδὴ α'

Ἦχος λ π τ Βϛ

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρημολόγιον 1903 σ.139#

Κυματιι ι θα λα α α α ασ ση ης τον

κρυψαντα πααα αλαιαιδιωκτηηντυυ

υρααα αννον υπογηηηνεεε

κρυψαντων σεσωωσμενωωνοιοιπαιαιαιδες

αλλημειςωςαινεεεαανιδεστωκυριι

ωωασωωωμεν ενδοοξωσγαααρδε

εεδοοοοξαααασται

ῥδῆγ'

ετονεεεπειιιυυδααατωνκρε

μασανταπαααασαντηνγηηνασχεεεε

τωςηκτισικααατιδουουουσαεντω

κρανιιωκρεεμαααμεεεενον

θαμ βει πολ λω συν ει χε το ο ουκ ε ε ε στιν

α α α α γι ι ι ι ος *χορός α'* πλη ην σου κυ

υ ρι ε ε ε κραυ αυ γα α α α ζου ου ου ου

σα *ψδὴ δ'*

**T** ην εν σταυ ρω σου ου ου ου θει ει αν κε ε νω

ω ω σιν *γ* προ ο ρω ω ων Α α αβ βα α κου

ουμ εξ ε ε στη η η κω ω ως ε ε βο ο ο α

συ δυ να στω ων δι ι ε ε κο ο ψα ας κρα το ος α

α γα α α θε ο μι λω ω ων τοι οι οισ εν

Α α α δη η ως πα α αν το ο δυ υ να α μο ος

Θ ε ε ε ε ο ο ο φα νει ει ει ας σου

ου Χρι ι ι στε της προς η μας συμ πα θω ω ω ω

γε ε ε νο ο με ε ε νης Η σα α ι ας φως ι

δων α α α νε ε σπε ε ρο ον εκ νυκτο ος ο ορ θρι ι

σα α ας ε κρα αυ γα α α ζεν α να στη η

η σο ο ον ται οι νε κροι και ε γε ερ θη η

η σο ο ο ον ται αι αι αι αι οι εν τοι οις μνη μει ει

ει ει οις και πα α αν τε ες οι εν τη γη

η η α γα α αλ λι ι α α σο ον ται αι ῥοδὴ ε'

ϸ υν ε σχε ε θη η η η η η η η α α αλ



λου ου κα α α τε σχε ε ε ε θη στε ε ε ερ

νοι οι οισ κη τω ω ω οισ Ι ι ω ω ω νας

σου γαρ το ο ον τυ υ υ πο ον φε ε ε ρων του

πα θον τος και τα φη η δο ο ο θε ε εν το ος ως

εκ θα λα α α μου του θη ρος α α αν ε ε

ε θο ο ο ρε ε ε ε ε προ σε φω ω ω νει ει

ει γαρ τη κου ου στω δι ι ι ι α οι φυ λασ σο

ο ο με ε ε νοι οι μα α ται αι α και αι ψευ η

η η η η η η η η η ε ε λε ε ον αυ

τοι οισ εγ κα α α τε ε λι ι πε ε τε ε φδὴζ

φρα στον θα α α α αυ μα α ο εν κα

μι ι νω ρυ υ υ σα α α με ε ε ε νος τους ο

ο σι ι ι ου ους παι δα ας ε εκ φλο ο ο γος εν

τα α α φω νε ε ε κρος α πνους κα τα α τι ι

ι θε ε ε ε ται εις σω ω ω τη η ρι ι ι

αν η η μων τω ω ων με ε ε λω ω δου ου ουν των

λυ τρω τα ο ο Θε ε ο ος ευ λο ο ο ο ο γη η

το ο ος ει

ῶδὴ ἡ'

ι νου μεν ευ λο γου μεν και προ σκυ νου με εν τον Κυ

ρι ον

Ε ε εκ στη η η θι φρι ι ιτ των ου

ου ρα α α νε και σα α α λε ευ θη η τωω σαν

τα α θε με ε ε λι α α τη η ης γης ι

δου ου ου γαρ εν νε κρις λο ο γι ι ι ζε ε ε

ε ται ο ο ο ο ε ε εν υ ψι ι ι ι στοι

οις οι οι οι κων και αι τα φω σμι ι κρω ξε νο ο ο

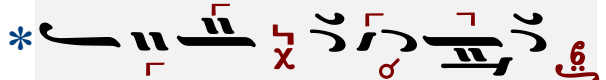
δο ο χει ει ει ται ον παι δε ε ες ε ε ευ λο ο γει

ει ει τε ι ε ρεις α α α νυ υ μνει ει ει

τε λα ο ος υ πε ε ερ υ υ ψου ουου τε εις

πα α αν τας του ου ου ους αι αι ω ω ω νας

τὸ τέλος


\*    
 ω ω ω να α α α ας


### Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

ῥοδή α'


Ἦχος λ π 

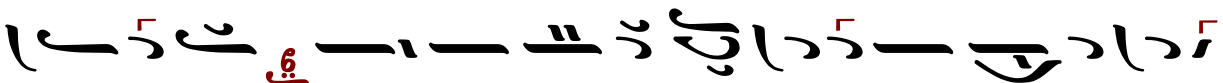
πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μεγάλη Εβδομάς  
2004 σ.217\*

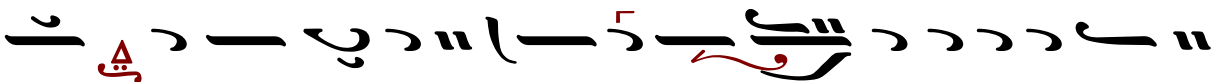
**Κ**    
 υ μα τι ι ι θα λα α α α ασ ση ης


   
 τον κρυ ψα αν τα α πα α α λαι δι ι ω ω κτη η

   
 ην τυ υ ρα α αν νον υ πο γη ης ε

   
 ε κρυ υ υ ψαν των σε σω σμε ε νω ωων οι οι παι

   
 αι αι δεσ αλλ η μεις ως αι νε ε ε α α νι ι

   
 δεσ τω Κυ ρι ω ω α α α α σω ω ω ω με ε

   
 εν εν δο ο ξως γα α αρ δε ε δο ο ξα α

σταί αι

ψδλ γ'

ε τον ε ε ε πι ι ι υ υ δα α α των κρε

μα α σα αν τα πα α α σα αν την γη ην α σχε ε

ε ε τως η κτι σις κα τι δου ου ου σα εν τω κρα

νι ι ω κρε ε μα α α με ε ε ε νον θαμ βει

πολ λω συν ει χε το ο ουκ ε ε στι ν α α α

γι ι ι ι ος *χοθός* α' πλην σου Κυ υ ρι ε ε ε κρα

αυ γα α ζου ου σα α α

ψδλ δ'

την εν Σταυ ρω σου ου θει ει α αν κε ε νω ω ω

σιν προ ο ρω ω ων Α αβ βα α α κουμ

Εξ εστη κω ω ως ε ε βο ο ο α συ δυ να

στω ων δι ι ε ε κο ο ψα ας κρα το ος α α γα α

α θε ο μι λω ω ων τοι οι οισ ε εν α α

δη η ως πα α αν το ο δυ υ να α μο ος ῶδῆ ε'

Θ ε ο φα νει ει ας σου ου Χρι ι ι στε τής

προς η μας συμ πα α θως γε ε ε νο ο με ε ε νης

Η σα ι ας φως ι δων α α α νε ε σπε ε ρον

εκ νυ κτος ο ορ θρι ι ι ι σα α ας ε ε κρα α

α αυ γα α α α ζεν α να στη η η σο ον ται αι

οι νε ε κροι και ε γερ θη η σο ο ο ον ται αι αι

αι αι οι εν τοι οis μνη μει ει ει οis και πα α

αν τε εs οι εν γη γη η η α γα α αλ λι ι

α α σο ον ται αι

ῶδης'

C υν ε σχε ε ε ε θη η η η α αλλ ου ου

κα α α τε σχε ε ε ε θη στε ε ε ερ νοι οi οis

κη τω ω ω οis Ι ι ω ω ω νας σου γα αρ

το ο ον τυ υ υ πο ον φε ε ε ρων του πα θον

τος και τα φη η δο ο ο θε ε εν το οs ως εκ

θα λα α α μου του θη ρος α α νε ε ε ε ε θο ο

ο ο ρε προσ ε φω ω ω νει ει ει ει δε τη κου ου

στω δι ι ι ι α οι φυ λασ σο ο ο με

ε ε νοι οι μα α ται αι α και αι ψευ δη η η

η η η η η η η η ε ε λε ε ον αυ τοι

οις εγ κα α α τε ε λι ι πε ε τε ε ε

ὠδὴ ζ'

**Α** φρα στον θα α α α αυ μα α ο εν κα

μι ι νω ρυ υ σα α α με ε ε ε νος τους

ο σι ι ι ι ι ου ους παι δα ας ε εκ φλο ο ο

γος εν τα α α φω νε ε ε κρος α πνουσ κα τα

τι ι ι θε ε ε ε ται εις σω τη ρι ι ι αν



η η μων τω ω ων με ε ε λω ω δου ου ουν των Λυ

τρω ω τα α α ο Θε ο ος ε ευ λο ο ο

ο γη η τος ει ει

ᾠδὴ η'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου ου με ε

εν το ον Κυ ρι ι ο ον

Ε ε εκ στη η η θι φρι ι ιτ των ου

ου ρα α α νε και σα λευ θη η τω ω σαν τα θε

με ε λι ι ι α α τη η ης γης ι δου ου

ου γαρ εν νε κροι οισ λο ο γι ι ζε ε ται ο εν

υ ψι ι ι ι στοι οισ οι οι οι κων και τα αφω

σμι κρω ω ξε νο ο δο χει ει ει ει ται ον  
 παι δε ε ες ε ε ευ λο ο γει ει ει τε ι ε  
 ρεις α α α νυ υ μνει ει ει τε λα ο ος υ  
 πε ερ υ υ ψου ου ου τε εις πα α αν τας του ου ου  
 ους αι αι ω ω ω να α α α ας

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

## Καταβασία θ' ᾠδῆς

ἦχος πλ.β'

**Μ**ὴ ἐποδύρου μου Μῆτερ, καθορῶσα ἐν τάφῳ, ὃν ἐν γαστρὶ ἄνευ σπορᾶς, συνέλαβες Υἱόν· ἀναστήσομαι γὰρ καὶ δοξασθήσομαι, καὶ ὑψώσω ἐν δόξῃ, ἀπαύστως ὡς Θεός, τοὺς ἐν πίστει καὶ πόθῳ σὲ μεγαλύνοντας.

|          |                           |      |
|----------|---------------------------|------|
|          | Ἰωάννου Πρωτοψάλτου       | Ἀργὴ |
| Σύντομος | ➤ Ἀθανασίου Καραμάνη      |      |
| Σύντομος | ➤ Κωνσταντίνου Πρίγγου    |      |
| Σύντομος | ➤ Κωνσταντίνου Παπαγιάννη | Ἀργὴ |

Σύντομος

Ἀθανασίου Καραμάνη

χορὸς α'

Ἦχος λ π Τ Δι

Αθανασίου Καραμάνη  
Νέα Μουσική Κυψέλη  
Μ. Εβδομάς, 1971 σ.286#

**Μ** η ε πο δυ ρου μου Μη τε ρ κα θο ρω σα εν  
 τα φω ον εν γα στρι α νευ σπο ρας συν ε λα βες Υι  
 ον Α να στη η η σο μαι γαρ και δο ξα σθη σο μαι  
 και υ ψω σω εν δο ξη α παυ στως ως Θε ος τους εν πι  
 στει και πο θω σε με γα λυ νο ον τα α ας

Κωνσταντίνου Πρίγγου

χορὸς α'

Ἦχος λ π Τ Δι

Κωνσταντίνου Πρίγγου  
Μ.Εβδομάς 1969 σ.163\*

**Μ** η ε πο δυ ρου μου Μη τε ρ κα θο ρω σα εν  
 τα φω ον εν γα στρι α νευ σπο ρας συν ε λα βες Υι

ον α να στη η η σο μαι γαρ και δο ξα σθη σο μαι

και υ ψω σω εν δο ο ξη α παυ στως ως Θε ος τους εν

πι στει και πο θω σε με γα α λυ υ νο ον τα ας

\* τὸ τέλος  
τα α ας

### Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

χορὸς α'

Ἦχος λ π Βε

πρωτ. Κων. Παπαγιάννη  
Μεγάλη Εβδομάς  
2004 σ.233\*

Μ η ε πο δυ ρου μου Μη τε ερ και θο ρω σα εν

τα φω ο ον εν γα στρι α νευ σπο ρας συν ε λα βες Υι

ον α να στη η η σο μαι γαρ και δο ξα σθη σο μαι και

υ ψω σω εν δο ο ξη α παυ στως ως Θε ος τους εν πι

στει και πο ο θω σε με γα λυ νο ον τα ας

τὸ τέλος \* τα α ας

### Ἄρχή

### Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Ἦχος λ π Βϛ

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.156#

Μη ε ε πο δυ ρου ου μου ου Μη η η

τερ κα θω ρω σα α ε εν τα α α φω ο ο ο ο ον

ε ε εν γα στρι ι ι α νε ευ σπο ο ο ρα ας

συ υ νε ε λα α βε ες Υι υι υι ον α να στη

η η σο μαι γαρ και δο ξα α σθη η η σο ο ο ο

μου αι αι αι αι και υ ψω ω ω σω ω ω εν δο

ο ξη η α α πα αυ στως ω ως Θε ε ε ος

τους εν πι ι ι στει ει ει και πο ο ο θω ω σε

με ε ε γα α λυ υ νοον τα ας

\* τὸ τέλος  
τα α ας

### Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

χορὸς α'

Ἦχος λ π Βε

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μεγάλη Εβδομάς  
2004 σ.234\*

Μ η ε ε πο δυ ρου ου μου ου Μη η η τερ

κα θο ρω σα α α εν τα α α φω ο ο ο ον

ε ε εν γα στρι ι α νευ σπο ο ρας συν ε ε λα

α βε ες Υι υι υι ον α να στη η η σο

ο μαι αι αι γαρ και δο ξα σθη η η η σο ο

ο ο μαι αι αι αι και υ ψω ω ω σω ω ε ε

εν δο ο ο ξη α πα αυ στω ως ω ως Θε ε ε

ος τους εν πι ι ι σται ει ει και πο ο ο θω

ω σε με ε ε γα α λυ υ νοον τα α ας

# Τοῦ Πάσχα

Από τῆς Κυριακῆς τοῦ Πάσχα μέχρι τοῦ Σαββάτου πρό τῆς Κυριακῆς τοῦ Τυφλοῦ, ἐκτός τῆς Μεσοπεντηκοστῆς. Ψάλλονται ὡσαύτως καί ἐν τῇ ἀποδόσει τοῦ Πάσχα, ἤτοι τῇ Τετάρτῃ πρό τῆς Ἀναλήψεως.

## ἤχος α'

α **Ἀ**ναστάσεως ἡμέρα λαμπρυνθῶμεν λαοί, Πάσχα Κυρίου, Πάσχα· ἐκ γὰρ θανάτου πρὸς ζωὴν, καὶ ἐκ γῆς πρὸς οὐρανόν, Χριστὸς ὁ Θεός, ἡμᾶς διεβίβασεν, ἐπινίκιον ἄδοντας.

γ **Δ**εῦτε πόμα πίωμεν καινόν, οὐκ ἐκ πέτρας ἀγόνου τερατουργούμενον, ἀλλ' ἀφθαρσίας πηγῆν, ἐκ τάφου ὀμβρήσαντος Χριστοῦ, ἐν ᾧ στερεούμεθα.

δ **Ἐ**πὶ τῆς θείας φυλακῆς ὁ θεηγόρος Ἀββακούμ, στήτω μεθ' ἡμῶν καὶ δεικνύτω, φασφόρον ἄγγελον, διαπρυσίως λέγοντα· Σήμερον σωτηρία τῷ κόσμῳ, ὅτι ἀνέστη Χριστὸς ὡς παντοδύναμος.

ε **Ὁ**ρθρίσωμεν ὄρθρου βαθέος, καὶ ἀντὶ μύρου τὸν ὕμνον προσοίσομεν τῷ Δεσπότη, καὶ Χριστὸν ὀψόμεθα, δικαιοσύνης ἥλιον, πᾶσι ζωὴν ἀνατέλλοντα.

ς **Κ**ατῆλθες ἐν τοῖς κατωτάτοις τῆς γῆς, καὶ συνέτριψας μοχλοὺς αἰωνίους, κατόχους πεπεδημένων Χριστέ, καὶ τριήμερος ὡς ἐκ κήτους Ἰωνᾶς, ἐξανέστης τοῦ τάφου.

ζ **Ὁ** παῖδας ἐκ καμίνου ρυσάμενος, γενόμενος ἄνθρωπος, πάσχει ὡς θνητός, καὶ διὰ πάθους τὸ θνητόν, ἀφθαρσίας ἐνδύει εὐπρέπειαν, ὁ μόνος εὐλογητὸς τῶν πατέρων, Θεὸς καὶ ὑπερένδοξος.

Αἰνοῦμεν, εὐλογοῦμεν, καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον.

η **Α**ὕτη ἡ κλητὴ καὶ ἁγία ἡμέρα, ἡ μία τῶν Σαββάτων, ἡ βασιλὶς καὶ κυρία, ἐορτῶν ἐορτῆ, καὶ πανηγυρις ἐστὶ πανηγύρεων, ἐν ᾗ εὐλογοῦμεν, Χριστὸν εἰς τοὺς αἰῶνας.

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Γαβριὴλ Κουντιάδου

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

## Σύντομοι

### Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

ᾠδὴ α'

ἤχος 4 Πα

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.371#



Α να στα σε ως η με ρα λαμ πρυν θω μεν λα

οι Πα α σχα Κυ ρι ου Πα α σχα εκ γαρ θα να του προς

ζω ην και εκ γης προς ου ρα νον Χρι στο ος ο Θε ος η

μας δι ε βι βα σεν ε πι νι κι ον α α δο ον τας π ρ ὠδὴ γ'

Δ ευ τε πο μα πι ω μεν και νον ουκ εκ πε τρας α γο ο

νου τε ρα του ρ γου με νον π ρ αλλ α φθαρ σι ας πη γην Δ

εκ τα φου ομ βρι σαν τος Χρι στου π ρ χορὸς α' εν ω στε ρε

ου ου με ε θα π ρ ὠδὴ δ'

Ε πι της θει ας φυ λα κης ο θε η γο ρος Αβ βα

κουμ Δ στη τω μεθ η μων και δει κνυ υ τω Δ φα εσ φο ρον

αγ γελον δι α πρυ σι ως λε γοντα <sup>π ρ</sup> ση με ρον σω τη

ρι α τω κο ο σμω <sup>Δ ρ</sup> ο τι α νε ε στη Χρι στος ως παν

το δυ υ να α μος <sup>π ρ</sup> ὠδὴ ε'

**Ο** ρ θρι σω μεν ορ θρου βα θε ος <sup>Δ ρ</sup> και αν τι μω

ρου τον υ μνον προ σοι οι σο μεν τω δε σπο ο τη <sup>π ρ</sup> και

Χρι στον ο ψο μεθα δι και ο συ νης η λι ον <sup>Δ ρ</sup> πα σι ζω

ην α να τε ελλο ον τα <sup>π ρ</sup> ὠδὴ ς'

**Κ** α τηλ θες εν τοις κα τω τα τοις της γης και συν ε

τρι ψας μο χλου ουσ αι ω νι ι ουσ κα το ο χους πε

πε δη με εων Χρι στε και τρι η μερος ως εκ κη τους Ι

ω να ας εξ α νε στης του τα αφου <sup>π ρ</sup>

ῶδὴ ζ'

**Ο** παι αι δας εκ κα μι νου ρυ σα μενος γε νο ο με

νος αν θρωπος <sup>π ρ</sup> πα σχει ως θνη τος και δι α πα θους το θνη

τον <sup>Δ</sup> α φθαρ σι ας εν δυ υ ει ευ πρε πει αν <sup>π ρ</sup> ο μο νος ευ

λο γη τος των πα τε ε ρων <sup>Δ</sup> Θε ος και υ πε ρε εν

δο ο ξος <sup>π ρ</sup>

ῶδὴ η'

**Δ** ι νου μεν ευ λο γου μεν και προ σκυ νου μεν τον

Κυ ρι ον <sup>Δ</sup>

**Δ** υ τη η κλη τη η και α γι α η με ε ρα

η μι α των Σαβ βα α των η βα σι λικς και κυ ρι α

ε ορ των ε ορ τη και παν η γυ ρις ε στι ι  
παν η γυ ρεων εν η ευ λο γου ουμεν Χρι στον εις τους αι  
ω ω να α ας π ρ

### Γαβριήλ Κουντιάδου

ψδὴ α'

### Ἦχος ᾠ Πα

Γαβριήλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
α' ἔκδοσις 1931-1935  
ἐπανεκδοσις 1991 σ.14\*

α να στα σε ως η με ρα λαμ πρυν θω μεν λα  
οι Πα α σχα Κυ ρι ου Πα σχα εκ γαρ θα  
να του προς ζω ην και εκ γης προς ου ρα νον Χρι  
στο ος ο Θε ος η μα ας δι ε βι βα σεν ε πι νι  
κι ον α α δο ον τας

ψδὴ γ'

Δευ τε πο μα πι ω μεν και νον <sup>Δ</sup>ουκ εκ πε τρας α γο

ο νου τε ρα τουρ γου με νον <sup>π ρ</sup> αλλ α φθαρ σι ας πη

γην <sup>Δ</sup> εκ τα αφου ομ βρι σαντος Χρι στου <sup>Δ</sup> α' χορὸς εν ω στε

ρε ου ου με ε θα <sup>π ρ</sup> ῶδὴ δ'

Επι της θει ας φυ λα κης ο θε η γο ρος Αβ βα

κουμ <sup>Δ</sup> στη τω μεθ η μων και δει κνου υ τω <sup>Δ</sup> φα ε σφο ρον

αγγε λον <sup>π ρ</sup> δι α πρυ σι ως λε γοντα <sup>π ρ</sup> ση με ρον σω

τη ρι α τω κο ο σμω <sup>Δ</sup> ο τι α νε στη Χρι στος ως

παν το δυ υ να α μος <sup>π ρ</sup> ῶδὴ ε'

Ορ θρι σω μεν ορ θρου βα θε ε ως <sup>Δ</sup> και αν τι

μου τον υμνον προς οι οι σο μεν τω Δε σπο τη π ρ

και Χριστον ο ψο μεθα δι και ο συ νης η λι ον Α ρ

πα σι ζω ην ανα τε ελλο ον τα π ρ ωδὴ ζ'

Κα τη ηλ θες εν τοις κα τω τα α τοις της γης π ρ και

συν ε τρι ψας μο χλους αι ω νι ι ους Α ρ και το χους

πε πε δη με ενων Χρι στε π ρ και τρι η μερος ως εκ κη

τους Ι ω νας Α ρ εξ α νε ε στης του τα φου π ρ ωδὴ ζ'

Ο παι αι δας εκ κα μι νου ρυ σα μενος Α ρ γε νο μενος

αν θρω πος π ρ πα σχει ως θνη τος και δι α πα θους το θνη

τον Α ρ α φθαρ σι ας εν δυ ει ευ πρε πει αν π ρ ο μο νος

ευ λο γη τος των πα τε ε ρων Θε ος και υ περ ε εν

δο ο ξος

ὠδή η'

αι νου μεν ευ λο γου μεν και προ σκυ νου μεν τον

Κυ ρι ον

α υ τη η κλη τη και α γι α η με ε ρα η

μι α των Σαβ βα α των η βα σι λι ις και κυ ρι α ε

ορ των ε ορ τη και παν η γυ ρις ε στι παν η γυ ρε

ων εν η ευ λο γου ου μεν Χρι στον εις τους αι ω νας

να α α ας

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

ΠΑ  
Α να στα σε ως η με ρα λαμ πρυν θω μεν λα

οι Πα α σχα Κυ ρι ου Πα α σχα εκ γαρ θα

ΝΗ  
να του προς ζω ην και εκ γης προς ου ρα νον Χρι στο ος

ΠΑ  
ο Θε ος η μα ας δι ε βι βα σεν ε πι

ΝΗ ΠΑ  
νι κι ον α α δο ον τας

ᾠδὴ γ'

ΠΑ  
Δ ευ τε πο μα πι ω μεν και νον ουκ εκ πε τρας α γο

ΝΗ ΠΑ  
ο νου τε ρα του ρ γου με νον αλλ α φθαρ σι ας πη

Α εκ τα φου ομ βρη σαν τος Χρι στου α' χορὸς εν ω

ΝΗ ΠΑ  
στε ρε ου ου με ε θα

ᾠδὴ δ'



ΠΑ

Επι της θειας φυλακης ο θε η γο ρος Αβ βα

κουμ στη τω μεθ η μων και δει κνυ υ τω φα ε σφο ρον

ΔΙ ΠΑ

αγ γε λον δι α πρυ σι ως λε γον τα ση με ρον σω τη

ΔΙ

ΠΑ

ρι α τω κο ο σμω ο τι α νε ε στη Χρι στος ως

ΝΗ

παν το δυ υ να α μος

ῶδῆ ε'

ΠΑ

Ο ρ θρι σω μεν ορ θρου βα θε ε ος και αν τι μυ

ΝΗ ΠΑ

ρου τον υ μνον προσ οι σο μεν τω Δε σπο τη και Χρι

ΔΙ

ΠΑ

στον ο φο μεθα δι και ο συ νης η λι ον πα σι ζω

ΝΗ

ΠΑ

ην α να τε ε λλο ον τα

ῶδῆ ε'

ΠΑ

Κ α τη λ θες εν τοις κα τω τα τοις της γης και συν

ε τρι ψας μο χλους αι ω νι ι ους κα το χους πε πε δη

με νων Χρι στε και τρι η με ρος ως εκ κη τους

Ι ω νας εξ α νε ε στης του τα φου

Ο παι αι δας εκ κα μι νου ρυ σα με νος γε νο με

νος αν θρω πος πα σχει ως θνη τος και δι α πα

θους το θνη τον α φθαρ σι ας εν δυ υ ει ευ πρε πει

αν ο μο νος ευ λο γη τος των πα τε ε ρων

ος και υ περ ε εν δο ο ξος

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν προσ κυ νου μεν τον Κυ

ρι ον

Δι ΠΑ ΝΗ  
 Α υ τη η κλη τη η και α γι α η με ε ρα  
 η μι α των Σαβ βα α των η βα σι λις και κυ ρι  
 ΠΑ  
 α ε ορ των ε ορ τη και παν η γυ ρις ε  
 ΝΗ ΠΑ  
 στι ι παν η γυ ρε ων εν η ευ λο γου ου μεν Χρι  
 ΜΕΛ  
 στον εις τους αι ω να α α ας

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

ᾠδὴ α'

Ἦχος ᾠ Πα ᾠ

πρωτ. Κων. Παπαγιάννη  
 Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
 2005 σ.5\*

Α να στα σε ως η με ρα λαμ πρυν θω μεν λα  
 οι Πα α σχα Κυ ρι ου Πα σχα εκ γαρ θα να  
 του προς ζω ην και εκ γης προς ου ρα νον Χρι στο  
 ος ο Θε ος η μα ας δι ε βι βα σεν ε πι νι κι

ον α α δο ον τας π ρ

ὠδὴ γ'

Δευ τε πο μα πι ω μεν και νον Δ ουκ εκ πε τρας α γο

ο νου τε ρα τουρ γου με νον π ρ αλλ α φθαρ σι ας πη

γην Δ εκ τα φου ομ βρη σαν τος Χρι στου π ρ χορὸς α' εν

ω στερε ου ουμε ε θα π ρ

ὠδὴ δ'

Επι της θει ας φυ λα κης ο θε η γο ρος Αβ βα

κουμ στη τω μεθ η μων π ρ και δει κνυ τω φα εσ φο ρον αγ

γελον δι α πρυ σι ως λεγοντα π ρ ση με ρον σω τη ρι α

τω κο ο σμω Δ ο τι α νε ε στη Χρι στος ως παν το

δυ υ να α μος π ρ

ὠδὴ ε'

**Ο** ρ θρι σωμεν ορ θου βα θε ε ος **Δ** και αν τι μυ

ρου τον υ μνον προσ οι σο μεν τω **π** Δε σπο τη **π** και Χρι

στον ο ψο μεθα δι και ο συ νης η λι ον **Δ** πα σι ζω

ην ανα τε ελλο ον τα **π** ὠδὴς'

**Κ** α τη ηλθες εν τοις κα τω τα α τοις της γης **π** και

συν ε τρι φασ μο χλους αι ω νι ι ους **Δ** κα το χους πε

πε δη με ε νων Χρι στε και τρι η μερος **π** ως εκ κη

τους Ι ω νας εξ α νε ε στης του τα φου **π** ὠδὴζ'

**Ο** παι αι δας εκ κα μι νου ρυ σα μενος γε νο μενος

αν θρω πος **π** πα σχει ως θνη τος **π** και δι α πα θους το

θνη τον α φθαρ σι ας εν δυ υ ει ευ πρε πει αν ο μο

νος ευ λο γη τος των πα τε ε ρων Θε ος και υ περ

ε ενδο ο ξος

ὠδὴ η'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προ σκυ νου μεν τον

Κυ ρι ον

Α υ τη η κλη τη και α γι α η με ε ρα η

μι α των σαβ βα α των η βα σι λι ις και κυ ρι α

ε ορ των ε ορ τη και πα νη γυ ρις ε στι

ι πα γη γυ ε ρων εν η ευ λο γου ου μεν Χρι στον εις τους

αι ω νας

## Ὡδή Θ' (κανὼν τοῦ Πάσχα)

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

### ἦχος α'

**Μ**εγάλυνον, ψυχὴ μου, τὸν ἐθελουσίως παθόντα καὶ ταφέντα καὶ ἐξαναστάντα τριήμερον ἐκ τάφου.  
**Φ**ωτίζου, φωτίζου ἡ νέα Ἱερουσαλήμ· ἡ γὰρ δόξα Κυρίου ἐπὶ σέ ἀνέτειλε. Χόρευε νῦν, καὶ ἀγάλλου Σιών· σὺ δὲ ἀγνή, τέρπου, Θεοτόκε, ἐν τῇ ἐγέρσει τοῦ τόκου σου.

**Μ**εγάλυνον, ψυχὴ μου, τὸν ἐξαναστάντα τριήμερον ἐκ τάφου Χριστὸν τὸν ζωοδότην.  
**Φ**ωτίζου, φωτίζου ἡ νέα Ἱερουσαλήμ· ἡ γὰρ δόξα Κυρίου ἐπὶ σέ ἀνέτειλε. Χόρευε νῦν, καὶ ἀγάλλου Σιών· σὺ δὲ ἀγνή, τέρπου, Θεοτόκε, ἐν τῇ ἐγέρσει τοῦ τόκου σου.

**Χ**ριστὸς τὸ καινὸν πάσχα, τὸ ζωόθυτον θῦμα, ἀμνὸς Θεοῦ ὁ αἴρων τὴν ἁμαρτίαν κόσμου.  
**ᾠ** θείας! ὦ φίλης! ὦ γλυκυτάτης σου φωνῆς! μεθ' ἡμῶν ἀψευδῶς γάρ, ἐπηγγείλω, ἔσεσθαι, μέχρι τερμάτων αἰῶνος Χριστέ· ἦν οἱ πιστοί, ἀγκυραν ἐλπίδος, κατέχοντες ἀγαλλόμεθα.

**Σ**ήμερον πᾶσα κτίσις ἀγάλλεται καὶ χαίρει, ὅτι Χριστὸς ἀνέστη καὶ ἄδης ἐσκυλεύθη.  
**ᾠ** θείας! ὦ φίλης! ὦ γλυκυτάτης σου φωνῆς! μεθ' ἡμῶν ἀψευδῶς γάρ, ἐπηγγείλω, ἔσεσθαι, μέχρι τερμάτων αἰῶνος Χριστέ· ἦν οἱ πιστοί, ἀγκυραν ἐλπίδος, κατέχοντες ἀγαλλόμεθα.

**Δ**όξα Πατρὶ καὶ Υἱῷ καὶ ἀγίῳ Πνεύματι.

**Μ**εγάλυνον, ψυχὴ μου, τῆς τρισυποστάτου καὶ ἀδιαιρέτου Θεότητος τὸ κράτος.  
**ᾠ** Πάσχα τὸ μέγα, καὶ ἱερώτατον Χριστέ· ὦ σοφία καὶ Λόγε, τοῦ Θεοῦ καὶ δύναμις· δίδου ἡμῖν ἐκτυπώτερον, σοῦ μετασχεῖν, ἐν τῇ ἀνεσπέρῳ, ἡμέρᾳ τῆς βασιλείας σου.

**Κ**αὶ νῦν καὶ ἀεὶ καὶ εἰς τοὺς αἰῶνας τῶν αἰώνων, ἀμήν.

**Χ**αῖρε, Παρθένε, χαῖρε· χαῖρε, εὐλογημένη· χαῖρε, δεδοξασμένη,  
σὸς γὰρ Υἱὸς ἀνέστη τριήμερος ἐκ τάφου.

**ᾠ** Πάσχα τὸ μέγα, καὶ ἱερώτατον Χριστέ· ὦ σοφία καὶ Λόγε, τοῦ Θεοῦ καὶ δύναμις· δίδου ἡμῖν ἐκτυπώτερον, σοῦ μετασχεῖν, ἐν τῇ ἀνεσπέρῳ, ἡμέρᾳ τῆς βασιλείας σου.

Κωνσταντίνου Σκαρμούτσου

Γαβριὴλ Κουντιάδου

Χρύσανθου Θεοδοσόπουλου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

## Κωνσταντίνου Σκαρμούτσου

Ἦχος ᾠ Πα ᾠ

Μεγαλυνον ψυχη ημου του εθελουσι

ως παθοντα και τα φεντα και εξα να σταντατρι

η μερονεκτα φου π ρ

Φωτιζου φωτι ζου ηνε α Ιερουσα

λημ η γαρ δοξα Κυριου ου επι σε ανετειλε

π ρ χορευε νυν και α γαλλουσιων συ υ δε Α γνη η

τερ που Θεο το ο κε εν τη ε γερσει του το ο

κου σου π ρ

Μεγαλυνον ψυχη ημου του εξα να στα αν

τα τρι η μερονεκτα αφου Χριστον τον Ζωοδοτην π ρ



**Φ** ω τι ζου φω τι ι ζου η νε α Ι ε ρου σα

λημ **Δ** η γαρ δο ξα Κυ ρι ι ουου ε πι σε α νε τει λε

**π** χο ρευ ε νυν και α γαλ λου σι ων συ υ δε Α γνη η

τερ που **Θ** ε ο το ο κε **Δ** εν τη ε γερ σει του το ο

κου σου **π**

**Χ** ρι στος το και νον Πα σχα το ζω ο θυ τον θυ υ μα

Α μνος **Θ** ε ου ο αι αι ρων την α μαρ τι αν κο σμου **π**

**Ω** θει ας ω φι ι λης ω γλυ κυ τα της σου φωνης **π**

μεθ η μων α ψευ δω ως γαρ ε πηγ γει λω ε σε σθαι **π**

με χρι τερ μα των αι ω νος Χρι στε **Δ** η ην οι πι στοι

αγ κυραν ελ πι ι δος **Δ**κα τε χοντες α γαλ λο ο με

**π**  
θα **9**

**Σ** η με ρον πα σα κτι σις α γαλ λεται και χαι αι ρει **Δ**

ο τι Χρι στος α νε ε στη και Α δης ε σκυ λευ θη **π**  
**9**

**Ω** θει ας ω φι ι λης ω γλυ κυ τα της σου φωνης **π**  
**9**

μεθ η μων α ψευ δω ως γαρ ε πηγ γει λω ε σε σθαι **π**  
**9**

με χρι τερ μα των αι ω νος Χρι στε **Δ** η ην οι πι στοι

αγ κυραν ελ πι ι δος **Δ**κα τε χοντες α γαλ λο ο με

**π**  
θα **9**

**Δ** ο ξα Πα τρι και Υι ω και Α γι ω Πνευ μα

τι **Δ**  
**Δ**

**Μ** ε γ α λ υ ν ο ν ψ υ χ η η μ ο υ ο υ τ η ς τ ρ ι σ υ π ο σ τ α α

τ ο υ κ α ι α δ ι α ι ρ ε τ ο υ θ ε ο τ η τ ο ς τ ο κ ρ α τ ο ς **π**  
**π**

**Ω** Π α σ χ α τ ο μ ε ε γ α κ α ι ι ε ρ ω τ α τ ο ν Χ ρ ι

σ τ ε **π** ω σ ο φ ι α κ α ι Λ ο ο γ ε τ ο υ Θ ε ο υ κ α ι δ υ ν α

μ ι ς **π** δ ι δ ο υ η μ ι ν ε χ τ υ π ω τ ε ρ ο ν **Δ** σ ο υ ο υ μ ε τ α σ χ ε ι ν

ε ν τ η α ν ε σ π ε ε ρ ω η μ ε ρ α τ η ς β α σ ι λ η ι ε ι α ς

σ ο υ **π**  
**π**

**Κ** α ι ν υ ν κ α ι α ε ι κ α ι ε ι ς τ ο υ ς α ι ω ν α ς τ ω ν α ι ω

ν ω ν **Α** μ η ν **Δ**  
**Δ**

Χαι ρε Παρ θε νε χαι ρε ε χαι ρε ευ λο γη με ε νη

χαι ρε δε δο ξα σμε νησος γαρ Υι ος α νε στη τρι

η μερος εκ τα φου <sup>π</sup><sub>9</sub>

Ω Πα σχα το με ε γα και ι ε ρω τα τον Χρι

στε <sup>π</sup><sub>9</sub> ω σο φι α και Λο ο γε του Θε ου και δυνα

μις <sup>π</sup><sub>9</sub> δι δου η μιν εκ τυ πω τε ρον <sup>Δ</sup><sub>9</sub> σου ου μετα σχειν

εν τη α νε σπε ε ρω η με ρα της βα σι λει ει ας

σου <sup>π</sup><sub>9</sub>

Γαβριήλ Κουντιάδου

Ἦχος <sup>4</sup>/<sub>9</sub> Πα <sup>5</sup>/<sub>9</sub>

Γαβριήλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
α' ἔκδοσις 1931-1935  
ἐπανεκδοσις 1991 σ.25\*

Μ ε γα λυ νον ψυ χη η μου ου τον ε θε λου σι

ι ως παθοντα και τα φεντα και εξανα

στα αντατρι η μερονετα φου

Φωτιζου φωτιζου ηνεα Ιερουσα

λημη η γαρ δοξα Κυριου επισηα νετειλε

χορευουν και αγαλλουσιων σου δε Αγνη η η

τερπου Θεοτοοκε εντηε γερσει του τοο

κουου σου

Μεγαλυνον ψυχη ημου τον εξαναστα

αντα τριημερον εκταφου Χριστον τον ζωοδοτην

Φωτιζου φωτιζου ηνεα Ιερουσα

λημ **Δ** η γαρ δοξα Κυριου επι σε ανετειλε **π**

χορευουν και αγαλλουσιων **Δ** σου δε Αγνη η η

τερπου Θεοτοοκε **Δ** εν τη εγερσει του τοο

κου σου **π**

**Χ**ριστος το καινον Πασχατο ζωοοθυτον θυυ

μα **Δ** αμνος Θεου ο αιαιρων την αμαρτιαν κο

σμου **π**

**Ω**θειας ωφιλης **π** ωγλυκυτατης σου φω

νης **Δ** μεθ ημων αψευδως γαρ επηγγειλωε σε

σθαι **π** μεχριτερματων αιωνων Χριστε **Δ** ηνοιπι

στοι οι οι αγ κυραν ελ πι ι δος **Δ**κα τε χον τες α γαλ λο

ο μεθα **π**<sup>9</sup>

**Σ**η με ρον πα σα κτι σις α γαλ λε ται και χαι αι ρει **Δ**

ο τι Χρι στος α νε στη και α δης ε σκυ λευ θη **π**<sup>9</sup>

**Ω**θει ας ω φι λης **π**<sup>9</sup> ω γλυ κυ τα της σου φω

νης **Δ**μεθ η μων α ψευ δως γαρ ε πηγ γει λω ε σε

σθαι **π**<sup>9</sup> με χρι τερ μα των αι ω ω νος Χρι στε **Δ**ην οι πι

στοι οι οι αγ κυραν ελ πι ι δος **Δ**κα τε χον τες α γαλ λο

ο μεθα **π**<sup>9</sup>

**Δ**ο ξα Πα τρι και Υι ω και α γι ω Πνευ μα τι **Δ**

Με γα λυ νον ψυ χη η μου ου της τρις υ πο στα

α του και α δι αι ρε του θε ο τητος το κρα τος

Ω Πα σχα το με γα και ι ε ρω τα τον Χρι

στε ω σο φι α και Λο γε του Θε ου και δυ ναμια

δι δου η μιν εκ τυ πω τε ρον σου με τα σχει ει ει ν εν τη α

νε σπε ε ρω η με ρα της βα σι λει ει ας σου

Και νυν και α ει και εις τους αι ω νας των αι ω νων

α μην

Χαι ρε Παρ θε νε χαι ρε χαι ρε ευ λο γη με ε νη

χαι ρε δε δο ξα σμε νη σος γαρ Υι ος α νε στη τρι η



μερος εκ τα φου <sup>π ρ</sup>

**Ω** Πα σχα το με γα <sup>π ρ</sup> και ι ε ρω τα τον Χρι

στε <sup>Δ</sup> ω σο φι α και Λο γε του Θε ου και δυ να μεις <sup>π ρ</sup>

δι δου η μιν εκ τυ πω τε ρον σου με τα σχει ει ει ν εν τη α

νε σπε ε ρω <sup>Δ</sup> η με ρα της βα σι λει ει ας σου <sup>π ρ</sup>

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

ᾠδὴ θ'

Ἦχος <sup>λ ρ</sup> Πα

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Πεντηκοστάριον 1983 σ.6\*

ΠΑ

**Μ** ε γα λυ νον ψυ χη μου ου τον ε θε λου σι ι

ως <sup>Δ</sup> πα θον τα και τα φεν τα α και εξ α να σταν

τα τρι η με ρον εκ τα φου <sup>π ρ</sup>

ΜΕΛ

ΠΑ

Φ ω τ ι ζ ο υ φω τ ι ζ ο υ π η ν ε α Ι ε ρ ο υ σα

λημ η γ α ρ δ ο ξ α Κυ ρ ι ο υ ο υ ο υ ε πι σε α νε

τει λε χ ο ρ ε υ ε ν υ ν και α γ α α λ λ ο υ Σ ι ω ν συ υ δε Α

γ η η η η τ ε ρ π ο υ Θε ο τ ο ο κ ε εν τ η ε γ ε ρ σ ει

ΝΗ

ΠΑ

του το ο κου σου

ΠΑ

Μ ε γ α λ υ ν ο ν ψ υ χ η μ ο υ ο υ τ ο ν ε ξ α ν α σ τ α α ν

τα τ ρ ι η μ ε ρ ο ν εκ τ α α φ ο υ Χ ρ ι σ τ ο ν τ ο ν ζ ω ο

ΝΗ ΠΑ

δο την το ίδιο

ΜΕΛ

ΠΑ

Φ ω τ ι ζ ο υ φω τ ι ζ ο υ η ν ε α Ι ε ρ ο υ σα

λημ η γ α ρ δ ο ξ α Κυ ρ ι ο υ ο υ ο υ ε πι σε α νε

τει λε <sup>π ρ</sup> χο ρευ ε νυν και α γα αλλου Σι ων <sup>Δ ρ</sup> συ υ δε Α

γνη η η η τερ που Θε ο το ο κε <sup>Δ ρ</sup> εν τη ε γερ σει

<sup>ΝΗ</sup> του <sup>ΠΑ</sup> το <sup>π ρ</sup> ο κου σου

<sup>ΠΑ</sup> Χ ρι στος το και νον Πα α σχα το ζω ο ο θυ τον

θυ υ μα <sup>Δ ρ</sup> α μνος Θε ου ο αι αι ρων την α μαρ

<sup>ΝΗ</sup> τι <sup>ΠΑ</sup> αν κο σμου <sup>π ρ</sup>

<sup>ΝΗ</sup> <sup>ΠΑ</sup> Ω θει ας ω φι ι λης ω γλυ κυ τα της σου φωνης <sup>π ρ</sup>

μεθ η μων α ψευ δω ως γα α αρ ε πηγ γει λω ε σε

<sup>π ρ</sup> σθαι <sup>π ρ</sup> με χρι τερ μα των αι ω νος Χρι στε <sup>Δ ρ</sup> η η ν οι πι

στοι οι οι οι αγ κυραν ελ πι ι δος <sup>Δ ρ</sup> κα τε χον τες α

ΝΗ

γαλ λο ο με θα <sup>π ρ</sup>

ΠΑ

Σ η με ρον πα σα κτι σις α γαλ λε ται και χαι αι ρει <sup>Δ ρ</sup>

ΝΗ ΠΑ

ο τι Χρι στος α νε ε στη και Α δης ε σκυ λευ θη <sup>π ρ</sup> το ἴδιο

Ω θει ας ω φι ι λης ω γλυ κυ τα της σου φωνης <sup>π ρ</sup>

μεθ η μων α ψευ δω ως γα α αρ ε πηγ γει λω ε σε

σθαι <sup>π ρ</sup> με χρι τερ μα των αι ω νος Χρι στε <sup>Δ ρ</sup> η ην οι πι

στοι οι οι οι αγ κυραν ελ πι ι δος <sup>Δ ρ</sup> και τε χον τες α

ΝΗ

γαλ λο ο με θα <sup>π ρ</sup>

ΠΑ

Χ Δ ο ξα Πα τρι και Υι ω <sup>Χ Δ ρ</sup> και α γι ω Πνευ

μα τι <sup>Δ ρ</sup>

**Μ** ε γα λυ νον ψυ χη μου ου της τρις υ πο στα α

του <sup>Δ</sup> και α δι αι ρε ε του Θε ο τητος το κρα τος <sup>π</sup>

**Ω** Πα σχα το με ε γα <sup>γ</sup> και ι ε ρω τα τον Χρι

στε <sup>π</sup> ω σο φι α και Λο ο γε ε του Θε ου και δυνα

μις <sup>π</sup> δι δου η μιν εκτυ πω τε ρον <sup>Δ</sup> σου ου μετα χει ει

ει ει ν εν τη α νε σπε ε ρω η με ρα της βα σι λει ει

<sup>π</sup> ας σου <sup>π</sup>

<sup>π</sup> **Κ** αι νυν και α ει <sup>χ</sup> και εις τους αι ω νας των αι

ωνων α μην <sup>Δ</sup>

**Χ** αι ρε Πα ρ θε νε χαι ρε χαι ρε ευ λο γη με ε νη <sup>Δ</sup> και

ρε δε δο ξα σμε νησος γαρ Υι ος α νε ε στητρι η

με ρος εκ τα φου <sup>π ρ</sup> τὸ ἴδιο

**Ω** Πα σχα το με ε γα <sup>γ ρ</sup> και ι ε ρω τα τον Χρι

στε <sup>π ρ</sup> ω σο φι α και Λο ο γε ε του Θε ου και δυνα

μις <sup>π ρ</sup> δι δου η μιν εκτυ πω τε ρον <sup>Δ ρ</sup> σου ου μετα σχει ει

ει ει ν εν τη α νε σπε ε ρω η με ρα της βα σι λει ει

ας σου <sup>π ρ</sup>

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Ἦχος  $\frac{4}{\bar{\eta}}$  Πα  $\bar{\chi}$

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.17\*

**Μ** ε γα λυ νον ψυ χη μου τον ε θε λου σι ι ως

πα θον τα και τα φεν τα και εξ α να στα αν τα τρι

η μερον εκ τα φου

Φ ω τι ζου φω τι ζου η νε α Ι ε ρου σα

λημ η γαρ δο ξα Κυ ρι ου ε πι σε α νε τει λε χο

ρευ ε νυν και α γαλ λου Σι ων συ υ δε α γνη η τερ που

Θε ο το ο κε εν τη ε γερ σει του το ο κου ου

σου

Μ ε γα λυ νον ψυ χη μου τον εξ α να στα αν τα τρι

η μερον εκ τα φου Χρι στον τον ζω ο δο την

Φ ω τι ζου φω τι ζου η νε α Ι ε ρου σα

λημ <sup>Δ</sup>η γαρ δοξα Κυριου ε πι σε ανετειλε <sup>π</sup>χο

ρευ ε νυν και α γαλ λου Σι ων <sup>Δ</sup>συ υ δε α γνη η τερ που

Θε ο το ο κε <sup>Δ</sup>εν τη ε γερ σει του το ο κου ου

σου <sup>π</sup>

**Χ**ρι στος το και νον Πα σχα το ζω ο ο θυ τον θυ υ

μα <sup>Δ</sup>α μνος Θε ου ο αι αι ρων την α μαρ τι αν κο ο

σμου <sup>π</sup>

**Ω**θει ας ω φι λης ω γλυ κυ τα της σου φωνης <sup>π</sup>

μεθ η μων α ψευ δω ως γαρ ε πηγ γει λω ε σε

σθαι <sup>Δ</sup>με χρι τερ μα των αι ω ω νος Χρι στε <sup>π</sup>ην οι πι



στοι οι αγ κυραν ελ πι ι δος κα τε χοντες α γαλ λο

ο με ε θα π ρ

η η με ρον πα σα κτι ι σις α γαλ λεται και χαι αι

ρει ο τι Χρι στος α νε ε στη και α δης ε σκυ λευ

θη π ρ

ω θει ας ω φι λης ω γλυ κυ τα της σου φω νης π ρ

μεθ η μων α ψευ δω ως γαρ ε πηγ γει λω ε σε

σθαι με χρι τερ μα των αι ω ωνος Χρι στε ην οι πι π ρ

στοι οι αγ κυραν ελ πι ι δος κα τε χοντες α γαλ λο

ο με ε θα π ρ

Δ ο ξα Πα τρι και Υι ω και α γι ω Πνευ μα τι

Μ ε γα λυ νον ψυ χη η μου ου της τρις υ πο στα α

του και α δι αι ρε ε του Θε ο τητος το κρα τος

Ω Πα σχα το με ε γα και ι ε ρω τα τον Χρι

στε ω Σο φι α και Λο γε του Θε ου και δυ να μιν

δι δου η μιν εκ τυ πω τε ρον σου ου μετασχειν εν τη

α νε σπε ρω η με ρα της βα σι λει ει α ας σου

Κ αι νυν και α ει και εις τους αι ω νας των αι ω νων

Α μην

Χ αι ρε Πα ρ θε νε χαι αι ρε και ρε ευ λο γη με ε

νη <sup>Δ</sup>χαι ρε δε δο ξα σμε νη <sup>Δ</sup>σο ο ος γαρ Υι ος α

νε στητρι η μερος εκ τα φου <sup>π</sup>ϩ

<sup>Ω</sup> Πα σχα το με ε γα και ι ε ρω τα τον Χρι

στε <sup>π</sup>ϩ ω Σο φι α και Λο γε του Θε ου και δυ να μιν <sup>π</sup>ϩ

δι δου η μιν εκ τυ πω τε ρον σου ου μετασχειν <sup>Δ</sup> εν τη

α νε σπε ρω η με ρα της βα σι λει ει α ας σου <sup>π</sup>ϩ

### ὠδὴ θ', (κανὼν τῆς Θεοτόκου)

<sup>ἦ</sup>χος α'

Δόξα Πατρὶ καὶ Υἱῷ καὶ ἀγίῳ Πνεύματι.

Μεγάλυνον, ψυχὴ μου, τῆς τρισυποστάτου καὶ ἀδιαιρέτου θεότητος τὸ κράτος.

Συμφώνως Παρθένε, σὲ μακαρίζομεν πιστοί· Χαῖρε πύλη Κυρίου· χαῖρε πόλις ἔμψυχε· χαῖρε, δι' ἧς ἡμῖν ἔλαμψε, σήμερον φῶς τοῦ ἐκ σοῦ τεχθέντος, τῆς ἐκ νεκρῶν ἀναστάσεως.

Καὶ νῦν καὶ ἀεὶ καὶ εἰς τοὺς αἰῶνας τῶν αἰώνων, ἀμήν.

Χαῖρε, παρθένε, χαῖρε· χαῖρε, εὐλογημένη·  
χαῖρε, δεδοξασμένη, σὸς γὰρ υἶὸς ἀνέστη τριήμερος ἐκ τάφου.

Εὐφραίνου, ἀγάλλου, ἡ θεία πύλη τοῦ φωτός· ὁ γὰρ δύνas ἐν τάφῳ, Ἰησοῦς ἀνέτειλε, λάμψας ἡλίου φαιδρότερον, καὶ τοὺς πιστοὺς πάντας καταυγάσας, θεοχαρίτωτε Δέσποινα.

Γαβριήλ Κουντιάδου

Ἦχος Ὡ Πα

Γαβριήλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
ἁ' ἔκδοσις 1931-1935  
ἐπανέκδοσις 1991 σ.196\*

Δοξα Πατρι και Υιω και αγιω Πνευματι

Μεγαλυνον ψυχη ημου ου της τρισυποστα

α του και αδιαιρετου θεοτητος τοκρατος


Συμφως Παρθενεσε μακαριζομεν πι

στοι και ρε πυλη Κυριου και ρε πολισ εμψυχε

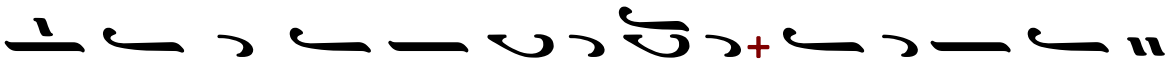
και ρε διης ημιν ελαμψεση ημερον φωως του



εξ σου τε χθε εντος της εκνεκρων αναστα ασεως



Και νυν και αι και εις τους αιωνων αιωνων



α μην 

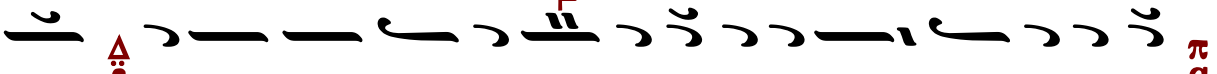




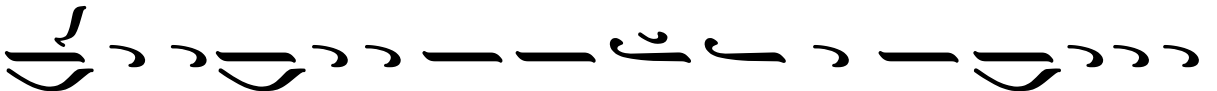
  
Χαι ρε Παρ θε νε χαι ρε χαι ρε ευ λο γη με ε

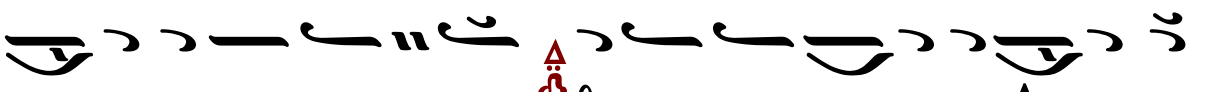

  
νη  χαι ρε δε δο ξα σμε νη σος γαρ Υι ος α νε στη

  
τρι η μερος εκ τα φου 

  
Ε υ φραι νου α γαλ λου  η θει α πυ λη του φω

  
τος  ο γαρ δυ νας εν τα α φω Ι η σους α νε τει λε 

  
λαμ ψας η λι ου φαι δρο τε ρον και τους πι στου ου ου ους

  
παν τας κα ταυ γα α σας  θε ο χα ρι τω τε Δε ε σποι

  
να 

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Ἦχος ᾠ Πα ᾠ

Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
πρ. Κων. Παπαγιάννη  
2005 σ.219#

Δ ο ξα Πα τρι και Υι ω και Α γι ω Πνευ μα

τι <sup>Α</sup> <sub>Δ</sub>

Μ ε γα λυ νον ψυ χη η μου ου της τρις υ πο στα α

του και α δι αι ρε του θε ο τητος το κρα τος <sup>π</sup> <sub>9</sub>

Σ υμ φω νως Παρ θε νε <sup>ν</sup> <sub>Δ</sub> σε μα κα ρι ζο μεν πι

στοι <sup>π</sup> <sub>9</sub> χαι ρε πυ λη Κυ ρι ου <sup>Α</sup> <sub>Δ</sub> χαι ρε πο λις εμ ψυ χε

<sup>π</sup> <sub>9</sub> χαι ρε δι ης η μι ν ε ε λαμ ψε ση με ρον φως <sup>Α</sup> <sub>Δ</sub>

του εκ σου τε χθε εν τος της εκ νε κρων α να στα α σε ε

ως <sup>π</sup> <sub>9</sub>

Και νυν και α ει και εις τους αι ω νας των αι ω

νων Α μην

Χαι ρε Παρ θε νε χαι ρε ε χαι ρε ευ λο γη με ε νη

χαι ρε δε δο ξα σμε νησος γαρ Υι ος α νε στη τρι

η μερος εκ τα φου

Ε υ φραι νου α γαλ λου η θει α πυ λητου φωτος

ο γαρ δυ νας εν τα φω Ι η σους α νε τει λε λαμ

φας η λι ου φαι δρο τε ρον και τους πι στου ους παν

τας κα ταυ γα α σας θε ο χα ρι τω τε Δε ε

σποι οι να

# Καταβασία θ' φδῆς, Σύντομος

ἦχος α'

Ὁ ἄγγελος ἐβόα τῇ κεχαριτωμένῃ·

Ἄγνη Παρθέने, χαῖρε, καὶ πάλιν ἐρωῦ· Χαῖρε· ὁ σὸς Υἱὸς ἀνέστη τριήμερος ἐκ τάφου.

Φωτίζου, φωτίζου ἡ νέα Ἱερουσαλήμ· ἡ γὰρ δόξα Κυρίου ἐπὶ σὲ ἀνέτειλε. Χόρευε νῦν, καὶ ἀγάλλου Σιών· σὺ δὲ ἄγνή, τέρπου, Θεοτόκε, ἐν τῇ ἐγέρσει τοῦ τόκου σου.

ἦχος πλ.α'

Χριστὸς ἀνέστη ἐκ νεκρῶν, θανάτῳ θάνατον πατήσας, καὶ τοῖς ἐν τοῖς μνήμασι, ζωὴν χαρισάμενος. γ'

Ἀναστὰς ὁ Ἰησοῦς ἀπὸ τοῦ τάφου καθὼς προεῖπεν, ἔδωκεν ἡμῖν τὴν αἰώνιον ζωὴν καὶ μέγα ἔλεος.

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Γαβριὴλ Κουντιάδου

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

## Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

ἦχος ᾠ Πα

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.377#

Ο αγ γε λος ε βο ο α τη κε χα ρι τω με ε  
νη α γνη Παρ θε νε χαι αι ρε και πα λιν ε ρω χαι  
αι ρε ο σος Υι ος α νε ε στη τρι η μερος εκ  
τα φου π ρ



**Φ** ω τι ζου φω τι ι ι ζου η νε α Ι ε ρου σα

λημ η γαρ δο ξα Κυ ρι ι ου ε πι σε α νε τει λε π ρ

χο ρευ ε νυ υ υν και α γαλλου Σι ων Α συ υ δε α γνη η

τερ που Θε ο το ο κε εν τη ε γερ σει του το ο

κου ου \* σου π ρ

\* σου ου ου ου π ρ

**Χ** ρι στος α νε στη εκ νε κρων θα να τω θα να τον πα τη

η σας Α και τοις εν τοις μνημα σι ζω ην χα ρι σα με νος π ρ

**Χ** ρι στος α νε στη εκ νε κρων θα να τω θα να τον πα

τη η σας Α και τοις εν τοις μνη μα σι ζω ην χα ρι

σα με νος π ρ

**Χ** ρι στος α νε στη εκ νε κρων θα να τω θα να τον  
πα τη η σας **Δ** και τοις εν τοις μνη μα σι ζω ην χα ρι  
σα με νος **π**  
**9**

**Α** να στας ο Ι η σους α πο του τα α φου κα  
θως προ ει ει πεν **Δ** ε δω κεν η μιν την αι ω νι ον ζω ην  
και με γα ε λε ο ο ος **π**  
**9**

Γαβριήλ Κουντιάδου

Ἦχος **4** Πα **5**

Γαβριήλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκостάριον  
α' ἔκδοσις 1931-1935  
ἐπανεκδοσις 1991 σ.28\*

**Ο** αγ γε λος ε βο ο α τη Κε χα ρι τω με ε  
νη **Δ** α γνη Παρ θε νε χαι ρε και πα λιν ε ρω χαι αι ρε **Δ**  
ο σος Υι ος α νε στη τρι η με ρος εκ τα φου **π**  
**9**

Φ ω τ ι ζ ο υ φ ω τ ι ζ ο υ <sup>π ρ</sup> η ν ε α Ι ε ρ ο υ σ α

λ η μ <sup>Δ</sup> η γ α ρ δ ο ξ α Κ υ ρ ι ο υ ε π ι σ ε α ν ε τ ε ι λ ε <sup>π ρ</sup>

χ ο ρ ε υ ε ν υ ν κ α ι α γ α α λ λ ο υ Σ ι ω ν <sup>Δ</sup> σ υ δ ε Α γ γ η η η

τ ε ρ π ο υ Θ ε ο τ ο ο κ ε <sup>Δ</sup> ε ν τ η ε γ ε ρ σ ε ι τ ο υ τ ο ο

κ ο υ ο υ σ ο υ <sup>π ρ</sup>

<sup>\*</sup> σ ο υ ο υ ο υ ο υ <sup>π ρ</sup>

Χ ρ ι σ τ ο ς α ν ε σ τ η ε κ ν ε κ ρ ω ν θ α ν α τ ω θ α ν α τ ο ν π α

τ η η σ α ς <sup>Δ</sup> κ α ι τ ο ι ς ε ν τ ο ι ς μ η η μ α σ ι ζ ω η ν χ α ρ ι

σ α α μ ε ν ο ς <sup>π ρ</sup> (γ')

Α ν α σ τ α ς ο Ι η σ ο υ ς α π ο τ ο υ τ α φ ο υ κ α θ ω ς

π ρ ο ε ι ε ι π ε ν <sup>Δ</sup> ε δ ω κ ε ν η μ ι ν τ η ν α ι ω ν ι ο ν ζ ω

ην και με γα ε λε ο ο ος π ρ

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

Ήχος ρ Πα

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Πεντηκοστάριον 1983 σ.9\*

ΠΑ  
Ο Αγ γε λος ε βο ο ατη Κε χα ρι τω με

ΔΙ ΠΑ  
ε νη α γνη Παρ θε νε χαι αι ρε και πα λιν ε ρω χαι αι

ΝΗ ΠΑ ΝΗ  
ρε ο σος Υι ος α νε ε στη τρι η με ρος εκ τα

ΠΑ  
φου π ρ

ΜΕΛ ΠΑ  
Φ ω τι ζου φω τι ζου η νε α Ι ε ρου σα

λημ η γαρ δο ξα Κυ ρι ι ου ουου ε πι σε α νε

π ρ  
τει λε χο ρευ ε νυν και α γα αλλου Σι ων συ υ δε Α

γνη η η η τερ που Θε ο το ο κε εν τη ε γερ σει

του το ο κου σου

κου ου σου ου ου ου

Χ ρι στος α νε στη εκ νε κρων θα να τω θα να τον

πα τη η σας και τοις εν τοις μνη μασι ζω ην χα ρι

σα α με νος

α να στας ο Ι η σους α πο του τα φου κα θως

προ ει ει πεν ε δω κεν η μιν την αι ω νι ον

ζω ην και με γα ε λε ο ο ος

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Ἦχος ᾠ Πα ᾠ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.20#

**Ο** α γ γ ε λ ο ς ε β ο ο α τ η Κ ε χ α ρ ι τ ω μ ε

ε ν η α γ ν η Πα ρ θε νε χ αι αι ρ ε και πα λ ι ν ε ρ ω ω

χ αι αι ρ ε ο σο ς Υ ι ο ς α νε ε σ τ η τ ρ ι η μ ε ρ ο ς εκ

τα φ ου

**Φ** ω τ ι ζ ο υ φω τ ι ζ ο υ η νε α Ι ε ρ ο υ σα

λη μ η γ α ρ δ ο ξ α Κυ ρ ι ο υ ε πι σε α νε τ ει λε χ ο

ρ ευ ε ν υ ν και α γ α λ λ ο υ Σ ι ω ν σ υ υ δε α γ ν η η τ ε ρ π ο υ

Θ ε ο τ ο ο κ ε εν τ η ε γ ε ρ σ ει τ ο υ τ ο ο κ ο υ ο υ

σου

**Χ** ρ ι σ τ ο ς α νε σ τ η εκ νε κ ρ ω ν θ α να τ ω θ α να τ ο ν

πα τη η σας και τοις εν τοις μνημασι ζωην χαρι

σα α με ε νος (γ)

να στας ο Ι η σους α πο του τα α φου κα θως

προ ει ει πεν ε δω κεν η μιν την αι ω νι ον ζωην

και με γα ε λε ο ο ος

## Τῆς Κυριακῆς τοῦ Θωμᾶ

Από τῆς Κυριακῆς τοῦ Πάσχα μέχρι τοῦ Σαββάτου πρό τῆς Κυριακῆς τοῦ Τυφλοῦ, ἐκτός τῆς Μεσοπεντηκοστῆς. Ψάλλονται ὡσαύτως καί ἐν τῇ ἀποδόσει τοῦ Πάσχα, ἤτοι τῇ Τετάρτῃ πρό τῆς Ἀναλήψεως.

### ἤχος α'

- α **Ἀ**ναστάσεως ἡμέρα λαμπρυνθῶμεν λαοί, Πάσχα Κυρίου, Πάσχα· ἐκ γὰρ θανάτου πρὸς ζωὴν, καὶ ἐκ γῆς πρὸς οὐρανόν, Χριστὸς ὁ Θεός, ἡμᾶς διεβίβασεν, ἐπινίκιον ἄδοντας.
- γ **Δ**εῦτε πόμα πίνωμεν καινόν, οὐκ ἐκ πέτρας ἀγόνου τερατουργούμενον, ἀλλ' ἀφθαρσίας πηγῆν, ἐκ τάφου ὀμβρήσαντος Χριστοῦ, ἐν ᾧ στερεούμεθα.
- δ **Ἐ**πὶ τῆς θείας φυλακῆς ὁ θεηγόρος Ἀββακούμ, στήτω μεθ' ἡμῶν καὶ δεικνύτω, φασφόρον ἄγγελον, διαπρυσίως λέγοντα· Σήμερον σωτηρία τῷ κόσμῳ, ὅτι ἀνέστη Χριστὸς ὡς παντοδύναμος.
- ε **Ὁ**ρθρίσωμεν ὄρθρου βαθέος, καὶ ἀντὶ μύρου τὸν ὕμνον προσοίσομεν τῷ Δεσπότη, καὶ Χριστὸν ὀψόμεθα, δικαιοσύνης ἥλιον, πᾶσι ζωὴν ἀνατέλλοντα.
- ς **Κ**ατῆλθες ἐν τοῖς κατωτάτοις τῆς γῆς, καὶ συνέτριψας μοχλοὺς αἰωνίους, κατόχους πεπεδημένων Χριστέ, καὶ τριήμερος ὡς ἐκ κήτους Ἰωνᾶς, ἐξανέστης τοῦ τάφου.
- ζ **Ὁ** παῖδας ἐκ καμίνου ρυσάμενος, γενόμενος ἄνθρωπος, πάσχει ὡς θνητός, καὶ διὰ πάθους τὸ θνητόν, ἀφθαρσίας ἐνδύει εὐπρέπειαν, ὁ μόνος εὐλογητὸς τῶν πατέρων, Θεὸς καὶ ὑπερένδοξος.

Αἰνοῦμεν, εὐλογοῦμεν, καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον.

- η **Α**ὕτη ἡ κλητὴ καὶ ἁγία ἡμέρα, ἡ μία τῶν Σαββάτων, ἡ βασιλὶς καὶ κυρία, ἐορτῶν ἐορτῆ, καὶ πανηγυρις ἐστὶ πανηγύρεων, ἐν ᾗ εὐλογοῦμεν, Χριστὸν εἰς τοὺς αἰῶνας.

|          |                             |       |
|----------|-----------------------------|-------|
| Σύντομοι | ☞ Ἰωάννου Πρωτοψάλτου ☞     | Ἀργαί |
| Σύντομοι | ☞ Γαβριὴλ Κουντιάδου ☞      | Ἀργαί |
| Σύντομοι | ☞ Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου ☞ | Ἀργαί |
| Σύντομοι | ☞ Κωνσταντίνου Παπαγιάννη ☞ | Ἀργαί |

## Σύντομοι

### Ἰωάννου Πρωτοψάλτου



Α να στα σε ως η με ρα λαμ πρυν θω μεν λα

οι Πα α σχα Κυ ρι ου Πα α σχα εκ γαρ θα να του πρως

ζω ην <sup>Α</sup>δ και εκ γης προς ου ρα νον Χρι στο ος ο Θε ος η

μας δι ε βι βα σεν ε πι νι κι ον α α δο ον τας <sup>π</sup>ϩ ᾠδὴ γ'

Δ ευ τε πο μα πι ω μεν και νον ουκ εκ πε τρας α γο ο

νου τε ρα του ρ γου με νον <sup>π</sup>ϩ αλλ α φθα ρ σι ας πη γην <sup>Α</sup>δ

εκ τα φου ομ βρι σαν τος Χρι στου <sup>π</sup>ϩ α' χορός εν ω στε ρε

ου ου με ε θα <sup>π</sup>ϩ ᾠδὴ δ'

Ε πι της θει ας φυ λα κης ο θε η γο ρος Αβ βα

κουμ **Δ**στη τω μεθ η μων και δει κνυ υ τω **Δ**φα εσ φο ρον

αγ γε λον δι α πρυ σι ως λε γοντα **π**ση με ρον σω τη

ρι α τω κο ο σμω **Δ**ο τι α νε ε στη Χρι στος ως παν

το δυ υ να α μος **π** ὠδὴ ε'

**Ο** ρ θρι σω μεν ορ θρου βα θε ος **Δ** και αν τι μυ

ρου τον υ μνον προ σοι οι σο μεν τω δε σπο ο τη **π** και

Χρι στον ο ψο μεθα δι και ο συ νης η λι ον **Δ** πα σι ζω

ην α να τε ελλο ον τα **π** ὠδὴ ς'

**Κ** α τηλ θες εν τοις κα τω τα τοις της γης και συν ε

τρι ψας μο χλου ος αι ω νι ι ος κα το ο χους πε

πε δη με εων Χρι στε καιτρι η μερος ως εκ κη τους Ι

ω να ας εξ α νε στης του τα αφου <sup>π ρ</sup> ῶδὴ ζ'

**Ο** παι αι δας εκ κα μι νου ρυ σα μενος γε νο ο με

νος αν θρωπος <sup>π ρ</sup> πα σχει ως θνη τος και δι α πα θους το θνη

τον <sup>Δ δ</sup> α φθαρ σι ας εν δυ υ ει ευ πρε πει αν <sup>π ρ</sup> ο μο νος ευ

λο γη τος των πα τε ε ρων <sup>Δ δ</sup> Θε ος και υ πε ρε εν

δο ο ξος <sup>π ρ</sup> ῶδὴ η'

**Α** ι νου μεν ευ λο γου μεν και προ σκυ νου μεν τον

Κυ ρι ον <sup>Δ δ</sup>

**Α** υ τη η κλη τη η και α γι α η με ε ρα

η μι α των Σαβ βα α των η βα σι λισ και κυ ρι α  
 ε ορ των ε ορ τη και παν η γυ ρις ε στι ι  
 παν η γυ ρεων εν η ευ λο γου ουμεν Χρι στον εις τους αι  
 ω ω να α ας π ρ

Γαβριήλ Κουντιάδου

Καταβασίαι τοῦ Πάσχα  
ᾠδὴ α'

Ἦχος ᾠ Πα

Γαβριήλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
α' ἔκδοσις 1931-1935  
ἐπανέκδοσις 1991 σ.14\*

α να στα σε ως η με ρα λαμ πρυν θω μεν λα  
 οι Πα α σχα Κυ ρι ου Πα σχα εκ γαρ θα  
 να του προς ζω ην και εκ γης προς ου ρα νον Χρι  
 στο ος ο Θε ος η μα ας δι ε βι βα σεν ε πι νι

κιον ααδοοντας π ρ

ψδὴ γ'

Δευτεπομαπιωμενκαινον Δ ουκ εκπετραςαγο

ονουτερατουργουμενον π ρ αλλαφθαρσιασπη

γην Δ εκτααφουομβρισαντοςΧριστου Δ α' χορός ενωστε

ρεουουμεεθα π ρ

ψδὴ δ'

ΕπιτηςθειαςφυλακηςοθεηγοροςΑββα

κουμ Δ στητωμεθημωνκαιδεικνυυτω Δ φαεσφορον

αγγελον π ρ διαπρυσιωςλεγοντα π ρ σημερονσω

τηριατωκοοσμω Δ οτιανεστηΧριστοςως

παντοδυνααμος π ρ

ψδὴ ε'

**Ο** ρ θρι σω μεν ορ θρου βα θε ε ως **Δ** και αν τι

μου ρου τον υ μνον προσ οι οι σο μεν τω **π** Δε σπο τη

και Χρι στον ο ψο μεθα δι και ο συ νης η λι ον **Δ**

πα σι ζω ην ανα τε ελλο ον τα **π** *ῥδὴς'*

**Κ** α τη ηλ θες εν τοις κα τω τα α τοις της γης **π** και

συν ε τρι ψας μο χλους αι ω νι ι ους **Δ** και το χους

πε πε δη με ε νων Χρι στε **π** και τρι η μερος ως εκ κη

τους Ι ω νας **Δ** εξ α νε ε στης του τα φου **π** *ῥδὴς'*

**Ο** παι αι δας εκ κα μι νου ρυ σα μενος **Δ** γε νο μενος

αν θρω πος **π** πα σχει ως θνη τος και δι α πα θους το θνη

τον <sup>Δ</sup>α φθαρ σι ας εν δυ ει ευ πρε πει αν <sup>π</sup>ο μο νος

ευ λο γη τος των πα τε ε ρων <sup>Δ</sup>Θε ος και υ περ ε εν

δο ο ξος <sup>π</sup> ὠδή η'

<sup>Δ</sup>ι νου μεν ευ λο γου μεν και προ σκυ νου μεν τον

Κυ ρι ον <sup>Δ</sup> <sup>π</sup>

<sup>Δ</sup>υ τη η κλη τη και α γι α η με ε ρα <sup>Δ</sup> η

μι α των Σαβ βα α των η βα σι λι ις και κυ ρι α <sup>π</sup> ε

ορ των ε ορ τη <sup>Δ</sup> και παν η γυ ρις ε στι παν η γυ ρε

ων <sup>π</sup> εν η ευ λο γου ου μεν Χρι στον εις τους αι ω νας <sup>π</sup>

<sup>\*</sup> να α α ας <sup>π</sup>

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

Καταβασίαι τοῦ Πάσχα  
ᾠδὴ α'

Ἦχος ᾠ Πα

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Πεντηκοστάριον 1983 σ.103\*

ΠΑ  
Α να στα σε ως η με ρα λαμ πρυν θω μεν λα

οι Πασχα Κυ ρι ου Πασχα εκ γαρ θα

να του προς ζω ην και εκ γης προς ουρα νον Χρι στο ος

ΠΑ  
ο Θε ος η μα ας δι ε βι βα σεν ε πι

ΝΗ ΠΑ  
νι κι ον α α δο ον τας

ΠΑ  
Δ ευ τε πο μα πι ω μεν και νον ουκ εκ πε τρας α γο

ΝΗ ΠΑ  
ο νου τε ρα τουρ γου με νον αλλ α φθαρ σι ας πη

γην εκ τα φου ομ βρη σαν τος Χρι στου α' χορός εν ω

ᾠδὴ γ'



στε ρε ου ουμε ε θα <sup>π</sup>ϑ

ψδὴ δ'

<sup>ΠΑ</sup>  
**Ε**πι της θει ας φυ λα κης ο θε η γο ρος Αβ βα

κουμ <sup>Δ</sup>δ̣ στη τω μεθ η μων και δει κνυ υ τω <sup>Δ</sup>δ̣ φα ε σφο ρον

<sup>ΔΙ</sup> <sup>ΠΑ</sup>  
αγ γε λον δι α πρυ σι ως λε γον τα <sup>π</sup>ϑ ση με ρον σω τη

<sup>ΔΙ</sup> <sup>ΠΑ</sup>  
ρι α τω κο ο σμω <sup>Δ</sup>δ̣ ο τι α νε ε στη Χρι στος ως

<sup>ΝΗ</sup>  
παν το δυ υ να α μος <sup>π</sup>ϑ

ψδὴ ε'

<sup>ΠΑ</sup>  
**Ο**ρ θρι σωμεν ορ θρου βα θε ε ος <sup>Δ</sup>δ̣ και αν τι μυ

<sup>ΝΗ</sup> <sup>ΠΑ</sup>  
ρου τον υ μνον προσ οι σο μεν τω Δε σπο τη <sup>π</sup>ϑ και Χρι

<sup>ΔΙ</sup> <sup>ΠΑ</sup>  
στον ο ψο μεθα δι και ο συ νης η λι ον <sup>Δ</sup>δ̣ πα σι ζω

<sup>ΝΗ</sup> <sup>ΠΑ</sup>  
ην α να τε ελ λο ον τα <sup>π</sup>ϑ

ψδὴ ε'

ΠΑ

Κ α τηλ θες εν τοις κατωτατοις της γης και συν

ε τριψασμοχλους αι ω νι ι ους κα τοχουςπεπεδη

ΜΕΛ

ΝΗ

ΠΑ

μενων Χρι στε και τρι η με ρος ως εκ κη τους

ΝΗ

ΠΑ

Ι ω νας εξα νε εστης του τα φου

ΔΙ

ΠΑ

Ο παι αι δας εκ κα μι νου ρυ σα μενος γε νο με

ΜΕΛ

ΠΑ

νος αν θρω πος πα σχει ως θνη τος και δι α πα

ΝΗ

θους το θνη τον αφθαρ σι ας εν δυ υ ει ευ πρε πει

ΠΑ

αν ο μο νος ευ λο γη τος των πα τε ε ρων θε


ΝΗ



ΠΑ


ος και υ περ ε ενδο ο ξος




ΠΑ



Α ι νου μεν ευ λο γου μεν προσ κυ νου μεν τον Κυ



ρι ον 

  
Αυτη η κλητη η και αγια η μεερα 

  
η μι α των Σαββα α των η βασι λισ και κυ ρι

  
α  ε ορ των ε ορ τη  και παν η γυ ρις ε


  
στι ι παν η γυ ρε ων  εν η ευ λο γου ου μεν Χρι




  
στον εις τους αι ω να α α ας 




Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Ἦχος  $\frac{4}{\bar{q}}$  Πα  $\bar{\chi}$

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.5\*

  
Ανα στα σε ως η μερα λαμ πρυν θω μεν λα

  
οι  Πα α σχα Κυ ρι ου Πα σχα  εκ γαρ θα να

  
του προς ζω ην  και εκ γης προς ου ρα νον  Χρι στο

ος ο Θεος η μαας διε βι βασεν <sup>Δ</sup>επι νικι

ον ααδοον τας <sup>π</sup> ψδὴ γ'

<sup>Δ</sup>ευ τε πομαπι ωμεν και νον <sup>Δ</sup>ουκ εκ πε τρας α γο

ο νου τε ρα τουρ γου με νον <sup>π</sup> αλλ α φθαρ σι ας πη

γην <sup>Δ</sup>εκ τα φου ομ βρη σαν τος Χρι στου <sup>π</sup> χορδς α' εν

ω στερε ου ουμε ε θα <sup>π</sup> ψδὴ δ'

<sup>Ε</sup>πι της θει ας φυ λα κης ο θε η γο ρος Αβ βα

κουμ στη τω μεθ η μων <sup>π</sup> και δει κνυ τω φα εσ φο ρον αγ

γελον διε α πρυ σι ως λεγοντα <sup>π</sup> ση με ρον σω τη ρι α

τω κο ο σμω <sup>Δ</sup>ο τι α νε ε στη Χρι στος ως παν το

δουνααμος π9

ψδηε'

Ορθρισωμεν ορθου βαθεεος και αν τι μου

ρου τον υμνον προσοισομεν τω Δεσποτη και Χρι

στον οψομεθα δι και οσυνης ηλιον πασι ζω

ην ανατε ελλοοντα π9

ψδηζ'

Κατη ηλθες εν τοις κατωτατοις της γης και

συνετριψας μοχλους αιωνιιους και τοχους πε

πεδημε ενων Χριστε και τριημερος ως εκχη

τους Ιωνας εξανεεστης του ταφου π9

ψδηζ'

Οπαιαιδας εκκαμινου ρυσαμενος γενομενος

αν θρωπος πα σχειως θνη τος και δι α πα θους το

θνη τον α φθαρ σι ας εν δυ υ ει ευ πρε πει αν ο μο

νος ευ λο γη τος των πα τε ε ρων Θε ος και υ περ

ε εν δο ο ξος

ᾠδὴ η'

Δ ι νου μεν ευ λο γου μεν και προ σχυ νου μεν τον

Κυ ρι ον

Δ υ τη η κλη τη και α γι α η με ε ρα η

μι α των σαβ βα α των η βα σι λι ις και κυ ρι α

ε ορ των ε ορ τη και πα νη γυ ρις ε στι

ι πα γη γυ ε ρων εν η ευ λο γου ου μεν Χρι στον εις τους

αι ω νας π 9

# Αργαί

## Ιωάννου Πρωτοψάλτου

Καταβασίαι του Πάσχα  
ψδὴ α΄

Ἦχος ♪̣̣̣ Πα̣̣̣

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Ειρμολόγιον 1903 σ.21#

Α να στα α σε ως η με ε ρα λαμ πυ υ υν  
 θω ω ω ω με εν λα α α οι Πα α α α σχα α  
 Κυ ρι ι ου ου Πα α α σχα α εκ γαρ θα  
 να α α του προς ζω ω ην και εκ γης προ  
 ος ου ου ρα νο ον Χρι ι στο ο ο ο ος ο  
 ο Θε ε ε ος η μα α α ας δι ι ε  
 ε ε βι ι βα α α σεν ε πι ι νι κι ι ο

ον α α α α α δο ο ο ον τας π ρ ῥῶδὴ γ'

Δ ε ευ τε πο μα πι ι ι ω μεν και αι αι νο ον Δ ουκ

εχ πε τρα ας α α γο ο ο νου Δ τε ε ε ρα

τουρ γου ου με ε νο ον Δ αλλ α φθαρ σι ι ι ας πη η

γην Δ εκ τα α φου ομ βρη η σαν τος Χρι ι στου Δ χορὸς α'

ε ε ε νω στε ρε ε ου ου ου ου με ε ε ε

π ρ  
θα

ῥῶδὴ δ'

Ε πι της θει ει ει ει α α ας φυ λα α

κης Δ ο ο ο Θε ε η γο ρο ος Α αβ βα α κου ου

ου ουμ Δ στη τω μεθ η η μω ω ων και αι αι δει



κνυ υ υ υ υ τω **Α** φα ε σφο ο ρον **Α** αγ γε ε

λον **Α** δι α α α πρυ υ σι ι ω ως λε ε γο

ο ον τα α **π** ση η με ε ρον **Α** σω ω τη η ρι ι

ι α α α τω κο ο ο ο ο σμω **Α** ο τι α

αν ε ε ε στη Χρι στο ος ως πα αν το ο δυ υ

υ υ υ να α α α **π** ῶδῆ ε'

**Ο** ρ θρι ι σω ω μεν ο ο ο ορ θρου ουου βα θε ε

ε ε ως **π** και αν τι μυ υ υ υ ρου τον υ υ υ

μνο ον προ σοι οι οι οι σο ο μεν τω ω Δε σπο ο ο ο

τη **π** και Χρι στο ον ο ψο ο με ε θα **Α** δι

ι ι και αι ο συ υ νη η ης Η η λι ι ι

ον πασι ζωωωην αα ναα τε ε

ε ε ελ λο ο ο ον τα

Κα τη ηλ θες εν τοις κα τω τα α τοις τη ης

γης και συ υν ε τρι ι ψας μο ο χλου ου ους αι αι

ω ω νι ι ι ου ους κα το ο χους πε

πε ε δη η με ε ε ε ε νω ων Χρι ι ι στε

και τρι ι η με ε ρος ως εκ κη η τους Ι ω ω να

α α α α ας ε ε εξ α α νε ε ε ε στη

η ης του τα α α α α φου

ῶδης'

ῶδης'

Ο Παι αι αι αι δας <sup>χ q</sup> εκ κα μι ι ι νου ρυ σα

α με ε νο ο ο ο ος <sup>Δ</sup> γε νο ο ο ο με ε

νο ος α αν θρω ω ω πο ος <sup>π q</sup> πα α σχει ει ει

ει ει ω ως θνη η τος <sup>Δ</sup> και αι αι δι ι α πα α

θου ου ους το ο θνη η η τον <sup>Δ</sup> αφθαρ σι ι ι ι

α ας <sup>χ q</sup> ε ε εν δυ υ υ υ ει ει ε ευ πρε ε ε

πει ει ει α αν <sup>π q</sup> ο μο ο ο νος ευ λο ο γη η

το ο ος τω ων Πα α τε ε ε ρωων <sup>Δ</sup> Θε

ο ος και υ υ πε ερ ε ε ε ε εν δο ο ο ο

<sup>π q</sup> ξος

ωδὴ η'

α ι νου μεν ευ λο γου μεν προ σκυ νου με

εν τον Κυ υ ρι ι ον

α αυ τη η η κλη η η τη η και αι α α

γι ι ι α α η η με ε ε ρα α η

μι α των Σα αβ βα α α τω ων η Βα σι ι λι ι

ις και αι αι κυ ρι ι ι ι α ε ο ορ των

ε ορ τη η η η και αι πα νη η η η η γυ υ

υ υ υ ρις ε ε ε στι ι ι ι πα α νη η γυ υ ρε

ε ε ω ων εν η η η ε ευ λο ο γου ου ου

με ε εν Χρι ι στο ον εις του ου ους αι ω ω

ω ω ω νας π 9

# Γαβριήλ Κουντιάδου

Καταβασίαι τοῦ Πάσχα  
ἕδῃ α΄  
χρόνος διπλοῦς

Ἦχος 4 Πα

Γαβριήλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
α΄ ἔκδοσις 1931-1935  
ἐπανέκδοσις 1991 σ.142\*

Α να στα α σε ως η με ε ε ρα λαμ

πρυ υ υν θω ω ω ω με εν λα α α οι Πα α α α

σχα α Κυ ρι ι ου ου Πα α α σχα α εκ

γαρ θα να α α του προς ζω ω ην και εκ γης προ

ος ου ου ρα νο ον Χρι ι στο ο ο ο ος ο

ο Θε ε ε ος η μα α α ας δι ι ε

ε ε βι ι βα α α σεν ε ε πι ι νι ι ι

κι ο ον α α α α α δο ο ο ον τας π ρ ψδὴ γ'

Δευ τε πο μα πι ι ι ω μεν και αι νον Δουκ εκ

πε τρα ας α α γο ο ο νου τε ε ε ρα του ουρ

γου ου με ε νο ον Δ αλλ α φθαρ σι ι ι ι ας πη

η η γη ην εκ τα α φου ομ βρη η η σαν τος

Χρι ι στου Δ α' χορός ε ε εν ω ω ω στε ρε ε ου ου

ου ου ου με ε ε ε θα π ρ ψδὴ δ'

Επι της θει ει ει ει α α ας φυ λα α

κης Δ ο ο ο θε ε η γο ρο ος Α αβ βα α

κου ου ου ου ουμ Δ στη τω μεθ η μω ω ων και

αι αι δει ει ει κνυ υ υ υ υ τω φα ε σφο

ο ρον α αγ γε ε λον δι α α α πρυ υ

σι ι ω ω ως λε ε ε γο ο ον τα α ση η με ε

ρον σω τη ρι ι α τω ω κο ο ο σμω ω ο τι

α νε ε ε ε στη Χρι ι στο ος ως πα αν το ο δυ υ

υ υ υ να α α α μος

Ο ρ θρι ι σω ω μεν ο ο ο ορ θρου ουου βα θε ε

ε ε ος και αν τι μυ υ υ υ ρου τον υ υ υ

μνο ον προσ οι οι οι οι σο ο μεν τω ω Δε σπο ο ο

ο τη και Χρι στο ον ο ψο ο με ε θα

δι ι ι και αι ο συ υ νη η ης η η λι ι ι

ον πα α σι ι ζω ω ω ην α α να α

τε ε ε ε ελ λο ο ο ον τα

Κ α τη ηλ θες εν τοις κα τω τα α τοις τη ης

γης και συν ε τρι ι ψας μο ο χλους αι ω νι ι ι

ι ουους κα το ο χους πε πε ε δη η με ε

ε ε ε νω ων Χρι ι ι στε και τρι η με ε ρος

ως εκ κη του ους Ι ω ω νας εξ α νε ε ε

στη η ης του τα α α α φου

Ο παι αι αι αι δας εκ κα μι ι ι νου ρυ υ



σα α με ε νο ος <sup>Δ</sup> γε ε νο ο ο ο με ε νο ος α

α αν θρω ω ω πο ος <sup>π q</sup> πα α σχει ει ει ει ει

ω ως θνη η τος <sup>α Δ η</sup> και αι αι δι ι α πα θου ους το

ο θνη η το ο ο ο ον <sup>Δ</sup> α φθαρ σι ι ι ι

α αν <sup>χ q</sup> ε ε εν δυ υ υ υ ει ει ε ε ευ πρε ε ε

πει ει ει α αν <sup>π q</sup> ο μο ο ο νος ευ λο ο γη

το ος των πα α τε ε ε ρων <sup>Δ</sup> Θε ο ος και υ

υ πε ερ ε ε ε ε εν δο ο ο ο ξος <sup>π q</sup> ῶδὴ ἡ'

<sup>χ</sup> α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου ου ου

με εν το ο ον Κυ υ υ ρι ι ι ο ον <sup>π q</sup>

α αυ τη η η κλη η η τη η η η και αι α

α γι ι ι α α η η με ε ε ρα α

η μι α των Σα αβ βα α α τω ων η βα σι

ι λι ι ις και αι αι κυ ρι ι ι ι α ε ορ

των ε ο ορ τη η η η και αι παν η η η

η η γυ υ υ υ ρις ε ε ε στι ι ι ι πα αν

η η η γυ υ υ ρε ε ε ω ων εν η η η

ε ευ λο γου ου ου με ε εν Χρι ι στο ον εις

του ου ους αι αι αι ω ω ω ω να α α ας

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

ΠΑ ΔΙ  
 Α να στα α σε ως η με ε ε ρα  
 ΠΑ ΔΙ  
 λα αμ πρυ υ υν θω ω ω ω μεν λα α α οι  
 ΔΙ  
 Πα α α α σχα Κυ υ ρι ι ου ου ου Πα α α  
 ΠΑ ΝΗ ΠΑ  
 α σχα α α εκ γαρ θα να α του ου ου προς ζω  
 ΔΙ ΠΑ  
 ην και εκ γης προ ος ου ου ρα α α νο ον Χρι ι  
 ΚΕ ΔΙ  
 στο ο ο ο ος ο Θε ε ε ος η μα α α ας  
 ΔΙ  
 δι ι ε ε ε βι ι ι βα α α σεν ε ε  
 ΜΕΛ ΠΑ  
 πι ι νι ι ι κι ι ι ο ο ον α α α α α  
 Π  
 δο ο ο ον τας

ᾠδὴ γ'



και αι δει ει ει κνυ υ υ υ υ τω φα ε

σφο ο ρο ον α αγγε ε λον δι α α α πρυ υ

σι ι ω ω ως λε ε γο ον τα α ση η με ε ρον σω

τη ρι ι ι ι α α τω ω ω κο ο ο ο ο σμω

ο τι ι ι ι ι α α νε ε ε ε ε στη η Χρι ι ι

στο ο ος ως πα α αν το ο δυ υ υ υ υ να α α

α μος

Ο ρ θρι ι σω ω μεν ο ο ο ορ θρου ουου βα α

α θε ε ε ε ος και αν τι μυ υ υ υ υ ρου

τον υ υ υ υ υ μνο ον προσ οι οι οι οι σο ο με

ΕΝ ΤΩ Ω Ω ΔΕ Ε Ε ΣΠΟ Ο Ο Ο ΤΗ <sup>π ρ</sup> και Χρι

στο ον ο ψο ο με ε θα <sup>Δ</sup> δι ι ι ι και

<sup>ΔΙ</sup> ο συ υ νη η ης η η λι ι ι ον <sup>Δ</sup> πα α α

<sup>ΠΑ</sup> <sup>ΜΕΛ</sup> <sup>ΝΗ</sup> <sup>ΠΑ</sup> σι ι ζω ω ω ην α α α να α α τε ε ε

ε ε λ λ ο ο ο ν τα <sup>π ρ</sup> ὠδὴς'

<sup>ΝΗ</sup> <sup>ΠΑ</sup> <sup>ΚΕ</sup> <sup>ΔΙ</sup> <sup>ΜΕΛ</sup> <sup>π ρ</sup> **Κ** α τη η η λ θες <sup>π ρ</sup> εν τοις κα τω τα α α τοις της γης <sup>π ρ</sup>

<sup>ΔΙ</sup> και συ υν ε ε ε τρι ι ι ψας <sup>ΠΑ</sup> μο ο χλου ους

αι αι ω ω ω νι ι ι ι ου ου ους <sup>Δ</sup> κα

το ο ο χους πε πε ε ε δη η με ε ε ε ε

<sup>ΚΕ</sup> <sup>ΠΑ</sup> <sup>π ρ</sup> νων Χρι ι ι στε <sup>π ρ</sup> και τρι η η η με ε ρος <sup>π ρ</sup>

ΔΙ ΠΑ  
ως εκ κη η του ους Ι ω ω να α α αας ε

ΝΗ ΠΑ  
ε εξ α α νε ε ε ε ε στη η ης του ου ου τα α

π ρ  
α α φου ῥοδηζ'

ΠΑ ΔΙ  
Ο παι αι αι αι δας εκ κα μι ι ι ι νου

ΠΑ  
ρυ υ σα α με ε νο ο ος γε νο ο ο ο με ε νος

ΔΙ  
α α αν θρω ω πο ος πα α α σχει ει ει

ΠΑ ΔΙ  
ει ει ω ως θνη η τος και αι αι αι δι α πα

ΔΙ  
θου ους το ο θνη η το ο ο ον αφθαρ σι ι ι

ΠΑ  
ι ι ι α ας εν δυ υ υ υ ει ει ε ε ευ πρε

π ρ  
ε πει ει α αν ο μο ο ο ο ο νος ευ λο ο

γ η η τ ο ο ς τ ω ω ν π α α α τ ε ε ε ε ρ ω

ω ω ν Θε ο ο ο ς και αι αι υ υ υ πε ε ρ ε ε ε

ε εν δ ο ο ο ο ξ ο ς

Α ι ν ο υ μ εν ε υ λ ο γ ο υ μ εν π ρ ο σ κ υ ν ο υ ο υ μ ε

ε εν τ ο ν Κυ υ υ ρ ι ι ο ν

Α αυ τ η η η κ λ η η η τ η η η η και αι α

α γ ι ι α α η η η μ ε ε ε ε ρ α α

α η μ ι α τ ω ν Σ α α β β α α α α α α τ ω ν η

β α σ ι λ ι ι ι ς και αι Κυ υ υ ρ ι ι ι ι

α ε ε ο ρ τ ω ν ε ο ρ τ η η η η και παν



η η η η η η γυ υ υ υ ρις <sup>ΠΑ</sup> ε στι ι ι  
 ι πα α αν η η η γυ υ ρε ε ω ων <sup>πρ</sup> εν η η η  
 η η η ε ε ευ λο γου ου ου με ε εν Χρι ι  
 στο ο ο ον ει εις του ουους αι αι αι ω ω ω ω  
<sup>ΜΕΛ</sup>  
 να α α ας <sup>πρ</sup>

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Καταβασίαι τοῦ Πάσχα  
ὥδη α'

Ἦχος ♯̣ Πα ρ̣

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστήριον  
2005 σ.6\*

να στα α σε ως η με ε ρα λαμ πρυ υ υν  
 θω ω ω ω με εν λα α α οι <sup>πρ</sup> Πα α α α σχα α  
 Κυ ρι ι ου ου Πα α α σχα α <sup>πρ</sup> εκ γαρ θα

να α του προς ζω ω ην και εκ γης προ

ος ου ου ρα νο ον Χρι ι στο ο ο ος ο

ο Θε ε ε ος η μα α ας δι ι ε ε ε

βι ι βα α α σεν ε πι ι νι ι ι κι ο ον

α α α α δο ο ο ον τας

ἄλλη γραμμή

\* και εκ γη ης προ ος ου ρα α α νο ον Χρι στο

ο ος ο Θε ε ος η μα α ας δι ι ε

ε ε βι ι βα α α σεν ε πι ι νι ι ι ...

ῥῶθ' γ'

Δ ε ευ τε ε πο μα πι ι ω μεν και αι νον ουκ εκ

πε τρας α α γο ο ο νου τε ε ε ρα τουρ γου

ου με ε νο ον **Δ** αλλ α φθαρ σι ι ι ας πη η γην **Δ**

\*<sup>2</sup> εκ τα α φου ομ βρη η σαν τος Χρι ι στου **Δ** χορός α' ε

ε εν ω ω ω στε ρε ε ου ου ου με ε ε ε

θα **π**  
**9**

\*<sup>1</sup> **Δ** τε ρα τουρ γου με ε νο ον **Δ**...

\*<sup>2</sup> **Δ** εκ τα φου ομ βρη η σαν τος Χρι ι στου **π**  
**9** χορός α' ε ..

ὠδή δ'

**Ε** πι της θει ει ει ει α α ας φυ λα α

κης **Δ** ο θε η γο ρο ος Α αβ βα α κου ου ου

ουμ <sup>Α</sup>στη τω μεθ η μω ω ν και αι δει κνυ υ υ υ υ

τω <sup>Α</sup>φα εσ φο ο ρο ον α αγγε ε λον <sup>Α</sup>δι α

α α πρυ υ σι ι ω ως λε ε γο ο ον τα α <sup>π</sup>9

ση η με ε ρον σω τη ρι ι ι α α τω κο ο ο ο

ο σμω <sup>Α</sup>\* ο τι α α νε ε ε στη Χρι στο ος ως πα

αν το ο δυ υ υ υ να α α α μος <sup>π</sup>9

\* <sup>Α</sup> ο τι α νε ε ε στη Χρι ι στος ως πα αν το ο ...

ῶδῆ ε'

**Ο** ρ θρι ι σω ω μεν ο ο ο ορ θρου ου ου βα θε ε

ε ε ος <sup>π</sup>9 και αν τι μυ υ υ υ ρου τον υ υ υ

μνο ον προς οι οι οι οι σο ο μεν τω ω Δε σπο ο ο

ο τη και Χρι στο ον ο ψο ο με ε θα

δι και ο συ υ νη η ης η η λι ι ι ον

πα σι ι ζω ω ω ην α να α τε ε ε ελ λο ο

ο ον τα ὠδὴς'

**Κ** α τη ηλ θες εν τοις κα τω τα α τοις τη ης

γης και συ υν ε τρι ι ψας μο ο χλου ου ους αι αι

ω ω νι ι ι ουους κα το ο χους πε πε

ε δη η με ε ε ε νω ων Χρι ι ι στε και τρι ι

η με ε ρος \* ως εκ κη η τους Ι ω ω να ας ε

ε εξ α α νε ε ε ε στη η ης του τα α α α

φου π ρ

\* π ρ ως εκ κη η του ους Ι ι ω ω ω

νας εξ α νε ε ε ε ε στη η ης... ωδὴ ζ'

Ο παι αι αι αι δας εκ κα μι ι ι νου ρυ σα

α με ε νο ος γε νο ο ο ο με ε νο ος α αν

θρω ω ω πο ος πα α σχει ει ει ει ει

ω ως θνη η τος και αι αι δι ι α πα θου ους το

ο θνη η το ο ο ο ον αφθαρ σι ι ι ι α ας

ε ε εν δυ υ υ υ ει ει ε ευ πρε ε ε πει ει

α αν ο μο ο ο νος ευ λο γη η το ο ος

τω ων πα α τε ε ε ρων Θε ος και υ

υ πε ερ ε ε ε εν δο ο ο ο ξος

ἄλλαι γραμμαὶ

και δι α πα θου ουσ το ο θνη η το ο ο ο

ον

ευ λο γη το ος των πα τε ε ρων Θε ε ος και

υ ...

ῶδὴ ἡ'

αι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου με εν τον

Κυ ρι ι ον

αυ τη η η κλη η η τη η και αι α α

γι ι ι α α η η με ε ε ρα α η

μι α των σα αβ βα α α τω ων η βα σι ι λι

ι ις και αι αι κυ ρι ι ι ι α ε ο ορ

των ε ορ τη η η και αι πα νη η η η η γυ υ

υ υ υ ρις ε ε ε στι ι ι ι πα α νη η γυ υ

ρε ε ε ω ων εν η η η ε ευ λο ο γου ου

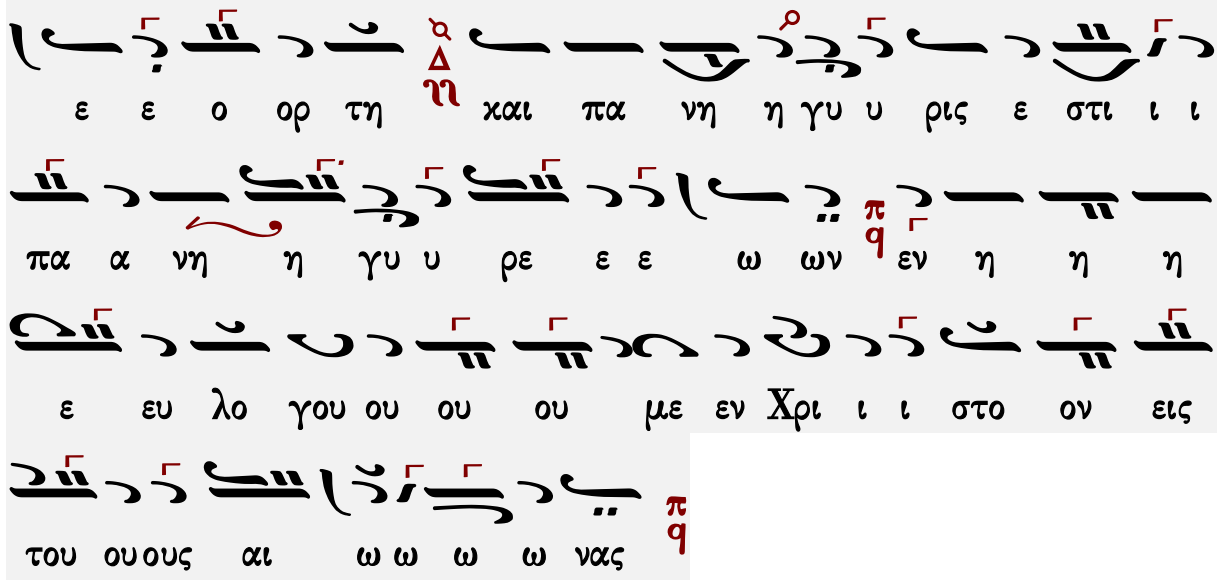
ου με ε εν Χρι ι στο ον εις του ου ους αι ω

ω ω ω ω νας

\*ἄλλι γραμμὴ η βα σι λι ι ι ι ις και αι αι

κυ ρι ι ι ι α ε ορ τω ω ω ω ν





## ὕμνος ἑξ ἑορτῆς

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

ἤχος α'

«Σὲ τὴν φαεινὴν λαμπάδα, καὶ Μητέρα Θεοῦ, τὴν ἀρίζηλον δόξαν καὶ ἀνωτέραν πάντων τῶν ποιημάτων ἐν ὕμνοις μεγαλύνομεν». (6')

Δόξα τῇ ἁγίᾳ Ἀναστάσει σου Κύριε.

Σοῦ τὴν φαεινὴν ἡμέραν, καὶ ὑπέρλαμπρον Χριστὲ τὴν ὀλόφωτον χάριν, ἐν ἧ ὥραϊος κάλλει τοῖς μαθηταῖς σου, ἐπέστης μεγαλύνομεν. (6')

Δόξα Πατρὶ καὶ Υἱῷ καὶ ἁγίῳ Πνεύματι.

Σὲ τὸν χοϊκῆ παλάμη, ψηλαφώμενον πλευράν, καὶ μὴ φλέξαντα ταύτην, πυρὶ τῷ τῆς ἀύλου θείας οὐσίας, ἐν ὕμνοις μεγαλύνομεν.

Καὶ νῦν καὶ ἀεὶ καὶ εἰς τοὺς αἰῶνας τῶν αἰώνων, ἀμήν.

Σὲ τὸν ὡς Θεὸν ἐκ τάφου, ἀναστάντα Χριστόν, οὐ βλεφάροις ἰδόντες, ἀλλὰ καρδίας πόθῳ πεπιστευκότες, ἐν ὕμνοις μεγαλύνομεν.

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

Γαβριὴλ Κουντιάδου  
Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

**Ε** την φα ει νην λαμ πα α δα και μη τε ρα του

Θε ου <sup>π ρ</sup> την α ρι ζη λον δο ξαν και α νω τε ραν

πα αν των των ποι η μα α των <sup>Δ δ</sup> εν υ μνοις με γα λυ

υ νο ο μεν <sup>π ρ</sup> (β')

**Δ** ο ξα τη α γι α α να στα σει σου Κυ ρι ε <sup>Δ δ</sup>

**Ε** ου την φα ει νην η με ε ραν και υ περ λαμ προν

Χρι στε την ο λο φω τον χα ριν <sup>π ρ</sup> εν η ω ραι ος

κα αλ λει τοις μα θη ται αις σου ε πε στης με γα λυ

υ νο ο μεν <sup>π ρ</sup> (β')

Δόξα τῇ ἀγίᾳ Ἀναστάσει σου Κύριε.

Σὲ τὸν χοϊκῆ παλάμη, ψηλαφώμενον πλευράν, καὶ μὴ φλέξαντα ταύτην, πυρὶ τῷ τῆς αὐτοῦ  
θείας οὐσίας, ἐν ὕμνοις μεγαλύνομεν.

Δόξα τῇ ἁγίᾳ Ἀναστάσει σου Κύριε.

Σὲ τὸν ὡς Θεὸν ἐκ τάφου, ἀναστάντα Χριστόν, οὐ βλεφάροις ἰδόντες, ἀλλὰ καρδίας πόθῳ  
πεπιστευκότες, ἐν ὕμνοις μεγαλύνομεν.

## Γαβριὴλ Κουντιάδου

ᾠδὴ θ'

Ἦχος ᾠ Πα

Γαβριὴλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
α' ἔκδοσις 1931-1935  
ἐπανεκδόσις 1991 σ.148\*

ε την φαι νην λαμ πα α δα και μη τε ρα του Θε ου

την α ρι ζη λον δο ξαν και α νω τε ραν παν των

των ποι η μα α των εν υ μνοις μεγα λυ υ νο μεν (β')

Δ ο ξα τη α γι α α να στα σει σου Κυ ρι ε

ου την φαι νην η με ε ραν και υ περ λαμ προν Χρι

στε την ο λο φω τον χα ριν εν η ω ραι ος

καλ λει τοις μα θη ται αις σου **Δ** ε πε στης μεγα λυ υ νο

μεν **π ρ** (β')

**Δ** ο ξα Πα τρι και Υι ω και α γι ω Πνευ μα

τι **Δ** **π ρ**

**Σ** ε τον χο ι κη πα λα α μη ψη λα φω με νον πλευ

ραν **π ρ** και μη φλε ξαν τα του την πυ ρι τω της α υ

λουθειας ου σι ι ας **Δ** εν υ μνοις μεγα λυ υ νο μεν **π ρ**

**Κ** αι νυν και α ει και εις τους αι ω νας των αι ω νων

α μην **Δ** **π ρ**

**Σ** ε τον ως Θε ον εκ τα α φου α να σταν τα Χρι στον **π ρ** ου

βλε φα ροις ι δον τες αλ λα καρ δι ας πο θω πε πι  
στευ κο ο τες εν υ μνοις μεγα λυ υ νο μεν

### Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

ᾠδὴ θ'

Ἦχος ᾠ Πα

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Πεντηκοστάριον 1983 σ.112\*

ΠΑ  
C ε την φα ει νην λαμ πα α δα και μη τε ρα του Θε  
ου την α ρι ζη λον δο ξαν και α νω τε ραν  
πα αν των των ποι η μα α των εν η μνοις με γα  
ΝΗ ΠΑ  
λυ υ νο ο μεν (β')

Δ ο ξα τη α γι α α να στα σει σου Κυ ρι ε

<sup>ΠΑ</sup>  
C ου ου την φα ει νην η με ε ραν <sup>Δ</sup> και υ περ λαμ

προν Χρι στε <sup>π</sup> την ο λο φω τον χα ριν <sup>π</sup> εν η ω

ραι ος καλ λει τοις Μα θη ται αις σου <sup>Δ</sup> ε πε στης με

<sup>ΝΗ</sup> <sup>ΠΑ</sup>  
γα λυ υ νο μεν <sup>π</sup> (β')

<sup>Δ</sup> ο ξα Πα τρι και Υι ω και α γι ω Πνευ μα

τι <sup>Δ</sup> <sup>π</sup>

<sup>ΠΑ</sup>  
C ε τον χο ι κη πα λα α μη η η ψη λα φω μενον

πλευ ραν <sup>π</sup> και μη φλε ξαν τα ταυ την <sup>π</sup> πυ ρι τω της α

υ υ λου θει ας ου σι ι ας <sup>Δ</sup> εν υ μνοις με γα

<sup>ΝΗ</sup> <sup>ΠΑ</sup>  
γα λυ υ νο μεν <sup>π</sup>

Και νυν και α ει και εις τους αι ω νας των αι ω νων

α μην <sup>Δ</sup> <sub>δλ</sub> π ρ

<sup>ΠΑ</sup> **C** ε τον ως Θε ον εκ τα α φου ου ου α να στα αν

τα Χρι στον <sup>π ρ</sup> ου βλε φα ρις ι δον τες <sup>π ρ</sup> αλ λα καρ δι

ας πο θω πε πι στευ κο ο τες <sup>Δ</sup> <sub>δλ</sub> εν υ μνοις με γα λυ NH

<sup>ΠΑ</sup> υ νο μεν <sup>π ρ</sup>

### Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

ὁ εἰρμὸς  
ῶδὴ θ'

Ἦχος <sup>4</sup>/<sub>8</sub> Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.172\*

**C** ε την φα ει νην λαμ πα α δα και μη τε ρα του Θε

ου <sup>π ρ</sup> την α ρι ζη λον δο ξαν <sup>π ρ</sup> και α νω τε ραν

παν των των ποιηματα των εν υμνοις μεγαλυ

νο ο μεν π<sup>9</sup>(β')

Δοξα τη αγαγια Αναστασει σου Κυριε

σου την φαινην ημεεραν και υπερλαμπρον

Χριστε την ολωφωτον χαριν εν ηωραι

ος καλλειτοις μαθηταις σου επεεστης μεγαλυ

υνο ο μεν π<sup>9</sup>(β')

Δοξα Πατρι και Υιω και αγιω Πνευμα

τι

ε τον χοικηπαλααμηψηλαφωμενον πλου



ραν και μη φλε ξαν τα του την πυ ρι τω της α

ου λου θει ασ ου σι ι ασ εν υ μνοις μεγα λυ

υ νο ο μεν

Και νυν και α ει και εις τους αι ω νας των αι ω νων

α μην

Σε τον ως Θε ον εκ τα α φου α να στα αν τα Χρι

στον ου βλε φα ρις ι δον τες αλ λα καρ δι ασ

πο θω πε πι στευ κο ο τες εν υ μνοις μεγα λυ υ νο ο

μεν

### Καταβασία θ' φδῆς

ἦχος α'

Ὁ ἄγγελος ἐβόα τῇ κεχαριτωμένῃ·

Ἄγνη Παρθέने, χαῖρε, καὶ πάλιν ἐρώ· Χαῖρε· ὁ σὸς Υἱὸς ἀνέστη τριήμερος ἐκ τάφου.

Φωτίζου, φωτίζου ἡ νέα Ἱερουσαλήμ· ἡ γὰρ δόξα Κυρίου ἐπὶ σὲ ἀνέτειλε. Χόρευε νῦν, καὶ ἀγάλλου Σιών· σὺ δὲ ἄγνή, τέρπου, Θεοτόκε, ἐν τῇ ἐγέρσει τοῦ τόκου σου.

Σύντομος

✠ Ἰωάννου Πρωτοψάλτου ✠

Ἀργή

Σύντομος

✠ Γαβριὴλ Κουντιάδου ✠

Ἀργή

Σύντομος

✠ Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου ✠

Ἀργή

Σύντομος

✠ Κωνσταντίνου Παπαγιάννη ✠

Ἀργή

## Σύντομος

### Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

## Ἦχος ᾠ Πα

ᾠδὴ θ'

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰμολόγιον 1903 σ.377#

Ὁ α γ γε λ ο ς ε β ο ο α τ η κ ε χ α ρ ι τ ω μ ε ε

νη α γ ν η Πα ρ θ ε ν ε χ α ι α ι ρ ε κ α ι π α λ ι ν ε ρ ω χ α ι

αι ρ ε ο σ ο ς Υ ι ο ς α ν ε ε σ τ η τ ρ ι η μ ε ρ ο ς ε κ

τα φου

Φ ω τ ι ζ ο υ φ ω τ ι ι ι ζ ο υ η ν ε α Ι ε ρ ο υ σα

λημη γαρ δοξα Κυριου επι σε ανετειλε π ρ

χορευε νυ νυ και α γαλλουσιων Α ρ σου δε αγνη η

τερ που Θεο το ο κε εν τη ε γερσει του το ο

κου ου \* σου π ρ

\* σου ου ου ου π ρ

Γαβριήλ Κουντιάδου

Ἦχος  $\frac{4}{\bar{\eta}}$  Πα  $\bar{\chi}$

Γαβριήλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
α' ἔκδοσις 1931-1935  
ἐπανεκδόσις 1991 σ.28\*

Ο αγ γε λος ε βο ο ατη Κε χα ρι τω με ε

νη Α ρ α γνη Παρ θε νε χαι ρε και πα λιν ε ρω χαι αι ρε Α ρ

ο σος Υι ος α νε στη τρι η μερος εκ τα φου π ρ

Φ ω τι ζου φω τι ζου π ρ η νε α Ι ε ρου σα

λημ <sup>Δ</sup> η γαρ δο ξα Κυ ρι ου ε πι σε α νε τει λε <sup>π ρ</sup>

χο ρευ ε νυν και α γα αλλου Σι ων <sup>Δ</sup> συ δε Α γνη η η

τερ που Θε ο το ο κε <sup>Δ</sup> εν τη ε γερ σει του το ο

κου ου σου <sup>π ρ</sup>

<sup>\*</sup> σου ου ου ου <sup>π ρ</sup>

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

ᾠδὴ θ'

Ἦχος  $\frac{4}{\bar{q}}$  Πα

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Πεντηκοστάριον 1983 σ.9\*

<sup>ΠΑ</sup>  
**Ο** Αγ γε λος ε βο ο ατη Κε χα ρι τω με

<sup>ΔΙ</sup> <sup>ΠΑ</sup>  
ε νη <sup>Δ</sup> α γνη Παρ θε νε χαι αι ρε και πα λιν ε ρω χαι αι

<sup>ΝΗ</sup> <sup>ΠΑ</sup> <sup>ΝΗ</sup>  
ρε <sup>Δ</sup> ο σος Υι ος α νε ε στη τρι η με ρος εκ τα

<sup>ΠΑ</sup>  
φου <sup>π ρ</sup>

ΜΕΛ ΠΑ  
**Φ** ω τ ι ζ ο υ φ ω τ ι ζ ο υ π ρ η ν ε α Ι ε ρ ο υ σα  
 λ η μ Δ ρ η γ α ρ δ ο ξ α Κ υ ρ ι ι ο υ ο υ ο υ ε π ι σ ε α ν ε  
 τ ρ ι λ ε π ρ χ ο ρ ε υ ε ν υ ν κ α ι α γ α α λ λ ο υ Σ ι ω ν Δ ρ σ υ υ δ ε Α  
 γ η η η η τ ε ρ π ο υ Θε ο τ ο ο κ ε Δ ρ ε ν τ η ε γ ε ρ σ ρ ι  
ΝΗ ΠΑ ΜΕΛ  
 τ ο υ τ ο ο π ρ κ ο υ σ ο υ \* χ π ρ κ ο υ ο υ π ρ σ ο υ ο υ ο υ ο υ

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

ψδὴ θ'

Ἦχος  $\frac{4}{\bar{\eta}}$  Πα  $\bar{\chi}$

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
 Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
 2005 σ.20#

**Ο** α γ γ ε λ ο ς ε β ο ο α τ η Κ ε χ α ρ ι τ ω μ ε  
 ε ν η Δ ρ α γ η η Πα ρ θε ν ε χ α ι α ι ρ ε κ α ι π α λ ι ν ε ρ ω ω  
 χ α ι α ι ρ ε Δ ρ ο σ ο ς Ὑ ι ο ς α ν ε ε σ τ η τ ρ ι η μ ε ρ ο ς ε κ

τα φου π ρ

Φ ω τι ζου φω τι ζου η νε α Ι ε ρου σα

λημ η γαρ δο ξα Κυ ρι ου ε πι σε α νε τει λε χο

ρευ ε νυν και α γαλ λου Σι ων σου υ δε α γνη η τερ που

Θε ο το ο κε εν τη ε γερ σει του το ο κου ου

\* σου π ρ

\* σου ου ου ου MEΛ π ρ

Ἄρχή

Ιωάννου Πρωτοψάλτου

ᾠδὴ θ'

Ἦχος ♩ Πα ρ

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Ειρμολόγιον 1903 σ.25#

Ο Α αγ γε λο ος ε ε ε βο ο ο α α τη

η Κε ε χα ρι ι τω ω με ε ε νη η

Α γνη η Πα αρ θε ε νε ε χαι αι αι αι ρε ε και αι πα

λι ιν ε ε ε ρω χαι αι αι ρε ε ο σο ος

Υι ο ος α νε ε ε στη η η τρι ι η η με

ρο ο ος εκ τα α α α α φου

Φ ω τι ι ι ζου φω τι ι ι ζου ου η νε

ε ε α α Ι ι ε ε ρου ου σα α α λη ημ

η γαρ δο ο ξα Κυ ρι ι ι ου ου ου ου ου ε ε

πι ι σε ε α α νε ε ε τει ει λε ε χο ο

ο ρε ευ ε ε νυ υ υ υν και αι α γα α α α αλ

λου ου Σι ι ι ων συ υ υ υ δε ε Α α α

γνη η η η τε ερ που Θε ε ο ο το ο ο

κε ε εν τη η ε ε γερ σει του ου το ο ο ο ο

κου ου ου ου σου ου ου ου π ρ

Γαβριήλ Κουντιάδου

Ἦχος ᾠ Πα

Γαβριήλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
ἀ΄ ἐκδοσίς 1931-1935  
ἐπανέκδοσις 1991 σ.149\*

Ο α αγ γε λο ος ε ε ε βο ο ο α α τη η

Κε ε χα ρι ι τω ω με ε ε νη η α

α γνη η Πα αρ θε ε νε ε χαι αι αι αι αι ρε ε και αι πα

λι ιν ε ε ε ρω χαι αι αι ρε ε ο σο ος

Υι υι ο ος α α νε ε ε ε στη η τρι ι ι η η



η η με ρο ο ος ε ε εκ τα α α α α

φου <sup>π ρ</sup>

**Φ** ω τι ι ι ζου φω τι ι ι ζου ου <sup>γ ρ</sup> η νε

ε ε α α Ι ι ε ε ε ρου ου σα α α λη

η <sup>π ρ</sup> η γαρ δο ο ξα Κυ ρι ι ι ου ου ου ου

ε ε πι ι σε ε α α α νε ε ε τει ει λε ε <sup>π ρ</sup>

χο ο ο ρε ευ ε ε νυ υ υ υν και αι α γα α

α α αλ λου ου Σι ι ι ων <sup>Δ ρ</sup> συ υ υ υ υ

δε ε α α α γνη η η η τε ερ που Θε ε ο

ο το ο ο κε ε <sup>Δ ρ</sup> εν τη η Ε ε γε ε ερ σει

του ου το ο ο ο ο κου ου ου σου ου ου ου π 9

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

ᾠδὴ θ'

Ἦχος ♪ Πα

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Πεντηκοστάριον 1983 σ.39#

ΠΑ  
Ο α αγ γε λο ος ε ε ε βο ο ο ο α

α τη η Κε χα α ρι ι τω ω ω με ε ε

ΔΙ ΠΑ  
ε νη η η α γνη η Πα α αρ θε ε νε ε χαι αι

αι αι ρε ε και αι πα λιν ε ρω ω χαι αι αι

ΜΕΛ ΝΗ ΠΑ  
αι ρε ε ε ο σο ος Υι υι ο ος α νε ε

ΜΕΛ ΠΑ  
ε ε στη η τρι ι ι η η η η με ε ρο ος

ε ε εκ τα α α α φου π 9

ΠΑ ΝΗ ΠΑ  
Φ ω τ ι ι ι ζου φω τ ι ι ι ι ζου ου η

νε ε α α Ι ι ε ε ε ρου ου ου σα α

ΜΕΛ ΔΙ  
λη ημ η γαρ δο ο ξα Κυ ρι ι ι ι ι

ΠΑ  
ου ου ου ου ε ε πι ι σε ε ε α α α νε ε

πει ει λε ε χο ο ο ο ο ρε ε ευ ε

ΔΙ  
ε νυ υ υ υν και α γα α α α α αλ λου Σι

ΠΑ  
ι ι ων σου υ υ υ υ δε ε α α α γνη

ΔΙ  
η η η τερ που ου Θε ε ο ο ο ο το ο ο ο

ΠΑ ΜΕΛ  
ο κε ε ε εν τη η ε ε γε ε ερ σει ει

ΠΑ ΜΕΛ  
του ου ου το ο ο ο κου ου ου ου σου ου

ου ου π ρ

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

ψδὴ θ'

Ἦχος ᾠ Πα χ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.19#

Ο α αγ γε λο ος ε ε ε βο ο ο α α

τη η Κε ε χα ρι ι τω ω με ε ε νη η

α α γνη η Πα αρ θε ε νε ε χαι αι αι αι αι ρε ε

και αι πα α λι ιν ε ε ε ρω χαι αι αι ρε ε

ο σο ος Υι υι ο ος α νε ε ε ε στη η τρι

ι ι η η η η με ρο ος εκ τα α α α α φου

Φ ω τι ι ι ζου φω τι ι ι ζου ου η νε ε α

α Ι ι ε ε ρου ου σα α α λη ημ πη η γαρ δο

ο ξα Κυ ρι ι ι ου ου ου ου ου ε ε πι ι σε ε

α α νε ε ε τει ει λε ε χο ο ο ρε ευ

ε ε νυ υ υ υν και αι α γα α α αλ λου

ου Σι ι ι ων συ υ υ υ δε ε Α α α γνη

η η η τε ερ που Θε ε ο ο το ο ο κε

ε εν τη η ε ε γε ε ερ σει του ου το ο ο

ο κου ου ου σου

χο ο ο ρε ε ευ ε ε νυ υ υν και α γα

α ...

\*<sup>2</sup>  
Α  
εν τη ε γε ε ερ σει ...

# Τῆς Μεσοπεντηκοστῆς

ἦχος πλ.δ'

- α **Θ**άλασσαν ἐπηξας, βυθίσας σὺν ἄρμασι τὸν ἀλαζόνα Φαραὼ καὶ λαὸν διέσωσας ἀβρόχως Κύριε, καὶ εἰσήγαγες αὐτοὺς εἰς ὄρος ἀγιάσματος, βοῶντας· Ἄσωμέν σοι τῷ Θεῷ ἡμῶν, ὠδὴν ἐπινίκιον, τῷ ἐν πολέμοις κραταιῷ.
- γ **Ἐ**στερεώθη ἡ καρδία μου ἐν Κυρίῳ, ὑψώθη κέρας μου ἐν Θεῷ μου, ἐπλατύνθη ἐπ' ἐχθρούς μου τὸ στόμα μου, εὐφράνθη ἐν σωτηρίῳ σου.
- δ **Ὁ** προφήτης Ἀββακούμ, τοῖς νοεροῖς ὀφθαλμοῖς προεώρα Κύριε, τὴν παρουσίαν σου· διὸ καὶ ἀνέκραζεν· ἀπὸ Θαμιὰν ἤξει ὁ Θεός· Δόξα τῇ δόξῃ σου Χριστέ, δόξα τῇ συγκαταβάσει σου.
- ε **Κ**ύριε ὁ Θεὸς ἡμῶν, εἰρήνην δὸς ἡμῖν, Κύριε ὁ Θεὸς ἡμῶν, κτῆσαι ἡμᾶς, Κύριε, ἐκτὸς σοῦ ἄλλον οὐκ οἶδαμεν τὸ ὄνομά σου ὀνομάζομεν.
- ς **Ὡ**ς ὕδατα θαλάσσης φιλόθρωπε, τὰ κύματα τοῦ βίου χειμάζει με· διὸ, ὡς Ἰωῆς σοι κραυγάζω Λόγε· ἀνάγαγε ἐκ φθορᾶς τὴν ζωὴν μου, εὐσπλαγγνε Κύριε.
- ζ **Τ**ῶν Χαλδαίων ἡ κάμιнос, πυρὶ φλογιζομένη, ἐδροσίζετο πνεύματι, Θεοῦ ἐπιστασία, οἱ Παῖδες ὑπέψαλλον· Εὐλογητὸς εἶ ὁ Θεὸς ὁ τῶν πατέρων ἡμῶν.
- Αἰ**νοῦμεν, εὐλογοῦμεν, καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον.
- η **Ἄ**γγελοι καὶ οὐρανοὶ τὸν ἐπὶ θρόνου δόξης ἐποχοῦμενον, καὶ ὡς Θεὸν ἀπαύστως δοξαζόμενον, εὐλογεῖτε, ὑμνεῖτε, καὶ ὑπερυψοῦτε εἰς πάντας τοὺς αἰῶνας.

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Γαβριήλ Κουντιάδου

## Σύντομοι

### Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

ὠδὴ α'

ἦχος λ π ς Νη

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρημολόγιον 1903 σ.396#

Θ α α λασ σαν ε πη ξας βυ θι σας συν αρ μα σι τον

α λα ζο να Φα ρα ω και λα ον δι ε σω σας

α βρο χως Κυ ρι ε και ει ση γα γες αυ τους εις

ο ρος α γι α σμα τος βο ων τας α σω μεν σοι τω

Θε ω η η μων ω δη η η ην ε πι νι κι ον τω εν πο

λε μοις κρα ται ω

ᾠδὴ γ'

ε στε ρε ω θη η καρ δι ι α μου εν Κυ

ρι ι ω υ ψω θη κε ρας μου εν Θε ω ω μου ε

πλα τυν θη επ ε χθρου ους μου το στο μα μου ευ φραν

χορὸς α'

θην εν σω τη ρι ω ω σου

ᾠδὴ δ'

ο προ φη της Αβ βα κουμ τοις νο ε ροι οις ο



φθαλμοῖς <sup>Δ</sup> προεωρα Κυριετην πααρουσιανσου <sup>γ</sup>

διοοκαι ανεκραζεν απο Θαιμανηξειο Θε

ος <sup>Δ</sup> δοξατηδοξησου Χριστε <sup>Δ</sup> δοξατησυγκατα

βασειεισου <sup>γ</sup> ᾠδὴ ε'

**Κ**υυριεο Θεος ημων ειρηνηνδος η

μιν Κυυριεο Θεος ημωνκτησαιημας <sup>γ</sup> Κυ

ριεεκτοςσου ααααλλονουκ οιδαμεντοο νο

μασουο νο μαζοομεν <sup>γ</sup> ᾠδὴ ς'

**Ω**ςυδαταθαλασσηςφιλανθρωπετακυματατου

βουχειμαζειμε <sup>γ</sup> διοως Ιωνααςσοικραυ

γα ζω Λο ο γε α να α γα γε εκ φθο ρας την ζω ην

μου ε ευσπλαγ χνε Κυ ρι ι ε ν ρ ῶδὴ ζ'

**T**ων Χαλ δαι αι ων η κα μι νος πυ ρι φλο γι ζο

με ε νη Α ρ ε δρο σι ι ζε το Πνευ μα τι Θε ου ε πι στα

σι ι α ν ρ οι παι αι δεσ υ πε ψα αλ ον ευ λο γη


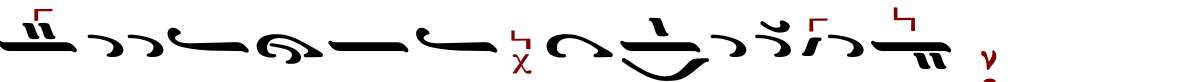
τος ει ο Θε ος ο των πα τε ρων η μων ν ρ ῶδὴ η'

Χ α ι νου μεν ευ λο Χ γου μεν και προσ κυ νου ου με εν

τον Κυ ρι ον ν ρ

**A** γ γε λοι και ου ρα νοι τον ε πι θρο νου δο ξης ε

πο χου με νον και ως Θε ον α παυ στως δο ο ξα ζο με

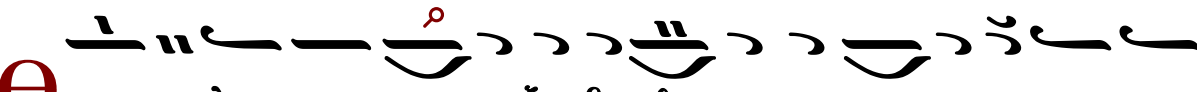
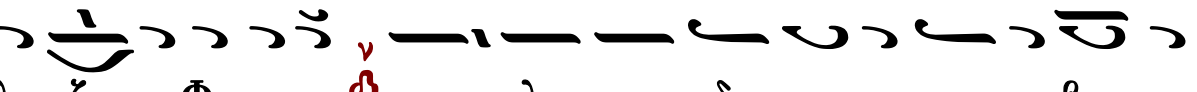


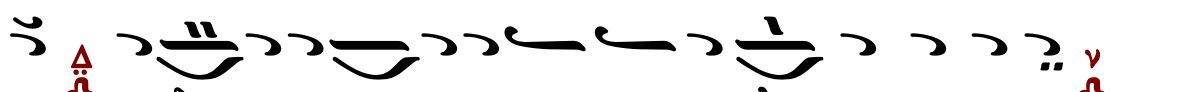

  
 νον <sup>γ</sup> ευ λο γει τε υ μνει ει τε ε και υ περ υ  

  
 ψου ου τε εις παν τας τους αι ω ω να α α ας <sup>γ</sup>

Γαβριήλ Κουντιάδου


ᾠδὴ α'

Ἦχος λ π ρι Νη

Γαβριήλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
 Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
 α' ἔκδοσις 1931-1935  
 ἑπανεκδόσις 1991 σ.249\*


  
 Θ α α λασ σαν ε πη ξας βυ θι σας συν αρ μα σι τον α  

  
 λα ζο να Φα ρα ω <sup>γ</sup> και λα ον δι ε σω σας α βρο χως  

  
 Κυ ρι ε <sup>β</sup> και εις η γα γες αυ τους εις ο ρος α γι  

  
 α σμα τος βο ων τος <sup>Δ</sup> α σω μεν σοι τω Θε ω η η  

  
 μων <sup>Δ</sup> ω δην ε πι νι κι ον τω εν πο λε μοις κραται ω <sup>γ</sup>

ᾠδὴ γ'


  
 Ε στε ρε ω θη η καρ δι ι α μου εν Κυ

ρι ω **Δ** υ ψω θη κε ε ε ρας μου εν Θε ω

μου **γ** ε πλα τυν θη επ ε χθρου ους μου το στο μα μου **Δ**

χορὸς α' **Δ** ευ φραν θην εν σω τη ρι ω ω σου **γ** ῶδὴ δ'

**Ο** προ φη της Αβ βα κουμ τοις νο ε ροι οις

ο φθαλ μοις **Δ** προ ε ω ρα Κυ ρι ε την πα α ρου σι αν

σου **γ** δι ο ο και α νε κρα α ζεν **Δ** α πο Θαι μαν η

ξει ο Θε ος δο ξα τη δο ξη σου Χρι στε **Δ** δο ξα τη οι

κονο μι ι α α σου **γ** ῶδὴ ε'

**Κ** υ υ ρι ε ο Θε ος η μων ει ρη νην δος η

μιν <sup>6</sup>**λ** Κυ υ ρι ε ο Θε ος η μω ων κτη σαι η μας **γ**

Κυ ρι ε ε κτος σου αλ λον ουκ οι δαμεν <sup>Δ</sup> το ο νο μα

σου ο νο μα α ζο ο μεν <sup>ν</sup> ῶδὴς'

**Ω** ς υ δα τα θα λασ σης φι λαν θρω πε τα κυ μα τα του

βι ι ι ου χει μα ζει με <sup>ν</sup> δι ο ως Ι ω νας

σοι κραυ γα ζω Λο ο γε <sup>Δ</sup> α να γα γε εκ φθο ρας την

ζω ην μου ε ευσπλαγ χνε Κυ υ ρι ι ε <sup>ν</sup> ῶδὴζ'

**T** ων Χαλ δαι αι ων η κα μι νος πυ ρι φλο γι ζο

με ε νη <sup>Δ</sup> ε δρο σι ζε το πνευ μα τι Θε ου ε πι στα σι

α <sup>ν</sup> οι παι αι δες υ πε ψα λλον ευ λο γη το ος ο

Θε ος ο των πα τε ρων η μων <sup>ν</sup> ῶδὴη'

Αἰ νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου ου με εν

τον Κυ ρι ον

Α γ γε λοι και ου ρα νοι τον ε πι θρο νου δο ξης ε

πο χου μενον και ως Θε ον α παυ στως δο ο ξα ζο μεν

ον ευ λο γει τε υ μνει ει τε και υ περ υ ψου ου

τε εις παν τας τους αι ω να α α ας

## Θ' ᾠδὴ τῆς ἑορτῆς

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

κονὸν α'

ἦχος δ'

«Λίθος ἀχειρότμητος ὄρους, ἐξ ἀλαξεύτου σου Παρθένε, ἀκρογωνιαῖος ἐτμήθη, Χριστὸς συνάψας τὰς διεστώσας φύσεις· διὸ ἐπαγαλλόμενοι, σὲ Θεοτόκε μεγαλύνομεν.»

Δόξα σοι ὁ Θεὸς ἡμῶν δόξα σοι.

Νέαν καὶ καινὴν πολιτείαν, παρὰ Χριστοῦ μεμαθηκότες ταύτην μέχρι τέλους φυλάττειν διαφερόντως πάντες, σπουδάσωμεν, ὅπως ἀγίου Πνεύματος, τὴν παρουσίαν ἀπολαύσωμεν.

Δόξα σοι ὁ Θεὸς ἡμῶν δόξα σοι.

Σύ μου τὸ θνητὸν Ζωοδότα, περιβολὴν ἀθανασίας, καὶ τῆς ἀφθαρσίας τὴν χάριν, ἐνδύσας

Σῶτερ συνεχῆνέστησας, καὶ τῷ Πατρὶ προσήγαγες τὸν χρόνιον μου λύσας πόλεμον.

Δόξα σοι ὁ Θεὸς ἡμῶν δόξα σοι.

Εἰς τὴν ἐπουράνιον πάλιν, διαγωγὴν ἀνακληθέντες, τῇ τῆς μεσιτείας δυνάμει, τοῦ κενωθέντος μέχρι καὶ δούλου μορφῆς καὶ ἡμᾶς ἀνυψώσαντος, τοῦτον ἀξίως μεγαλύνωμεν.

Ὑπεραγία Θεοτόκε, σῶσον ἡμᾶς.

Ὡς ρίζαν, πηγὴν καὶ αἰτίαν, τῆς ἀφθαρσίας σε Παρθένε πάντες οἱ πιστοὶ πεπεισμένοι, ταῖς εὐφημίαις καταγεραίρομεν· σὺ γὰρ τὴν ἐνυπόστατον, ἀθανασίαν ἡμῖν ἔβλυσας.

κανὼν β'. Ἀλλότριον τῶν μητέρων

ἤχος πλ.δ'

Δόξα σοι ὁ Θεὸς ἡμῶν δόξα σοι.

Τῆς ἐορτῆς μεσαζούσης τῶν Ἰουδαίων, ἀνῆλθες ὁ Σωτὴρ μου ἐπὶ τὸ ἱερόν σου, καὶ ἐδίδασκες πάντας, ἐθαύμαζον δὲ Ἰουδαῖοι, καὶ πόθεν οὗτος οἶδε γράμματα, μὴ μεμαθηκώς; ἔλεγον.

Δόξα σοι ὁ Θεὸς ἡμῶν δόξα σοι.

Ἰάματα χαρισμάτων ὁ λυτρωτὴς μου πηγάζων ἐπετέλει τέρατα καὶ σημεῖα, φυγαδεύων τὰς νόσους, ἰώμενος τοὺς ἀσθενοῦντας, ἀλλ' Ἰουδαῖοι ἐξεμαίνοντο, τῷ πλήθει τῶν θαυμάτων αὐτοῦ.

Δόξα Πατρὶ καὶ Υἱῷ καὶ ἀγίῳ Πνεύματι.

Ἀλλότριον τοῖς ἀνόμοις ἐστὶ τὸ σέβειν, τὴν ἀναρχὸν Τριάδα Πατέρα καὶ Υἱόν τε, καὶ τὸ ἅγιον Πνεῦμα, τὴν ἀκτιστὸν παντοκρατορίαν, δι' ἧς ὁ σύμπας κόσμος ἠδρασταί, τῷ κράτει τῆς ἰσχύος αὐτῆς.

Καὶ νῦν καὶ ἀεὶ καὶ εἰς τοὺς αἰῶνας τῶν αἰώνων, ἀμήν.

Ἐχώρησας ἐν γαστρὶ σου Παρθενομητορ, τὸν ἕνα τῆς Τριάδος, Χριστὸν τὸν Ζωοδότην ὃν ὑμνεῖ πᾶσα κτίσις, καὶ τρέμουσιν οἱ ἄνω θρόνοι. Αὐτὸν δυσώπει παμμακάριστε, σωθῆναι τὰς ψυχὰς ἡμῶν.

Γαβριὴλ Κουντιάδου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Γαβριὴλ Κουντιάδου

Κανὼν α', ψδὴ θ'

Ἦχος δὲ Ββ

ὁ εἰρμὸς

Γαβριὴλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικὸν Πεντηκοστάριον  
α' ἔκδοσις 1931-1935  
ἐπανεκδόσις 1991 σ.251\*

Λιθος αχειροοτητος ορους εξαλαξου

τουσου Παρθενε<sup>6</sup>λαχρογωνιαιος ετηθη Χρι

στος συναψαστας διεστωσας φυσεις<sup>6</sup>δι

οεπαγαλλομενοι σε Θεοτοκεμεγαλυνομεν<sup>6</sup>

Δοξα σοι ο Θεοος ημων δοξα σοι<sup>6</sup>

Νεαν και καινην πολιτειαν παρα Χριστου

μεμαθηκοτες<sup>6</sup>ταυτην μεχριτελους φυλαττειν δι

αφεροντως παντες σπουδασωμεν<sup>6</sup>οπως α

γιου Πνευματος την παρουσιαν απολαυσωμεν<sup>6</sup>

Δοξα σοι ο Θεοος ημων δοξα σοι<sup>6</sup>



**C** υ μου το θνη τοον Ζω ο δο τα πε ρι βο λην

α θα να σι ας <sup>6</sup> και της α φθαρ σι ας την χα ριν εν

δυ σας Σω ωτερ συν εξ α νε στη σας <sup>6</sup> και τω Πα

τρι προσ η γαγες τον χρο νι ον μου λυ σας πο λεμον <sup>6</sup>

**Υ** περ α γι α Θε ο το κε σω σον η μας <sup>6</sup>

**Ω** ς ρι ζαν πη γη ην και αι τι αν της α φθαρ

σι ας σε Παρ θε νε <sup>6</sup> παν τες οι πι στοι πε πει σμε νοι

ταις ευ φη μι ι αις κα τα γε ραι ρο μεν <sup>6</sup> συ γαρ

την εν υ πο στα τον α θα να σι αν η μιν ε βλυ σας <sup>6</sup>

Κανών 6', ὑδὴ θ'

Δοξα σοι ο Θεος η μων δοξα σοι

Της ε ορ της με σα ζου ου σης των Ι ου δαι

ων α νηλ θες ο Σω τηρ μου ε πι το ι ε ρον σου και

ε δι δα σκες πα αν τας ε θαυ μα ζον δε οι Ι ου δαι

οι και πο θεν ου τος οι δε γραμ μα α τα μη μεμαθη κως

ε λε γον

Δοξα σοι ο Θεος η μων δοξα σοι

α μα α τα χα ρι σμα α των ο Λυ τρω της μου

πη γα ζων ε πε τε λει τε ρα τα και ση μει α φυ

γα δευ ων τας νο σουσ ι ω με νος τους α σθε νου

ου ουν τας <sup>Δ</sup> αλλ Ι ου δαι οι εξ ε μαι νο ον το τω

πλη θει των θαυ μα των αυ του <sup>γ</sup>

<sup>Δ</sup> ο ο ξα Πα τρι ι και Υι ω και α γι ω

Πνευ μα τι <sup>γ</sup>

<sup>Δ</sup> λ λο τρι ι ον τοις α νο ο μοις ε στι το σε βειν <sup>Δ</sup>

την α να ρ χον Τρι α δα Πα τε ρα και Υι ον τε <sup>γ</sup> και

το α γι ον Πνε ευ μα την α κτι στον παν το κρα το ρι

αν <sup>Δ</sup> δι ης ο συμ πας κο σμος η δρα α σται τω κρα τει

της ι σχυ υ ος αυ του <sup>γ</sup>

Και νυ υν και α ει και εις τους αι ω νας των αι

ω νων α μην

Εχω ρη η σας εν γαστρι ι σου Παρ θε νο μη

τωρ τον ε να της Τρι α δος Χρι στον τον ζω ο δο την

ον υ μνει πα σα κτι ι σις και τρε μου σιν οι α

νω θρο νοι αυ τον δυσ ω πει παμ μα κα ρι ι στε σω

θη ναι τας ψυ χα ας η η μων

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Κανών α', ψδὴ θ'

ὁ εἰρμός

Ἦχος Ββ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννης  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.286/300#

Λιθος α χει ρο ο τμη τος ο ο ρους εξ α λα

ξευ του σου Παρ θε νε <sup>6</sup>α κρο γω νι αι ος ε τμη

η <sup>π9</sup> Χρι στος συν α α ψας τας δι ε στω σας φυ

σεις <sup>6</sup> δι ο ε πα γαλ λο μενοι σε ε Θε ο το κε με γα

λυ νο μεν <sup>6</sup>

Δ ο ξα σοι ο Θε ο ος η μων δο ξα σοι <sup>6</sup>

Ν ε αν και και νη ην πο λι τει ει αν πα ρα Χρι

στου με μαθη κο τες <sup>6</sup> ταυ την με χρι τε λους φυ λατ τειν <sup>π9</sup>

δι α φε ρον τως πα αν τες σπου δα σω μεν <sup>6</sup> ο πως

α γι ου Πνευ ματος την πα ρου σι αν α πο λαυ σω μεν <sup>6</sup>

Δ ο ξα σοι ο Θε ο ος η μων δο ξα σοι <sup>6</sup>

Εἰς τὴν ἐπουρανίον παλαιά γωγῆνα

νακλήθεν τες<sup>6λ</sup> τῆ τῆς μεσιτείας δυναμει<sup>π9</sup> του

κένωθεν τος μεχρὶ καιδουλουμορφῆς<sup>6λ</sup> και ημάς

αὐψωσαντος<sup>ρ</sup> του ουτον ἀξιως μεγαλυνωμεν<sup>6λ</sup>

Υπερὰ γιὰ Θεοτοκωσον ημάς<sup>6λ</sup>

Ὡς ριζαν πηγῆν και αιτιαν τῆς ἀφθαρ

σιας σε Παρθενε<sup>6λ</sup> παντες οι πιστοι πεπεισμε

νοι<sup>π9</sup> ταις ευφημιας καταγεραρομεν<sup>6λ</sup> συ γαρ

την ενυποστατον ἀθανάσιαν ημιν εβλυσας<sup>6λ</sup>

Κανὼν β', ᾠδὴ θ'

Δοξα σοι ο Θεος η μων δοξα σοι

της ε ορ της με σα ζου ουσης των Ι ου δαι αι  
ων α νηλ θες ο Σω τηρ μου ε πι το ι ε ρον σου

και ε δι δα σκες παν τας ε θαυ μαζον δε Ι ου δαι

αι οι και πο θεν ου τος οι δε γραμ ματα μη μεμα θη κως

ε ε λε ε γον

Δοξα σοι ο Θεος η μων δοξα σοι

α μα τα χα ρι σμα των ο Λυ τρω της μου πη

γα ζων ε πε τε λει τε ρα τα και ση μει α φυ γα

δευωντας νο σουσ ι ω μενος τους α σθε νου ουντας

αλλ Ι ου δαι οι εξ ε μαι νο οντο τω πληθει των θαυ μα

των αυτου

Δ ο ο ξα Πατρι και Υι ω και α γι ω Πνευ

ματι

Α λ λοτρι ι ον τοις α νο ομοις ε στι το σε ε βειν

την α ναρχον Τρι α αδα Πα τε ρα και Υι ον τε και

το α γι ον Πνε ευμα την α κτιστον παγ κρα το ρι αν

δι ης ο συμ πασ κο σμος η δρα α σται τω κρα τει της ι σχυ

ος αυ της



Και νυ υν και α ει και εις τους αι ω νας των αι

ωνων α μην

Εχωρησας εν γαστρι ισουπαρθενομηνη

τορτον ενατης Τριααδος Χριστον τον ζωοδοτην

ον υμνει πασα κτιις και τρεμουσιν οι ανωθρο

νοι αυτον δυσωπειπαμμακαριιστεσωθη ναι τας ψυ

χασ η ημων

### Καταβασία θ' φδής

ἦχος πλ.δ'

Ἀλλότριον τῶν μητέρων ἢ παρθενία, καὶ ξένον ταῖς παρθένοις ἢ παιδοποιεῖτα· ἐπὶ σοὶ Θεοτόκε, ἀμφοτέρα ὠκονομήθη· διό σε πᾶσαι αἱ φυλαὶ τῆς γῆς ἀπαύστως μακαρίζομεν.

Ἀργή

☞ Ἰωάννου Πρωτοψάλτου ☞

Σύντομος

Ἀργή

☞ Γαβριήλ Κουντιάδου ☞

Σύντομος

Ἀργή

☞ Κωνσταντίνου Παπαγιάννη ☞

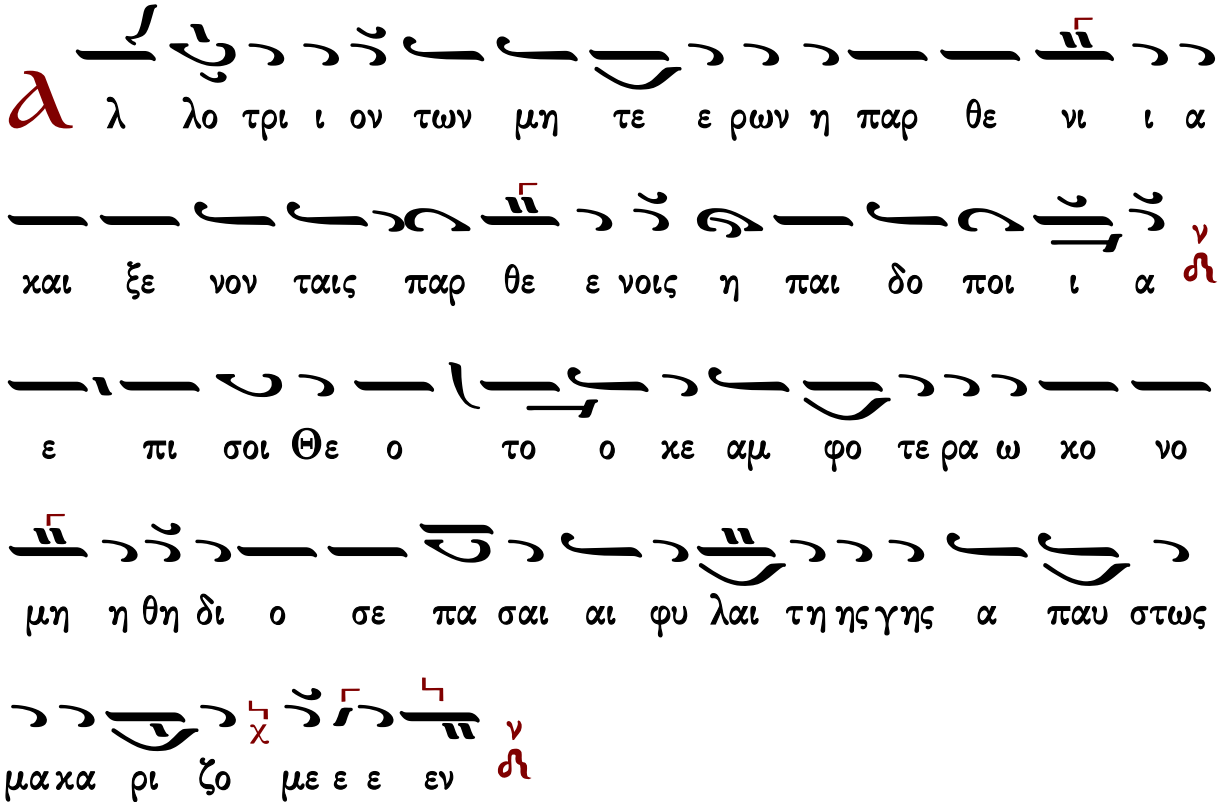
Σύντομος

### Σύντομος

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Ἦχος λ π ρι Νη

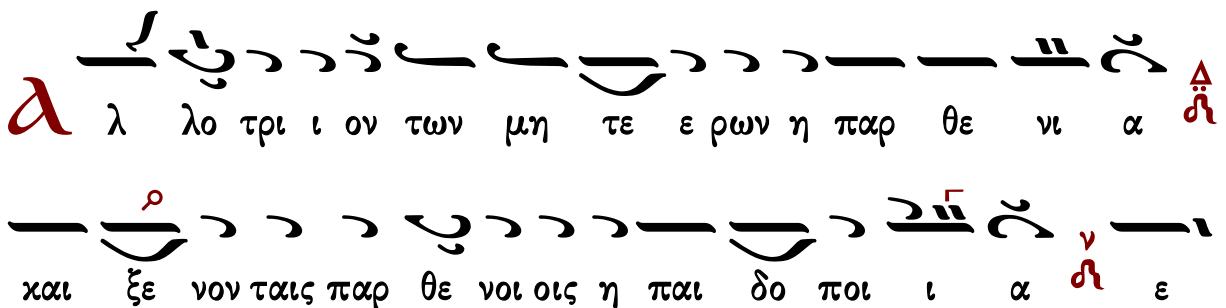
Ἰωάννης Πρωτοψάλτης  
Ειμολόγιον 1903 σ.400#



 Α λ λο τρι ι ον των μη τε ε ρων η παρ θε νι ι α  
 και ξε νον ταις παρ θε ε νοις η παι δο ποι ι α  
 ε πι σοι Θε ο το ο κε αμ φο τε ρα ω κο νο  
 μη η θη δι ο σε πασαι αι φυ λαι τη ης γης α παυ στως  
 μακα ρι ζο με ε ε εν


Γαβριήλ Κουντιάδου


Ἦχος λ π ρι Νη

Γαβριήλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
α' ἔκδοσις 1931-1935  
ἐπανέκδοσις 1991 σ.254\*


 Α λ λο τρι ι ον των μη τε ε ρων η παρ θε νι α  
 και ξε νον ταις παρ θε νοι οις η παι δο ποι ι α ε


  
 πι σοι Θε ο το ο κε αμ φο τε ρα ω κο νο μη



  
 η η θη <sup>Δ</sup>δι ο σε πα σαι αι φυ λαι τη ης γης α



  
 παυ στως μα κα ρι ζο με ε ε εν <sup>γ</sup>


Κωνσταντίνου Παπαγιάννη


Ἦχος λ π δι Νη


πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.289\*


  
<sup>Δ</sup>α λ λο τρι ι ον των μη τε ε ρων η παρ θε νι ι α <sup>Δ</sup>


  
 και ξε νον ταις παρ θε νοι οις η παι δο ποι ι α <sup>γ</sup> ε


  
 πι σοι Θε ο το ο κε αμ φο τε ρα ω κο νο μη η θη <sup>Δ</sup>


  
 δι ο σε πα σαι αι φυ λαι τη ης γης α παυ στως μα κα


  
 ρι ι ζο ο μεν <sup>γ</sup>

\* τὸ τέλος  
 α παυ στως μα κα ρι ζοο με ε ε εν γ

Ἄρχή

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Ἦχος λ π ρι Νη

Ἰωάννης Πρωτοψάλτης  
 Ειρμολόγιον 1903 σ.99#

α λ λο ο τρι ι ι ι ο ον των μη η τε ρω

ων η πα αρ θε ε νι ι ι ι α και ξε ε ε ε

ε ε νο ον ταις πα αρ θε νοι οι οι οις η παι αι δο ποι

οι οι ι ι ι ι α ε πι ι σοι οι θε ε ο

το ο ο κε ε αμ φο τε ε ρα α ω χο ο νο ο

μη η η η θη δι ο σε πα α α σαι αι αι

φυ λαι αι τη ης γη ης α πα αυ στως μα κα ρι ζο

ο με ε ε εν γ

Γαβριήλ Κουντιάδου

Ἦχος λ π ς Νη

Γαβριήλ Κουντιάδου ιερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοσάριον  
α' έκδοσις 1931-1935  
ἐπανέκδοσις 1991 σ.268#

α λ λο ο τρι ι ι ι ι ο ον των μη

τε ε ε ε ε ρω ων η πα αρ θε ε νι ι ι ι

ι α και ξε ε ε ε ε ε ε ε νο ον ταις

παρ θε ε νοι οις η παι αι δο ποι οι οι ι ι ι ι

ι α ε πι σοι οι οι οι Θε ο ο το ο ο

κε ε αμ φο τε ε ρα α ω χο ο νο ο μη η η

η η θη δι ο σε πα σαι αι αι φυ λαι

αι αι τη η η ης γη ης α πα αυ στως μα κα ρι  
 ι ζο ο με ε ε εν

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Ἦχος λ π ρι Νη

πρωτ. Κων. Παπαγιάννη  
 Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
 2005 σ.288\*

α λ λο ο τρι ι ι ι ο οντων μη τε ε ρω  
 ων η πα αρ θε ε νι ι ι ι α και ξε ε ε ε  
 ε νο ον ταις παρ θε ε νοι οις η παι αι δο ποι  
 οι οι ι ι ι ι α ε πι σοι Θε ο ο το ο  
 ο κε ε αμ φο τε ε ρα α ω χο ο νο ο μη η  
 η η θη δι ο σε πα α α σαι αι αι φυ

λαι αι τη ης γη ης α πα αυ στως μα κα ρι ζο ο

με ε ε εν

# Τῆς Ἀναλήψεως (προεόρτιες)

Ἀπὸ τῆς Κυριακῆς τοῦ Τυφλοῦ μέχρι τῆς Τρίτης πρὸ τῆς ἀποδόσεως τοῦ Πάσχα

ἦχος πλ.α'

Τῷ Σωτῆρι Θεῷ, τῷ ἐν θαλάσῃ λαόν, ποσὶν ἄβρόχοις ὀδηγήσαντι, καὶ Φαραῶν πανστρατιᾶ καταποντίσαντι, αὐτῷ μόνῳ ἄσωμεν ὅτι δεδόξασται.

Δυνάμει τοῦ Σταυροῦ σου Χριστέ, στερέωσόν μου τὴν διάνοιαν, εἰς τὸ ὑμνεῖν, καὶ δοξάζειν σου τὴν σωτήριον ἀνάληψιν.

Εἰσακήκοα τὴν ἀκοήν, τῆς δυναστείας τοῦ Σταυροῦ σου, ὡς παράδεισος ἠνοιγήθη δι' αὐτοῦ, καὶ ἐβόησα· Δόξα τῇ δυνάμει σου Κύριε.

Ὁρθρίζοντες βοῶμέν σοι Κύριε· Σῶσον ἡμᾶς· σὺ γὰρ εἶ Θεὸς ἡμῶν, ἐκτός σου ἄλλον οὐκ οἶδαμεν.

Ἐκύκλωσέ με ἄβυσσος, ταφή μοι τὸ κῆτος ἐγένετο· ἐγὼ δὲ ἐβόησα, πρὸς σέ τὸν φιλόανθρωπον, καὶ ἔσωσέ με ἡ δεξιὰ σου Κύριε.

Ὁ ἐν καμίνῳ πυρός, τοὺς ὑμνολόγους σώσας παιῖδας, εὐλογητὸς ὁ Θεός, ὁ τῶν πατέρων ἡμῶν.

Ἀινοῦμεν, εὐλογοῦμεν, καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον.

Τὸν ἐκ Πατρὸς πρὸ αἰώνων, γεννηθέντα Υἱὸν καὶ Θεόν, καὶ ἐπ' ἐσχάτων τῶν χρόνων, σαρκωθέντα, ἐκ παρθένου μητρός, ἱερεῖς ὑμνεῖτε, λαὸς ὑπερυψοῦτε, εἰς πάντας τοὺς αἰῶνας.

Σύντομοι

Ἀργαί

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Πέτρου Πελοποννησίου

Γαβριὴλ Κουντιάδου

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Σύντομοι

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

ὦδὴ α'

ἦχος λ̣ ἢ Κε

Ἰωάννης Πρωτοψάλτης  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.416#



Τω Σωτηρηρι Θεω τω εν θαλασση λαον

ποσιν αβροχοις οδηγησαν τι και Φαρω

πανστρατια καταποντισαν τι αυτωμο

νω ασωμεν ο οτι δεδοξαται

Αυναμειει του Σταυρου σου Χριστε στερεωσον

μου την διανοιαν εις το υμνειειν και δοξαζειν

σου την σωτηριον Αναληψη σου

Εισαχηκοα Κυριε την ακοην της δυνα

στειας του Σταυρου ου σου ως παρδεισος η νοι γη δι αυ

του και εβοησα δοξατη δυναμει σου Κυρι



Α ι νου μεν ευ λο γου μεν προ σκυ νου ου μεν

τον Κυ ρι ον

Τ ον εκ Πα τρος προ αι ω νων γεν νη θεν τα Υι ον και

Θε ον και επ ε σχα των των χρο νων σαρ κω θεν τα εκ

παρ θε νου μη τρος ι ε ρεις υ μνει ει τε λα ος υ

περ υ ψου ου τε εις παν τας τους αι ω ω να α α

α ας

### Γαβριήλ Κουντιάδου

### Ἦχος λ̣ π̣ ᾠ̣ Κε

Γαβριήλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
α' ἔκδοσις 1931-1935  
ἐπανέκδοσις 1991 σ.319\*

Τ ω Σω τη η ρι Θε ω τω εν θα λα ασ ση

λα ον πο σιν α βρο χοις ο δη γη σαν τι <sup>χ' ρ'</sup> και Φα

ρα ω παν στρα τι α κατα πον τι σαν τι <sup>χ' ρ'</sup> αυ τω μο νω

α σω ω μεν ο ο τι δε δο ξα α σται <sup>χ' ρ'</sup> ῶδὴ γ'

**Δ**υ να μει του Σταυ ρου ου σου Χρι στε ε ε στε ρε ω

σον μου την δι α νοι αν <sup>χ' ρ'</sup> εις το υ μνειν και δο ξα ζει

ειν σε <sup>χ' ρ'</sup> α' χορός την σω τη ρι ον **Α** να α λη η ψιν <sup>χ' ρ'</sup> ῶδὴ δ'

**Ε**ισ α κη κο α την α κο ην της δυ να στει ας του

Σταυ ρου ου σου <sup>γ' ρ'</sup> ως πα ρα δει σος η νοι γη δι αυ του <sup>χ' ρ'</sup>

και ε βο η η σα δο ξα τη δυ να α μει σου Κυ ρι ι

<sup>χ' ρ'</sup> ῶδὴ ε'  
ε

Ο ρ θρι ζον τες βο ω μεν σοι Κυ ρι ε σω σον η

μας σου γαρ ει Θε ος η ημων ε κτος σου α αλλον ουκ

οι δα α μεν ✠ ωδής'

Ε κυ κλω σε με α βυσ σος τα φη μοι το κη η

η τος ε γε νε το ✠ ε γω δε ε βο η σα προς σε ε

τον φι λαν θρω πον ✠ και ε σω σε ε με η δε ξι α

σου Κυ ρι ι ε ✠ ωδής'

Ο εν κα μι ι νω πυ ρος τους υ μνο λο γους σω

σας παι δας ✠ ευ λο γη τος ο Θε ος ο των πα τε ρων

η μων ✠ ωδής'

Αἰ νου μεν εὐ λο γου μεν προσ κυ νου ου μεν τον

Κυ ρι ι ον

Τον εκ Πα τρο ος προ αι ω ω νων γεν νη θεν τα Υι

ον και Θε ον και επ ε σχα των των χρο ο νων σαρ

κω θεν τα εκ παρ θε νου Μη τρος ι ε ρεις υ μνει τε λα

ος υ περ υ ψου ου τε εις παν τας τους αι ω ω

να α α α ας

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

Ἦχος λ π ᾠ Κε

ᾠδὴ α'

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Πεντηκοστάριον 1983 σ.175\*

ΠΑ

Τω Σω τη η ρι Θε ω τω εν θα λασ ση λα

ον πο σιν α βρο χοις ο δη γη σαν τι και Φα ρα

ω παν στρα τι α κα τα πον τι σαν τι αυ τω

μο νω α σω μεν ο ο τι δε δο ξα α σται

Δ υ να α μει ει του ου Σταυ ρου σου Χρι στε

στε ρε ω σον μου την δι α νοι αν εις το υ μνειν

και δο ξα ζειν σου την σω τη ρι ον Α να α λη η

ψιν

Ε ισ α κη κο α την α κο ην της δυ να στει ας του

Σταυ ρου ου σου ως πα ρα δει σος η νοι γη δι αυ

του και ε βο ο η η σα δο ξα τη δυ να α μει

ΚΕ

σου Κυ υ ρι ι ε

ῶδὴ ε'

ΜΕΛ

ΚΕ

Ο ρ θρι ζον τες βο ω μεν σοι Κυ ρι ε σω ω σον η

ΔΙ

ΚΕ

ΔΙ ΚΕ

ΜΕΛ

μας <sup>ν'</sup>η σου γαρ ει Θε ος η μων <sup>χ'η'</sup> ε κτος σου α αλ λον ουκ

ΚΕ

οι οι δα α μεν <sup>χ'η'</sup>

ῶδὴ ε'

ΜΕΛ

ΚΕ

ΔΙ

Ε κυ κλω σε με α βυσ σος τα φη μοι το κη η

ΚΕ

ΔΙ ΚΕ

τος ε γε νε το <sup>η'χ'η'</sup> ε γω ω δε ε βο η σα προς σε ε

ΔΙ ΚΕ

ΜΕΛ

τον φι λαν θρω πον <sup>ο'χ'η'</sup> και ε σω σε ε με η δε ξι α

ΚΕ

σου Κυ υ ρι ι ε <sup>χ'η'</sup>

ῶδὴ ζ'

ΚΕ

Ο εν κα μι ι νω πυ ρος τους υ μνο λο γους σω σας

παι αι δας <sup>η'χ'η'</sup> ευ λο γη τος ο Θε ος ο των πα τε ρων η







Σταυρου σου <sup>γ'</sup>ως παραδεισος η νοι γη δι αυτου <sup>χ' ρ'</sup>

και εβοηησαδοξατηδυνα αμει σου Κυρι ι

ε <sup>χ' ρ'</sup> ῶδῆ ε'

**Ο**ρθριζοντες βοωμεν σοι Κυρι εσωωσον

η μας <sup>γ'</sup>συγαρ ει Θεος ημων <sup>χ' ρ'</sup> εκτος σου ααλλον <sup>σ'</sup>

ουκ οιδα αμεν <sup>χ' ρ'</sup> ῶδῆ ε'

**Ε**κυκλωσε με αβυσσος ταφη μοι το

κη η ητος εγενε το <sup>χ' ρ'</sup> εγωωδεεβο

ησαπρος σε εε τον φιλανθρωπον <sup>χ' ρ'</sup> και εσωσε

εμε ηδε <sup>σ'</sup>ξια σου Κυρι ι ε <sup>χ' ρ'</sup> ῶδῆ ζ'



# Ἄργαι

## Πέτρου Πελοποννησίου

ῥοδή α'

Ἦχος λ π ῥ Κε χ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.351\*

**Τ** ω Σω τη ρι Θε ε ω ω ῥ τω ε ε εν θα λα  
ασ ση η λα α α ον πο σιν α βρο ο χοις ο  
δη γη η σα αν τι και Φα ρα ω παν στρα τι α  
α α κα τα πον τι ι σα α αν τι αυ τω μο ο  
νω ω ω α σω ω μεν ο ο ο ο τι δε δο ο  
ο ξα α α σται αι αι

ῥοδή γ'

**Δ** υ να μει του Στα αυ ρου σου ου Χρι ι στε ε  
στε ρε ω σο ον μου την δι α α νοι οι οι αν εις

το υ μνειν και δο ο ο ξα ζειειν σου <sup>x q</sup> α' χορός την σω τη

ρι ι ον A να α α λη η η ψι ι ι ν <sup>x q</sup> ὠδή δ'

**E** ισ α κη κο α α την α κο ο η η ν <sup>γ' η</sup> της δυ

να στει ει ει ας του Σταυ ρου ου ου σου <sup>x q</sup> ως πα

ρα δει σο ο ος η νοι γη δι ι α α αυ του <sup>x q</sup> και

ε βο η η σα δο ξα τη δυ να α α μει ει σου Κυ υ

υ ρι ι ι ε ε ε <sup>x q</sup> ὠδή ε'

**O** ρ θρι ζον τες βο ω μεν σοι Κυ ρι ι ε <sup>γ' η</sup>

σω ω σον η η μας <sup>γ' η</sup> συ υ υ γαρ ει Θε ο

ος η η η μων <sup>x q</sup> εκ τος σου α α α α λ λο ον ουκ οι

οι οι δα α α με ε εν x̣q̣ ῶδὴς'

E κυ κλω σε με α α βυ υσ σος γ' η τα φη

μοι το κη η τος ε γε ε νε ε ε το x̣q̣ ε γω ω ω

δε ε βο η σα γ' η προς σε ε τον φι λα αν θρω ω

ω πον x̣q̣ και ε σω ω ω σε ε ε με ε η δε ξι

α σου ου Κυ υ υ ρι ι ι ε ε ε x̣q̣ ῶδὴς'

O εν κα μι νω πυ υ ρο ος γ' η τους υ μνο ο λο ο

ο γους σω σας παι αι αι αι δας x̣q̣ ευ λο γη τος ο Θε ος

ο ο των πα τε ε ε ρων η μω ων x̣q̣ ῶδὴ η'

A ι x̣ φ νου μεν ευ λο x̣ γου μεν και προσ κυ νου ου μεν

τον Κυ υ ρι ι ι ον <sup>χ</sup> <sub>ϩ</sub>

**Τ**ον εκ Πα τρος προ ο αι ω ω νων <sup>γ</sup> <sub>η</sub> γεν νη θεν

τα α Υι ο ον και αι Θε ε ε ον <sup>χ</sup> <sub>ϩ</sub> και επ ε

σχα των των χρο ο νων <sup>γ</sup> <sub>η</sub> σα ρ κω θεν τα ε ε εκ Πα ρ θε

ε ε ε νου ου Μη η η τρος <sup>χ</sup> <sub>ϩ</sub> ι ε ρεις υ υ

μνει ει ει τε λα ος υ περ υ υ ψου ου ου τε εις παν τα ας τους

αι ω ω ω να α α α ας <sup>χ</sup> <sub>ϩ</sub>

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

ᾠδὴ α'

Ἦχος λ π ᾠ Κε

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Πεντηκοστάριον 1983 σ.178\*

**Τ**ω Σω τη ρι Θε ε ω ω <sup>γ</sup> <sub>η</sub> τω ε ε εν θα



λα α α ασ ση λα α α ον <sup>χ</sup> πο σιν α βρο ο

χοις ο ο δη η γη η σα αν τι ι ι και Φα ρα

ω παν στρα τι α α αν κα τα α α πον τι ι σα

α αν τι <sup>χ</sup> αυ τω μο ο νω ω ω α α σω ω ω

μεν <sup>χ</sup> ο ο ο ο τι ι ι δε δο ο ο ο ο ξα α

α α σται αι αι <sup>χ</sup> ῥδῆ γ'

<sup>KE</sup>  
**Δ**υ να μει του ου Στα αυ ρου ου σου Χρι ι στε

<sup>γ'</sup>  
ε στε ρε ω σο ον μου τη η ην δι α α νοι

οι οι αν <sup>χ</sup> εις το υ μνειν και αι δο ο ο ξα α ζει

ει ειν σου <sup>χ</sup> α' χορὸς την σω τη η ρι ο ο ον Α να α

α α α λη η η η ψι ι ι ν x q ῶδὴ δ'

Ε ισ α κη κο α α την α α κο ο η η ν y n

της δυ υ να α στει ει ει ας του ου ου Σταυ ρου ου

ου ου σου x q ως πα ρα δει σο ος η νοι οι οι γη

δι ι α α αυ του x q και αι ε ε ε βο ο ο

η η η σα x q δο ξα α τη δυ να α α α μει ει ει σου

Κυ υ υ υ υ ρι ι ι ι ε ε ε x q ῶδὴ ε'

KE  
Ο ρ θρι ζον τες βο ω μεν σοι οι οι Κυ υ ρι ι

ε y n σω ω ω ω ω σον η μας y n συ υ υ γαρ ει

ει ει Θε ο ος η η η μων x q ε κτος σου α α α αλ

λο ο ον ουκ οι οι οι οι οι δα α α α με ε

εν ψδής'

**Ε** κυ κλω σε με α α α βυ υσ σο ος γ' η

τα φη η μοι χ' η το κη η τος ε γε ε ε νε ε

το ο η γ ε γω ω ω ω δε ε ε ε βο ο η η

σα α γ' η προς σε ε ε το ο ον φι λα αν θρω ω ω

πον χ' η και ε ε σω ω σε ε ε ε ε με χ' η

δε ξι α α σου ου Κυ υ υ υ υ ρι ι ι ε ε

ε ψδήζ'

**Ο** εν κα μι νω πυ υ ρο ος γ' η τους υ υ μονο ο

λο ο ο γους σω ω ω σας παι αι αι αι δας <sup>χ</sup><sub>9</sub> ευ λο

γη το ος ο Θε ο ος ο ο τω ων πα τε ε ε ε

ε ρωων η η μω ω ων <sup>ο</sup> <sup>χ</sup><sub>9</sub> ῶδὴ η'

ΚΕ

<sup>χ</sup> <sup>χ</sup> Δ ι νου μεν ευ λο γου μεν προσ κυ νου ου ου με

ε εν τον Κυ ρι ι ι ον <sup>ο</sup> <sup>χ</sup><sub>9</sub>

ΚΕ

<sup>ο</sup> <sup>ν'</sup> <sup>η</sup> Τ ον εκ Πα τρο ο ος προ αι αι ω νων <sup>η</sup> γεν νη

θε εν τα α α Υι ο ο ο ον και αι Θε ε ε

ον <sup>ο</sup> <sup>η</sup> και επ ε σχα τω ωων τω ων χρο ο νων <sup>η</sup> σαρκω

θε εν τα ε ε εκ Παρ θε ε ε ε νου ου Μη η

η τρος <sup>ο</sup> <sup>η</sup> ι ε ρει εις υ υ υ μνει ει ει ει ει

τε λα ος υπερ υ ψου ου ουου τε εις πα αν  
 τα ας του ου ους αι ω ω ω ω να α α α ας

## Ἐν Κυριακῇ - φδὴ θ´

### Κανὼν τοῦ Πάσχα

#### ἦχος α´

**Μ**εγάλυνον, ψυχὴ μου, τὸν ἐθελουσίως παθόντα καὶ ταφέντα καὶ ἔξαναστάντα τριήμερον ἐκ τάφου.  
**Φ**ωτίζου, φωτίζου ἡ νέα Ἱερουσαλήμ· ἡ γὰρ δόξα Κυρίου ἐπὶ σὲ ἀνέτειλε. Χόρευε νῦν,  
 καὶ ἀγάλλου Σιών· σὺ δὲ ἀγνή, τέρπου, Θεοτόκε, ἐν τῇ ἐγέρσει τοῦ τόκου σου.

**Μ**εγάλυνον, ψυχὴ μου, τὸν ἔξαναστάντα τριήμερον ἐκ τάφου Χριστὸν τὸν ζωοδότην.  
**Φ**ωτίζου, φωτίζου ἡ νέα Ἱερουσαλήμ· ἡ γὰρ δόξα Κυρίου ἐπὶ σὲ ἀνέτειλε. Χόρευε νῦν,  
 καὶ ἀγάλλου Σιών· σὺ δὲ ἀγνή, τέρπου, Θεοτόκε, ἐν τῇ ἐγέρσει τοῦ τόκου σου.

**Χ**ριστὸς τὸ καινὸν πάσχα, τὸ ζωόθυτον θῦμα, ἀμνὸς Θεοῦ ὁ αἴρων τὴν ἁμαρτίαν κόσμου.  
**ᾠ**θείας! ὦ φίλης! ὦ γλυκυτάτης σου φωνῆς! μεθ´ ἡμῶν ἀψευδῶς γάρ, ἐπηγγείλω,  
 ἔσεσθαι, μέχρι τερμάτων αἰῶνος Χριστέ· ἦν οἱ πιστοί, ἀγκυραν ἐλπίδος, κατέχοντες  
 ἀγαλλόμεθα.

**Σ**ήμερον πᾶσα κτίσις ἀγάλλεται καὶ χαίρει, ὅτι Χριστὸς ἀνέστη καὶ ἄδης ἐσκυλεύθη.  
**ᾠ** Πάσχα τὸ μέγα, καὶ ἱερώτατον Χριστέ· ὦ σοφία καὶ Λόγε, τοῦ Θεοῦ καὶ δύνამις·  
 δίδου ἡμῖν ἐκτυπώτερον, σοῦ μετασχεῖν, ἐν τῇ ἀνεσπέρῳ, ἡμέρα τῆς βασιλείας σου.

Γαβριὴλ Κουντιάδου

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Κωνσταντίνου Σκαρμούτσου

## Γαβριὴλ Κουντιάδου

### ἦχος ᾠ Πα ᾠ

Γαβριὴλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
 Μουσικὸν Πεντηκοστάριον  
 α´ ἔκδοσις 1931-1935  
 ἐπανέκδοσις 1991 σ.25\*

Μεγαλον ψυχη η μου ου τον εθελουσι

ιως παθοντα και ταφεντα και εξανα

στα αντατρι η μερονεκταφου

Φωτιζου φωτιζου ηνεα Ιερουσα

λημη γαρδοξα Κυριου επισηα νετειλε

χορευουν και αγαλλου Σινων σου δε Αγνη η η

τερπου Θεο τοοκε εντη εγερσει του τοο

κου ου σου

Μεγαλον ψυχη η μου ου τον εξαναστα

αντατρι η μερονεκταφου Χριστον τον ζωοδοτην

Φ ω τι ζου φω τι ζου <sup>π 9</sup> η νε α Ι ε ρου σα

λημ <sup>Δ</sup> η γαρ δο ξα Κυ ρι ου ε πι σε α νε τει λε <sup>π 9</sup>

χο ρευ ε νυν και α γα αλλου Σι ων <sup>Δ</sup> συ δε Α γνη η η

τερ που Θε ο το ο κε <sup>Δ</sup> εν τη ε γερ σει του το ο

κου ου σου <sup>π 9</sup>

Χ ρι στος το και νον Πα σχα το ζω ο ο θυ τον θυ υ

μα <sup>Δ</sup> α μνος Θε ου ο αι αι ρων την α μαρ τι αν κο

σμου <sup>π 9</sup>

Ω θει ας ω φι λης <sup>π 9</sup> ω γλυ κυ τα της σου φω

νης <sup>Δ</sup> μεθ η μων α ψευ δως γαρ ε πηγ γει λω ε σε

σθαι <sup>π ρ</sup> με χρι τερ μα των αι ω ω νος Χρι στε <sup>Δ ρ</sup> ην οι πι

στοι οι οι αγ κυραν ελ πι ι δος <sup>Δ ρ</sup> κα τε χον τες α γαλ λο

ο μεθα <sup>π ρ</sup>

**Σ** η με ρον πα σα κτι σις α γαλ λε ται και χαι αι ρει <sup>Δ ρ</sup>

ο τι Χρι στος α νε στη και α δης ε σκυ λευ θη <sup>π ρ</sup>

**Ω** Πα σχα το με γα <sup>π ρ</sup> και ι ε ρω τα τον Χρι

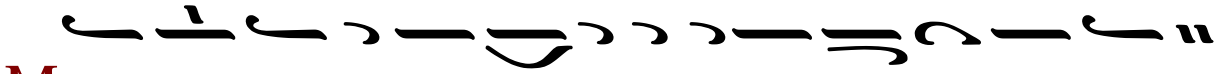
στε <sup>Δ ρ</sup> ω σο φι α και Λο γε του Θε ου και δυ να μις <sup>π ρ</sup>

δι δου η μιν εκ τυ πω τε ρον σου με τα σχει ει ει ν εν τη α

νε σπε ε ρω <sup>Δ ρ</sup> η με ρα της βα σι λει ει ας σου <sup>π ρ</sup>

Κωνσταντίνου Γκαρμούτσου

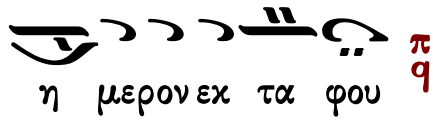




**Μ** ε γ α λ υ ν ο ν ψ υ χ η η μ ο υ ο υ τ ο ν ε θ ε λ ο υ σ ι ι



ω ς π α θ ο ν τ α κ α ι τ α φ ε ε ν τ α α κ α ι ε ξ α ν α σ τ α ν τ α τ ρ ι



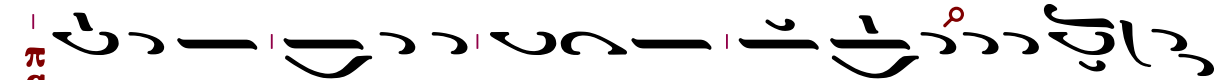
η μ ε ρ ο ν ε κ τ α φ ο υ



**Φ** ω τ ι ζ ο υ φ ω τ ι ι ζ ο υ η ν ε α Ι ε ρ ο υ σ α



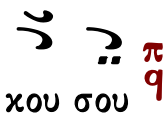
λ η μ η γ α ρ δ ο ξ α Κ υ ρ ι ι ο υ ο υ ε π ι σ ε α ν ε τ ρ ι λ ε



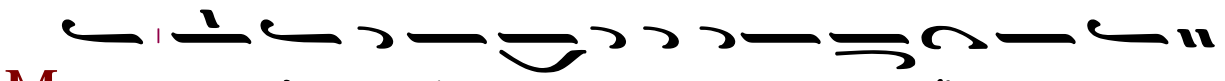
π ρ ο ρ ο υ ε ν υ ν κ α ι α γ α λ λ ο υ σ ι ω ν σ υ υ δ ε Α γ η η



τ ε ρ π ο υ Θ ε ο τ ο ο κ ε ε ν τ η ε γ ε ρ σ ε ι τ ο υ τ ο ο



κ ο υ σ ο υ



**Μ** ε γ α λ υ ν ο ν ψ υ χ η η μ ο υ ο υ τ ο ν ε ξ α ν α σ τ α ν

τα τρι η με ρον εκ τα α φου Χρι στον τον Ζω ο δο την π ρ

Φ ω τι ζου φω τι ι ζου η νε α Ι ε ρου σα

λημ Δ ρ η γαρ δο ξα Κυ ρι ι ουου ε πι σε α νε τει λε

π ρ χο ρευ ε νυν και α γαλ λου σι ων συ υ δε Α γνη η

τερ που Θε ο το ο κε Δ ρ εν τη ε γερ σει του το ο

κου σου π ρ

Χ ρι στος το και νον Πα σχα το ζω ο θυ τον θυ υ μα

Α μνος Θε ου ο αι αι ρων την α μαρ τι αν κο σμου π ρ

Ω θει ας ω φι ι λης ω γλυ κυ τα της σου φωνης π ρ

μεθ η μων α ψευ δω ως γαρ ε πηγ γει λω ε σε σθαι π ρ

με χρι τερ μα των αι ω νος Χρι στε η ην οι πι στοι

αγ κυραν ελ πι ι δος κα τε χοντες α γαλ λο ο με

θα π ρ

η με ρον πα σα κτι σις α γαλ λεται και χαι αι ρει

ο τι Χρι στος α νε ε στη και Α δης ε σκυ λευ θη

ω Πα σχα το με ε γα και ι ε ρω τα τον Χρι

στε ω σο φι α και Λο ο γε του Θε ου και δυ να

μις δι δου η μιν εκ τυ πω τε ρον σου ου με τα σχειν

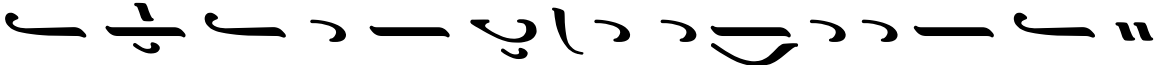
εν τη α νε σπε ε ρω η με ρα της βα σι λει ει ας

σου π ρ

Ἦχος ᾠ Πα

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Πεντηκοστάριον 1983 σ.6\*

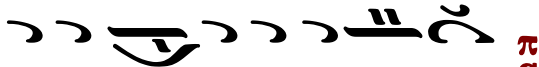
ΠΑ



**Μ** ε γ α λ υ ν ο ν ψ υ χ η μ ο υ ο υ τ ο ν ε θ ε λ ο υ σ ι ι

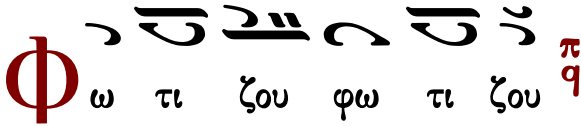


ω ς **Δ** πα θ ο ν τ α κ α ι τ α φ ε ν τ α α κ α ι ε ξ α ν α σ τ α ν



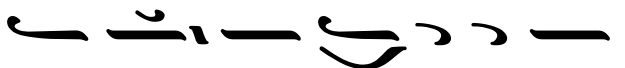
τ α τ ρ ι η μ ε ρ ο ν ε κ τ α φ ο υ **π**

ΜΕΛ



**Φ** ω τ ι ζ ο υ φ ω τ ι ζ ο υ **π** η ν ε α Ι ε ρ ο υ σ α

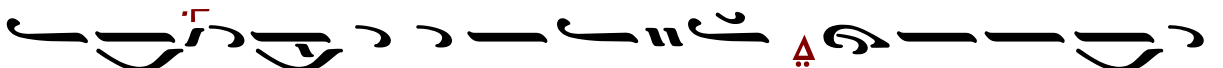
ΠΑ



λ η μ **Δ** η γ α ρ δ ο ξ α Κ υ ρ ι ι ο υ ο υ ο υ ε π ι σ ε α ν ε



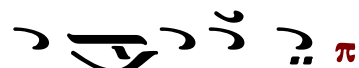
τ ε ι λ ε **π** χ ο ρ ε υ ε ν υ ν κ α ι α γ α α λ λ ο υ Σ ι ω ν **Δ** σ υ υ δ ε Α



γ η η η η τ ε ρ π ο υ Θε ο τ ο ο κ ε **Δ** ε ν τ η ε γ ε ρ σ ε ι

ΝΗ

ΠΑ

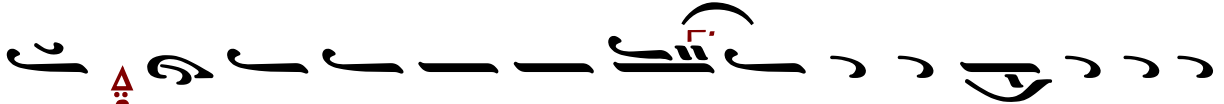


τ ο υ τ ο ο κ ο υ σ ο υ **π**

ΠΑ



**Μ** ε γ α λ υ ν ο ν ψ υ χ η μ ο υ ο υ τ ο ν ε ξ α ν α σ τ α α ν



τ α **Δ** τ ρ ι η μ ε ρ ο ν ε κ τ α α φ ο υ Χ ρ ι σ τ ο ν τ ο ν ζ ω ο

ΝΗ ΠΑ



δ ο τ η ν **π** τ ο ἴδι ο

ΜΕΛ

ΠΑ



**Φ** ω τ ι ζ ο υ φ ω τ ι ζ ο υ **π** η ν ε α Ι ε ρ ο υ σ α



λ η μ **Δ** η γ α ρ δ ο ξ α Κ υ ρ ι ι ο υ ο υ ο υ ε π ι σ ε α ν ε



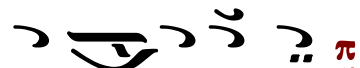
τ ε ι λ ε **π** χ ο ρ ε υ ε ν υ ν κ α ι α γ α α λ λ ο υ Σ ι ω ν **Δ** σ υ υ δ ε Α



γ η η η η τ ε ρ π ο υ Θ ε ο τ ο ο κ ε **Δ** ε ν τ η ε γ ε ρ σ ε ι

ΝΗ

ΠΑ

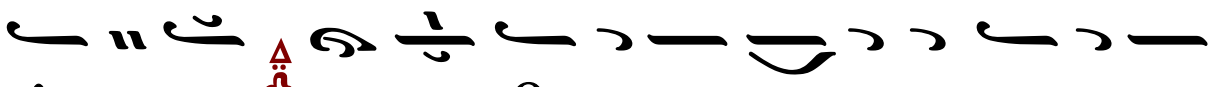


τ ο υ τ ο ο κ ο υ σ ο υ **π**

ΠΑ



**Χ** ρ ι σ τ ο ς τ ο κ α ι ν ο ν Π α α σ χ α τ ο ζ ω ο ο θ υ τ ο ν



θ υ υ μ α **Δ** α μ ν ο ς Θ ε ο υ ο α ι α ι ρ ω ν τ η ν α μ α ρ

τι αν κο σμου <sup>π ρ</sup>

**Ω** θει ας ω φι ι λης ω γλυ κυ τα της σου φωνης <sup>π ρ</sup>

μεθ η μων α ψευ δω ως γα αρ ε πηγ γει λω ε σε

σθαι <sup>π ρ</sup> με χρι τερ μα των αι ω νος Χρι στε <sup>Α Δ</sup> η ην οι πι

στοι οι οι οι αγ κυραν ελ πι ι δος <sup>Α Δ</sup> κα τε χον τες α

<sup>ΝΗ</sup> γαλ λο ο με θα <sup>π ρ</sup>

**Σ** η με ρον πα σα κτι σις α γαλ λε ται και χαι αι ρει <sup>Α Δ</sup>

ο τι Χρι στος α νε ε στη και Α δης ε σκυ λευ θη <sup>π ρ</sup>

**Ω** Πα σχα το με ε γα <sup>γ ρ</sup> και ι ε ρω τα τον Χρι

στε <sup>π ρ</sup> ω σο φι α και Λο ο γε ε του Θε ου και δυ να

μισ <sup>π ρ</sup> δι δου η μιν εκτυ πω τε ρον <sup>Δ ρ</sup> σου ουμετα σχει ει

ει ει εν τη α νε σπε ε ρω η με ρα της βα σι λει ει <sup>ΝΗ</sup>

<sup>ΠΑ</sup>  
ας σου <sup>π ρ</sup>

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Ἦχος <sup>Λ ρ</sup> Πα <sup>ϛ</sup>

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.17\*

**Μ** ε γα λυ νον ψυ χη μου τον ε θε λου σι ι ως

πα θον τα και τα φεν τα <sup>ζ</sup> και εξ α να στα αν τα τρι

η μερον εκ τα φου <sup>π ρ</sup>

**Φ** ω τι ζου φω τι ζου η νε α Ι ε ρου σα

λημ <sup>Δ ρ</sup> η γαρ δο ξα Κυ ρι ου ε πι σε α νε τει λε <sup>π ρ</sup> χο

ρευ ε νυν και α γαλ λου Σι ων **Δ** σου υ δε α γνη η τερ που

Θε ο το ο κε **Δ** εν τη ε γερ σει του το ο κου ου

σου **π ρ**

**Μ** ε γα λυ νον ψυ χη μου τον εξ α να στα αν τα τρι

η μερον εκ τα φου Χρι στον τον ζω ο δο την **π ρ**

**Φ** ω τι ζου φω τι ζου η νε α Ι ε ρου σα

λημ **Δ** η γαρ δο ξα Κυ ρι ου ε πι σε α νε τει λε **π ρ** χο

ρευ ε νυν και α γαλ λου Σι ων **Δ** σου υ δε α γνη η τερ που

Θε ο το ο κε **Δ** εν τη ε γερ σει του το ο κου ου

σου **π ρ**



Χ ρι στος το και νον Πα σχα το ζω ο ο θυ τον θυ υ

μα α μνος Θε ου ο αι αι ρων την α μαρ τι αν κο ο

σμου

Ω θει ας ω φι λης ω γλυ κυ τα της σου φων ης

μεθ η μων α ψευ δω ως γαρ ε πηγ γει λω ε σε

σθαι με χρι τερ μα των αι ω ω νος Χρι στε ην οι πι

στοι οι αγ κυραν ελ πι ι δος κα τε χοντες α γαλ λο

ο με ε θα

Σ η η με ρον πα σα κτι ι σις α γαλ λεται και χαι αι

ρει ο τι Χρι στος α νε ε στη και α δης ε σκυ λευ

θη π 9

Ω Πα σχα το με ε γα και ι ε ρω τα τον Χρι

στε π 9 ω Σο φι α και Λο γε του Θε ου και δυ να μιν π 9

δι δου η μιν εκ τυ πω τε ρον σου ου μετασχειν Δ εν τη

α νε σπε ρω η με ρα της βα σι λει ει α ας σου π 9

### Κανών τῆς Θεοτόκου

ἦχος α'

Δόξα Πατρὶ καὶ Υἱῷ καὶ ἀγίῳ Πνεύματι.

Μεγάλυνον, ψυχὴ μου, τῆς τρισυποστάτου καὶ ἀδιαιρέτου θεότητος τὸ κράτος.

Συμφώνως Παρθένε, σὲ μακαρίζομεν πιστοί· Χαῖρε πύλη Κυρίου· χαῖρε πόλις ἔμφυχε· χαῖρε, δι' ἧς ἡμῖν ἔλαμψε, σήμερον φῶς τοῦ ἐκ σοῦ τεχθέντος, τῆς ἐκ νεκρῶν ἀναστάσεως.

Καὶ νῦν καὶ ἀεὶ καὶ εἰς τοὺς αἰῶνας τῶν αἰώνων, ἀμήν.

Χαῖρε, παρθένε, χαῖρε· χαῖρε, εὐλογημένη·

χαῖρε, δεδοξασμένη, σὸς γὰρ υἴος ἀνέστη τριήμερος ἐκ τάφου.

Εὐφραίνου, ἀγάλλου, ἡ θεία πύλη τοῦ φωτός· ὁ γὰρ δύνας ἐν τάφῳ, Ἰησοῦς ἀνέτειλε, λάμψας ἡλίου φαιδρότερον, καὶ τοὺς πιστοὺς πάντας καταυγάσας, θεοχαρίτωτε Δέσποινα.

Γαβριὴλ Κουντιάδου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Γαβριὴλ Κουντιάδου

Ἦχος ♯ Πα

Γαβριήλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
ἁ' ἔκδοσις 1931-1935  
ἐπανεκδόσις 1991 σ.196\*

Δοξα Πατρι και Υιω και αγιω Πνευματι

Μεγαλυνον ψυχη ημουου της τρισυποσταα

του και αδιαιρετου θεοτητος τοκρατος

Συμφωνως Παρθενεσε μακαριζομεν πι

στοι και ρε πυλη Κυριου και ρε πολισ εμψυχε

και ρε διης ημιν ελαμψεση ημερον φωως του

εξ σου τε χθε εντος της εκ νεκρων ανασταασεως

Και νυν και αι και εις τους αιωνων αιωνων

αμην

Χαι ρε Παρ θε νε χαι ρε χαι ρε ευ λο γη με ε

νη <sup>Δ</sup>χαι ρε δε δο ξα σμε νη σος γαρ Υι ος α νε στη

τρι η μερος εκ τα φου <sup>π</sup><sub>9</sub>

Ευ φραι νου α γαλ λου <sup>π</sup><sub>9</sub> η θει α πυ λη του φω

τος <sup>Δ</sup>ο γαρ δυ νας εν τα α φω Ι η σους α νε τει λε <sup>π</sup><sub>9</sub>

λαμ ψας η λι ου φαι δρο τε ρον και τους πι στου ου ου ους

παν τας κα ταυ γα α σας <sup>Δ</sup>θε ο χα ρι τω τε Δε ε σποι

<sup>π</sup><sub>9</sub>  
να

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Ἦχος <sup>4</sup><sub>9</sub> Πα

Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
2005 σ.219#

Δ ο ξα Πα τρι και Υι ω και Α γι ω Πνευ μα

τι **Α**

Μ ε γα λυ νον ψυ χη η μου ου της τρι σ υ πο στα α

του και α δι αι ρε του θε ο τητος το κρα τος **π**

Σ υμ φω νως Παρ θε νε **γ** σε μα κα ρι ζο μεν πι

στοι **π** χαι ρε πυ λη Κυ ρι ου **Α** χαι ρε πο λις εμ ψυ χε

**π** χαι ρε δι ης η μι ν ε ε λαμ ψε ση με ρον φως **Α**

του εκ σου τε χθε εν τος της εκ νε κρων α να στα α σε ε

ως **π**

Κ αι νυν και α ει και εις τους αι ω νας των αι ω

νων Α μην <sup>Δ</sup>δλ

Χαι ρε Παρ θε νε χαι ρε ε χαι ρε ευ λο γη με ε νη

χαι ρε δε δο ξα σμε νησος γαρ Υι ος α νε στη τρι

η μερος εκ τα φου <sup>π</sup>ρ

Ε υ φραι νου α γαλ λου η θει α πυ λητου φωτος <sup>π</sup>ρ

ο γαρ δυ νας εν τα φω Ι η σους α νε τει λε <sup>π</sup>ρ λαμ

ψας η λι ου φαι δρο τε ρον <sup>Δ</sup>δλ και τους πι στου ους παν

τας κα ταυ γα α σας <sup>Δ</sup>δλ θε ο χα ρι τω τε Δε ε

σποι οι να <sup>π</sup>ρ

## Ἐν Καθημερινῇ - Τιμιωτέρα

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

- ∴ Μεγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἠγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ σωτῆρί μου. 46-47
- ∴ Ὅτι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48
- ∴ Ὅτι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50
- ∴ Ἐποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσκόρπισεν ὑπερηφάνους διανοίᾳ καρδίας αὐτῶν. 51
- ∴ Καθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξαπέστειλε κενούς. 52-53
- ∴ Ἀντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55
- Τὴν Τιμιωτέραν τῶν Χερουβίμ, καὶ ἐνδοξοτέραν ἀσυγκρίτως τῶν Σεραφίμ, τὴν ἀδιαφθόρως Θεὸν Λόγον τεκοῦσαν, τὴν ὄντως Θεοτόκον, σὲ μεγαλύνομεν.**

Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

## Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου




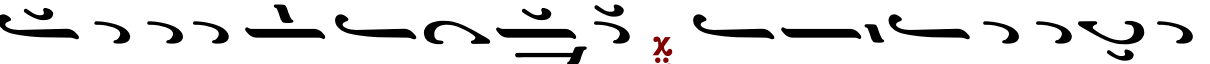



### ἦχος λ π ἡ Κε

- ∴ Μεγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἠγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ σωτῆρί μου. 46-47
- ∴ Ὅτι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48
- ∴ Ὅτι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ Δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50
- ∴ Ἐποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσκόρπισεν ὑπερηφάνους διανοίᾳ καρδίας αὐτῶν. 51
- ∴ Καθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξαπέστειλε κενούς. 52-53
- ∴ Ἀντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς

Πέτρου Λαμπαδαρίου

Ἦχος λ̣ π̣ ᾠ̣ Κε



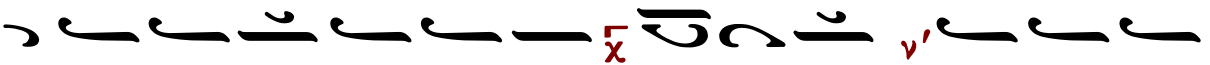




Πανδέκτη  
Ὄρθρος 1850 σ.503#

  
**Τ** ἡν τι μι ω τε ραντων Χε ρου βιμ και εν δο ξο τε  
  
 ραν α συγ κρι ι τως των Σε ρα φιμ  την α δι α φθο ο  
  
 ρως Θε ον Λο ο γον τε κου σαν  την ον τως Θε ο το κον  
  
 σε με γα λυ νο ο μεν 

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Ἦχος λ̣ π̣ ᾠ̣ 

πρωτ. Κων. Παπαγιάννης  
Μουσικόν Τριώδιον Β'  
2003 σ.28#

  
**Μ** ε γα λυ νει η ψυ χη μου τον Κυ ρι ον   
  
 και η γαλ λι α σε το πνευ μα μου   ε πι τω  
  
 Θε ω ω τω σω τη ρι μου 



Την τιμιωτεραν των Χερουβιμ<sup>ν'</sup> και ενδοξο

τεραν ασυγκριτως των Σεραφιμ<sup>χ'</sup> την αδια

φθορωσ Θεον Λογον τεκουσαν<sup>χ'</sup> την οντως Θεοτοκον σε

εμεγαλυνοομεν<sup>χ'</sup>

Ο<sup>χ'</sup>τι επεβλεψεν επι την ταπεινω

σιν της δουλης αυτου<sup>χ'</sup> ιδου γαρ απο του<sup>χ'</sup> νυν μακα

ριουσι με πασαι αι γενεαι<sup>χ'</sup>

Την τιμιωτεραν των Χερουβιμ<sup>ν'</sup> και ενδοξο

τεραν ασυγκριτως των Σεραφιμ<sup>χ'</sup> την αδια

φθορωσ Θεον Λογον τεκουσαν<sup>χ'</sup> την οντως Θεοτοκον σε

ε με γα λυ νο ο μεν

Ο τι ε ποι η σε μοι με γα λει α ο

δυ να τος και α γι ον το ο ο νο μα αυ του και

το ε λε ος αυ του εις γε νε αν και γε νε αν τοις φο

βου με νοις αυ τον

Τ ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ και εν δο ξο

τε ραν α συγ κρι ι τως των Σε ρα φιμ την α δι α

φθο ρως Θε ο ον Λο ο γον τε κου σαν την ον τως Θε ο

το κον σε ε με γα λυ νο μεν

Ε ποι η σε κρα τος εν βρα χι ο νι ι αυ του

δι ε σκορ πι σεν υ περ η φα νους δι α νοι α καρ

δι ας αυ των  $\chi \dot{\eta}$

**T** ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ  $\gamma' \eta$  και εν δο ξο

τε ραν α συγ χρι ι τως των Σε ρα φιμ  $\chi \dot{\eta}$  την α δι α

φθο ρως Θε ο ον Λο ο γον τε κου σαν  $\chi \dot{\eta}$  την ον τως Θε ο

το κον σε ε με γα λυ νο μεν  $\chi \dot{\eta}$

**K** α θει λε δυ να στας α πο θρο νων και υ υ ψω σε τα  $\sigma$

πει νους  $\chi \dot{\eta}$  πει νων τας εν ε πλη σεν α γα θων  $\chi \gamma' \eta$  και πλου

του ν τας εξ α πε στει λε κε νους  $\chi \dot{\eta}$

**T** ην τι μι ω τε ε ραν των Χε ρου βιμ  $\gamma' \eta$  και

εν δο ξο τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ <sup>ν'</sup>η την

α δι α φθο ρως Θε ον Λο γον τε κου σαν <sup>χ'</sup>η την ον

τως Θε ο το ο κον σε ε με γα λυ υ νο ο μεν <sup>χ'</sup>η

<sup>χ'</sup>η **Α** ν τε λα βε το Ισ ρα ηλ παι δος αυ του

μνη σθη ναι ε λε ε ους <sup>χ'</sup>η κα θως ε λα λη σε προς

τους πα τε ρας η μων <sup>ν'</sup>η τω Α βρα α αμ και τω σπερ μα τι

αυ του ε ως αι ω νος <sup>χ'</sup>η

**Τ** ην τι μι ω τε ε ραν των Χε ρου βιμ <sup>ν'</sup>η και

εν δο ξο τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ <sup>ν'</sup>η την

α δι α φθο ρως Θε ον Λο γον τε κου σαν <sup>χ'</sup>η την ον

τῶς Θεοτοκόν σε εμεγαλύνομεν χ̣ή

## Καταβασία θ' ᾠδῆς

ἦχος πλ.α'

Σὲ τὴν ὑπὲρ νοῦν, καὶ λόγον μητέρα Θεοῦ, τὴν ἐν χρόνῳ τὸν ἄχρονον ἀφράστως  
κυήσασαν, οἱ πιστοὶ ὁμοφρόνως μεγαλύνομεν.

|          |                             |      |
|----------|-----------------------------|------|
| Σύντομος | ☞ Ἰωάννου Πρωτοψάλτου ☞     | Ἀργή |
| Σύντομος | ☞ Γαβριήλ Κουντιάδου        |      |
| Σύντομος | ☞ Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου ☞ | Ἀργή |
| Σύντομος | ☞ Κωνσταντίνου Παπαγιάννη ☞ | Ἀργή |

### Σύντομος

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

ᾠδὴ θ'

ἦχος λ̣ π̣ ᾠ̣ Κε

Ἰωάννης Πρωτοψάλτης  
Εἰμολόγιον 1903 σ.419#

C ε τὴν ὑπὲρ νοῦν καὶ λόγον μητέρα Θεοῦ  
οὐ τὴν ἐν χρόνῳ τὸν ἄχρονον ἀφράστως κυήσασαν  
οἱ πιστοὶ ὁμοφρόνως μεγαλύνομεν χ̣ή



την εν χρονω τον α χρονον αφρα α στως κυ η σα σαν x̣q̣

ΜΕΛ ΚΕ ΜΕΛ

οι πι στοι ο μο φρο νως με γα λυ νο με ε ε ε εν x̣q̣

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Ἦχος λ̣ π̣ ᾠ̣ Κε

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.401#

**Σ**ε την υ περ νουν και λο γον Μη τε ρα Θε

ου ν' την εν χρονω τον α χρονον αφρα α στως κυ η

σα σαν x̣q̣ οι πι στοι ο μο φρο νως με γα λυ νο ο

μεν x̣q̣

Ἄεγν̣

Ιωάννου Πρωτοψάλτου

Ἦχος λ̣ π̣ ᾠ̣ Κε

Ιωάννης Πρωτοψάλτης  
Ειρμολόγιον 1903 σ.75#

ε τη ην υ υ πε ερ νουν και αι λο ο ο ο ο

γο ον μη τε ε ε ε ε ρα α Θε ε ου ου ου τη ην εν

χρο ο ο νω το ο ον α χρο ο νο ο ο ον α φρα στω ως κυ

η η η σα σαν οι πι στοι οι οι οι οι ο μο

φρο ο νω ως με γα λυ υ υ νο ο ο ο με ε εν

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

Ἦχος λ̣ π̣ ρ̣ κε

ᾠδὴ θ'

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Πεντηκοστάριον 1983 σ.181\*

ε ε τη ην υ υ περ νουν και αι λο ο ο ο ο

γο ον Μη τε ε ε ε ε ρα α Θε ε ου ου ου τη ην

ε εν χρο ο ο νω ω το ον α χρο ο νο ο ο ον α φρα



στω ως κυ η η η σα σαν <sup>κε</sup> <sup>δι</sup> <sup>κε</sup>
  
 οι πι στοι οι οι οι

οι ο μο φρο ο νω ως με ε ε γα λυ υ υ υ υ

νο ο ο ο με ε εν

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

ᾠδὴ θ'

Ἦχος λ̣ π̣ ᾠ̣ Κε

πρωτ. Κων. Παπαγιάννη  
 Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
 2005 σ.354\*

ε ε την υ πε ερ νουν και λο ο γο ον μη

τε ε ρα α Θε ε ε ου την εν χρο νω ω το ον

α χρο ο νον α φρα α α στω ως κυ η η σα α α

σαν οι πι στοι οι οι οι οι ο μο φρο ο νω ως με ε

γα λυ υ υ νο ο ο ο με ε ε ε εν

# Τῆς Αναλήψεως

Από τῆς Πέμπτης τῆς Αναλήψεως καὶ μέχρι τῆς Παρασκευῆς πρό τῆς Πεντηκοστῆς.

## ἤχος δ'

- α **Θ**είω καλυφθεὶς ὁ βραδύγλωσσος γνόφω, ἔρρητόρευσε τὸν θεόγραφον νόμον. Ἴλυν γὰρ ἐκτινάξας ὄμματος νόου, ὄρᾳ τὸν ὄντα καὶ μυεῖται Πνεύματος, γνῶσιν, γεραίρων ἐνθέοις τοῖς ἄσμασιν.
- γ **Ἐ**ρρηξε γαστρὸς ἠτεκνωμένης πέδας, ὕβριν τε δυσκάθεκτον εὐτεκνουμένης, μόνη προσευχῇ τῆς προφήτιδος πάλαι, Ἄννης, φερούσης πνεῦμα συντετριμμένον, πρὸς τὸν δυνάστην καὶ Θεὸν τῶν γνώσεων.
- δ **Ἀ**ναξ ἀνάκτων, οἶος ἐξ οἴου μόνος Λόγος προελθὼν, Πατρὸς ἐξ ἀναιτίου, ἰσοσθενές σου Πνεῦμα τοῖς ἀποστόλοις, νημερτές ἐξέπεμψας ὡς εὐεργέτης, Ἄδουσι Δόξα τῷ κράτει σου Κύριε.
- ε **Λ**υτήριον κάθαρσιν ἀμπλακημάτων, πυρίπνοον δέξασθε Πνεύματος δρόσον, ὃ τέκνα φωτόμορφα τῆς Ἐκκλησίας. Νῦν ἐκ Σιῶν γὰρ ἐξελήλυθε νόμος, ἡ γλωσσοπυρσόμορφος Πνεύματος χάρις.
- ς **Ἰ**λασμός ἡμῖν Χριστὲ καὶ σωτηρία, ὁ Δεσπότης ἔλαμψας ἐκ τῆς Παρθένου, ἴν', ὡς προφήτην θηρὸς ἐκ θαλαττίου Στέρνων Ἰωῶν, τῆς φθορᾶς διαρπάσης ὄλον τὸν Ἀδάμ, παγγενῆ πεπτωκότα.
- ζ **Σ**ύμφωνον ἐθρόησεν ὀργάνων μέλος, σέβειν τὸ χρυσότευκτον ἄψυχον βρέτας, ἡ τοῦ Παρακλήτου δὲ φωσφόρος χάρις, σεβασμιάζει τοῦ βοᾶν Τριάς μόνη, ἰσοσθενής, ἀναρχος, εὐλογητὸς εἶ.
- Αἰ**νοῦμεν, εὐλογοῦμεν, καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον.
- η **Λ**ύει τὰ δεσμά, καὶ δροσίζει τὴν φλόγα, ὁ τρισσοφεγγῆς τῆς θεαρχίας τύπος. Ὑμνοῦσι Παῖδες, εὐλογεῖ δὲ τὸν μόνον Σωτῆρα καὶ παντουργόν, ὡς εὐεργέτην, ἡ δημιουργηθεῖσα σύμπασα κτίσις.

### Σύντομοι

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Γαβριὴλ Κουντιάδου  
Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

### Αργαί

Πέτρου Λαμπαδαρίου  
Γαβριὴλ Κουντιάδου  
Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

## Σύντομοι

# Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Καταβασαίαι Πεντηκοστῆς  
ᾠδὴ α'

Ἦχος δὲ Βε

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.420#

Θ εἰ ω κα λυ φθει εἰς ο βρα δυ υ γλωσ σος γνο φω <sup>6</sup>λ

ερ ρη το ρευ σε τον θε ο ο γρα φον νο ο μον <sup>6</sup>λ ι

λυν γαρ εκ τι να α ξας ομ μα τος νο ο ου

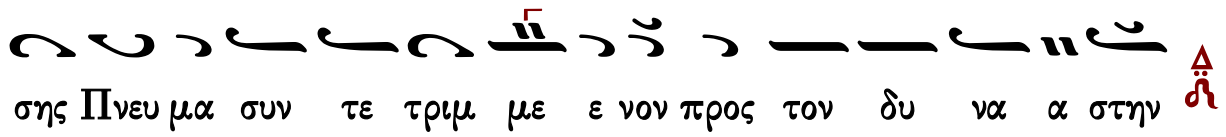
ο ρα τον ο ον τα <sup>Δ</sup>δ και μυ ει ται Πνευ μα τος γνω

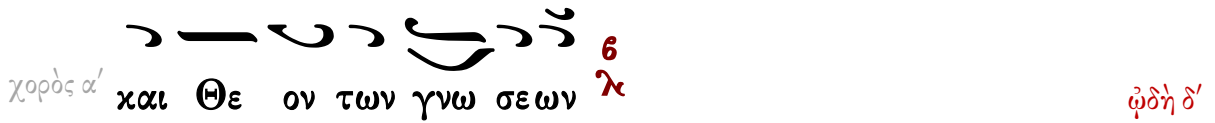
σιν <sup>6</sup>λ γε ραι αι ρων εν θε ε οἰς τοῖς α σμασιν <sup>6</sup>λ ᾠδὴ γ'

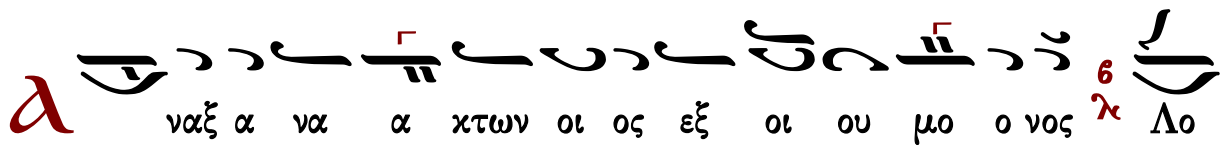
Ε ρ ρη ξε γα στρος η τε κνω με νης πε δας <sup>6</sup>λ υ βριν

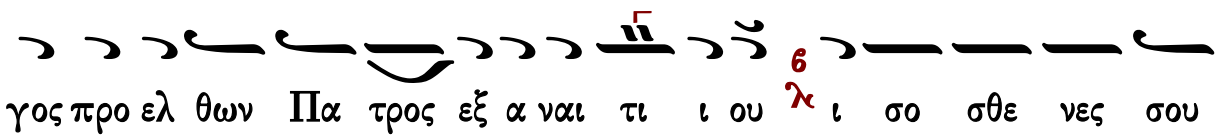
τε δυσ κα θε κτον ευ τε κνου με ε νης <sup>6</sup>λ μο νη προσ ευ

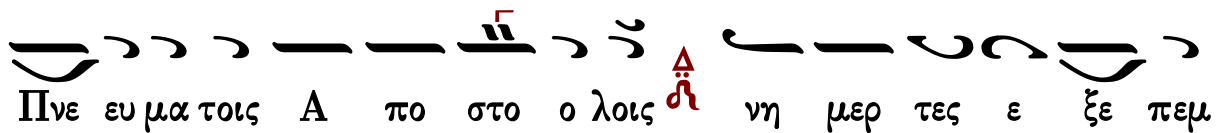
χη της προ φη τι δος πα α λαι <sup>Δ</sup>δ Αν νης φε ρου ου

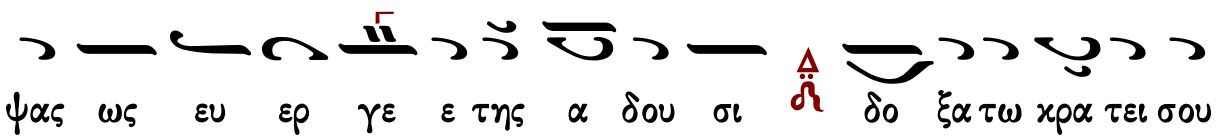
σης Πνευμα συν τε τριμ με ε νον προς τον δυ να α στην 

*χορός α'* και Θε ον των γνω σεων  *ὠδή δ'*

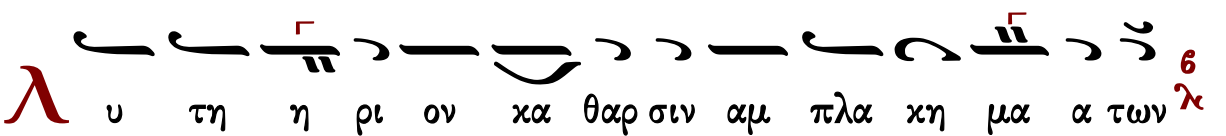
**Α** ναξ α να α κτων οι ος εξ οι ου μο ο νος  *ὠδή δ'* Λο

γος προ ελ θων Πα τρος εξ α ναι τι ι ου  *ὠδή δ'* ι σο σθε νες σου

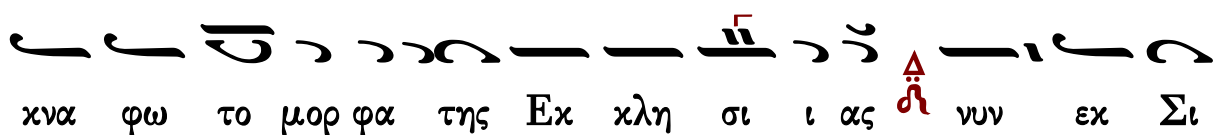
Πνε ευ μα τοις Α πο στο ο λοις  *ὠδή δ'* νη μερ τες ε ξε πεμ

φας ως ευ ερ γε ε της α δου σι  *ὠδή δ'* δο ξα τω κρα τει σου

Κυ ρι ε  *ὠδή ε'*

**Λ** υ τη η ρι ον κα θαρσιν αμ πλα κη μα α των  *ὠδή ε'*

πυ ρι ι πνο ον δε ξασθε Πνευ μα τος δρο ο σον ω τε ε

κνα φω το μορ φα της Εκ κλη σι ι ας  *ὠδή ε'* νυν εκ Σι

ω ων γαρ ε ξελη η λυ θε νο ο μος η γλωσ σο πυρ

σο μορ φος <sup>Α</sup> Πνευμα τος χα αρις <sup>6</sup> ῶδὴ ζ'

**I** λα σμος η μιν Χρι στε και σωτη ρι ι α ο δε σπο

της ε λαμ ψας εκ της Παρ θε ε νου <sup>6</sup> ιν ως προ φη την

θη ρος εκ θα λατ τι ι ου <sup>Α</sup> στερ νων Ι ω να αντης φθο

ρα ας δι αρ πα α σης <sup>6</sup> ο λον τον Α δαμ παγ γε νη

πε πτω κο ο τα <sup>6</sup> ῶδὴ ζ'

**C** υμ φω νον ε θρο η σεν ορ γα νων με ε λος <sup>6</sup> σε

βειν το χρυ σο τευ κτον α ψυ χον βρε ε τας <sup>6</sup> η του Πα ρα

κλη του δε φω σφο ρος χα αρις σε βα σμι α α ζει <sup>Α</sup> του

βο αν Τρι ας μο ο νη ι σο σθε νης α ναρχος ευ λο

γη τος ει <sup>6</sup><sub>λ</sub>

ῶδὴ ἡ'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προ σκυ νου ου μεν

τον Κυ ρι ον <sup>6</sup><sub>λ</sub>

Λ υ ει τα δε σμα α και δρο σι ι ζει την φλο ο γα <sup>6</sup><sub>λ</sub>

ο τρισ σο φεγ γης της θε αρ χι ας τυ υ πος <sup>6</sup><sub>λ</sub> υ μνου

σι παι αι δες ευ λο γει ει δε τον μο ο νον Σω τη

η ρα και παν τουρ γον ως ευ ερ γε ε την η δη μι ουρ γη

θει σα συμ πα σα κτι ι σι ι ι ι ις <sup>6</sup><sub>λ</sub>

Γαβριήλ Κουντιάδου

Θ εἰ ω κά λυ φθει εἰς ο βρα δύ υ γλωσ σος γνο ο φω <sup>6</sup> <sub>λ</sub>

ερ ρη το ρευ σε τον θε ο ο γρα φον νο ο μον <sup>6</sup> <sub>λ</sub>

ι λυν γαρ εκ τι να ξας ο ομ μα τος νο ο ο

ου <sup>Δ</sup> <sub>δὲ</sub> ο ρα τον ο οντα και μυ ει ται Πνε ευ μα τος

γνω ω σιν <sup>6</sup> <sub>λ</sub> γε ραι ρων εν θε οῖς τοῖς α σμα σι <sup>6</sup> <sub>λ</sub> ᾠδὴ γ'

Ε ρ ρη ξε γα στρος η τε κνω με νης πε ε δας <sup>6</sup> <sub>λ</sub> υ

βριν τε δυσ κά θε κτον ευ τε κνου με ε ε νης <sup>6</sup> <sub>λ</sub> μο

νη προσ ευ χη της προ φη η τι δος πα λαι <sup>Δ</sup> <sub>δὲ</sub> Αν νης

φε ρου σης πνε ευ μα συν τε τριμ με ε νον <sup>6</sup> <sub>λ</sub> χορὸς α' προς

τον δυ να α στην και Θε ον των γνω σεων <sup>6</sup>λ

ῥδὴ δ'

**Δ** ναξ α να α κτων οι ος εξ οι ου μο ο νος <sup>6</sup>λ

Λο γος προ ελ θων Πα τρος εξ α ναι τι ι ι

ου <sup>6</sup>λ ι σο σθε νες σου Πνε ευ μα τοις α πο στο λους <sup>Δ</sup>λ

νη μερ τες εξ ε πεμ ψας ως ευ ερ γε ε της <sup>6</sup>λ α

δου ου σι <sup>π</sup>ρ δο ξα τω κρα α τει σου Κυ ρι ε <sup>6</sup>λ

ῥδὴ ε'

**Λ** υ τη η ρι ον κα θαρ σιν αμ πλα κη μα

α α των <sup>6</sup>λ πυ ρι πνο ον δε ξασθε Πνευ μα τος δρο ο

σον <sup>6</sup>λ ω τε ε κνα φω το μορ φα της Εκ κλη σι

ι ι ας <sup>Δ</sup>λ νυν εκ Σι ω ων γαρ εξ ε λη η λυ θε



νο ο μος ἡ γλωσσο πυρσο μορφος Πνευματος χα

α α ρις

ᾠδὴς'

λα σμος η μιν Χριστε και σωτη ρι ι α ο

Δε σπο της ε λαμψας εκ της Παρ θε ε ε νου

ιν ως προ φη την θη ρος εκ θα λατ τι ου στερ νων Ι

ω να αν της φθο ρας δι αρ πα α σης ο λον τον Α

δαμ παγ γε νη η πεπτω κο ο τα

ᾠδὴ η'

C υμ φω νον ε θρο η σεν ορ γα νων με ε λος σε

βειν το χρυ σο τευ κτον α ψυ χον βρε ε ε τας η

του Πα ρα κλη του δε φωσ φο ρος χα α α ρις σε

βα σμι α α ζει του βο α αν Τρι ας μο ο νη ι σο σθε

νης α ναρχος ευ λο γη το ος ει  
ῶδὴ ζ'

ι νου μεν ευ λο γου μεν και προ σκυ νου ου μεν

τον Κυ ρι ον

Λ υ ει τα δε σμα α και δρο σι ι ζει την φλο

ο ο γα ο τρισ σο φηγ γης της θε αρ χι ας

τυ υ ποσ υ μνου σι παι αι δεσ ευ λο γει τε τον μο

ο νον Σω τη η ρα και παν τουρ γον ως ευ ερ γε ε την

η δη μι ουρ γη θει σα συ υμ πα σα κτι ι ι σι ι ι

ι ις

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

Καταβασίαι Πεντηκοστής  
ψδὴ α'

Ἦχος δὲ Βϩ

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Πεντηκοστάριον 1983 σ.247\*

Βϩ

Θ εἰ ω κα λυ φθεις ο βρα δυ υ γλωσ σος γνο ο ο ο

φω <sup>6</sup>λ<sub>κ</sub> ερ ρη το ρευ σε <sup>Δ</sup>δ<sub>ι</sub> τον θε ο ο γρα φον νο ο ο

μον <sup>6</sup>λ<sub>κ</sub> ι λυν γαρ εκ τι να ξας ο ομ μα τος νο <sup>ΔΙ</sup>

ου ο ρα τον ο ον τα <sup>Βϩ</sup> <sup>Δ</sup>δ<sub>ι</sub> και μυ ει ται Πνε ευ μα τος

γνω ω ω σιν <sup>6</sup>λ<sub>κ</sub> γε ραι αι ρων εν θε ε οισ τοις α σμα

σι <sup>6</sup>λ<sub>κ</sub> ψδὴ γ'

Βϩ

Ε ρ ρη ξε γα στρος η τε κνω με νης παι αι αι δας <sup>6</sup>λ<sub>κ</sub>

<sup>ΔΙ</sup> <sup>ΜΕΛ</sup> <sup>Βϩ</sup> υ βριν τε δυσ κα θε κτον ευ τε κνου με ε ε ε νης <sup>6</sup>λ<sub>κ</sub>

μο νη προσ ευ χη της προ φη η τι δος πα λαι Αν νης

φε ρου σης πνε ευ μα συν τε τριμ με ε νον προς τον

δυ να α στην και Θε ον των γνω σεων

ναξ α να α κτων οι οι ος εξ οι ου μο ο

ο ο νος Λο γος προ ελ θων Πα τρος εξ α ναι τι ι

ι ι ου ι σο σθε νες σου Πνε ευ μα τοις α πο στο

λοις νη μερ τες εξ ε πεμ ψας ως ευ ερ γε ε ε ε

της α δου ου σι δο ξα τω κρα α τει σου Κυ ρι ε

υ τη η ρι ον κα θαρ σιν αμ πλα κη μα α α

των <sup>6</sup>λυ <sup>ΔΙ</sup> <sup>ΒΞ</sup> πυ ρι ι πνο ον δε ξασθε Πνευ μα τος δρο ο ο ο

σον <sup>6</sup>λυ ω τε ε κνα φω το μορ φα της Εκ κλη σι ας <sup>ΔΙ</sup> <sup>ΔΙ</sup>

νυν εκ <sup>ΒΞ</sup> Σι ων γαρ εξ ε λη η λυ θε νο ο ο ο

μος <sup>ΜΕΛ</sup> <sup>ΒΞ</sup> η γλωσ σο πυρ σο μορ φος <sup>ΔΙ</sup> Πνε ευ μα τος χα

α α α ρις <sup>6</sup>λυ <sup>Ωδὴς'</sup>

<sup>ΒΞ</sup> | λα σμος η μιν Χρι στε και σω τη ρι ι ι ι

α <sup>6</sup>λυ ο Δε σπο της ε λαμ φας εκ της Παρ θε ε ε

νου <sup>6</sup>λυ ιν ως προ φη η την <sup>ΔΙ</sup> θη ρος εκ θα λατ τι

ου <sup>ΔΙ</sup> <sup>ΒΞ</sup> στερ νων Ι ω ναν της φθο ρα ας δι αρ πα α α

σης <sup>6</sup>λυ ο λον τον Α δαμ <sup>ΔΙ</sup> παγ γε νη η πε πτο κο

ο ο ο τα <sup>6</sup>λ

ὠδὴ ζ'

ΒϚ

**Κ**υμ φωνον εθροησεν οργων μεεελος <sup>6</sup>λ

σεβειν τοχρυσουκτον αψυχον βρεεε

ΜΕΛ

ΠΑ

ΔΙ

τας <sup>6</sup>λ η του Παρκλη του δε φωσφορος χα

ΒϚ

ρις <sup>Δ</sup>σεβασμιαααζει <sup>Δ</sup>τουβοαν Τριαασημονη

ισοσθενης <sup>Δ</sup>αν αρχος ευλογητο ο ο ος ει <sup>6</sup>λ

ὠδὴ η'

**Α**ι νου μεν ευλογου μεν και προσκυνου ου μεν

τον Κυριον <sup>6</sup>λ

ΒϚ

**Λ**υειτα δε σμα και δροσι ιζει την φλο ο ο ο

ΜΕΛ ΒΞ  
 γα ο τρι σο φευ γης της Θε αρ χι ας τυ υ υ  
 πος υ μνου σι Παι αι δεσ ευ λο γει ει δε  
 ΔΙ ΒΞ  
 τον μο νον Σω τη η ρα και παν τουρ γον ως ευ ερ γε  
 ΜΕΛ ΒΞ  
 ε ε ε την η δη μι ουρ γη θει ει σα συ υμ πα  
 σα κτι σι ι ι ις

### Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Καταβασίαι Πεντηκοστής  
Ψόδη α'

Ἦχος δ' ΒΞ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.491\*

Θ ει ω κα λυ φθει εις ο βρα δυ υ γλωσ σος γνο φω  
 ερ ρη το ρευ σε τον θε ο ο γρα φον νο μον  
 λυν γαρ εκ τι να ξας ο ομ μα τος νο ο ου

ο ρα τον ο ον τα και μ ει ται Πνε ευ μα τος γνω

σιν γε ραι αι ρων εν θε ε ο ις το ις α σμα σιν

Ε ρ ρη ξε γα στρος η τε κνω με νης πε δας υ βριν

τε δυσ κα θε κτον ευ τε κνου με ε νης μο νη προσ ευ

χη της προ φη η τι δος πα λαι Α αν νης φε ρου σης

πνε ευ μα συν τε τριμ με ε νον προς τον δυ να α στην

χορὸς α' και Θε ον των γνω σεων

Α να ξ α να α κτων οι οι ος εξ οι ου μο ο νος

Λο γος προ ελ θων Πα τρος εξ α ναι τι ι ου ι σο

σθε νες σου Πνε ευ μα το ις α πο στο ο λο ις νη με ρ τε ς



εξ ε πεμψας ως ευ ερ γε ε της α δου σι δο ξα

τω κρατει σου Κυ ρι ε ωδὴ ε'

Λυ τη η ρι ον κα θαρ σιν αμ πλα κη μα α

των πυ ρι ι πνο ον δε ξα σθε Πνευ μα τος δρο ο

σον ω τε ε κνα φω το μορ φα της Εκ κλη σι ι ας

Α νυν εκ Σι ω ων γαρ εξ ε λη η θυ θε νο ο μοσ η

γλωσ σο πυρ σο μορ φος Πνευ μα τος χα ρις ωδὴ ε'

Ι λα σμος η μιν Χρι στε και σω τη ρι ι α ο Δε

σπο της ε λαμψας εκ της Παρ θε ε νου ιν ως προ φη

την θη ρος εκ θα λατ τι ι ου στερ νων Ι ω να αν

της φθο ρα <sup>ϛ</sup> ας δι αρ πα α σης <sup>ϛ</sup> ο λον τον Α δαμ

παγ γε νη η πεπτω κο ο τα <sup>ϛ</sup> ῶδὴ ζ'

**Σ** υμ φω νον ε θρο η σεν ορ γα νων με ε λος <sup>ϛ</sup> σε

βειν το χρυ σο τευ κτον α ψυ χον βρε ε τας <sup>ϛ</sup> η του Πα

ρα κλη του δε φωσ φο ρος χα α ρις σε βα σμι α

α ζει <sup>Δ</sup> του βο αν Τρι α ας μο νη ι σο σθε νης <sup>Δ</sup> α

ναρχος ευ λο γη τος ει <sup>ϛ</sup> ῶδὴ η'

**Α** ι νου μεν ευ λο γου μεν και προ σκυ νου ου μεν

τον Κυ ρι ον <sup>ϛ</sup>

**Λ** υ ει τα δε σμα ακαιδρο σι ι ζει την φλο ο γα <sup>ϛ</sup> ο

τρι σο φεγ γης της θε αρ χι ας τυ ποσ <sup>6</sup>λ<sup>κ</sup> υ μνου σι

παι αι δεσ ευ λο γει ει δε τον μο ο νον Σω τη

η ρα και παν τουρ γον ως ευ ερ γε ε την <sup>6</sup>λ<sup>κ</sup> <sup>σ</sup>Γ<sup>Γ</sup> η δη μι ουρ

γη θει σα συ υμ πασα κτι σις <sup>6</sup>λ<sup>κ</sup>

### Αργαί

## Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου18

Καταβασίαι Πεντηκοστής  
ᾠδὴ α'

Ἦχος <sup>4</sup>δὶ Βϛ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.397\*

Θ ει ω κα α λυ φθεις ο ο βρα α δυ γλω ω ω

ωσ σο ος γνο ο ο φω <sup>6</sup>λ<sup>κ</sup> ε ρη η το ρε ευ σε τον θε

ε ο ο γρα φο ον νο ο ο μο ον <sup>π</sup>9 <sup>Γ</sup> ι λυ υν

18 Εἰς τὰς καταβασίας ταύτας ἐπεφέραμεν ἐλαφρὰς τινὰς μεταβολὰς πρὸς ἀποφυγὴν παρατονησμῶν καὶ ἀστόχου χωρισμοῦ λέξεων. Οὐσιαστικωτέρας διορθώσεις πρὸς καλυτέραν ἀπόδοσιν τοῦ νοήματος καὶ σύντημσιν μουσικῶν τινῶν γραμμῶν παραθέτομεν μεθ' ἑκάστην καταβασίαν.  
[πρωτ.Κων.Παπαγιάννης]

γαρ εκ τι ι ι να α α ξα ας ομ μα το ος νο ο ο

ου ου ο ρα α το ον ο ο οντα και αι μυ ει ει ται

Πνε ευ μα το ος γνω ω ω σι εν γε ραι αι αι

αι αι αι ρων εν θε ε ε ε οις τοις α σμα α σι

εν και μυ ει ται αι Πνε ευ μα ...

ῥδῆ γ'

ε ρ ρη ξε γα α στρος η η η τε εκνω με ε

ε ε νη ης πε ε ε δας υ υ βριν τε δυ υ υσ κα

θε εκτο ον ε ευ τε κνου ου με ε ε νη ης μο ο νη

προσ ε ευ χη τη η ης προ ο φη τι ι ι ι

ι δο ος πα α α λαι <sup>6</sup> <sub>λ</sub> Α αν νης φε ρου ου ου σης

πνε ευ μα συ υ υν τε ε ε τριμ με ε ε ε

ε νον <sup>Α</sup> <sub>δ</sub> προς τον δυ υ να α α στην <sup>\*</sup> <sub>2</sub> χορός α' και αι Θε ο

ον των γνω ω σε ε ω ων <sup>6</sup> <sub>λ</sub>

<sup>\*</sup> <sub>1</sub> <sup>Α</sup> <sub>δ</sub> της προ φη η τι ι δος πα α α α α λαι αι Α

α αν νης <sup>6</sup> <sub>λ</sub> φε ρου ση ης πνε ευ μα α συν τε ε τρι

ιμ με ...

<sup>\*</sup> <sub>2</sub> χορός α' και Θε ο ον των των γνω σε ε ω ων <sup>6</sup> <sub>λ</sub> ὠδή δ'

<sup>Α</sup> α ναξ α α να α κτων οι οι οι ο ος εξ οι

οι οι οι ου ου μο ο ο νος <sup>6</sup> <sub>λ</sub> Λο ο γος προ ο ε ελ

θων Πα α τρο ος ε εξ α ναι αι τι ι ι ου ου <sup>π 9</sup> ι

σο σθε νες σου ου ου Πνε ε ευ μα τοι οις α πο ο

ο στο ο ο λοι οις <sup>6 λ</sup> νη μερ τε ες εξ ε ε πε εμ ψας

ω ω ως ε ευ ερ γε ε ε ε ε της <sup>Δ δ</sup> α δου ου σι δο

ο ξα τω κρα α α τει σου Κυ ρι ι ε ε <sup>6 λ</sup> ωδὴ ε'

<sup>λ</sup> υ τη η ρι ο ον κα θα αρ σι ιν αμ πλα α α

α α κη η μα α α των <sup>6 λ</sup> πτυ ρι ι πνο ον δε ε ξα

α σθε ε Πνε ευ μα το ος δρο ο ο σο ον <sup>π 9</sup> ω τε ε

ε κνα φω ω το ο μο ορ φα τη ης Εκ κλη η η σι

ι ι α ας <sup>6 λ</sup> νυν ε εκ Σι ω ωων γαρ εξ ε λη η

η λυ υ θε ε ε νο ο ο ο ο μος η γλωσσο πυρ

σο ο μο ορ φο ος Πνευ μα α α α α το ος χα α α

ρις η γλωσσο πυρ σο ο μο ορ φο ος...

ῶδης'

λα σμος η η μιν Χρι ι στε ε και σω ω ω ω

ω τη η ρι ι ι α ο Δε σπο ο τη η ης ε

λα α μ ψ α ας εκ της Πα αρ θε ε ε νου ου ι ι ν ως

προ φη η η την θη η ρο ος ε εκ θα λα ατ τι

ι ι ου ου στε ε ρ νων Ι ι ω ω ω ναν της φθο

ρα α ας δι ι α α αρ πα α α α α σης ο ο

ο λον τον Α α δαμ παγ γε ε ε νη η πε πτω

ω ω κο ο ο τα α <sup>6</sup> <sub>λ</sub>

\* θη ρος εκ θαλατ τι ουου στε ε ερνωων Ι ω ω ναν <sup>Δ</sup>

της φθο ρα α α ας δι α αρ πα α α σης <sup>Δ</sup> ο λο ον τον

Α α δαμ παγ γε νη πε πτω ω ... <sup>ωδ η ζ'</sup>

Σ υμ φω νον ε ε θρο ο η η σε εν ορ γα α α α νων με

ε ε λος <sup>6</sup> <sub>λ</sub> σε ε βειν το χρυ υ υ σο ο τε ευκτο ον α

α ψυ χο ον βρε ε ε ταας <sup>π</sup> <sub>9</sub> η του Πα ρα κλη του ου

δε ε φω σφο ο ρο ος χα α α ρι ις <sup>6</sup> <sub>λ</sub> \* σε βα α σμι α

α α ζει ει του ου βο α α αν <sup>γ'</sup> <sub>η</sub> Τρι α α ας



μο ο ο ο ο νη ι ι σο σθε ε νης α ναρχος ευ λο

ο ο ο ο γη η το ο ος ει <sup>6</sup>λ

\* <sup>6</sup>λ σε βα σμι ι α α α ζει του βο ο αν <sup>γ'</sup>η Τρι ... <sup>φδὴ η'</sup>

<sup>α</sup>ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου ου ου

ου με εν τον Κυ υ ρι ι ο ον <sup>6</sup>λ

<sup>λ</sup>υ υ ει ει τα δε ε σμα και αι αι δρο ο σι ζει

ει ει ει ει τη ην φλο ο ο γα <sup>6</sup>λ ο τρις σο φε εγ γης

τη ης θε ε α αρχι α ας τυ υ υ πο ος <sup>π</sup>9 υ μου σι

παι αι αι αι αι δες ευ λο ο ο γει ει ει δε το ο

ον μο ο ο ο ο ο νον <sup>6</sup>λ <sup>σ</sup>ω τη η η ρα και

πα αν του ουρ γο ον ως ε ευ ερ γε ε ε ε ε

την η δη μι ουρ γη θει ει ει σα α συμ πα α α α

α σα α κτι ι ι σι ι ι ι ις

### Γαβριήλ Κουντιάδου

Καταβασία Πεντηκοστής  
Χρόνος διπλοῦς  
ψῶδη α'

Ἦχος δὲ Βα

Γαβριήλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
α' ἔκδοσις 1931-1935  
ἐπανέκδοση 1991 σ.358\*

Θ ει ει ω κα α λυ φθει εις ο ο βρα α δυ γλω

ω ω ω ωσ σο ος γνο ο ο φω ερ ρη η το ρε ευ

σε τον θε ε ο ο γρα φο ον νο ο ο μο ον ι λυ

υν γαρ εκ τι ι ι να α α ξα ας ομ μα α α α α το

ος νο ο ο ου ο ρα α το ον ο ο ον τα και αι

μου ει ει ται Πνευμα το ος γνω ω ω σιν <sup>6</sup> <sup>λ</sup>

γε ραι αι ρων εν θε ε ε οισ τοι οισ α σμα α

σιν <sup>6</sup> <sup>λ</sup>

ῥδῆ γ'

Ερρηξη εε γα αστρος η η η τε εκνω με

εε εε νη ης πε εε δας <sup>6</sup> <sup>λ</sup> υ υ βριν τε

δου υσ κα θε εκτο ον ε ευ τε κνου ου με ε ε

νηης <sup>π</sup> <sup>9</sup> μο ο νη προσ ε ευ χη τη η ης προ ο

φη τι ι ι ι ι δο ος πα α α λαι <sup>6</sup> <sup>λ</sup> Αν νης

φε ε ρου ου ου σης πνε ευ μα α συ υ υν τε ε

τρι ι ιμ με εε εε ενον <sup>Α</sup> <sup>δ</sup> <sup>ι</sup> χορός α' προς τον δυ να α

στη ην και αι Θε ε ο ον των γνω ω σε ε ω ων <sup>6</sup> λ *ῥδὴ δ'*

**Α** α ναξ α α να α κτων οι οι οι ο ος εξ οι

οι οι οι οι ου ου μο ο ο νος <sup>6</sup> λ Λο ο γος προ

ο ε ελ θων Πα α τρο ος ε εξ α ναι αι τι ι ι ου

<sup>π</sup> ου <sup>9</sup> ι σο σθε νες σου ου ου Πνε ε ευ μα ται οις α

πο ο στο ο ο λοι οις <sup>6</sup> λ νη μερ τε ες ε εξ

ε ε πε εμ ψας <sup>Δ</sup> ῥ ω ω ως ε ευ ε ε ερ γε ε ε

ε ε της <sup>Δ</sup> ῥ α δου ου σι δο ο ξα τω κρα α α τει ει σου ου

Κυ ρι ι ε ε <sup>6</sup> λ *ῥδὴ ε'*

**Λ** υ τη η ρι ο ον κα α θα αρ σι ιν αμ πλα α α

α α κη η μα α α των <sup>6</sup> λ πυ ρι ι πνο ο ον δε

ε ξα α σθε ε Πνε ευ μα το ος δρο ο ο σο ον <sup>π</sup> 9 ω τε

ε ε κνα φω ω το ο μο ορ φα τη ης εκ κλη

η σι ι ι α ας <sup>6</sup> λ νυν ε εκ Σι ω ω ων γαρ

ε εξ ε ε λη η η λυ υ θε ε ε νο ο ο ο

ο μος <sup>Α</sup> η γλωσ σο πυρ σο ο μο ορφο ος Πνευ μα α α α

α το ος χα α α ρις <sup>6</sup> λ ῶδής'

λα σμος η η μιν Χρι ι ι στε ε και σω ω ω ω

ω τη η ρι ι ι α <sup>6</sup> λ ο Δε σπο ο τη η ης ε

λα α μ φα ας ε εκ της Πα αρ θε ε ε νου ου <sup>π</sup> 9 ι ι ν ως

προφηηητηνηροσεεκθαλαατι

ιιουου<sup>6λ</sup>στεερνωνΙιωωωναντηης

φθοοραααςδιιαααρπαααασης<sup>Δ</sup>

οοολοντονΑαδαμπαγγεεενηη

πεπτωωκοοοταα<sup>6λ</sup> ϖδηζ'

**C**υυμφωνονεθροοηησεινοργαααα

ανωωνμεεελος<sup>6λ</sup>σεεβειντοχρυυυσο

οτεευκτονααψυχοονβρεεεταας<sup>π9</sup>ητου

Παρακλητουουδεεφωσφοοροοςχαααριις<sup>6λ</sup>

σεβαασιμαααζειτουουβοοααντρι

α α ας μο ο ο ο ο νη ι ι σο σθε ε νης α να

αρχος ευ λο ο ο ο ο γη η το ο ος ει φδη η'

α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου ου

ου ου με εν τον Κυ υ ρι ι ο ον

λ υ υ ει τα α δε ε σμα και αι αι δρο ο

σι ζει ει ει ει ει τη ην φλο ο ο γα ο ο τρισ

σο φε εγ γης τη ης θε ε α αρχι α ας τυ υ υ πο

ος υ μνου σι παι αι αι αι αι δες ευ λο ο γει

ει ει ει δε το ον μο ο ο νο ον Σω τη η

η ρα και πα αν του ουρ γο ον ως ε ε ευ

ε ε ερ γε ε ε ε ε την <sup>Δ</sup>η δη μι ουρ γη θει ει

ει σα α συμ πα α α α α σα α κτι ι ι σι ι ι ι ις <sup>β λ</sup>

### Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

Καταβασία Πεντηκοστής  
ὠδὴ α'

Ἦχος <sup>Δ</sup>η Ββ

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Πεντηκοστάριον 1983 σ.200\*

<sup>Ββ</sup>  
**Θ** ει ω κα α λυ φθει εις ο ο βρα α δυ γλω ω ω ω

ωσ σο ος γνο ο ο ο φω <sup>Δ</sup>ε ρη η το ο ο ρε

ε ευ σε <sup>ΠΑ</sup> <sup>Δ</sup>το ον θε ε ο ο ο ο γρα α φον νο ο

<sup>ΝΗ</sup> <sup>Ββ</sup>  
ο ο μο ον <sup>π ρ</sup>ι λυ υν γαρ ε εκ τι ι ι να

α α α α α ξα ας ομ μα α α α α το ος νο ο

ο ο ου <sup>β λ</sup> ο ρα α το ον ο ο ο ο ο ο ον τα <sup>Δ</sup> και <sup>Ββ</sup>



αι μ υ υ ει ει ται Πνε ευ μα α α α το ος γνω ω ω ω

6 λ ς γε ραι αι αι αι αι αι ρω ω ων εν θε ε ε

MEΛ BΣ ε οισ τοι οισ α α σμα α σι ιν 6 λ ς φδ'η γ'

BΣ E ρ ρη η ξε γα στρος η η τε εκ νω με ε ε ε

6 λ ς ε νη ης παι αι αι αι δας υ υ βρι ι ιν τε δυ υ υσ

ΠΑ κα α θε ε κτο ον ε ευ τε ε κνου με ε ε ε

NH BΣ π ρ νη ης μο ο νη προσ ευ χη της προ φη η τι

6 λ ς ι ι δο ος πα α α α λαι αι Α α αν νης φε ρου

ου ση ης πνε ε ε ε ε ευ μα α συν τε ε τρι ι

Α Δ ι μ με ε ε ε ε νον προς τον δυ να α α α

α α στην <sup>choros α'</sup> και αι Θε ε ο ον τω ων γνω ω σε ε

ω ων <sup>6 λ</sup> ὠδή δ'

**Α** α ναξ α α να α α κτων οι οι οι οι ο ος εξ οι

οι οι οι οι ου ου μο ο ο ο νος <sup>6 λ</sup> Λο ο γος

προ ο ο ε ελ θω ων πα α τρο ος ε εξ

α α ναι αι τι ι ι ι ου ου <sup>π 9</sup> ι σο σθε

νε ες σου ου ου Πνε ε ε ευ μα ται οις Α πο ο

ο στο ο ο λοι ος <sup>6 λ</sup> νη μερ τε ες ε ε ξε ε

ε πε ε εμ ψα ας ως ε ευ ε ε ερ γε ε ε ε ε

της <sup>Δ 2</sup> α δου ου ου σι δο ο ξα α α τω κρα α α α

ΜΕΛ

ΒΞ

τει σου ου Κυ υ ρι ι ε ε

ὠδὴ ε'

ΒΞ

Λ υ τη η ρι ο ον κα α θα α αρ σι εν αμ πλα α α

α α κη η μα α α α των πυ ρι ι πνο ο ον δε

ε ξα α σθε ε πνε ευ μα α το ος δρο ο ο ο σο

ΓΑ ΒΞ

ον ω τε ε κνα φω ω το ο μο ο ρ φα τη ης Εκ

κλη η σι ι ι α ας νυν ε εκ Σι ι ι ω

ΜΕΛ

ΔΙ

ω ω ωων γαρ εξ ε λη η η η η η λυ υ

ΓΑ

ΔΙ

θε ε ε νο ο ο ο ο μος η γλωσ σο πυ υρ σο ο

ΒΞ

ο μο ο ρ φος Πνε ευ μα α α α α το ος χα α α α

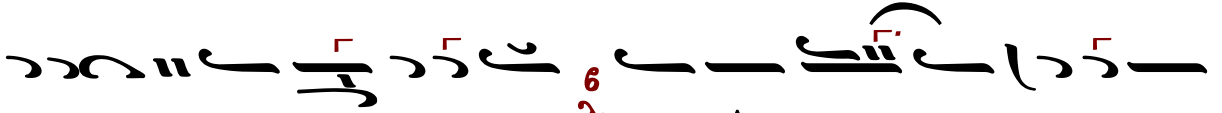
ρις

ὠδὴ ε'

ΒΞ



λα σμος η η μιν Χρι ι στε ε και σω ω ω ω



ω τη η ρι ι ι ι α ο Δε σπο ο τη η ης

ΠΑ



ε ε λα αμφα ας ε εκ τη ης Παρ θε ε ε ε

ΝΗ

ΜΕΛ

ΒΞ



νου ου ι ιν ως προ φη η η την θη η ρο ος ε



ε εκ θα λα α ατ τι ι ι ου ου στε ερ νω ω ω ν

ΜΕΛ

ΔΙ



Ι ι ω ω ω ναν της φθο ρα α α α α ας

ΜΕΛ

ΒΞ

ΜΕΛ



δι ι α α αρ πα α α α α σης ο ο ο λο ο ν

ΒΞ

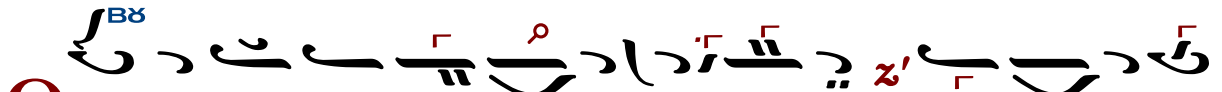


τον Α δαμ πα α αγ γε ε νη η η πε ε ε ε



ε πτω ω χο ο ο ο τα

ῥδῆζ'



Σ υμ φω νον ε ε θρο ο η η σε εν ορ γα α α

α α ν ω ω ν μ ε ε ε ε ε λ ο ς <sup>6</sup> λ σ ε ε β ε ι ε ι ε ι ν τ ο

<sup>ΠΑ</sup> χ ρ υ υ σ ο ο τ ε ε υ κ τ ο ο ν α α ψ υ υ χ ο ν β ρ ε

<sup>ΒΞ</sup> ε ε τ α α ς η του Πα ρ α κ λ η η του ου δε ε φ ω

σ φ ο ο ο ο ο ρ ο ο ς χ α α α ρ ι ς <sup>6</sup> λ σ ε β α α σ μ ι

<sup>ΜΕΛ</sup> ι α α α α α α ζ ε ι του ου β ο α α αν Τ ρ ι

<sup>ΒΞ</sup> α α α ς μ ο ο ο ο ο ν η ι ι σ ο σ θ ε ν η ς <sup>Δ</sup> α α ν α

α ρ χ ο ς ο ς ε υ λ ο ο ο ο ο γ η η τ ο ο ο ς ε ι ε ι <sup>6</sup> λ

ῶδὴ ἡ'

<sup>ΜΕΛ</sup> <sup>ΒΞ</sup> α ι ν ο υ μ ε ν ε υ λ ο γ ο υ μ ε ν π ρ ο σ κ υ ν ο υ ο υ ο υ μ ε

εν τ ο ο ν Κυ υ ρ ι ι ο ο ν <sup>6</sup> λ

Bx  
λ υ υ ει ει ει τα δε σμα και αι αι δρο ο σι ζει  
 ει ει ει ει τη ην φλο ο ο ο γα 6 λ ο τρισ ο φεγ γης  
MEΛ Bx  
ΠΑ  
 τη ης θε ε α αρ χι ι α ας τυ υ υ υ πο ος π 9  
MEΛ Bx  
 υ μνου σι παι αι αι αι αι δες ε ε ευ λο ο γει  
 ει ει δε το ο ον μο ο ο ο νο ον 6 λ Σω  
ΔΙ MEΛ ΔΙ  
 τη η η η η ρα και πα αν τουρ γο ο ον  
Bx  
 ως ε ευ ε ε ερ γε ε ε ε ε την Δ λ η δη μι ουρ  
 γη θει ει ει ει ει σα α συμ πα α α α α σα α κτι ι  
6 λ  
 ι σι ι ι ι ις

φδὴ θ' τῆς ἑορτῆς

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

Κανὼν α'  
ἤχος πλ.α'

«Σὲ τὴν ὑπὲρ νοῦν καὶ λόγον Μητέρα Θεοῦ, τὴν ἐν χρόνῳ τὸν ἄχρονον ἀφράστως κυήσασαν, οἱ πιστοὶ ὁμοφρόνως μεγαλύνομεν».

Δόξα σοι ὁ Θεὸς ἡμῶν δόξα σοι.

Σὲ τὸν λυτρωτὴν τοῦ κόσμου, Χριστὸν τὸν Θεόν, οἱ ἀπόστολοι βλέποντες, ἐνθέως ὑψούμενον, μετὰ δέους σκιρτῶντες ἐμεγάλυνον.

Δόξα σοι ὁ Θεὸς ἡμῶν δόξα σοι.

Σοῦ τὴν θεωθεῖσαν σάρκα ὀρῶντες Χριστέ, ἐν τῷ ὕψει οἱ ἄγγελοι, ἀλλήλοις διένευον Ἄληθῶς οὗτός ἐστιν ὁ Θεὸς ἡμῶν.

Δόξα σοι ὁ Θεὸς ἡμῶν δόξα σοι.

Σὲ τῶν ἀσωμάτων τάξεις Χριστέ ὁ Θεός, ἐν νεφέλαις αἰρόμενον ἰδοῦσαι ἐκράυγαζον τῷ τῆς δόξης βασιλεῖ πύλας ἄρατε.

Δόξα σοι ὁ Θεὸς ἡμῶν δόξα σοι.

Σὲ τὸν καταβάντα ἕως ἐσχάτου τῆς γῆς, καὶ τὸν ἄνθρωπον σώσαντα, καὶ τῇ ἀναβάσει σου ἀνυψώσαντα, τοῦτον μεγαλύνομεν.

Ὑπεραγία Θεοτόκε σῶσον ἡμᾶς.

Χαῖρε Θεοτόκε Μήτηρ Χριστοῦ τοῦ Θεοῦ, ὃν ἐκύησας, σήμερον, ἐκ γῆς ἀνιπτάμενον, σὺν ἄγγελοις ὄρωσα ἐμεγάλυνες.

Κανὼν β'  
ἤχος δ'

Ἄσπας γηγενῆς

Ἄγγελοι, τὴν ἀνοδὸν τοῦ Δεσπότη, ὀρῶντες ἐξεπλήττοντο·  
πῶς μετὰ δόξης ἐπήρθη, ἀπὸ τῆς γῆς εἰς τὰ ἄνω.

Ἔ τῶν δωρεῶν, τῶν ὑπὲρ κατάληψιν! ὦ μυστηρίου φρικτοῦ! πάντων ὁ δεσπότης γάρ, ἐκ γῆς ἀπαίρων πρὸς τὰ οὐράνια, τοῖς μαθηταῖς ἀπέστειλε, Πνεῦμα τὸ ἅγιον, τὸ φωτίσαν τούτων τὴν διάνοιαν, καὶ πυρίνους τελέσαν ἐν χάριτι.

Ἄγγελοι, τὴν ἀνοδὸν τοῦ Δεσπότη, ὀρῶντες ἐξεπλήττοντο·  
πῶς μετὰ δόξης ἐπήρθη, ἀπὸ τῆς γῆς εἰς τὰ ἄνω.

Στίφει μαθητῶν, ὁ Κύριος ἔφησεν Ὑμεῖς καθίσατε, εἰς Ἱεροσόλυμα, καὶ ἐκπέμψω ὑμῖν Παράκλητον, ἄλλον, Πατρὶ τὸν σύνθρονον, καὶ ὁμοίον, ὃν ὁρᾶτε, ἀναλαμβανόμενον, καὶ νεφέλη φωτὸς ἐποχούμενον.

Δόξα Πατρὶ καὶ Υἱῷ καὶ ἁγίῳ Πνεύματι.

Ἄγγελοι, τὴν ἀνοδὸν τοῦ Δεσπότη, ὀρῶντες ἐξεπλήττοντο·  
πῶς μετὰ δόξης ἐπήρθη, ἀπὸ τῆς γῆς εἰς τὰ ἄνω.

Ἦρθη ἐμφανῶς, ἡ μεγαλοπρέπεια, ἄνωθεν σαρκὶ πτωχεύσαντος, τῶν οὐρανῶν, τοῦ καὶ συνεδρία Πατρὸς τετίμηται, φύσις ἡμῶν ἢ ἔκπτωτος. Πανηγυρίσωμεν, καὶ συμφώνως πάντες ἀλαλάξωμεν, καὶ κροτήσωμεν χεῖρας γηθόμενοι.

Καὶ νῦν καὶ αἰεὶ καὶ εἰς τοὺς αἰῶνας τῶν αἰώνων, ἀμήν.

Ἄγγελοι, τὴν ἀνοδὸν τοῦ Δεσπότη, ὄρωντες ἐξεπλήττοντο·

πῶς μετὰ δόξης ἐπήρθη, ἀπὸ τῆς γῆς εἰς τὰ ἄνω.

Φῶς τὸ ἐκ φωτός, ἐκλάμψαν πανάμωμε, ἐκ σοῦ ἀνέτειλε, καὶ τὴν ἀμαυρότητα, τῆς ἀθεΐας πᾶσαν διέλυσε, καὶ τοὺς νυκτὶ καθεύδοντας ἐφωταγώγησε· διὰ τοῦτο πάντες κατὰ χρέος σε, εἰς αἰῶνας αἰεὶ μακαρίζομεν.

Γαβριὴλ Κουντιάδου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

## Γαβριὴλ Κουντιάδου

ὠδὴ θ', κανὼν α'

Ὁ εἰρμὸς

Ἦχος λ̣ π̣ ᾠ̣ Κε

Γαβριὴλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
α' ἔκδοσις 1931-1935  
ἐπανεκδόση 1991 σ.362\*

ε̣ τ̣η̣ν̣ υ̣ περ̣ νου̣ν̣ και̣ λο̣ γον̣ μη̣ τε̣ ε̣ ρα̣ Θε̣ ου̣

τη̣ν̣ εν̣ χρο̣νω̣ τον̣ α̣ χρο̣νον̣ α̣ φρα̣ α̣ α̣ στω̣ς̣ κυ̣ η̣

σα̣σαν̣ οἱ̣ πι̣στοι̣ ο̣ μο̣ φρο̣νω̣ς̣ με̣ γα̣ λυ̣ νο̣ ο̣ με̣ν

Δο̣ξα̣ σοι̣ ο̣ Θε̣ ος̣ η̣ μω̣ων̣ δο̣ξα̣ σοι̣

ε̣ τον̣ Λυ̣ τρω̣ την̣ του̣ κο̣ σμου̣ Χρι̣ στο̣ ον̣ τον̣ Θε̣ ον̣



οι α πο στολοι βλε ποντες εν θε ε ε ως υ ψου με

νον με τα δε ους σκιρ των τες ε με γα λυ υ νον

Δ ο ξα σοι ο Θε ος η μω ων δο ξα σοι

ου την θε ω θει σαν σαρ κα ο ρω ωντες Χρι στε εν

τω υ ψει οι αγ γελοι αλ λη η η λους δι ε νευ

ον α λη θως ου τος ε στι ιν ο Θε ος η η μων

Δ ο ξα σοι ο Θε ος η μω ων δο ξα σοι

ε των α σω μα των τα ξεις Χρι στε ε ο Θε ος

εν νε φει λαις αι ρο μενον ι δου ου ου σαι ε κραυ γα

ζον τω της δο ξης βα σι λει ει πυ λας α ρα α τε

Δοξα σοι ο Θεος ημων δοξα σοι

ε τον καταβαντα εως εσχατου της γης και

τον αα ανθρωπον σωσαντα και τη αναβα

σει σου ανυψωσαντα του τονμεγαλυνοομεν

υπερ αγια Θεο το κωσωσον ημας

και ρε Θεο το κωμητηρ Χριστου ουτου Θεου

ον εκυησας σημερον εκ γη ηης ανιπταμε

νον συναγγελιοις ορωσαεμεγαλυυνες

ὠδὴ θ', κανὼν β'

Ἦχος δὲ Ββ

Ἄσπας γηγενής

Γαβριήλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικὸν Πεντηκοστάριον  
ἀ' ἔκδοσις 1931-1935  
ἐπανέκδοση 1991 σ.364\*

**Α** <sup>Γ</sup> γ γε λοι την α α νο δον του Δε σπο του ο ρων

τες εξ ε πλητ τον το <sup>6</sup> λ πως με τα δο ξης ε πη ηρθη α

πο της γη ης εις τα α α νω <sup>6</sup> λ

**Ω** των δω ρε ων <sup>π 9</sup> των υ περ κα τα λη ψιν ω μω

στη ρι ι ου φρι κτου <sup>6</sup> λ παν των ο δε σπο ζων γαρ εκ γης

α παι ρων προς τα ου ρα νια <sup>6</sup> λ τοις μα θη ταις α

πε στει λε Πνευ μα το α γι ι ον <sup>Δ 1</sup> το φω τι σαν του των

την δι α νοι αν <sup>6</sup> λ και πυ ρι νους τε λε σαν εν χα ρι τι <sup>6</sup> λ

**Α** γ γε λοι την α α νο δον του Δε σπο του ο ρων

τες εξ ε πλητ τον το <sup>6</sup> λ πως με τα δο ξης ε πη ηρθη α

πο της γη ης εις τα α ανα<sup>6</sup>  
<sup>λ</sup>

**Κ**τι φειμαθη των ο Κυ ρι ος ε φησεν υ μεις κα

θι σα τε<sup>6</sup> <sup>λ</sup>εις Ι ε ρο σο λυ υ μα κα γω εκ πε εμψω

υ μιν Πα ρα κλητον<sup>6</sup> <sup>λ</sup> αλ λον Πα τρι τον συν θρο νον κα

μοι ο μο τι ι μον<sup>6</sup> <sup>λ</sup> ον ο ρα τε α να λαμ βα νο με

νον<sup>6</sup> <sup>λ</sup> και νε φε ληφω τος ε πο χου μενον<sup>6</sup> <sup>λ</sup>

**Δ**ο ξα Πα τρι και Υι ω και α γι ω

Πνευ μα τι<sup>6</sup> <sup>λ</sup>

**Α**γ γε λοι την α α νο δον του Δε σπο του ο ρων

τες εξ ε πλητ τον το<sup>6</sup> <sup>λ</sup> πως με τα δο ξης ε πη ηρθη α

πο της γη ης εις τα α ανα <sup>6</sup><sub>λκ</sub>

**Η** ρ θηεμφανως <sup>π9</sup> η με γα λο πρε πει α αναθεν

των ουρα νων <sup>6</sup><sub>λκ</sub> του σαρ κι πτω χευ σα αντος και συν ε δρι

ια Πα τρος τε τι μηται <sup>6</sup><sub>λκ</sub> φυ σις η μων η εκ πτω

τος παν η γυ ρι σω ω μεν <sup>Δ</sup> και συμ φωνωσ παντες α

λα λα ξωμεν <sup>6</sup><sub>λκ</sub> και κρο τη σωμεν χει ρας γη θο μενοι <sup>6</sup><sub>λκ</sub>

**Κ** αι νυν και α ει και εις τους αι ω νας των αι

ωνων α μην <sup>6</sup><sub>λκ</sub>

**Α** γ γε λοι την α ανα δον του Δε σπο του ο ρων

τες εξ ε πλητ τον το <sup>6</sup><sub>λκ</sub> πως με τα δο ξης ε πη ηρθη α

πο της γη ης εις τα α ανω <sup>6</sup> <sub>λ</sub>

**Φ** ως το εκ φω τος εκ λαμ ψαν Παν α μω με εκ σου α

νε τει λε <sup>6</sup> <sub>λ</sub> και την α μαυ ρο τη η τα της α θε ι ας

πα α σαν δι ε λυ σε <sup>6</sup> <sub>λ</sub> και τους νυ κτι κα θευ δον τας

ε φω τα γω γη η σε <sup>6</sup> <sub>λ</sub> δι α του το παν τες κα τα χρε

ος σε <sup>6</sup> <sub>λ</sub> εις αι ω νας α ει μα κα ρι ζο μεν <sup>6</sup> <sub>λ</sub>

### Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

ὠδὴ θ', κανὼν α'

Ὁ εἶρμος

Ἦχος λ̣ π̣ ᾠ̣ Κε

Πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.401#

**C** ε την υ περ νουν και λο γον Μη τε ρα Θε

ου <sup>6</sup> <sub>λ</sub> την εν χρο νω τον α χρο νον α φρα α στως κυ η

σα σαν <sup>χ̣ ḡ</sup> οι πι στοι ο μο φρο νως με γα λυ νο ο

μεν <sup>χ̣ ḡ</sup>

**Δ** ο ξα σοι ο Θε ος η μω ων δο ξα σοι <sup>χ̣ ḡ</sup>

**Σ** ε τον λυ τρω την του κο σμου Χρι στον τον Θε

ον <sup>ν̣ ḡ</sup> οι α πο στο λοι βλε πον τες εν θε ε ως υ ψου με

νον <sup>χ̣ ḡ</sup> με τα δε ε ους ο ρων τες ε με γα α λυ υ

νον <sup>χ̣ ḡ</sup>

**Δ** ο ξα σοι ο Θε ος η μω ων δο ξα σοι <sup>χ̣ ḡ</sup>

**Σ** ε τον κα τα βαν τα ε ως ε σχα α του της γης <sup>π̣ ḡ</sup>

και τον αν θρω πον σω σαν τα <sup>χ̣ ḡ</sup> και τη α να βα σει

σου α νυ ψω σαν τα του τον με γα λυ υ νο ο

μεν

Υ περ α γι α Θε ο το κε σω σον η μας

Χ αι ρε Θε ο το κε Μη τηρ Χρι στου του Θε

ου ον ε κυ υ η σας ση μερον εκ γη ης α νι πτα

μενον συν αγ γε ε λοις ο ρω σα ε με γα α λυ

υ νες

ὠδὴ θ', κανὼν β'

Ἄσπας γηγενής

Ἦχος Ββ

Πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.403#

Α γ γε λοι την α νο δον του Δε σπο του ο



ρων τες εξ ε πλητ τον το <sup>6</sup> λ πως με τα δο ξης ε πη ηρ

θη α πο της γη ης εις τα α νω <sup>6</sup> λ

**Ω** των δω ρε ων των υ περ κα τα λη ψιν ω μυ

στη ρι ου φρι κτου <sup>6</sup> λ παν των ο δε σπο ζω ων γαρ <sup>π</sup> ρ εκ γης

α παι αι ρων προς τα ου ρα νι α <sup>6</sup> λ <sup>σ</sup> τοις μα θη

ταις α πε στει λε Πνευ μα το α α γι ι ον <sup>Δ</sup> ο το

φω τι σαν του των την δι α νοι αν <sup>6</sup> λ και πυ ρι

νους τε λε σαν εν χα ρι τι <sup>6</sup> λ

**Α** γ γε λοι την α νο δον του Δε σπο του ο

ρων τες εξ ε πλητ τον το <sup>6</sup> λ πως με τα δο ξης ε πη ηρ

θη α πο της γη ης εις τα α νω <sup>6</sup>λ

**Κ**τι φειμαθη των ο Κυριος ε φησεν υ μεις κα

θι σα τε εις Ι ε <sup>σ</sup>ρο σο λυ υ μα <sup>π</sup>κα γω εκ

πε εμ ψω υ μιν Πα ρα α κλη τον α αλ λον <sup>6</sup>λ Πα

τρι τον συν θρο νον κα μοι ο μο τι ι μον <sup>Δ</sup>ον ο

ρα α α α τε α να λαμ βα νο με νον <sup>6</sup>λ και νε

φε ληφω τος ε πο χου με νον <sup>6</sup>λ

**Δ**ο ξα Πα τρι και Υι ω και α γι ω Πνευ

μα τι <sup>6</sup>λ

**Α**γ γε λοι την α νο δον του Δε σπο του ο

ρων τες εξ ε πλητ τον το πως με τα δο ξης ε πη ηρ

θη α πο της γη ης εις τα α νω

**Η** ρ θηεμφανως η με γα λο πρε πει α α νωθεν

των ου ρα νων του σαρ κι πτω χευ σα αν τος και

συν ε δρι ι α Πα τρος τε τι μηται φυ υ σις

η μων η εκ πτω τος πα νη γυ ρι ι σω ω μεν

και συμ φω ω ω νως παν τες α λα λα ξω μεν και

κρο τη σω μεν χει ρας γη θο μενοι

**Κ**αι νυν και α ει και εις τους αι ω νας των αι

ωνων α μην

Α γ γε λοι την α νο δον του Δε σπο του ο

ρων τες εξ ε πλητ τον το λ πως με τα δο ξης ε πη ηρ

θη α πο της γη ης εις τα α νω Θεοτοκίον

Φ ως το εκ φω τος εκ λαμ ψαν παν α μω με εκ σου

α νε τει λε και την α μαυ ρο τη η τα της α

θε ι ας πα σαν δι ε λυ σε και τους νυ κτι

κα θευ δον τας ε φω τα γω ω γη η σε δι

α του ου ου ου το παν τες κα τα χρε ος σε εις αι

ω νας α ει μα κα ρι ζο μεν

### Καταβασία θ' φδῆς

ἦχος δ'

Χαίροις ἀνασσα, μητροπάρθενον κλέος· ἅπαν γὰρ εὐδίνητον εὐλαλον στόμα, ῥητρεῦον, οὐ σθένει σε μέλπειν ἀξίως, ἰλιγγιᾷ δὲ νοῦς ἅπας σου τὸν τόκον νοεῖν· ὅθεν σε συμφώνως δοξάζομεν.

### Σύντομος

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Γαβριὴλ Κουντιάδου  
Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

### Ἀργή

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Γαβριὴλ Κουντιάδου  
Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Πέτρου Λαμπαδαρίου

## Σύντομος

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Καταβασίαι Πεντηκοστῆς  
ῶδη θ'

Ἦχος ᾠὴ Ββ

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.430#

Χαι ροις α νασσα α μητροπα αρ θε νον κλε ε ος  
α παν γαρ ευ δι νητον ευ λα λον στο μα ρη τρε ευ ον  
ου σθε νει σε μελ πειν α ξι ι ως ι λιγ γι α δε νους  
α πας σου τον το ο κον νο ειν ο θεν σε συμ φω νως δο ξα  
ζο με ε ε ε εν

Γαβριὴλ Κουντιάδου

Χαι ροις α νασ σα μη τρο πα αρ θε νον κλε ε ος α  
 παν γαρ ευ δι νη τον ευ λα λον στο μα ρη τρε ευ ον  
 ου σθε νει σε μελ πειν α ξι ι ως ι λιγ γι α δε νου  
 ους α πας σου τον το κον νο ειν ο θεν σε συμ φω  
 ω νως δο ξα α ζο με ε ε ε εν

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

Χαι ροις Α νασ σα μη τρο πα αρ θε νον κλε ος  
 α παν γαρ ευ δι νη τον ευ λα λον στο ο μα ρη τρε

ευ ον ου σθε νει σε μελ πειν α ξι ως <sup>Δ</sup>λι ι λιγ γι

α δε νους <sup>Δ</sup>λι α πας σου τον το κον νο ειν <sup>Δ</sup>λι ο θεν σε συμ

φω ω νως δο ξα ζο με ε ε ε εν <sup>6</sup>λ

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Καταβασίαι Πεντηκοστής  
ὠδὴ θ'

Ἦχος <sup>Δ</sup>λι Βα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστήριον  
2005 σ.501\*

**Χ** <sup>χ</sup> αι ροις α νασ σα μη τρο πα αρ θε νον κλε ε ος <sup>6</sup>λ α

<sup>ρ</sup> παν γαρ ευ <sup>ρ</sup> δι νη τον ευ λα λον στο μα ρη <sup>ρ</sup> τρε ευ ον <sup>Δ</sup>λι

ου σθε νει σε με ελ πειν α ξι ως <sup>Δ</sup>λι ι λιγ γι α δε

νου ους α πας σου τον το κον νο ειν <sup>6</sup>λ ο θεν σε συμ φω νως δο

<sup>6</sup>λ  
ξα ζο μεν <sup>λ</sup>




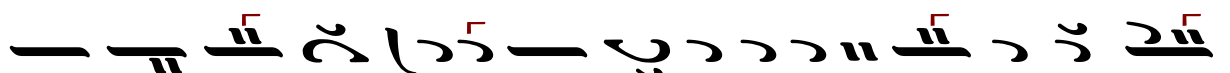


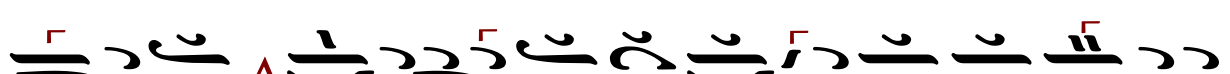

Ἄεγι

# Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου

Καταβασίαι Πεντηκοστῆς  
ψῆδὴ θ'









Ἦχος δὲ Ββ

πρωτ. Κων. Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.404\*



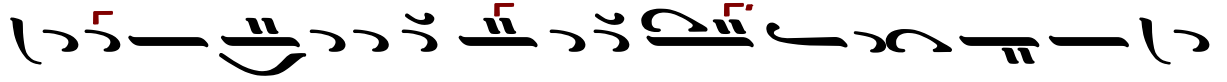






**Χ**αι αι ροις α να ασ σα μη η η τρο ο παρ  

θε ε ε ε ε νο ον κλε ε ε ος α παν γα αρ  

ε ευ δι ι νη η το ον ε ε ευ λα α α λο ον στο ο ο μα ρη  

τρε ε ευ ον ουου ου σθε νει ει σε ε με ελ πειν α  

α ξι ι ι ω ως ι λιγ γι α α δε ε ε  

νους α α πας σου το ο ον το ο ο ο κο ον νο  

ο ο ειν ο ο θε εν σε συμ φω ω ω νως δο ξα α ζο  

ο με ε ε ε εν

Ιωάννου Πρωτοψάλτου




**Χ**αι αι ροις Α να ασ σα μη η η τρο ο παρ  

θε ε ε ε ε νο ον κλε ε ε ος α παν γα αρ  

ε ευ δι ι νη η η το ον ε ε ευ λα α α λο ον στο ο ο  

μα ρη τρε ε ευ ον ουου ου σθε νει ει σε ε με ελπειν  

α α ξι ι ι ω ως ι λιγ γι α α δε ε  

ε νους α α πας σου το ο ον το ο ο ο ο κο  

ον νο ο ο ειν ο ο θε εν σε συμ φω ω ω νως δο  

ξα α ζο ο με ε ε ε εν

Γαβριήλ Κουντιάδου


**Χ** αι αι ροις α να ασ σα μη η η τρο ο παρ  

θε ε ε ε ε νο ον κλε ε ε ος α παν γα αρ  

ε ε ευ δι νη η τον ε ευ λα λο ον στο ο ο μα  

α ρη τρε ε ευ ον ουου ου σθε νει ει σε ε με ελ πειν  

α α ξι ι ι ω ως ι λιγ γι α α δε ε  

ε νους α α πας σου το ο ον το ο ο ο κο  

ον νο ο ο ειν ο ο θε εν σε συμ φω ω ω νως δο ο  

ξα α ζο ο με ε ε ε εν

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

<sup>Ββ</sup>  
Χαι αι ροις Α α να ασ σα μη η η

τρο ο πα α αρ θε ε ε ε ε νο ον κλε ε ε ε ος <sup>β λ</sup>

<sup>Δι</sup> α παν γα αρ ε ε ευ δι ι νη η η το ον ε ευ λα <sup>Ββ</sup>

α α α α λο ον στο ο ο ο μα <sup>β λ</sup> ρη τρε ευ ον ου ου

<sup>ΠΑ</sup> ου σθε ε νει ει σε ε με ελ πει ει ν α α ξι ι

<sup>ΝΗ Ββ</sup> ι ι ω ως <sup>π ρ</sup> ι λι γ γι α α α δε ε ε

<sup>ΜΕΛ Δι</sup> νους α α πας σου ου το ον το ο ο ο ο ο

<sup>Ββ</sup> κον νο ο ο ει ν <sup>Δι</sup> ο ο θε ε εν σε ε ε συμ

<sup>ΝΗ ΜΕΛ</sup> φω ω ω νως δο ο ξα α ζο ο με ε ε ε εν <sup>β λ</sup>

# Τῷ Σαββάτῳ πρὸ τῆς Πεντηκοστῆς

Ψυχοσάββατον

ἤχος πλ.β'

α Ὡς ἐν ἠπείρῳ πεζεύσας ὁ Ἰσραήλ, ἐν ἀβύσσῳ ἵχνεσι, τὸν διώκτην Φαραῶ, καθορῶν ποντούμενον, Θεῷ ἐπινίκιον ὠδήν, ἐβόα, ἄσωμεν.

γ Οὐκ ἔστιν ἄγιος ὡς σύ, Κύριε ὁ Θεός μου, ὁ ὑψώσας τὸ κέρασ, τῶν πιστῶν σου ἀγαθέ, καὶ στερεώσας αὐτούς, ἐν τῇ πέτρα τῆς ὁμολογίας σου.

δ Χριστός μου δύναμις, Θεὸς καὶ Κύριος, ἡ σεπτὴ Ἐκκλησία θεοπρεπῶς, μέλπει ἀνακράζουσα, ἐκ διανοίας καθαρᾶς, ἐν Κυρίῳ ἐορτάζουσα.

ε Τῷ θείῳ φέγγει σου ἀγαθέ, τὰς τῶν ὀρθριζόντων σοὶ ψυχὰς, πόθῳ καταύγαυσον δέομαι, σὲ εἰδέναι Λόγε Θεοῦ, τὸν ὄντως Θεόν, ἐκ ζόφου τῶν πταισμάτων ἀνακαλούμενον.

ς Τοῦ βίου τὴν θάλασσαν, ὑψουμένην καθορῶν, τῶν πειρασμῶν τῷ κλύδωνι, ἐν εὐδίῳ λιμένι σου προσδραμῶν, βοῶ σοί, Ἀνάγαγε ἐκ φθορᾶς τὴν ζωὴν μου πολυέλεε.

ζ Δροσοβόλον μὲν τὴν κάμινον εἰργάσατο, ἄγγελος τοῖς ὁσίοις Παισί, τοὺς Χαλδαίους δὲ καταφλέγον πρόσταγμα Θεοῦ, τὸν τύραννον ἔπεισε βοᾶν. Εὐλογητὸς εἶ ὁ Θεὸς ὁ τῶν πατέρων ἡμῶν.

Αἰνοῦμεν, εὐλογοῦμεν, καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον.

η Ἐκστηθι φρίττων οὐρανέ, καὶ σαλευθήτωσαν τὰ θεμέλια τῆς γῆς· ἰδοὺ γὰρ ἐν νεκροῖς λογιζεται, ὁ ἐν ὑψίστοις οἰκῶν, καὶ τάφῳ σμικρῷ ξενοδοχεῖται, ὃν παῖδες εὐλογοῖτε, ἱερεῖς ἀνυμνεῖτε, λαὸς ὑπερυψοῦτε, εἰς πάντας τοὺς αἰῶνας

Σύντομοι

Σύντομοι

ὠδή α'

Ἦχος λ π̄ B̄8

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Αναστασιματάριον  
1905 σ.283#

ω ς εν η πει ρω πε ζευ σας ο Ι σρα ηλ εν

α βυσσω ι χνε σι τον δι ω κτην Φα ρα ω κα θο

ρων πον του με νον Θε ω ε πι νι κι ον ω δην ε

βο α α σω ω με εν ψδὴ γ'

**Ο** υκ ε στιν Α γι ος ως συ Κυ ρι ε ο Θε

ος μου ο υ ψω σας το κε ρας των πι στων σου Α γα θε

και στε ρε ω σας η μας *α' χορός* εν τη πε τρα της ο

μο λο γι α ας σου ψδὴ δ'

**Χ** ρι στος μου δυ να μις Θε ος και Κυ ρι ος η σε

πτη Εκ κλη σι α θε ο πρε πως μελ πει α να κρα

ζου σα εκ δι α νοι ας κα θα ρας εν Κυ ρι ω

ε ορ τα ζου ουσα

ὠδὴ ε'

**Τ**ω θει ω φεγ γει σου Α γα θε τας των ορ θρι ζον

των σοι ψυ χας πο θω κα τα αυ γα σον δε ο μαι σε ει

δε ναι Λο γε Θεου τον ον τως Θε ον εκ ζο φου των

πται σμα α των α να κα λου με ε νον

ὠδὴ ς'

**Τ**ου βι ου την θα λασ σαν υ ψου με νην κα θο ρων

των πει ρα σμων τω κλυ δω νι τω ευ δι ω λι

με νι σου προσ δρα μων βο ω σοι α να γα γε εκ φθο

ρας την ζω ην μου Πο λυ ε λε ε ε

ὠδὴ ζ'

**Δ**ρο σο βο λον μεν την κα μι νον ειρ γα σα το Αγ

γελος τοις ο σι οισ παι σι τους Χαλ δαι ους δε κα τα φλε

γον προσ τα γμα Θε ου τον τυ ραννον ε πει σε βο αν

ευ λο γη τος ει ο Θε ος ο των πα τε ρων η μω

ων

ᾠδὴ ἡ'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προ σχυ νου μεν τον Κυ

ρι ον

β' χορός

Ἦχος λ π Δι

Αθανασίου Καραμάνη  
Νέα Μουσική Κυψέλη  
Μ. Εβδομάς, 1971 σ.283#

Ε κ στη θι φριτ των ουρα νε και σα λευ θη τωσαν τα θε

με λι α της γης ι δου ου γαρ εν νε κροις λο γι ζε ται ο

εν υ ψι στοις οι κων και τα φω σμι κρω ξε νο δο

χειται ὄν Παιδες εὐλογοῦτε Ἰερεῖς ἀ  
νυμνεῖτε λαὸς ὑπερῶν ἡσυχαστῶν εἰς πάντας τοὺς  
αἰῶνας

## Τιμιωτέρα

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

Λουκᾶ κεφ. 1

ἤχος πλ.β'

- ∴ Μεγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἠγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ σωτῆρί μου. 46-47
  - ∴ Ὅτι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπεινῶσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48
  - ∴ Ὅτι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50
  - ∴ Ἐποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσχόρπισεν ὑπερηφάνους διανοίᾳ καρδίας αὐτῶν. 51
  - ∴ Καθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐπέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξαπέστειλε κενούς. 52-53
  - ∴ Ἀντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55
- Τὴν Τιμιωτέραν τῶν Χερουβὶμ, καὶ ἑνδοξοτέραν ἀσυγκρίτως τῶν Σεραφίμ, τὴν ἀδιαφθόρως Θεὸν Λόγον τεκοῦσαν, τὴν ὄντως Θεοτόκον, σὲ μεγαλύνομεν.**

Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου

Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου



# Ἦχος λ π ς Βϛ Ϟ

- ∴ Μεγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἠγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ σωτῆρί μου. 46-47
- ∴ Ὅτι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48
- ∴ Ὅτι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ Δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεάν και γενεάν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50
- ∴ Ἐποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσκόρπισεν ὑπερηφάνους διανοίᾳ καρδίας αὐτῶν. 51
- ∴ Καθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων και ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν και πλουτοῦντας ἐξάπέστειλε κενούς. 52-53
- ∴ Ἀντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ και τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55

# Ἦχος λ π ς Βϛ Ϟ

Τ ἠν τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ και εν δο  
 ξο τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ την α δι α  
 φθο ο ρως Θε ον Λο γο ον τε κου σαν την ον τως Θε ο  
 το κον σε με γα λυ νο ο με εν

## Καταβασία θ' φδῆς

ἦχος πλ.β'

Ἀπορεῖ πᾶσα γλῶσσα, εὐφημεῖν πρὸς ἀξίαν, ἰλιγγιᾷ δὲ νοῦς καὶ ὑπερκόσμιος, ὑμνεῖν σε Θεοτόκε· ὅμως ἀγαθὴ ὑπάρχουσα, τὴν πίστιν δέχου· καὶ γὰρ τὸν πόθον οἶδας τὸν ἔνθεον ὑμῶν· σὺ γὰρ Χριστιανῶν εἶ προστάτις, σὲ μεγαλύνομεν

Σύντομος

Ἀργή: Χουρμουζίου Χαρτοφύλακος

### Σύντομος

ἦχος Πά

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Ειρμολόγιον 1903 σ.283#

Ἀ πο ρεῖ πα α σα γλω σα ευ φη μει ει ν προς α ξι

αν ι λιγ γι α δε νους και υ περ κο σμι ος υ μνει ν σε

Θε ε ο το κε ο μως α γα θη υ παρ χου σα την

πι στιν δε χου και γαρ τον πο θον οι δας τον εν θε ον η

μων συ υ γαρ χρι στι α νων ει προ στα τις σε ε μεγα

λυ νο με ε εν

Ἄετή

α πο ρει πα α α σα γλω ω ω σ σα ε

ευ φη η μει ει ει ει εν προ ος α ξι ι ι ι αν

ι λιγ γι α α α δε ε ε ε νου ους και υ

πε ερ κο σμι ι ος υ υ μνει ει ει εν σε ε Θε ε ο το

ο ο ο κε ο μως α γα θη υ υ υ παρ χου ουσα α

τη η ην πι ι ι στιν δε ε ε χου και γα αρ

τον πο θον οι οι οι οι δα ας τον ε ε εν θε

ε ε ο ον η η η μων συ υ γαρ Χρι στι α

α νων ει ει προ ο στα α τισ σε ε ε με ε γα λυ νο

με ε ε εν

# Τῆς Πεντηκοστῆς

Πεζαὶ καὶ ἰαμβικαὶ

Τῇ Κυριακῇ τῆς Πεντηκοστῆς, τῇ Δευτέρᾳ τοῦ ἁγίου Πνεύματος καὶ ἐν τῇ ἀποδόσει αὐτῆς, τῷ Σαββάτῳ πρό τῶν ἁγίων Πάντων.

Ῥοδὴ α'

ἤχος βαρὺς

Πόντῳ ἐκάλυψε Φαραῶ σὺν ἄρμασιν, ὁ συντρίβων πολέμους ἐν ὑψηλῷ βραχίονι, ἄσωμεν αὐτῷ, ὅτι δεδόξασται.

ἤχος δ'

Θείῳ καλυφθεὶς ὁ βραδύγλωσσος γνόφῳ. Ἐρρητόρευσε τὸν θεόγραφον νόμον· ἴλυν γὰρ ἐκτινάξας ὄμματος νόου, ὄρα τὸν ὄντα, καὶ μυεῖται Πνεύματος γνώσιν, γεραίρων ἐνθέοις τοῖς ἄσμασιν.

Ῥοδὴ γ'

ἤχος βαρὺς

Τὴν ἐξ ὕψους δύναμιν τοῖς μαθηταῖς, Χριστέ, ἕως ἂν ἐνδύσησθε ἔφης, καθίσατε ἐν Ἱερουσαλήμ, ἐγὼ δὲ ὡς ἐμὲ Παράκλητον ἄλλον, Πνεῦμα τὸ ἐμόν τε καὶ Πατρός ἀποστελῶ, ἐν ᾧ στερεωθήσεσθε.

ἤχος δ'

Ἐρρηξε γαστρός ἠτεκνωμένης πέδας, ὕβριν τε δυσκάθεκτον εὐτεκνουμένης, μόνη προσευχῇ τῆς προφήτιδος πάλαι Ἄννης, φερούσης πνεῦμα συντετριμμένον, πρὸς τὸν δυνάστην, καὶ Θεὸν τῶν γνώσεων.

Ῥοδὴ δ'

ἤχος βαρὺς

Κατανοῶν ὁ προφήτης, τὴν ἐπ' ἐσχάτων σου Χριστέ ἔλευσιν, ἀνεβόα· τὴν σὴν εἰσακήκοα Κύριε δυναστεῖαν, ὅτι πάντα τοῦ σῶσαι, τοὺς χριστοὺς σου ἐλήλυθας.

ἤχος δ'

Ἄναξ ἀνάκτων, οἷος ἐξ οὐοῦ μόνος, Λόγος προελθὼν, Πατὴρ ἐξ ἀναιτίου. Ἴσοσθενές σου Πνεῦμα τοῖς ἀποστόλοις, νημερτὲς ἐξέπεμψας ὡς εὐεργέτης, ἄδουσι· Δόξα τῷ κράτει σου, Κύριε.

Ῥοδὴ ε'

ἤχος βαρὺς

Τὸ διὰ τὸν φόβον σου ληφθὲν Κύριε, ἐν γαστρὶ τῶν προφητῶν, καὶ κυθὲν ἐπὶ τῆς γῆς πνεῦμα σωτηρίας, ἀποστολικάς καρδίας κτίζει καθαρὰς, καὶ ἐν τοῖς πιστοῖς εὐθὲς ἐγκαινίζεται· φῶς γὰρ καὶ εἰρήνη, διότι τὰ σὰ προστάγματα.

ἤχος δ'

Αυτήριον κάθαρσιν ἀμπλακημάτων, πυρίπνοον δέξασθε Πνεύματος δρόσον, ὃ τέκνα φωτόμορφα τῆς Ἐκκλησίας· νῦν ἐκ Σιών γὰρ ἐξελήλυθε νόμος, ἡ γλωσσοπυρσόμορφος Πνεύματος χάρις.

Ῥδὴς' ἤχος βαρὺς

Ναυτιῶν τῷ σάλῳ, τῶν βιοτικῶν μελημάτων, συμπλόις ποντούμενος ἀμαρτίαις, καὶ ψυχοφθόρῳ θηρὶ προσριπτούμενος, ὡς ὁ Ἰωνᾶς Χριστὲ βοῶ σοι· Ἐκ θανατηφόρου με βυθοῦ ἀνάγαγε.

ἤχος δ'

Ἰλασμός ἡμῖν Χριστὲ καὶ σωτηρία, ὁ Δεσπότης ἔλαμψας ἐκ τῆς Παρθένου, ἴν ὡς προφήτην θηρὸς ἐκ θαλαττίου, στέρνων Ἰωνᾶν, τῆς φθορᾶς διαρπάσης, ὄλον τὸν Ἀδάμ, παγγενῆ πεπτωκότα.

Ῥδὴς' ἤχος βαρὺς

Οἱ ἐν καμίνῳ τοῦ πυρὸς ἐμβληθέντες ὅσοι παῖδες, τὸ πῦρ εἰς δρόσον μετέβαλον, διὰ τῆς ὑμνωδίας, οὕτω βοῶντες· Εὐλογητὸς εἶ Κύριε, ὁ Θεὸς τῶν πατέρων ἡμῶν.

ἤχος δ'

Σύμφωνον ἐθρόησεν ὀργάνων μέλος, σέβειν τὸ χρυσότευκτον ἄψυχον βρέτας. Ἡ τοῦ Παρακλήτου δὲ φωσφόρος χάρις, σεβασμιάζει τοῦ βοᾶν· Τριάς μόνη, ἰσοσθενής, ἀναρχος, εὐλογητὸς εἶ.

Ῥδὴ η' ἤχος βαρὺς

Αἰνοῦμεν εὐλογοῦμεν καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον.

Ἄφλεκτος πυρὶ ἐν Σινᾷ προσομιλοῦσα, βᾶτος Θεὸν ἐγνώρισε, τῷ βραδυγλώσσῳ καὶ δυσήχῳ Μωσεῖ καὶ παῖδας ζῆλος Θεοῦ, τρεῖς ἀναλώτους τῷ πυρὶ ὑμνωδοὺς ἔδειξε· πάντα τὰ ἔργα τὸν Κύριον ὑμνεῖτε, καὶ ὑπερυψοῦτε εἰς πάντας τοὺς αἰῶνας.

ἤχος δ'

Λύει τὰ δεσμὰ καὶ δροσίζει τὴν φλόγα, ὁ τρισσοφεγγῆς τῆς θεαρχίας τύπος, ὑμνοῦσι παῖδες, εὐλογεῖ δὲ τὸν μόνον, Σωτῆρα καὶ παντουργόν, ὡς εὐεργέτην, ἡ δημιουργηθεῖσα σύμπασα κτίσις.

### Σύντομοι

### Ἀργαί

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

Γαβριὴλ Κουντιάδου  
Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ.  
Κωνστ. Παπαγιάννη)

## Σύντομοι

# Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Πεζαὶ καὶ ἰαμβικαὶ

Δέον ὅπως ἡ τονικὴ βάση παραμείνῃ ἢ αὐτὴ.

Ὁ Γὰ νὰ γίνεταὶ Βου καὶ τὰνάπαλιν.

ῥοδὴ α'

Ἦχος Γα

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.420#

Π ο ον τω ε κα λυ ψε Φα ρα ω συν αρ μα σιν  
 ο συν τρι βων πο λε ε μους εν υ ψη λω βρα χι ο  
 νι α σω μεν αυ τω ο τι δε δο ο ξα α σται

ῥοδὴ α'

Ἦχος Ββ

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.420#

Θ ει ω κα λυ φθει εις ο βρα δυ υ γλωσ σος γνο φω  
 ερ ρη το ρευ σε τον θε ο ο γρα φον νο ο μον  
 λυν γαρ εκ τι να α ξας ομ μα τος νο ο ου  
 ο ρα τον ο ον τα και μ ει ται Πνευ μα τος γνω

σιν <sup>6</sup> γε ραι αι ρων εν θε ε οιστοις α σμασιν <sup>6</sup>

ῥοδὴ γ'

Ἦχος Γα

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.421#

Τ ην εξ υ ψους δυ ναμιν τοις μα θη ταις Χρι στε ε ως

αν εν δυ υ ση σθε ε ε φης κα θι σα τε εν Ι ε

ρου σα λημ <sup>Α</sup> ε γω δε ως ε με ε Πα ρα κλη τον α

αλ λον <sup>η</sup> Πνευ μα το ε μον τε και Πα τρος α πο στε

λω εν ω στε ρε ω θη η σε ε σθε <sup>η</sup>

ῥοδὴ γ'

Ἦχος Ββ

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.422#

Ε ρ ρη ξε γα στρος η τε κνω με νης πε δας <sup>6</sup> υ βριν <sup>κ</sup>

τε δυσ κα θε κτον ευ τε κνου με ε νης <sup>6</sup> μο νη προσ ευ <sup>κ</sup>



χη της προφητιδος παλαιαν ης φερου ου

σης Πνευμα συντετριμμενον προς τον δυναστην

χορδς α' και Θεον των γνωσεων

ψδλ δ' Ἦχος Γα

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.423#

Κατανοων ο Προφηητης την επε

σχα των σου Χριστε ελευσιν ανεβοοατην

σην εισακηκοα Κυυριε δυνασει αν ο

τι παντας του σωσαι τους χριστους σου εληηλυ

υθας

ψδλ δ' Ἦχος Ββ

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.423#

Α ναξ α να α κτων οι ος εξ οι ου μο ο νος <sup>6</sup>λ Λο

γος προ ελ θων Πα τρος εξ α ναι τι ι ου <sup>6</sup>λ ι σο σθε νες σου

Πνε ευ μα τοις Α πο στο ο λοις <sup>Δ</sup>νη μερ τες ε ξε πεμ

ψας ως ευ ερ γε ε της α δου σι <sup>Δ</sup>χορὸς β' δο ξα τω κρα τει

σου Κυ ρι ε <sup>6</sup>λ

ῥδὴ ε'

<sup>^</sup>Ηχος Γα

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἱρμολόγιον 1903 σ.424#

Τ ο δι α τον φο ο βον σου λη φθεν Κυ ρι ε <sup>η</sup>εν

γα στρι των προ φη των και κυ η θεν ε πι της γης πνευ

μα σω τη ρι ι ας <sup>η</sup>α πο στο λι κας καρ δι ας κτι

ζει κα θα ρας και εν τοις πι στοις ευ θε ες εγ και νι

ζεται φως γαρ και ει ρη η νη **Δ** δι ο τι τα σα προ στα α

γμα α τα **Γ**

ῥοδὴ ε΄

**Ἦχος** **Δ** Ββ

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.425#

**Λ** υ τη η ρι ον κα θαρσιν αμ πλα κη μα α των **β λ**

πυ ρι ι πνο ον δε ξασθε Πνευ μα τος δρο ο σον ω τε ε

κνα φω το μορ φα της Εκ κλη σι ι ας **Δ** νυν εκ Σι

ω ων γαρ ε ξελη η λυ θε νο ο μοσ η γλωσ σο πυρ

σο μορ φος **Δ** *χορὸς α΄* Πνευ μα τος χα α ρις **β λ**

ῥοδὴ ε΄

**Ἦχος** **Γ** α

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.425#

**Ν** αυ τι ων τω σα α λω των βι ο τι κω ων με λη

μα α των <sup>Γ</sup>η συμ πλο οισ πον του ου μενος α μαρ τι ι

αις και ψυ χο φθο ρωθη ρι ι προσ ρι πτου μενος ως

ο Ι ω νας Χρι στε βο ω ω σοι εκ θα να τη

φο ρου μεβυ θου α να α γα α γε <sup>Γ</sup>η

ᾠδὴ ε'

Ἦχος δ' Βα

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰμολόγιον 1903 σ.426#




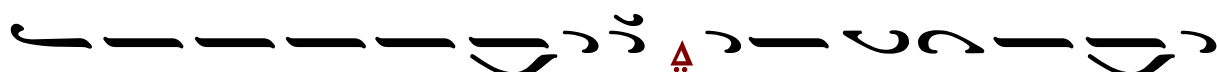

λα σμος η μιν Χρι στε και σωτη ρι ι α ο δε σπο




της ε λαμ ψας εκ της Παρ θε ε νου <sup>6</sup>λκ ιν ως προ φη την

θη ρος εκ θα λατ τι ι ου <sup>Δ</sup>δλ στερ νων Ι ω να αντης φθο

ρα ας δι αρ πα α σης <sup>6</sup>λκ ο λον τον Α δαμ <sup>χορὸς β'</sup> παγ

γε νη πε πτω κο ο τα <sup>6</sup>λκ


**O** ι εν κα μι νω του πυ ρος εμ βλη θε εν τες ο  

 σι οι παι αι δεσ **η** το πυ ρεις δρο ο σον με τε βα  

 λον **η** δι α της υ μνω δι ι ας ου τω βο ω ω ν τες **π ρ**  

 ευ λο γη τος ει Κυ ρι ε **α** ο Θε ος των πα τε ε  

 ρων η μων **η**


**C** υμ φω νον ε θρο η σεν ορ γα νων με ε λος **ε λ** σε  

 βειν το χρυ σο τευ κτον α ψυ χον βρε ε τας **ε λ** η του Πα ρα  

 κλη του δε φω σφο ρος χα α ρις σε βα σμι α α ζει **α** του

βο αν Τρι ασ μο ο νη ι σο σθε νης χορός α' α ναρχος ευ

λο γη τος ει <sup>6</sup> λ

ᾠδὴ η'

Ἦχος Γα

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.428#

Α <sup>χ</sup> ι νου μεν ευ λο <sup>χ</sup> γου μεν προ σκυ νου ου

μεν τον Κυ ρι ον <sup>η</sup>

Α φλε κτος πυ ρι ι εν Σι να προσ ο μι λου σα βα τος

Θε ον ε γνω ρι σε τω βρα δυ γλω σσω και δυσ η η

χω Μω σει <sup>η</sup> και παι δας ζη η λος Θε ου τρεις α να λω τους

τω πυ ρι υ μνω δους ε δει ξε <sup>η</sup> παν τα τα ερ γα τον Κυ

ρι ον υ μνει ει τε και υ περ υ ψου ου τε εις παν τας

τους αι ω ω νας η

ὠδὴ η'

Ἦχος δὲ Βε

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.429#

Λ υ ει τα δε σμα α και δροσι ι ζει την φλο ο γα

ο τρισ σο φεγ γης της θε αρ χι ας τυ υ ποσ υ μνου

σι παι αι δεσ ευ λο γει ει δε τον μο ο νον Σω τη

η ρα και παν τουρ γον ως ευ ερ γε ε την η δη μι ουρ γη

θει σα συμ πα σα κτι ι σι ι ι ι ις

### Γαβριήλ Κουντιάδου

Πεζαὶ καὶ ἰαμβικαὶ

Δέον ὅπως ἡ τονικὴ θάσις παραμείνῃ ἢ αὐτή.

Ὁ Γα νὰ γίνεται Βου καὶ τὰνάπαλιν.

ὠδὴ α'

Ἦχος Γα

Γαβριήλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικὸν Πεντηκοστάριον  
α' ἔκδοσις 1931-1935  
ἐπανέκδοση 1991 σ.443\*

Π ο ον τω ε κα λυ ψε Φα ρα ω συν αρ μα σιν η

ο συν τρι βων πο λε ε μους εν υ ψη λω βρα χι ο νι

α σω μεν αυ τω ο τι δε δο ο ξα α σται

ψδθ α'

Ἦχος Ββ

Γαβριήλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
α' ἔκδοσις 1931-1935  
ἐπανεκδόση 1991 σ.444\*

Θ ει ω κα λυ φθει εις ο βρα δυ υ γλωσ σος γνο ο φω

ερ ρη το ρευ σε τον θε ο ο γρα φον νο ο μον

ι λυν γαρ εκ τι να ξας ο ομ μα τος νο ο ο

ου ο ρα τον ο οντα και μν ει ται Πνε ευ μα τος

γνω ω σιν γε ραι ρων εν θε ο ις το ις α σμα σι

ψδθ γ'

Ἦχος Γα

Γαβριήλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
α' ἔκδοσις 1931-1935  
ἐπανεκδόση 1991 σ.444\*

Τ ην εξ υ ψους δυ να μιν το ις μα θη ταις Χρι στε



ε ως αν εν δυ σησθε ε ε φης κα θι σα τε εν Ι

ε ρου σα λημ ε γω δε ως ε με Πα ρα κλη τον

α αλλον Πνευ μα το ε μον τε και Πα τρος α πο στε

λω εν ω στε ρε ω θη η σε ε σθε

ψδθ γ'

Ἦχος Βα

Γαβριήλ Κουντιάδου ιερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
α' ἔκδοσις 1931-1935  
ἐπανεκδόση 1991 σ.444\*

ε ρ ρη ξε γα στρος η τε κνω με νης πε ε δας υ

βριν τε δυσ κα θε κτον ευ τε κνου με ε ε νης μο

νη προσ ευ χη της προ φη η τι δος πα λαι Αν νης

φε ρου ουσης πνε ευμα συν τε τριμ με ε νον χορός α' προς

τον δυ να α στην και Θε ον των γνω σεων

ψδὴ δ'

Ἦχος Γα

Γαβριὴλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικὸν Πεντηκοστάριον  
α' ἔκδοσις 1931-1935  
ἐπανεκδόση 1991 σ.445\*

Κατανοῶν ὁ προφηητῆς τὴν ἐπέσχατων  
 σου Χριστέ ἐλευσιν ἀνεβο ὁ ἀτην σην  
 εἰσακηκοα Κυριε δὴ να στει ἀν ὁ τι παντας  
 του σωσαι τους χριστους σου ἐληηλυ ὁ θας

ψδὴ δ'

Ἦχος Ββ

Γαβριὴλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικὸν Πεντηκοστάριον  
α' ἔκδοσις 1931-1935  
ἐπανεκδόση 1991 σ.445\*

ἀναξ ἀνακτων οἰος ἐξ οἰου μο ονος  
 Λογος προελθων Πατρος ἐξ ἀναίτιι  
 οἰ σθε νες σου Πνευματοις ἀποστολοις  
 νημερτες ἐξ ἐπεμφας ως ἐργε ετης

δου ου σι <sup>π</sup> χορός θ' δο ξα τω κρα α τει σου Κυ ρι ε <sup>β</sup> λ

ὠδὴ ε'

Ἦχος Γα

Γαβριήλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
α' ἔκδοσις 1931-1935  
ἐπανέκδοση 1991 σ.446\*

**Τ** ο δι α τον φο βον σου λη φθεν Κυ ρι ε <sup>γ</sup> εν γα

στρι των προ φη των και κυ η θεν ε πι της γης πνευ μα

σωτη ρι ι ας <sup>γ</sup> α πο στο λι κας καρ δι ι ας κτι

ζει κα θα ρας <sup>Δ</sup> και εν τοις πι στοις ευ θε ες εγ και νι

ζε ται <sup>γ</sup> φως γαρ και ει ρη η νη δι ο τι τα σα προσ τα

α γμα α τα <sup>γ</sup>

ὠδὴ ε'

Ἦχος Ββ

Γαβριήλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
α' ἔκδοσις 1931-1935  
ἐπανέκδοση 1991 σ.446\*

**Λ** υ τη η ρι ον κα θαρ σιν αμ πλα κη μα

α α των <sup>6</sup> λυ <sup>6</sup> πυ ρι πνο ον δε ξασθε Πνευ μα τος δρο ο

σον <sup>6</sup> λυ ω τε ε κνα φω το μορ φα της Εκ κλη σι

ι ι ας <sup>6</sup> λυ νυν εκ Σι ω ων γαρ εξ ε λη η λυ θε

νο ο μοσ <sup>6</sup> λυ <sup>6</sup> χσρδς α' η γλωσ σο πυρ σο μορ φος Πνε ευ μα τος

χα α α ρις <sup>6</sup> λυ

φδδς'

Ἦχος Γα

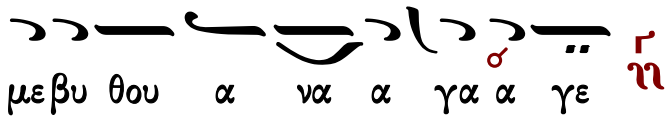
Γαβριήλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
ἀ' ἐκδόσις 1931-1935  
ἐπανέκδοσις 1991 σ.446\*

**N** αυ τι ων τω σα α λω των βι ο τι κων μελη

μα α των συμ πλο οις πον του ου με νος α μαρ τι ι

αις <sup>6</sup> λυ και ψυ χο φθο ρωθη ρι προσ ρι πτου μενος <sup>π 9</sup> ως ο

Ι ω νας Χρι στε βο ω ω σοι <sup>6</sup> λυ εκ θα να τη φο ρου

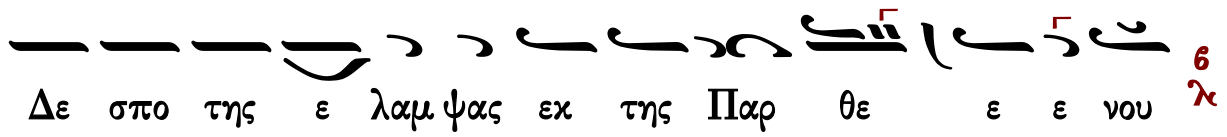

μεβυ θου α να α γα α γε 

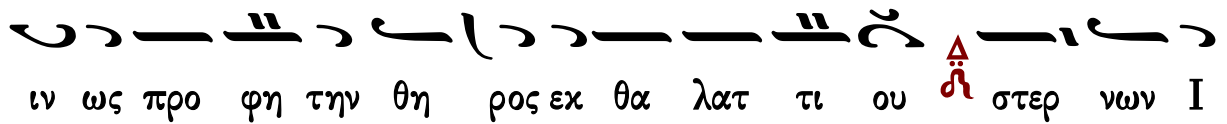

ψδδζ'

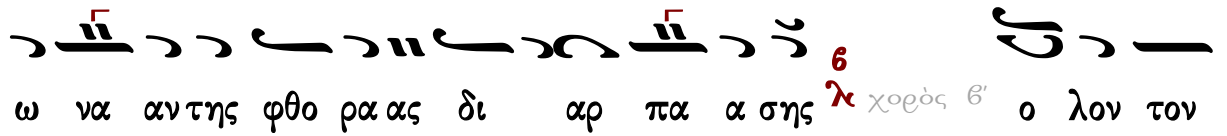

Ἦχος  Β8

Γαβριήλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
α' ἔκδοσις 1931-1935  
ἐπανέκδοσις 1991 σ.447\*

**I**  λα σμος η μιν Χρι στε και σω τη ρι ι α  ο

 Δε σπο της ε λαμψας εκ της Παρ θε ε ε νου 

 ιν ως προ φη την θη ρος εκ θα λατ τι ου  στερ νων I

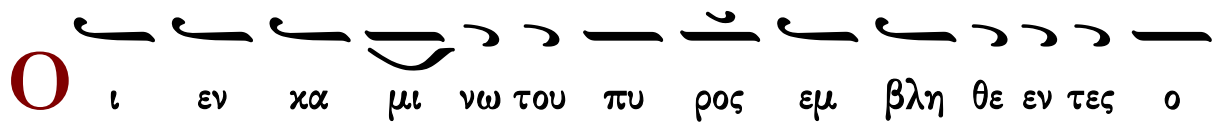
 ω να αντης φθο ραας δι αρ πα α σης  χορός β' ο λον τον

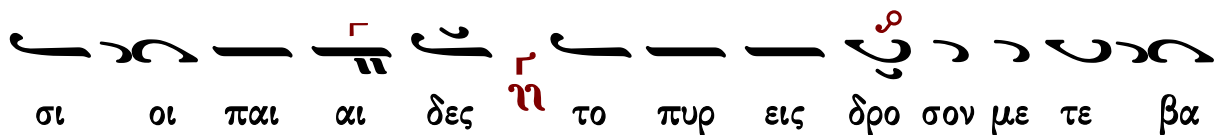

 Α δαμ παγ γε νη η πεπτω κο ο τα 

ψδδζ'

Ἦχος  Γα

Γαβριήλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
α' ἔκδοσις 1931-1935  
ἐπανέκδοσις 1991 σ.447\*

**O**  ι εν κα μι νω του πυ ρος εμ βλη θε εν τες ο

 σι οι παι αι δες  το πυρ εις ὄρο σον με τε βα

λον **Δ** δια της υμνωδίας σου τω βοωων

τες **Γ** ευλογητος ει Κυριε ο Θεος ο των πα

τερων ημων **Γ**

ψδὴ ε'

**Ἦχος Δ** Ββ

Γαβριήλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
α' ἔκδοσις 1931-1935  
ἐπανεκδόση 1991 σ.448\*

**Σ**υμφωνον εθροησεν οργων με ελος **ε** σε

βειν το χρυσο τευκτον αψυχον βρεεετας **ε** η

του Παρκλη του δεφωσφορος χααaris **Δ** σε

βασιμααζει του βοαν Τριας μοονηι σοσθε

νης **Δ** χορός α' **ε** αναρχος ευλογητος ει **ε**

ψδὴ η'

**Ἦχος Γ** Γα

Γαβριήλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
α' ἔκδοσις 1931-1935  
ἐπανεκδόση 1991 σ.448\*

Α <sup>χ</sup>ι νου μεν ευ λο <sup>χ</sup>γου μεν προ σκυ νου ου

μεν τον Κυ ρι ον <sup>η</sup>

Α φλε κτος πυ ρι ι εν Σι να προσ ο μι λου σα

βα τος Θε ον ε γνω ρι σε <sup>η</sup> τω βρα δυ γλωσ σω και δυσ

η η χω Μω σει <sup>Δ</sup> και παι δας ζη λος Θε ου τρεις α να

λω τους τω πυρ ι υ μνω ω δους ε δει ξε <sup>η</sup> παν τα τα ε ερ

γα τον Κυ ρι ον υ μνει ει τε <sup>Δ</sup> και υ περ υ ψου ου τε

εις παν τας τους αι ω ω νας <sup>η</sup>

ᾠδὴ η'

Ἦχος <sup>Δ</sup> Βα

Γαβριήλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
α' ἔκδοσις 1931-1935  
ἐπανεκδόση 1991 σ.448\*

Α υ ει τα δε σμα α και ὄρο σι ι ζει την φλο

ο ο γα ο τρισ σο φεγ γης της θε αρ χι ας  
 τυ υ προς υ μνου σι παι αιδες ευ λο γει τε τον μο  
 ο νον Σω τη η ρα και παν τουρ γον ως ευ ερ γε ε την  
 η δη μι ουρ γη θει σα συ υμ πα σα κτι ι ι σι ι ι  
 ι ις

### Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

Πεζαί και ιαμβικαί

Δέον όπως ή τονική βάση παραμείνη ή αυτή.

Ό Γα να γίνεται Βου και τανάπαλιν.

ψδδ'α'

Ἦχος Γα

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
 Πεντηκοστάριον 1983 σ.246\*

Π ο ον τω ε κα λυψε Φα ρα ω συν αρ μα σι ο  
 συν τρι βων πο λε ε μους εν υ ψη λω βρα χι ο νι  
 α σω μεν αυ τω ο τι δε δο ο ξα α σται



Βϛ

Θ εἰ ω κα λυ φθεις ο βρα δυ υ γλωσ σος γνο ο ο ο

φω λερ ρη το ρευ σε τον θε ο ο γρα φον νο ο ο

μον ι λυν γαρ εκ τι να ξας ο ομ μα τος νο

Βϛ

ου ο ρα τον ο ον τα και μυ ει ται Πνε ευ μα τος

γνω ω ω σιν γε ραι αι ρων εν θε ε οισ τοις α σμα

σι

ΓΑ

ΝΗ

ΠΑ

Τ ην εξ υ φους δυ ναμιν τοις μα θη ταις Χρι στε ε ως

ΝΗ

ΜΕΛ

ΠΑ

αν εν δυ υ ση σθε ε ε φης κα θι σα τε εν Ι ε

ρου σα λημ <sup>Δ</sup> ε γω δε ως ε με ε Πα ρα κλη τον α  
 αλ λον <sup>Γ</sup> Πνευ μα το ε μον τε και Πα τρος α πο  
 στε λω εν ω στε ρε ω θη η σε ε σθε <sup>Γ</sup>

ψδὴ γ'

Ἦχος <sup>Δ</sup> Βϙ

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Πεντηκοστάριον 1983 σ.248\*

<sup>Βϙ</sup> Ε ρ ρη ξε γα στρος η τε κνω με νης παι αι αι δας <sup>6</sup> <sup>λ</sup>  
<sup>Δ</sup> υ βριν τε δυσ κα θεκτον ευ τε κνου με ε ε ε νης <sup>6</sup> <sup>λ</sup>  
<sup>Δ</sup> μο νη προσ ευ χη της προ φη η τιδος πα λαι Αν νης  
<sup>Βϙ</sup> φε ρου σης πνε ευ μα συν τε τριμ με ε νον <sup>6</sup> <sup>λ</sup> προς τον  
 δυ να α στην <sup>Δ</sup> <sup>α</sup> χορὸς α' και Θε ον των γνω σεων <sup>6</sup> <sup>λ</sup>

ψδὴ δ'

Ἦχος Γα

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Πεντηκοστάριον 1983 σ.248\*

ΓΑ ΝΗ ΓΑ ΠΑ  
**Κ** α τ α ν ο ω ω ν ο π ρ ο φ η η τ η ς τ η ν ε π ε  
 ΝΗ ΠΑ ΝΗ ΜΕΛ Γ  
 σ χ α τ ω ν σ ο υ Χ ρ ι σ τ ε ε ε λ ε υ σ ι ν α ν ε β ο ο α  
 ΓΑ ΝΗ ΓΑ  
 τ η ν σ η ν ε ι σ α κ η κ ο α Κ υ υ ρ ι ε δ υ ν α σ τ ε ι ε ι α ν ο  
 ΝΗ ΓΑ ΓΑ  
 τ ι π α ν τ α ς τ ο υ σ ω ω σ α ι τ ο υ ς χ ρ ι σ τ ο υ ς σ ο υ ε λ η η  
 λ υ υ θ α ς

ῥοδὴ δ'

Ἦχος δὲ Βϛ

Χρυσάνθου Θεοδοσιοπούλου  
Πεντηκостάριον 1983 σ.249\*

Βϛ  
**Α** ν α ξ α ν α α κ τ ω ν ο ι ο ι ο ς ε ξ ο ι ο υ μ ο ο  
 ΔΙ Βϛ  
 ο ο ν ο ς Λ ο γ ο ς π ρ ο ε λ θ ω ν Π α τ ρ ο ς ε ξ α ν α ι τ ι ι  
 ΔΙ  
 ι ι ο υ ι σ ο σ θ ε ν ε ς σ ο υ Π ν ε ε υ μ α τ ο ι ς α π ο σ τ ο  
 Βϛ  
 λ ο ι ς ν η μ ε ρ τ ε ς ε ξ ε π ε μ ψ α ς ω ς ε υ ε ρ γ ε ε ε ε

της <sup>6</sup>λα δου ου σι <sup>Δ</sup>χορὸς β' δο ξα τω κρα α τει σου Κυ ρι

<sup>6</sup>ε

ᾠδὴ ε'

Ἦχος Γα

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Πεντηκοστάριον 1983 σ.249\*

<sup>ΓΑ</sup> <sup>ΠΑ</sup>  
Τ ο δι α τον φο βον σου λη φθε εν Κυ ρι ε <sup>Γ</sup>εν  
<sup>ΠΑ</sup> <sup>ΓΑ</sup> <sup>ΝΗ</sup>  
γα στρι των προ φη των <sup>Δ</sup>και κη υ θεν ε πι της γης  
<sup>ΜΕΛ</sup> <sup>ΠΑ</sup> <sup>ΝΗ</sup> <sup>ΠΑ</sup>  
πνευ μα σω τη ρι ι ας <sup>Γ</sup>α πο στο λι κας καρ δι ας  
<sup>ΝΗ</sup> <sup>ΓΑ</sup> <sup>ΝΗ</sup>  
κτι ζει κα θα ρας <sup>Δ</sup>και εν τοις πι στοις ευ θε ες εγ  
<sup>ΓΑ</sup> <sup>ΝΗ</sup> <sup>ΓΑ</sup> <sup>ΝΗ</sup>  
και νι ζεται <sup>Γ</sup>φωσ γαρ και ει ρη η νη <sup>Δ</sup>δι ο τι τα σα  
<sup>ΓΑ</sup>  
προ στα α γμα α τα <sup>Γ</sup>

ᾠδὴ ε'

Ἦχος Δ Ββ

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Πεντηκοστάριον 1983 σ.250\*

<sup>ΒΞ</sup>  
Λ υ τη η ρι ον κα θαρ σιν αμ πλα κη μα α α

<sup>ΔΙ</sup> <sup>ΒΞ</sup>  
των <sup>6</sup> λυ <sup>λ</sup> πυ ρι ι πνο ον δε ξασθε Πνευ μα τος δρο ο ο ο

<sup>ΔΙ</sup>  
σον <sup>6</sup> λυ <sup>λ</sup> ω τε ε κνα φω το μορ φα της Εκ κλη σι ας <sup>Δ</sup> <sup>Δ</sup>

<sup>ΒΞ</sup>  
νυν εκ Σι ων γαρ εξ ε λη η λυ θε νο ο ο ο

<sup>ΜΕΛ</sup> <sup>ΒΞ</sup>  
μος <sup>6</sup> λυ <sup>λ</sup> η γλωσ σο πυρ σο μορ φος <sup>Δ</sup> <sup>Δ</sup> χορὸς α' Πνε ευ μα τος

<sup>6</sup> λυ <sup>λ</sup> χα α α α ρις

ὠδὴς'

Ἦχος  Γα

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Πεντηκοστάριον 1983 σ.250\*

<sup>ΝΗ</sup> <sup>ΝΗ</sup> <sup>ΓΑ</sup> <sup>ΝΗ</sup>  
Ν αυ τι ων τω σα α λω των βι ο τι κω ων μελη

<sup>ΜΕΛ</sup> <sup>ΝΗ</sup>  
μα α των <sup>6</sup> λυ <sup>λ</sup> συμ πλο οις πον του μενος α μαρ τι ι ας <sup>Δ</sup> <sup>Δ</sup>

<sup>ΓΑ</sup> <sup>ΓΑ</sup> <sup>ΝΗ</sup>  
και ψυ χο φθο ρω θη ρι προσ ρι πτου μενος <sup>π</sup> <sup>9</sup> ως ο Ι

ω νας Χρι στε βο ω ω σοι <sup>ΓΑ</sup> <sup>Δ</sup> εκ θα να τη φο ρου με βυ <sup>ΝΗ</sup>

<sup>ΓΑ</sup>  
θου α να α γα α γε <sup>Γ</sup>

ῥδῆ ε'

Ἦχος <sup>Λ</sup> <sup>Δ</sup> Βϙ

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Πεντηκοστάριον 1983 σ.251\*

<sup>Βϙ</sup>  
| λα σμος η μιν Χρι στε και σω τη ρι ι ι ι

α <sup>β</sup> <sup>λ</sup> ο Δε σπο της ε λαμ ψας εκ της Παρ θε ε ε

νου <sup>β</sup> <sup>λ</sup> ιν ως προ φη η την <sup>Δ</sup> <sup>Δ</sup> θη ρος εκ θα λατ τι <sup>ΔΙ</sup>

ου <sup>Δ</sup> <sup>Δ</sup> στερ νων Ι ω ναν της φθο ρα ας δι αρ πα α α <sup>Βϙ</sup>

σης <sup>β</sup> <sup>λ</sup> ο λον τον Α δαμ <sup>Δ</sup> <sup>Δ</sup> χορὸς β' παγ γε νη η πε πτο

κο ο ο ο τα <sup>β</sup> <sup>λ</sup>

ῥδῆ ε'

Ἦχος <sup>Γ</sup> <sup>Δ</sup> Γα

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Πεντηκοστάριον 1983 σ.252\*

Ο ι εν κα μι νω του πυ ρος <sup>Δ</sup>εμ βλη θε εν τες ο  
 σι οι Παι αι δες <sup>η</sup>το πυρ εις δρο ο σον με τε  
 βα λον <sup>η</sup>δι α της υ μνω δι ι ας ου τω βο ω ων  
 τες <sup>η</sup>ευ λο γη τος ει Κυ ρι ε <sup>Δ</sup>ο Θε ο ος των  
 πα τε ε ρων η μων <sup>η</sup>

ψδηζ'

Ἦχος <sup>Δ</sup> Βϛ

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Πεντηκостάριον 1983 σ.252\*

C υμ φω νον ε θρο η σεν ορ γα νων με ε ε λος <sup>6</sup>  
 σε βειν το χρυ σο τευ κτον α ψυ χον βρε ε ε ε  
 τας <sup>6</sup>η του Πα ρα κλη του δε φω σφο ρος χα  
 ρις <sup>Δ</sup>σε βα σμι α α α ζει <sup>Δ</sup>του βο αν Τρι α ας μο νη

ι σο σθε νης <sup>Δ</sup> χορός α' αν αρχος ευ λο γη το ο ο ος

ει <sup>6</sup> λ

ᾠδὴ γ'

Ἦχος  Γα

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Πεντηκοστάριον 1983 σ.252\*

<sup>ΓΑ</sup> <sup>ΝΗ</sup> <sup>ΓΑ</sup>  
<sup>χ</sup> <sup>χ</sup>  
Α ι νου μεν ευ λο γου μεν προσ κυ νου ου μεν

τον Κυ ρι ον <sup>Γ</sup> <sup>η</sup>

<sup>ΝΗ</sup>  
Α φλε κτος πυ ρι ι εν Σι να προσ ο μι λου σα

<sup>ΓΑ</sup> <sup>ΝΗ</sup> <sup>ΓΑ</sup> <sup>ΝΗ</sup>  
βα α τος Θε ον ε γνω ρι σε <sup>Γ</sup> <sup>η</sup> τω βρα δυ γλω σσω και

<sup>ΓΑ</sup> <sup>ΔΙ</sup> <sup>ΓΑ</sup>  
δυσ η η χω Μω σει <sup>Δ</sup> <sup>α</sup> και Παι δες ζη η η λος Θε ου τρεις

<sup>ΝΗ</sup> <sup>ΓΑ</sup>  
α να λω τους τω πυ ρι υ μνω δου ους ε δει ξε <sup>Γ</sup> <sup>η</sup> παν τα

<sup>ΝΗ</sup> <sup>ΓΑ</sup> <sup>ΠΑ</sup>  
τα ε εργα τον Κυ ρι ον υ μνει ει τε και υ περ υ ψου



NH MEΛ

ΟΥ ΤΕ ΕΙΣ ΠΑΝ ΤΑΣ ΤΟΥΣ ΑΙ Ω Ω ΝΑΣ

ψδὴ η'

Ἦχος δὲ ΒϚ

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Πεντηκοστάριον 1983 σ.253\*

BϚ

Λ υ ει τα δε σμα και δρο σι ι ζει την φλο ο ο ο

MEΛ BϚ

γα ο τρι σο φεγ γης της Θε αρ χι ας τυ υ υ

πος υ μνου σι Παι αι δεσ ευ λο γει ει δε

Δι BϚ

τον μο νον Σω τη η ρα και παν τουρ γον ως ευ ερ γε

MEΛ BϚ

ε ε ε την η δη μι ουρ γη θει ει σα συ υμ πα

σα κτι σι ι ι ις

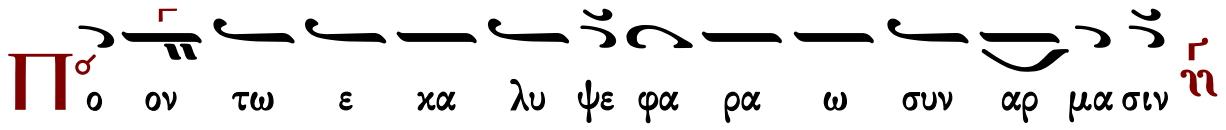
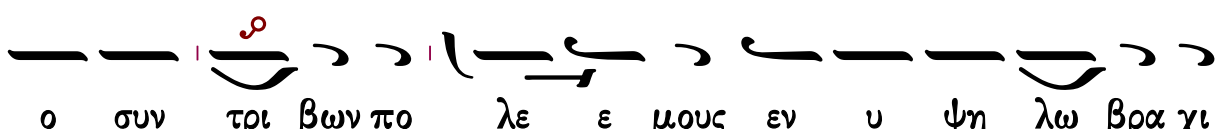
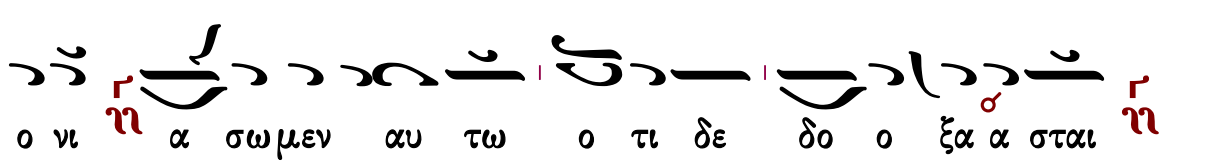
### Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Πεζαί και ιαμβικαί  
Δέον ὅπως ἡ τονική βάση παραμείνῃ ἡ αὐτή.  
Ὁ Γα νὰ γίνεταῖ Βου και τανάπαλιν.

ψδὴ α'

Ἦχος Γα

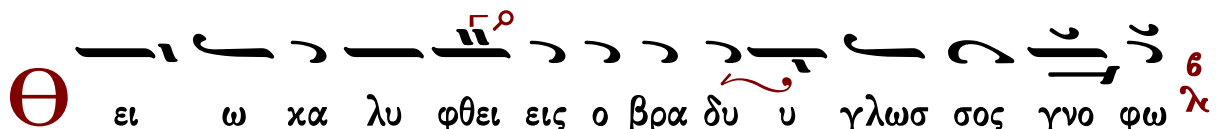
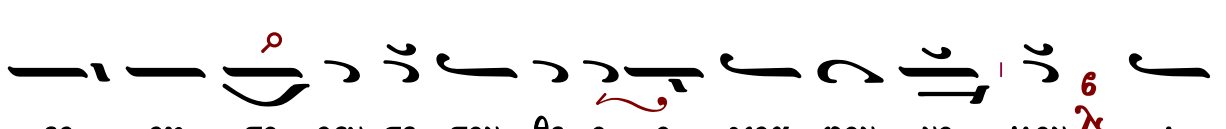
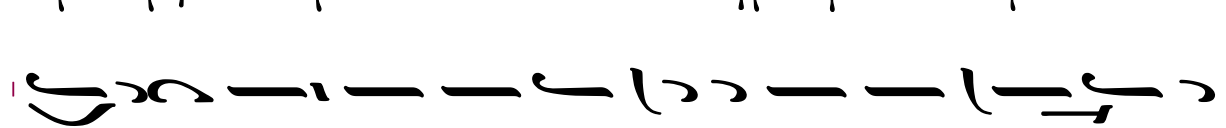
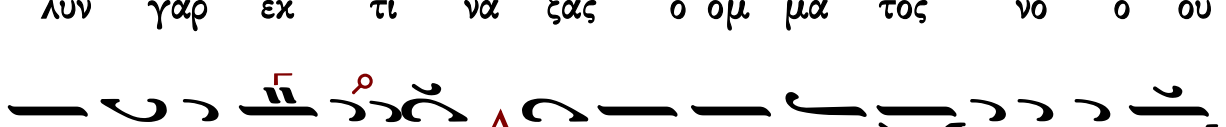
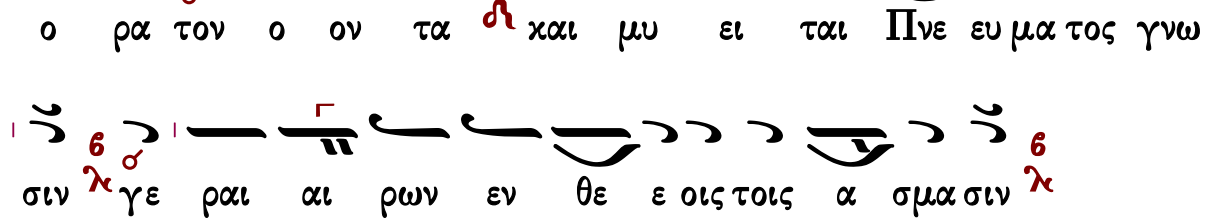
πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.490\*


**Π** ο ον τω ε κα λυ ψε φα ρα ω συν αρ μα σιν  

ο συν τρι βων πο λε ε μους εν υ ψη λω βρα χι  

ο νι α σω μεν αυ τω ο τι δε δο ο ξα α σται

ὥδη α'

Ἦχος Ββ

πρωτ. Κων. Παπαγιάννη  
 Μουσικόν Πεντηκοσάριον  
 2005 σ.491\*


**Θ** ει ω κα λυ φθει εις ο βρα δυ υ γλωσ σος γνο φω  

ερ ρη το ρευ σε τον θε ο ο γρα φον νο μον  

λυν γαρ εκ τι να ξας ο μ μα τος νο ο ου  

ο ρα τον ο ον τα και μ ει ται Πνε ευ μα τος γνω  

σιν γε ραι αι ρων εν θε ε οις τοις α σμα σιν

ὥδη γ'

Ἦχος Γα

πρωτ. Κων. Παπαγιάννη  
 Μουσικόν Πεντηκοσάριον  
 2005 σ.492\*

Την εξ υ ψους δυ ναμιν τοις μαθηταις Χριστε ε

ως αν εν δυ υ σησθε ε ε φης κα θι σα τε εν

Ι ε ρου σα λημ ε γω δε ως ε με Πα ρα α κλη

τον α αλ λον Πνευ μα το ε μον τε και Πα τρος α

πο στε λω εν ω στε ρε ω θη η σε ε σθε

ῶδη γ'

Ἦχος Ββ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.493\*

Ε ρ ρη ξε γα στρος η τε κνω με νης πε δας υ βριν

τε δυσ κα θε κτον ευ τε κνου με ε νης μο νη προσ ευ

χη της προ φη η τι δος πα λαι Α αν νης φε ρου σης

πνε ευ μα συν τε τριμ με ε νον προς τον δυ να α στην

χορὸς α' και Θε ον των γνω σεων 6 λ

ψδὴ δ'

Ἦχος Γα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.494\*

Κ α τα νο ω ων ο προ φη η της την επ ε

σχα των σου Χρι στε ε ε λευ σιν α νε βο ο α 6 λ

την σην εισ α κη κο α Κυ υ ρι ε δυ να στει ει

αν 6 λ ο τι παν τας του σω σαι τους χρι στου ους σου ε

λη η λυ υ θας 6 λ

ψδὴ δ'

Ἦχος Βδ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.494\*

Α ναξ α να α κτων οι οι ος εξ οι ου μο ο νος 6 λ

Λο γος προ ελ θων Πα τρος εξ α ναι τι ι ου 6 λ ι σο

σθε νες σου Πνευματοις α πο στο ο λους νη μερ τες

εξ ε πεμ ψας ως ευ ερ γε ε της α δου σι χορὸς β'

δο ξατω κρα τει σου Κυ ρι ε

ᾠδὴ ε'

Ἦχος Γα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.495\*

Τ ο δι α τον φο βον σου λη φθεν Κυ ρι ε εν γα

στρι των προ φη των και κυ η θεν ε πι της γης Πνευ μα σω

τη ρι ι ας α πο στο λι κας καρ δι ας κτι ζει κα

θα ρας και εν τοις πι στοις ευ θε ες εγ και νι ζε

ται φως γαρ και ει ρη νη δι ο ο τι τα σα προσ τα α

γμα α τα

ᾠδὴ ε΄

ᾠχος δὲ Βδ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.495\*

Λυτηηριονκαθαρσιναμπλακημαα  
 των πυριιπνονδεξασθε Πνευματοςδροο  
 στονωτεεκναφωτομορφατηςΕκκλησιιας  
 νυνεκσιωνγαραξεεληηθυθενοομοςη  
 γλωσσοπυρσομορφος χορὸς α΄ Πνευματοςχαρις

ᾠδὴ ε΄

ᾠχος εὐ Γα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.495\*

Ναυτιωντωσααλωτωνβιοτικωνμελη  
 μαατωνσυμπλοισποντουμενοςαμαρτιας  
 καιψυχοφθορωθηριιπροσριπτουμενοςως

ο Ι ω νας Χρι στε βο ω ω σοι <sup>Δ</sup> εκ θα να τη

φο ρου μεβυ θου α να α γα α γε

ψδδ ε'

Ἦχος <sup>Δ</sup> Ββ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.496\*

λα σμος η μιν Χρι στε και σω τη ρι ι α <sup>6</sup> ο Δε

σπο της ε λαμψας εκ της Παρ θε ε νου <sup>6</sup> ιν ως προ φη

την θη ρος εκ θα λατ τι ι ου <sup>Δ</sup> στερ νων Ι ω να αν

της φθο ρα ας δι αρ πα α σης <sup>6</sup> ο λον τον Α δαμ

χορὸς β' παγ γε νη η πεπτω κο ο τα <sup>6</sup>

ψδδ ζ'

Ἦχος <sup>Δ</sup> Γα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.496\*

Ο ι εν κα μι νω του πυ ρος εμ βλη θεν τες ο ο σι οι

παι αι δες το πυρ εις δρο ο σον με τε βα λον

δι α της υ μνω δι ι ας ου τω βο ω ν τες

ευ λο γη τος ει Κυ ρι ε ο Θε ος των πα τε ε ρων

η μων

ψδηζ'

Ἦχος δὲ Ββ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.496\*

Σ υμ φω νον ε θρο η σεν ορ γα νων με ε λος σε

βειν το χρου σο τευ κτον α ψυ χον βρε ε τας η του Πα

ρα κλη του δε φωσ φο ρος χα α ρις σε βα σμι α

α ζει του βο αν Τρι α ας μο νη ι σο σθε νης

χορὸς α'

α ναρχος ευ λο γη τος ει



Ἦχος Γα

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν προ σκυ νου ου

μεν τον Κυ ρι ον ἦ

Α φλε κτος πυ ρι ι εν Σι να προσ ο μι λου σα βα

τος Θε ον ε γνω ρι σε τω βρα δυ γλωσ σω και δυσ η η

χω Μω σει ἦ και παι δας ζη η λος Θε ου ου τρεις α να

λω τους τω πυρ ι υ μνω δου ους ε δει ξε ἦ παν τα τα

ερ γα Κυ ρι ι ου τον Κυ ρι ον υ μνει ει τε Ἄ και

υ περ υ ψου ου τεεις παν τας τους αι ω ω νας ἦ

Ἦχος Ββ

Λ υ ει τα δε σμα ακαιδροσι ι ζει την φλο ογα ο  
 τρισ σο φεγ γης της θε αρ χι ασ τυ πος υ μνου σι  
 παι αι δεσ ευ λο γει ει δε τον μο ο νον Σω τη  
 η ρα και παν τουρ γον ως ευ ερ γε ε την η δη μι ουρ  
 γη θει σα συ υμπασα κτι σις

## Ἄργαι

Πέτρου Λαμπαδαρίου. Ἄργές, διασκευασμέναι

Πεζαὶ καὶ ἰαμβικαὶ

Δέον ὅπως ἡ τονικὴ βάση παραμείνῃ ἡ αὐτή.

Ὁ Γα νὰ γίνεταί Βου καὶ τὰνάπαλιν.

Ἰσθ' α'

Ἦχος Γα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.497\*

Π ο ον τω ε κα λυ υ ψε φα ρα ω ω συν α αρ  
 μα σι εν ο συν τρι βων πο λε ε ε ε ε μους εν



β  
λ  
ιν

\* και μου ειται αι Πνευμα ...

ῥοδὴ γ'

Ἦχος Γα

πρωτ. Κων. Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.497\*

Την εξ υφους δυνααμι εν τοις μααθηταιαις

Χριστε εως ανενδυσησθε ε

εφη ης και θισατε εν Ιιερουσα

αλημ εγω δε ως εμεεεεε Πααρα

κληη τον αααλοον Πνευματοε

μοντε και Πατρος αποστεελω ενωωστε

ρεωωθηηηησεεεσεε

ῥοδὴ γ'

Ἦχος Ββ

πρωτ. Κων. Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.398\*

Ε ρ ρη ξε γα αστρος η η η τε εκνω με ε

ε ε νηης πε ε ε δας <sup>6</sup> λ υ υ βριν τε δυ υ υσ κα

θε εκτο ον ε ευ τε κνου ου με ε ε νηης <sup>π</sup> <sup>9</sup> μο ο νη

προσ ε ευ χη τη η ης προ ο φη τι ι ι ι

ι δο ος πα α α λαι <sup>6</sup> λ Α αν νης φε ρου ου ου σης

πνε ευ μα συ υ υν τε ε ε τριμ με ε ε ε

ε νον <sup>Δ</sup> προς τον δυ υ να α α στην *χορός α'* και αι Θε ο

ον των γνω ω σε ε ω ων <sup>6</sup> λ

<sup>Δ</sup> της προ φη η τι ι δος πα α α α α λαι αι Α

α αν νης <sup>6</sup> λ φε ρου ση ης πνε ευ μα α συν τε ε τρι



ιμ με ...



χορός α'

και Θε ο ον των γνω σε ε ω ων

ῥοδὴ δ'

### Ἦχος Γα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.498\*

**Κ** α τα νο ω ων ο προ φη η η η η της

την επ ε σχα α των σου Χρι ι στε ε ε ε ε

ε λε ευ σιν α α νε βο ο ο α α την ση

ην εισ α κη κο ο α Κυ υ υ υ υ ρι ι ε δυ

υ να στει ει ει α αν ο τι πα αν τας του

σω ω ω ω ω σαι τους χρι στου ουους σου ε ε λη

η η η λυ υ υ θα ας

ῥοδὴ δ'

# Ἦχος Βϛ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.398\*

**Α** α ναξ α α να α κτων οι οι οι ο ος εξ οι

οι οι οι ου ου μο ο ο νος <sup>6</sup> <sub>λ</sub> Λο ο γος προ ο ε ελ

θων Πα α τρο ος ε εξ α ναι αι τι ι ι ου ου <sup>π</sup> <sub>9</sub> ι

σο σθε νες σου ου ου Πνε ε ευ μα ται οις α πο ο

ο στο ο ο λοι ο <sup>6</sup> <sub>λ</sub> νη μερ τε ες εξ ε ε πε εμ ψας

ω ω ως ε ευ ερ γε ε ε ε ε της <sup>Α</sup> <sub>δ</sub> α δου ου σι *χορὸς*

<sup>β'</sup> δο ο ξα τω κρα α α τει σου Κυ ρι ι ε ε <sup>6</sup> <sub>λ</sub>

ῥοδὴ ε'

# Ἦχος Γα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.498\*

**Τ** ο δι α τον φο βον σου ου λη φθε ε εν Κυ

υ ρι ι ι ε η εν γα στρι ι των προ φη η

των και κυ η θεν επι ι τη η ης γη η ης Πνευ μα

α σω ω τη ρι ι ι α ας η α πο στο λι

κας καρ δι ι ι ας κτι ι ζει κα θα α ρας και εν

τοις πι ι στοις ευ θε ε ε ες ε εγ και νι ι ζε

ται αι η φως γαρ και ει ει ρη η η νη η π δι ο ο τι

τα σα προ ος τα α α α γμα α α τα α η

ψδθ ε'

Ἦχος δὲ Ββ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.399\*

λ υ τη η ρι ο ον κα θα αρ σι ιν αμ πλα α α

α α κη η μα α α των λ πυ ρι ι πνο ον δε ε ξα



ασθε ε Πνε ευμα το ος ὄρο ο ο σο ον π ω τε ε

ε κνα φω ω το ο μο ορ φα τη ης Εκ κλη η η σι

ι ι α ας λ νυν ε εκ Σι ω ωων γαρ εξ ε λη η

η λυ υ θε ε ε νο ο ο ο ο μος \* η γλωσσο πυρ

σο ο μο ορφο ος χορός α' Πνευ μα α α α α το ος χα α α

ρις λ \* η γλωσ σο πυρ σο ο μο ορφο ος ...

ῥοδῆς'

Ἦχος Γα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.499\*

Ν αυ τι ων τω σα α λω των βι ο τι κω ω ω

ω ωων με ε λη μα α α τω ων η συμ πλο ο

οις πον του ου με νο ος α μα αρ τι ι ι ι αι αις ρ

και ψυχοφθορωθηρι ι ι ι προ οσ ρι πτου ου με

νο ος ως ο Ι ω νας Χρι ι στε ε βο ω ω

ω ω σοι εκ θα να τη φο ρου με βυ θου α α να α α α

γα α α γε ε

ᾠδὴς'

Ἦχος δὲ Ββ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.399\*

λα σμος η η μιν Χρι ι στε ε και σω ω ω ω

ω τη η ρι ι ι α ο Δε σπο ο τη η ης ε

λα αμ φα ας εκ της Πα αρ θε ε ε νου ου ι ι ν ως

προ φη η η την θη η ρο ος ε εκ θα λα ατ τι

ι ι ου ου στε ερ νων Ι ι ω ω ω ναν της φθο

ρα α ας δι ι α α αρ πα α α α α σης ο ο

ο λον τον Α α δαμ χορός β' παγ γε ε ε νη η πε

πτω ω ω κο ο ο τα α

\* θη ρος εκ θα λατ τι ου ου στε ε ερ νω ων Ι ω ω ναν

της φθο ρα α α ας δι α αρ πα α α σης ο λο ον τον

Α α δαμ χορός β' παγ γε νη πε πτω ω ...

ῥοή ζ'

Ἦχος Γα

πρωτ. Κων. Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.499\*

Ο ι εν κα μι νω ω του πυ υ ρος εμ βλη θε

ε ε εν τε ες ο σι ι οι παι αι αι δε ες το πυρ

εις δρο ο ο ο σο ον με τε ε βα λο ον δι α

της υ μνω δι ι ι ι ι α ας ου τω ω βο ω ω

ων τε ες <sup>η</sup> ευ λο γη τος ει ει Κυ ρι ι ε <sup>α</sup> ο Θε

ο ο ος των πα α τε ε ε ε ρων η η μω ων <sup>η</sup>

ψδηζ'

Ἦχος δὲ Ββ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.400\*

**C**υμ φω νον ε ε θρο ο η η σε εν ορ γα α α α νωων με

ε ε λος <sup>6 λ</sup> σε ε βειν το χρυ υ υ σο ο τε ευκτο ον α

α ψυ χο ον βρε ε ε ταας <sup>π 9</sup> η του Πα ρα κλη του ου

δε ε φω σφο ο ρο ος χα α α ρι ις <sup>6 λ \*</sup> σε βα α σμι α

α α ζει ει του ου βο α α αν <sup>γ' η</sup> Τρι α α ας

μο ο ο ο ο νη ι ι σο σθε ε νης <sup>χορὸς α'</sup> α ναρχο ος

ευ λο ο ο ο ο γη η το ο ος ει <sup>6</sup>λ

\* <sup>6</sup>λ σε βα σμι ι α α α ζει του βο ο αν <sup>γ'</sup>η Τρι ...

ᾠδὴ η'

Ἦχος Γα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.500\*

α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου ου

ου ου με εν τον Κυ υ ρι ο ον <sup>η</sup>

α φλε κτο ος πυ υ υ ρι <sup>Δ</sup>εν Σι να α προσ

ο μι ι λου ου σα βα α α α τος <sup>Δ</sup>Θε ον ε ε γνω

ρι ι σε τω βρα δυ γλω ω σσω και δυ υ σ η η η η η χω Μω

ω σει <sup>η</sup> και παι δας ζη λος Θε ου ου ου τρεις <sup>Δ</sup>α να λω

ω τους τω πυ υ ρι <sup>φ</sup>υ μνω δου ο υς ε δει ξε ε <sup>η</sup>παν

τάτα ε ερ γα Κυ ρι ι ι ου τον Κυ υ ρι ι ο

ον υ μνει ει ει τε και υ περ υ υ ψου ου

ου ου ου τε ε εις πα αν τα ας του ους αι ω

ω ω να ας

ᾠδὴ γ'

Ἦχος Βϛ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.401\*

λ υ υ ει ει τα δε ε σμα και αι αι δρο ο σι ζει

ει ει ει ει τη ην φλο ο ο γα ο τρις σο φε εγ γης

τη ης θε ε α αρχι α ας τυ υ υ πο ος υ μνου σι

παι αι αι αι αι δες ευ λο ο ο γει ει ει δε το ο

ον μο ο ο ο ο νον σω τη η η ρα και

πα αν του ουρ γο ον ως ε ευ ερ γε ε ε ε ε  
 την η δη μι ουρ γη θει ει ει σα α συμ πα α α α  
 α σα α κτι ι ι σι ι ι ι ις

## ὠδὴ θ' τῆς ἑορτῆς

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

κανὼν α', ὠδὴ θ'

ἦχος βαρὺς

«**Μ**ὴ τῆς φθορᾶς διαπείρα κυφορήσασα, καὶ παντεχνήμονι Λόγω σάρκα δανείσασα, μητέρα ἀπείρανδρε, Παρθένε Θεοτόκε, δοχεῖον τοῦ ἀστέκτου, χωρίον τοῦ ἀπείρου πλαστοουργοῦ σου, σὲ μεγαλύνομεν». (β')

Δόξα σοι ὁ Θεὸς ἡμῶν, δόξα σοι.

**Ἐ**πιπαφλάζοντος πάλαι πυρίνου ἄρματος, ὁ ζηλωτῆς καὶ πυρίπνους χαίρων ὀχούμενος, τὴν νῦν ἐκλάμψασαν ἐπίπνοιαν ἐδήλου, ἐξ ὕφους ἀποστόλοις, ὕφ' ἧς καταλαμφθέντες, τὴν Τριάδα πᾶσιν ἐγνώρισαν.

Δόξα σοι ὁ Θεὸς ἡμῶν, δόξα σοι.

**Ν**όμου τῶν φύσεων δίχα ξένον ἠκούετο· τῶν μαθητῶν τῆς μιᾶς γὰρ φωνῆς ἀπηχομένης, Πνεύματος χάριτι, ποικίλως, ἐνηχοῦντο, λαοί, φυλαὶ καὶ γλῶσσαι, τὰ θεῖα μεγαλεῖα, τῆς Τριάδος γινῶσιν μουόμενοι.

κανὼν β', ὠδὴ θ'

ἦχος δ'

**Ἀ**πόστολοι, τὴν χάριν τοῦ Παρακλήτου, λαβόντες ἐξεπλήττοντο, ἐτέραις γλώσσαις λαλοῦντες, καθὼς τὸ Πνεῦμα ἐδίδου.

«**Χ**αίροις ἀνασσα, μητροπάρθενον κλέος. Ἄπαν γὰρ εὐδίνητον εὐλαλον στόμα, ῥητρεῦον, οὐ σθένει σε μέλπειν ἀξίως. Ἰλιγγιᾶ δὲ νοῦς ἅπας σου τὸν τόκον νοεῖν· ὅθεν σε συμφώνως δοξάζομεν». (β')

Δόξα Πατρὶ καὶ Υἱῷ καὶ ἀγίῳ Πνεύματι.

Ἀπόστολοι, τὴν χάριν τοῦ Παρακλήτου, λαβόντες ἐξεπλήττοντο,  
ἐτέραις γλώσσαις λαλοῦντες, καθὼς τὸ Πνεῦμα ἐδίδου.

Ἰδεῖν ἔοικε τὴν φυσίζων κόρη. Μόνη γὰρ ἐν δίνησι κεκρύφει Λόγον νοσοῦσαν  
ἀλθαίνοντα τὴν βροτῶν φύσιν. Ὃς δεξιῶς κλισμοῖσι νῦν ἰδρυμένος Πατρός, πέπομφε  
τὴν χάριν τοῦ Πνεύματος.

Καὶ νῦν καὶ αἰεὶ καὶ εἰς τοὺς αἰῶνας τῶν αἰῶνων. Ἀμήν.

Ἀπόστολοι, τὴν χάριν τοῦ Παρακλήτου, λαβόντες ἐξεπλήττοντο,  
ἐτέραις γλώσσαις λαλοῦντες, καθὼς τὸ Πνεῦμα ἐδίδου.

Ὅσοις ἔπνευσεν ἡ θεόρρυτος χάρις, λάμποντες, ἀστράπτοντες, ἡλλοιωμένοι, ὀθνεῖαν  
ἀλλοίωσιν εὐπρεπεστάτην ἰσοσθενοῦσαν τὴν ἀτμητον εἰδότες, σοφὴν τρίφεγγον οὐσίαν  
δοξάζομεν.

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

Γαβριὴλ Κουντιάδου  
Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

## Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

ψδὴ θ', καὶνὸν α'

Ἦχος Γα

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.429#

Μη της φθο ρα ας δι α πει ρα κυ ο φο ρη σα σα  
και παν τε χνη μο νι Λο γω σα ρ κα δα νει σα σα  
πει ραν δρε παρ θε νε Θε ο το ο κε  
α στε κτου χω ρι ον του α πει ρου πλα στου ρ γου σου σε  
με γα λυ υ νο ο μεν



Δ ο ξα σοι ο Θε ος η μων δο ξα σοι ᾠ

Πεντηκοστάριον, Χρ. Θεοδοσόπουλου 1983 σ.254#

Ε πι πα φλα α ζον τος πα λαι πυ ρι νου αρ μα

τος ᾠ ο ζη λω της και πυ ρι πνους χαι ρων ο χου μενος π ϩ

την νυν εκ λαμ ψα σαν ε πι πνοι αν ε δη η λου ᾠ

εξ υ ψους Α πο στο ο λους υφ ης κα τα λαμ

φθεν τες την Τρι α δα πα σιν ε γνω ω ρι ι σαν ᾠ

Δ ο ξα σοι ο Θε ος η μων δο ξα σοι ᾠ

Ιωάννου Πρωτοψάλτου Ειρμολόγιον 1903 σ.430#

Ν ο μου των φυ υ σε ων δι χα ξε ε νον η

κου ε το ᾠ των μα θη των της μι ας γαρ φω νης α πη χου

με νης Πνευματος χα ρι τι ποι κι λως ε νη χου ουν το λα

οι φυ λαι και γλωσσαι τα θει α μεγα λει α της Τρι

α δος γνω σιν μυ ου ου με ε νοι

ὦδὴ θ', κακῶν β'

Ἦχος Δλ Β8

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 s.430#

α πο ο στο λοι την χα ριν του Πα ρα κλη

του λα βον τες ε ξε πλητ τον το ε τε ραις γλωσ

σαις λα λου ουν τες κα θως το Πνευ μα ε δι δου

Χ αι ρις α νασσα α μητροπα αρ θε νον κλε ε ος

α παν γαρ ευ δι νη τον ευ λα λον στο μα ρη τρε ευ ον

ου σθε νει σε μελ πειν α ξι ι ως ι λιγ γι α δε νους

α πας σου τον το ο κον νοειν **Δ** ο θεν σε συμ φω νως δο ξα ζο

μεν **β** **λ** (β')

**Δ** ο ξα Πα τρι και Υι ω και α γι ω Πνευ μα

τι **β** **λ**

**Α** πο ο στο λοι την χα ριν του Πα ρα κλη

του **π** **ρ** λα βον τες ε ξε πλητ τον το **β** **λ** ε τε ραις γλωσ

σαις λα λου ουν τες **Δ** κα θως το Πνευ μα ε δι δου **β** **λ**

**Υ** δειν ε οι κε ε την φυ σι ι ζω ον Κο ο ρην

μο νηγα ρεν δι νη σι κε κρυ φει Λο ο γον **β** **λ** νο σου ου σαν

αλ θαι νοντα την βρο των φυ υ σιν **Δ** ο δε ξι ο ις κλι σμοι

σι νυν ι δρυ με ε νος <sup>6</sup> <sup>λ</sup> Πα τρος πε πομ φετην χα α ριν

του Πνευ ματος <sup>6</sup> <sup>λ</sup>

**Κ** αι νυν και α ει και εις τους αι ω νας των

αι ω νων **Α** μην <sup>6</sup> <sup>λ</sup>

**Α** πο ο στο λοι την χα ριν του Πα ρα κλη

του <sup>π</sup> <sup>9</sup> λα βον τες ε ξε πλητ τον το <sup>6</sup> <sup>λ</sup> ε τε ραις γλωσ

σαις λα λου ουν τες <sup>Δ</sup> <sup>δλ</sup> κα θως το Πνευ μα ε δι δου <sup>6</sup> <sup>λ</sup>

Πεντηκοστάριον, Χρ. Θεοδοσόπουλου 1983 σ.256#

**Ο** σοις ε πνευ σεν η θε ο ορ ρυ τος χα ρις <sup>6</sup> <sup>λ</sup>

λαμ πον τες α στρα πτον τες ηλ λοι ω με νοι <sup>6</sup> <sup>λ</sup> ο

θνει αν αλ λοι ω σιν ευ πρε πε στα την <sup>Δ</sup> <sup>δλ</sup> ι σο

σθε νου ουσαν την α τμη τον ει δο τες <sup>6</sup> λ σο φη ην

τρι φεγ γον ου σι αν δο ξα ζο μεν <sup>6</sup> λ

### Γαβριήλ Κουντιάδου

ᾠδὴ θ', κανὼν α'

Ἦχος  Γα

Γαβριήλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
α' ἔκδοσις 1931-1935  
ἐπανέκδοση 1991 σ.449\*

**Μ** η της φθο ρα ας δι α πει ρα κυ ο φο ρη σα σα <sup>7</sup> η

και παν τε χνη μο νι Λο γω σαρ κα δα νει σα σα <sup>π 9</sup> μη τε ρ α

πει ραν δρε παρ θε νε Θε ο το ο κε <sup>7</sup> η δο χει ον του

α στε κτου χω ρι ον του α πει ρου πλα στου ρ γου σου <sup>Δ 8</sup> η

σε ε με γα λυ υ νο ο μεν <sup>7</sup> η (β')

**Δ** ο ξα σοι ο Θε ος η μων δο ξα σοι <sup>7</sup> η

Επι παφλαζοντος παλαιπυρινου αρματος

οζηλωτης καιπυριπνους χαιρων οχουμενος την

νυν εκλαμψασαν επιπνοιαν εδη ηλου εξυ

φους αποστολοις υφης καταλαμφθεντες την Τρια

δαπαασιν εγνωριισαν

Δοξα σοι ο Θεος ημων δοξα σοι

Νομου των φυυσεων διχαξεενον η

κουετο των μαθητων της μι ας γαρ φωνης απη

χου μενης πνευματος χαρι τι ποι κι λως εν η χου ουν

το λα οι φυλαι και γλωσσαι ταθει α μεγαλει

ει α <sup>Δ</sup> της Τρι α δος γνω ω σιν μου ου ου με ε νοι <sup>Γ</sup> η

ὤδη θ', κανὼν β'

Ἦχος <sup>Δ</sup> Βα

Γαβριήλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
α' ἔκδοσις 1931-1935  
ἐπανέκδοση 1991 σ.450\*

α πο ο στο λοι την χα ριν του Πα ρα κλη

του <sup>π</sup> λα βον τες ε ξε πλητ τον το <sup>6</sup> ε τε ραις γλωσ <sup>λ</sup>

σαις λα λου ουν τες <sup>Δ</sup> κα θως το Πνευ μα ε δι δου <sup>6</sup> <sup>λ</sup>

Χ αι ροις α νασ σα μη τρο πα αρ θε νον κλε ε ος <sup>6</sup> <sup>λ</sup> α

παν γαρ ευ δι νη τον ευ λα λον στο μα <sup>6</sup> ρη τρε ευ ον <sup>λ</sup>

ου σθε νει σε μελ πειν α ξι ι ως <sup>6</sup> ι λιγ γι α δε νου <sup>λ</sup>

ου σ πας σου τον το κον νο ει ν <sup>Δ</sup> ο θεν σε συμ φω νως δο

ξα ζο μεν <sup>6</sup> (β') <sup>λ</sup>

ὁ ξα Πα τρι ι και Υι ω και α γι ω Πνευ μα

τι <sup>6</sup>λ

Α πο ο στο λοι την χα ριν του Πα ρα κλη

του <sup>π</sup>9 λα βον τες ε ξε πλητ τον το <sup>6</sup>λ ε τε ραις γλωσ

σαις λα λου ουν τες <sup>Δ</sup>α κα θως το Πνευ μα ε δι δου <sup>6</sup>λ

Υ δειν ε οι κε την φυ σι ι ζω ον κο ο ρην <sup>6</sup>λ

μο νη γαρ εν δι νη σι κε κρυ φει Λο γον <sup>6</sup>λ νο σου ου

σαν αλ θαι νοντα την βρο των φυ υ σιν <sup>Δ</sup>ος δε ξι οις

κλι σμοι οι σι νυν ι δρυ με ε νος <sup>6</sup>λ Πα τρο ος πε πομ φε

την χα ριν του Πνευ μα τος <sup>6</sup>λ



**Κ** αι νυν και α ει ει και εις τους αι ω νας των αι ω

νων α μην <sup>6</sup>λ

**Α** πο ο στο λοι την χα ριν του Πα ρα κλη

του <sup>π</sup>9 λα βον τες ε ξε πλητ τον το <sup>6</sup>λ ε τε ραις γλωσ

σαις λα λου ουν τες <sup>Δ</sup>α κα θως το Πνευ μα ε δι δου <sup>6</sup>λ

**Ο** σοις ε πνευ σεν η θε ο ορ ρυ τος χα α ρις <sup>6</sup>λ

λαμ πον τες α στρα πτον τες ηλ λοι ω με νοι <sup>6</sup>λ ο θνει ει

αν αλ λοι ω σιν ευ πρε πε στα α την <sup>Δ</sup>α ι σο σθε νου ου

σαν την α τμη τον ει δο ο τες <sup>6</sup>λ σο φη ην τρι φεγγον ου σι

ανδο ξα ζομεν <sup>6</sup>λ

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

ῶδὴ θ', κανὼν α'

Ἦχος Γα

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Πεντηκοστάριον 1983 σ.253#

**Μ**η της φθορας διαπειρακυοφορησασα  
 και παντεχνημονι Λογωσαρκαδανεισασα **Μ**η η  
 τεραπειρανδρε Παρθενε Θεοτοοκεδο  
 χειοντουαστε εκτου χωριοντουαπειρουπλα  
 στουργουσου σεμεγαλυυνομεν (β')

**Δ**οξασοι ο Θεος ημων δοξασοι

**Ε**πιπαφλααζοντος παλαιπυρινουαρματος  
 οζηλωτης καιπυριπνους χαιρωνοχουμενος την

ΝΗ ΜΕΛ ΓΑ  
 νυν εκ λαμ ψα σαν ε πι πνοι αν ε δη η λου εξ  
 ΝΗ ΓΑ ΝΗ  
 υ ψους Α πο στο ο λους υφ ης κα τα λαμ φθεν τες την  
 ΓΑ  
 Τρι α δα πα σιν ε γνω ω ρι ι σαν

Δ ο ξα σοι ο Θε ος η μων δο ξασοι

Ν ο μου των φυ υ σε ων δι χα ξε ε νον η κου  
 ε το των Μα θη των της μι ας γαρ φω νης α πη χου με  
 νης Πνευ ματος χα ρι τι ποι κι λως ε νη χου ουν το λα  
 οι φυ λαι κα γλω ωσ σαι τα θει α με γα λει α της  
 Τρι α δος γνω σιν μου ου ου με νοι

ὤδη θ', κανὼν β'

Ἦχος δὲ Ββ

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Πεντηκοστάριον 1983 σ.255#

Α πο ο στο λοι την χα ριν του Πα ρα κλη

του <sup>π</sup>9 λα βον τες ε ξε πλητ τον το <sup>6</sup>λ ε τε ραις γλωσ

σαις λα λου ουν τες <sup>Δ</sup>λ κα θως το Πνευ μα ε δι δου <sup>6</sup>λ

Χ αι ρις Α νασ σα μη τρο πα αρ θε νον κλε ος <sup>6</sup>λ

α παν γαρ ευ δι νητον ευ λα λον στο ο μα <sup>6</sup>λ ρη τρε

ευ ον ου σθε νει σε μελ πειν α ξι ως <sup>Δ</sup>λ ι λιγ γι

α δε νους <sup>Δ</sup>λ α πας σου τον το κον νο ειν <sup>Δ</sup>λ ο θεν σε συμ

φω ω νως δο ξα ζο μεν <sup>6</sup>λ (β')

Δ ο ξα Πα τρι και Υι ω <sup>Δ</sup>λ και α γι ω Πνευ μα τι <sup>6</sup>λ

Α πο ο στο λοι την χα ριν του Πα ρα κλη

του <sup>π</sup>9 λα βον τες ε ξε πλητ τον το <sup>6</sup>λκ ε τε ραις γλωσ

σαις λα λου ουν τες <sup>Δ</sup>αλκ κα θως το Πνευ μα ε δι δου <sup>6</sup>λκ

**Υ** δειν ε οικε την φυσι ι ζω ον Κο ρην <sup>6</sup>λκ μο νη

γαρ εν δι νησι κε κρυ φει Λο γον <sup>6</sup>λκ νο σου σαν αλ

θαι νον τατην βρο των φυ σιν <sup>Δ</sup>αλκ ος δε ξι οισ κλι σμοι οι

σι νυν ι δρυ με νος Πα τρος <sup>Δ</sup>αλκ πε πον θε την χα ριν του

Πνευ μα τος <sup>6</sup>λκ

**Κ** αι νυν και α ει και εις τους αι ω νας των αι

ων α μην <sup>6</sup>λκ

**Α** πο ο στο λοι την χα ριν του Πα ρα κλη

του <sup>π</sup>9 λα βον τες ε ξε πλητ τον το <sup>6</sup>λκ ε τε ραις γλωσ

σαις λα λου ουν τες <sup>Δ</sup>δλ κα θως το Πνευ μα ε δι δου <sup>6</sup>λκ

**Ο** σοις ε πνευ σεν η θε ο ορ ρυ τος χα ρις <sup>6</sup>λκ

λαμ πον τες α στρα πτον τες ηλ λοι ω με νοι <sup>6</sup>λκ ο

θνει αν αλ λοι ω σιν ευ πρε πε στα την <sup>Δ</sup>δλ ι σο σθε

νου ου σαν την α τμη τον ει δο τες <sup>6</sup>λκ σο φη ην τρι

φεγγον ου σι αν δο ξα ζομεν <sup>6</sup>λκ

### Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

ᾠδὴ θ', κανὼν α'

Ἦχος  Γα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικὸν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.500\*

**Μ** η της φθο ρα ας δι α πει ρα κυ ο φο ρη σα

σα και παν τε χνη μο νι Λο γω σα ρ κα δα νει σα σα

Μη τερ α πει ραν δρε Πα ρ θε νε Θε ο το ο κε δο

χει ον του α στε κτου χω ρι ον του α πει ρου πλα

στου ρ γου σου σε με γα λυ υ νο ο μεν

Δο ο ξα σοι ο Θε ος η μω ων δοξα σοι

Επι πα φλα α ζον τος πα λαι πυ ρι νου αρ μα

τος ο ζη λω της και πυ ρι πνους χαι ρων ο χου με

νος την νυν εκ λαμ ψα σαν ε πι πνοι αν ε δη η

λου εξ υ ψους α πο στο ο λους υφ ης κα τα λαμ

φθεν τες την Τρι α δα πα σιν ε γνω ω ρι ι σαν

Δο ο ξα σοι ο Θε ος η μω ων δοξα σοι

Νο μου των φυ υ σε ων δι χα ξε ε νον η

κου ε το των μα θη των της μι α ας γαρ φω νης α

πη χου με νης Πνευ ματος χα ρι τι ποι κι λως εν η χου

ουν το λα οι φυ λαι και γλωσσαι τα θει α με

γα λει ει α της Τρι α δος γνω σιν μου ου ου με ε

νοι

Ἦχος Βα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.501\*

ᾠδὴ θ', κανὼν β'

Απο ο στο λοι την χα ριν του Πα ρα κλη

του λα βον τες ε ξε πλητ τον το ε τε ραις γλωσ



σαις λα λου ουν τες <sup>Δ</sup> και θως το Πνευμα ε δι δου <sup>6</sup> <sup>λ</sup>

**Χ** αι ρις α νασαμη τρο πα αρθενον κλε ε ος <sup>6</sup> <sup>λ</sup> α παν

γαρ ευ δι νητον ευ λα λον στο μα ρη τρε ευ ον <sup>Δ</sup> ου

σθε νει σε με ελ πειν α ξι ως <sup>Δ</sup> ι λιγ γι α δε νου

ους α πας σου τον το κον νοειν <sup>6</sup> <sup>λ</sup> ο θεν σε συμ φω νως δο ξα

ζομεν <sup>6</sup> <sup>λ</sup> (β')

**Δ** ο ξα Πα τρι ι και Υι ω και α γι ω Πνευμα

τι <sup>6</sup> <sup>λ</sup>

**Α** πο ο στο λοι την χα ριν του Πα ρα κλη

του <sup>π</sup> <sup>9</sup> λα βον τες ε ξε πλητ τον το <sup>6</sup> <sup>λ</sup> ε τε ρις γλωσ

σαις λα λου ουν τες <sup>Δ</sup> και θως το Πνευ μα ε δι δου <sup>6</sup> <sup>λ</sup>

**Υ** δειν ε οι κε την φυ σι ι ζω ον κο ο ρην <sup>6</sup> <sup>λ</sup> μο νη γαρ

εν δι νη σι κε κρυ φει Λο ο γον <sup>6</sup> <sup>λ</sup> νο σου ου σαν αλ

θαι νοντα την βρο τω ων φυ υ σιν <sup>Δ</sup> ος δε ξι οισ κλι σμοι

οι σι νυν ι δρυ με νος Πα τρος <sup>6</sup> <sup>λ</sup> πε πομ φε την χα ριν του

<sup>6</sup> <sup>λ</sup>  
Πνευ μα τος

**Κ** αι νυν και α ει ει και εις τους αι ω νας των αι ω

<sup>6</sup> <sup>λ</sup>  
ων α μην

**Α** πο ο στο λοι την χα ριν του Πα ρα κλη

του <sup>π</sup> <sup>9</sup> λα βον τες ε ξε πλητ τον το <sup>6</sup> <sup>λ</sup> ε τε ραις γλωσ

σαις λα λου ουν τες <sup>Δ</sup>κα θως το Πνευ μα ε δι δου <sup>ε λ</sup>

**Ο** σοις ε πνευ σεν η θε ο ορρυτος χα α ρις <sup>ε λ</sup> λαμ

πον τες α στρα πτον τες ηλ λοι ω με νοι <sup>ε λ</sup> ο θνει ει αν

αλ λοι ω σιν ευ πρε πε στα α την <sup>Δ</sup>ι σο σθε νου ουσαν

την α τμη τον ει δο ο τες <sup>ε λ</sup> σο φη ην τρι φεγ γον ου σι αν

δο ξα ζομεν <sup>ε λ</sup>

## Καταβασίαι θ' φδης

<sup>ἦχος βαρὺς</sup>

**Μ**ὴ τῆς φθορᾶς διαπεύρα κυοφορήσασα, καὶ παντεχνήμονι Λόγῳ σάρκα δανείσασα, Μητέρα ἀπείρανδρε, Παρθένε Θεοτόκε, δοχεῖον τοῦ ἀστέκτου, χωρίον τοῦ ἀπείρου πλαστουργοῦ σου, σὲ μεγαλύνομεν.

<sup>ἦχος δ'</sup>

**Χ**αίροις ἄνασσα, μητροπάρθενον κλέος. Ἄπαν γὰρ εὐδίνητον εὐλαλον στόμα, ῥητρεῦον, οὐ σθένει σε μέλπειν ἀξίως. Ἰλιγγιᾶ δὲ νοῦς ἅπας σου τὸν τόκον νοεῖν ὅθεν σε συμφώνως δοξάζομεν.

**Σύντομος**

**Αργή**

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

Γαβριὴλ Κουντιάδου  
Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Πέτρου Λαμπαδαρίου  
Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

# Εύντομος

## Ιωάννου Πρωτοψάλτου

ψδὴ θ'

Ἦχος Γα

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.429#

**Μ**η της φθορας διαπειρακυοφορησασα  
 και παντεχνημονι Λογωσαρκαδανεισασα μητερ  
 πειρανδρεπαρθενε Θεοτοοκε δοχειοντου  
 αστεκτουχωριοντου απειρουπλαστουργουσουσε  
 μεγαλυνοομεν

ψδὴ θ'

Ἦχος Ββ

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.430#

**Χ**αιροις ανασσαα μητροπαρθενον κλεεος  
 απανγαρευδινητον ευλαλον στομαρητρευον

ου σθε νει σε μελ πειν α ξι ι ως ι λιγ γι α δε νους  
 α πας σου τον το ο κον νο ει ν <sup>Δ</sup>ο θεν σε συμ φω νως δο ξα  
 ζο <sup>χ</sup> με ε ε ε εν <sup>6</sup> λ

Γαβριήλ Κουντιάδου

ᾠδὴ θ'

Ἦχος Γα

Γαβριήλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
 Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
 α' ἔκδοσις 1931-1935  
 ἐπανέκδοση 1991 σ.449\*

**Μ** η της φθο ρα ας δι α πει ρα κυ ο φο ρη σα σα <sup>Γ</sup>η  
 και παν τε χνη μο νι Λο γω σα ρ κα δα νει σα σα <sup>π</sup>η <sup>9</sup> μη τερ α  
 πει ραν δρε παρ θε νε Θε ο το ο κε <sup>Γ</sup>η <sup>η</sup> δο χει ον του  
 α στε κτου χω ρι ον του α πει ρου πλα στου ρ γου σου <sup>Δ</sup>η  
 σε ε με γα λυ υ νο ο μεν <sup>Γ</sup>η

ψδθ θ'

# Ἦχος δὲ Ββ

Γαβριήλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
α' ἔκδοσις 1931-1935  
ἐπανεκδόση 1991 σ.450\*

Χαι ροις α νασ σα μη τρο πα αρ θε νον κλε ε ος α

παν γαρ ευ δι νη τον ευ λα λον στο μα ρη τρε ευ ον

ου σθε νει σε μελ πειν α ξι ι ως ι λιγ γι α δε νου

ους α πας σου τον το κον νο ειν ο θεν σε συμ φω νως δο

ξα ζο μεν

ο θεν σε συμ φω ω νως δο ξα α ζο με ε ε ε εν

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

ψδθ θ'

# Ἦχος Γα

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Πεντηκοστάριον 1983 σ.253#

Μη της φθο ρα ας δι α πει ρα κυ ο φο ρη σα σα

και παν τε χνη μο νι Λο γω σαρ κα δα νει σα σα <sup>π 9</sup> Μη η

τερ α πει ραν δρε Παρ θε νε Θε ο το ο κε <sup>7 η</sup> δο

χει ον του α στε εκτου χω ρι ον του α πει ρου πλα

στουρ γου σου σε με γα λυ υ νο <sup>8 η</sup> μεν

ᾠδὴ θ'

Ἦχος δὲ Ββ

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Πεντηκοστάριον 1983 σ.255#

**Χ**αι ροις Α νασ σα μη τρο πα αρ θε νον κλε ος <sup>6 λ</sup>

α παν γαρ ευ δι νητον ευ λα λον στο ο μα <sup>6 λ</sup> ρη τρε

ευ ον ου σθε νει σε μελ πειν α ξι ως <sup>Δ δ</sup> ι λιγ γι

α δε νους <sup>Δ δ</sup> α πας σου τον το κον νο ειν <sup>Δ δ</sup> ο θεν σε συμ

φω ω νως δο ξα ζο με ε ε ε εν <sup>6 λ</sup>

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

ψδὴ θ'

Ἦχος Γα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.500\*

**Μ** η της φθο ρα ας δι α πει ρα κυ ο φο ρη σα

σα και παν τε χνη μο νι Λο γω σα ρ κα δα νει σα σα

Μη τερ α πει ραν δρε Πα ρ θε νε Θε ο το ο κε δο

χει ον του α στε κτου χω ρι ον του α πει ρου πλα

στου ρ γου σου σε με γα λυ υ νο ο μεν

ψδὴ θ'

Ἦχος Ββ

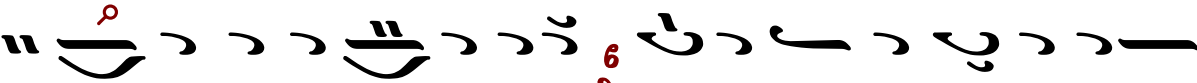
πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.501\*

**Χ** αι ρις α νασαμη τρο πα αρ θε νον κλε ε ος α παν

γα ρ ευ δι νη τον ευ λα λον στο μα ρη τρε ευ ον ου

σθε νει σε με ελ πειν α ξι ως ι λι γ γι α δε νου



“  ο υ ς α π α ς σ ο υ τ ο ν τ ο κ ο ν ν ο ε ι ν <sup>6</sup> λ ο θ ε ν σ ε σ υ μ φ ω ν ω ς δ ο ξ α

 ζ ο μ ε ε ε ε ε ν <sup>6</sup> λ


Ἄγι


Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

ῶδὴ θ'

Ἦχος  Γα


Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἱρμολόγιον 1903 σ.86#

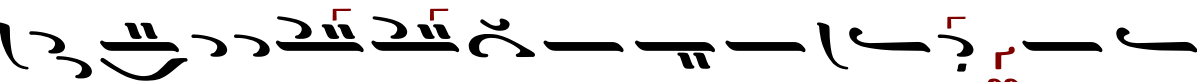
**Μ**  η τ η ς φ θ ο ρ α α ς δ ι α π ε ι ε ι ε ι ε ι ρ α α

 κ υ ο ο φ ο ρ η ς α ς α <sup>η</sup> και π α ν τ ε χ η η μ ο ν ι λ ο ο

 γ ω ς α α ρ κ α δ α α ν ε ι ε ι ε ι ς α α α ς α α <sup>η</sup> Μη τερ

 α π ε ι ρ α α ν δ ρ ε π α α ρ θ ε ν ε ε Θ ε ο ο τ ο ο ο

 κ ε ε <sup>η</sup> δ ο χ ε ι ε ι ε ι ο ν τ ο υ ο υ α ς τ ε ε ε κ τ ο υ

 χ ω ρ ι ο ο ν τ ο υ ο υ α π ε ι ε ι ε ι ρ ο υ ο υ <sup>η</sup> π λ α ς τ ο υ ρ

μου σου σε με γα α λυ υ υ υ νο ο ο με εν η

ψαη θ'

Ἦχος δὲ Ββ

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.71#

Χαι αι ροις Α να ασ σα μη η η τρο ο παρ

θε ε ε ε ε νο ον κλε ε ε ος α παν γα αρ

ε ευ δι ι νη η η το ον ε ε ευ λα α α λο ον στο ο ο

μα ρη τρε ε ευ ον ουου ου σθε νει ει σε ε με ελπειν

α α ξι ι ι ω ως ι λιγ γι α α δε ε

ε νους α α πας σου το ο ον το ο ο ο ο ο κο

ον νο ο ο ει ν ο ο θε εν σε συμ φω ω ω νως δο

ξα α ζο ο με ε ε ε εν

Πέτρου Λαμπαδαρίου. Ἀργές, διασκευασμένοι

ψδλθ'

Ἦχος Γα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.502\*

**Μ**η της φθο ρα ας δι α πει ει ει ει ει

ρα α κυ ο ο φο ρη η σα σα α και παν τε

χνη μο νι Λο ο γω σα α αρ κα δα α νει ει ει ει σα α

α σα α Μη τε ρ α πει ρα αν δρε παρ θε ε νε ε Θε

ε ο το ο ο κε ε δο χει ει ον του α α

στε ε ε ε ε ε κτου χω ρι ον του α

πει ει ρου πλα στου ουρ γου ου ου σου ου σε ε ε με γα

α λυ υ υ υ νο ο ο με εν

ψδλθ'

Ἦχος Ββ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.404\*

Χαι αι ροις α να ασ σα μη η η τρο ο παρ

θε ε ε ε ε νο ον κλε ε ε ος α παν γα αρ

ε ευ δι ι νη η το ον ε ε ευ λα α α λο ον στο ο ο μα ρη

τρε ε ευ ον ου ου ου σθε νει ει σε ε με ελ πειν α

α ξι ι ι ω ως ι λιγ γι α α δε ε ε

νους α α πας σου το ο ον το ο ο ο κο ον νο

ο ο ειν ο ο θε εν σε συμ φω ω ω νως δο ξα α ζο

ο με ε ε ε εν

## Τῆς Πεντηκοστῆς ἰαμβικαί

Από τῆς Τρίτης μετά τὴν Δευτέραν τοῦ ἁγίου Πνεύματος μέχρι καὶ τῆς Παρασκευῆς πρὸ τῶν ἁγίων Πάντων.

### ἦχος δ'

- α **Θ**εῖω καλυφθεὶς ὁ βραδύγλωσσος γνόφω, ἔρρητόρευσε τὸν θεόγραφον νόμον. Ἴλυν γὰρ ἐκτινάξας ὄμματος νόου, ὄρᾳ τὸν ὄντα καὶ μυεῖται Πνεύματος, γνῶσιν, γεραίρων ἐνθέοις τοῖς ἄσμασιν.
- γ **Ἐ**ρρηξε γαστρὸς ἠτεκνωμένης πέδας, ὕβριν τε δυσκάθεκτον εὐτεκνουμένης, μόνη προσευχῇ τῆς προφήτιδος πάλαι, Ἄννης, φερούσης πνεῦμα συντετριμμένον, πρὸς τὸν δυνάστην καὶ Θεὸν τῶν γνώσεων.
- δ **Ἄ**ναξ ἀνάκτων, οἶος ἐξ οἴου μόνος Λόγος προελθὼν, Πατρὸς ἐξ ἀναιτίου, ἰσοσθενές σου Πνεῦμα τοῖς ἀποστόλοις, νημερτές ἐξέπεμψας ὡς εὐεργέτης, Ἄδουσι Δόξα τῷ κράτει σου Κύριε.
- ε **Λ**υτήριον κάθαρσιν ἀμπλακημάτων, πυρίπνοον δέξασθε Πνεύματος δρόσον, ὃ τέκνα φωτόμορφα τῆς Ἐκκλησίας. Νῦν ἐκ Σιῶν γὰρ ἐξελήλυθε νόμος, ἡ γλωσσοπυρσόμορφος Πνεύματος χάρις.
- ς **Ἰ**λασμός ἡμῖν Χριστὲ καὶ σωτηρία, ὁ Δεσπότης ἔλαμψας ἐκ τῆς Παρθένου, ἴν', ὡς προφήτην θηρὸς ἐκ θαλαττίου Στέρνων Ἰωάνν, τῆς φθορᾶς διαρπάσης ὄλον τὸν Ἀδάμ, παγγενῆ πεπτωκότα.
- ζ **Σ**ύμφωνον ἐθρόησεν ὀργάνων μέλος, σέβειν τὸ χρυσότευκτον ἄψυχον βρέτας, ἡ τοῦ Παρακλήτου δὲ φωσφόρος χάρις, σεβασμιάζει τοῦ βοᾶν Τριάς μόνη, ἰσοσθενής, ἀναρχος, εὐλογητὸς εἶ.
- Αἰ**νοῦμεν, εὐλογοῦμεν, καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον.
- η **Λ**ύει τὰ δεσμά, καὶ δροσίζει τὴν φλόγα, ὁ τρισσοφεγγῆς τῆς θεαρχίας τύπος. Ὑμνοῦσι Παῖδες, εὐλογεῖ δὲ τὸν μόνον Σωτῆρα καὶ παντουργόν, ὡς εὐεργέτην, ἡ δημιουργηθεῖσα σύμπασα κτίσις.

### Ἀργαί

Πέτρου Λαμπαδαρίου  
Γαβριὴλ Κουντιάδου  
Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

### Σύντομοι

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Γαβριὴλ Κουντιάδου  
Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

## Σύντομοι

# Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Καταβασαίαι Πεντηκοστῆς  
ᾠδὴ α'

Ἦχος δὲ Βε

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.420#

Θ εἰ ω κα λυ φθει εἰς ο βρα δυ υ γλωσ σος γνο φω <sup>6</sup>λ

ερ ρη το ρευ σε τον θε ο ο γρα φον νο ο μον <sup>6</sup>λ ι

λυν γαρ εκ τι να α ξας ομ μα τος νο ο ου

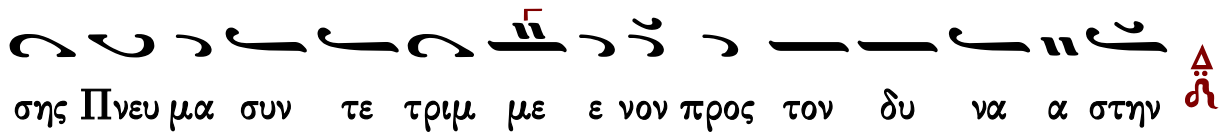
ο ρα τον ο ον τα <sup>Δ</sup>δ και μυ ει ται Πνευ μα τος γνω

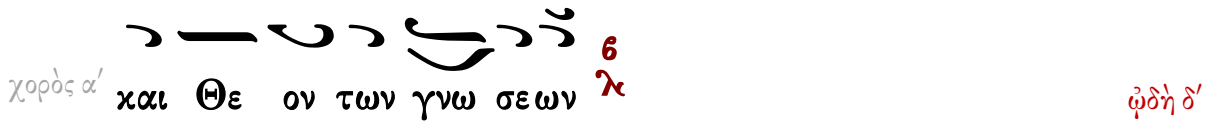
σιν <sup>6</sup>λ γε ραι αι ρων εν θε ε οἰς τοῖς α σμασιν <sup>6</sup>λ ᾠδὴ γ'

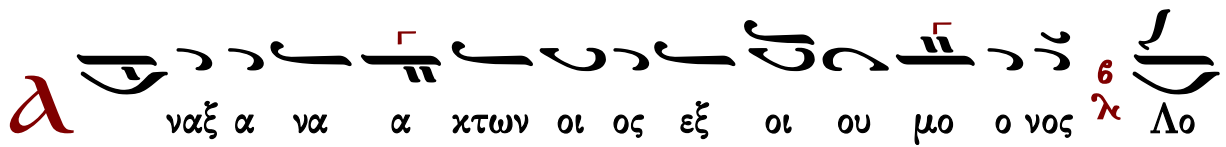
Ε ρ ρη ξε γα στρος η τε κνω με νης πε δας <sup>6</sup>λ υ βριν

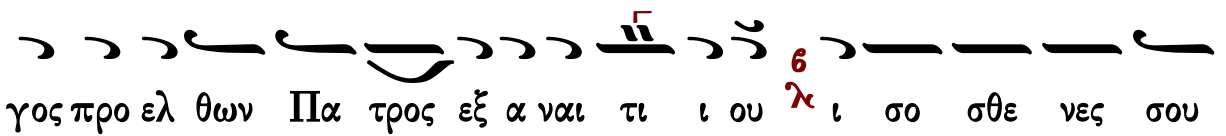
τε δυσ κα θε κτον ευ τε κνου με ε νης <sup>6</sup>λ μο νη προσ ευ

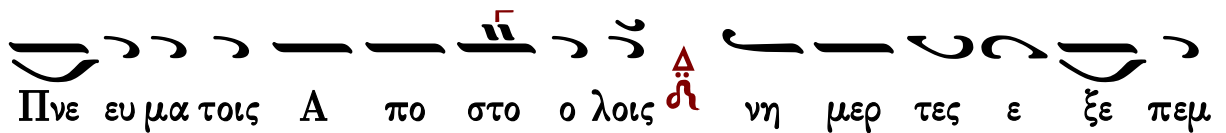
χη της προ φη τι δος πα α λαι <sup>Δ</sup>δ Αν νης φε ρου ου

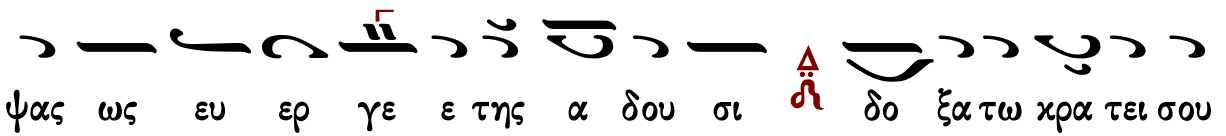
σης Πνευμα συν τε τριμ με ε νον προς τον δυ να α στην 

*χορός α'* και Θε ον των γνω σεων  *ῥοδή δ'*

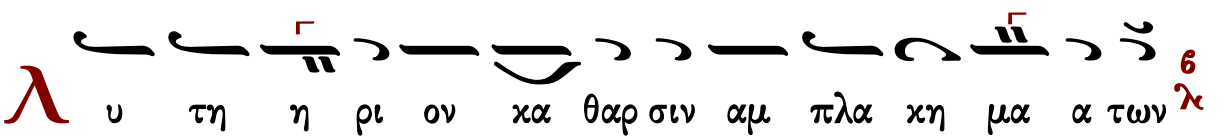
**Α** ναξ α να α κτων οι ος εξ οι ου μο ο νος  **Λο**

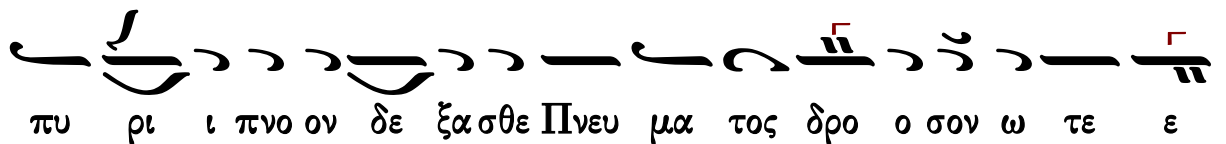
γος προ ελ θων Πα τρος εξ α ναι τι ι ου  ι σο σθε νες σου

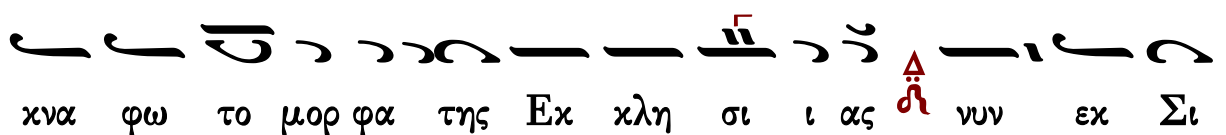
Πνε ευ μα τοις Α πο στο ο λοις  νη μερ τες ε ξε πεμ

φας ως ευ ερ γε ε της α δου σι  δο ξα τω κρα τει σου

Κυ ρι ε  *ῥοδή ε'*

**Λ** υ τη η ρι ον κα θαρσιν αμ πλα κη μα α των 

πυ ρι ι πνο ον δε ξασθε Πνευ μα τος δρο ο σον ω τε ε 

κνα φω το μορ φα της Εκ κλη σι ι ας  νυν εκ Σι

ω ων γαρ ε ξελη η λυ θε νο ο μος η γλωσ σο πυρ

σο μορ φος <sup>Α</sup> Πνευμα τος χα αρις <sup>6</sup> ῶδὴ ζ'

**I** λα σμος η μιν Χρι στε και σωτη ρι ι α ο δε σπο

της ε λαμ ψας εκ της Παρ θε ε νου <sup>6</sup> ιν ως προ φη την

θη ρος εκ θα λατ τι ι ου <sup>Α</sup> στερ νων Ι ω να αντης φθο

ρα ας δι αρ πα α σης <sup>6</sup> ο λον τον Α δαμ παγ γε νη

πε πτω κο ο τα <sup>6</sup> ῶδὴ ζ'

**C** υμ φω νον ε θρο η σεν ορ γα νων με ε λος <sup>6</sup> σε

βειν το χρυ σο τευ κτον α ψυ χον βρε ε τας <sup>6</sup> η του Πα ρα

κλη του δε φω σφο ρος χα αρις σε βα σμι α α ζει <sup>Α</sup> του



βο αν Τρι ασ μο ο νη ι σο σθε νης α ναρχος ευ λο

γη τος ει <sup>6</sup><sub>λ</sub>

ῶδὴ ἡ'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προ σκυ νου ου μεν

τον Κυ ρι ον <sup>6</sup><sub>λ</sub>

Λ υ ει τα δε σμα α και δρο σι ι ζει την φλο ο γα <sup>6</sup><sub>λ</sub>

ο τρισ σο φεγ γης της θε αρ χι ασ τυ υ πος <sup>6</sup><sub>λ</sub> υ μνου

σι παι αι δεσ ευ λο γει ει δε τον μο ο νον Σω τη

η ρα και παν τουρ γον ως ευ ερ γε ε την η δη μι ουρ γη

θει σα συμ πα σα κτι ι σι ι ι ι ις <sup>6</sup><sub>λ</sub>

Γαβριήλ Κουντιάδου

Θ εἰ ω κά λυ φθει εἰς ο βρα δύ υ γλωσ σος γνο ο φω <sup>6</sup> <sub>λ</sub>

ερ ρη το ρευ σε τον θε ο ο γρα φον νο ο μον <sup>6</sup> <sub>λ</sub>

ι λυν γαρ εκ τι να ξας ο ομ μα τος νο ο ο

ου <sup>Δ</sup> <sub>δὲ</sub> ο ρα τον ο οντα και μυ ει ται Πνε ευ μα τος

γνω ω σιν <sup>6</sup> <sub>λ</sub> γε ραι ρων εν θε οῖς τοῖς α σμα σι <sup>6</sup> <sub>λ</sub> ᾠδὴ γ'

Ε ρ ρη ξε γα στρος η τε κνω με νης πε ε δας <sup>6</sup> <sub>λ</sub> υ

βριν τε δυσ κά θε κτον ευ τε κνου με ε ε νης <sup>6</sup> <sub>λ</sub> μο

νη προσ ευ χη της προ φη η τι δος πα λαι <sup>Δ</sup> <sub>δὲ</sub> Αν νης

φε ρου σης πνε ευ μα συν τε τριμ με ε νον <sup>6</sup> <sub>λ</sub> χορὸς α' προς

τον δυ να α στην και Θε ον των γνω σεων <sup>6</sup>λ ῥδὴ δ'

**Α** ναξ α να α κτων οι ος εξ οι ου μο ο νος <sup>6</sup>λ

Λο γος προ ελ θων Πα τρος εξ α ναι τι ι ι

ου <sup>6</sup>λ ι σο σθε νες σου Πνε ευ μα τοις α πο στο λοις <sup>Δ</sup>λ

νη μερ τες εξ ε πεμ ψας ως ευ ερ γε ε της <sup>6</sup>λ α

δου ου σι <sup>π</sup>ρ δο ξα τω κρα α τει σου Κυ ρι ε <sup>6</sup>λ ῥδὴ ε'

**Λ** υ τη η ρι ον κα θαρ σιν αμ πλα κη μα

α α των <sup>6</sup>λ πυ ρι πνο ον δε ξασθε Πνευ μα τος δρο ο

σον <sup>6</sup>λ ω τε ε κνα φω το μορ φα της Εκ κλη σι

ι ι ας <sup>Δ</sup>λ νυν εκ Σι ω ων γαρ εξ ε λη η λυ θε

νο ο μος ἡ γλωσσο πυρσο μορφος Πνευματος χα

α α ρις

ὠδὴς'

λα σμος η μιν Χριστε και σωτη ρι ι α ο

Δε σπο της ε λαμψας εκ της Παρ θε ε ε νου

ιν ως προ φη την θη ρος εκ θα λατ τι ου στερ νων Ι

ω να αν της φθο ρας δι αρ πα α σης ο λον τον Α

δαμ παγ γε νη η πεπτω κο ο τα

ὠδὴ η'

C υμ φω νον ε θρο η σεν ορ γα νων με ε λος σε

βειν το χρυ σο τευ κτον α ψυ χον βρε ε ε τας η

του Πα ρα κλη του δε φωσ φο ρος χα α α ρις σε

βα σμι α α ζει του βο α αν Τρι ας μο ο νη ι σο σθε

νης α ναρχος ευ λο γη το ος ει  
ῶδῆζ'

ι νου μεν ευ λο γου μεν και προ σκυ νου ου μεν

τον Κυ ρι ον

Λ υ ει τα δε σμα α και δρο σι ι ζει την φλο

ο ο γα ο τρισ σο φηγ γης της θε αρ χι ας

τυ υ ποσ υ μνου σι παι αι δεσ ευ λο γει τε τον μο

ο νον Σω τη η ρα και παν τουρ γον ως ευ ερ γε ε την

η δη μι ουρ γη θει σα συ υμ πα σα κτι ι ι σι ι ι

ι ις

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

Καταβασίαι Πεντηκοστής  
ᾠδὴ α'

Ἦχος δὲ Βϩ

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Πεντηκοστάριον 1983 σ.247\*

Βϩ

Θ εἰ ω κα λυ φθεις ο βρα δυ υ γλωσ σος γνο ο ο ο

φω <sup>6</sup>λ<sup>κ</sup> ερ ρη το ρευ σε <sup>Δ</sup>δ<sup>ι</sup> τον θε ο ο γρα φον νο ο ο

μον <sup>6</sup>λ<sup>κ</sup> ι λυν γαρ εκ τι να ξας ο ομ μα τος νο

Δι

ου ο ρα τον ο ον τα <sup>Βϩ</sup> και μν ει ται Πνε ευ μα τος

γνω ω ω σιν <sup>6</sup>λ<sup>κ</sup> γε ραι αι ρων εν θε ε οισ τοις α σμα

σι <sup>6</sup>λ<sup>κ</sup> ᾠδὴ γ'

Βϩ

Ε ρ ρη ξε γα στρος η τε κνω με νης παι αι αι δας <sup>6</sup>λ<sup>κ</sup>

<sup>Δι</sup> <sup>ΜΕΛ</sup> <sup>Βϩ</sup> υ βριν τε δυσ κα θε κτον ευ τε κνου με ε ε ε νης <sup>6</sup>λ<sup>κ</sup>

μο νη προσ ευ χη της προ φη η τιδος πα λαι Αν νης

φε ρου σης πνε ευ μα συν τε τριμ με ε νον προς τον

δυ να α στην και Θε ον των γνω σεων

ναξ α να α κτων οι οι ος εξ οι ου μο ο

ο ο νος Λο γος προ ελ θων Πα τρος εξ α ναι τι ι

ι ι ου ι σο σθε νες σου Πνε ευ μα τοις α πο στο

λοις νη μερ τες εξ ε πεμ ψας ως ευ ερ γε ε ε ε

της α δου ου σι δο ξα τω κρα α τει σου Κυ ρι ε

λυ τη η ρι ον κα θαρ σιν αμ πλα κη μα α α

των <sup>6</sup>λυ <sup>ΔΙ</sup> <sup>ΒΞ</sup> πυ ρι ι πνο ον δε ξασθε Πνευ μα τος δρο ο ο ο

σον <sup>6</sup>λυ ω τε ε κνα φω το μορ φα της Εκ κλη σι ας <sup>ΔΙ</sup> <sup>ΔΙ</sup>

νυν εκ <sup>ΒΞ</sup> Σι ων γαρ εξ ε λη η λυ θε νο ο ο ο

μος <sup>ΜΕΛ</sup> <sup>ΒΞ</sup> η γλωσ σο πυρ σο μορ φος <sup>ΔΙ</sup> Πνε ευ μα τος χα

α α α ρις <sup>6</sup>λυ ῶδής'

<sup>ΒΞ</sup> | λα σμος η μιν Χρι στε και σω τη ρι ι ι ι

α <sup>6</sup>λυ ο Δε σπο της ε λαμ ψας εκ της Παρ θε ε ε

νου <sup>6</sup>λυ ιν ως προ φη η την <sup>ΔΙ</sup> θη ρος εκ θα λατ τι

ου <sup>ΔΙ</sup> <sup>ΒΞ</sup> στερ νων Ι ω ναν της φθο ρα ας δι αρ πα α α

σης <sup>6</sup>λυ ο λον τον Α δαμ <sup>ΔΙ</sup> παγ γε νη η πε πτο κο



ο ο ο τα <sup>6</sup>λ

ᾠδὴ ζ'

ΒϚ

**Κ**υμ φωνον εθροησεν οργων μεεελος <sup>6</sup>λ

σεβειν τοχρυσουκτον αψυχον βρεεε

ΜΕΛ

ΠΑ

ΔΙ

τας <sup>6</sup>λ η του Παρακλητου δε φωσφορος χα

ΒϚ

ρις <sup>Α</sup>δ <sup>6</sup>λ σε βασιμαααζει <sup>Α</sup>δ του βοαν Τριασμονη

ισοσθενη <sup>Α</sup>δ αν αρχος ευλογητο ο ο ος ει <sup>6</sup>λ

ᾠδὴ η'

**Α**ι νου μεν ευλογουμεν και προσκυνουομεν

τον Κυριον <sup>6</sup>λ

ΒϚ

**Λ**υειτα δε σμα και δροσι ιζει την φλο ο ο ο

ΜΕΛ Β8  
 γα ο τρι σο φευ γης της Θε αρ χι ας τυ υ υ  
 πος υ μνου σι Παι αι δεσ ευ λο γει ει δε  
 ΔΙ Β8  
 τον μο νον Σω τη η ρα και παν τουρ γον ως ευ ερ γε  
 ΜΕΛ Β8  
 ε ε ε την η δη μι ουρ γη θει ει σα συ υμ πα  
 σα κτι σι ι ι ις

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Καταβασίαι Πεντηκοστής  
Ψδὴ α'

Ἦχος δ' Β8

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.491\*

Θ ει ω κα λυ φθει εις ο βρα δυ υ γλωσ σος γνο φω  
 ερ ρη το ρευ σε τον θε ο ο γρα φον νο μον  
 λυν γαρ εκ τι να ξας ο ομ μα τος νο ο ου

ο ρα τον ο ον τα και μ ει ται Πνε ευ μα τος γνω

σιν γε ραι αι ρων εν θε ε ο ις το ις α σμα σιν

Ε ρ ρη ξε γα στρος η τε κνω με νης πε δας υ βριν

τε δυσ κα θε κτον ευ τε κνου με ε νης μο νη προσ ευ

χη της προ φη η τι δος πα λαι Α αν νης φε ρου σης

πνε ευ μα συν τε τριμ με ε νον προς τον δυ να α στην

χορὸς α' και Θε ον των γνω σεων

Α να ξ α να α κτων οι οι ος εξ οι ου μο ο νος

Λο γος προ ελ θων Πα τρος εξ α ναι τι ι ου ι σο

σθε νες σου Πνε ευ μα το ις α πο στο ο λο ις νη με ρ τε ς

εξ ε πεμψας ως ευ ερ γε ε της α δου σι δο ξα

τω κρατει σου Κυ ρι ε ωδὴ ε'

Λυ τη η ρι ον κα θαρ σιν αμ πλα κη μα α

των πυ ρι ι πνο ον δε ξα σθε Πνευ μα τος δρο ο

σον ω τε ε κνα φω το μορ φα της Εκ κλη σι ι ας

Α νυν εκ Σι ω ων γαρ εξ ε λη η θυ θε νο ο μοσ η

γλωσ σο πυρ σο μορ φος Πνευ μα τος χα ρις ωδὴ ε'

Ι λα σμος η μιν Χρι στε και σω τη ρι ι α ο Δε

σπο της ε λαμψας εκ της Παρ θε ε νου ιν ως προ φη

την θη ρος εκ θα λατ τι ι ου στερ νων Ι ω να αν

της φθο ρα <sup>ϛ</sup> ας δι αρ πα α σης <sup>ϛ</sup> ο λον τον Α δαμ

παγ γε νη η πεπτω κο ο τα <sup>ϛ</sup> ῶδὴ ζ'

**Σ** υμ φω νον ε θρο η σεν ορ γα νων με ε λος <sup>ϛ</sup> σε

βειν το χρυ σο τευ κτον α ψυ χον βρε ε τας <sup>ϛ</sup> η του Πα

ρα κλη του δε φωσ φο ρος χα α ρις σε βα σμι α

α ζει <sup>Δ</sup> του βο αν Τρι α ας μο νη ι σο σθε νης <sup>Δ</sup> α

ναρχος ευ λο γη τος ει <sup>ϛ</sup> ῶδὴ η'

**Α** ι νου μεν ευ λο γου μεν και προ σκυ νου ου μεν

τον Κυ ρι ον <sup>ϛ</sup>

**Λ** υ ει τα δε σμα ακαιδρο σι ι ζει την φλο ο γα <sup>ϛ</sup> ο

τρι σο φεγ γης της θε αρ χι ας τυ ποσ <sup>6</sup>λ<sup>κ</sup> υ μνου σι

παι αι δεσ ευ λο γει ει δε τον μο ο νον Σω τη

η ρα και παν τουρ γον ως ευ ερ γε ε την <sup>6</sup>λ<sup>κ</sup> <sup>σ</sup>Γ<sup>Γ</sup> η δη μι ουρ

γη θει σα συ υμ πασα κτι σις <sup>6</sup>λ<sup>κ</sup>

### Αργαί

## Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου<sup>19</sup>

Καταβασίαι Πεντηκοστής  
ᾠδὴ α'

Ἦχος <sup>4</sup>δὶ Ββ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.397\*

Θ ει ω κα α λυ φθεις ο ο βρα α δυ γλω ω ω ω

ωσ σο ος γνο ο ο φω <sup>6</sup>λ<sup>κ</sup> ε ρη η το ρε ευ σε τον θε

ε ο ο γρα φο ον νο ο ο μο ον <sup>π</sup>9 <sup>Γ</sup> ι λυ υν

<sup>19</sup> Εἰς τὰς καταβασίας ταύτας ἐπεφέραμεν ἐλαφρὰς τινὰς μεταβολὰς πρὸς ἀποφυγὴν παρατονισμῶν καὶ ἀστόχου χωρισμοῦ λέξεων. Οὐσιαστικωτέρας διορθώσεις πρὸς καλυτέραν ἀπόδοσιν τοῦ νοήματος καὶ σύντημσιν μουσικῶν τινῶν γραμμῶν παραθέτομεν μεθ' ἑκάστην καταβασίαν. [πρωτ.Κων.Παπαγιάννης]

γαρ εκ τι ι ι να α α ξα ας ομ μα το ος νο ο ο

ου ου ο ρα α το ον ο ο οντα και αι μυ ει ει ται

Πνε ευ μα το ος γνω ω ω σι εν γε ραι αι αι

αι αι αι ρων εν θε ε ε ε οις τοις α σμα α σι

εν και μυ ει ται αι Πνε ευ μα ...

ῥδῆ γ'

ε ρ ρη ξε γα α στρος η η η τε εκνω με ε

ε ε νη ης πε ε ε δας υ υ βριν τε δυ υ υσ κα

θε εκτο ον ε ευ τε κνου ου με ε ε νη ης μο ο νη

προσ ε ευ χη τη η ης προ ο φη τι ι ι ι

ι δο ος πα α α λαι <sup>6</sup> <sub>λ</sub> Α αν νης φε ρου ου ου σης

πνε ευ μα συ υ υν τε ε ε τριμ με ε ε ε

ε νον <sup>Α</sup> <sub>δ</sub> προς τον δυ υ να α α στην <sup>\*</sup> <sub>2</sub> χορός α' και αι Θε ο

ον των γνω ω σε ε ω ων <sup>6</sup> <sub>λ</sub>

<sup>\*</sup> <sub>1</sub> της προ φη η τι ι δος πα α α α α λαι αι Α

α αν νης <sup>6</sup> <sub>λ</sub> φε ρου ση ης πνε ευ μα α συν τε ε τρι

ιμ με ...

<sup>\*</sup> <sub>2</sub> χορός α' και Θε ο ον των των γνω σε ε ω ων <sup>6</sup> <sub>λ</sub> ὠδή δ'

<sup>Α</sup> α ναξ α α να α κτων οι οι οι ο ος εξ οι

οι οι οι ου ου μο ο ο νος <sup>6</sup> <sub>λ</sub> Λο ο γος προ ο ε ελ



θων Πα α τρο ος ε εξ α ναι αι τι ι ι ου ου <sup>π 9</sup> ι

σο σθε νες σου ου ου Πνε ε ευ μα τοι οις α πο ο

ο στο ο ο λοι οις <sup>6 λ</sup> νη μερ τε ες εξ ε ε πε εμ ψας

ω ω ως ε ευ ερ γε ε ε ε ε της <sup>Δ δ</sup> α δου ου σι δο

ο ξα τω κρα α α τει σου Κυ ρι ι ε ε <sup>6 λ</sup> ῶδῆ ε'

<sup>λ</sup> υ τη η ρι ο ον κα θα αρ σι ιν αμ πλα α α

α α κη η μα α α των <sup>6 λ</sup> πτυ ρι ι πνο ον δε ε ξα

α σθε ε Πνε ευ μα το ος δρο ο ο σο ον <sup>π 9</sup> ω τε ε

ε κνα φω ω το ο μο ορ φα τη ης Εκ κλη η η σι

ι ι α ας <sup>6 λ</sup> νυν ε εκ Σι ω ωων γαρ εξ ε λη η

η λυ υ θε ε ε νο ο ο ο ο μος η γλωσσο πυρ

σο ο μο ορ φο ος Πνευ μα α α α α το ος χα α α

ρις η γλωσσο πυρ σο ο μο ορ φο ος...

ῶδης'

λα σμος η η μιν Χρι ι στε ε και σω ω ω ω

ω τη η ρι ι ι α ο Δε σπο ο τη η ης ε

λα αμ ψα ας εκ της Πα αρ θε ε ε νου ου ι ι ν ως

προ φη η η την θη η ρο ος ε εκ θα λα ατ τι

ι ι ου ου στε ερ νων Ι ι ω ω ω ναν της φθο

ρα α ας δι ι α α αρ πα α α α α σης ο ο

ο λον τον Α α δαμ παγ γε ε ε νη η πε πτω

ω ω κο ο ο τα α <sup>6</sup> <sup>λ</sup>

\* θη ρος εκ θα λατ τι ου ου στε ε ερ νω ων Ι ω ω ναν

της φθο ρα α α ας δι α αρ πα α α σης ο λο ον τον

Α α δαμ παγ γε νη πε πτω ω ...

ῶδηζ'

Σ υμ φω νον ε ε θρο ο η η σε εν ορ γα α α α νω ων με

ε ε λος σε ε βειν το χρυ υ υ σο ο τε ευ κτο ον α

α ψυ χο ον βρε ε ε τα ας η του Πα ρα κλη του ου

δε ε φω σφο ο ρο ος χα α α ρι ις σε βα α σμι α

α α ζει ει του ου βο α α αν Τρι α α ας

μο ο ο ο ο νη ι ι σο σθε ε νης α ναρχος ευ λο

ο ο ο ο γη η το ο ος ει <sup>6</sup>λ

\* <sup>6</sup>λ σε βα σμι ι α α α ζει του βο ο αν <sup>γ'</sup>η Τρι ... <sup>φδὴ η'</sup>

α <sup>χ</sup> ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου ου ου

ου με εν τον Κυ υ ρι ι ο ον <sup>6</sup>λ

λ υ υ ει ει τα δε ε σμα και αι αι δρο ο σι ζει

ει ει ει ει τη ην φλο ο ο γα <sup>6</sup>λ ο τρις σο φε εγ γης

τη ης θε ε α αρχι α ας τυ υ υ πο ος <sup>π</sup>9 υ μου σι

παι αι αι αι αι δες ευ λο ο ο γει ει ει δε το ο

ον μο ο ο ο ο νον <sup>6</sup>λ σω τη η η ρα και

πα αν του ουρ γο ον ως ε ευ ερ γε ε ε ε ε

την η δη μι ουρ γη θει ει ει σα α συμ πα α α α

α σα α κτι ι ι σι ι ι ι ις

### Γαβριήλ Κουντιάδου

Καταβασία Πεντηκοστής  
Χρόνος διπλούς  
ψόδη α'

Ἦχος δὲ Βα

Γαβριήλ Κουντιάδου ιερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
α' ἔκδοσις 1931-1935  
ἐπανέκδοση 1991 σ.358\*

Θ ει ει ω κα α λυ φθει εις ο ο βρα α δυ γλω

ω ω ω ωσ σο ος γνο ο ο φω ερ ρη η το ρε ευ

σε τον θε ε ο ο γρα φο ον νο ο ο μο ον ι λυ

υν γαρ εκ τι ι ι να α α ξα ας ομ μα α α α α το

ος νο ο ο ου ο ρα α το ον ο ο ον τα και αι

μου ει ει ται Πνευμα το ος γνω ω ω σιν <sup>6</sup> <sup>λ</sup>

γε ραι αι ρων εν θε ε ε οισ τοι οισ α σμα α

σιν <sup>6</sup> <sup>λ</sup>

ῥδῆ γ'

ε ρ ρη η ξε ε γα α στρος η η η τε ε κνω με

ε ε ε ε νη ης πε ε ε δας <sup>6</sup> <sup>λ</sup> υ υ βριν τε

δυ υ υσ κα θε ε κτο ον ε ευ τε κνου ου με ε ε

νη ης <sup>π</sup> <sup>9</sup> μο ο νη προσ ε ευ χη τη η ης προ ο

φη τι ι ι ι ι δο ος πα α α λαι <sup>6</sup> <sup>λ</sup> Αν νης

φε ε ρου ου ου σης πνε ευ μα α συ υ υν τε ε

τρι ι ιμ με ε ε ε ε νον <sup>A</sup> <sup>δ</sup> <sup>ι</sup> χορός α' προς τον δυ να α

στη ην και αι Θε ε ο ον των γνω ω σε ε ω ων <sup>6</sup>λ *ῥδὴ δ'*

**Α** α ναξ α α να α κτων οι οι οι ο ος εξ οι

οι οι οι οι ου ου μο ο ο νος <sup>6</sup>λ Λο ο γος προ

ο ε ελ θων Πα α τρο ος ε εξ α ναι αι τι ι ι ου

<sup>π</sup>9 ου ι σο σθε νες σου ου ου Πνε ε ευ μα ται οις α

πο ο στο ο ο λοι οις <sup>6</sup>λ νη μερ τε ες ε εξ

ε ε πε εμ ψας <sup>Δ</sup>δ ω ω ως ε ευ ε ε ερ γε ε ε

ε ε της <sup>Δ</sup>δ α δου ου σι δο ο ξα τω κρα α α τει ει σου ου

Κυ ρι ι ε ε <sup>6</sup>λ *ῥδὴ ε'*

**Λ** υ τη η ρι ο ον κα α θα αρ σι ιν αμ πλα α α

α α κη η μα α α των <sup>6</sup> λ πυ ρι ι πνο ο ον δε

ε ξα α σθε ε Πνε ευ μα το ος δρο ο ο σο ον <sup>π</sup> ρ ω τε

ε ε κνα φω ω το ο μο ορ φα τη ης εκ κλη

η σι ι ι α ας <sup>6</sup> λ νυν ε εκ Σι ω ω ων γαρ

ε εξ ε ε λη η η λυ υ θε ε ε νο ο ο ο

ο μος <sup>Δ</sup> η γλωσ σο πυρ σο ο μο ορφο ος Πνευ μα α α α

α το ος χα α α ρις <sup>6</sup> λ ῶδής'

λα σμος η η μιν Χρι ι ι στε ε και σω ω ω ω

ω τη η ρι ι ι α <sup>6</sup> λ ο Δε σπο ο τη η ης ε

λα α μ φα ας ε εκ της Πα αρ θε ε ε νου ου <sup>π</sup> ρ ι ι ν ως



προφηηητηνηροσεεκθαλαατι

ιιουου<sup>6λ</sup>στεερνωνΙιωωωναντηης

φθοοραααςδιιαααρπαααασης<sup>Δ</sup>

οοολοντονΑαδαμπαγγεεενηη

πεπτωωκοοοταα<sup>6λ</sup> ϖδηζ'

**C**υυμφωνονεθροοηησεινοργαααα

ανωωνμεεελος<sup>6λ</sup>σεεβειντοχρυυυσο

οτεευκτονααψυχοονβρεεεταας<sup>π9</sup>ητου

Παρακλητουουδεεφωσφοοροοςχαααριις<sup>6λ</sup>

σεβαασιμαααζειτουουβοοααντρι

α α ας μο ο ο ο ο νη ι ι σο σθε ε νης α να

αρχος ευ λο ο ο ο ο γη η το ο ος ει φδη η'

α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου ου

ου ου με εν τον Κυ υ ρι ι ο ον

λ υ υ ει τα α δε ε σμα και αι αι δρο ο

σι ζει ει ει ει ει τη ην φλο ο ο γα ο ο τρισ

σο φε εγ γης τη ης θε ε α αρχι α ας τυ υ υ πο

ος υ μνου σι παι αι αι αι αι δες ευ λο ο γει

ει ει ει δε το ον μο ο ο νο ον Σω τη η

η ρα και πα αν του ουρ γο ον ως ε ε ευ


  
 ε ε ερ γε ε ε ε ε την <sup>Δ</sup>η δη μι ουρ γη θει ει  




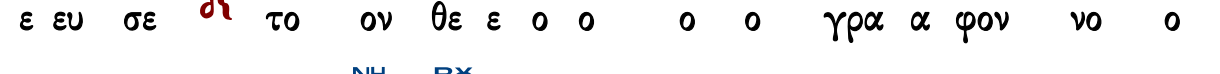


  
 ει σα α συμ πα α α α α σα α κτι ι ι σι ι ι ι ις <sup>β λ</sup>

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

Καταβασία Πεντηκοστής  
ὠδὴ α'

Ἦχος <sup>Δ</sup>η Ββ

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Πεντηκοστάριον 1983 σ.200\*


  
<sup>Ββ</sup> Θ ει ω κα α λυ φθει εις ο ο βρα α δυ γλω ω ω ω  

  
 ωσ σο ος γνο ο ο ο φω <sup>Δ</sup>ε ρη η το ο ο ρε  

  
 ε ευ σε <sup>ΠΑ</sup> <sup>Δ</sup>το ον θε ε ο ο ο ο γρα α φον νο ο  

  
<sup>ΝΗ</sup> <sup>Ββ</sup> ο ο μο ον <sup>π ρ</sup>ι λυ υν γαρ ε εκ τι ι ι να  

  
 α α α α α ξα ας ομ μα α α α α το ος νο ο  

  
 ο ο ου <sup>β λ</sup> ο ρα α το ον ο ο ο ο ο ο ον τα <sup>Δ</sup> και <sup>Ββ</sup>

αι μ υ υ ει ει ται Πνε ευ μα α α α το ος γνω ω ω ω

6 λ ς γε ραι αι αι αι αι αι ρω ω ων εν θε ε ε

MEΛ BΣ ε οισ τοι οισ α α σμα α σι ιν 6 λ ς φδ'η γ'

BΣ E ρ ρη η ξε γα στρος η η τε εκ νω με ε ε ε

6 λ ς ε νη ης παι αι αι αι δας υ υ βρι ι ιν τε δυ υ υσ

ΠΑ κα α θε ε κτο ον ε ευ τε ε κνου με ε ε ε

NH BΣ π ρ νη ης μο ο νη προσ ευ χη της προ φη η τι

6 λ ς ι ι δο ος πα α α α λαι αι Α α αν νης φε ρου

ου ση ης πνε ε ε ε ε ευ μα α συν τε ε τρι ι

Α Δι ιμ με ε ε ε ε νον προς τον δυ να α α α

α α στην <sup>choros α'</sup> και αι Θε ε ο ον τω ων γνω ω σε ε

ω ων <sup>6 λ</sup> ῥδῆ δ'

**Α** α ναξ α α να α α κτων οι οι οι οι ο ος εξ οι

οι οι οι οι ου ου μο ο ο ο νος <sup>6 λ</sup> Λο ο γος

προ ο ο ε ελ θω ων πα α τρο ος ε εξ

α α ναι αι τι ι ι ι ου ου <sup>π 9</sup> ι σο σθε

νε ες σου ου ου Πνε ε ε ευ μα ται οις Α πο ο

ο στο ο ο λοι ος <sup>6 λ</sup> νη μερ τε ες ε ε ξε ε

ε πε ε εμ ψα ας ως ε ευ ε ε ερ γε ε ε ε ε

της <sup>Δ</sup> α δου ου ου σι δο ο ξα α α τω κρα α α α

ΜΕΛ

ΒΞ

τει σου ου Κυ υ ρι ι ε ε

ὠδὴ ε'

ΒΞ

Λ υ τη η ρι ο ον κα α θα α αρ σι εν αμ πλα α α

α α κη η μα α α α των πυ ρι ι πνο ο ον δε

ε ξα α σθε ε πνε ευ μα α το ος δρο ο ο ο σο

ΓΑ ΒΞ

ον ω τε ε κνα φω ω το ο μο ο ρ φα τη ης Εκ

κλη η σι ι ι α ας νυν ε εκ Σι ι ι ω

ΜΕΛ

ΔΙ

ω ω ωων γαρ εξ ε λη η η η η η λυ υ

ΓΑ

ΔΙ

θε ε ε νο ο ο ο ο μος η γλωσ σο πυ υρ σο ο

ΒΞ

ο μο ο ρ φος Πνε ευ μα α α α α το ος χα α α α

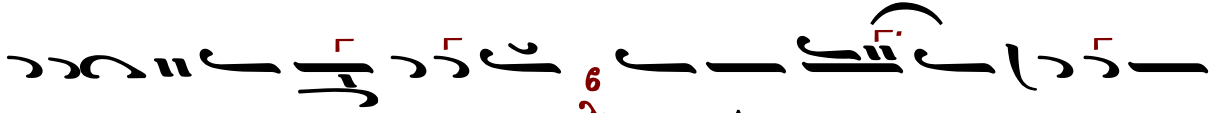
ρις

ὠδὴ ε'

ΒΞ



λα σμος η η μιν Χρι ι στε ε και σω ω ω ω



ω τη η ρι ι ι ι α ο Δε σπο ο τη η ης

ΠΑ



ε ε λα αμφα ας ε εκ τη ης Παρ θε ε ε ε

ΝΗ

ΜΕΛ

ΒΞ



νου ου ι ιν ως προ φη η η την θη η ρο ος ε



ε εκ θα λα α ατ τι ι ι ου ου στε ερ νω ω ω ν

ΜΕΛ



Ι ι ω ω ω ναν της φθο ρα α α α α ας

ΜΕΛ

ΒΞ

ΜΕΛ



δι ι α α αρ πα α α α α σης ο ο ο λο ο ν

ΒΞ



τον Α δαμ πα α αγ γε ε νη η η πε ε ε ε



ε πτω ω χο ο ο ο τα

ῥδῆζ'



Σ υμ φω νον ε ε θρο ο η η σε εν ορ γα α α

α α ν ω ω ν μ ε ε ε ε ε λ ο ς <sup>6</sup> λ σε ε β ει ει ει ν τ ο

<sup>ΠΑ</sup> χ ρ υ υ σ ο ο τ ε ε υ κ τ ο ο ν α α ψ υ υ χ ο ν β ρ ε

<sup>ΒΞ</sup> ε ε τ α α ς η του Πα ρ α κ λ η η του ου δε ε φω

σ φ ο ο ο ο ο ρ ο ο ς χ α α α ρ ι ς <sup>6</sup> λ σε β α α σ μι

<sup>ΜΕΛ</sup> ι α α α α α α ζ ει του ου βο α α αν Τ ρ ι

<sup>ΒΞ</sup> α α α ς μ ο ο ο ο ο ν η ι ι σ ο σ θε ν η ς <sup>Δ</sup> α α ν α

α αρ χ ο ς ο ς ε υ λ ο ο ο ο ο γ η η τ ο ο ο ς ει ει <sup>6</sup> λ

ῶδὴ ἡ'

<sup>ΜΕΛ</sup> <sup>ΒΞ</sup> α ι ν ο υ μ ε ν ε υ λ ο γ ο υ μ ε ν π ρ ο σ κ υ ν ο υ ο υ ο υ μ ε

εν τ ο ο ν Κυ υ ρ ι ι ο ο ν <sup>6</sup> λ



Bx  
λ υ υ ει ει ει τα δε σμα και αι αι δρο ο σι ζει  
MEΛ Bx  
ει ει ει ει τη ην φλο ο ο ο γα 6 λ ο τρισ ο φεγ γης  
ΠΑ  
τη ης θε ε α αρ χι ι α ας τυ υ υ υ πο ος π ρ  
MEΛ Bx  
υ μνου σι παι αι αι αι αι δες ε ε ευ λο ο γει  
ει ει δε το ο ον μο ο ο ο νο ον 6 λ Σω  
ΔΙ MEΛ ΔΙ  
τη η η η η ρα και πα αν τουρ γο ο ον  
Bx  
ως ε ευ ε ε ερ γε ε ε ε ε την Δ λ η δη μι ουρ  
γη θει ει ει ει ει σα α συμ πα α α α α σα α κτι ι  
6 λ  
ι σι ι ι ι ις

φδὴ θ' τῆς ἑορτῆς

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

κανὼν α', ᾠδὴ θ'

ἤχος βαρὺς

«**Μ**ὴ τῆς φθορᾶς διαπείρα κυφορήσασα, καὶ παντεχνήμονι Λόγω σάρκα δανείσασα, μητέρα ἀπειρανδρε, Παρθένε Θεοτόκε, δοχεῖον τοῦ ἀστέκτου, χωρίον τοῦ ἀπείρου πλαστοουργοῦ σου, σὲ μεγαλύνομεν». (β')

Δόξα σοι ὁ Θεὸς ἡμῶν, δόξα σοι.

**Ἐ**πιπαφλάζοντος πάλαι πυρίνου ἄρματος, ὁ ζηλωτῆς καὶ πυρίπνους χαίρων ὀχούμενος, τὴν νῦν ἐκλάμψασαν ἐπίπνοιαν ἐδήλου, ἐξ ὕψους ἀποστόλοις, ὕφ' ἧς καταλαμφθέντες, τὴν Τριάδα πᾶσιν ἐγνώρισαν.

Δόξα σοι ὁ Θεὸς ἡμῶν, δόξα σοι.

**Ν**όμου τῶν φύσεων δίχα ξένον ἠκούετο· τῶν μαθητῶν τῆς μιᾶς γὰρ φωνῆς ἀπηχομένης, Πνεύματος χάριτι, ποικίλως, ἐνηχοῦντο, λαοί, φυλαὶ καὶ γλῶσσαι, τὰ θεῖα μεγαλεῖα, τῆς Τριάδος γινῶσιν μουύμενοι.

κανὼν β', ᾠδὴ θ'

ἤχος δ'

**Ἀ**πόστολοι, τὴν χάριν τοῦ Παρακλήτου, λαβόντες ἐξεπλήττοντο, ἐτέραις γλῶσσαις λαλοῦντες, καθὼς τὸ Πνεῦμα ἐδίδου.

«**Χ**αίροις ἄνασσα, μητροπάρθενον κλέος. Ἄπαν γὰρ εὐδίνητον εὐλαλον στόμα, ῥητρεῦον, οὐ σθένει σε μέλπειν ἀξίως. Ἰλιγγιᾶ δὲ νοῦς ἅπας σου τὸν τόκον νοεῖν ὅθεν σε συμφώνως δοξάζομεν». (β')

Δόξα Πατρὶ καὶ Υἱῷ καὶ ἀγίῳ Πνεύματι.

**Ἀ**πόστολοι, τὴν χάριν τοῦ Παρακλήτου, λαβόντες ἐξεπλήττοντο, ἐτέραις γλῶσσαις λαλοῦντες, καθὼς τὸ Πνεῦμα ἐδίδου.

**Ἦ**δειν ἔοικε τὴν φυσίζων κόρη. Μόνη γὰρ ἐν δίνησι κεκρύφει Λόγον νοσοῦσαν ἀλθαίνοντα τὴν βροτῶν φύσιν. Ὅς δεξιῶς κλισμοῖσι νῦν ἰδρυμένος Πατρός, πέπομφε τὴν χάριν τοῦ Πνεύματος.

**Κ**αὶ νῦν καὶ αἰεὶ καὶ εἰς τοὺς αἰῶνας τῶν αἰώνων. Ἀμήν.

**Ἀ**πόστολοι, τὴν χάριν τοῦ Παρακλήτου, λαβόντες ἐξεπλήττοντο, ἐτέραις γλῶσσαις λαλοῦντες, καθὼς τὸ Πνεῦμα ἐδίδου.

**Ὅ**σοις ἐπνευσεν ἡ θεόρρυτος χάρις, λάμποντες, ἀστράπτοντες, ἡλλοιωμένοι, ὀθνεῖαν ἀλλοίωσιν εὐπρεπεστάτην ἰσοσθενοῦσαν τὴν ἀτμητον εἰδότες, σοφὴν τρίφεγγον οὐσίαν δοξάζομεν.

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

Γαβριὴλ Κουντιάδου  
Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

**Μ**η της φθορας διαπειρακυοφορησασα  
 και παντεχνημονι Λογωσαρκαδανεισασα  
 πειρανδρεπαρθενε Θεο το ο κε  
 αστεκτουχωριον του απειρουπλαστουργου σου σε  
 μεγαλυυνοομεν

**Δ**οξα σοι ο Θεος ημων δοξα σοι

Πεντηκοστάριον, Χρ. Θεοδοσόπουλου 1983 σ.254#

**Ε**πιπαφλααζοντος παλαιπυρινουαρμα  
 τοζηλωτης καιπυριπνους χαιρων οχουμενος  
 την νυν εκλαμψασαν επιπνοιαν εδηηλου

εξ υ ψους Α πο στο ο λους υφ ης κα τα λαμ

φθεν τες την Τρι α δα πα σιν ε γνω ω ρι ι σαν

Δ ο ξα σοι ο Θε ος η μων δο ξα σοι

Ιωάννου Πρωτοψάλτου Ειρμολόγιον 1903 σ.430#

Ν ο μου των φυ υ σε ων δι χα ξε ε νον η

κου ε το των μα θη των της μι ας γαρ φω νης α πη χου

με νης Πνευματος χα ρι τι ποι κι λως ε νη χου ουν το λα

οι φυ λαι και γλωσσαι τα θει α μεγα λει α της Τρι

α δος γνω σιν μου ου ου με ε νοι

ῥδῆ θ', κανών β'

Ἦχος Βϛ

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Ειρμολόγιον 1903 σ.430#

Α πο στο λοι την χα ριν του Πα ρα κλη

του <sup>π</sup>λα βον τες ε ξε πλητ τον το <sup>6</sup>ε τε ραις γλωσ

σαις λα λου ουν τες <sup>Δ</sup>κα θως το Πνευ μα ε δι δου <sup>6</sup>

**Χ**αι ρις α νασσα α μητροπα αρ θε νον κλε ε ος <sup>6</sup>

α παν γαρ ευ δι νη τον ευ λα λον στο μα ρη τρε ευ ον

ου σθε νει σε μελ πειν α ξι ι ως ι λιγ γι α δε νους

α πας σου τον το ο κον νοειν <sup>Δ</sup>ο θεν σε συμ φω νως δο ξα ζο

<sup>6</sup>μεν <sup>λ</sup>(β')

**Δ**ο ξα Πα τρι και Υι ω <sup>Δ</sup>και α γι ω Πνευ μα

<sup>6</sup>τι <sup>λ</sup>

**Α**πο ο στο λοι την χα ριν του Πα ρα κλη

του <sup>π</sup>λα βον τες ε ξε πλητ τον το <sup>ε</sup> τε ραις γλωσ

σαις λα λου ουν τες <sup>α</sup>κα θως το Πνευ μα ε δι δου <sup>ε</sup>

**Υ** δειν ε οι κε ε την φυσι ι ζω ον Κο ο ρην

μο νηγαρ εν δι νησι κε κρυ φει Λο ο γον <sup>ε</sup> νο σου ου σαν

αλ θαι νοντατην βρο των φυ υ σιν <sup>α</sup>ο δε ξι οισ κλι σμοι

σι νυν ι δρυ με ε νος <sup>ε</sup> Πα τρος πε πομ φετην χα α ριν

του Πνευ ματος <sup>ε</sup>

**Κ** αι νυν και α ει και εις τους αι ω νας των

αι ω νων Α μην <sup>ε</sup>

**Α** πο ο στο λοι την χα ριν του Πα ρα κλη

του <sup>π</sup>λα βον τες ε ξε πλητ τον το <sup>6</sup>ε τε ραις γλωσ

σαις λα λου ουν τες <sup>Δ</sup>κα θως το Πνευ μα ε δι δου <sup>6</sup>

Πεντηκοστάριον, Χρ. Θεοδοσόπουλου 1983 σ.256#

**Ο** σοις ε πνευ σεν η θε ο ρυ ρος χα ρις <sup>6</sup>

λαμ πον τες α στρα πτον τες ηλ λοι ω με νοι <sup>6</sup>ο

θνει αν αλ λοι ω σιν ευ πρε πε στα την <sup>Δ</sup>ι σο

σθε νου ου σαν την α τμη τον ει δο τες <sup>6</sup>σο φη ην

τρι φεγ γον ου σι αν δο ξα ζο μεν <sup>6</sup>

### Γαβριήλ Κουντιάδου

ῥοδὴ θ', κανὼν α'

Ἦχος  Γα

Γαβριήλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
α' ἔκδοσις 1931-1935  
ἐπανέκδοση 1991 σ.449\*

**Μ** η της φθο ρα ας δι α πει ρα κυ ο φο ρη σα σα <sup>Γ</sup>

και παν τε χνη μο νι Λο γω σαρ κα δα νει σα σα <sup>π</sup>μη <sup>9</sup>τερ α

πει ραν δρε παρ θε νε Θε ο το ο κε <sup>ρ</sup>δο χει ον του

α στε κτου χω ρι ον του α πει ρου πλα στου ρ γου σου <sup>Δ</sup>

σε ε με γα λυ υ νο ο μεν <sup>ρ</sup> (β')

**Δ** ο ξα σοι ο Θε ος η μων δο ξα σοι <sup>ρ</sup>

**Ε** πι πα φλα ζον τος πα λαι πυ ρι νου αρ μα τος <sup>ρ</sup>

ο ζη λω της και πυ ρι πνους χαι ρων ο χου μενος <sup>π</sup>την <sup>9</sup>

νυν εκ λαμ φα σαν ε πι πνοι αν ε δη η λου <sup>ρ</sup> εξ υ <sup>ρ</sup>

φους α πο στο ο λοις υφ ης κατα λαμ φθεν τες <sup>Δ</sup>την Τρι α <sup>Δ</sup>

δα πα α σιν ε γνω ω ρι ι σαν <sup>ρ</sup>



Δ ο ξά σοι ο Θε ος η μων δο ξά σοι <sup>Γ</sup>η

Ν ο μου των φυ υ σε ων δι χα ξε ε νον η

κου ε το <sup>Γ</sup>η των μα θη των της μι α ας γαρ φω νης α πη

χου με νης <sup>Δ</sup>η πνευ μα τος χα ρι τι ποι κι λως εν η χου ουν

το <sup>Γ</sup>η λα οι φυ λαι και γλω σσαι τα θει α με γα λει

ει α <sup>Δ</sup>η της Τρι α δος γνω ω σιν μου ου ου με ε νοι <sup>Γ</sup>η

ὠδὴ θ', κανὼν β'

Ἦχος <sup>Δ</sup>η Β8

Γαβριὴλ Κουντιᾶδου ἱερομονάχου  
Μουσικὸν Πεντηκοστάριον  
ἀ' ἔκδοσις 1931-1935  
ἐπανέκδοση 1991 σ.450\*

Α πο ο στο λοι την χα ριν του Πα ρα κλη

του <sup>π</sup>η λα βον τες ε ξε πλητ τον το <sup>6</sup>η ε τε ραις γλωσ

σαις λα λου ουν τες <sup>Δ</sup>η κα θως το Πνευ μα ε δι δου <sup>6</sup>η

Χαι ροις α νασ σα μη τρο πα αρ θε νον κλε ε ος α

παν γαρ ευ δι νη τον ευ λα λον στο μα ρη τρε ευ ον

ου σθε νει σε μελ πειν α ξι ι ως ι λιγ γι α δε νου

ους α πας σου τον το κον νο ειν ο θεν σε συμ φω νως δο

ξα ζομεν (β')

Δο ξα Πα τρι ι και Υι ω και α γι ω Πνευ μα

τι

α πο ο στο λοι την χα ριν του Πα ρα κλη

του λα βον τες ε ξε πλητ τον το ε τε ραις γλωσ

σαις λα λου ουν τες κα θως το Πνευ μα ε δι δου

**Υ** δειν ε οι κε την φυσι ι ζω ον κο ο ρην <sup>6</sup><sub>λ</sub>

μο νη γαρ εν δι νησι κε κρυ φει Λο γον <sup>6</sup><sub>λ</sub> νο σου ου

σαν αλ θαι νοντα την βρο των φυ υ σιν <sup>Δ</sup><sub>α</sub> ος δε ξι οις

κλι σμοι οι σι νυν ι δρυ με ε νος <sup>6</sup><sub>λ</sub> Πα τρο ος πε πομ φε

την χα ριν του Πνευ μα τος <sup>6</sup><sub>λ</sub>

**Κ** αι νυν και α ει ει και εις τους αι ω νας των αι ω

ων α μην <sup>6</sup><sub>λ</sub>

**Α** πο ο στο λοι την χα ριν του Πα ρα κλη

του <sup>π</sup><sub>9</sub> λα βον τες ε ξε πλητ τον το <sup>6</sup><sub>λ</sub> ε τε ραις γλωσ

σαις λα λου ουν τες <sup>Δ</sup><sub>α</sub> κα θως το Πνευ μα ε δι δου <sup>6</sup><sub>λ</sub>

Ο σοις ε πνευ σεν η θε ο ορ ρυ τος χα α ρις <sup>ε</sup>  
 λαμ πον τες α στρα πτον τες ηλ λοι ω με νοι <sup>ε</sup> ο θνει ει  
 αν αλ λοι ω σιν ευ πρε πε στα α την <sup>ε</sup> ι σο σθε νου ου  
 σαν την α τμη τον ει δο ο τες <sup>ε</sup> σο φη ην τρι φε γ γον ου σι  
 ανδο ξα ζο μεν <sup>ε</sup>

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

ὠδὴ θ', κανὼν α'

Ἦχος Γα

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Πεντηκοστάριον 1983 σ.253#

<sup>ΓΑ</sup>  
 Μ η της φθο ρα ας δι α πει ρα κυ ο φο ρη σα σα <sup>ε</sup>  
 και παν τε χνη μο νι Λο γω σαρ κα δα νει σα σα <sup>π</sup> Μη η <sup>ΝΗ</sup>  
 τερ α πει ραν δρε Παρ θε νε Θε ο το ο κε <sup>ε</sup> δο <sup>ΠΑ</sup>

χει ον του α στε εκτου χω ρι ον του α πει ρου πλα

στουρ γου σου σε με γα λυ υ νο μεν (β')

Δ ο ξα σοι ο Θε ος η μων δο ξασοι

ε πι πα φλα α ζον τος πα λαι πυ ρι νου αρμα τος

ο ζη λω της και πυ ρι πνους χαι ρων ο χου μενος την

νυν εκ λαμ ψα σαν ε πι πνοι αν ε δη η λου εξ

υ ψους Α πο στο ο λοις υφ ης κα τα λαμ φθεν τες την

Τρι α δα πα σιν ε γνω ω ρι ι σαν

Δ ο ξα σοι ο Θε ος η μων δο ξασοι

Ν ο μου των φυ υ σε ων δι χα ξε ε νον η κου

ε το των Μαθητων της μι ας γαρ φωνης απηχου με

νης Πνευματος χαρι τι ποι κι λως ε νη χου ουν το λα

οι φυλαι κα γλωσσαι ταθει αμεγαλει α της

Τριαδος γνωσιν μου ου ου με νοι

ῥῶδη θ', κανὼν β'

Ἦχος δ' Ββ

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Πεντηκοστάριον 1983 σ.255#

Αποστολοι την χαριν του Παρακλη

του λαβοντες ε ξε πλητ τον το ε τε ραις γλωσ

σαις λα λου ουν τες κα θως το Πνευμα ε δι δου

Χαιροις Α νασ σα μη τρο πα αρ θε νον κλε ος

α παν γαρ ευ δι νη τον ευ λα λον στο ο μα ρη τρε

Εὐ ον ου σθε νει σε μελ πειν α ξι ως **Δ** ι λιγ γι

α δε νους **Δ** α πας σου τον το κον νο ειν **Δ** ο θεν σε συμ

φω ω νως δο ξα ζομεν **6** **λ** (β')

**Δ** ο ξα Πα τρι και Υι ω **Δ** και α γι ω Πνευ μα τι **6** **λ**

**Α** πο ο στο λοι την χα ριν του Πα ρα κλη

του **π** **9** λα βον τες ε ξε πλητ τον το **6** **λ** ε τε ραις γλωσ

σαις λα λου ουν τες **Δ** κα θως το Πνευ μα ε δι δου **6** **λ**

**Υ** δειν ε οι κε την φυ σι ι ζω ον Κο ρην **6** **λ** μο νη

γαρ εν δι νη σι κε κρυ φει Λο γον **6** **λ** νο σου σαν αλ

θαι νον τατην βρο των φυ σιν **Δ** ος δε ξι οισ κλι σμοι οι

σι νυν ι ὄρυ με νος Πα τρος <sup>Δ</sup> <sub>α</sub> <sup>6</sup> <sub>λ</sub> πε πον θε την χα ριν του

<sup>6</sup> <sub>λ</sub> Πνευ μα τος

**Κ** αι νυν και α ει και εις τους αι ω νας των αι

<sup>6</sup> <sub>λ</sub> ω νων α μην

**Α** πο ο στο λοι την χα ριν του Πα ρα κλη

του <sup>π</sup> <sub>9</sub> λα βον τες ε ξε πλητ τον το <sup>6</sup> <sub>λ</sub> ε τε ραις γλωσ

σαις λα λου ουν τες <sup>Δ</sup> <sub>α</sub> <sup>6</sup> <sub>λ</sub> κα θως το Πνευ μα ε δι δου <sup>6</sup> <sub>λ</sub>

**Ο** σοις ε πνευ σεν η θε ο ορ ρυ τος χα ρις <sup>6</sup> <sub>λ</sub>

λαμ πον τες α στρα πτον τες ηλ λοι ω με νοι <sup>6</sup> <sub>λ</sub> ο

θνει αν αλ λοι ω σιν ευ πρε πε στα την <sup>Δ</sup> <sub>α</sub> <sup>6</sup> <sub>λ</sub> ι σο σθε



μου ουσαν την α τμη τον ει δο τες σο φη ην τρι

φεγγονου σι αν δο ξα ζομεν

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

ψδὴ θ', κανών α'

Ἦχος Γα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.500\*

Μη της φθο ρα ας δι α πει ρα κυ ο φο ρη σα

σα και παν τε χνη μο νι Λο γω σα ρ κα δα νει σα σα

Μη τερ α πει ραν δρε Παρ θε νε Θε ο το ο κε δο

χει ον του α στε κτου χω ρι ον του α πει ρου πλα

στου ργου σου σε με γα λυ υ νο ο μεν

Δο ο ξα σοι ο Θε ος η μω ων δοξα σοι

**Ε** πι πα φλα α ζον τος πα λαι πυ ρι νου αρ μα

τος **η** ο ζη λω της και πυ ρι πνους χαι ρων ο χου με

νος **π ρ** την νυν εκ λαμ ψα σαν ε πι πνοι αν ε δη η

λου **η** εξ υ ψους α πο στο ο λους υφ ης και τα λαμ

φθεν τες **Α** την Τρι α δα πα σιν ε γνω ω ρι ι σαν **η**

**Δ** ο ο ξα σοι ο Θε ος η μω ων δοξα σοι **η**

**Ν** ο μου των φυ υ σε ων δι χα ξε ε νον η

κου ε το **η** των μα θη των της μι α ας γαρ φω νης α

πη χου με νης Πνευ ματος χα ρι τι **Α** ποι κι λως εν η χου

ουν το **η** λα οι φυ λαι και γλωσσαι τα θει α με

γα λει ει α της Τρι α δος γνω σιν μου ου ου με ε

νοι

Ἦχος δὲ Ββ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκροστάριον  
2005 σ.501\*

ῥοδὴ θ', κανὼν β'

απο ο στο λοι την χα ριν του Πα ρα κλη

του λα βον τες ε ξε πλητ τον το ε τε ραις γλωσ

σαις λα λου ουν τες κα θως το Πνευ μα ε δι δου

Χαι ρις α νασαμη τρο πα αρθε νον κλε ε ος α παν

γαρ ευ δι νη τον ευ λα λον στο μα ρη τρε ευ ον ου

σθε νει σε με ελ πειν α ξι ως ι λιγ γι α δε νου

ους α πας σου τον το κον νο ει ο θεν σε συμ φω νως δο ξα

ζομεν <sup>6</sup>λ (β')

Δοξα Πατρι και Υιω και αγιω Πνευμα

τι <sup>6</sup>λ

Αποστολοι την χαριν του Παρακλη

του <sup>π</sup>9 λαβοντες ε ξεπληττον το <sup>6</sup>λ ετεραις γλωσ

σαις λαλουουντες <sup>Δ</sup>α καθως το Πνευμα ε διδου <sup>6</sup>λ

Υδειν ε οικετην φυσι ζωον κοορην <sup>6</sup>λ μονηγαρ

εν δινησι κεκρυφει Λογον <sup>6</sup>λ νοσου ουσαν αλ

θαινοντα τηνβρωτων φυυσιν <sup>Δ</sup>ος δεξι οισ κλισμοι

οισιν υδρυμενος Πατρος <sup>6</sup>λ πεπομφε την χαριν του

Πνευματος

Και νυν και α ει ει και εις τους αι ω νας των αι ω

νων α μην

Απο ο στο λοι την χα ριν του Πα ρα κλη

του λα βον τες ε ξε πλητ τον το ε τε ραις γλωσ

σαις λα λου ουν τες κα θως το Πνευ μα ε δι δου

Ο σοις ε πνευ σεν η θε ο ορρυτος χα α ρις λαμ

πον τες α στρα πτον τες ηλ λοι ω με νοι ο θνει ει αν

αλ λοι ω σιν ευ πρε πε στα α την ι σο σθε νου ουσαν

την α τμη τον ει δο ο τες σο φη ην τρι φεγ γον ου σι αν

δο ξα ζομεν <sup>6</sup>λ

## Καταβασία θ' φδῆς

ἦχος δ'

Χαίροις ἀνασσα, μητροπάρθενον κλέος· ἅπαν γὰρ εὐδίνητον εὐλαλον στόμα, ῥητρεῦον, οὐ σθένει σε μέλπειν ἀξίως, ἰλιγγιᾷ δὲ νοῦς ἅπας σου τὸν τόκον νοεῖν· ὅθεν σε συμφώνως δοξάζομεν.

### Σύντομος

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Γαβριὴλ Κουντιάδου  
Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

### Ἀργή

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Γαβριὴλ Κουντιάδου  
Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Πέτρου Λαμπαδαρίου

## Σύντομος

### Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Καταβασίαι Πεντηκοστῆς  
ψδῆ θ'

ἦχος δ' <sup>6</sup>λ Βα

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.430#

Χαι ροις α νασσα α μητροπα αρ θε νον κλε ε ος <sup>6</sup>λ  
α παν γαρ ευ δι νητον ευ λα λον στο μα ρη τρε ευ ον  
ου σθε νει σε μελ πειν α ξι ι ως ι λιγγι α δε νους

α πας σου τον το ο κον νο ει ν **Δ** ο θεν σε συμ φω νως δο ξα

ζο **Χ** με ε ε ε εν **6** λ

### Γαβριήλ Κουντιάδου

Καταβασίαι Πεντηκοστής  
ψδθ θ'

Ἦχος **Δ** Ββ

Γαβριήλ Κουντιάδου ιερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
α' Έκδοσις 1931-1935  
επανάκδοση 1991 σ.450\*

**Χ** αι ροις α νας σα μη τρο πα αρ θε νον κλε ε ος **6** λ α

παν γαρ ευ δι νη τον ευ λα λον στο μα **6** λ ρη τρε ευ ον

ου σθε νει σε μελ πειν α ξι ι ως **6** λ ι λιγ γι α δε νου

ους α πας σου τον το κον νο ει ν **Δ** ο θεν σε συμ φω

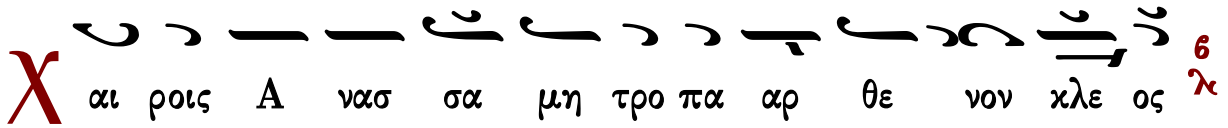
ω νως δο ξα α ζο με ε ε ε εν **6** λ

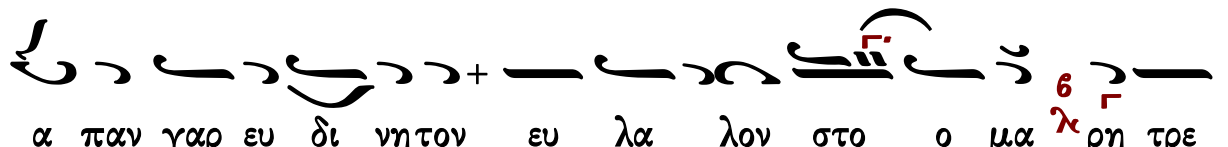
### Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

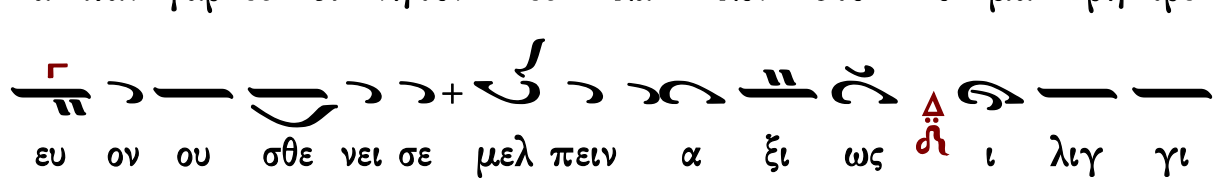
Καταβασίαι Πεντηκοστής  
ψδθ θ'

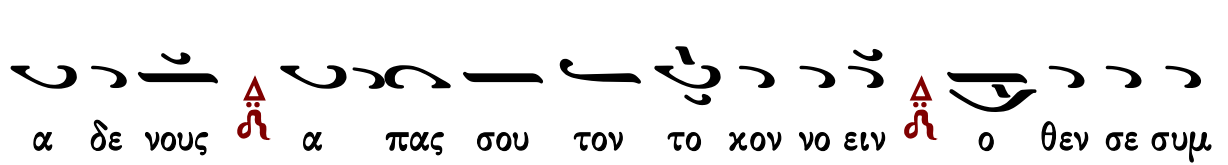
Ἦχος **Δ** Ββ

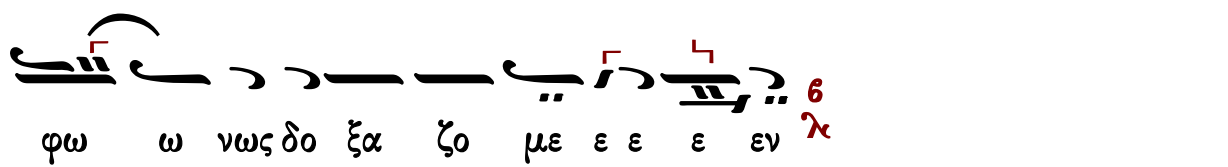
Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Πεντηκοστάριον 1983 σ.255#


**Χ**αι ροις Α νασ σα μη τρο πα αρ θε νον κλε ος <sup>6</sup>λ


 α παν γαρ ευ δι νη τον ευ λα λον στο ο μα <sup>6</sup>λ ρη τρε


 ευ ον ου σθε νει σε μελ πειν α ξι ως <sup>Δ</sup>λι ι λιγ γι


 α δε νους <sup>Δ</sup>λι α πας σου τον το κον νο ειν <sup>Δ</sup>λι ο θεν σε συμ


 φω ω νως δο ξα ζο με ε ε ε εν <sup>6</sup>λ

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Καταβασίαι Πεντηκοστής  
ψδθ' θ'

\*Ήχος <sup>Δ</sup>λι Β8

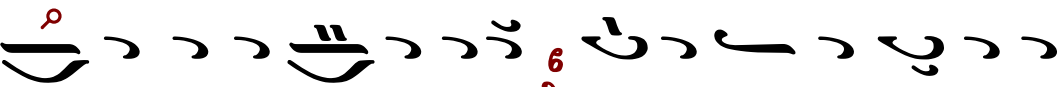
πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.501\*



**Χ**<sup>χ</sup>αι ροις α νασ σα μη τρο πα αρ θε νον κλε ε ος <sup>6</sup>λ α


 παν γαρ ευ δι νη τον ευ λα λον στο μα ρη τρε ευ ον <sup>Δ</sup>λι


 ου σθε νει σε με ελ πειν α ξι ως <sup>Δ</sup>λι ι λιγ γι α δε



— “    
 νου ους α πας σου τον το κον νο ει ν <sup>6</sup> λ ο θεν σε συμ φω νως δο

   
 ξα ζο με ν <sup>6</sup> λ


## Ἄρχή

### Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου


Καταβασίαι Πεντηκοστῆς  
ᾠδὴ θ'


Ἦχος <sup>4</sup> δὲ  Βϩ


πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
2005 σ.404\*


**Χ**    
 αι αι ροις α να ασ σα μη η η τρο ο παρ

   
 θε ε ε ε ε νο ον κλε ε ε ος <sup>6</sup> λ α παν γα αρ

   
 ε ευ δι ι νη η το ον ε ε ευ λα α α λο ον στο ο ο μα <sup>6</sup> λ ρη

—    
 τρε ε ευ ον ου ου ου σθε νει ει σε ε με ελ πειν α

   
 α ξι ι ι ω ως <sup>π9</sup> ι λιγ γι α α δε ε ε

   
 νους α α πας σου το ο ον το ο ο ο κο ον νο

ο ο ειν **Δ** ο ο θε εν σε συμ φω ω ω νως δο ξα α ζο  
ο **χ** με ε ε ε εν **ε λ**


Ιωάννου Πρωτοψάλτου


Καταβασίαι Πεντηχοστῆς  
ᾠδὴ θ'

Ἦχος **Δ** Ββ

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.71#

**Χ** αι αι ροις Α να ασ σα μη η η τρο ο παρ  
θε ε ε ε ε νο ον κλε ε ε ος **ε λ** α παν γα αρ  
ε ευ δι ι νη η η το ον ε ε ευ λα α α λο ον στο ο ο  
μα **ε λ** ρη τρε ε ευ ον ουου ου σθε νει ει σε ε με ελπειν  
α α ξι ι ι ωως **π ρ** ι λιγ γι α α δε ε  
ε νους α α πας σου το ο ον το ο ο ο ο κο


  
 ον νο ο ο ειν <sup>Δ</sup> ο ο θε εν σε συμ φω ω ω νως δο



  
 ξα α ζο ο με ε ε ε εν <sup>6</sup> <sup>λ</sup>


Γαβριήλ Κουντιάδου


Καταβασάι Πεντηκοστής  
ψδθ θ'

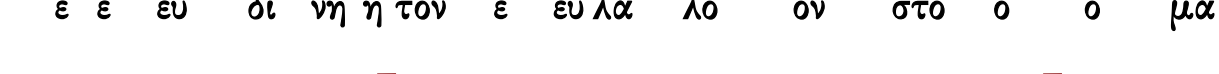
Ἦχος <sup>Δ</sup> Βα

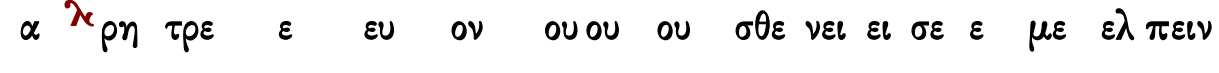
Γαβριήλ Κουντιάδου ιερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
α' ἔκδοσις 1931-1935  
ἐπανεκδόση 1991 σ.366\*

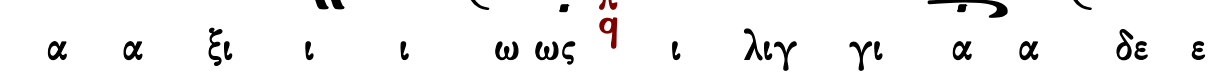

  
**Χ** αι αι ροις α να ασ σα μη η η τρο ο παρ


  
 θε ε ε ε ε νο ον κλε ε ε ος <sup>6</sup> <sup>λ</sup> α παν γα αρ


  
 ε ε ευ δι νη η τον ε ευλα λο ον στο ο ο μα


  
 α <sup>6</sup> <sup>λ</sup> ρη τρε ε ευ ον ου ου ου σθε νει ει σε ε με ελ πειν


  
 α α ξι ι ι ω ως <sup>π</sup> <sup>9</sup> ι λιγ γι α α δε ε


  
 ε νους α α πας σου το ο ον το ο ο ο ο κο

ον νο ο ο ειν ο ο θε εν σε συμ φω ω ω νως δο ο

ξα α ζο ο με ε ε ε εν

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου

Καταβασία Πεντηκοστής  
ᾠδὴ θ'

Ἦχος ΒϚ

Χρυσάνθου Θεοδοσοπούλου  
Πεντηκοστάριον 1983 σ.206\*

Χαι αι ροις Α α να ασ σα μη η η

τρο ο πα α αρ θε ε ε ε ε νο ον κλε ε ε ε ος

α παν γα αρ ε ε ευ δι ι νη η η το ον ε ευ λα

α α α α λο ον στο ο ο ο μα ρη τρε ευ ον ου ου

ου σθε ε νει ει σε ε με ελ πει ει ν α α ξι ι

ι ι ω ως ι λιγ γι α α α δε ε ε

vous α α πας σου ου το ον το ο ο ο ο ο

κον νο ο ο εν ο ο θε ε εν σε ε ε συμ

φω ω ω νως δο ο ξα α ζο ο με ε ε ε εν

# Τῆς Μεταμορφώσεως (προεόρτιες)

Από 27 ἕως 31 Ἰουλίου καὶ ἀπό 2 ἕως 5 Αὐγούστου

## ἤχος δ'

α **Χ**οροὶ Ἰσραήλ, ἀνίκμοις ποσί, πόντον ἐρυθρόν, καὶ ὑγρὸν βυθὸν διελάσαντες, ἀναβάτας τριστάτας, δυσμενεῖς ὄρωντες ἐν αὐτῷ ὑποβρυχίους, ἐν ἀγαλλιάσει ἔμελλον· Ἄσωμεν τῷ Θεῷ ἡμῶν, ὅτι δεδόξασται

γ **Τ**όξον δυνατῶν ἠσθένησε, καὶ οἱ ἀσθενοῦντες, περιεζώσαντο δύναμιν· διὰ τοῦτο ἔστερεώθη, ἐν Κυρίῳ ἡ καρδιά μου.

δ **Εἰ**σακήκοα τὴν ἔνδοξον οἰκονομίαν σου Χριστέ ὁ Θεός, ὅτι ἐτέχθης ἐκ τῆς Παρθένου, ἵνα ἐκ πλάνης ῥύσῃ τοὺς κραυγάζοντας· δόξα τῇ δυνάμει σου Κύριε.

ε **Ὁ** τοῦ φωτὸς διατμήξας τὸ πρωτόγονον χάος, ὡς ἐν φωτὶ τὰ ἔργα ὑμνεῖ σε Χριστέ, τὸν δημιουργόν, ἐν τῷ φωτὶ σου, τὰς ὁδοὺς ἡμῶν εὗθυνον.

ς **Ἐ**ν τῷ θλίβεσθαί με, ἐβόησα πρὸς Κύριον, καὶ ἐπήκουσέ μου, ὁ Θεὸς τῆς σωτηρίας μου.

ζ **Ἀ**βραμιαῖοι ποτέ, ἐν Βαβυλῶνι παῖδες, καμίνου φλόγα κατεπάτησαν, ἐν ὕμνοις κραυγάζοντες· ὁ τῶν πατέρων Θεὸς εὐλογητὸς εἶ.

Αἰνοῦμεν, εὐλογοῦμεν καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον.

η **Οἱ** ἐν Βαβυλῶνι παῖδες, τῷ θείῳ πυρπολούμενοι ζήλῳ, τυράννου καὶ φλογὸς ἀπειλὴν, ἀνδρείως κατεπάτησαν, καὶ μέσον πυρὸς ἐμβληθέντες, δροσιζόμενοι ἔψαλλον· εὐλογεῖτε πάντα τὰ ἔργα Κυρίου τὸν Κύριον.

### Σύντομοι

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

### Ἀργαὶ

Πέτρου Λαμπαδαρίου

## Σύντομοι

### Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Ἦχος δ' Ββ

ὦδὴ α'

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.307#

**Χ** ο ροι Ισ ρα ηλ α νι χμοις πο σι <sup>6</sup> <sup>λ</sup> πον τον ε

ρυ θρο ον και υ γρον βυ θο ον δι ε λα σαντες <sup>6</sup> <sup>λ</sup> α

να βα τας τρι στα τας δυσ με νεις ο ρω ων τες εν αυ

τω υ πο βρυ χι ι ους εν α γαλ λι α σει ε με ελ

πον α ασω μεντω Θε ω ημων ο τι δε δο ξασται <sup>6</sup> <sup>λ</sup> ᾠδὴ γ'

**Τ** ο ο ο ξον δυ να των η σθε νη η σε και οι α σθε

νουν τες πε ρι ε ζω ω σαν το δυ να μιν δι α του

το ε στε ρε ω ω θη χορὸς α' <sup>Δ</sup> εν Κυ ρι ω η καρ δι α

μου <sup>6</sup> <sup>λ</sup> ᾠδὴ δ'

**Ε** ι σα κη κο α την εν δο ξον οι κο νο μι αν

σου Χρι στε ο Θε ος <sup>6</sup> ο τι ε τε χθης εκ της Παρ <sup>λ</sup>

θε νου ι να εκ πλα νης ρυση τους κραυ γα ζοντας <sup>6</sup> δο ξα <sup>λ</sup>

τη δυ να αμει σου Κυ ρι ε <sup>6</sup> ῶδὴ ε΄

**Ο** του φω τος δι α τμη η ξας το πρω το ο γο νον

χα α ος <sup>6</sup> ως εν φω τι τα ερ γα υ μνει σε Χρι στε <sup>π 9</sup> τον

δη μι ουρ γον εν τω φω τι ι σου τας ο δους ημων ευ

θυνον <sup>6</sup> ῶδὴ ς΄

**Ε** ν τω θλι βε σθαι αι με ε βο η σα προς Κυ ρι ον

και ε πη κου σε ε μου <sup>Δ</sup> ο Θε ος της σωτη ρι ας μου <sup>6</sup> <sup>λ</sup>

ῶδὴ ζ΄



Α βρα μι αι οι πο τε εν Βα βυ λω νι παι δες

κα μι νου φλο γα κα τε πα τησαν και υ μνου ν τες ε ψα

αλλον ο των πα τε ε ρων Θε ος ευ λο γη το ος ει 6 λ

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προ σκυ νου ου μεν

τον Κυ ρι ον 6 λ ωδὴ η'

Ο ι εν Βα βυ λω νι παι δες π τω θει ω πυρ πολου ου

με νοι ζη η λω τυ ραν νου και φλο γο ος α πει λην Δ

αν δρει ως κα τε πα τησαν 6 λ και με σον πυ ρος εμ

βλη θεν τες δρο σι ζο με νοι ε ψαλλον ευ λο γει τε

παν τα τα ερ γα Κυ ρι ι ου τον Κυ ρι ο ο ο ο

ον <sup>6</sup>λ

# Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

ῥοδή α'

Ἦχος δὲ <sup>4</sup>Ββ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.302/1342\*

**Χ** ο ροι Ισ ρα ηλ α νι χμοις πο σι <sup>6</sup>λ πον τον

ε ρυ θρο ον και υ γρον βυ θο ον δι ε λα σαν

τες <sup>6</sup>λ α να βα τας τρι στα τας δυσ με νεις <sup>Δ</sup>δ ο ρω

ων τες εν αυ τω υπο βρυ χι ι ους <sup>6</sup>λ εν α γαλ λι

α σει ε με ελ πον <sup>π</sup>q α α σω μεν τω Θε ω η μων ο τι δε

δο ξασται <sup>6</sup>λ

ῥοδή γ'

**Τ** ο ξον δυ να των η σθε νη η σε <sup>π</sup>q και οι α σθε νουν

τες περιεζωωσαν το δυναμιν δια του το

εστερεωωθη <sup>χαρὸς α'</sup> εν Κυριω η καρδια μου

ὠδὴ δ'

Εισακηκοα την ενδοξον οικονομιαν σου

Χριστε ο Θεος οτι ετεχθης εκ της Παρ

θεου ινα εκπλανης ρυση τους κραυγαζοντας δο

ξατη δυναμει σου Κυριε

ὠδὴ ε'

Οτου φωτος διατη ηξασ το πρωτο ογονον

χααος ως εν φωτι τα εργα υμνει σε Χριστε τον

δημιουργον εν φωτι ι σου τας οδους η

μωων ευ θυνον <sup>6</sup>λ

ᾠδὴς'

Ε ν τω θλι βε σθαι αι με ε βο η σα προς Κυ ρι

ον <sup>6</sup>λ και ε πη κου σε ε μου ο Θε ος της σω τη ρι ας

μου <sup>6</sup>λ

ᾠδὴς'

Α βρα μι αι οι πο τε εν Βα βυ λω νι παι

δες <sup>π</sup>9 κα μι νου φλο γα κα τε πα τη σαν <sup>6</sup>λ εν υ

μνοις κραυ γα ζον τες <sup>Δ</sup>ο των πα τε ε ρων Θε ος ευ

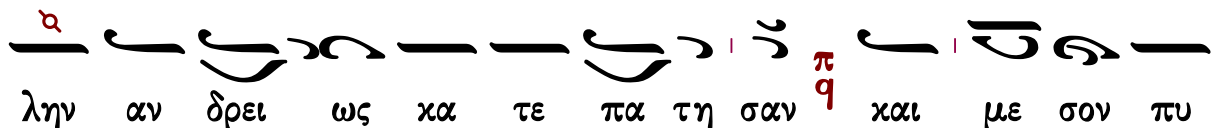
λογη το ος ει <sup>6</sup>λ

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου ου

μεν τον Κυ ρι ον <sup>6</sup>λ

ᾠδὴ η'


 Ο ι εν Βα βυ λω νι παι δεσ <sup>π ρ</sup> τω θει ω πυρ πο  

 λου ου με νοι ζη λω <sup>6 λ</sup> τυ ραν νου και φλο γο ος α πει  

 λην αν δρει ως κα τε πα τη σαν <sup>π ρ</sup> και με σον τυ  

 ρος εμ βλη θεν τες <sup>π ρ</sup> δρο σι ζο ο με νοι ε ψαλ  

 λον <sup>6 λ</sup> ευ λο γει τε παν τα τα ερ γα Κυ ρι ου τον  

 Κυ ρι ο ο ο ο ο ν <sup>6 λ</sup>

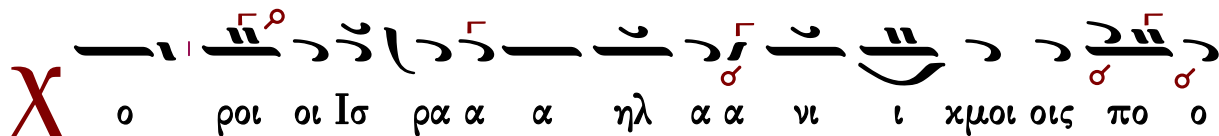
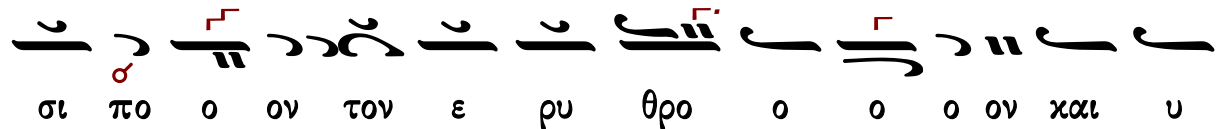
## Αργαί

Πέτρου Λαμπαδαρίου

ψδὴ α'

Ἦχος <sup>4</sup> δὴ Ββ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.298/1338\*


 Χ ο ροι οι Ισ ρα α α ηλ α α νι ι κμοι οισ πο ο  

 σι πο ο ο ν τον ε ρυ θρο ο ο ο ο ν και υ

γρο ον βυ θο ο ον δι ι ε λα σα αν τε ες α

να βα τας τρι ι στα τα ας δυσ με ε νεις ο ο ρω ωων

τες εν α αυ τω υ υ πο βρυ υ υ χι ι ι ου

ους εν α γαλ λι α α σει ει ε ε ε με

ε ε ε ελ πο ον α α σω μεν τω Θε ω ω η η μων

ο ο ο ο τι ι δε δο ξα α σται αι

Τ ο ο ξον δυ να τω ων η η σθε ε ε νη

η η η η σε ε και οι α σθε νου ου ου

ου ουν τες πε ρι ε ζω ωω σα αν το δυ υ να α

μι ιν δια του ου ου το ο ε στε ρε ω ω ω

ψδλγ'

ω θη <sup>Α</sup> α' χορός εν Κυ ρι ι ω ω η καρ δι α α μου

ου <sup>6</sup> λ ωδὴ δ'

Ε ισ α κη κο ο α την ε εν δο ο ξον οι κο

νο μι ι αν σου Χρι ι στε ε ο ο Θε ε ος <sup>6</sup> λ ο τι ι ε

τε ε ε ε χθη ης εκ της Πα αρ θε ε ε νου ου <sup>π</sup> ρ

ι ι να εκ πλα α α νης ρυ υ ση η του ουσ κραυ

γα ζοον τα ας <sup>6</sup> λ δο ο ο ξα τη δυ να α α α μει ει

σου Κυ ρι ι ε ε <sup>6</sup> λ ωδὴ ε'

Ο <sup>σ</sup> του φω τος δι α α τμη η ξας το πρω ω το

ο ο γο νο ο ον χα α α ο ος <sup>6</sup> λ ως εν φω

τι ι τα α ερ γα υ υ μνει ει σε ε Χρι ι στε ε το

ο ον δη μι ου ουρ γον εν τω φω ω τι ι ι σου

ου τας ο δου ουουους η η μω ων ευ θυ υ νο ον

ῶδῆς'

Ε ν τω θλι βε σθαι αι αι αι αι με ε βο ο

η η σα α προς Κυ υ ρι ι ο ον και ε πη η κου

σε ε ε μου ου ο Θε ο ος τη ης σω ω τη ρι α ας

μου ου

ῶδῆς'

Α βρα μι ι αι αι οι οι πο ο τε ε εν Βα βυ

λω ω νι ι παι δε ες κα μι νου φλο ο γα α κα α



τε πα α τη η σα αν εν υ υ μνοι οισ κραυ γα ζο

ον τε ες ο των πα τε ε ε ρων Θε ε ο ος ε ευ λο γη

η το ο ος ει ει

\* ἄλλη γραμμὴ ο των πα τε ε ε ρων Θε ε ε ος ευ λο

γη το ο ος ει ει

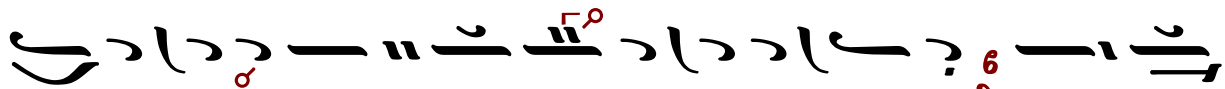
αι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου ου ου ου

με εν τον Κυ υ ρι ι ο ον ὠδή η'


Ο ι εν Βα βυ λω ω νι ι παι δε ες τω θει ω πυρ


πο ο ο λου ου ου με νοι οι οι ζη η η λω

ω τυ ραν νου και φλο γο ο ος α πει ει ει λην αν


  
 δρει ει ω ως κα α τε πα α τη η σα αν και με


  
 σο ον πυ υ ρο ο ος ε ε εμ βλη θε ε ε ε


  
 εν τες δρο σι ζο ο ο ο με ε νοι ε ε ψα αλ λο


  
 ον ευ λο γει ει τε πα α αν τα τα α ε ερ γα Κυ


  
 ρι ι ου τον Κυ υ ρι ι ι ο ο ο ο ον

## Τιμιωτέρα

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

Λουκᾶ κεφ. 1

ἤχος δ'

- ∴ Μεγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἠγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ σωτῆρί μου. 46-47
- ∴ Ὅτι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48
- ∴ Ὅτι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50
- ∴ Ἐποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσκόρπισεν ὑπερηφάνους διανοίᾳ καρδίας αὐτῶν. 51
- ∴ Καθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξάπέστειλε κενούς. 52-53
- ∴ Ἀντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς

πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55

**Τ**ὴν Τιμιωτέραν τῶν Χερουβίμ, καὶ ἔνδοξότεραν ἀσυγκρίτως τῶν Σεραφίμ, τὴν ἀδιαφθόρως Θεὸν Λόγον τεκοῦσαν, τὴν ὄντως Θεοτόκον, σὲ μεγαλύνομεν.

Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

## Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου

Λουκᾶ κεφ. 1


ἤχος δ'


- ∴ Μεγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἠγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ σωτήρῳ μου. 46-47
- ∴ Ὅτι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48
- ∴ Ὅτι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50
- ∴ Ἐποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσχόρπισεν ὑπερηφάνους διανοίᾳ καρδίας αὐτῶν. 51
- ∴ Καθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξαπέστειλε κενούς. 52-53
- ∴ Ἀντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55


Πέτρου Λαμπαδαρίου

Ἦχος δ' Ββ

Πανδέκτη  
Ὅρθρος 1850 σ.502#


**Τ** η ν τ ι μ ι ω τ ε ρ α ν τ ω ν Χ ε ρ ο υ β ι μ <sup>6</sup> λ και ε ν δ ο ξ ο


 τ ε ρ α ν α σ υ γ κ ρ ι τ ω ς τ ω ν Σ ε ρ α φ ι μ <sup>6</sup> λ τ η ν α δι α


 φ θ ο ρ ω ς Θε ο ν Λ ο γ ο ν τ ε κ ο υ σ α ν <sup>6</sup> λ τ η ν ο ν τ ω ς Θε ο

το ο κον σε με γα α λυ νο μεν <sup>6</sup><sub>λ</sub>

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Ἦχος <sup>4</sup><sub>δὲ</sub> Ββ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Τριώδιον Β'  
2003 σ.26#

**Μ** ε γα λυ νει η ψυ χη μου τον Κυ ρι ον <sup>6</sup><sub>λ</sub>

και η γαλ λι α σε το πνευ μα μου ε πι τω Θε

ω ω τω σω τη ρι μου <sup>6</sup><sub>λ</sub>

**Τ** ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ <sup>6</sup><sub>λ</sub> και εν δο

ξο τε ραν α συγ χρι τως των Σε ρα φιμ <sup>6</sup><sub>λ</sub> την α δι α

φθο ρως Θε ον Λο ο γον τε κου σαν <sup>6</sup><sub>λ</sub> την ον τως Θε ο

το κον σε με γα λυ νο μεν <sup>6</sup><sub>λ</sub>

Ο <sup>χ</sup> τι ε πε βλε ψεν ε πι την τα πει νωσιν

της δου λης αυ του <sup>6</sup> λ ι δου γαρ α πο του νυν μα κα

ρι ου σι με πα σαι αι γε νε αι <sup>6</sup> λ

Τ ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ <sup>6</sup> λ και εν <sup>σ</sup> δο

ξο τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ <sup>6</sup> λ την α δι α

φθο ρως Θε ον Λο ο γον τε κου σαν <sup>6</sup> λ την ον τως Θε ο

το κον σε μεγα λυ νο μεν <sup>6</sup> λ

Ο <sup>χ</sup> τι ε ποι η σε μοι με γα λει α ο δου να

τος <sup>6</sup> λ και α γι ον το ο νο μα αυ του <sup>6</sup> λ και το ε λε

ος αυ του εις γε νε αν και γε νε αν τοις φο βου

με νοις αυτον <sup>6</sup> <sup>λ</sup>

**Τ** ην <sup>σ</sup> τι μι ω τε ραν των Χε <sup>σ</sup> ρου βιμ <sup>6</sup> <sup>λ</sup> και εν

δο ξο τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ <sup>6</sup> <sup>λ</sup> την α δι

α φθο ο ρως Θε ον Λο ο γον τε κου σαν <sup>6</sup> <sup>λ</sup> την ον τως

Θε ο το κον σε ε μεγα λυ νομεν <sup>6</sup> <sup>λ</sup>

**Ε** <sup>χ</sup> ποι η σε κρα τος εν βρα χι ο νι αυ

του <sup>6</sup> <sup>λ</sup> δι ε σκορ πι σεν υ περ η <sup>χ</sup> φα νους δι α νοι α

καρ δι ας αυτων <sup>6</sup> <sup>λ</sup>

**Τ** ην <sup>σ</sup> τι μι ω τε ραν των Χε <sup>σ</sup> ρου βιμ <sup>6</sup> <sup>λ</sup> και εν

δο ξο τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ <sup>6</sup> <sup>λ</sup> την α δι

α φθο ο ρως Θε ον Λο ο γον τε κου σαν την ον τως

Θε ο το κον σε ε μεγα λυ νομεν

Κ α θει λε δυ να στας α πο θρω νων και υ υ

ψω σε τα πει νους πει νων τας εν ε πλη σεν α γα

θων και πλου τουν τας εξ α πε στει λε κε νους

Τ ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ και εν δο ξο

τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ την α δι α φθο

ρως Θε ο ον Λο ο γον τε κου σαν την ον τως Θε ο

το κον σε ε μεγα λυ νομεν

Α ν τε λα βε το Ισ ρα ηλ παι δος αυ του

μνη σθη ναι ε λε ους κα θως ε λα λη σε προς τους πα

τε ρας η μων τω Α βρα αμ και τω σπερ μα τι αυ

του ε ως αι ω νος

Τ ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ και εν δο ξο

τε ραν α συγ χρι τως των Σε ρα φιμ την α δι α φθο

ρως Θε ο ον Λο γον τε κου σαν την ον τως Θε ο

το κον σε ε μεγα λυ νο μεν

## Καταβασία θ' φδῆς

ἦχος δ'

Ὁ τόκος σου ἄφθορος ἐδείχθη, Θεὸς ἐκ λαγόνων σου προῆλθε, σαρκοφόρος, δὲ ὠφθη ἐπὶ γῆς, καὶ τοῖς ἀνθρώποις συνανεστράφη, σὲ Θεοτόκε· διὸ πάντες μεγαλύνομεν.

Σύντομος

Ἀργή

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Πέτρου Λαμπαδαρίου  
Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Κωνσταντίνου Παπαγιάννη



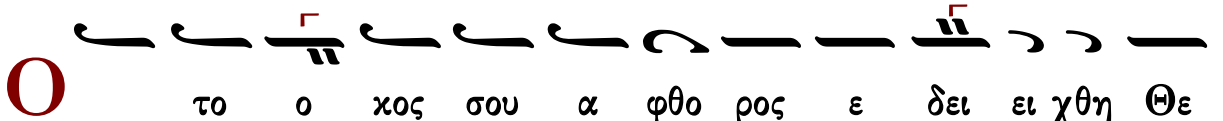
# Σύντομος

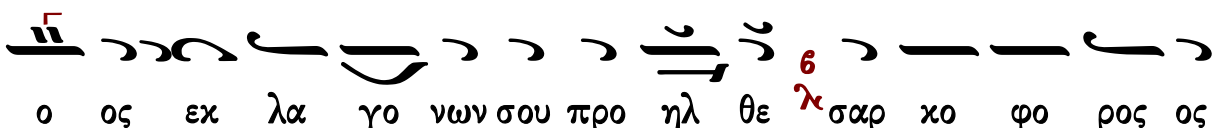
## Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

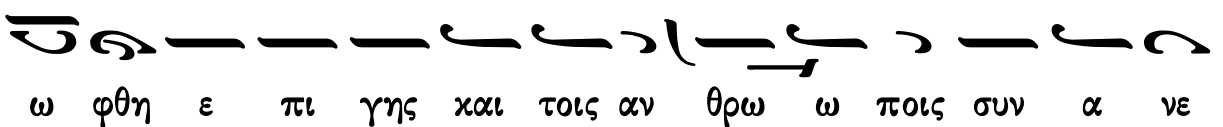
ψῆδθ'

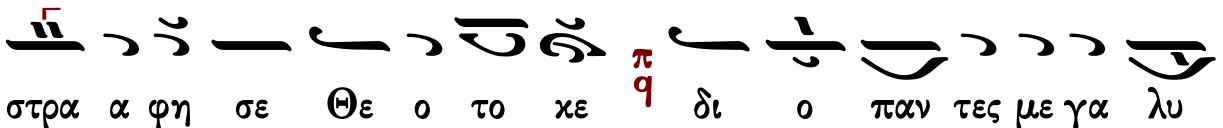
Ἦχος δὲ Ββ


Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.312#


**Ο** το ο κος σου α φθο ρος ε δει ει χθη Θε


 ο ος εκ λα γο νων σου προ ηλ θε <sup>ε</sup>λαρ κο φο ρος ος


 ω φθη ε πι γης και τοις αν θρω ω ποις συν α νε


 στρα α φη σε Θε ο το κε <sup>π</sup>ρι δι ο παν τες με γα λυ



 νο <sup>χ</sup> με ε ε ε εν <sup>ε</sup>λα

## Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

ψῆδθ'

Ἦχος δὲ Ββ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.304/1344\*


**Ο** το ο κος σου α φθο ρος ε δει ει χθη Θε

ο ος εκ λα γο νων σου προ ηλ θε σαρ κο φο ο ρος ος

ω φθη ε πι γης και τοις αν θρω ω ποις συν α νε

στρα α φη σε Θε ο το κε δι ο παν τες με γα λυ

νο με ε ε ε εν

Ἄρχη

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

ᾠδὴ θ'

Ἦχος Ββ

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.59#

Ο το ο ο ο ο κος σου ου α α φθο ο ρος ε ε

δει ει ει ει χθη Θε ο ο ος εκ λα α γο ο νωνων σου προ

ο η η ηλ θε ε σα α αρ κο ο φο ρος ο ος ω

φθη η ε πι ι γης και τοις αν θρω ω ω ποις συ υν α

νε ε ε στρα α α φη σε Θε ο ο το κε ε <sup>π ρ</sup> δι ο  
 πα αντε ες με ε γα λυ υ νο ο ο με ε ε ε εν <sup>β λ</sup>

Πέτρου Λαμπαδαρίου

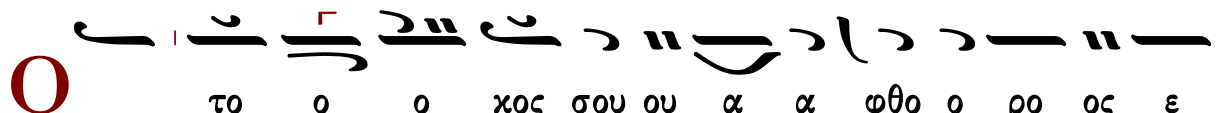
ψδλθ'

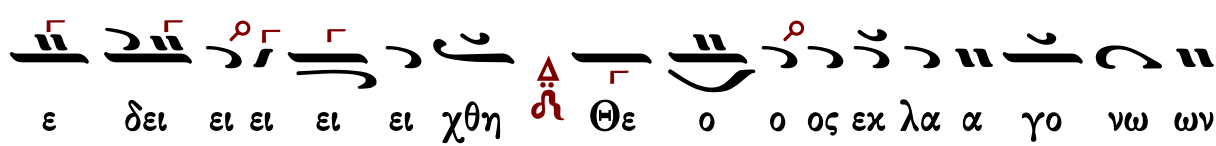
Ἦχος Βλ

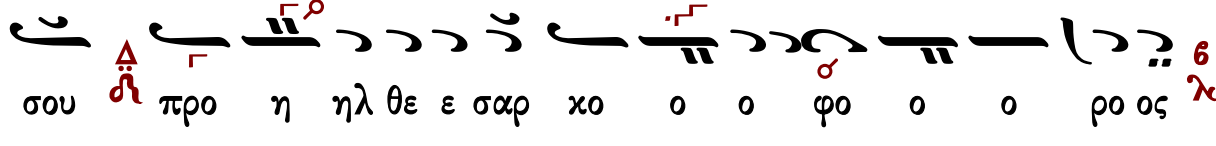
πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
 Μουσικόν Μηνολόγιον  
 2007 σ.301/1341\*

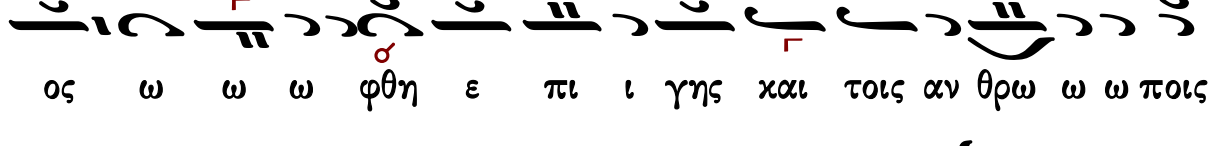
Ο το ο ο ο ο κος σου ου α α φθο ο ρος ε ε  
 δει ει ει ει ει χθη Θε ο ο ος εκ λα α γο ο νω ων σου  
 προ ο η η ηλ θε ε <sup>β λ</sup>σαρ κο φο ρος ο ος ω φθη η  
 ε πι ι γης και τοις αν θρω ω ποις συ υν α νε  
 ε ε στρα α α φη <sup>β λ</sup>σε Θε ο ο το κε ε <sup>π ρ</sup>δι ο πα  
 αντε ες με ε γα λυ υ νο ο ο με ε ε ε εν <sup>β λ</sup>

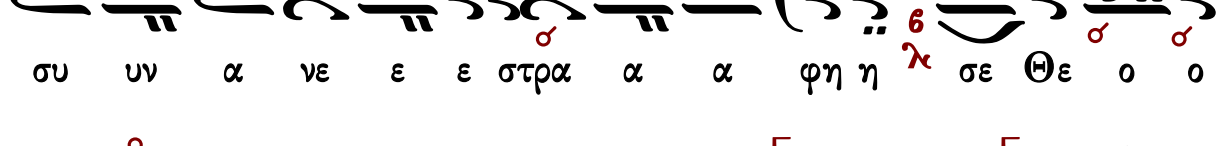
Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

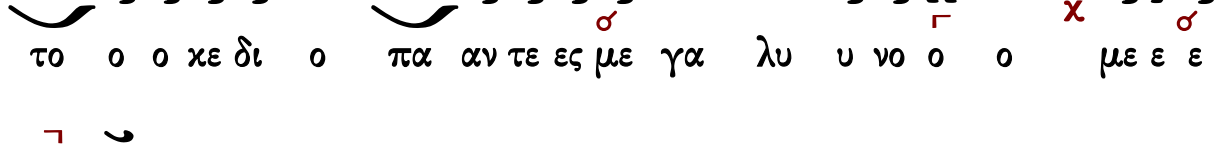

 Ο το ο ο κοσ σου ου α α φθο ο ρο ος ε



 ε δει ει ει ει ει χθη Θε ο ο ος εκ λα α γο νω ων


 σου προ η ηλ θε ε σαρ κο ο ο φο ο ο ρο ος


 ος ω ω ω φθη ε πι ι γης και τοις αν θρω ω ω ποις


 συ υν α νε ε ε στρα α α φη η σε Θε ο ο


 το ο ο κε δι ο πα αν τε ες με γα λυ υ νο ο ο με ε ε


 ε εν

# Τῆς Μεταμορφώσεως 6/8

6 Αὐγούστου

ἦχος πλ.δ'

α **Σ**ταυρὸν χαράξας Μωσῆς, ἐπ' εὐθείας ῥάβδῳ, τὴν Ἐρυθρὰν διέτεμε, τῷ Ἰσραὴλ πεζεύσαντι, τὴν δὲ ἐπιστρεπτικῶς, Φαραὼ τοῖς ἄρμασι, κροτήσας ἤνωσεν, ἐπ' εὖρους διαγράψας τὸ ἀήττητον ὄπλον. Διὸ Χριστῷ ἄσωμεν τῷ Θεῷ ἡμῶν, ὅτι δεδόξασται.

γ **Ρ**άβδος εἰς τύπον τοῦ μυστηρίου παραλαμβάνεται· τῷ βλαστῷ γὰρ προκρίνει τὸν ἱερέα. Τῇ στειρευούσῃ δὲ πρῶην, Ἐκκλησίᾳ νῦν ἐξήνηθησε, ξύλον Σταυροῦ, εἰς κράτος καὶ στερέωμα.

δ **Εἰ**σακήκοα Κύριε, τῆς οἰκονομίας σου τὸ μυστήριον, κατενόησα τὰ ἔργα σου, καὶ ἐδόξασά σου τὴν Θεότητα.

ε **Ω** τρισμακάριστον ξύλον! ἐν ᾧ ἐτάθη Χριστός, ὁ βασιλεὺς καὶ Κύριος, δι' οὗ πέπτωκεν ὁ ξύλῳ ἀπατήσας, τῷ ἐν σοὶ δελεασθείς, Θεῷ τῷ προσπαγέντι σαρκί, τῷ παρέχοντι, τὴν εἰρήνην ταῖς ψυχαῖς ἡμῶν.

ς **Ν**οτίου θηρὸς ἐν σπλάγχνοις, παλάμας, Ἰωνᾶς, σταυροειδῶς διεκπετάσας, τὸ σωτήριον πάθος προδιετύπου σαφῶς. Ὅθεν τριήμερος ἐκδύς, τὴν ὑπερκόσμιον ἀνάστασιν ὑπέζωγράφησε, τοῦ σαρκί προσπαγέντος Χριστοῦ τοῦ Θεοῦ, καὶ τριημέρῳ ἐγέρσει τὸν κόσμον φωτίσαντος.

ζ **Ἐ**κνοον πρόσταγμα τυράννου, δυσσεβοῦς λαοὺς ἐκλόνησε, πνέον ἀπειλῆς, καὶ δυσφημίας θεοστυγοῦς. Ὅμως τρεῖς παῖδας οὐκ ἐδειμάτωσε, θυμὸς θηριώδης, οὐ πῦρ βρόμιον· ἀλλ' ἀντηχοῦντι δροσοβόλῳ πνεύματι, πυρὶ συνόντες ἔφαλλον, ὁ ὑπερύμνητος τῶν πατέρων καὶ ἡμῶν, Θεὸς εὐλογητὸς εἶ.

Αἰνοῦμεν, εὐλογοῦμεν καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον.

η **Εὐ**λογεῖτε παῖδες, τῆς Τριάδος ἰσάριθμοι, δημιουργὸν πατέρα Θεόν, ὑμνεῖτε τὸν συγκαταβάντα Λόγον, καὶ τὸ πῦρ εἰς δρόσον μεταποιήσαντα, καὶ ὑπερυψοῦτε, τὸ πᾶσι ζωὴν παρέχον, Πνεῦμα πανάγιον εἰς τοὺς αἰῶνας.

**Σύντομοι**

**Αργαί**

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Πέτρου Λαμπαδαρίου

**Σύντομοι**

**Ἰωάννου Πρωτοψάλτου**

**Κ**ταυ ρον χα ρα ξας Μω σης επ ευ θει ας ρα βδω την

Ε ρυ θραν δι ε τε με τω Ισ ρα ηλ πεζουσαν τι την

δε ε πι στρε πτι κως Φα ρα ω τοις αρ μα σικρο τη

σας η νω σεν επ ευ ρους δι α γραψα α ας το α ητ τη

τον ο ο πλον δι ο Χρι στω α σωμεν τω Θε ω

η μων ο τι δε δο ξα σται  
ψδὴ γ'

**Ρ**α βδος εις τυ υ ποντου μω στη ρι ου πα ρα λαμ

βα νε ε ται τω βλα στω γαρ προ κρι νει τον ι ε ρε

ε α τη στει ρευ ου ση δε πρω ην Εκ κλη σι α νυν

ἐξ ἠν θη ἡ σε <sup>Δ</sup> χορὸς α' ξυ λον Σταυρου εις κρα τος και στε ρε

ω ω μα <sup>γ</sup> ῥή <sup>ῥ</sup> ῥή δ'

Εἰ σα κη ἡ κο α Κυ ρι ε της οι κο νο μι ι ας

σου το μυ στη ρι ον κα τε νο ἡ σα τα ερ γα σου και ε

δο ξα σα σου την Θε ο τη τα <sup>ῥ</sup> ῥή <sup>ῥ</sup> ῥή δ' <sup>ῥ</sup> ῥή

Ω τρις μα κα ρι ι στον ξυ υ υ λον εν ω ε τα

α α θη Χρι στος ο βα σι λευς και Κυ ρι ος <sup>γ</sup> ῥή δι ου

πε πτω κεν ο ξυ λω α πα τη ἡ σας <sup>Δ</sup> ῥή τω εν σοι δε λε

α σθεις Θε ω τω προσ πα γε εν τι σα ρ κι <sup>Δ</sup> ῥή τω πα

ρε ε χο ον τι την ει ρη νη ταις ψυ χαις ἡ ἡ μων <sup>γ</sup> ῥή <sup>ῥ</sup> ῥή δ'

**Ν** ο τι ου θη ρο ος εν σπλα α αγχοις πα λα μας

Ι ω νας σταυ ρο ει δως δι εκ πε τα α σας <sup>γ</sup> το

σω τη ρι ον πα α θος προ δι ε τυ υ που σα φως

ο ο θεν τρι η με ρος εκ δυς την υ περ κο σμι ον α

να στα σιν υ πε ζω γρα φη η σε <sup>Δ</sup> του σα ρ κι προσ πα

γεν τος Χρι στου ουου του Θε ου και τρι η με ρω ε γε ε

ερσει τον κο ο σμον φω τι σα αντος <sup>γ</sup> ὠδὴ ζ'

**Ε** εκ νο ον προ στα γμα τυ ραν νου δυς σε

βους λα ους ε κλο νη σε <sup>β</sup> πνε ον α πει λης και δυς φη μι

ι α ας θε ο στυ γους <sup>γ</sup> ο μως τρεις παι δας ουκ ε δει μα



τω ω ω σε **Δ** θυ μο ος θη ρι ω δης ου πυρ βρο μι ον **ν**

αλλ αν τη χουν τι δρο σο βο λω Πνευ μα α τι πυ ρι συν

ον τες ε ψα α αλ λον **Δ** ο υ περ υ μνη η το ος

των πα τε ρων και η μων **Θ** ε ος ευ λο γη το ος ει **ν**

ᾠδὴ γ'

**Δ** ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσκυ νου ου με εν τον

Κυ ρι ον **ν**

**Ε** υ λο γει ει τε Παι αι αι δες της Τρι α δοσι σ α

ριθμοι δε μι ουρ γον πα τε ρα **Θ** ε ον **ν** υ μνει ει τε τον

συ γ κα τα βαν τα λο ο ο γον **ε** και το πυρ εις δρο ο σον





τα θη Χρι στος ο βα σι λευς και Κυ ρι ος δι ου

πε πτω κεν ο ξυ λω α πα τη η σας τω εν σοι δε

λε α σθεις Θε ω τω προσ πα γεν τι σαρ κι τω πα ρε

χο ον τι την ει ρη νην ταις ψυ χαις η η μων

**N** ο τι ου θε ρο ος εν σπλα α αγ χνοις πα λα μας

Ι ω νας σταυ ρο ει δως δι εκ πε τα σας το σω

τη ρι ον πα α θος προ δι ε τυ που σα φως ο ο θεν τρι

η με ρος εκ δυς την υ περ κο σμι ον α να στα σιν υ

πε ζω γρα φη η σε του σα ρ κι προσ πα γεν τος Χρι

στου ου του Θε ου και τρι η με ρω ε γε ε ρσει

ᾠδὴς'

τον κο ο σμον φω τι ι σα αν τος ν ρι ῥοδὴ ζ'

Ε εκ νο ον προσ τα γμα τυ ραν νου δυσ σε βους

λα ους ε κλο νη σε ε λκ πνε ον α πει λης και δυσ φη μι

ι α ας θε ο στυ γους ν ρι ο μως τρεις παι δας ουκ ε δει

μα τω σε Α ρι θυ μο ος θη ρι ω δης ου πυρ βρο μι ον ν ρι αλλ

αν τη χουν τι δρο σο βο λω Πνευ μα α τι πυ ρι συν

ον τες ε ψα λλον Α ρι ο υ περ υ μνη η το ος των πα

τε ρων και η μων Θε ος ευ λο γη τος ει ν ρι ῥοδὴ η'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου μεν

τον Κυ ρι ον ν ρι

Ε<sup>χ</sup> υ λο γει ει τε παι αι αι δεσ<sup>γ</sup> της Τρι α δος ι

σα ρι θμοι δη μι ουρ γον Πα τε ρα Θε ον<sup>γ</sup> υ μνει ει

τε τον συγ κα τα βαν τα Λο ο ο γον<sup>ε</sup> και το πυρ

εις δρο ο σον με τα ποι η σαν τα<sup>γ</sup> και υ περ υ ψου

τε το πα α σι ζω ην πα ρε ε χον<sup>Δ</sup> Πνευ μα παν α γι ονεις

τους αι ω ω να α α ας<sup>γ</sup>

### Αργαί

## Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου20

Καταβασαί Σταυροῦ  
ῶδὴ α'

Ἦχος λ π δὲ —

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.287/1636\*

Σ<sup>χ</sup> ταυ ρον χα ρα α ξας Μω ω ση η ης επ ευ

θει ει ει ει α ας ρα α α βδω<sup>χλ</sup> την Ε ρυ θραν

δι ε τε ε με<sup>♂</sup> τω Ισ ρα η ηλ πε ζευ σαν τι

ι<sup>ν</sup> την δε ε ε ε πι στρε πτι ι κως<sup>Δ9</sup> Φα ρα ω

τοι οισ αρ μα α σι κρο τη η σας η η νω ω σεν<sup>♂</sup> επ<sup>♂</sup>

ευ ρους δι α α γρα α α ψας<sup>Δ9</sup> το α ητ τη τον ο

ο ο πλον<sup>♂</sup> δι ο ο Χρι στω ω α α σω ω μεν<sup>♂</sup> τω<sup>♂</sup>

Θε ω η μων ο ο ο τι δε δο ο ξα α σται<sup>♂</sup> <sup>ν</sup> <sup>♂</sup> φδηγ'

**Ρ** α α βδος ει εις τυ υ πον του ου μυ στη η η ρι ου<sup>Δ</sup>

πα α ρα α λα αμ βα α α νε ε ε ε ται<sup>Δ</sup> τω<sup>♂</sup>

βλα στω ω ω γαρ προ ο ο χρι ι ι νει το ον ι ε

ε ε ρε ε ε ε α γ τη στει ρευ ου ση δε πρω

η ην Εκ κλη η σι ι α νυ υν ε εξ η η ην θη η

η η σε Δ ξυ υ υ υ λο ον Στα α αυ ρου Δ χορός α'

εις κρα α τος και στε ρε ε ω ω μα

\* στε ρε ε ε ε ε ε ω ω ω ω μα γ

ωδὴ δ'

Ε ισ α κη η κο α Κυ υ ρι ι ε τη ης οι οι

κο νο μι ι ι ι ας σου το ο μυ υ στη ρι ι ον κ

κα τε νο η σα α τα ερ γα α σου ου και ε

δο ξα σα σου τη ην Θε ο ο τη η τα γ ωδὴ ε'

Ω τρις μα κα ρι ι ι ι στον ξυ υ υ λο ον γ εν



ω ε τα α α θη Χρι ι στος ο βα σι λε ευσ και

αι Κυ ρι ι ο ος δι ου ου πε πτω ω κεν ο

ξυ υ λω α α πα α τη η η η σας τω εν

σοι οι δε λε ε α α α σθεις Θε ω ω ω τω

ω προ οσ πα α γε ε εν τι ι σα α αρ κι

τω πα ρε ε ε χο ο ο ον τι ι την ει ρη η νη νταις

ψυ χαι αι αις η η η η μων

**N** ο τι ι ι ου θη ρο ος εν σπλα α αγ χνοι

οις πα λα μα ας Ι ω ω νας σταυ ρο ει δω ω ως δι

ε εκ πε ε τα α α α α σας το σω τη η ρι ι

ον πα α α α α α θος προ δι ε τυ υ υ

που σα φω ως ο ο ο θεν τρι η η η με ρος

ε εκ δυς την υ πε ερ κο σμι ι ον α να στα α σιν

υ υ πε ε ζω ω γρα α α φη η η η σε του

σαρ κι ι ι προσ πα α γε εν τος Χρι στου ου του Θε ε

ου και τρι η με ρω ω ε ε γε ε ερ σει ει

τον κο ο ο σμον φω τι ι ι σα α α αν τος

ε εκ νο ο ον προ οστα α γμα τυ ρα

αν νου δυ υσ σε βου ου ουους λα ους ε ε ε

κλο νη η σε ε πνε ε ο ον α πει ει ει λη ης και

δυσ φη μι ι ι ι α ας θε ο στυ γου ους ο ο μως

τρει εις παι αι δας ου ουκ ε ε δει ει μα α α τω

ω ω ω σε θυ μο ο ο ο ος θη ρι ω ω δη

ης ου ου πυ υρ βρο μι ο ον αλλ αν τη χου ου ου ουν τι

δρο σο βο ο λω ω Πνε ευ μα α τι ι πυ ρι συν

ο ον τε ες ε ε ε ψα α α αλ λον ο υ περ

υ μνη η το ος των πα τε ε ρων και αι η η η μων Θε

ε ος ε ευ λο γη η η το ο ο ος ει

α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου ου ου

ου με εν τον Κυ ρι ο ον

Ευλογει εἰ εἰ εἰ τε παι αἰ αἰ δε ες τῆς

Τρι α α α α δος ι ι σα ρι ι θμοι δη μι ουρ γον

Πα α τε ε ε ε ε ρα α Θε ε ε ον υ μναι

ει τε τον συγ κα τα βαν τα α Λο ο ο γον και το

ο ο πυρ εις δρο ο σον με ε τα α ποι η σαν τα α και

υ περ υ υ ψου ου ου ου τε το ο πα σι ι ζω η

ην πα α ρε ε ε ε χον Πνευ ευμα παν α γι ι ονεις τους

αι ω ω να α α ας

### ὕμνη θ' τῆς ἑορτῆς

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

κανὼν α' ἤχος δ'  
«Ὁ τόκος σου ἄφθορος ἐδείχθη, Θεὸς ἐκ λαγόνων σου προῆλθε, σαρκοφόρος, ὃς ὤφθη ἐπὶ γῆς, καὶ τοῖς ἀνθρώποις συνανεστράφη, σὲ Θεοτόκε· διὸ πάντες μεγαλύνομεν». (β')

Δόξα σοι ὁ Θεὸς ἡμῶν δόξα σοι.

Σύντρομοι καινῆ φωτοχυσία, ἀθρόως οἱ μαθηταὶ ἐλλαμφθέντες, πρὸς ἀλλήλους ἐώρων, καὶ πρηνεῖς εἰς γῆν καταπεσόντες, σοὶ τῷ Δεσπότη τῶν ἀπάντων προσεκύνησαν.

Δόξα σοι ὁ Θεὸς ἡμῶν δόξα σοι.

Ἦχος ἐκ νεφέλης ἀνεπέμπετο, θεόκτυπος βεβαιῶν τὸ θαῦμα· ὁ Πατὴρ γὰρ τῶν φώτων. Οὗτός ἐστιν Υἱὸς ὁ ἀγαπητός μου, τοῖς ἀποστόλοις ἀνεβόα, οὐ ἀκούετε.

Δόξα σοι ὁ Θεὸς ἡμῶν δόξα σοι.

Καινὰ κατιδόντες καὶ παράδοξα, φωνῆς πατρικῆς ἐνωτισθέντες, ἐν Θαβὼρ οἱ τοῦ Λόγου ὑπηρέται, ἐκμαγεῖον τοῦ ἀρχετύπου. Οὗτος ὑπάρχει ἀνεβῶν ὁ Σωτὴρ ἡμῶν.

Δόξα σοι ὁ Θεὸς ἡμῶν δόξα σοι.

Εἰκὼν ἀπαράλλακτε τοῦ ὄντος, ἀκίνητε σφραγὶς ἀναλλοίωτε, Υἱὲ λόγε σοφία καὶ βραχίων, δεξιὰ ὑψίστου σθένος, σὲ ἀνυμνοῦμεν, σὺν Πατρὶ τε καὶ τῷ Πνεύματι.

κανὼν β'

ἦχος πλ.δ'

«Ἐφριξε πᾶσα ἀκοή, τὴν ἀπόρρητον Θεοῦ συγκατάβασιν, ὅπως ὁ Ὑψιστος, ἐκὼν κατήλθε μέχρι καὶ σώματος, παρθενικῆς ἀπὸ γαστροῦ, γενόμενος ἄνθρωπος· διὸ τὴν ἄχραντον, Θεοτόκον οἱ πιστοὶ μεγαλύνομεν».

Δόξα σοι ὁ Θεὸς ἡμῶν δόξα σοι.

Ἴνα σου δείξῃς ἐμφανῶς, τὴν ἀπόρρητον δευτέραν κατάβασιν, ὅπως ὁ Ὑψιστος Θεός, ὀφθήσῃ ἐστὼς ἐν μέσῳ θεῶν, τοῖς ἀποστόλοις ἐν Θαβὼρ, Μωσεῖ σὺν Ἡλίᾳ τε, ἀρρήτως ἔλαμψας· διὸ πάντες σε Χριστὲ μεγαλύνομεν.

Δόξα Πατρὶ καὶ Υἱῷ καὶ ἀγίῳ Πνεύματι.

Δεῦτέ μοι πείθεσθε λαοί, ἀναβάντες εἰς τὸ ὄρος τὸ ἅγιον, τὸ ἐπουράνιον αὐλῶς στῶμεν ἐν πόλει ζῶντος Θεοῦ, καὶ ἐποπτεύσωμεν νοῖ θεότητα ἄυλον, Πατρὸς καὶ Πνεύματος, ἐν Υἱῷ μονογενεῖ ἀπαστράπτουσαν.

Καὶ νῦν καὶ αἰεὶ καὶ εἰς τοὺς αἰῶνας τῶν αἰώνων, ἀμήν.

Ἦθελξας πόθῳ με Χριστέ, καὶ ἠλλοίωσας τῷ θείῳ σου ἔρωτι, ἀλλὰ κατάφλεξον, πυρὶ αὐλῶ τὰς ἀμαρτίας μου, καὶ ἐμπλησθῆναι τῆς ἐν σοὶ τρυφῆς καταξίωσον, ἵνα τὰς δύο σκιρτῶν, μεγαλύνω ἀγαθὴ παρουσίας σου.

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

ψδὴ θ', κανὼν α'

Ἦχος ἴϛ Ββ

Ὁ <sup>Γ</sup>χ το ο κος σου α φθο ρος ε δει ει χθη <sup>Δ</sup>δλ

Θε ο ος εκ λα γο νων σου προ ηλ θε σαρ κο φο ο ρος <sup>β</sup>λ

ος ω φθη ε πι γης και τοις αν θρω ω ποις συν

α νε στρα α φη <sup>β</sup>λ σε Θε ο το κε δι ο παν τες με

γα λυ νο μεν <sup>β</sup>λ (β')

Δ ο ξα σοι ο Θε ο ος η μων δο ξα σοι <sup>β</sup>λ

Σ υν τρο μοι και νη φω το χυ σι ι α <sup>Δ</sup>δλ α θρο ο

ως οι μα θη ται αι ελ λαμ φθεν τες <sup>β</sup>λ προς αλ λη λους ε

ω ρων <sup>π</sup>θ αμ βη θεν τες δε και προς γην κα τα κλι θε εν

τες <sup>β</sup>λ σοι τω Δε σπο τη των α παν των προσ ε κυ νη

σαν <sup>6</sup>λ

**Δ**οξα σοι ο Θεο ο ος η μων δοξα σοι <sup>6</sup>λ

**Η**χος εκ νε φε λης α νε πεμ πε το <sup>Δ</sup>θε ο ο

κτυπος βε βαι ων το θαυ μα <sup>6</sup>λ ο Πα τηρ γαρ των φω των

<sup>π</sup><sup>9</sup>ου τος ε στιν Υι ο ος ο α γα πη τος μου <sup>6</sup>λ

τοις α πο στο λους α νε βο ο α ου α κου ε τε <sup>6</sup>λ

**Δ**οξα σοι ο Θεο ο ος η μων δοξα σοι <sup>6</sup>λ

**Κ**αι να α κα τι δον τες και πα ρα δο ξα <sup>Δ</sup>φω

νη ης πα τρι κης εν ω τι σθε εν τες <sup>Δ</sup>εν Θα βωρ οι του

Λο γου υ πη ρε ται <sup>6</sup>λ εκ μα γει ον του αρ χε τυ

που ουτος υ παρχεια νε βοων ο Σωτηρ ημων

Δοξα σοι ο Θεοος ημων δοξα σοι

Εικωνων απαραλλακτη του οντος

σο τυπεσφραγις αναλλοιωτε Υιε Λογε

σοφια και βραχιων δεξια Υψιστουσθε

νος σε ανουμου μεν συν Πατρι τε και τω Πνευματι

ὠδὴ θ', κανὼν β'

ὁ εἰρμὸς

Ἦχος λ' ᾠδὴ Νη

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.93/1441#

Εφριξε πασα ακοη την απορητον Θεου

συκαταβασιν οπως ο Υψιστος εκωνκα



τηλ θε με χρι και σω μα τος παρ θε νι κης α πο γα

στρος γε νο με νος ανθρω πος δι ο την α χραν τον

Θε ο το κο ον οι πι στοι οι μεγα λυ υ νο ο μεν

Δ ο ο ξα σοι ο Θε ος η μων δο ξα σοι

να σου δει ξης εμ φανως την α πορ ρη τον δευ τε ραν

κα τα βα σιν ο πως ο υ ψι στος Θε ος ο φθη

ση ε στως εν με σω θε ων τοις α πο στο λοις εν Θα

βωρ Μω σει συν Η λι α τε αρ ρη τως ε λαμ φας δι

ο ο παν τε ες σε Χρι στε ε μεγα λυ υ νο ο μεν

Δ ο ξα Πα τρι ι και Υι ω και α γι ω Πνευ μα

τι <sup>ν</sup> **δλ**

**Δ** ευ τε μοι πει θε σθε λα οι <sup>Δ</sup> **δλ** α να βαν τες εις το

ο ρος το α γι ον το ε που ρα νι ον <sup>Δ</sup> **δλ** α υ λως

στω ω μεν εν πο λει ζων τος Θε ου <sup>ν</sup> **δλ** και ε πο πτευ σω

μεν νο ι θε ο τη τα α υ λον Πα τρος και Πνευ μα τος <sup>Δ</sup> **δλ**

εν Υι ω μο νο γε νει ει α πα στρα α πτου ου σαν <sup>ν</sup> **δλ**

**Κ** αι νυν και α ει και εις τους αι ω νας των αι

ωνων α μην <sup>ν</sup> **δλ**

**Ε** θελ ξας πο θω με Χρι στε και ηλ λοι ω σας τω θει

ω σου ε ρω τι <sup>6</sup> **λκ** αλ λα κα τα φλε ξον πυ ρι α υ λω

τας α μαρ τι ας μου <sup>ε</sup> και <sup>λ</sup> εμ πλη σθη ναι της εν  
 σοι τρυ φης κα τα ξι ω σον <sup>ν</sup> ι να τας <sup>δ</sup> δυ ο σκιρ των  
 με γα λυ νω α γα θε ε πα ρου σι ι α ας σου <sup>ν</sup>

### Καταβασία θ' φδής

ἦχος πλ.δ'

Μυστικὸς εἶ Θεοτόκε παράδεισος, ἀγεωργήτως βλαστήσασα Χριστόν, ὑφ' οὗ τὸ τοῦ Σταυροῦ, ζωηφόρον ἐν γῆ, πεφυτούργηται δένδρον. Δι' οὗ νῦν ὑψουμένου, προσκυνοῦντες αὐτὸν σὲ μεγαλύνομεν.

Ὁ διὰ βρώσεως τοῦ ξύλου, τῷ γένει προσγενόμενος θάνατος, διὰ Σταυροῦ κατήργηται σήμερον· τῆς γὰρ προμήτορος ἢ παγγενῆς κατάρα διαλέλυται, τῷ βλαστῷ τῆς ἀγνῆς Θεομήτορος, ἣν πᾶσαι αἱ δυνάμεις τῶν οὐρανῶν μεγαλύνουσιν.

Σύντομος

Ἀργή

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

### Σύντομος

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Πέτρος Λαμπαδαρίου

ἦχος λ π δι Νη

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρηολόγιον 1903 σ.235#

Μ υ στι κος ει Θε ο το κε Πα ρα δει σος <sup>ν</sup> α γε

ωρ γη τως βλα στη σασα Χρι στον <sup>Δ</sup>υφ ου το του Σταυ ρου ζω

η φο ο ρον εν γη πε φυ του ουρ γη ται δε ενδρον <sup>γ</sup>δλ

δι ου νυν υ ψου με ε νου προσ κυ νου ουντες αυ τον σε με

γα <sup>\*</sup>λυ νο ο μεν <sup>γ</sup>δλ

<sup>\*</sup>λυ νο με ε ε ε ε ε εν <sup>γ</sup>δλ

ἑτέρα

**Ο** δι α βρω σε ω ως του ξυ υ υ λου τω γε νει

προσ γε νο με νος θανατος <sup>γ</sup>δλ δι α Σταυ ρου κα τη ηρ

γη ται ση μερον της γαρ προ μη το ρος η παγ γε νης

κα τα ρα δι <sup>γ</sup>δλ ι α λε λυ ται <sup>γ</sup>δλ τω βλα στω της α

γνη ης Θε ο μη το ρος ην πα σαι αι δυ να α μεις των

ου ρα νω ωνμεγα λυ νου σι ι ι ι γ δλ

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Ἦχος λ π δλ Νη

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηολόγιον  
2007 σ.295/1644\*

Μ<sup>χ</sup> υ στι κος ει Θε ο το κε πα ρα δει σος γ δλ α

γε ωρ γη τως βλα στη σα σα Χρι στον Δ δλ υφ ου τοτου

Σταυ ρου ζω η φο ο ρον εν γη πε φυ του ουρ γη ται

δεν δρον γ δλ δι ου νυν υ ψου με ε νου Δ δλ προσ κυ νουν

τες αυτον σε μεγα λυ υ νο ο μεν γ δλ \* λυ νο με ε ε εν γ δλ

έτέρα

Ο<sup>χ</sup> δι α βρω σε ω ως του ξυ υ υ λου γ δλ τω

γε νει προσ γε νο μενος θα να τος β λ δλ δι α Σταυ ρου κα

τηρ γη ται σημε ρον της γαρ προ μη το ρος η παγ γε  
νης κα τα ρα δι α λε λυ ται τω βλα στω της α  
γνη η ης Θε ο μη το ρος η ην πασαι αι δυ  
να μεις των ου ρα νω ων μεγα λυ νου σι ι ι ι

Ἄρχη

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Πέτρου Λαμπαδαρίου

Ἦχος λ ρ δὲ Νη

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.91#

Μ υ στι κος ει ει Θε ο το ο ο κε ε πα ρα δι σο ος  
α γε ωρ γη τως βλα στη η η σα σα Χρι ι στον  
υφ ου ου το του ου στα α αυ ρου ζω η φο ο ρον  
ε εν γη πε φυ υ του ου ου ουρ γη ται αι αι

δε ε ε εν δρον δι ου ου νυν υ ψου με ε ε

ε νου προσ κυ νου ου ου ουουν τε ε ες α αυ τον

σε με γα λυ υ υ υ υ νο ο ο ο μεν

λυ υ υ υ υ νο ο ο ο με ε ε ε ε ε

εν

έτέρα

Ο δι α βρω ω σε ω ω ω ως του ξυ υ υ λου

ου τω γε νει ει προσ γε νο ο ο με ε νος θα να το ος δι

α στα αυ ρου κα τη η η η ρ γη ται αι ση με ε ρο

ον της γαρ προ μη το ρο ο ος η πα γ γε ε νης κα

τα ρα α δι ι α α λε λυ ται αι τω βλα α στω της α

γνη η η ης Θε ο ο μη το ρο ος Ἀ ην πα

α σαι αι αι δυ υ να α α α μεις Ἀ των ου ρα νω

ων με γα λυ υ νου ου σι ι ι ι Ὡ

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Πέτρου Λαμπαδαρίου

Ἦχος λ π δι Νη

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.291/1640\*

Μ Ὑ στι κος ει ει Θε ο το ο ο κε ε Πα ρα δι σο

ος Ὡ α γε ωρ γη τως βλα στη η η σα σα Χρι ι

στον Ἀ υφ ου ου το του ου Στα α αυ ρου ζω η φο ο

ρον ε εν γη πε φυ του ου ου ουρ γη ται

αι αι δε ε ε εν δρον Ὡ δι ου ου νυν υ ψου



με ε ε ε νου προσ κυ νου ου ου ουουν τε ες α

α αυ τον σε με γα λυ υ υ υ νο ο ο ο μεν

\* τὸ τέλος σε ε ε με γα λυ νο ο με ε ε εν

ἑτέρα

Ο δι α βρω ω σε ω ω ω ως του ξυ υ υ

λου ου τω γε νει ει προσ γε νο με νος θα α να α

τος δι ι α Στα αυ ρου κα τη η η ρ γ η η ται ση με ρο

ον της γαρ προ μη το ρο ο ος η πα γ γε ε νης κα

τα α α ρα δι α α λε λυ υ ται αι τω βλα

στω της α γνη η ης Θε ε ο μη το ρο ος ην πα α σαι

αι αι δυ υ να α α α μεις <sup>Δ\*</sup> των ου ρα νω ωων

με γα λυ υ νου ου <sup>χ</sup> σι ι ι ι <sup>γ</sup>

\* τὸ τέλος <sup>Δ</sup> των ου ρα α α νω ωων <sup>γ'</sup> με γα λυ υ νου

<sup>χ</sup> ου σι ι ι ι <sup>γ</sup>

# Εἰς τὴν Κοίμησιν τῆς Θεοτόκου (προεόρτιες)

14 Αὐγούστου

ἦχος δ'

- α Ἀνοίξω τὸ στόμα μου, καὶ πληρωθήσεται Πνεύματος, καὶ λόγον ἐρεύξομαι, τῆ βασιλίδι Μητρί· καὶ ὀφθήσομαι, φαιδρῶς πανηγυρίζων, καὶ ἄσω γηθόμενος, ταύτης τὴν κοίμησιν.
- γ Τοὺς σοὺς ὕμνολόγους, Θεοτόκε, ἡ ζωσα καὶ ἄφθονος πηγῆ, θίασον συγκροτήσαντας, πνευματικὸν στερέωσον· κἄν τῇ σεπτῇ Κοιμήσει σου, στεφάνων δόξης ἀξίωσον.
- δ Τὴν ἀνεξιχνίαστον θείαν βουλήν, τῆς ἐκ τῆς Παρθένου σαρκώσεως, σοῦ τοῦ Ὑψίστου, ὁ προφήτης Ἀββακούμ, κατανοῶν ἐκραύγαζε· Δόξα τῇ δυνάμει σου Κύριε.
- ε Ἐξέστη τὰ σύμπαντα, ἐν τῇ σεπτῇ κοιμήσει σου· σὺ γὰρ ἀπειρόγαμε Παρθένε, γῆθεν μετέστης πρὸς αἰωνίους μονάς, καὶ πρὸς ἀτελεύτητον ζωὴν, πᾶσι τοῖς ὕμνουσί σε, σωτηρίαν βραβεύουσα.
- ς Τὴν θείαν ταύτην καὶ πάντιμον, τελοῦντες ἑορτὴν οἱ θεόφρονες, τῆς Θεομήτορος, δεῦτε τὰς χεῖρας κροτήσωμεν, τὸν ἐξ αὐτῆς τεχθέντα, Θεὸν δοξάζοντες.
- ζ Οὐκ ἐλάτρευσαν, τῇ κτίσει οἱ θεόφρονες, παρὰ τὸν κτίσαντα· ἀλλὰ πυρὸς ἀπειλήν, ἀνδρείως πατήσαντες, χαίροντες ἔψαλλον· Ὑπερύμνητε, ὁ τῶν πατέρων Κύριος, καὶ Θεὸς εὐλογητὸς εἶ.
- η Αἰνοῦμεν, εὐλογοῦμεν καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον.
- η Παῖδας εὐαγεῖς ἐν τῇ καμίνῳ, ὁ τόκος τῆς Θεοτόκου διεσώσατο, τότε μὲν τυπούμενος· νῦν δὲ ἐνεργούμενος, τὴν οἰκουμένην ἄπασαν, ἀγείρει ψάλλουσιν· Τὸν Κύριον ὕμνεῖτε τὰ ἔργα, καὶ ὑπερυψοῦτε, εἰς πάντας τοὺς αἰῶνας.

Σύντομοι

Ἀργαὶ

Σύντομοι

ᾠδὴ α'

ἦχος δ' ᾠδὴ Ββ

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.330#

**Α** νοι ξω το στο μα μου και πλη ρω θη σε ται

πνευ μα τος <sup>6</sup> και λο γον ε ρευ ξομαι τη βασι λι δι

Μητρι και ο φθη σομαι φαι δρωσ παν η γυ ρι ζων <sup>π 9</sup>

και α σωγη θεο μενος ταυ της την Κοι μησιν <sup>6</sup> *ῶδὴ γ'*

**Τ** ους σου ους υ μνο λο γους Θε ο το ο κε η

ζω ω σα και α φθο νος πη γη <sup>Δ</sup> θι α σον συγ κρο τη

σαν τας πνευ μα τι κον στε ρε ω ω σον <sup>π 9</sup> καν τη σε πτη

Κοι μη σει Σου <sup>Δ</sup> *α' χορός* στε φα νων δο ξης α ξι ω σον <sup>6</sup> *ῶδὴ δ'*

**Τ** ην α νε ξι χνι α στον θει αν βου λην <sup>6</sup> της εκ

της Παρ θε ε νου σαρ κω σε ως σου του υ ψι στου

ο προ φη της Αβ βα κουμ κα τα νο ων ε κραυ

γα ζε δο ξατη δυ να μει σου Κυ ρι ε

←ειρμολόγιον ΖΩΗΣ

ῶδῆ ε'

ξε στη τα συμ παν τα εν τη σε πτη Κοι μη

σει σου συ υ γα αρ α πει ρο γα με Παρ θε ε νε γη

θεν με τε ε στης προς αι ω νι ι ους μο νας και

προς α τε λε ευτη τον ζω ην πα σι τοις υ μνου σι σε

τη ρι ι αν βρα βευ ουσα

ῶδῆς'

Την θει αν ταυ την και παν τι μον τε λουν τες ε ορ την

οι θε ο φρο νες της Θε ο μη τορος δευ τετας χει ρας κρο

τη σω μεν τον εξ αυ της τε χθε εν τα Θε ον δο ξα ζον

τες <sup>6</sup>λ

ᾠδὴ ζ'

Ουκ ε λα ατρε ευσαν τη κτι σει οι θε ο φρο νες πα

ρα τον κτι σα αν τα <sup>6</sup>λ αλ λα πυ ρο ος α πει λην <sup>6</sup>λ αν

δρει ως πα τη σαν τες χαι ροντες ε ψαλλον <sup>6</sup>λ υ περ υ μνη

η τε ο των πα τε ρων Κυ ρι ος και Θε ος ευ λο γη το

ος ει <sup>6</sup>λ

ᾠδὴ η'

Αι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου ου μεν

τον Κυ ρι ον <sup>6</sup>λ

Παι αι δας ευ α γεις εν τη κα μι ι νω ο

το οκος της Θεο το κου δι ε σω σα το ο το τε

μεν τυ που μενος νυν δε εν ερ γου με ε νος την οι

κου με νην α πα σαν α γει ρει φα αλλου ου σαν τον

Κυ ρι ο ον υ υ μνει τε τα ερ γα και υ περ υ ψου ου

τεεις παν τας τους αι ω ω να α α α ας

### Άγαι

Πέτρου Λαμπαδαρίου τοῦ Πελοποννησίου

Ἦχος Ββ

ᾠδὴ α'

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.234/1932\*

νοι ξω το στο ο μα α μου ου και πλη ρω θη

η σε ε ται Πνευ μα α το ος και λο ο γο ον ε ε ρε

ευ ξο ο μαι αι τη η βα α σι λι ι δι Μη η τρι ι

ι και ο φθη σο ο μαι αι φαι δρω ω ω ως  
πα αν η η γυ υ ρι ζωων και α α σω ω γη η θο ο  
με ε ε νος τα α α αυ τη ης τη ην Κοι μη η σι εν

ῥδῆγ'

Τους σου ου ου ους υ μνο ο λο ο γου ους Θε ε ο  
ο το ο ο ο κε ως ζω ω ω ω σα α και αι  
α α α φθο νος πη η γη θι α α σο ον συ υγ  
κρο τη η σα αν τας πνε ευ μα τι ι κον στε ρε ε ε ω ω  
ω ω σον καν τη σε πτη Κοι οι μη η σει ει σου

\* στε φα α α α α α α α νω ων δο ο ο



ο ξη ης α α ξι ω ω σο ον

\* Μουσικὸν Πεντηκοστάριον 2005 σ.551

στε φα α α νωνων...

ᾠδὴ δ'

Την α νε ξι ι χνι ι α στο ον θει ει α αν

βου ου λη η ην της εκ της Παρ θε νου σα αρ κω ω

ω σε ε ε ε ε ω ω ως σου του ου Υ υ ψι

στου ου ο προ φη η της Αβ βα α κουμ κα τα

νο ο ων ε ε κραυ γα α ζε ε δο ο ο ο ξα

τη δυ να α α α μει ει σου Κυ ρι ι ε ε

ᾠδὴ ε'

ε ξ ε στη η τα συ υμ πα αν τα α εν τη

σε πτη η Κοι οι μη η σει ει σου συ υ υ γα α

α α αρ α πει ει ρο ο γα α με Παρ θε ε ε νε ε <sup>6</sup>λ

γη θεν με τε ε ε ε ε στης προς αι ω ω ω νι ι

ι ι ι ου ους μο ο ο νας και αι προ ος α

τε λε ευ τη η το ον ζω ω η η η ην πα α σι ι

τοι οις υ μνου σι ι σε ε ε ε την ει ει ρη η η η νη ην

βρα βε ευ ουου σα α <sup>6</sup>λ ῶδης'

**Τ** ην θει αν τα αυ τη ην και πα αν τι ι μον τε λου ουν

τε ες ε ε ο ορ τη ην οι οι θε ε ο ο ο

φρο ο νες της Θε ο μη η η το ο ο ο ρος <sup>π</sup>9 δευ τετας

χει ρα α ας χρο τη η σω ω μεν <sup>Δ</sup> τον εξ αυ τη

ης τε ε χθε ε εν τα Θε ε ο ον δο ξα ζο ον τε ες <sup>6</sup> λ <sup>φδὴ ζ'</sup>

**Ο** υκ ε λα α α τρε ε ε ευ σαν τη κτι ι

σει ει οι οι θε ο φρο ο νες πα ρα το ο ον κτι ι

σα α α αν τα α <sup>6</sup> λ <sup>αλ</sup> λα α α α πυ ρο ος α πει ει

λη ην αν δρει ει ω ως πα α τη η σα αν τες χαι αι ρο ον

τες ε ψα αλ λο ον <sup>6</sup> λ <sup>υ</sup> περ υ υ υ μνη η

η η τε ε <sup>π</sup> <sup>9</sup> ο των πα τε ρω ων Κυ ρι ι ο ος

και Θε ε ος ε ευ λο γη η το ο ος ει ει <sup>6</sup> λ <sup>φδὴ η'</sup>

**Α** ι <sup>σ</sup> <sup>χ</sup> νου μεν ευ λο <sup>χ</sup> γου μεν και προσ κυ νου ου ου ου

με εν τον Κυ υ ρι ι ο ον

Π αι αι αι αι δας ευ α γει εις εν τη η κα μι ι

ι νω ω ο το ο ο ο ο οκος της Θε ε

ο το οκου δι ε ε σω ω σα α το το ο τε ε με

εν τυ που με ε νο ος νυ υν δε ε εν ερ γου ου

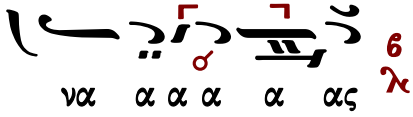
ου με ε ε ε νος την οι κου με ε νη ην α πα α

σαν α γει ει ρει ει ει ψα α α αλ λου ου ου

σαν τον Κυ υ υ ρι ι ι ι ο ο ο ον υ υ μνει

τε ε τα α ερ γα α και αι υ περ υ ψου ου ου

ου τε ε εις πα αν τας τους αι ω ω ω ω ω



## Τιμιωτέρα

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

Λουκᾶ κεφ. 1

ἤχος δ'

- ∴ Μεγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἠγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ σωτῆρί μου. 46-47
  - ∴ Ὅτι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48
  - ∴ Ὅτι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50
  - ∴ Ἐποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσκόρπισεν ὑπερηφάνους διανοίᾳ καρδίας αὐτῶν. 51
  - ∴ Καθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐπέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξάπέστειλε κενούς. 52-53
  - ∴ Ἀντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55
- Τὴν Τιμιωτέραν τῶν Χερουβίμ, καὶ ἐνδοξοτέραν ἀσυγκρίτως τῶν Σεραφίμ, τὴν ἀδιαφθόρως Θεὸν Λόγον τεκοῦσαν, τὴν ὄντως Θεοτόκον, σὲ μεγαλύνομεν.**

Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

## Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου

Λουκᾶ κεφ. 1

ἤχος δ'

- ∴ Μεγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἠγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ σωτῆρί μου. 46-47
- ∴ Ὅτι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48
- ∴ Ὅτι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50

∴ Ἐποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσκόρπισεν ὑπερηφάνους διανοία καρδίας αὐτῶν.

51

∴ Καθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξάπέστειλε κενούς. 52-53

∴ Ἀντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55

Πέτρου Λαμπαδαρίου

Ἦχος δὲ Ββ

Πανδέκτη Ὄρθρος 1850 σ.502#

Την τιμιωτεραν των Χερουβιμ και ενδοξο  
 τεραν ασυγκριτως των Σεραφιμ την αδια  
 φθορως Θεον Λογον τεκουσαν την οντως Θεο  
 οκονσεμεγααλυνομεν

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Ἦχος δὲ Ββ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Τριώδιον Β'  
2003 σ.26#

Μεγαλυνη ψυχη μου τον Κυριον  
 και ηγαλια σε το πνευμα μου επιτω Θε

ω ω τω σω τη ριμου <sup>6</sup>  
<sup>λ</sup>

**T** ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ <sup>6</sup>  
<sup>λ</sup> και εν <sup>σ</sup>δο

ξο τε ραν <sup>σ</sup>α συγ <sup>σ</sup>κρι τως των <sup>6</sup>  
<sup>λ</sup> Σε ρα φιμ <sup>σ</sup>την α δι α

φθο ρως <sup>σ</sup>Θε ον <sup>σ</sup>Λο ο γον τε κου σαν <sup>6</sup>  
<sup>λ</sup> την ον τως <sup>σ</sup>Θε ο

το κον σε μεγα λυ νομεν <sup>6</sup>  
<sup>λ</sup>

**O** <sup>λ</sup> τι ε πε βλε ψεν ε πι την τα πει νω σιν

της δου λης <sup>σ</sup>αυ του <sup>6</sup>  
<sup>λ</sup> ι δου γαρ α πο του <sup>λ</sup> νυν μα κα

ρι ου σι με πα σαι αι γε νε αι <sup>6</sup>  
<sup>λ</sup>

**T** ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ <sup>6</sup>  
<sup>λ</sup> και εν <sup>σ</sup>δο

ξο τε ραν <sup>σ</sup>α συγ <sup>σ</sup>κρι τως των <sup>6</sup>  
<sup>λ</sup> Σε ρα φιμ <sup>σ</sup>την α δι α

φθο ρως Θε ον Λο ο γον τε κου σαν <sup>6</sup>λκ την ον τως Θε ο

το κον σε μεγα λυ νομεν <sup>6</sup>λκ

<sup>6</sup>χ Ο τι ε ποι η σε μοι με γα λει α ο δυ να

τος <sup>6</sup>λκ και α γι ον το ο νο μα αυ του <sup>6</sup>λκ και το ε λε

ος αυ του εις γε νε <sup>6</sup>χ αν και γε νε αν τοις φο βου

με νοις αυτον <sup>6</sup>λκ

<sup>6</sup>χ Τ ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ <sup>6</sup>λκ και εν

δο ξο τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ <sup>6</sup>λκ την α δι

α φθο ο ρως Θε ον Λο ο γον τε κου σαν <sup>6</sup>λκ την ον τως

Θε ο το κον σε ε μεγα λυ νομεν <sup>6</sup>λκ



Ε ποι η σε κρα τος εν βρα χι ο νι αυ

του δι ε σκορ πι σεν υ περ η φα νους δι α νοι α

καρ δι ας αυτων

Τ ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ και εν

δο ξο τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ την α δι

α φθο ο ρως Θε ον Λο ο γον τε κου σαν την ον τως

Θε ο το κον σε ε μεγα λυ νο μεν

Κ α θει λε δυ να στας α πο θρο νων και υ υ

ψω σε τα πει νους πει νων τας εν ε πλη σεν α γα

θων και πλου τουν τας εξ α πε στει λε κε νους

Την τιμιωτεραν των Χερουβιμ και ενδοξο

τεραν ασυγκριτως των Σεραφιμ την αδιαφθο

ρωσ Θεοονλογουσαν την οντως Θεο

τοκον σεεμεγαλυνομεν

Αντελαβετο Ισραηλ παιδος αυτου

μνησθηναι ελεους καθως ελαλησε προς τους πα

τερας ημων τω Αβρααμ και τω σπερματι αυ

του εως αιωνος

Την τιμιωτεραν των Χερουβιμ και ενδοξο

τεραν ασυγκριτως των Σεραφιμ την αδιαφθο

ρως <sup>Δ</sup> Θε ο ον Λο γον τε κου σαν <sup>π</sup> την ον τως Θε ο

το κον σε ε μεγα λυ νο μεν <sup>6</sup> <sup>λ</sup>

## Καταβασία θ' φδῆς

ἦχος δ'

Ἄπας γηγενῆς, σκιρτάτω τῷ πνεύματι, λαμπαδουχούμενος· πανηγυριζέτω δέ, ἀύλων νόων, φύσις γεραίρουσα, τὴν ἱεράν μετάστασιν τῆς Θεομήτορος, καὶ βοάτω· Χαίροις παμμακάριστε, Θεοτόκε ἀγνή, ἀειπάρθενε.

Σύντομος

Ἀργή

Ἀργή (διασκ. Παπαγιάννη)

## Σύντομος

φδῆ θ'

ἦχος <sup>Δ</sup> Βα

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Ειρμολόγιον 1903 σ.335#

α πας γη γε νης σκιρ τα τω τω πνευ μα τι λαμ πα δου

χου με νος <sup>6</sup> <sup>λ</sup> παν η γυ ρι ζε τω ω δε <sup>π</sup> <sup>9</sup> α υ

λων νο ο ων φυ σις γε ραι ρου σα <sup>6</sup> <sup>λ</sup> την ι ε ραν Με

τα στα σιν της Θε ο μη η το ο ρος <sup>Δ</sup> και βο α

α α α α α τω χαι ρις παμ μα κα ρι στε Θε ο

το κε α γνη η α ει παρ θε νε

παρ θε νε ε ε ε ε

Ἄεγι

Ἦχος ΒϠ

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Ειρμολόγιον 1905 σ.55#

α πας γη γε νη η ης σχιρ τα τω τω πνε ευ μα

τι ι λα αμ πα α δου χου με ε νο ο ος παν η γυ

υ ρι ζε ε ε τω ω ω δε α υ λων νο ο

ο ο ω ω ν φυ υ σι ις γε ραι αι ρου ου σα α την ι

ε ρα αν Με ε τα α στα α σιν της Θε ο ο ο ο μη

η η η η το ο ο ο ρο ο ος και αι βο α α

α α τω <sup>Δ</sup>χαι αι ροι οις πα αμ μα κα ρι ι στε ε <sup>β λ</sup>

Θε ο το ο κε α γνη η η η α ει πα αρθε ε ε νε ε ε

ε ε <sup>β λ</sup>

Ἄρχή (διασκ. Παπαγιάννη)

ὠδὴ θ'

Ἦχος <sup>Δ</sup>λι Βα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικὸν Μηνολόγιον  
2007 σ.237/1936\*

<sup>χ</sup>α πας γη γε νη η ης σχιρ τα τω τω πνε ευμα

τι ι λααμ πα α δου χου με ε νο ος <sup>β λ</sup> παν η γυ υ

υ ρι ζε ε ε τω ω ω δε <sup>π ρ</sup> α υ λωων νο ο

ο ο ων φυ υ σι ις γε ραι αι ρου ου σα α <sup>β λ</sup> την ι ε

ρα αν Με ε τα α στα α σιν της Θε ο ο ο μη η

η η το ο ο ο ρο ο ος και αι βο α α α α

τω και αι ροι οισ πα αμ μα κα ρι ι στε ε Θε

ο το ο κε α γνη η η η α ει πα αρ θε ε ε νε ε ε

ε ε

# Εἰς τὴν Κοίμησιν τῆς Θεοτόκου 15/8

15 Αὐγούστου

Ῥοδὴ α'

ἤχος α'

Πεποικιλμένη τῇ θείᾳ δόξῃ, ἡ ἱερά καὶ εὐκλεῆς Παρθένε μνήμη σου, πάντας συνηγάγετο, πρὸς εὐφροσύνην τοὺς πιστοὺς, ἑξαρχούσης Μαρίας, μετὰ χορῶν καὶ τυμπάνων τῷ σῶ, ἄδοντας Μονογενεῖ, ἐνδόξως ὅτι δεδόξασται.

ἤχος δ'

Ἀνοίξω τὸ στόμα μου, καὶ πληρωθήσεται Πνεύματος, καὶ λόγον ἐρεύξομαι τῇ βασιλίδι Μητρί, καὶ ὀφθήσομαι, φαιδρῶς πανηγυρίζων, καὶ ἄσω γηθόμενος, ταύτης τὴν Κοίμησιν.

Ῥοδὴ γ'

ἤχος α'

Ἡ δημιουργική, καὶ συνεκτική τῶν ἀπάντων, Θεοῦ σοφία καὶ δύναμις, ἀκλινη ἀκράδαντον, τὴν Ἐκκλησίαν στήριξον Χριστέ· μόνος γὰρ εἶ ἅγιος, ὁ ἐν ἁγίοις ἀναπαυόμενος.

ἤχος δ'

Τοὺς σοὺς ὑμνολόγους, Θεοτόκε, ἡ ζωσα καὶ ἄφθονος πηγῆ, θίασον συγκροτήσαντας πνευματικόν, στερέωσον· κἂν τῇ σεπτῇ Κοιμήσει σου, στεφάνων δόξης ἀξίωσον.

Ῥοδὴ δ'

ἤχος α'

Ῥήσεις προφητῶν καὶ αἰνίγματα, τὴν σάρκωσιν ὑπέφηναν, τὴν ἐκ Παρθένου σου Χριστέ, φέγγος ἀστραπῆς σου, εἰς φῶς ἔθνῶν ἐξελεύσεσθαι, καὶ φωνεῖ σοι ἄβυσσος, ἐν ἀγαλλιάσει, τῇ δυνάμει σου δόξα φιλόανθρωπε.

ἤχος δ'

Τὴν ἀνεξιχνίαστον θείαν βουλήν, τῆς ἐκ τῆς Παρθένου σαρκώσεως, σοῦ τοῦ Ὑψίστου, ὁ προφήτης Ἀββακούμ, κατανοῶν ἐκράυγαζε· Δόξα τῇ δυνάμει σου Κύριε.

Ῥοδὴ ε'

ἤχος α'

Τὸ θεῖον καὶ ἄρρητον κάλλος, τῶν ἀρετῶν σου Χριστέ διηγῆσομαι· ἐξ αἰδίου γὰρ δόξης συναΐδιον, καὶ ἐνυπόστατον λάμπας ἀπαύγασμα, παρθενικῆς ἀπὸ γαστροῦ, τοῖς ἐν σκότει καὶ σκιᾷ, σωματωθεῖς ἀνέτειλας ἥλιος.

ἤχος δ'

Ἐξέστη τὰ σύμπαντα, ἐν τῇ σεπτῇ Κοιμήσει σου· σὺ γὰρ ἀπειρόγαμε Παρθένε, γῆθεν μετέστης πρὸς αἰωνίους μονάς, καὶ πρὸς ἀτελεύτητον ζωὴν, πᾶσι τοῖς ὑμνοῦσί σε, σωτηρίαν βραβεύουσα.

Ῥοδὴ ε'

ἤχος α'

Ἄλιον ποντογενές, κητῶν ἐντόσθιον πῦρ, τῆς τριημέρου ταφῆς σου τι προεικόνισμα, οὗ Ἰωνᾶς ὑποφήτης ἀναδέδεικται· σεσωσμένος γὰρ ὡς καὶ προϋπέπρωτο, ἀσινῆς ἐβόα·  
Θύσω σοι μετὰ φωνῆς αἰνέσεως Κύριε.

ἤχος δ'

Τὴν θείαν ταύτην καὶ πάντιμον, τελοῦντες ἑορτὴν οἱ θεόφρονες, τῆς Θεομήτορος, δεῦτε τὰς χεῖρας κροτήσωμεν, τὸν ἐξ αὐτῆς τεχθέντα Θεὸν δοξάζοντες.

Ῥοδὴ ε'

ἤχος α'

Ἰταμῶ θυμῷ τε καὶ πυρί, θεῖος ἔρωσ ἀντιταπτόμενος, τὸ μὲν πῦρ ἐδρόσιζε, τῷ θυμῷ δὲ ἐγάλα, θεοπνεύστῳ λογικῇ, τῇ τῶν ὁσίων τριφθόγγῳ λύρα ἀντιφθεγγόμενος, μουσικοῖς ὄργανοις ἐν μέσῳ φλογός, ὁ δεδοξασμένος, τῶν πατέρων καὶ ἡμῶν Θεὸς εὐλογητὸς εἶ.

ἤχος δ'

Οὐκ ἐλάτρευσαν τῇ κτίσει οἱ θεόφρονες, παρὰ τὸν κτίσαντα, ἀλλὰ πυρὸς ἀπειλὴν, ἀνδρείως πατήσαντες, χαίροντες ἔψαλλον· Ὑπερῦμνητε, ὁ τῶν πατέρων Κύριος, καὶ Θεὸς εὐλογητὸς εἶ.

Ῥοδὴ η'

ἤχος α'

Αἰνοῦμεν εὐλογοῦμεν καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον.

Φλόγα δροσίζουσαν ὁσίους, δυσσεβεῖς δὲ καταφλέγουσαν, ἄγγελος Θεοῦ ὁ πανσθενής, ἔδειξε παισί· ζωαρχικὴν δὲ πηγὴν εἰργάσατο τὴν Θεοτόκον, φθορὰν θανάτου, καὶ ζωὴν βλυστάνουσαν τοῖς μέλπουσι, τὸν δημιουργὸν μόνον ὑμνοῦμεν, οἱ λελυτρωμένοι, καὶ ὑπερυψοῦμεν εἰς πάντας τοὺς αἰῶνας.

ἤχος δ'

Παιῖδας εὐαγεῖς ἐν τῇ καμίνῳ, ὁ τόκος τῆς Θεοτόκου διεσώσατο, τότε μὲν τυπούμενος, νῦν δὲ ἐνεργούμενος τὴν οἰκουμένην ἀπάσαν, ἀγείρει ψάλλουσαν· τὸν Κύριον ὑμνεῖτε τὰ ἔργα, καὶ ὑπερυψοῦτε, εἰς πάντας τοὺς αἰῶνας.

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

☞ Σύντομοι ☞

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Πέτρου Λαμπαδαρίου

☞ Ἀργαί ☞

## Σύντομοι

### Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Ἦχος ᾠ Πα

Ῥοδὴ α'

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρηολόγιον 1903 σ.314#



Π ε ποι κιλ με νητη θει α δο ξη η ι ε ρα

και ευ κλε ης Παρ θε νε μνη μη σου παν τας συν η

γα γε το προς ευ φρο συ νητους πι στους εξ αρ χου σης Μα ρι

αμ με τα χο ρων και τυμ πα νων τω σω α δον τας μονο

γε νει εν δο ξως ο τι δε δο ο ξα α σται

ᾠδὴ α'

Ἦχος Βϛ


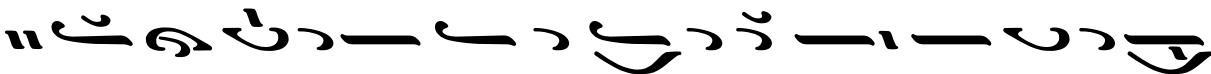






Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Ειρμολόγιον 1903 σ.330#


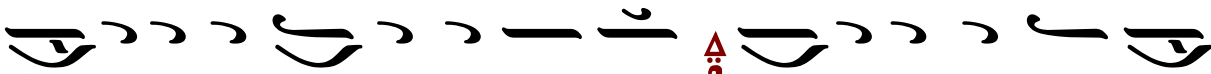

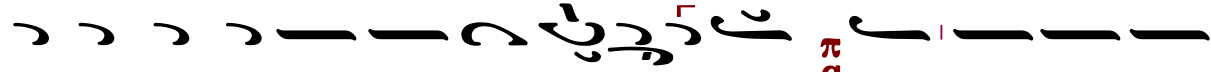

Α νοι ζω το στο μα μου και πλη ρω θη σε ται

πνευ μα τος και λο γον ε ρευ ξομαι τη βα σι λι δι

Μη τρι και ο φθη σο μαι φαι δρωσ πα νη γυ ρι ζων

και α σω γη θο μενος ταυ της την Κοι μη σιν

  
**Η** δη μι ουρ γι κη και συν ε κτι κη των α πα  
  
 αν των Θε ου σο φι α και δυ να μις α κλι νη α κρα  
  
 δαν τον την Εκ κλη σι αν στη ρι ξον Χρι στε  μο νος γαρ  
  
 ει α γι ος  ο εν α γι οις α να παυ ο ο με ε  
  
 νος 

  
**Τ** ους σου ους υ μνο λο γους Θε ο το ο κε η  
  
 ζω ω σα και α φθο νος πη γη  θι α σον συ γ κρο τη  
  
 σαν τας πνευ μα τι κον στε ρε ω ω σον  καν τη σε πτη

Κοι μη σεις σου <sup>Δ</sup> χορός α' στε φανων δοξης α ξι ωσον <sup>6 λ</sup>

ψδδδ'

Ἦχος <sup>Λ</sup> Πα

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Ειρμολόγιον 1903 σ.315#

**Ρ**ησεις προφητων και αι νιγμα τα την σαρκω σιν υ

πεφηναν <sup>π ρ</sup> την εκ Παρθενου σου Χριστε φεγγος αστρα

πης σου εις φως εθνων ε ξελευ σεσθαι <sup>π ρ</sup> και φωνει σοι

αβυσσοος εν αγαλι α ασει <sup>Δ</sup> τηδυναμει

σου δοξαφιλα ανθρωωπε <sup>π ρ</sup>

ψδδδ'

Ἦχος <sup>Λ</sup> Βα

Ειρμολόγιον  
«ΖΩΗ» 1955 σ.79#

**Τ**ην ανεξιχνη αστον θειαν βουλην <sup>6 λ</sup> της εκ

της Παρθενου σαρκω σεως <sup>6 λ</sup> σου του υψιστου <sup>6 λ</sup>

ο προ φη της Αβ βα κουμ <sup>ε λ</sup> κα τα νο ων ε κραυ

γα ζε <sup>Δ δ</sup> ε' χορός δο ξατη δυ να μει σου Κυ ρι ε <sup>ε λ</sup>

ὠδὴ ε'

Ἦχος <sup>4</sup>/<sub>4</sub> Πα

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Ειρμολόγιον 1903 σ.316#

**Τ** ο θει ον και αρ ρητον καλ λος <sup>Δ δ</sup> των α ρε των σου Χρι

στε ε δι η γη σομαι εξ α ι δι ου γαρ δο ξης συν

α ι δι ον και εν υ πο στα τον λα αμ ψας α παυ γα

σμα παρ θε νι κης α πο γα στρος <sup>Δ δ</sup> τοις εν σχο τει και

σκι α σω μα τω θεις α νε τειλας η η λι ι ος <sup>π ρ</sup>

ὠδὴ ε'

Ἦχος <sup>4</sup>/<sub>4</sub> Ββ

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Ειρμολόγιον 1903 σ.332#

**Ε** ξε στη τα συμ παν τα εν τη σε πτη Κοι μη

σει σου σου υ γα αρ α πει ρο γα με Παρ θε ε νε γη

θεν με τε ε στης προς αι ω νι ι ους μο νας και

προς α τε λε ευ τη τον ζω ην πα σι τοις υ μνου σι σε

χορὸς ἀ σω τη ρι ι αν βρα βευ ουσα

ᾠδὴ ε'

### Ἦχος ᾠ Πα

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Ειμολόγιον 1903 σ.317#

α λι ον πον το γε νες κη τω ον εν το σθι ον πυρ

της τρι η με ρου τα φης σου τι ι προ ει κο νι σμα

ου Ι ω νας υ πο φη της α να δε δει κται σε

σω σμε νος γαρ ως και πρου πε πω το ο ο α σι νης ε

βο ο α θυ σω σοι με τα φω νης αι νε σε ως Κυ υ ρι ι

ε π ρ

ὠδὴ ε'

Ἦχος Δ' Β8

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Ειρμολόγιον 1903 σ.333#

Την θει αν ταυ την και παν τι μον τε λουν τες ε ορ  
 την οι θε ο φρο νες της Θε ο μη τορος δευ τε τας χει  
 ρας κρο τη σω μεν τον εξ αυ της τε χθε εν τα β' χορός  
 Θε ον δο ξα ζον τες

ὠδὴ ε'

Ἦχος ρ' Πα

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Ειρμολόγιον 1903 σ.318#

Ι τα μω θυ μω τε και πυ ρι θει ος ε ε ρως αν τι  
 ται το με νος το μεν πυρ ε δρο σι ι ζε τω θυ μω δε ε  
 γε ε λα θε ο πνευ στω λο γι κη τη των ο

σι ων τριφθογγωλυ υρααν τι φθειγγο με νος <sup>π 9</sup> μου

σι κοις ορ γα νοις εν με σω πυ ρο ο ος ο δε δο ξα

σμε ε νος των πα τε ρων και η μων Θε ος ευ λογη τος

ει <sup>π 9</sup>

ᾠδὴ ζ'

Ἦχος δ' Β8

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Ειρμολόγιον 1903 σ.334#

**Ο**υκ ε λα ατρε ευσαν τη κτι σει οι θε ο φρο νες πα

ρα τον κτι σα αν τα <sup>6 λ</sup> αλ λα πυ ρο ος α πει λη <sup>6 λ</sup> αν

δρει ως πα τη σαν τες χαι ροντες ε ψαλλον <sup>6 λ</sup> υ περ υ μνη

η τε ο των πα τε ρων Κυ ρι ος *χορός α'* και Θε ος ευ λο

γη το ος ει <sup>6 λ</sup>

Αἰ νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου μεν τον

Κυ ρι ον ᾠ

Φ λο γα δρο σι ζου σαν ο σι ους ᾠ δυσ σε βεις δε

κα τα φλε γου σαν Αγ γελος Θε ου ο παν σθε νης ε δει

ξε παι σι ζω αρ χι κην δεπη γην ειρ γα σα το την Θε

ο το κον ᾠ φθο ραν θα να του και ζω ην βλυ στα νου

σαν τοις μελ που σι π ρ τον δη μι ουρ γον μο νον υ

μνου ου με εν οι λε λυ τρω με ε νοι και υ περ υ

ψου ου μενεις παν τας τους αι ω νας π ρ



\* να α α ας π ρ

ᾠδὴ η'

Ἦχος Β8

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Ειρμολόγιον 1903 σ.335#

**Π**αι αι δας ευ α γεις εν τη κα μι ι νω ο  
 το ο κος της Θε ο του δι ε σω σα το ο το τε  
 μεν τυ που μενος νυν δε ε νερ γου με ε νος την οι  
 κου με νην α πα σαν α γει ρει ψα αλλου ου σαν τον  
 Κυ ρι ο ον υ υ μνει τε τα ερ γα και υ περ υ ψου ου  
 τειεις παν τας τους αι ω ω να α α α ας

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

ᾠδὴ α' κανών α'

Ἦχος Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.138/1487#

Π ε ποι κιλ με νητη θει α δο ξη η ι ε  
ρα και ευ κλε ης Παρ θε νε μνη μη σου παν τας συν  
η γα γε το προς ευ φρο συ νην τους πι στους εξ αρ χου  
σης Μα ρι αμ με τα χο ρων και τυμ πα νων τω  
σω ω α δον τας μο νο γε νει εν δο ξως ο τι δε  
δο ο ξα α σται

ὡδὴ ἀ' κανῶν β'

Ἦχος Ββ

πρωτ. Κων. Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.139/1488#

Α νοι ξω το στο μα μου και πλη ρω θη σε  
ται πνευ μα τος και λο γον ε ρευ ξομαι τη βα σι  
λι δι Μη τρι και ο φθη σομαι φαι δρωσ παν η γυ ρι

ζων <sup>π ρ</sup> και α σω γη θο μενος ταυ της την Κοι μη σιν <sup>β λ</sup>

ᾠδὴ γ' κανών α'

Ἦχος <sup>λ</sup> Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.141/1490#

**Η** δη μι ουρ γι κη και συν ε κτι κη των

α πα αν των Θε ου σο φι α και δυ να μιν <sup>π ρ</sup> α

κλι νη α κρα δαν τον την Εκ κλη σι αν στη ρι ξον Χρι

στε <sup>Δ</sup> <sup>Δ</sup> μο νος γαρ ει α γι ος ο εν α γι ος α

να παυ ο ο με ε νος <sup>π ρ</sup>

ᾠδὴ γ' κανών γ'

Ἦχος <sup>λ</sup> Ββ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.141/1490#

**Τ** ους σου ους υ μνο λο γους Θε ο το ο κε ως

ζω ω σα και α φθο νος πη γη <sup>Δ</sup> <sup>Δ</sup> θι α σον συγ κρο τη

σαν τας πνευματικόν στερεώωσον πικάντησε

πτη Κοιμησει σου ἀχορός στεφανωνδοξήσαξιωσον

ᾠδὴ δ' κανὼν α'

Ἦχος ᾠ Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικὸν Μηνολόγιον  
2007 σ.143/1492\*

Ρησεις προφητων και αι νιγματα την σαρκωσιν

υπεφηναν την εκ Παρθενου σου Χριστε φεγγος α

στραπης σου εις φως εθνων εξελευσεσθαι και φω

νεισοι αβυσσοος εν αγαλλια ασει τηδου

να μειςου δοξαφι λα ανθρωωπε

ᾠδὴ δ' κανὼν β'

Ἦχος ᾠ Ββ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικὸν Μηνολόγιον  
2007 σ.143/1492\*

Την α νεξ ι χνι α στον θει ει αν βου λην <sup>6</sup>της εκ

της Παρ θε νου σαρ κω σε ε ως σου του Υ ψι στου <sup>π</sup>ο

προ φη της Αβ βα κουμ <sup>6</sup>κα τα νο ων ε κραυ γα ζε <sup>Δ</sup> 6'

χορός <sup>ο</sup>δο ξατη δυ να μει σου Κυ ρι ε <sup>6</sup>λ

ᾠδὴ ε' κανὼν α'

Ἦχος <sup>4</sup>Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.143/1492\*

Το θει ον και αρ ρητον καλ λος <sup>Δ</sup>των α ρε των

σου Χρι στε ε δι η γη σο μαι <sup>π</sup>εξ α ι δι ου

γαρ δο ξης συν α ι δι ον <sup>Δ</sup>και εν υ πο στα τον

λα αμ ψας α παυ γα σμα <sup>π</sup>παρ θε νι κης α πο γα

στρος τοις εν σχο τει και σκι α <sup>π</sup> σω μα τω θεις α

νε τει λας η η λι ι ος <sup>π</sup>

ῥῥδῥ ε' κανῶν β'

Ἦχος  $\frac{4}{4}$  Ββ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.144/1493\*

Ε ξ ε στη τα συμ παν τα εν τη σε πτη Κοι μη

σει σου <sup>Δ</sup> συ υ γα αρ α πει ρο γα με Παρ θε ε νε <sup>6</sup> γη θεν

με τε ε στης προς αι ω νι ι ους μο νας <sup>Δ</sup> και προς

α τε λευ τη τον ζω ην <sup>Δ</sup> πα σι τοις υ μνου σι σε <sup>6</sup> α' χορός

σω τη ρι ι αν βρα βευ ου σα <sup>6</sup>



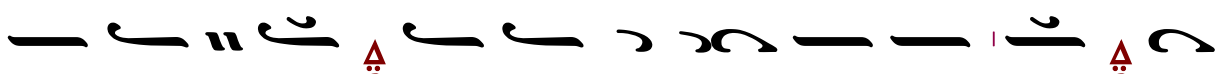




ῥῥδῥ ε' κανῶν α'



Ἦχος  $\frac{4}{4}$  Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.144/1493\*

Α λι ον πον το γε νες κη τω ον εν το σθι ον




 τα μω θυ μω τε και πυ ρι θει ος ε ε ρωσαν τι  

 τατ το με νος <sup>π ρ</sup> το μεν πυρ ε δρο σι ι ζε τω θυ μω δε  

 ε γε ε λα <sup>Δ ρ</sup> θε ο πνευ στω λο γι κη <sup>Δ ρ</sup> τη  

 των ο σι ων τρι φθογ γω λυ υ ρα αν τι φθεγ γο  

 με νος <sup>π ρ</sup> μου σι κοις ορ γα νοις εν με σω φλο  

 γος <sup>Δ ρ</sup> ο δε δο ξα σμε νος των πα τε ρων και η μων  

 Θε ος ευ λο γη τος ει <sup>π ρ</sup>


 Ο υκ ε λα α τρε ευ σαν τη κτι σει οι θε ο φρο νες πα  




ρα τον κτι σα αν τα <sup>ε λ</sup> αλ λα πυ ρο ος α πει λην <sup>ε λ</sup>  
 αν δρει ως πα τη σαν τες χαι ρον τες ε ψαλ λον <sup>ε λ</sup> υ  
 περ υ μνη η τε <sup>π ρ</sup> ο των πα τε ρων Κυ ρι ος α' χορός και  
 Θε ος ευ λο γη το ος ει <sup>ε λ</sup>

ᾠδὴ ἡ' κανὼν α'

Ἦχος ᾠ Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.145/1494\*

Δ ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου μεν τον  
 Κυ ρι ον <sup>Δ ρ</sup>  
 Φ λο γα δρο σι ζου σαν ο σι ους <sup>Δ ρ</sup> δυσ σε βεις δε κα τα  
 φλε γου σαν <sup>π ρ</sup> αγ γελος Θε ου ο παν σθε νης ε δει ξε παι  
 σι <sup>Δ ρ</sup> ζω αρ χι κην δε πη γην ειρ γα σα το την

Θε ο το ο κον <sup>Δ</sup>φθο ραν θα να του και ζω ην βλυ

στα νου σαν τοις μελ που σι <sup>π</sup>τον δη μι ουρ γο ον

μο νον υ μνου ου με εν οι λε λυ τρω με ε νοι <sup>Δ</sup>και

υ περ υ ψου μεν εις παν τας τους αι ω <sup>π</sup>νας

\* <sup>π</sup>να α α ας

ῥδὴ ἡ' κανὼν β'

Ἦχος <sup>Δ</sup> Βϩ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.146/1495\*

**Π**αι αι δας ευ α γεις εν τη κα μι ι νω <sup>Δ</sup>ο

το ο κος της Θε ο το κου δι ε σω σα το <sup>Δ</sup>το τε

μεν τυ που μενος <sup>6</sup>λχ νυν δε εν εργου με ε νος <sup>π</sup>την <sup>σ</sup>οι

κου με νην α πα σαν α γει ρει ψα αλλου ου σαν <sup>Δ</sup>

τον Κυ ρι ο ον υ μνει τε τα ερ γα και υ περ

υ ψου ου τε εις παν τας τους αι ω ω νας

ω ω να α α α ας

### Αργαί

Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Παπαγιάννη)21

Ῥδῆ α'

Ἦχος Ῥ Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.146/1495\*

Π ε ποι κιλ με ε ε ε νη τη θει ει α δο ο ο

ξη η η ι ι ε ε ρα και αι ε ευ κλε

η η ης Πα αρ θε ε νε ε μνη η η μη η η

σου ου πα αν τας συν η γα γε ε το ο προ ος

21 Ὅπως εἰς τὰς καταβασίας τῶν ἄλλων ἑορτῶν, οὕτω καὶ εἰς τὰς παρούσας ἐπεφέραμεν ἐλαφρὰς τινὰς διορθώσεις πρὸς ἀποφυγὴν παρατονισμῶν καὶ ὀρθοτέραν ἀπόδοσιν τοῦ νοήματος. Οὐσιαστικωτέρας μεταβολὰς παραθέτομεν μεθ' ἐκάστην καταβασίαν. [πρωτ.Κων.Παπαγιάννης]

ε ευ φρο συ νη ην του ους πι ι στου ου ου ους εξ

αρ χου ουου ση η ης Μα α ρι ι ι αμ με τα

α α α χο ο ρων και αι τυ υμ πα α α νων τω σω ω

ω ω ω ω ω ω ω ω ω ω ω ω α α

δον τα ας μο νο ο γε ε νει εν δο ο ξω ως ο

τι ι δε ε δο ο ο ο ο ξα α α σται

και ευ κλε η ης Πα αρ θε ε νε ε

το προς ευ φρο συ νη ην του ους πι ι

εξ αρ χου ου ση ης Μα α ρι ι ι αμ με τα χο

ρων και αι τυ υμ πα α α νω ων τω σω ω α α

δον τα ας μο

ᾠδὴ α'

Ἦχος Ββ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.234/1932\*

Α νοι ξω το στο ο μα α μου ου και πλη ρω θη η

σε ε ται Πνευ μα α το ος και λο ο γο ον ε ε ρε ευ

ξο ο μαι αι τη η βα α σι λι ι δι Μη η τρι ι ι

και ο φθη σο ο μαι αι φαι δρω ω ω ως πα αν

η η γυ υ ρι ζων και α α σω ω γη η θο ο με

ε ε νος τα α α αυ τη ης τη ην Κοι μη η σι ιν

ᾠδὴ γ'

Ἦχος Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.147/1496\*

Η δη μι ου ουρ γι ι κη και συν ε ε κτι κη

τω ων α α πα α αν των Θε ου σο φι ι ι ι α

α και αι δυ υ υ να μι ις α κλη νη

η α κρα α δα αν το ο ον την Εκ κλη σι αν

στη η ρι ξον Χρι ι στε μο ο νος γα αρ ει

ει ει α α γι ι ι ος ο εν α γι ι

οι οι οισ α να α πα αυ ο ο ο ο ο με ε

ε ε νος

α α κρα α δα αν τον την Εκ κλη σι ι αν στη

ο εν α γι ι οισ α να α πα αυ ο

ψδλ γ'

Ἦχος δὲ Ββ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικὸν Μηνολόγιον  
2007 σ.234/1932\*

**T** ους σου ου ου ους υ μνο ο λο ο γου ους Θε ε ο

ο το ο ο ο κε ως ζω ω ω ω σα α και αι

α α α φθο νος πη η γη θι α α σο ον συ υγ

κρο τη η σα αν τας πνε ευ μα τι ι κον στε ρε ε ε ω ω

ω ω σον καν τη σε πτη Κοι οι μη η σει ει σου χορός α'

\* στε φα α α α α α α α α νω ων δο ο ο

ο ξη ης α α ξι ω ω σο ον

\* στε φα α α νων...

ῥοδὴ δ'

Ἦχος Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.148/1497\*

**P** η η η η σεις προ φη τω ω ων και αι νι ι

γμα α τα α την σα α αρ κω ω σι ιν

υ υ πε ε ε φη η να αν την εκ Παρ θε ε

ε ε νου ου ου σου Χρι ι στε φεγ γος α στρα α πη

η ης σου ου εις φως ε θνω ω ω ων ε εξ ε ε λε

ε ευ σε ε ε σθαι αι και φω νει ει σοι α α

βυ υσ σο ο ος ε εν α γαλ λι ι α α α σει

τη δυ να α μει ει σου ου ου δο ξα α φι ι

λα α α α αν θρω ω ω πε

την εκ Παρ θε ε νου σου Χρι ι στε φεγ γος

ψδη δ'

Ἦχος δ' Ββ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικὸν Μηνολόγιον  
2007 σ.235/1933\*



Την α νε ξι ι χνι ι α στο ον θει ει α αν

βου ου λη η ην της εκ της Παρ θε νου σα αρ κω ω

ω σε ε ε ε ε ω ω ως σου του ου Υ υ ψι

στου ου ο προ φη η της Αβ βα α κουμ κα τα

νο ο ων ε ε κραυ γα α ζε ε β' χορός δο ο ο ο

ξα τη δυ να α α α μει ει σου Κυ ρι ι ε ε

ῥοδὴ'

### Ἦχος ♪ Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.149/1498\*

Το θει ει ει ει ον και αρ ρη η το ον κα α αλ

λο ος των α α ρε τω ων σου Χρι στε ε ε ε

δι ι η η γη η η σο ο μαι αι εξ α ι

δι ι ου ου ου γαρ δο ο ξης συ υν α α α

ι ι δι ι ι ον και εν υ πο ο στα α τον

λα α α αμ φα ας α α πα α αυ γα α α σμα

α παρ θε νι κη η η ης α α α πο γα α

στρος τοις εν σχο ο ο τει και σκι ι α σω μα

τω θει εις α α α νε τει ει λα ας η η η η

η λι ι ι ι ος

παρ θε νι κη η η ης α α πο

ᾠδὴ ε΄

Ἦχος δὲ Β΄

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.235/1933\*  
(διασκευή ΓΜ)

Εξ ἑστη ἡ τα συ υμ πα αν τα α εν τη

σε πτη η Κοι οι μη η σει ει σου συ υ υ γα α

α α αρ α πει ει ρο ο γα α με Παρ θε ε ε νε ε

γη θεν με τε ε ε ε ε στης προς αι ω ω ω νι ι

ι ι ι ου ους μο ο ο νας και αι προ ος α

τε λε ευ τη η το ον ζω ω η η η ην πα α σι ι

τοι οις υ μνου σι ι σε ε ε ε την ει ει ρη η η η νη ην

βρα βε ευ ουου σα α

ῥοδῆς'

Ἦχος ᾠ Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.149/1498\*

α\* λι ον πον το γε ε νες κη τω ω ο ον

εν το ο ο ο σθι ο ο ον πυ υρ της τρι ι η

με ε ρου ουτα α φη ης σου τι ι ι προ ει κο ο

νι ι σμα α ου ου ου Ι ι ω ω ω νας υ πο

φη η τη ης α α να α δε ε ε δει ει ει κται αι

σε σω σμε ε νος γα α αρ ως και αι πρου

ου ου πε ε πω ω ω το ο ο α α σι νη ης

ε ε βο ο ο α θυ σω ω σοι οι με τα

φω νη ης αι αι αι νε σε ε ω ως Κυ υ υ υ

υ ρι ι ι ι ε

\* Α λι ονπον το

ψδδζ'

# Ἦχος δ' Βδ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.235/1934\*

Την θειαν ταυτηην και πααντιιμον τελου ουν  
 τε ες εε οορτη ηην οι οι θεε ο ο ο  
 φρο ονεστης Θεο μη ηη το ο ο ο ρος δευ τετας  
 χειρα αας κροτη ησω ω μεν τον εξ αυτη  
 ης τε εχθε εντα β' χορός Θεε ο ον δοξα ζο ον τε

εσ β  
εσ γ

ψδδζ'

# Ἦχος γ' Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.150/1499\*

τα μω θυ μω ω ω ω τε ε ε και πυ υ  
 ρι θει ος ε ε ρω ως α α α αν τι ι

τα ατ το ο ο με ε νο ος π<sup>9</sup> το με εν

πυ υρ ε δρο ο σι ι ζε Δ<sup>1</sup> τω θυ υ μω ω

ω δε ε ε γε ε ε λα Δ<sup>1</sup> θε ο πνε ε ευ

στω ω ω λο ο γι ι ι κη π<sup>9</sup> τη των ο σι ι

ων τρι φθο ο γ γω ω λυ υ υ ρα α α αν τι ι

φθε εγ γο ο ο με ε νο ος π<sup>9</sup> μου σι κοι οι οι

οις ο ορ γα α α νοις π<sup>9</sup>\* εν με ε ε σω ω φλο ο

γο ο ο ος ο ο δε δο ο ξα α σμε ε ε

νο ος Δ<sup>1</sup> των πα τε ε ρων και αι η η μων Θε ε ος

ε ευ λο ο γη η η το ο ο ος ει π<sup>9</sup>

\*   
θει ος ε ε ρως α αν τι ι

\*   
α αν τι ι φθε εγ

\*   
εν με ε ε σω ω φλο ο ο γος ο δε

δο ξα σμε ε ε ε νο ος των πα

ᾠδὴ ζ'

Ἦχος δ' Βϛ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικὸν Μηνολόγιον  
2007 σ.236/1934\*

**Ο**   
υκ ε λα α α τρε ε ε ευ σαν τη κτι ι

σει ει οι οι θε ο φρο ο νες πα ρα το ο ον κτι ι

σα α α αν τα α αλ λα α α α πυ ρο ος α πει ει

λη ην αν δρει ει ω ως πα α τη η σα αν τες χαι αι ρο ον

τες ε ψα αλ λο ον υ περ υ υ υ μνη η

η η τε ε <sup>π 9</sup> ο των πα τε ρω ων Κυ ρι ι ο ος

α' χορός και Θε ε ος ε ευλο γη η το ο ος ει ει <sup>6 λ</sup>

ᾠδὴ η'

### Ἦχος ᾠ Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.151/1500\*

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου με

εν τον Κυ υ υ ρι ι ον <sup>Δ</sup>

Φ λο ο ο ο γα <sup>χ 9</sup>δρο σι ζου σαν ο ο σι ι ι

ου ους <sup>Δ</sup>δυσ σε ε ε βει ει εις δε ε κα α

τα α φλε ε ε γου ουου σα αν <sup>π 9</sup>αγ γε ε λο ος \*

Θε ε ου ου ου ου ο ο ο παν σθε ε νης ε δει ει

ξε ε παι αι σι <sup>Δ</sup>ζω αρ χι κη η η η ην δε



επη η η γην ειρ γα α σα το ο ο ο

ο την Θε ο ο ο το ο κον φθο ραν θα να α α α

του ου ουου και ζω ω ην βλυ στα α α νου ου σα αν

τοι οισ με εελ που ου σι ι το ον δη μι

ου ουρ γον μο ο νο ο ο ο ον υ υ μνου με ε ε εν

οι οι λε λυ υ τρω ω με ε ε νοι οι

και αι υ περ υ υ ψου ου ου με ε εν ει

εις πα αν τας του ου ους αι ω ω ω ω ω

να α α ας

νας

Θε ε ου ου ου ου ο ο παν

\*1 φθο ραν θα να α α του ου και ζω ω ην

\*2 και υ υ περ υ υ ψου ου ου με εν ει ει εις πα

αν τας

Ἦχος Δι Βε

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.237/1935\*

ᾠδὴ γ'

Π αι αι αι αι δας ευ α γει εις ε εν τη η κα μι ι

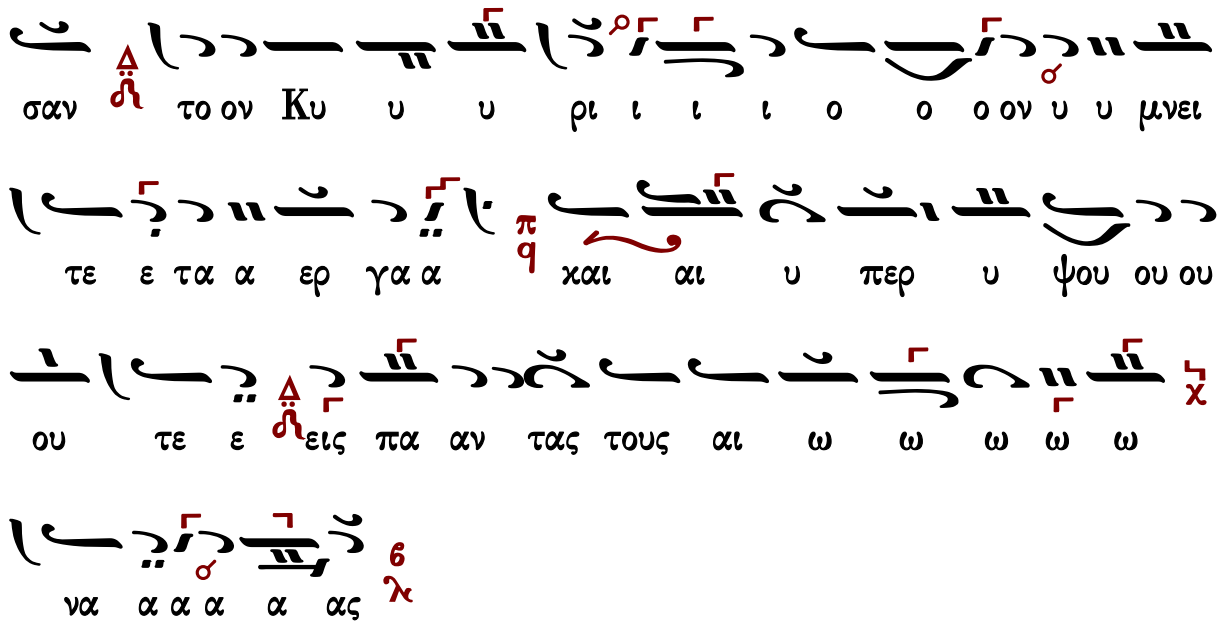
ι νω ω ο το ο ο ο ο ο κος της Θε ε

ο το ο κου δι ε ε σω ω σα α το το ο τε ε

με εν τυ που με ε νο ος νυ υν δε ε ε νερ γου ου

ου με ε ε ε νος την οι κου με ε νη ην α πα α

σαν α γει ει ρει ει ει ψα α α α α λ λου ου ου ου



## ὥδη θ' τῆς ἑορτῆς

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

κανὼν α', ὥδη θ'

ἦχος α'

Αἰ γενεαὶ πᾶσαι, μακαρίζομέν σε, τὴν μόνην Θεοτόκον.

**Ν**ενίκηθηται τῆς φύσεως οἱ ὄροι, ἐν σοὶ Παρθένε ἀχραντε· παρθενεύει γὰρ τόκος, καὶ ζωὴν προμνηστεύεται θάνατος. Ἡ μετὰ τὸκον Παρθένος, καὶ μετὰ θάνατον ζῶσα, σῶζοις αἰεὶ, Θεοτόκε, τὴν κληρονομίαν σου. (β')

Αἰ γενεαὶ πᾶσαι, μακαρίζομέν σε, τὴν μόνην Θεοτόκον.

**Ἐ**ξίσταντο ἀγγέλων αἱ δυνάμεις, ἐν τῇ Σιῶν σκοπούμεναι, τὸν οἰκεῖον Δεσπότην, γυναικεῖαν ψυχὴν χειρίζομενον· τῇ γὰρ ἀχράντως τεκούση, υἱοπρεπῶς προσεφώνει· Δεῦρο σεμνή, τῷ Υἱῷ καὶ Θεῷ συνδοξάσθητι.

Αἰ γενεαὶ πᾶσαι, μακαρίζομέν σε, τὴν μόνην Θεοτόκον.

**Σ**υνέστειλε χορὸς τῶν ἀποστόλων, τὸ θεοδόχον σῶμά σου, μετὰ δέους ὀρῶντες, καὶ φωνῇ λιγυρᾷ προσφθεγγόμενοι· Εἰς οὐρανίους θαλάμους, πρὸς τὸν Υἱὸν ἐκφοιτῶσα, σῶζοις αἰεὶ, Θεοτόκε τὴν κληρονομίαν σου.

κανὼν β', ὥδη θ'

ἦχος δ'

**Ἄ**γγελοι τὴν κοίμησιν τῆς Παρθένου, ὀρῶντες ἐξεπλήττοντο,  
πῶς ἡ Παρθένος ἀπαίρει, ἀπὸ τῆς γῆς εἰς τὰ ἄνω.

**Ἄ**πας γηγενῆς, σκιρτάτω τῷ πνεύματι, λαμπαδοχούμενος, πανηγυρίζετω δέ, αὐτῶν

νόων φύσις γεραίρουσα, τὴν ἱεράν μετάστασιν τῆς Θεομήτορος, καὶ βοάτω· Χαίροις  
παμμακάριστε, Θεοτόκε ἀγνή ἀειπάρθενε.

Ἄγγελοι τὴν κοίμησιν τῆς Παρθένου, ὀρῶντες ἐξεπλήττοντο,  
πῶς ἡ Παρθένος ἀπαίρει, ἀπὸ τῆς γῆς εἰς τὰ ἄνω.

Δεῦτε ἐν Σιών, τῷ θείῳ καὶ πτόνι, ὅρει τοῦ ζῶντος Θεοῦ, ἀγαλλιασώμεθα, τὴν Θεοτόκον  
ἐνοπτριζόμενοι· πρὸς γὰρ τὴν λίαν κρείττονα, καὶ θειοτέραν σκηνήν, ὡς Μητέρα, ταύτην  
εἰς τὰ Ἁγία, τῶν ἀγίων Χριστὸς μετατίθησι.

Δόξα Πατρὶ καὶ Υἱῷ καὶ ἀγίῳ Πνεύματι.

Ἄγγελοι τὴν κοίμησιν τῆς Παρθένου, ὀρῶντες ἐξεπλήττοντο,  
πῶς ἡ Παρθένος ἀπαίρει, ἀπὸ τῆς γῆς εἰς τὰ ἄνω.

Δεῦτε οἱ πιστοί, τῷ τάφῳ προσέλθωμεν, τῆς Θεομήτορος, καὶ περιπτυζώμεθα, καρδίας  
χείλη ὄμματα μέτωπα, εἰλικρινῶς προσάπτοντες, καὶ ἀρυσώμεθα, ἰαμάτων, ἀφθονα  
χαρίσματα, ἐκ πηγῆς ἀνάου βλυστάνοντα.

Καὶ νῦν καὶ αἰεὶ καὶ εἰς τοὺς αἰῶνας τῶν αἰῶνων. Ἀμήν.

Ἄγγελοι τὴν κοίμησιν τῆς Παρθένου, ὀρῶντες ἐξεπλήττοντο,  
πῶς ἡ Παρθένος ἀπαίρει, ἀπὸ τῆς γῆς εἰς τὰ ἄνω.

Δέχου παρ' ἡμῶν, ὠδὴν τὴν ἐξόδιον, Μητέρα τοῦ ζῶντος Θεοῦ, καὶ τῇ φωτοφόρῳ σου,  
καὶ θείᾳ ἐπισκίασον χάριτι, τῷ βασιλεῖ τὰ τρόπαια, τῷ φιλοχρίστῳ λαῷ, τὴν εἰρήνην,  
ἄφεςιν τοῖς μέλπουσι, καὶ ψυχῶν σωτηρίαν βραβεύουσα.

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Κανὼν α' τῆς Θεοτόκου, ὠδὴ θ'

Ἦχος ᾠ Πα ᾠ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικὸν Μηνολόγιον  
2007 σ.152/1501#

α ἰ γε νε αἰ πα α σαι αἰ μα κα ρι ζο

με εν σε την μο νην Θε ο το ο κον π ρ

Ν ε νι κην ται της φυ σε ως οι ο ροι Ἄ εν σοι

Παρ θε νε α χραν τε <sup>π ρ</sup> παρ θε νευ ει γαρ το κος

<sup>π ρ</sup> και ζω ην προ μνη στε ευ ε ται θα να τος <sup>π ρ</sup> η

με τα το κον Παρ θε νος <sup>Δ ρ</sup> και με τα θα να τον

ζω σα <sup>π ρ</sup> σω ω ζοις α ει Θε ο το κε την κλη ρο

νο μι ι α αν σου <sup>π ρ</sup> (β')

**Α** ι γε νε αι πα α σαι αι μα κα ρι ζο

με εν σε την μο νην Θε ο το ο κον <sup>π ρ</sup>

**Ε** ξ ι σταν το αγ γε λων αι δυ να μεις εν τη

Σι ων σκο που με ναι <sup>π ρ</sup> τον οι κει ον Δε σπο την <sup>π ρ</sup>

γυ ναι κει αν ψυ χη ην χει ρι ζο με νον <sup>π ρ</sup> τη γαρ

α χραν τως τε κου ση υι ο πρε πως προσ ε φω νει

πρ δε ευ ρο σε μνη τω Υι ω και Θε ω συν δο ξα α

σθη η τι πρ

α ι γε νε αι πα α σαι αι μα κα ρι ζο

με εν σε την μο νην Θε ο το ο κον πρ

συν ε στει λε χο ρος των α πο στο λων το θε ο

δο χον σω μα σου πρ με τα δε ους ο ρων τες πρ και

φω νη λι γυ ρα α προσ φθεγ γο με νοι πρ εις ου ρα

νι ους θα λα μους προς τον Υι ον εκ φοι τω σα πρ

σω ω ζοις α ει Θε ο το κε την κλη ρο νο μι ι α αν

σου π 9

Κανών 6' τῆς Θεοτόκου, ᾠδὴ θ'

Ἦχος ἴσ Β8 ᾠ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.153/1502#

α γ γε λοι την κοι μη σιν της Παρ θε νου ο

ρων τες εξ ε πλητ τον το πως η Παρ θε νος α παι αι

ρει α πο της γη ης εις τα α νω

α πας γη γε νης σκιρ τα τω τω πνευ μα τι λαμ πα

δου χου με νος παν η γυ ρι ζε τω ω δε α

υ λων νο ο ων φυ σις γε ραι ρου σα την ι

ε ραν Με τα στα σιν της Θε ο μη η το ο ρος

και βο α α α α τω χαι ροις παμ μα κα ρι στε <sup>6</sup>λ

Θε ο το κε α γνη η α ει παρ θε νε <sup>6</sup>λ

Α γ γε λοι την κοι μη σιν της Παρ θε νου ο

ρων τες εξ ε πλητ τον το <sup>6</sup>λ πως η Παρ θε νος α παι αι

ρει α πο της γη ης εις τα α νω <sup>6</sup>λ

Δ ευ τε εν Σι ων τω θει ω και πι ο νι ο ρει

του ζων τος Θε ου <sup>6</sup>λ α γαλ λι α σω με ε θα <sup>π</sup>9 την

Θε ο το ο κον εν ο πτρι ζο με νοι <sup>6</sup>λ προς

<sup>σ</sup> γαρ την λι αν κρειτ το να και θει ο τε ραν σκη

νην <sup>Δ</sup>α ως Μη τε ε ε ε ρα ταυ την εις τα α γι α <sup>6</sup>λ



των α γι ων Χρι στος μετα τι θη σι <sup>6</sup> <sub>λ</sub>

Δ ο ξα Πα τρι και Υι ω και α γι ω Πνευ μα τι <sup>6</sup> <sub>λ</sub>

Α γ γε λοι την κοι μη σιν της Παρ θε νου ο

ρων τες εξ ε πλητ τον το <sup>6</sup> <sub>λ</sub> πως η Παρ θε νος α παι αι

ρει α πο της γη ης εις τα α νω <sup>6</sup> <sub>λ</sub>

Δ ευ τε οι πι στοι τω τα φω προσ ελ θω μεν της Θε

ο μη το ρος <sup>6</sup> <sub>λ</sub> και πε ρι πτυ ξω με ε θα <sup>π</sup> <sub>9</sub> καρ

δι ας χει ει λη ομ ματα με τω πα <sup>6</sup> <sub>λ</sub> ει λι κρι

νωσ προσ α πτον τες και α ρυ σω ω με ε θα <sup>Δ</sup> <sub>δ</sub>

ι α μα α α α των α φθο να χα ρι σμα τα <sup>6</sup> <sub>λ</sub> εκ

πη γης α ε να α ου βλυ στα νον τα <sup>6</sup>λκ

**Κ** αι νυν και α ει και εις τους αι ω νας των

αι ω νων α μην <sup>6</sup>λκ

**Α** γ γε λοι την κοι μη σιν της Παρ θε νου ο

ρων τες εξ ε πλητ τον το <sup>6</sup>λκ πως η Παρ θε νος α παι αι

ρει α πο της γη ης εις τα α νω <sup>6</sup>λκ

**Δ** ε χου παρ η μων ω δην την εξ ο δι ον Μη τερ

του ζων τος Θε ου <sup>6</sup>λκ και τη φω το φο ρω ω σου <sup>π</sup>9 και

θει α ε πι σκι ι α σον χα ρι τι <sup>6</sup>λκ τω βα σι

λει τα τρο παι α <sup>Δ</sup>δι τω φι λο χρι στω λα ω την <sup>σ</sup>

ει ρη νην α φε σιν τοις μελ που σι και ψυ  
 χων σω τη ρι ι αν βρα βευ ου σα

### Καταβασία θ' φδῆς

ἦχος α'

Αἱ γενεαὶ πᾶσαι, μακαρίζομέν σε, τὴν μόνην Θεοτόκον.

Νενίκηνται τῆς φύσεως οἱ ὄροι, ἐν σοὶ Παρθένε ἄχραντε· παρθενεύει γὰρ τόκος, καὶ ζωὴν προμνηστεύεται θάνατος. Ἡ μετὰ τόκον παρθένος, καὶ μετὰ θάνατον ζῶσα, σῶζοις αἰεὶ, Θεοτόκε τὴν κληρονομίαν σου.

ἦχος δ'

Ἄγγελοι τὴν κοίμησιν τῆς Παρθένου, ὀρῶντες ἐξεπλήττοντο,  
 πῶς ἡ Παρθένος ἀπαίρει, ἀπὸ τῆς γῆς εἰς τὰ ἄνω.

Ἄπας γηγενῆς, σκιρτάτω τῷ πνεύματι, λαμπαδοχούμενος, πανηγυριζέτω δέ, αὐτῶν νόων φύσις γεραίρουσα, τὴν ἱεράν Μετάστασιν τῆς Θεομήτορος, καὶ βοάτω· Χαίροις παμμακάριστε, Θεοτόκε ἀγνή ἀειπάρθενε.

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Σύντομος

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Ἀργῆ

Πέτρου Λαμπαδαρίου

### Σύντομος

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

ἦχος 4 Πα

κανὸν α'

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
 Εἰρμολόγιον 1903 σ.319#

αι γε νει αι πα α σαι αι μα κα ρι ζο με εν

σε την μονήν Θεοτοκόν <sup>π ρ</sup>

**Ν**ενηκνται της φυσεως οι οροι εν σοι Παρθε

νεαχραν τε <sup>π ρ</sup> παρθενει γαρ τοκος και ζω

ην προμνηστευεται θανατος <sup>π ρ</sup> ημετατοκον Παρ

θενος και μεταθανατον ζωσα <sup>π ρ</sup> σωωζεις αιει

Θεοτοκε την κληρονομια αν σου <sup>π ρ</sup>

\* <sup>π ρ</sup>  
σου ου ου ου

καλὸν β'

Ἦχος Βϛ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.153/1502#

**Α**γγελοι την κοιμησιν της Παρθενου ο

ρωντες εξεπληττοντο <sup>6</sup> <sup>π ρ</sup> πως η Παρθενος απαιαι

ρει α πο της γη ης εις τα α νω <sup>6</sup>λ

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Ειμολόγιον 1903 σ.335#

**Α** πας γη γε νης σκίρ τα τω τω πνευ μα τι λαμ πα δου

χου με νος <sup>6</sup>λ παν η γυ ρι ζε τω ω δε <sup>π</sup>9 α υ

λων νο ο ων φυ σις γε ραι ρου σα <sup>6</sup>λ την ι ε ραν Με

τα στα σιν της Θε ο μη η το ο ρος <sup>Δ</sup>8 και βο α

α α α α α τω χαι ρις παμ μα κα ρι στε <sup>6</sup>λ Θε ο

το κε α γνη η α ει παρ θε νε <sup>6</sup>λ

\* <sup>λ</sup>χ παρ θε νε ε ε ε ε <sup>6</sup>λ

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Ἦχος <sup>4</sup>9 Πα

κανών α'

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.152/1501#

Α ἰ γε νε αἰ πα α σαι αἰ μα κα ρι ζο

με εν σε την μο νην Θε ο το ο κον <sup>π ρ</sup>

Ν ε νι κην ται της φυ σε ως οι ο ροι <sup>Δ ρ</sup> εν σοι

Παρ θε νε α χραν τε <sup>π ρ</sup> παρ θε νευ ει γαρ το κος

<sup>π ρ</sup> και ζω ην προ μνη στε ευ ε ται θα να τος <sup>π ρ</sup> η

με τα το κον Παρ θε νος <sup>Δ ρ</sup> και με τα θα να τον

ζω σα <sup>π ρ</sup> σω ω ζοις α ει Θε ο το κε την κλη ρο

νο μι ι α αν σου <sup>π ρ</sup>

\* <sup>χ ρ</sup> σου ου ου ου <sup>π ρ</sup>

καων β'

↑ Ηχος <sup>Δ ρ</sup> Β8

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.153/1502#

Α γ γε λοι την κοι μη σιν της Παρ θε νου ο

ρων τες εξ ε πλητ τον το <sup>6</sup> <sub>λ</sub> πως η Παρ θε νος α παι αι

ρει α πο της γη ης εις τα α νω <sup>6</sup> <sub>λ</sub>

**Α** πας γη γε νης σκιρ τα τω τω πνευ μα τι λαμ πα

δου χου με νος <sup>6</sup> <sub>λ</sub> παν η γυ ρι ζε τω ω δε <sup>π</sup> <sub>9</sub> α

υ λων νο ο ων φυ σις γε ραι ρου σα <sup>6</sup> <sub>λ</sub> την <sup>σ</sup>

ε ραν Με τα στα σιν της Θε ο μη η το ο ρος <sup>Δ</sup> <sub>δ</sub>

και βο α α α α τω χαι ρις παμ μα κα ρι στε <sup>6</sup> <sub>λ</sub>

Θε ο το κε α γνη η α ει <sup>\*</sup> παρ θε νε <sup>6</sup> <sub>λ</sub>

<sup>\*</sup> <sub>χ</sub> παρ θε νε ε ε ε ε <sup>6</sup> <sub>λ</sub>

Ἄγι

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Α ι γε ναι αι αι πα α α α σαι αι αι αι μα α

κα ρι ι ζο ο με ε εν σε τη ην μο ο

νην Θε ε ε ο το ο ο ο κον π 9

Ν ε ε νι ι ι κη η η ην ται π 9 της φυ υ σε

ω ως οι ο ο ο ροι οι εν σοι οι οι Πα αρ

θε ε νε ε α α α χρα αν τε ε πα α α π 9

αρ θε νευ ει ει γα αρ το ο ο κο ος και ζω ω π 9

ην προ μνη στε ε ε ευ ε ε ται αι θα α α να Δ

α α το ος η με ε ε ε τα το κο ον Παρ θε π 9



ε ε ε νος και με ε ε ε τα θα α να α το ον

ζω σα α σω ω ω ω ζει εις α α α ει Θε ο

ο το ο ο κε τη η ην κλη ρο ο νο ο μι ι

ι ι ι α α α αν σου σου ου ου ου

κανών β'

Ἦχος Βα

Νεκταρίου Μοναχού  
Μουσικός Θησαυρός Λειτουργίας  
1931 σ.529#

α γ γε ε λοι την Κοι μη η σι ιν της Παν α α α

γνου ου ου ο ρω ων τε ες ε ξε πλη ητ το ον το ο

πως πα ρα δο ξω ως α α παι αι αι ρει ει α πο

της γη ης εις τα α α α α α νω ω

Ἦχος Βα

Ιωάννου Πρωτοψάλτου  
Ειρμολόγιον 1905 σ.55#

α πας γη γε νη η ης σκιρ τα τω τω πνε ευμα

τι ι λααμ πα α δου χου με ε νο ο ος παν η γυ

υ ρι ζε ε ε τωω ω ω δε α υ λωων νο ο

ο ο ω ων φυ υ σι ις γε ραι αι ρου ου σα α την ι

ε ρα αν Με ε τα α στα α σιν της Θε ο ο ο μη

η η η η το ο ο ο ρο ο ος και αι βο α α α

α α τω χαι αι ροι οις πα αμ μα κα ρι ι στε ε

Θε ο το ο κε α γνη η η η α ει πα αρθε ε ε νε ε ε

ε ε

Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Παπαγιάννη)

Α ι γε νε αι αι πα α α α σαι αι αι αι μα α

κα ρι ι ζο ο με ε εν σε τη ην μο

ο νην Θε ε ε ο το ο ο ο κον

Ν ε ε νι ι ι κη η η ην ται της φυ υ σε

ω ως οι ο ο ο ροι οι εν σοι οι οι Πα αρ

θε ε νε ε α α α χρα αν τε ε πα α α

αρ θε νευ ει ει γα αρ το ο ο κο ος και ζω ω ην

προ μνη στε ε ε ευ ε ε ται αι θα α α να α α

το ος η με τα το κο ον Παρ θε ε ε ε νος

και με τα θα α να α τον ζω σα α σω ω ω

ζοι οισ α α α ει Θε ο ο το ο ο κε την

κλη ρο ο νο ο μι ι ι ι ι α α α αν σου

\* σου ου ου ου

κανών β'

Ἦχος δ' Βα

Νεκταρίου Μοναχού  
Μουσικός Θησαυρός Λειτουργίας  
1931 σ.529#

α γ γε ε λοι την κοι μη η σι εν της Παν α α α α

γνου ου ου ο ρω ων τε ες ε ξε πλη ητ τον το ο

πως πα ρα δο ξω ως α α παι αι αι ρει ει α πο

της γη ης εις τα α α α α α νω ω

ᾠδὴ θ'

Ἦχος δ' Βα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.237/1936\*

α πας γη γε νη η ης σχιρ τα τω τω πνε ευμα

τι ι λααμ πα α δου χου με ε νο ος παν η γυ υ

υ ρι ζε ε ε τωω ω ω δε α υ λωων νο ο

ο ο ων φυ υ σι ις γε ραι αι ρου ου σα α την ι ε

ρα αν Με ε τα α στα α σιν της Θε ο ο ο μη η

η η το ο ο ο ρο ο ος και αι βο α α α α

τω και αι ροι οις πα αμ μα κα ρι ι στε ε Θε

ο το ο κε α γνη η η η α ει πα αρ θε ε ε νε ε ε

ε ε

# Εἰς τὴν Κοίμησιν τῆς Θεοτόκου (μεθέορτες)

16 ἕως 23 Αὐγούστου

## ἤχος α'

- α **Π**εποικιλμένη τῇ θείᾳ δόξῃ, ἡ ἱερὰ καὶ εὐκλεῆς Παρθένε μνήμη σου, πάντας συνηγάγετο, πρὸς εὐφροσύνην τοὺς πιστοὺς, ἐξαρχούσης **Μαριάμ**, μετὰ χορῶν καὶ τυμπάνων τῷ σῶ, ἄδοντας **Μονογενεῖ**, ἐνδόξως ὅτι δεδοξασται.
- γ **Ἡ** δημιουργική, καὶ συνεκτικὴ τῶν ἀπάντων, Θεοῦ σοφία καὶ δύναμις, ἀκλινῆ ἀκράδαντον, τὴν Ἐκκλησίαν στήριζον **Χριστέ**· μόνος γὰρ εἶ ἅγιος, ὁ ἐν ἁγίοις ἀναπαυόμενος.
- δ **Ῥ**ήσεις προφητῶν καὶ αἰνίγματα, τὴν σάρκωσιν ὑπέφηναν, τὴν ἐκ Παρθένου σου **Χριστέ**, φέγγος ἀστραπῆς σου, εἰς φῶς ἐθνῶν ἐξελεύσεσθαι, καὶ φωνεῖ σοι ἄβυσσος, ἐν ἀγαλλιάσει, τῇ δυνάμει σου δόξα φιλόανθρωπε.
- ε **Τ**ὸ θεῖον καὶ ἄρρητον κάλλος, τῶν ἀρετῶν σου **Χριστέ** διηγῆσομαι· ἐξ αἰδίου γὰρ δόξης συναΐδιον, καὶ ἐνυπόστατον λάμψας ἀπαύγασμα, παρθενικῆς ἀπὸ γαστροῦ, τοῖς ἐν σκότει καὶ σκιᾷ, σωματωθεὶς ἀνέτειλας ἥλιος.
- ς **Ἄ**λιον ποντογενές, κητῶν ἐντόστιον πῦρ, τῆς τριημέρου ταφῆς σου τι προεικόνισμα, οὗ Ἰωάννης ὑποφήτης ἀναδέδεικται· σεσωσμένος γὰρ ὡς καὶ προὑπέπετο, ἀσινῆς ἐβόα· **Θύσω** σοι μετὰ φωνῆς αἰνέσεως **Κύριε**.
- ζ **Ἰ**ταμῶ θυμῶ τε καὶ πυρί, θεῖος ἔρωσ ἀντιταττόμενος, τὸ μὲν πῦρ ἐδρόσιζε, τῷ θυμῷ δὲ ἐγέλα, θεοπνεύστῳ λογικῇ, τῇ τῶν ὁσίων τριφθόγγῳ λύρα ἀντιφθεγγόμενος, μουσικοῖς ὀργάνοις ἐν μέσῳ φλογός, ὁ δεδοξασμένος, τῶν πατέρων καὶ ἡμῶν **Θεὸς** εὐλογητὸς εἶ.

Αἰνοῦμεν εὐλογοῦμεν καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον.

- η **Φ**λόγα δροσίζουσαν ὁσίους, δυσσεβεῖς δὲ καταφλέγουσαν, ἄγγελος Θεοῦ ὁ πανσθενής, ἔδειξε παισί· ζωαρχικὴν δὲ πηγὴν εἰργάσατο τὴν Θεοτόκον, φθορὰν θανάτου, καὶ ζωὴν βλυστάνουσαν τοῖς μέλπουσι, τὸν δημιουργὸν μόνον ὑμνοῦμεν, οἱ λελυτρωμένοι, καὶ ὑπερυψοῦμεν εἰς πάντας τοὺς αἰῶνας.

### Ἀργαί

### Σύντομοι

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Παπαγιάννη)

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Χουρμουζίου)

# Σύντομοι

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

ῥοδή α'

Ἦχος ♩ Πα

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Ειρμολόγιον 1903 σ.314#

**Π** ε ποι κιλ με νητη θει α δο ξη **Δ** η ι ε ρα

και ευ κλε ης Παρ θε νε μνη μη σου παν τας συν η

γα γε το προς ευ φρο συ νηντους πι στους εξ αρ χου σης Μα ρι

αμ **π** με τα χο ρων και τυμ πα νων τω σω α δον τας μονο

γε νει εν δο ξως ο τι δε δο ο ξα α σται **π** ῥοδή γ'

**Η** δη μι ουρ γι κη και συν εκτι κη των α πα

αν των Θε ου σο φι α και δυ ναμις α κλι νη α κρα

δαν τον την Εκ κλη σι ανστη ρι ξον Χρι στε **Δ** μο νος γαρ

ει α γι ος <sup>Δ</sup>χορὸς α' ο εν α γι ο ις α να παυ ο ο

με ε νος <sup>π ρ</sup> ὠδὴ δ'

**Ρ**η σεις Προ φη των και αι νι γμα τα την σαρ κω σιν υ

πε φη ναν <sup>π ρ</sup> την εκ Παρ θε νου σου Χρι στε φεγ γος α στρα

πης σου εις φως ε θνων ε ξε λευ σε σθαι <sup>π ρ</sup> και φω νει σοι

α βυ σσο ο ος εν α γα λ ι α α σει <sup>Δ</sup>τη δυ να μει

σου δο ξα φι λα ανθρω ω πε <sup>π ρ</sup> ὠδὴ ε'

**Τ**ο θει ον και αρ ρη τον καλ λος <sup>Δ</sup>των α ρε των σου Χρι

στε ε δι η γη σομαι εξ α ι δι ου γαρ δο ξης συν

α ι δι ον και εν υ πο στα τον λα αμ ψας α παυ γα



σμα παρ θε νι κης απο γα στρος <sup>Α</sup> τοις εν σκο τει και

σκι α σω μα τω θεις α νε τειλας η η λι ι ος <sup>π</sup> <sup>9</sup> <sup>ωδής'</sup>

**Α** λι ον πον το γε νες κη τω ον εν το σθι ον πυρ <sup>Α</sup>

της τρι η με ρου τα φης σου τι ι προ ει κο νι σμα <sup>π</sup> <sup>9</sup>

ου Ι ω νας υ πο φη της α να δε δει κται <sup>Α</sup> σε

σω σμε νος γαρ ως και πρου πε πω το ο ο α σι νης ε

βο ο α θυ σω σοι με τα φω νης αι νε σε ως Κυ υ ρι ι

ε <sup>π</sup> <sup>9</sup> <sup>ωδής'</sup>

**Ι** τα μω θυ μω τε και πυ ρι θει ος ε ε ρως αν τι

τατ το με νος <sup>π</sup> <sup>9</sup> το μεν πυρ ε δρο σι ι ζε τω θυ μω δε ε

γε ε λα θε ο πνευ στω λο γι κη <sup>Α</sup> τη των ο

σι ων τρι φθογ γω λυ υ ρα αν τι φθεγ γο με νος <sup>π</sup> μου

σι κοις ορ γα νοις εν με σω πυ ρο ο ος ο δε δο ξα

σμε ε νος των πα τε ρων και η μων <sup>Θ</sup> ε ος ευ λογη τος

<sup>π</sup> ει

<sup>Α</sup> ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου μεν τον

Κυ ρι ον <sup>Α</sup> ῶδὴ ἡ'

<sup>Φ</sup> λο γα δρο σι ζου σαν ο σι ους <sup>Α</sup> δυσ σε βεις δε

κα τα φλε γου σαν Αγ γελος <sup>Θ</sup> ου ο παν σθε νης ε δει

ξε παι σι ζω αρ χι κην δεπη γην ειρ γα σα το την <sup>Θ</sup> ε

ο το κον <sup>Δ</sup>α φθο ραν θα να του και ζω ην βλυ στα νου

σαν τοις μελ που σι <sup>π</sup>q τον δη μι ουρ γον μο νον υ

μνου ου με εν οι λε λυ τρω με ε νοι και υ περ υ

ψου ου μενεις παν τας τους αι ω <sup>\*</sup> <sup>π</sup>q νας

<sup>\*</sup> <sup>π</sup>q <sup>π</sup>q <sup>π</sup>q <sup>π</sup>q  
να α α ας

### Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

ᾠδὴ α'

### Ἦχος <sup>Λ</sup>q Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.138/1487#

**Π** ε ποι κιλ με νη τη θει α δο ξη <sup>Δ</sup>α η ι ε

ρα και ευ κλε ης Παρ θε νε μνη μη σου <sup>π</sup>q παν τας συν

η γα γε το προς ευ φρο συ νην τους πι στους εξ αρ χου

σης Μαρι αμ<sup>π ρ</sup> με τα χο ρων και τυμ πα νων<sup>π ρ</sup> τω

σω ω α δον τας μο νο γε νει<sup>Δ ρ</sup> εν δο ξως ο τι δε

δο ο ξα α σται<sup>π ρ</sup> ῶδὴ γ'

**Η** δη μι ουρ γι κη και συν ε κτι κη των

α πα αν των Θε ου σο φι α και δυ να μεις<sup>π ρ</sup> α

κλι νη α κρα δαν τον την Εκ κλη σι αν στη ρι ξον Χρι

στε<sup>Δ ρ</sup> μο νος γαρ ει α γι ος ἀ χο ρός ο εν α γι

οις α να παυ ο ο με ε νος<sup>π ρ</sup> ῶδὴ δ'

**Ρ** η σεις προ φη των και αι νι γμα τα<sup>Δ ρ</sup> την σαρ κω σιν

υ πε φη ναν την εκ Παρ θε νου σου Χρι στε<sup>π ρ</sup> φε γ γος α

στρα πης σου εις φως ε θνω ων εξ ε λευ σε σθαι <sup>π ρ</sup> και φω

νει σοι α βυσ σο ος εν α γαλ λι α α σει <sup>Δ ρ</sup> τη δυ

να μει σου δο ξα φι λα ανθρω ω πε <sup>π ρ</sup> ῥδῆ ε'

**Τ** ο θει ον και αρ ρητον καλ λος <sup>Δ ρ</sup> των α ρε των

σου Χρι στε ε δι η γη σομαι <sup>π ρ</sup> εξ α ι δι ου

γαρ δο ξης συν α ι δι ον <sup>Δ ρ</sup> και εν υ πο στα τον

λα αμ ψας α παυ γα σμα <sup>π ρ</sup> παρ θε νι κης α πο γα

στρος τοις εν σκο τει και σκι α <sup>π ρ</sup> σω μα τω θεις α

νε τει λας η η λι ι ος <sup>π ρ</sup> ῥδῆ ε'

**Α** λι ον πον το γε νες κη τω ον εν το σθι ον

πυρ <sup>Δ</sup> της τρι η με ρουτα φης σου τι ι προ ει κο νι

σμα <sup>π</sup> ου ου Ι ω νας υ πο φη της α να δε δει

κται <sup>Δ</sup> σε σω σμε νος γαρως και πρου πε πω το ο α σι νης

ε βο ο α <sup>Δ</sup> θυ σω σοι με τα φω νης αι νε σε ως

Κυ υ ρι ι ε <sup>π</sup> ῶδηζ'

τα μω θυ μω τε και πυ ρι θει ος ε ε ρως αν τι

τατ το με νος <sup>π</sup> το μεν πυρ ε δρο σι ι ζε τω θυ μω δε

ε γε ε λα <sup>Δ</sup> θε ο πνευ στω λο γι κη <sup>Δ</sup> τη

των ο σι ων τρι φθογ γω λυ υ ρα αν τι φθεγ γο

με νος <sup>π</sup> μου σι κοις ορ γα νοις εν με σω φλο

γος **Α** ο δε δοξα σμενος των πατε ρων και ημων

Θε ος ευλογη τος ει **π**

**Α** ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου μεν τον

Κυ ρι ον **Α** **π** **9** ὠδή η'

**Φ** λο γαδρο σι ζου σαν ο σι ους **Α** δυσ σε βεις δε κα τα

φλε γου σαν **π** **9** αγ γελος Θε ου ο παν σθε νης ε δει ξε παι

σι **Α** ζω αρ χι κην δε πη γην ειρ γα σα το την

Θε ο το ο κον **Α** φθο ραν θα να του και ζω ην βλυ

στα νου σαν τοις μελ που σι **π** **9** τον δη μι ουρ γο ον

μο νον υ μνου ου με εν οι λε λυ τρω με ε νοι και

υ περ υ ψου μεν εις παν τας τους αι ω νας

\* να α α ας

### Αργαί

### Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

ᾠδὴ α'

Ἦχος Ἁ Πα

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.1\*

Π ε ποι κιλ με ε ε ε νη τη θει ει α δο ο ο

ξη η η ι ι ε ε ρα και αι ε ευ κλε η

η ης Πα αρ θε ε νε ε μνη η η μη η η σου

ου πα αν τας συν η γα γε ε το προ ο ο ος ε ευ φρο

συ νη ην του ους πι ι στου ου ου ους εξ αρ χου ου ου



ση η ης Μα α ρι ι ι αμ <sup>π ρ</sup> με τα α α α χο

ο ρων και αι τυ υμ πα α α νων τω σω ω ω ω ω ω

ω ω ω ω ω ω ω ω <sup>π ρ</sup> α α δον τα

ας μο νο ο γε ε νει <sup>Δ ρ</sup> εν δο ο ξωως ο τι ι δε ε

δο ο ο ο ο ξα α α α σται <sup>π ρ</sup> ῶδῆ γ'

**Η** δη μι ου ουρ γι ι κη και συν ε ε κτι κη

τω ων α α πα α αν των <sup>Δ ρ</sup> Θε ου σο φι ι ι ι α

α και αι δυ υ υ να μι ις <sup>π ρ</sup> α κλι νη η

α κρα α δα α αν το ο ον <sup>Δ ρ</sup> την Εκ κλη σι αν στη

η ρι ξο ον Χρι ι στε <sup>Δ ρ</sup> μο ο νος γα αρ ει

ει ει α α γι ι ι ος *χορός α'* ο εν α γι ι

οι οι οισ α να α πα αυ ο ο ο ο ο με

ε ε ε νος *π* *9* *ῶδη δ'*

**P** η η η η σεις *χ* *9* Προ φη τω ω ων και Αι νι ιγ

μα α τα α την σα α αρ κω ω σι ιν υ υ

πε ε ε φη η να αν *π* *9* την εκ Παρ θε ε ε ε

νου ου ου σου Χρι ι στε *Δ* *9* φεγ γος α στρα α πη η ης σου

ου *Δ* *9* εις φως Ε θνω ω ωων ε ε ξε ε λε ε ευ σε

ε ε ται αι *π* *9* και φω νει ει σοι α α βυυσ σο ο

ος ε εν α γαλ λι λι α α α σει *Δ* *9* τη δυ να

α μεις σου ου ου δο ξα α φι ι λα α α α

αν θρω ω ω ω πε <sup>π ρ</sup> ὠδὴ ε΄

**T** ο θει ει ει ει ον <sup>χ ρ</sup> και αρ ρη η τοον κα α α λ

λο ος των α α ρε τω ων σου Χρι στε ε ε ε δι ι

η η γη η η σο ο μαι αι <sup>π ρ</sup> εξ α ι δι ι

ου ου ου γαρ δο ο ξης συ υν α α α ι

ι δι ι ι ον <sup>Δ ρ</sup> και εν υ πο ο στα α τον λα α α

αμ ψα ας α α πα α αυ γα α α σμα α <sup>π ρ</sup> Παρ θε

νι κη η η ης α α α πο γα α στρος <sup>Δ ρ</sup> τοις

εν σκο ο ο τει και σκι ι α <sup>π ρ</sup> σω μα τω θει εις

α α α νε τει ει λα ας η η η η η λι

ι ι ι ος π ρ

ὠδὴς'

α λι ον πον το γε ε νες α κη τω ω ο ον

εν το ο ο ο σθι ο ο ον πυ υρ της τρι ι η με

ε ρου ου τα α φη ης σου τι ι ι προ ει χο ο

νι ι σμα α ου ου ου ου Ι ω ω ω νας υ

πο φη η τη ης α α να α δε ε ε δει ει ει κται

αι σε σω σμε ε νος γα α αρ ως και αι πρου

ου ου πε ε πω ω ω το ο ο α α σι νη ης

ε ε βο ο ο α θυ σω ω σοι οι με τα

φω νη ης αι αι αι νε σε ε ω ως Κυ υ υ υ

υ ρι ι ι ι ε π ρ ῥδ η ζ

τα μω θυ μω ω ω ω τε ε ε και πυ

υ ρι Α θει ος ε ε ρω ως α α α αν τι ι τα

ατ το ο ο με ε νο ος π ρ το με εν πυ υρ

ε δρο ο σι ι ζε Α τω θυ υ μω ω ω δε ε

ε γε ε ε λα Θε ο πνε ε ευ στω ω ω λο

ο γι ι ι κη π ρ τη των Ο σι ι ων τρι φθο ογ

γω ω λυ υ υ ρα α α αν τι ι φθε εγ γο ο ο

με ε νο ος π ρ μου σι κοι οι οι οιο ο ορ γα α α

νοις <sup>π ρ</sup> εν με ε ε σω ω φλο ο γο ο ο ος ο ο δε

δο ο ξα α σμε ε ε νο ος των Πα τε ε ρων

και αι η η μων Θε ε ος ε ευ λο ο γη η η το

ο ο ος ει <sup>π ρ</sup> ᾠδὴ γ'

<sup>χ</sup> Δ ι νου μεν ευ λο γου μεν προ σκυ νου με εν τον

Κυ υ ρι ι ον <sup>Δ</sup>

<sup>Φ</sup> λο ο ο ο γα <sup>χ ρ</sup> δρο σι ζου σαν Ο ο σι ι ι

ου ους <sup>Δ</sup> δυσ σε ε ε βει ει εις δε ε κα α

τα α φλε ε ε γου ουου σα αν <sup>π ρ</sup> Αγ γε ε λο ος Θε

ε ου ου ου ου ο ο ο παν σθε ε νης <sup>Δ</sup> ε δει ει



ῥοδῆ α'

Ἦχος ῥ Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.146/1495\*

Π ε ποι κιλ με ε ε ε νη <sup>Δ</sup> τη θει ει α δο ο ο

ξη η <sup>Δ</sup> η ι ι ε ε ρα και αι ε ευ κλε

η η ης Πα αρ θε ε νε ε μνη η η μη η η

σου ου <sup>π ρ</sup> πα αν τας συν η γα γε ε το ο προ ος

ε ευ φρο συ νη ην του ουσ πι ι στου ου ου ουσ <sup>Δ</sup> <sup>2</sup> εξ

αρ χου ου ου ση η ης Μα α ρι ι ι αμ <sup>π ρ</sup> με τα

α α α χο ο ρων και αι τυ υμ πα α α νων τω σω ω

ω ω ω ω ω ω ω ω ω ω ω ω <sup>π ρ</sup> α α

22 Ὅπως εἰς τὰς καταβασίας τῶν ἄλλων ἑορτῶν, οὕτω καὶ εἰς τὰς παρούσας ἐπεφέραμεν ἐλαφρὰς τινὰς διορθώσεις πρὸς ἀποφυγὴν παρατονισμῶν καὶ ὀρθοτέραν ἀπόδοσιν τοῦ νοήματος. Οὐσιαστικωτέρας μεταβολὰς παραθέτομεν μεθ' ἐκάστην καταβασίαν. [πρωτ.Κων.Παπαγιάννης]  
Γεράσιμος Μοναχὸς Ἁγιορείτης 14 Μαρτίου 2024 Λουκάς Λουκάς



δον τα ας μο νο ο γε ε νει εν δο ο ξω ως ο

τι ι δε ε δο ο ο ο ο ξα α α σται π q

\* και ευ κλε η ης Πααρ θε ε νε ε

\* το προς ευ φρο συ νηην τουους πι ι

\* εξ αρ χου ου ση ης Μα α ρι ι ι αμ με τα χο π q

ρων και αι τυ υμ πα α α νω ων τω σω ω α α π q

δον τα ας μο

ᾠδὴ γ'

### Ἦχος ᾠ Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.147/1496\*

Η δη μι ου ουρ γι ι κη και συν ε ε κτι κη

τω ων α α πα α αν των Θε ου σο φι ι ι ι α

α και αι δυ υ υ να μι ις <sup>π</sup>α κλι νη

η <sup>ρ</sup>α κρα αδα αν το ο ον <sup>Δ</sup>την Εκ κλη σι αν

στη η ρι ξον Χρι ι στε <sup>Δ</sup>μο ο νος γα αρ ει

ει ει α α γι ι ι ος <sup>Δ</sup><sup>2</sup> χορός α' ο εν α

γι ι οι οι οισ α να α πα αυ ο ο ο ο

ο με ε ε ε νος <sup>π</sup>α

<sup>1</sup>α α κρα αδα αν τον την Εκ κλη σι ι αν στη

<sup>2</sup>χορός α' ο εν α γι ι οισ α να α πα αυ ο

ῥαδὴ δ'

Ἦχος <sup>4</sup>α Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.148/1497\*

**Ρ** η η η η σεις <sup>χ</sup>προ φη τω ω ων και αι νι ι

γμα α τα α την σα α αρ κω ω σι ιν

υ υ πε ε ε φη η να αν την εκ Παρ θε ε

ε ε νου ου ου σου Χρι ι στε φεγ γος α στρα α πη

η ης σου ου εις φως ε θνω ω ω ων ε εξ ε ε λε

ε ευ σε ε ε σθαι αι και φω νει ει σοι α α

βυ υσ σο ο ος ε εν α γαλ λι ι α α α σει

τη δυ να α μει ει σου ου ου δο ξα α φι ι

λα α α α αν θρω ω ω πε

την εκ Παρ θε ε νου σου Χρι ι στε φεγ γος

ᾠδὴ ε'

Ἦχος ᾠ Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.149/1498\*

Τ ο θει ει ει ει ον και αρ ρη η τοον κα α α λ

λο ος των α α ρε τω ων σου Χρι στε ε ε ε

δι ι η η γη η η σο ο μαι αι εξ α ι

δι ι ου ου ου γαρ δο ο ξης συ υν α α α

ι ι δι ι ι ον και εν υ πο ο στα α τον


λα α α αμ ψα ας α α πα α αυ γα α α σμα

α παρ θε νι κη η η ης α α α πο γα α

στρος τοις εν σχο ο ο τει και σκι ι α σω μα

τω θει εις α α α νε τει ει λα ας η η η η


η λι ι ι ι ος


\*   
παρ θε νι κη η η ης α α πο


ᾠδὴ ε'

Ἦχος ♩ Πα

πρωτ. Κων. Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.149/1498\*


**Α** \*   
λι ον πον το γε ε νες κη τω ω ο ον


  
εν το ο ο ο σθι ο ο ον πυ υρ της τρι ι η


  
με ε ρου ουτα α φη ης σου τι ι ι προ ει κο ο

  
νι ι σμα α ου ου ου Ι ι ω ω ω νας υ πο

  
φη η τη ης α α να α δε ε ε δει ει ει κται αι <sup>π ρ</sup>

  
σε σω σμε ε νος γα α αρ ως και αι πρου

  
ου ου πε ε πω ω ω το ο ο α α σι νη ης

  
ε ε βο ο ο α θυ σω ω σοι οι με τα

φω νη ης αι αι αι νε σε ε ω ως Κυ υ υ υ

υ ρι ι ι ι ε π ρ

\* Α λι ονπον το

ῥοδῆζ

### Ἦχος ᾠ Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.150/1499\*

τα μω θυ μω ω ω ω τε ε ε και πυ υ

ρι θει ος ε ε ρω ως α α α αν τι ι

τα ατ το ο ο με ε νο ος το με εν

πυ υρ ε δρο ο σι ι ζε τω θυ υ μω ω

ω δε ε ε γε ε ε λα θε ο πνε ε ευ

στω ω ω λο ο γι ι ι κη τη των ο σι ι

ων τρι φθο ογ γω ω λυ υ υ ρα α α αν τι ι

φθε εγ γο ο ο με ε νο ος μου σι κοι οι οι

οις ο ορ γα α α νοις εν με ε ε σω ω φλο ο

γο ο ο ος ο ο δε δο ο ξα α σμε ε ε

νο ος των πα τε ε ρων και αι η η μων Θε ε ος

ε ευ λο ο γη η η το ο ο ος ει

θει ος ε ε ρως α αν τι ι

α αν τι ι φθε εγ

εν με ε ε σω ω φλο ο ο γος ο δε

δο ξα σμε ε ε ε νο ος των πα

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου με

εν τον Κυ υ υ ρι ι ον

Φ λο ο ο ο γα δρο σι ζου σαν ο ο σι ι ι

ου ους δυσ σε ε ε βει ει εις δε ε κα α

τα α φλε ε ε γου ουου σα αν αγ γε ε λο ος

Θε ε ου ου ου ο ο ο παν σθε ε νης ε δει ει

ξε ε παι αι σι ζω αρ χι κη η η η ην δε

ε πη η η γην ειρ γα α σα το ο ο ο

ο την Θε ο ο ο το ο κον φθο ραν θα να α α α



του ου ουου και ζω ω ην βλυ στα α α νου ου σα αν

τοι οις με ε ελ που ου σι ι το ον δη μι

ου ουρ γον μο ο νο ο ο ο ον υ υ μνου με ε ε εν

οι οι λε λυ υ τρω ω με ε ε νοι οι

και αι υ περ υ υ ψου ου ου με ε εν ει

εις πα αν τας του ου ους αι ω ω ω ω ω

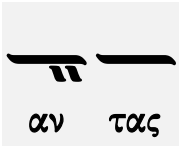
να α α ας

νας

\* Θε ε ου ου ου ου ο ο παν

\* φθο ραν θα να α α του ου και ζω ω ην

\* και υ υ περ υ υ ψου ου ου με εν ει ει εις πα





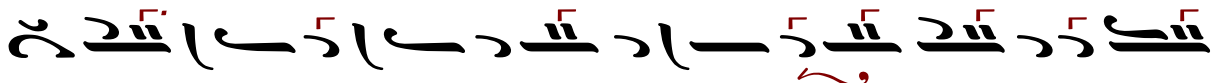






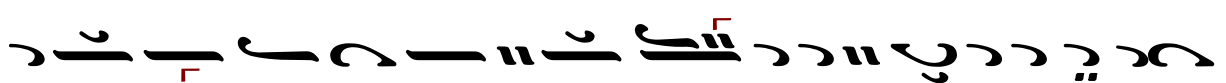


Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Χουρμουζίου)

ᾠδὴ α'

Ἦχος ♯ Πα

Χουρμουζίου Χαρτοφύλακος  
Ειρηολόγιον 1825 σ.1\*

  
**Π** ε ποι κι ιλ με ε ε νη  τη θει ει ει α α  
  
δο ο ο ξη η  η ι ι ε ε ρα και αι ε ευ  
  
κλε η η ης Πα αρ θε ε νε ε ε μνη η η μη  
  
η η σου ου  πα αν τας συ υν η γα γε ε το  
  
προ ο ο ος ε ευ φρο συ νη ην του ους πι ι στου ου ου  
  
ους  ε ε ε ξα αρ χου ου σης Μα ρι ι α αμ   
  
με τα α α α χο ο ρων και αι τυ υμ πα α α νων τω

σω ω ω ω ω ω ω ω ω ω ω ω ω ω ω π ρ

α α δον τα ας μο νο ο γε ε νει εν δο ο ξω ως

ο τι ι δε ε δο ο ο ο ο ξα α α α σται π ρ

ῥδῆγ'

**Η** δη μι ουρ γι ι κη και αι συ υν ε ε κτι

κη η τω ων α α πα α αν των θε ου σο ο ο φι ι

ι ι α α και αι αι δυ υ υ να α α μι ις α π ρ

κλι νη η α κρα α δα αν το ο ον την Εκ κλη

σι αν στη η η η ρι ι ι ξον Χρι ι στε μο

ο νος γα αρ ει ει ει α α γι ι ι ος χοεός

α' **Δ** ο εν α γι ι οι οι οισ α να α πα αυ ο

ο ο ο ο με ε ε ε νος **π** **ϛδηδ'**

**P** η η η η σεις **χ** προ ο ο φη τω ω ων και

αι νι ι γμα α τα α **Δ** την σα α αρ κω ω σι ιν

υ υ υ πε ε ε φη η να αν **π** την εκ Παρ

θε ε ε ε νου ου ου σου Χρι ι στε **Δ** φεγ γος α στρα

α πη η ης σου ου **Δ** εις φως ε ε ε θνω ω ω ων ε ε

ξε ε ε λε ε ευ σε ε ε σθαι αι **π** και φω

νει ει σοι α α βυ υ σ σο ο ος ε εν α γα λ λι

ι α α α σει **Δ** τη δυ να α μει ει σου ου

ου δο ξα α φι ι λα α α α αν θρω ω ω ω

πε π ρ

ὠδὴ ε'

Τ ο θει ει ει ει ον και αρ ρη η τον κα α αλ

λο ος των α α ρε τω ων σου Χρι ι ι στε ε ε ε

δι ι η η η γη η η σο ο ο μαι αι π ρ εξ α

ι δι ι ου ου ου γαρ δο ο ξης συ υν α

α α ι ι δι ι ι ον και εν υ πο ο στα

τον λα α α αμ φα ας α α α πα α αυ γα α α

σμα α π ρ Παρ θε νι κη η η ης α α α πο

γα α στρος τοις εν σκο ο ο τει και σκι ι α σω

μα τω θει εις α α α νε τει ει λα ας η η

η η η λι ι ι ι ος π ρ ῶδῆς'

Α λι ο πον το γε ε ε νε ες Δ κη τω ω

ο ον εν το ο ο ο σθι ο ο ον πυ υρ της τρι ι

η με ε ρου ουτα α φη ης σου Δ τι ι ι προ ει

χο ο νι ι σμα α Δ ου ουου ου Ι ι ω ω ω

νας Δ υ πο φη η τη ης α α να α α δε

ε ε δει ει ει κται αι π ρ σε σω σμε ε νος

γα α αρ ως και αι πρου ου ου πε ε πω ω ω

το ο ο α α συν η ης ε ε βο ο ο

α θυ σω ω σοι οι με τα φω νη ης αι αι αι

νε σε ε ω ως Κυ υ υ υ υ ρι ι ι ε

ῥοδῆζ'

τα μω θυ μω ω ω ω τε ε ε και πυ

υ ρι θει ος ε ε ρω ως α α α αν τι ι

τα α ατ το ο ο με ε ε νο ος το με

εν πυ υρ ε δρο ο σι ι ζε τω θυ υ μω ω

ω δε ε ε γε ε ε λα θε ε ε ο ο

πνε ευ στω ω ω λο ο γι ι ι κη η τη των ο

σι ι ων τρι φθο ογ γω ω λυ υ υ ρα α α αν τι

ι φθε ε εγ γο ο ο με ε ε νο ος <sup>π ρ</sup> Μου σι

κοι οι οι οιοις ο ορ γα α α νοις <sup>π ρ</sup> εν με ε ε

σω φλο γο ο ο ος ο ο δε δο ο ξα α σμε

ε ε νο ος των Πα τε ε ρων και αι η μων Θε ε ος

ε ευ λο ο γη η η το ο ο ος ει <sup>π ρ</sup> ὠδὴ ἡ'

<sup>χ</sup> α ι νου μεν ευ λο γου μεν προ σκυ νου με εν τον

Κυ υ ρι ι ον <sup>Δ δ</sup>

<sup>Φ</sup> λο ο ο ο γα <sup>χ ρ</sup> δρο σι ζου σαν ο ο σι ι ι

ου ου ου ουους δυ υσ σε βει ει εις δε ε κα α

τα α α φλε ε ε γου ουου σα αν <sup>π ρ</sup> αγ γε ε λο ος





ου ους αι αι αι ω ωω ω ω να α α ας π ρ

## Τιμιωτέρα

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

Λουκᾶ κεφ. 1

ἤχος α'

- ∴ Μεγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἠγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ σωτῆρί μου. 46-47
  - ∴ Ὅτι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48
  - ∴ Ὅτι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεάν καὶ γενεάν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50
  - ∴ Ἐποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσκόρπισεν ὑπερηφάνους διανοίᾳ καρδίας αὐτῶν. 51
  - ∴ Καθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξάπέστειλε κενούς. 52-53
  - ∴ Ἀντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55
- Τὴν Τιμιωτέραν τῶν Χερουβίμ, καὶ ἐνδοξοτέραν ἀσυγκρίτως τῶν Σεραφίμ, τὴν ἀδιαφθόρως Θεὸν Λόγον τεκοῦσαν, τὴν ὄντως Θεοτόκον, σὲ μεγαλύνομεν.**

Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

## Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου

Λουκᾶ κεφ. 1

ἤχος β' Πα

- ∴ Μεγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἠγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ σωτῆρί μου. 46-47
- ∴ Ὅτι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48

- ∴ Ὅτι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ Δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεάν καὶ γενεάν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50
- ∴ Ἐποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσκόρπισεν ὑπερηφάνους διανοία καρδίας αὐτῶν. 51
- ∴ Καθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξάπέστειλε κενούς. 52-53
- ∴ Ἀντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55

Πέτρου Λαμπαδαρίου

## Ἦχος ♯ Πα

Πανδέκτη  
Ὅρθρος 1850 σ.501#

Την τιμιωτεραν των Χερουβιμ και ενδο  
 ξοτεραν ασυγκριιτως των Σεραφιμ την αδι  
 αφθορωσ Θεον Λογον τε κου ου σαν την οντως Θεο  
 τον σε μεγαλυνοομεν

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

## Ἦχος ♯ Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Τριώδιον Β'  
2003 σ.19#

Μεγαλυνη ψυχη μου τον Κυρι

ον και η γαλιαια σε το πνευμα μου επι

τω θεω τωσωτηρι μου

την τιμιωτεραν των χειριβι και ενδοξο

τεραν ασυγκριιτως των Σεραφιμ την αδια

φθορωσ θεον λογον τεκουσαν την οντως θεο


τοκον σε μεγαλυνοομεν


οτι επεβλεψεν επι την ταπεινω

σιντης δουλης αυτου ιδου γαρ απο του νυν μακα


ριουσι με πασαι αι γενεαι


την τιμιωτεραν των χειριβι και ενδοξο

τε ραν α συγ κρι ι τως των Σε ρα φιμ  την α δι α


φθο ρως Θε ον Λο γον τε κου σαν  την ον τως Θε ο


το κον σε μεγα λυ υ νο ο μεν 


 **Ο** τι ε ποι η σε μοι με γα λει α ο


δυ να τος και α γι ον το ο νο μα αυ του  και το ε

λε ος αυ του εις γε νε αν και γε νε αν τοις φο βου

με νοις αυ τον 

**Τ** ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ  και εν δο

ξο τε ραν α συγ κρι ι τως των Σε ρα φιμ  την α δι

α φθο ρως Θε ον Λο γον τε κου σαν  την ον τως Θε

ο το κον σε μεγαλυνοομεν <sup>π ρ</sup>

**Ε** <sup>χ</sup> ποιησε κρατος εν βραχιονι αυ

του <sup>Δ</sup> <sup>δ</sup> διεσκορπισεν υπερηφανους διανοι

ακαρδιας αυτων <sup>Δ</sup> <sup>δ</sup>

**Τ** ην τιμιωτεραν των Χερουβιμ <sup>Δ</sup> <sup>δ</sup> και ενδο

ξοτεραν ασυγκριτως των Σεραφιμ <sup>π ρ</sup> την αδι

αφθρωσ Θεον Λογον τεκουσαν <sup>Δ</sup> <sup>δ</sup> την οντως Θε

ο το κον σε μεγαλυνοομεν <sup>π ρ</sup>

**Κ** <sup>χ</sup> αθειλεδυναστας αποθρωνων και υψωσεται

πειρους <sup>ζ</sup> <sup>ζ</sup> πεινωντας ενεπλησεν αγαθων <sup>χ</sup> <sup>η</sup> και

πλου τουν τας εξ α πε στει λε κε νους

**Τ**ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ και εν δο

ξο τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ την α δι

α φθο ρως Θε ο ον Λο γον τε κου σαν την ον τως Θε

ο το κον σε μεγα λυ υ νο ο μεν

**Α**ν τε λα βε το Ισ ρα ηλ παι δος αυ του μνη

σθη ναι ε λε ους και θως ε λα λη σε προς τους πα

τε ρας η μων τω Α βρα αμ και τω σπερ μα τι αυ

του ε ως αι ω νος

**Τ**ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ και εν δο

ξο τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ την α δι  
α φθο ρως Θε ο ον Λο γον τε κου σαν την ον τως Θε  
ο το κον σε μεγα λυ υ νο ο μεν

## Καταβασία θ' φδῆς

ἦχος α'

[Αἱ γενεαὶ πᾶσαι, μακαρίζομέν σε, τὴν μόνην Θεοτόκον.]

Νενίκηνται τῆς φύσεως οἱ ὄροι, ἐν σοὶ Παρθένε ἄχραντε· παρθενεύει γὰρ τόκος, καὶ ζῶν προμνηστεύεται θάνατος. Ἡ μετὰ τόκον παρθένος, καὶ μετὰ θάνατον ζῶσα, σῶζοις αἰεὶ, Θεοτόκε τὴν κληρονομίαν σου.

Αργή

Σύντομος

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Παπαγιάννη)

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Χουρμουζίου)

Σύντομος

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

ἦχος 4 Πα

φδῆ θ'

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Εἰρμολόγιον 1903 σ.319#

α ι γε νε αι πα α σαι αι μα κα ρι ζο με εν



σε την μονην Θεοτοκον <sup>π ρ</sup>

**Ν**ενηκνται της φυσεως οι οροι εν σοι Παρθε

νεαχραν τε <sup>π ρ</sup> παρθενει γαρ τοκος και ζω

ην προμνηστευεται θανατος <sup>π ρ</sup> ημετα τοκον Παρ

θενος και μετα θανατον ζωσα <sup>π ρ</sup> σωωζεις αιει

Θεοτοκε την κληρονομια αν σου <sup>π ρ</sup>

\* σου ου ου ου <sup>π ρ</sup>

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

ᾠδὴ θ'

ᾠχος <sup>4</sup>/<sub>ᾠ</sub> Πα

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.152/1501#

**Α**ι γε νει παασαι αι μακαριζο

με εν σε την μο νην Θε ο το ο κον π ρ

Ν ε νι κην ται της φυ σε ως οι ο ροι εν σοι

Παρ θε νε α χραν τε παρ θε νευ ει γαρ το κος

και ζω ην προ μνη στε ευ ε ται θα να τος η

με τα το κον Παρ θε νος και με τα θα να τον

ζω σα σω ω ζοις α ει Θε ο το κε την κλη ρο

νο μι ι α αν σου

σου ου ου ου

Ἄγι

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

ᾠδὴ θ'

Ἦχος ᾠ Πά

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Ειμολόγιον 1903 σ.6#

α ι γε ναι αι αι πα α α σαι αι αι αι μα α

κα ρι ι ζο ο με ε εν σε τη ην μο ο

νην Θε ε ε ο το ο ο ο κον π ρ

**N** ε ε νι ι ι κη η η ην ται π ρ της φυ υ σε

ω ως οι ο ο ο ροι οι εν σοι οι οι Πα αρ

θε ε νε ε α α α χρα αν τε ε πα α α π ρ

αρ θε νευ ει ει γα αρ το ο ο χο ος και ζω ω π ρ

ην προ μνη στε ε ε ευ ε ε ται αι θα α α να

α α το ος η με ε ε ε τα το κο ον Παρ θε π ρ

ε ε ε νος και με ε ε ε τα θα α να α το ον

ζω σα α σω ω ω ω ζει εις α α α ει Θε ο

ο το ο ο κε τη η ην κλη ρο ο νο ο μι ι  
 ι ι ι α α α αν σου σου ου ου

Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Παπαγιάννη)

ψδλθ'

Ἦχος ♩ Πα

πρωτ. Κων. Παπαγιάννη  
 Μουσικόν Μηνολόγιον  
 2007 σ.155//1504\*

Α ι γε νε αι αι πα α α α σαι αι αι αι μα α  
 κα ρι ι ζο ο με ε εν σε τη ην μο  
 ο νην Θε ε ε ο το ο ο ο κον

Ν ε ε νι ι ι κη η η ην ται της φυ υ σε  
 ω ως οι ο ο ο ροι οι εν σοι οι οι Πα αρ  
 θε ε νε ε α α α χρα αν τε ε πα α α

αρ θε νευ ει ει γα αρ το ο ο κο ος <sup>π ρ</sup> και ζω ω ην

προ μνη στε ε ε ευ ε ε ται αι θα α α να α α

το ος <sup>π ρ</sup> η με τα το κο ον Παρ θε ε ε ε νος <sup>Α</sup>

και με τα θα α να α το ον ζω σα α <sup>π ρ</sup> σω ω ω

ζοι οισ α α α ει <sup>Α</sup> Θε ο ο το ο ο κε <sup>Α</sup> την

κλη ρο ο νο ο μι ι ι ι ι α α α αν <sup>Χ</sup>

σου ου ου ου <sup>π ρ</sup>

\* νας <sup>π ρ</sup>

Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Χουρμουζίου)

ᾠδὴ θ'

Ἦχος <sup>4</sup>/<sub>ᾠ</sub> Πα

Χουρμουζίου Χαρτοφύλακος  
Ειρμολόγιον 1825 σ.8\*

Α ι γε ναι αι αι πα α σαι αι αι αι μα α κα

ρι ι ζο ο με ε εν σε τη ην μο ο νην

Θε ε ε ο ο ο του ο ο κον π ρ

**N** ε ε νι ι ι κη η η ην ται π ρ της φυ υ σε

ω ως οι ο ο ο ροι οι εν σοι οι οι Πα αρ

θε ε νε ε ε α α χρα α αν τε ε πα α α π ρ

αρ θε νευ ει ει γα αρ το ο ο κο ος και ζω ω ην

προ μνη στε ε ε ευ ε ε ται αι αι θα α α να

α α το ος η με ε ε ε τα το κο ον Πα ρ θε ε π ρ

ε ε νος και με ε ε ε τα θα α να α το ον ζω

σα α σω ω ω ω ζει εις α α α ει Θε ο π ρ

ο το ο ο κε ε τη η ην κλη ρο ο νο ο μι

ι ι ι ι α α α αν σου ου ου ου π ρ

# Εἰς ἑορτὰς τῆς Θεοτόκου

22/9-7/11

10/2 – μέχρι τῆς ἐνάρξεως τοῦ Τριφιδίου

Ἀπὸ τῆς Κυριακῆς τῶν ἁγίων Πατέρων μέχρι τῆς 26ης Ἰουλίου

## ἤχος δ'

α Ἀνοίξω τὸ στόμα μου, καὶ πληρωθήσεται Πνεύματος, καὶ λόγον ἐρεύξομαι, τῇ βασιλίδι Μητρί, καὶ ὀφθήσομαι, φαιδρῶς πανηγυρίζων, καὶ ἄσω γηθόμενος, ταύτης τὰ θαύματα.

γ Τοὺς σοὺς ὑμνολόγους Θεοτόκε, ὡς ζῶσα καὶ ἄφθονος πηγῆ, θίασον συγκροτήσαντας πνευματικόν, στερέωσον· καὶ ἐν τῇ θείᾳ δόξῃ σου, στεφάνων δόξης ἀξίωσον.

δ Τὴν ἀνεξιχνίαστον θείαν βουλήν, τῆς ἐκ τῆς Παρθένου σαρκώσεως, σοῦ τοῦ Ὑψίστου, ὁ προφήτης, Ἀββακούμ, κατανοῶν ἐκραύγαζε· δόξα τῇ δυνάμει σου Κύριε.

ε Ἐξέστη τὰ σύμπαντα, ἐπὶ τῇ θείᾳ δόξῃ σου· σὺ γὰρ ἀπειρόγαμε Παρθένε, ἔσχες ἐν μήτρᾳ, τὸν ἐπὶ πάντων Θεόν, καὶ τέτοκας ἄχρονον Υἱόν, πᾶσι τοῖς ὑμνοῦσί σε, σωτηρίαν βραβεύοντα.

ς Τὴν θείαν ταύτην καὶ πάντιμον, τελοῦντες ἑορτὴν οἱ θεόφρονες, τῆς Θεομήτορος, δεῦτε τὰς χεῖρας κροτήσωμεν, τὸν ἐξ αὐτῆς τεχθέντα Θεὸν δοξάζοντες.

ζ Οὐκ ἐλάτρευσαν τῇ κτίσει οἱ θεόφρονες, παρὰ τὸν κτίσαντα, ἀλλὰ πυρὸς ἀπειλήν· ἀνδρείως πατήσαντες, χαίροντες ἔψαλλον· ὑπερύμνητε, ὁ τῶν πατέρων Κύριος καὶ Θεὸς εὐλογητὸς εἶ.

Ἀἰνοῦμεν εὐλογοῦμεν καὶ προσκυνοῦμεν τὸν Κύριον.

η Παῖδας εὐαγεῖς ἐν τῇ καμίνῳ, ὁ τόκος τῆς Θεοτόκου διεσώσατο, τότε μὲν τυπούμενος, νῦν δὲ ἐνεργούμενος, τὴν οἰκουμένην ἄπασαν, ἀγείρει ψάλλουσαν· τὸν Κύριον ὑμνεῖτε τὰ ἔργα, καὶ ὑπερυψοῦτε, εἰς πάντας τοὺς αἰῶνας.

Ἄργαι

Σύντομοι

Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Κ. Παπαγιάννη)

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Γ. Κουντιάδου)

Γαβριήλ Κουντιάδου

## Σύντομοι

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου



**Α** νοι ξω το στο μα μου και πλη ρω θη σε ται

πνευ μα τος και λο γον ε ρευ ξο μαι τη βα σι λι δι Μη

τρι και ο φθη σο μαι φαι δρωσ παν η γυ ρι ζων και

α σωγη θο μενος ταυ της τα θαυ ματα

**Τ** ους σου ους υ μνο λο γους Θε ο το ο κε η

ζω ω σα και α φθο νος πη γη θι α σον συ γ κρο τη σαν

τας πνευ μα τι κον στε ρε ω ω σον και εν τη θει α

δο ξη σου στε φα νων δο ξη σ α ξι ω σον

**Τ** ην α νε ξι χνι α στον θει αν βου λην της εκ

της Παρ θε ε νου σαρ κω σε ως σου του υ ψι στου

ο προ φη της Αβ βα κουμ κα τα νο ων ε κραυ

γα ζε δο ξατη δυ να μει σου Κυ ρι ε

←ειρμολόγιον ΖΩΗΣ

ῶδῆς'

ξε στη τα συμ παν τα ε πι τη θει α δο

ξη σου συ υ γα αρ α πει ρο γα με Παρ θε ε νε ε

σχες εν μη η τρα τον ε πι πα αν των Θε ον και τε

ε το κας α χρο νον Υι ον πα σι τοις υ μνου σι σε σω τη

ρι ι αν βρα βευ ον τα

ῶδῆς'

Την θει αν ταυ την και παν τι μον τε λουν τες ε ορ την

οι θε ο φρο νες της Θε ο μη τορος δευ τε τας χει ρας κρο

τη σω μεν τον εξ αυ της τε χθε εν τα Θε ον δο ξα ζον

τες <sup>6</sup>λ

ᾠδὴ ζ'

Ουκ ε λα ατρε ευσαν τη κτι σει οι θε ο φρο νες πα

ρα τον κτι σα αν τα <sup>6</sup>λ αλ λα πυ ρο ος α πει λην <sup>6</sup>λ αν

δρει ως πα τη σαν τες χαι ροντες ε ψαλλον <sup>6</sup>λ υ περ υ μνη

η τε ο των πα τε ρων Κυ ρι ος και Θε ος ευ λο γη το

ος ει <sup>6</sup>λ

ᾠδὴ η'

Αι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου ου μεν

τον Κυ ρι ον <sup>6</sup>λ

Παι αι δας ευ α γεις εν τη κα μι ι νω ο

το οκος της Θεο το κου δι ε σω σα το ο το τε

μεν τυ που μενος νυν δε εν ερ γου με ε νος π<sup>9</sup> την οι

κου με νην α πα σαν α γει ρει φα αλλου ου σαν τον

Κυ ρι ο ον υ υ μνει τε τα ερ γα και υ περ υ ψου ου

τεεις παν τας τους αι ω ω να α α α ας 6 λ<sup>2</sup>

### Γαβριήλ Κουντιάδου

ψδὴ α'

Ἦχος δ' Ββ

Γαβριήλ Κουντιάδου ιερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
α' ἔκδοσις 1931-1935  
ἐπανέκδοσις 1991 σ.511\*

Α νοι ξω το στο μαμου και πλη ρω θη σε ε ται

Πνευ μα τος 6 λ<sup>2</sup> και λο γον ε ρευ ξομαι τη βα α σι λι δι

Μη τρι 6 λ<sup>2</sup> και ο φθη σομαι φαι δρωσ παν η γυ υ ρι

ζων και α σω γη θο μενος τα αυτης τα θου ματα

ῶδὴ γ'

Τ ους σου ους υ μνο λο γους Θε ο το ο ο

κε η ζω ω σα και α φθο νος πη γη θι α σον συγ

κρο τη σα αν τας πνευ μα τι κον στε ρε ω ω σον και

εν τη θει α δο ξη σου χορός α' στε φα νων δο ο ξησ α

ξι ω σον

ῶδὴ δ'

Τ ην α νε ξι χνι α στον θει αν βου λην της εκ

της Παρ θε νου σαρ κω σε ε ως σου του Υ υ ψι στου ο

ο προ φητης Αβ βα κουμ κα τα νο ων ε κραυ γα ξε δο

ξατη δυ να μει σου ου Κυ ρι ε

ῶδὴ ε'

Εξ εστη τα συμ παν τα ε πι τη θει α δο ξη

σου σου υ γαρ α πει ρο γα με Παρ θε ε νε ε σχες

εν μη η τρα τον ε πι παν των Θε ον και τε το

κας α χρονον Υι ο ον πα σι τοις υ μνου σι σε σω

τη ρι ι αν βρα βευ οντα

Την θει αν ταυ την και παν τι μον τε λουν τες ε ορ

την οι θε ο φρο νες της Θε ο ο μη το ρος δευ τε τας χει

ρας κρο τη σω μεν τον εξ αυ της τε χθε εν τα Θε ον

δο ξα ζοντες

Ουκ ε λα τρε ευ σαν τη κτι σι οι οι θε ο φρο νες

πα ρα τον κτι σαν τα <sup>6</sup>λα αλ λα πυ ρο ος α πει λην <sup>6</sup>λα

αν δρει ως πα α τη σαν τες χαι ρον τες ε ψαλ λον <sup>6</sup>λα υ

περ υ μνη η τε ο των πα τε ρων Κυ ρι ος <sup>Δ</sup>δ και Θε ος

ευ λο γη το ος ει <sup>6</sup>λα ᾠδὴ η'

<sup>χ</sup>α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου ου μεν

τον Κυ ρι ον <sup>6</sup>λα

**Π** αι αι δας ευ α γεις εν τη κα μι ι νω ο το

ο κος της Θε ο το κου δι ε σω σα το <sup>6</sup>λα το τε μεν τυ

που με ε νος <sup>π</sup>π νυν δε ε εν ερ γου μενος <sup>6</sup>λα την οι κου

με νην α πα σαν α γει ρει ψαλ λου ουσαν <sup>Δ</sup>δ τον Κυ ρι ον υ

μνει ει τε τα ε εργα και υ περ υ ψου ου τε εις

παν τας τους αι ω ω ω να α α ας

### Άργαι

Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Κ. Παπαγιάννη)

ψδθ α'

Ἦχος δὲ Ββ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.234/1932\*

νοι ξω το στο ο μα α μου ου και πλη ρω θη

η σε ε ται Πνευ μα α το ος και λο ο γο ον ε ε ρε

ευ ξο ο μαι αι τη η βα α σι λι ι δι Μη η τρι ι

ι και ο φθη σο ο μαι αι φαι δρω ω ω ως

πα αν η η γυ υ ρι ζωων και α α σω ω γη η θο ο

με ε ε νος τα α α αυ τη ης τα α θαυ μα α τα α



**T** ους σου ου ουους υ μνο ο λο ο γου ους Θε ε ο

ο το ο ο ο κε **Δ**ως ζω ω ω ω σα α και αι

α α α φθο νος πη η γη **Δ**θι α α σο ον συ υγ

κρο τη η σα αν τας πνε ευ μα τι ι κον στε ρε ε ε ω ω

ω ω σον **π** και εν τη θει α α δο ο ξη η σου *χρηός α'*

\* **Δ**στε φα α α α α α α α α νω ων δο ο ο

ο ξη ης α α ξι ω ω σο ον **β**

\* **Δ**στε φα α α νωων... *ῥοδή δ'*

**T** ην α νε ξι ι χνι ι α στο ον θει ει α αν

βου ου λη η ην **β** της εκ της Παρ θε νου σα αρ κω ω

ω σε ε ε ε ε ω ω ως σου του ου Ύ υ ψι

στου ου <sup>π ρ</sup> ο προ φη η της Αβ βα ακουμ <sup>Δ ρ</sup> κα τα

νο ο ων ε ε κραυ γα α ζε ε <sup>Δ ρ</sup> δο ο ο ο ξα

τη δυ να α α α μει ει σου Κυ ρι ι ε ε <sup>β λ</sup> ὠδὴ ε΄

**Ε** ξ ε στη η τα συ υμ πα αν τα α <sup>π ρ</sup> ε πι

τη θει ει α α δο ο ξη η σου <sup>Δ ρ</sup> συ υ υ γα α α

α αρ α πει ει ρο ο γα α με Παρ θε ε ε νε ε <sup>β λ</sup> ε

σχες εν μη η η η η τρα τον ε πι ι ι πα α α

α αν τω ων Θε ε ε ον και αι τε ε ε το ο ο

ο κας <sup>Δ ρ</sup> α α χρο ο νο ον Ύι υι ο ο ο ον πα α

σι ι τοι οις υ μνου σι ι σε ε ε ε την ει ει ρη η η η

νη ην βρα βε ευ ο ον τα α

ον και τε ε το ο κας ...

\* Μουσικὸν Πεντηκοστάριον 2005 σ.551

ᾠδὴ ζ'

Την θει αν τα αυ τη ην και πα αν τι ι μον τε λου ουν

τε ες ε ε ο ορ τη ηην οι οι θε ε ο ο ο

φρο ο νες της Θε ο μη η η το ο ο ο ρος δευ τετας

χει ρα α ας κρο τη η σω ω μεν τον εξ αυ τη

ης τε ε χθε εν τα Θε ε ο ον δο ξα ζ ο ον τε ες

Ουκ ε λα α α τρε ε ε ευ σαν τη κτι ι

σει ει οι οι θε ο φρο ο νες πα ρα το ο ον κτι ι

σα α α αν τα α <sup>6</sup> αλ λα α α α πυ ρο ος α πει ει

λη ην αν δρει ει ω ως πα α τη η σα αν τες χαι αι ρο ον

τες ε ψα αλ λο ον <sup>6</sup> υ περ υ υ υ μνη η

η η τε ε <sup>π9</sup> ο των πα τε ρω ων Κυ ρι ι ο ος

και Θε ε ος ε ευ λο γη η <sup>6</sup> το ο ος ει ει <sup>λκ</sup> ᾠδὴ ἡ'

**Α**ι <sup>σ</sup> <sup>χ</sup> νου μεν ευ λο <sup>χ</sup> γου μεν και προσ κυ νου ου ου

με εν τον Κυ υ ρι ι ο ον <sup>6</sup> <sup>λκ</sup>

**Π**αι αι αι αι δας ευ α γει εις ε εν τη η κα μι ι

ι νω ω <sup>6</sup> ο το ο ο ο ο ος της Θε ε <sup>λκ</sup>

ο το ο κου δι ε ε σω ω σα α το <sup>Δ</sup> το ο τε ε με <sup>σ</sup>

« εν τυ που με ε νο ος <sup>β λ</sup> νυ υν δε ε εν ερ γου ου

ου με ε ε ε νος <sup>π ρ</sup> την οι κου με ε νη ην α πα α

σαν α γει ει ρει ει ει φα α α α αλ λου ου ου ου

σαν <sup>Δ δ</sup> τον Κυ υ υ ρι ι ι ι ο ο ο ον υ υ μνει

τε ε τα α ερ γα α <sup>π ρ</sup> και αι υ περ υ ψου ου ου

ου τε ε <sup>Δ δ</sup> εις πα αν τας τους αι ω ω ω ω ω

να α α α α ας <sup>β λ</sup>

Πέτρος Λαμπαδαρίου (διασκ. Γ. Κουντιάδου)

χρόνος διπλοῦς  
ᾠδὴ α'

Ἦχος <sup>Δ δ</sup> Ββ

Γαβριήλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
α' ἔκδοσις 1931-1935  
ἐπανέκδοσις 1991 σ.507\*

α <sup>χ</sup> νοι οι ξω ω το στο ο μα α μου ου ου

και πλη η ρω θη η σε ε ται Πνε ευ μα α το ος και

λο ο γον ε ε ρε ευ ξο ο μαι αι τη η βα α σι λι ι δι

Μη η τρι ι και ο ο φθη σο ο μαι φαι δρω ω ω ως

πα αν η η γυ υ ρι ζων και α α σω γη η η θο

ο με ε νος τα α αυτης τα α θαυ μα α τα α

Τ ους σου ου ου ους υ μνο ο λο ο γου ους Θε ε ο

ο το ο ο ο κε η ζω ω σα και αι αι α

φθο ο νος πη η η γη η θι α σον συγ κρο τη η η

σα α α α αν τα ας πνευ μα τι κο

ον στε ρε ε ε ω ω ω ω σον και εν τη η

η θει α α δο ξη η σου ου ου <sup>Δ</sup>χοεός α' στε φα α α νω

ων δο ο ο ο ξης α α ξι ωω σο ον <sup>6</sup>λ <sup>ωδὴ δ'</sup>

**T** ην α νε ξι χνι α στο ον θει ει ει ει α αν βου

ου λη ην <sup>6</sup>λ τη ης εκ της Πα αρ θε ε ε νου ου σαρ κω

ω σε ε ω ως <sup>6</sup>λ σου ου του Υ ψι στου ου ο ο προ ο

φη η η της Αβ βα α κου ου ουμ <sup>Δ</sup>κα τα νο ω ων

ε ε κραυ γα α ζε <sup>Δ</sup>δο ο ξα τη η δυ να α α α μει

ει σου ου Κυ ρι ι ε ε <sup>6</sup>λ <sup>ωδὴ ε'</sup>

**E** ξ ε στη η τα συ υμ πα αν τα α <sup>π</sup>9 ε πι

τη η η θει α α δο ξη η σου <sup>Δ</sup>συ υ υ γα αρ α

πει ει ρο ο γα α με Παρ θε ε ε νε ε ε σ χ ε ς ε ν

μη η η η τρα τον ε πι ι ι πα α α αν τω

ων Θε ε ε ο ν και αι τε ε ε το ο ο ο κας

α α χρο ο νο ο ν Υι υι ο ο ο ν πα α σι ι τοι ο ι ς

υ μνου ου σι ι σε ε ε ε σω τη η ρι ι ι ι α αν βρα

βε ευ ο ο ο ν τα

την θει αν τα αυτη ην και πα αν τι ι μο ο ν τε λου

ουν τε ε ς ε ο ο ρ τη η η ν οι οι θε ο ο φρο ο νε

ε ς της Θε ο μη η η το ο ο ο ο ο ρο

ος δευ τε τας χει ει ει ει ρας χρο ο τη η η σω ω ω



ω με εν τον εξ αυ τη ης τε ε χθε εν τα Θε ε ο ον

δο ξα α ζο ον τε ες  
ῶδὴ ζ'

Ο υκ ε λα α α τρε ε ε ε ευ σα αν

τη κτι ι σει ει οι οι θε ο ο φρο ο νε ες πα

ρα α τον κτι ι ι σα α α αν τα αλ λα α

πυ ρο ος α πει ει λη ην αν δρει ει ως πα α α τη

η σα αν τες χαι αι αι αι ρο ον τες ε ε ψα αλ λο ον

υ περ υ υ υ μνη η η η τε ε ο των πα

α τε ρω ων Κυ ρι ι ος και Θε ο ος ε ευ λο

ο γη το ο ος ει ει  
ῶδὴ η'

Α ι νου μεν ευ λο γου μεν και προσ κυ νου ου με εν

τον Κυ υ ρι ι ο ον

Π αι αι αι αι δας ευ α γει εις ε εν τη κα

α μι ι ι νω ω ο το ο ο ο ο κος της

Θε ε ο το ο κου ου δι ι ε σω ω σα α το ο

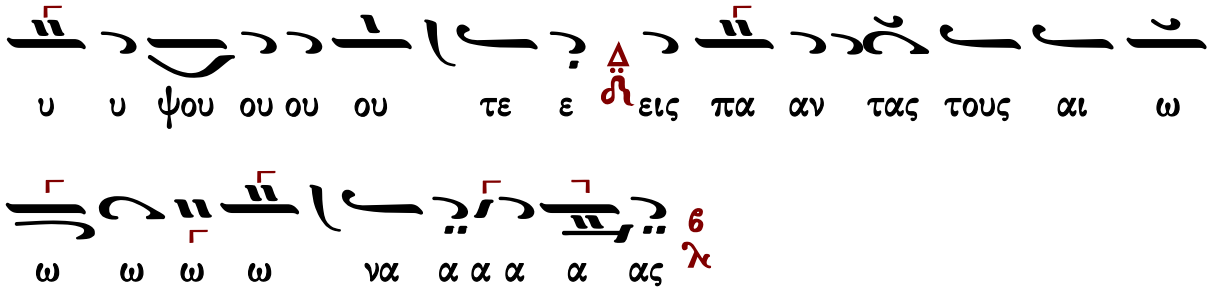
το ο τε με εν τυ υ που με ε νο ο ος νυ υν δε

ε ε εν ερ γου ου ου με ε ε ε νος την οι

κου με νη ην α πα α σαν α γει ρει ει ει ψα α

α α λ λου ου ου ου σαν τον Κυ υ υ ρι ι ι ι ο

ο ο ον υ υ μνει τε τα α ερ γα α και αι αι υ υ περ



## Τιμιωτέρα

Τὴν Θεοτόκον καὶ μητέρα τοῦ φωτός, ἐν ὕμνοις τιμῶντες μεγαλύνομεν.

Λουκᾶ κεφ. 1

ἦχος δ'

- ∴ Μεγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἠγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ σωτῆρί μου. 46-47
  - ∴ Ὅτι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπεινώσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48
  - ∴ Ὅτι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50
  - ∴ Ἐποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσχόρπισεν ὑπερηφάνους διανοίᾳ καρδίας αὐτῶν. 51
  - ∴ Καθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξαπέστειλε κενούς. 52-53
  - ∴ Ἀντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55
- Τὴν Τιμιωτέραν τῶν Χερουβίμ, καὶ ἐνδοξοτέραν ἀσυγκρίτως τῶν Σεραφίμ, τὴν ἀδιαφθόρως Θεὸν Λόγον τεκοῦσαν, τὴν ὄντως Θεοτόκον, σὲ μεγαλύνομεν.**

Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

## Πέτρου τοῦ Πελοποννησίου

Λουκᾶ κεφ. 1

ἦχος δ'

- ∴ Μεγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον, καὶ ἠγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ σωτῆρί μου. 46-47

- ∴ Ὅτι ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης αὐτοῦ· ἰδοὺ γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν μακαριοῦσί με πᾶσαι αἱ γενεαί. 48
- ∴ Ὅτι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ δυνατός, καὶ ἅγιον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. 49-50
- ∴ Ἐποίησε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ, διεσχόρπισεν ὑπερηφάνους διανοία καρδίας αὐτῶν. 51
- ∴ Καθεῖλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων καὶ ὕψωσε ταπεινούς, πεινῶντας ἐνέπλησεν ἀγαθῶν καὶ πλουτοῦντας ἐξαπέστειλε κενούς. 52-53
- ∴ Ἀντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ, μνησθῆναι ἐλέους, καθὼς ἐλάλησε πρὸς τοὺς πατέρας ἡμῶν, τῷ Ἀβραάμ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. 54-55

Πέτρου Λαμπαδαρίου

Ἦχος δὲ Ββ

Πανδέκτη Ὁρθρος 1850 σ.502#

Την τιμιωτεραν των Χερουβιμ και ενδοξο  
 τεραν ασυγκριτως των Σεραφιμ την αδια  
 φθορως Θεον Λογον τεκουσαν την οντως Θεο  
 το οκονσεμεγααλυνομεν

Κωνσταντίνου Παπαγιάννη

Ἦχος δὲ Ββ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Τριώδιον Β'  
2003 σ.26#

**Μ** ε γ α λ υ ν ει η ψ υ χ η μου τον Κυ ρι ον <sup>6</sup>λ

και η γ α λ λ ι α σε το πνευ μα μου ε πι τω Θε

ω ω τω σω τη ρι μου <sup>6</sup>λ

**Τ** ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ <sup>6</sup>λ και εν δο

ξο τε ραν α συγ κρι τωσ των Σε ρα φιμ <sup>6</sup>λ την α δι α

φθο ρωσ Θε ον Λο ο γον τε κου σαν <sup>6</sup>λ την ον τωσ Θε ο

το κον σε μεγα λυ νομεν <sup>6</sup>λ

**Ο** τι ε πε βλε ψεν ε πι την τα πει νωσιν

της δου λης αυ του <sup>6</sup>λ ι δου γαρ α πο του νυν μα κα

ρι ου σι με πα σαι αι γε νε αι <sup>6</sup>λ

Την τιμιωτεραν των Χερουβιμ και ενδο

ξοτεραν ασυγκριτως των Σεραφιμ την αδι

φθορως Θεον Λογον τεκουσαν την οντως Θεο

τοκον σε μεγαλυνομεν

Οτι εποιησε μοι μεγαλει οδυνα

τος και αγιον το ονομα αυτου και το ελε

ος αυτου εις γενεαν και γενεαν τοις φοβου

μενοις αυτον

Την τιμιωτεραν των Χερουβιμ και εν

δοξοτεραν ασυγκριτως των Σεραφιμ την αδι

α φθο ο ρως Θε ον Λο ο γον τε κου σαν <sup>6</sup> την ον τως

Θε ο το κον σε ε μεγα λυ νομεν <sup>6</sup>

<sup>χ</sup> ποι η σε κρα τος εν βρα χι ο νι αυ

του <sup>6</sup> δι ε σκορ πι σεν υ περ η <sup>χ</sup> φα νους δι α νοι α

καρ δι ας αυτων <sup>6</sup>

<sup>σ</sup> Τ ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ <sup>6</sup> και εν

δο ξο τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ <sup>6</sup> την α δι

α φθο ο ρως Θε ον Λο ο γον τε κου σαν <sup>6</sup> την ον τως

Θε ο το κον σε ε μεγα λυ νομεν <sup>6</sup>

<sup>χ</sup> **Κ** α θει λε δυ να στας α πο θρο νων και υ υ

ψω σε τα πει νους πει νων τας εν ε πλη σεν α γα

θων και πλου τουν τας εξ α πε στει λε κε νους

Τ ην τι μι ω τε ραν των Χε ρου βιμ και εν δο ξο

τε ραν α συγ κρι τως των Σε ρα φιμ την α δι α φθο

ρως Θε ο ον Λο γον τε κου σαν την ον τως Θε ο

το κον σε ε μεγα λυ νο μεν

Α ν τε λα βε το Ισ ρα ηλ παι δος αυ του

μνη σθη ναι ε λε ους κα θως ε λα λη σε προς τους πα

τε ρας η μων τω Α βρα αμ και τω σπερ μα τι αυ

του ε ως αι ω νος



Την τιμιωτεραν των Χερουβιμ και ενδοξο  
 τεραν ασυγκριτως των Σεραφιμ την αδιαφθο  
 ρως Θεοον Λογον τεκουσαν την οντως Θεο  
 τον σεεμεγαλυνομεν

## Καταβασία θ' φδῆς

ἦχος δ'

Ἄπας γηγενής, σκιρτάτω τῷ πνεύματι, λαμπαδουχούμενος· πανηγυριζέτω δέ, αὐλων  
 νόων, φύσις γεραίρουσα, τὴν ἱεράν πανήγυριν, τῆς Θεομήτορος, καὶ βοάτω· Χαίροις  
 παμμακάριστε, Θεοτόκε ἀγνή, ἀειπάρθενε.

Ἀργή

Σύντομος

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Κ. Παπαγιάννη)

Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Γ. Κουντιάδου)

Γαβριήλ Κουντιάδου

## Σύντομος

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

φδῆ θ'

ἦχος δ' Ββ

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
 Εἰρμολόγιον 1903 σ.330#

α παςγηγε νης σκιρ τα τω τω πνευ μα τι λαμ πα δου χου

με νος παν η γυ ρι ζε τω ω δε α υ

λων νο ο ων φυ σις γε ραι ρου σα την ι ε ραν παν

η γυ ριν της Θε ο μη η το ο ρος και βο α

α α α α τω χαι ρις παμ μα κα ρι στε Θε ο

το κε α γνη η αι παρ θε νε ε ε ε ε

Γαβριήλ Κουντιάδου

Ἦχος Βη

Γαβριήλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
α' ἔκδοσις 1931-1935  
ἐπανέκδοσις 1991 σ.514\*

α πας γη γε νης σκιρ τα τω τω Πνευ μα τι λαμ πα α

δου χου με νος παν η γυ ρι ζε τω ω δε α υ λων

Νο ὠν φυ υ σις γε ραι ρου σα <sup>6</sup>τα ι ε ρα θου

μα σι α της Θε ο μη το ο ρος <sup>Δ</sup>και βο α α τω χαι ροις

παμ μα κα α ρι στε Θε ο το ο κε <sup>6</sup>α γνη η α ει

πα α αρ θε νε ε ε ε ε <sup>6</sup>

Ἄρχή

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου

ᾠδὴ θ'

Ἦχος <sup>4</sup>Δι Ββ

Ἰωάννου Πρωτοψάλτου  
Ειρμολόγιον 1905 σ.55#

**Α** α πας γη γε νη η ης σκίρ τα τω τω πνε ευμα

τι ι λα αμ πα α δου χου με ε νο ο ος παν η γυ

υ ρι ζε ε ε τω ω ω δε <sup>π9</sup>α υ λωων νο ο

ο ο ω ων φυ υ σι ις γε ραι αι ρου ου σα α <sup>6</sup>την ι

ε ρα αν πα αν η η γυ υ ριν της Θε ο ο ο μη

η η η η το ο ο ο ρο ο ος και αι βο α α α

α α τω <sup>Α</sup> και αι ροι οις πα αμ μα κα ρι ι στε ε <sup>6</sup> <sup>λ</sup>

Θε ο το ο κε α γνη η η η α ει πα αρ θε ε ε νε ε ε

ε ε <sup>6</sup> <sup>λ</sup>

Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Κ. Παπαγιάννη)

ψδη θ'

Ἦχος <sup>Λ</sup> ΒϷ

πρωτ.Κων.Παπαγιάννη  
Μουσικόν Μηνολόγιον  
2007 σ.237/1936\*

α <sup>χ</sup> πας γη γε νη η ης σκιρ τα τω τω πνε ευμα

τι ι λααμ πα α δου χου με ε νο ος <sup>6</sup> <sup>λ</sup> παν η γυ υ

υ ρι ζε ε ε τω ω ω δε <sup>π</sup> <sup>9</sup> α υ λω ω ν νο ο

ο ο ων φυ υ σι ις γε ραι αι ρου ου σα α την ι ε

ρα αν πα αν η η γυ υ ριν της Θε ο ο ο μη η

η η το ο ο ο ρο ο ος και αι βο α α α α α

τω και αι ροι οις πα αμ μα κα ρι ι στε ε Θε

ο το ο κε α γνη η η η α ει πα αρ θε ε ε νε ε ε

ε ε

Πέτρου Λαμπαδαρίου (διασκ. Γ. Κουντιάδου)

Ἦχος δὲ Ββ

Γαβριήλ Κουντιάδου ἱερομονάχου  
Μουσικόν Πεντηκοστάριον  
α' ἔκδοσις 1931-1935  
ἐπανέκδοσις 1991 σ.510\*

α πας γη η γε νη η ης σκιρ τα τω τω Πνε ευ

μα τι ι λα αμ πα α δου χου ου με ε νο ο ος παν η η

γυ υ υ ρι ζε ε ε τωω ω ω δε α υ λω

ων Νο ο ο ο ων φυ υ υ υ σι ις γε ραι αι ρου ου

σα α τα ι ε ρα α θα αυ μα α σι ι α της

Θε ο ο ο μη η η η το ο ο ο ρο ο ος και

αι βο α α α α τω και αι ροι οις πα αμ μα κα α ρι

ι στε ε Θε ο ο το ο ο ο ο κε α γνη η η η α

ει πα αρ θε ε ε νε ε ε ε ε ε





ΤΕΛΟΣ

ΤΩ ΔΕ ΔΩΡΕΟΔΟΤΗ ΘΕΩ  
ΔΟΣΑ, ΤΙΜΗ ΚΑΙ ΠΡΟΣΚΥΝΗΣΙΣ



